शेख अबुल फज़्ल कृत

अकबरनामा

अनुवादक : डॉ. मथुरालाल शर्मा

अकबरनामा में दो हजार से अधिक पृष्ठ है। इसका अधिकांश भाग अकबर की स्तुति है या भोज, आनन्द, प्रमोद या सेना संचालनों का वर्णन है, जो ऐतिहासिक दृष्टि से उपयोगी नहीं है। इसकी मूल भाषा फारसी जटिल और आडम्बरपूर्ण है। इसके विद्वान अंग्रेजी अनुवादक बिवरिज ने लिखा है कि यदि कोई लेखक परिश्रम करके इसके व्यर्थ स्थलों को निकालकर और ऐतिहासिक स्थलों को ज्यों के त्यों रखकर संक्षेप कर दे तो इतिहास की बड़ी सेवा हो। लेखक डॉ. मथुरा लाल शर्मा ने इसी लक्ष्य को दृष्टि में रखकर अबुल फजल के अकबर नामें की तीन जिल्दों की दो जिल्द बना दी है जिसमें 707 पृष्ठ है। अकबर के समय की महत्वपूर्ण घटना कोई नहीं छोड़ी गई है और यथा-संभव अबुल फजल के शब्दों में ही उनका वर्णन है, परन्तु भाषा की जटिलता निकालकर सरल कर दी गई है।

यत्र-तत्र मूल लेखक के चाटुतापूर्ण उल्लेखों का भी समावेश कर दिया गया है जिससे पाठकों को उसकी मनोवृति का अनुमान हो सकेगा। अकबर के समय के इतिहास को जानने के लिये अकबरनामा सर्वाधिक प्रमाणित ग्रन्थ है।

शेख अबुल फजल कृत

अकबरनामा

भाग—2

अनुवादक और संक्षेपक

डॉ० मथुरालाल शर्मा

एम.ए., डी.लिट

प्रकाशक

राधा पब्लिकेशन

नई दिल्ली–110002
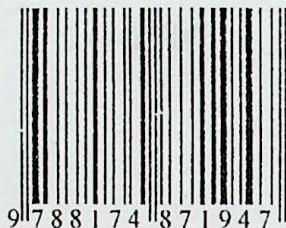
भूमिका

अकबरनामा का लेखक अबुल फजल अपनी विद्वत्ता के कारण प्रायः समस्त मध्यकालीन मुस्लिम जगत् में प्रसिद्ध था। उसको अनेक विषयों का ज्ञान था और फारसी भाषा पर उसका बड़ा अधिकार था। उसका पिता शेख मुबारक राजस्थान के नागौर नगर का निवासी था और सूफी सम्प्रदाय का अनुयायी था। अबुल फजल भी अपने पिता की भांति उदार सूफी था। उसका छोटा भाई फैजी भी फारसी भाषा का अच्छा लेखक और कवि था। अबुल फजल की गणना अकबर के नौ रत्नों में थी। वह खुसरू का अध्यापक था और 2500 का मनसवदार था। वह अकबर का घनिष्ठ मित्र था।

अबुल फजल का जन्म जनवरी, 1550 में हुआ था और उसकी मृत्यु 1602 में हुई थी। अकबर तीन वर्ष और जीवित रहा। इस समय का वृत्तान्त इनाय-तुल्ला ने लिखकर अकबरनामा पूरा किया था।

अबुल फजल की भाषा जटिल और आडम्बरपूर्ण है। उसने अकबर की ऐसी अत्यधिक प्रशंसा की है जिसको लज्जाजनक चाटुता कहा जा सकता है। उसने अकबर के प्रत्येक कार्य को उचित और आवश्यक बतलाया है और उसके क्रूरातिक्रूर कर्म पर भी औचित्य का पर्दा डालने का प्रयास किया है। अकबरनामा के तीनों खण्डों के कितने ही पृष्ठ चाटुता से भरे हुए हैं। अबुल फजल अकबर की कृपा से ही इतने ऊँचे पदपर पहुँचा था। इसलिये यह चाटुता अस्वाभाविक तो नहीं थी, परन्तु इसका इतिहास से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस चाटुता का एक संक्षिप्त-सा उदाहरण निम्नलिखित है :

''अकबर की आंख सूर्य के समान है। उसका हृदय सत्यान्वेषण के लिये गुणों की वेधशाला है। उसके ध्येय शुद्ध हैं। उसकी बुद्धि पूर्ण है। वह प्रतिभा सम्पन्न है। उसमें अपार क्षमाशीलता है। उसका हृदय शुद्ध है। उस पर सांसारिकता का कोई धब्बा नहीं है। इतने असंख्य गुण न जाने कैसे एक व्यक्ति में एकत्र हो गये हैं। मेरी भाषा में इतनी शक्ति नहीं है कि उसकी पर्याप्त प्रशंसा कर सकूं। उसके गुणों का ज्ञान केवल फरिश्तों को ही है।''

अबुल फजल अकबर को ही खलीफा मानता था। उसका खयाल था कि अकबर सर्वगुण सम्पन्न था और ईश्वर में लीन रहता था और उसके समय में कोई मुस्लिम दरवेश या फकीर उसके समान पहुँचा हुआ भगवद्-भक्त नहीं था।

अकबरनामा में अकबर की स्तुति के अतिरिक्त अनेक विषयन्तर हैं। अभियानों के साथ

जाने वाले उच्च राजकर्मचारियों की लम्बी-लम्बी सूचियों हैं और कितनी ही दैनिक तुच्छ घटनाओं का वृत्तान्त है। अत: अकबरनामा के विद्वान् अंग्रेजी अनुवादक एच बैवेरिज ने ठीक लिखा है कि—

"मैं चाहूँगा कि कोई व्यक्ति इस पुस्तक को संक्षिप्त करे। इसमें से जन्म पत्रिकाएं और अकबर के वास्तविक या कल्पित पूर्वजों का वृत्तान्त, ज्योतिष और धूम्रकेतुओं का वर्णन तथा विषयान्तर निकाल दिये जायें और बड़ी-बड़ी नामावलियां भी छोड़ दी जायें तथा शब्दाडम्बर को हटाकर भाषा सरल कर दी जाये।"

इस अनुवाद में उपरोक्त सुझावों को मानकर तीनों खण्डों को संक्षेप किया गया है परन्तु महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना कोई नहीं छोड़ी गई है। अकबर के समय की मुख्य घटनायें अविकल रहने दी हैं। मूल और अंग्रेजी अनुवाद का शब्दानुवाद नहीं, भावानुवाद किया गया है और भाषा को यथासंभव सरल बनाया गया है।

मथुरा लाल शर्मा

अनुक्रमाणिका

भाग 3

प्रकरण 1 से 158 पृष्ठ 309 से 709

***

भाग 3

(गुजरात विजय से अकबर की
मृत्यु तक)
1572 से 1605 तक

प्रकरण 1

गुजरात पर विजय प्राप्त

इस वर्ष एक घटना यह हुई कि सुलेमान कररानी, जो उड़ीसा, बंगाल, बिहार का शासन करता था, संसार से चल बसा। कुछ लोगों की राय थी कि अब बादशाह को पूर्वी प्रान्तों की ओर कूच करना चाहिए परन्तु बादशाह सोचता था कि गुजरात के उत्पीड़ित लोगों को शान्ति मिलनी चाहिये इसलिए उसने इस सलाह की ओर ध्यान नहीं दिया और कहा कि यदि यह खबर गुजरात की ओर प्रयाण करने से पूर्व मिल जाती तो वह पूर्वी प्रान्तों की ओर प्रयाण करता। अब सुलेमान की मृत्यु हो गई है तो उधर की ओर प्रयाण करने की आवश्यकता भी क्या है। अब उधर के देश की विजय तो अधिकारियों के साहस और कौशल से हो जायेगी। मुनीम खां खानखाना के नाम आदेश भेजा गया कि दूसरे अधिकारियों की सहमति से वह बिहार, बंगाल और उड़ीसा को विजय करें।

खान कलां आहत हुआ

खान कलां और दूसरे अफसर जो अग्रसेना में थे, सिरोही के पास भाद्रा जौन नामक कस्बे पर पहुंचे और वहाँ ठहरे। राय मानसिंह देवड़ा ने उनके पास अपने राजदूत भेजे और कहलाया "मैं बादशाह का अज्ञाकारी हूँ।" खान कलां से मिलकर जब राजदूत रवाना होने लगे तो उसने एक-एक को भारतीय प्रथा के अनुसार पान देने के लिये बुलाया तो उनमें से एक साहसी और भयंकर आदमी ने अपने खंजर से खान कलां की हंसली पर ऐसा वार किया कि खंजर दूसरी ओर तीन अंगुल निकल आया। खान कलां के सेवक बहादुर खां तुर्बती ने उस राजपूत को धराशायी कर दिया। सादिक खां और मुहम्मद कुली खां ने उसको मार डाला। दूसरे राजपूतों को भी जो इस दुष्टता में सम्मिलित थे, धराशायी कर दिया। जब बादशाह ने इस घटना की खबर सुनी तो उसने गुजरात विजय के कार्य में और भी अधिक मन लगाया। वह 20 अक्टूबर, 1572 को वहाँ आ पहुंचा और अधिकारी लोग उसका स्वागत करने आये। जब उसने देखा कि सिरोही के लोग विद्रोह कर रहे हैं तो उसने आदेश दिया कि शाही सेना सिरोही पहुंच कर उनको नष्ट कर दे। स्वयं भी उसने वहाँ पहुंचने का कष्ट किया और इलाही मास अबान की 17 तारीख को उसका शिविर सिरोही के राज्य में पहुंच गया। वहाँ के विद्रोही लोगों ने पर्वतों की घाटियों में शरण ली और कुछ एक महादेव के मन्दिर में छिप गये जो सिरोही से एक कोस के अन्तर पर था। बादशाह ने अपने सचेत

वीर लोगों को युद्ध करने से रोका और तीरन्दाजों तथा तलवार चलाने वालों को विद्रोही लोगों से लड़ने के लिये रवाना किया। इनमें तातार खां का पुत्र मुहम्मद था जो मारा गया।

ईरान का राजदूत

एक घटना यह हुई कि सुल्तान मुहम्मद खुदा बन्दा की ओर से जो शाह तहमास्प का ज्येष्ठ पुत्र था, यार अली बेग तुर्कमान, कितने ही ईरानियों के साथ राजदूत के रूप में आया और अपने साथ ईरान की दुर्लभ वस्तुयें भेंट स्वरूप लाया। बादशाह उससे कृपा पूर्वक मिला।

इस मंजिल पर राय रायसिंह और अन्य सेवकों को आदेश दिया गया कि वे जोधपुर और सिरोही के राज्य में ठहरें और उस प्रदेश पर निगरानी रखें। यदि शाही सेना की कूच की खबर सुनकर विद्रोही लोग गुजरात से आकर शाही इलाकों में उपद्रव करें तो उनको रोके। इस देश के विषय में जब बादशाह निश्चिंत हो गया तो उसने वहाँ से आगे प्रयाण किया। पाटन की सीमा से उसने शाह फकरुद्दीन के हाथ इतिमाद खां को पत्र लिखा और उसे सलाह दी कि वह शुभ मार्ग पर चले। इतिमाद खां ने बार-बार प्रार्थना-पत्र भेजकर इच्छा प्रकट की थी कि वह शाही दरबार के आगमन का स्वागत करेगा। जब बादशाह दीहा नामक कस्बे के पास ठहरा हुआ था तो उसको खबर मिली कि जब शेर खां ने जिसका अहमदाबाद पर कब्जा था, बादशाह के आने की खबर सुनी तो वह सूरत और जूनागढ़ के इलाके की ओर भाग गया और अपने पुत्रों को जिनके नाम मुहम्मद खां और कदर थे, पट्टन भेजा कि वे उसके कुटुम्ब को और सामान को सुरक्षित स्थान पर ले जायें। वे इस काम को पूरा करके अब अपने पिता के पास जा रहे थे। बादशाह को यह भी मालूम हुआ कि इब्राहीम हुसेन मिर्जा, इतिमाद खां की सहायता करने के लिये आया था परन्तु वह अपने स्थान पर वापस चला गया और इतिमाद खां बादशाह की सेवा में आना चाहता है। बादशाह ने राजा मानसिंह और कुछ सैनिक शेर खां के पुत्रों को पकड़ने के लिये भेजे परन्तु वे पर्वतीय घाटियों में भाग गये थे तथापि शाही लोग उनका सामान लूट लाये। 7 नवम्बर, 1572 को बादशाह का शिविर पट्टन के निकट लगा जो पहले नहरवाला कहलाता था। वहाँ बादशाह ने मिर्जा खां से उसके पिता बैराम खां की मृत्यु के विषय में प्रश्न किये और कहा कि "पट्टन उसी के सुपुर्द कर दिया जायेगा परन्तु अभी तुम्हारे पास इसकी देखरेख के लिये साधन नहीं है इसलिये सैयद अहमद खां को इस काम के लिये नियुक्त कर दिया जायेगा। उस स्थान से बादशाह ने हकीम ऐनुल्मुल्क को इतिमाद खां और मीर अबू तुराब को दरबार में ले आने के लिये भेजा। मिर्जा मुकीम ने जो मिर्जा सरफुद्दीन हुसेन का रिश्तेदार था सर्वप्रथम दरबार में आकर बादशाह के प्रति अधीनता प्रकट की। इसी स्थान पर मुजफ्फर खां की सेवाओं का बादशाह को स्मरण आया और उसने सोचा कि गुण उसमें अधिक थे और दुर्गुण कम। इसलिये आदेश दिया गया कि उसको हज्जाजन जाने दिया जाये और दरबार

में बुलाया जाये। 13 नवम्बर, 1572 को बादशाह ने अहमदाबाद की ओर प्रयाण किया।''

मुजफ्फर खां गुजराती

मुजफ्फर खां गुजराती, गुजरातियों का शासक था। वह शेर खां फुलादी से अलग होकर पास ही परेशानी के साथ भटकता फिरता था। बादशाह ने मीर खां यशावल और फरीद करावल को भेजा और उनके पीछे अबुल कासीम नमकीन और कर्म अली को भी भेजा कि उस परेशान व्यक्ति को दरबार में ले आये। जब मीर खां थोड़ी दूर पहुंचा तो मुजफ्फर का छत्र उसके हाथों में आ गया। फिर अबूल कासीम और कर्म अली ने पीछा किया। अन्त में मीर खां ने मुजफ्फर को जो एक खेत में छिपा हुआ था, पकड़ लिया और शाही दरबार में हाजिर किया। बादशाह ने दया करके उसको कर्म अली के सुपुर्द कर दिया। उसी रात्रि को मीर सईद हामिद बुखारी और उलूग बेग हब्सी अपने सैनिकों के साथ आये और उन्होंने बादशाह को सलाम किया। बादशाह उनसे अनुग्रहपूर्वक मिला। कुछ समय पश्चात् शाह फकरुद्दीन और हकीम ऐनुल्मुल्क, मीर अबू तुराब को शाही दरबार में ले आये और उन्होंने यह भी खबर दी कि इतिमाद खां भी अधीनता प्रकट करने के लिए आ रहा है। शाह फकरुद्दीन के आने से पहले ही उसने मीर अबू तुराब वजीह अलमुल्क और मुजाहिद खां को दरबार में इसलिए भेजा था कि वे उसके पक्ष में विश्वास उत्पन्न करके वापस आयें। जब शाह फकरुद्दीन राजदूतों के साथ दरबार में गया तो उसने उनको सान्त्वना दी और इतिमाद खां के पास गया। हकीम ऐनुल्मुल्क ने आकर अबू तुराब को पीछे हटा दिया और उसको अहमदाबाद ले गया। इसके पश्चात् बड़ी बहस के पश्चात् गुजरात के अफसरों और बड़े-बड़े उमरावों ने बादशाह के नाम का सिक्का जारी किया और खुत्बा पढ़ा। इतिमाद खां ने राजदूतों को कारी नामक कस्बे से अबू तुराब के साथ बिदा कर दिया। जब बादशाह ने यह खबर सुनी तो उसने ख्वाजा जहां, खान आलम और शादिक खां को उनके स्वागत के लिए भेजा और ये लोग उनको सम्मानपूर्वक ले आये। दूसरे दिन जब शाही सेना जूताना से आगे बढ़ी तो इतिमाद खां और बहुत-से लोग निकट आये। ख्वाजा जहां मीर अबू तुराब और अन्य कई लोगों को आदेश हुआ कि वे आगे जाकर इतिमाद खां की अधीनता प्रकट करने के लिये ले आये। बादशाह एक विशाल हाथी पर सवार हुआ और राजदूत इतिमाद खां को लेकर आये। जिसने विधिपूर्वक सलाम किया, फिर इख्तियारुलमुल्क, मलिक, यशिरक, झुझार खां हब्सी, वजीह अल्मुल्क और मुजाहिद खां भी दरबार में उपस्थित हुए और सबसे यथायोग्य भेंट की गई। इतिमाद खां और गुजरात के कुछ सरदारों को आदेश दिया गया कि वे हाथी पर बैठ कर निकट आये। बादशाह ने दिन भर उनसे बातचीत की और उनको प्रोत्साहन दिया। वह कारी नामक कस्बे में ही ठहरा। सेफउल्मुल्क और कुछ अन्य लोग महमूदाबाद में थे। शादीक खां और अन्य सेवकों को भेजा कि उनको अधीनता प्रकट करने के लिए ले आये। वहां पर गुजरात के अधिकारियों को बुलाकर कहा गया कि सारा प्रान्त इतिमाद खां के सुपुर्द कर दिया जायेगा और उन सारे अधिकारियों को भी उसी

के पास छोड़ दिया जायेगा, जिनको वह चाहेगा। परन्तु यह उचित है कि इनमें से प्रत्येक अधिकारी इस बात की जमानत दे कि चौकसी रखने में कोई कमी नहीं होगी और वे सब शर्तें पूरी करेंगे। अब मीर अबू तुराब ने इतिमाद खां की ओर और इतिमाद खां ने तमाम अन्य लोगों की जमानत दी परन्तु हब्सी लोगों की जमानत किसी ने भी नहीं दी। तब बादशाह ने आदेश दिया कि इन लोगों को शाही दासों में सम्मिलित कर लिया जाये और जैसे वे सुल्तान महमूद की सेवा करते थे वैसे ही करते रहें। दूसरे दिन शाही सेना शान्तज नामक गांव पर पहुंची।

दूसरे दिन यह घटना घटी कि बदमाश लोगों ने शोर मचाया कि शाही सेना को आदेश दे दिया गया है कि गुजराती शिविर को लूट ले। सैनिकों ने लूटना शुरू भी कर दिया और बड़ा उत्पात हो गया। जब यह बात बादशाह ने सुनी तो उसने बड़े-बड़े अधिकारियों को आदेश दिया कि लुटेरों को दण्ड दिया जाये और जिनके पास लूट का माल मिले उनका वध कर दिया जाये। बादशाह दरबार में बैठ गया और भयंकर हाथी तैयार रखे बल्वा करने वाले उसके समक्ष लाये गये और उनको हाथियों के पैरों से कुचलवा दिया। लूटा हुआ माल लोगों को वापस कर दिया और थोड़ी ही देर में शान्ति हो गई। 20 नवम्बर, 1572 को शाही ध्वज अहमदाबाद के पास जा पहुंचे, बड़े और छोटों ने अधीनता प्रकट की। बादशाह के आने से अहमदाबाद में शान्ति हो गई। उस दिन बादशाह की तुला हुई और बड़ा आनन्द मनाया गया। जिस समय शाही डेरे अहमदाबाद में थे तो अमीन खां गोरी के राजदूत उपयुक्त भेटें लेकर आये और उन्होंने बादशाह को सलाम किया। इब्राहीम हुसेन मिर्जा ने भी एक मिथ्याचारपूर्ण प्रार्थना-पत्र और भेंटें भेजीं लेकिन उसके व्यवहार में सचाई नहीं थी इसलिये बादशाह ने स्वीकार नहीं की।

***

प्रकरण 2

अहमदाबाद से खम्बात को शाही सेना का प्रयाण और बादशाह ने समुद्र देखा

बादशाह ने अहमदाबाद और महीन्द्रीया माही नदी के इस ओर का इलाका खान आजम मिर्जा, अजीजकोका के सुपुर्द किया। दूसरी ओर का इलाका अर्थात बड़ौदा, चांपानेर,

सूरत और जो इलाके मिर्जाओं ने छीन लिये थे उन गुजराती अधिकारियों के हवाले किये गये जिन्होंने शाही सेवा स्वीकार कर ली थी। सब के ऊपर इतिमाद खां गुजराती को नियुक्त किया गया। पुराने और नये अधिकारियों ने वचन दिया कि वे इलाकों का शासन करेंगे और मिर्जाओं को निर्मूल कर देंगे। इसके पश्चात् बादशाह ने निश्चय किया कि समुद्र देख कर वह वापस राजधानी अहमदाबाद को लौटेगा। अत: 2 दिसम्बर, 1572 को उसने खम्बात के बन्दरगाह की ओर प्रयाण किया जो अहमदाबाद से 30 कोस के अन्तर पर है। गुजराती अधिकारियों ने थोड़े दिन का अवकाश लिया और अपनी व्यवस्था करने के लिये वे उसी नगर में ठहर गये। उनको वश में रखने के लिये और सभ्यता सिखाने के लिये बादशाह ने हकीम ऐनुल्मुल्क को वहीं छोड़ा।

मार्ग में ही बादशाह ने सुना कि इख्तियारलमुल्क भाग गया है और इतिमाद खां तथा अन्य गुजराती अधिकारी भी कुमार्ग का अवलम्बन करने वाले हैं इसलिये शाबास खां को आदेश दिया गया कि वह शीघ्र ही जाकर उन धोखेबाजों को ले आये और उनको मूल के मार्ग पर चलने से रोके।

जब बादशाह खम्बात पहुंचा तो रूम, सीरिया, इरान और तुरान के लोग उसकी सेवा में उपस्थित हुए। वह कुछ चुने हुए लोगों के साथ जहाज पर सवार होकर समुद्र पर गया, फिर शाबास खां, इतिमाद खां और अन्य गुजराती अधिकारियों को लेकर दरबार में आया। वे लोग धोखा दे चुके थे और स्वामिभक्ति की प्रतिज्ञा को भंग कर चुके थे। इसलिये बादशाह ने पुन: देश की व्यवस्था पर ध्यान दिया और उनमें से प्रत्येक को स्वामिभक्त सेवक के सुपुर्द कर दिया। इन लोगों में इतिमाद खां नमूना था। गुजराती अधिकारी शाही सेना का आगमन सुनकर अधीनता तो प्रकट कर चुके थे परन्तु वह पुरानी व्यवस्था को ही रखना चाहते थे। बादशाह ने कृपा करके यह बात मान ली थी। कुछ दूरदर्शी सलाहकारों ने सुझाया था कि उनको पकड़ लिया जाये परन्तु बादशाह ने उनका प्रस्ताव नहीं माना बल्कि उन पर और भी अधिक विश्वास करने लगा। जब बादशाह समुद्र देखने जा रहा था और ये लोग दुर्भावना से पीछे ठहर रहे थे तो उनके व्यवहार से प्रकट हो रहा धा कि उनके मन में क्या है। परन्तु बादशाह रवाना हुआ, उसके दूसरे दिन रात में अख्तियारुल्पुल्क मौका देखकर भाग गया और इतिमाद खां और अन्य लोग भी जो उससे मिले हुए थे, भागने ही वाले थे कि अबू तुराब और हकीम ऐनुल्मुल्क आ पहुंचे। षड्यन्त्रकारियों ने अपनी युक्तियों से उनको नष्ट करना चाहा। वे बन्दी बनाकर मारे जाने वाले थे, तब शाबास खां आ गया और वे अपने कुत्सित विचारों को कार्यान्वित नहीं कर सके। शाबास खां ने सोचा कि यदि वह इख्तियारुल्मुल्क को पकड़ने के लिये शीघ्र आगे जायेगा तो ये लोग भाग जायेंगे। इसलिये वह शाही दरबार में पहुंचा, बादशाह ने इनके असली स्वरूप को समझ लिया और उनको दण्ड दिया।

जब इन दुमुहे और दुष्ट लोगों के विषय में बादशाह निश्चिन्त हो गया तो उसने विद्रोही मिर्जाओं को निर्मूल करने का विचार किया। मालवा में विफल होकर जब से ये लोग गुजरात आये थे तब से बड़ौदा इब्राहीम हुसेन मिर्जा के हाथ में सूरत मुहम्मद हुसेन मिर्जा के हाथ में और चांपानेर शाह मिर्जा के हाथ में आ गये थे। बादशाह ने खम्बात का बन्दरगाह हसन खां खजांची के सुपुर्द किया और बड़ौदा की ओर कूच किया। बड़ौदे से उसने शाहबास खां, कासिम खां और बाज बहादुर खां और कुछ अन्य लोगों को चांपानेर की ओर भेजा। उन्हें आदेश दिया कि चांपानेर दुर्ग को विद्रोहियों से मुक्त किया जाये। खानखाना मिर्जा कोका को अहमदाबाद के शासन के लिये रवाना किया और शासन को भलीभांति चलाने के लिये उसको सलाह दी। कोका को सहायता देने के लिये कई बड़े-बड़े अधिकारी नियुक्त किये गये। उद्देश्य यह था कि यदि मिर्जा लोग उपद्रव करें तो उनको उचित दण्ड दिया जाये। बादशाह बड़ौदा पहुंचा, उसके दूसरे दिन उसको खबर मिली कि मिर्जा लोग सूरत के दुर्ग को दृढ़ करके चांपानेर के निकट इकट्ठे हो गये हैं। उन लोगों को दण्ड देने के लिये खान आलम राजा भगवन्तदास, मानसिंह आदि को रवाना किया। आधी रात को खबर आई कि जब इब्राहीम हुसेन मिर्जा ने बड़ौदे के दुर्ग में सुना कि बादशाह की सेना आ पहुंची है तो उसने रुस्तम खां रोमी का जो बादशाह के अधीन होना चाहता था वध करवा दिया। इब्राहीम हुसेन मिर्जा दुर्ग में नहीं टिक सका। फिर बादशाह ने निश्चय कर लिया कि वह स्वयं कूच करके इन लोगों को दण्ड देगा।

***

प्रकरण 3

इब्राहीम हुसेन मिर्जा के विरुद्ध बादशाह का प्रयाण और शत्रु की पराजय

बादशाह ने यह निश्चय किया कि विद्रोही को दण्ड देना सर्व प्रथम कर्तव्य है इसलिये उसने शाहबाज खां मीरबख्शी को आदेश दिया कि वह शीघ्रता से आगे जाकर उन अधिकारियों को वापस ले आये जो मिर्जाओं के दमन के लिये आगे भेजे गये थे। फिर मीर मुहम्मद आदि अफसरों को शाहजादों की देखरेख करने के लिये छोड़ कर अकबर रवाना हुआ। उसने ख्वाजा अब्दुल्ला आदि अपने साथ लिये और दिलावर खां को पीछे शिविर में छोड़ कर आदेश दिया कि कोई पीछे-पीछे न आये। बादशाह ने केवल दो-तीन आदमी अपने साथ लिये, उसका ख्याल था कि यदि अधिक लोग साथ होंगे तो इब्राहीम

हुसेन यह खबर सुनकर भाग जायेगा। परंतु दूरदर्शिता की दृष्टि से उसने यह आदेश दिया था कि जो सेना आगे चली गई है वह उसके साथ रहे। जब दो घड़ी रात रह गई तो बादशाह सवार हुआ। मलिक अशराक को जो उस देश से परिचित था पथ-प्रदर्शक बनाया गया। परन्तु प्रयाण बड़ी शीघ्रता से किया जा रहा था इसलिये अकबर गलत रास्ते पर चला गया, अन्त में मार्ग मिल गया और फिर और भी अधिक शीघ्रता से प्रयाण जारी रहा। आगे चले तो एक हिरण दिखाई दिया। बादशाह को विचार आया, यदि उसको मार दिया जाये तो विजय का शकुन होगा इसलिये एक चीता छोड़ा गया और हिरण दबोच दिया गया तब बादशाह के साथियों को बड़ा हर्ष हुआ। आगे चले तो शत्रु का चिन्ह भी दिखाई नहीं दिया, फिर ब्राह्मण मिला, उसने कहा कि शत्रु बीकानेर (बियाकापुर) की नदी को पार करके सरनाल जा पहुंचा है, जो 4 कोस दूर है। बादशाह ने अपने साथियों से सलाह ली तो जल्लाल खां ने कहा ''हमारी सेना अभी तक नहीं आई है और शत्रु के पास अच्छी सेना है, जब हम इतने कम हैं तो शत्रु से दिन में लड़ाई करना उचित नहीं है। मुनासिब यह होगा कि रात्रि में आक्रमण किया जाय। अकबर को यह बात पसन्द नहीं आई, उसने कहा साहस सच्चा सहायक है, बहुत-से कायर लज्जावश वीर बन जाते हैं। दिन का काम रात्रि तक स्थगित करना उचित नहीं है। जिस त्वरा और स्फूर्ति से हमने प्रयाण किया है उसी से हमको लड़ना चाहिये। अपना हृदय दृढ़ रखो, हम शत्रु को पछाड़ देंगे, अन्त में सरनाल का कस्बा जो एक पहाड़ी पर स्थित था, दिखाई देने लगा। इसी समय खबर आई कि दूसरी सेना आ रही है। अकबर को उस पर क्रोध आया; क्योंकि उन्होंने आने में विलम्ब किया था परन्तु जब उसको समझाया गया कि वह भूल से विपरीत मार्ग पर चल दिये थे और शाहबाज खां भी उनके पास देर से पहुंचा तो उसका क्रोध शान्त हुआ। तब उसने खान आलम, राजा भगवन्तदास, कुंवर मानसिंह, भूपत, भोज और कई अन्य अधिकारियों को अपने सामने बुलाया और वे शाही सवारी में सम्मिलित हो गये एवं अकबर के साथ लगभग 200 आदमी हो गये। नदी को पार करते समय मानसिंह ने निवेदन किया कि उसको हरावल में रहने की इजाजत दी जाये। अकबर ने कहा ''हमारी सेना है ही कितनी कि हम इसके विभाग करें। हम सबको मिलकर लड़ना चाहिये।'' मानसिंह ने कहा ''राज्यभक्ति वालों को विशेष अधिकार है कि वे आगे रहकर प्राण बलिदान का परिचय दें। तब बादशाह ने उसके और कुछ अन्य वीरों को हरावल में जाने की इजाजत दी। जब बादशाह ने अपना घोड़ा नदी में चलाया तो उसको थाह मिल गई और स्वामिभक्त सेवकों ने सुरक्षित रूप से नदी पार कर ली। इब्राहीम हुसेन मिर्जा कुछ समय पहले से सरनाल कस्बे में ठहरा हुआ था। जब उसने शाही सेना को आते हुए देखा तो लड़ाई के लिये तैयार होकर वह कस्बे से निकला और वह एक ऊंची भूमि पर जम गया। नदी का दूसरा तट ऊंचा-नीचा था, परन्तु वीर लोग आगा-पीछा न सोचकर आगे बढ़े। अकबर और कुछ उसके निजी साथी सरनाल के नदी द्वार पर पहुंच गये जहाँ शत्रु ने उसका सामना किया। बादशाह के कुछ वीरों ने

आगे बढ़ कर शत्रु को धूल में मिला दिया। फिर उनको मालूम हुआ कि इब्राहीम हुसेन मिर्जा कुछ विद्रोहियों के साथ दूसरी ओर जाकर लड़ने के लिये तैयार है, नगर की गलियां खचाखच भरी हुई थीं, अकबर ने उनको ज्यों-त्यों पार किया परन्तु बाबा खान काकशाल और उसके तीरंदाजों को शत्रु ने वापस धकेल दिया। फिर कितने ही योद्धा जो नदी के नालों में इधर-उधर रह गये थे सब ओर से आ गये और उन्होंने शत्रु पर आक्रमण किया। भगवन्तदास का भाई भूपत का कितने ही शत्रुओं से सामना हुआ और वह मारा गया।''

भूमि इतनी ऊबड़-खाबड़ थी और कांटेदार झाड़ियों से उतनी भरी हुई थी कि दो सवार बराबर-बराबर आगे नहीं बढ़ सकते थे तथापि अकबर आगे बढ़ा। राजा भगवन्तदास उसके बिल्कुल बराबर जा रहा था। जब जोर की लड़ाई हुई तो तीन साहसी आदमी आगे निकल कर अकबर पर झपटे, एक ने राजा भगवन्तदास पर भाला चलाया परन्तु राजा घोड़े पर डटा रहा और अपने भाले से शत्रु पर प्रहार किया। शत्रु का वार तो सफल नहीं हुआ परन्तु राजा ने शत्रु को मार गिराया। उसी समय दो शत्रुओं ने अकबर पर आक्रमण किया। कांटेदार झाड़ियों के कारण बड़ी रुकावट हो रही थी। जब अकबर ने देखा कि दो शत्रु उसके निकट आ रहे हैं तो उसने घोड़े को एड लगाई तो घोड़ा झाड़ियों के ऊपर से कूद कर शत्रु के सामने चला गया और वे भाग गये। बादशाह के सौभाग्य से इब्राहीम हुसेन मिर्जा हार गया और थोड़े-से आदमियों ने इतनी बड़ी विजय प्राप्त कर ली।

बादशाह ने चाहा कि इब्राहीम हुसेन का पीछा करते रहना चाहिये और उसको पकड़ना चाहिये परन्तु अब अंधेरा हो गया था। इसलिये बादशाह वापस सरनाल कस्बे के डेरे में भाग गया। उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया और अपने साथियों को पुरस्कृत किया। उसने इस विजय की घोषणा सर्वत्र भेजी। 24 दिसम्बर, 1572 को वह अपने शिविर में आ गया। शाह कुली खां महरम और कुछ अन्य चुने हुए वीरों को सूरत दुर्ग के समीप जाकर घिरे हुए लोगों को बच कर भाग जाने से रोकने के लिये भेजा, जब इसकी खबर घिरे हुए लोगों को मिली तो मिर्जा कामरान की पुत्री और इब्राहीम हुसेन मिर्जा की पत्नी गुलरुख बेगम अपने पुत्र मुजफ्फर हुसेन मिर्जा और अपने कुछ विश्वस्त सेवकों को साथ लेकर दक्षिण की ओर चली गई। अधिकारियों ने उसका पीछा किया परन्तु वे सफल नहीं हुए और वह बुद्धिमती महिला पुरुषार्थपूर्वक उनसे बचकर भाग गई।

दूसरी घटना यह हुई कि शाहबाज खां बख्शी बेगी को दंड दिया गया जिससे साम्राज्य के दूसरे स्तम्भों को भी चेतावनी मिली, कारण यह था कि इसकन्दर अफगान का पुत्र महमूद बेगी के सुपुर्द किया गया था परन्तु वह तरकीब से पहरेदारों से बच कर दक्षिण की ओर भाग गया। अकबर ने बेगी को बहुत फटकारा जिसका उद्देश्य यह था कि साम्राज्य के दूसरे सेवक सदैव सचेत रहें और कर्तव्य पालन में किसी प्रकार की शिथिलता न करें।

***

प्रकरण 4

सूरत दुर्ग पर आक्रमण

अकबर सूरत दुर्ग को जीतने की तैयारी करता है। जब अकबर को यह मालूम हुआ कि विद्रोही लोग सूरत दुर्ग को अपना शरण स्थान बना कर उसको दृढ़ कर रहे हैं तो उसने इस दुर्ग को जीतने का विचार किया। विद्रोहियों ने दुर्ग हमजबान नामक एक व्यक्ति के सुपुर्द कर दिया था जो पहले अकबर का अंगरक्षक था परन्तु अब विद्रोही बन गया था। अकबर ने राजा टोडरमल को आदेश दिया कि दुर्ग में प्रवेश करने और निकलने के उपायों को देखकर खबर दे कि उसको किस प्रकार जीता जा सकता है। राजा ने खबर पेश की कि इस दुर्ग को सुगमता से जीता जा सकता है परन्तु स्वयं बादशाह को वहाँ जाना चाहिये। उस समय पूर्वी प्रान्तों में भी विद्रोह हो रहा था इसलिये सूरत के घेरे का नियन्त्रण करना बादशाह के लिये दुष्कर था परन्तु वह यह भी जानता था कि यदि किसी काम में विलम्ब होगा और वह स्वयं इस पर ध्यान नहीं देगा तो विद्रोहियों की जड़ें जमी रहेंगी इसलिये उसने निश्चय किया कि यह काम उसी को करना चाहिये। तब उसने आदेश दिया कि शाहम खां जलेर चांपानेर दुर्ग को जाये और वहाँ से कासिम खां मीर बहर को बादशाह के पास भेज दे क्योंकि यह मीर बहर शाबात और सुरंगे बनाने में कुशल था। खान आजम के नाम आदेश दिया गया कि बादशाह इस काम को शीघ्र ही पूरा कर देगा, तुम अन्य अधिकारियों सहित जो तुम्हारे पास सहायतार्थ छोड़े गये हैं यह देखना कि यदि उपद्रवी मिरजा लोग देश पर आक्रमण करें तो उनको उपयुक्त दण्ड दिया जाये। शेर बेग तवाची को मालवा भेजा गया और कुतुबुद्दीन मोहम्मद खां और अन्य मालवा के अफसरों को शीघ्रातिशीघ्र गुजरात बुलाया गया, उद्देश्य यह था कि यदि आवश्यकता हो तो खान आजम सब अधिकारियों से काम लेकर इलाके में से विद्रोह का कड़ा दूर कर सके।

सूरत को प्रयाण

जब अहमदाबाद की व्यवस्था के विषय में अकबर निश्चिन्त हो गया तो 31 दिसम्बर, 1572 को उसने बड़ौदा से सूरत की ओर कूच किया। वह कूच दर कूच शिकार करता हुआ और व्यवस्था जमाता हुआ जाता था। 11 जनवरी, 1573 को वह दुर्ग के समीप पहुंच गया, उसके शिविर में तोप के गोले और मनजानिक के पत्थर गिरा करते थे। बादशाह का शिविर दुर्ग के अति निकट था इसलिये सेवकों के कहने से वह पास के जंगल में चला गया। यहाँ भी तोप के गोले शाही शिविर की सीमा में गिरा करते थे। परन्तु ईश्वर ने बादशाह की रक्षा की। उसने, उसकी सेना ने दुर्ग को घेर लिया और अनुभवी राजभक्त लोगों को दुर्ग के आस-पास का काम सौंप दिया गया। दुर्गरक्षक लोगों का दुर्ग की दृढ़ता पर, सामान

की विपुलता पर और गोलों की संख्या पर विश्वास था। मिर्जा लोगों का विद्रोह सब जानते थे। इसलिए वे लोग भूल में पड़े रहे, कुछ लोग बार-बार बाहर निकलकर तोपमंचों पर आक्रमण करते थे। एक दिन चारों ओर गोलों की वर्षा हो रही थी तो सेफ खां एक गोली का शिकार हो गया परन्तु एक मास बाद उसको स्वास्थ्य प्राप्त हो गया। किसी ने उससे कहा कि बादशाह तुमसे प्रसन्न नहीं हैं। तुम जान-बूझकर खतरे के स्थान पर क्यों चले जाते हो? उस वीर ने उत्तर दिया सरनाल की लड़ाई के समय में मैं मार्ग भूल गया। इसलिये उस स्थान पर नहीं पहुंचा जहाँ पुरुषार्थ की परीक्षा हो रही थी। इसलिए मुझे अपना जीवन भारभूत मालूम होता है। मैं इसको हल्का करना चाहता हूँ। दुर्गरक्षकों ने अपने हाथी और सम्पत्ति उस देश के जमीदार राणा रामदेव के सुपुर्द कर दी थी। तब शाही कैम्प वहाँ लगा हुआ था तो सेना के नौकरों ने इस हाथी आदि को छीन लिया। उन्होंने समझा कि यह बहुत अच्छा शकुन हुआ। बादशाह ने उनको भलीभांति पुरस्कृत किया।

इसी समय एक घटना यह हुई कि बादशाह ने कुछ अफसरों को राजधानी भेजा। मुहम्मद हुसेन मिर्जा और शाह मिर्जा पट्टन में घात लगाये बैठे थे और उपद्रव करने का अवसर देख रहे थे। इब्राहीम हुसेन मिर्जा सरनाल के रणक्षेत्र से आकर ईडर के इन दोनों विद्रोहियों से मिल गया था। इसके साथ ही एक घटना यह हुई कि सरनाल में इब्राहीम की पराजय के विषय में भाइयों में बहस हो गई और उत्तेजक भाषा का प्रयोग हुआ और उसके बाद झगड़ा हो गया। इब्राहीम हुसेन मिर्जा अपने भाइयों से रुष्ट होकर अलग हो गया और उसने राजधानी पर आक्रमण करने का निश्चय किया। उसके भाई बड़े दम्भी थे और उनके बुरे दिन आ गये थे। वह इब्राहीम के चले जाने पर प्रसन्न हुए। उसको समझाने का कोई प्रयास उन्होंने नहीं किया। जब यह बात बादशाह के कान तक पहुंची तो उसने महमूद खां, बिरहा, शाह कुली खां मेहरम और राजा भगवन्तदास को राजधानी के लिये नियुक्त करके आदेश दिया कि वह इब्राहीम हुसेन मिर्जा का पीछा करे। शाह खां को आदेश दिया कि वह चांपानेर का घेरा छोड़ कालपी आ जाये जो उसकी जागीर थी। खबर यह थी कि इब्राहीम कालपी पहुंच गया है। जब बड़े-बड़े अधिकारी राजधानी में पहुंचे तो इब्राहीम हुसेन मिर्जा का उत्पात दब गया था और पूर्व के अफगानों ने सिर उठा लिये थे। मुनीम खां खानखाना सहायतार्थ प्रार्थना कर रहा था। राजा बिहारीमल ने, जो राजधानी का प्रशासन चला रहा था, पूर्वी प्रान्तों की ओर सेना भेज दी थी जो इटावा पहुंच गई थी। उसी समय लूड़ी दावत को छोड़ गया और विद्रोही इधर-उधर हो गये। इसके फलस्वरूप शाही सेना वापस राजधानी को आ गई।

अब यहाँ पूर्वी प्रान्तों का संक्षिप्त वृत्तान्त लिखना आवश्यक है। सुलेमान करारानी सलीम खां का एक अधिकारी था जिसने उड़ीसा, बिहार और बंगाल पर अपना अधिकार जमा लिया था। वह बड़ा मिथ्याचारी था। खुले तौर पर वह आज्ञा का उल्लंघन नहीं करता था। वह दरबार में प्रार्थना-पत्र और भेटें भेजा करता था। इससे उसके मिथ्याचार का पर्दा

नहीं फटा। जब सुलेमान की मृत्यु हो गई तो अफगानों ने उसके ज्येष्ठ पुत्र बायजीद को उसके स्थान पर बिठा दिया, इससे बायजीद की मूर्खता में और भी वृद्धि हो गई, उसने अपने नाम का खुत्बा पढ़वाया। वह अपने दम्भी और विरोधी सरदारों को अपने पिता की भांति वश में नहीं कर सका। वह उन पर अत्याचार करने लगा, उनको सताने लगा। उसने अपने पिता के सलाहकारों को भी हटा दिया। उसके चचेरे भाई इमाद का लड़का हंसू था। यह बायजीद का दामाद भी था और दोनों में मेल था। परन्तु यह बायजीद के दुर्व्यवहार से चिढ़ गया और कलहप्रिय लोगों के उकसाने से उसने बायजीद को मार डाला। तब लूदी नामक एक व्यक्ति ने, जो अफगानों की भावनाओं का प्रतीक था, दूसरे अधिकारियों से मिलकर सुलेमान के छोटे पुत्र दाऊद को गद्दी पर बिठा दिया और हंसू को मारा डाला। गूजर करारानी उस देश में तलवार का धनी था। उसने बायजीद के पुत्र को बिहार में गद्दी पर बिठा दिया। तब लूदी एक बड़ी सेना साथ लेकर बंगाल से बिहार की ओर चला। मुनीम खां खानखाना ने इस विषय पर पूरा ध्यान नहीं दिया था। लूदी ने चालाकियों का उपयोग किया था इसलिये गूजर ने अभियान किया।

इसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है। जब सुलेमान की मृत्यु का पता लगा तो मुनीम खां ने चिनाव से बिहार की ओर कूच किया। खानखाना ने तीन--चार अधिकारियों और अन्य लोगों को हाजीपुर के विरुद्ध और तीन-चार को पटना के विरुद्ध भेजा। गूजर उनका सामना नहीं कर सका। इसलिये उसने भेटें भेजीं। मेलजोल की बातें कीं और शाही सेवा करने का वचन दिया। उसने यह भी कहा कि मैं बंगाल-विजय में सहयोग दूंगा। मेरी प्रार्थना है कि मुझे आज ही बादशाह के सेवकों में भर्ती कर लिया जाये। मेरे परिवार और मेरे आश्रित लोगों के निर्वाह के लिये मुझे गोरखपुर दे दिया जाये और बिहार प्रान्त शाही अफसरों की जागीर में दे दिया जाये या सरकार हाजीपुर और बिहार इस वर्ष मेरे पास रहने दिये जायें। मैं उनकी उपज का हिसाब सरकार में पेश करूंगा। अगले वर्ष मुझे बंगाल की जागीर मिल जाये। मुनीम खां खानखाना ने यह प्रार्थना स्वीकार कर ली। वह गूजर को गोरखपुर देने ही वाला था, इसी बीच में लूदी को, जो इन कस्बों का प्रबन्धक था और प्रान्त में बड़ा चालाक था इस मामले की खबर मिली तो हाशिम खां से मिल कर उसने सारा काम बिगाड़ दिया। हाशिम खां सदैव दो चालें साथ-साथ चला करता था। जब मुनीम खां से गूजर खां को कोई आशा नहीं रही तो उसने आवश्यकतावश लूदी से मेल किया, मुनीम खां लूदी से उपयुक्त भेंटें लेकर वापस चला गया।

इसी समय खबर आई कि यूसुफ खां ने गोरखपुर लेकर लड़ने की तैयारी कर ली है। इसका वृत्तान्त यों है।

मुनीम खां ने सुलेमान उजबेग के पुत्र यूसुफ मुहम्मद को दरबार में पेश किया था और उसके राजविद्रोह की बातें सुनाई थीं तब बादशाह ने आदेश दिया था कि उसको कारागार में रख दिया जाये ताकि वह सुधर जाये और उस पर निगरानी रखी जाये। जब

शाही सेना ने गुजरात की ओर प्रयाण किया तो यूसुफ मुहम्मद राजधानी के कारागार से भाग गया और कुछ बदमाशों को एकत्र करके उसने गोरखपुर छीन लिया। जब खानेखाना ने यह खबर सुनी तो उसने 4 सरदारों को इस विद्रोह को दबाने के लिए भेजा। वह खुद भी तीन सरदारों को साथ लेकर महमूदाबाद कस्बे से रवाना हुआ। मार्ग में मजनूं खां और दूसरे काकशालों को उस पर शंका हुई तो वे उसे छोड़ गये। कारण यह था कि व्यर्थ की बातें करने वाले झूठे लोगों ने यह बातें फैला दी थीं कि बादशाह के निजी काकशाली सेवकों ने शाहबाज खां को मार डाला और मिर्जाओं से मेल कर लिया है। इसलिये बादशाह ने मजनूं खां को पकड़ लिया। खानेखान ने अपने दो बड़े आदमियों को मजनूं खां को शान्ति देकर उसको वापस बुलाने के लिये भेजा। इन दूतों ने अफवाहों का खंडन किया। परन्तु वे सफल नहीं हो सके। इसी बीच में बाबा और जब्बारी के पत्र आये, जिनमें बादशाह की उदारता और उनकी सेवा का उल्लेख था। मजनूं खां को अपने व्यवहार पर लज्जा आई और वह खानेखाना के शिविर में चला गया। खानेखाना गोरखपुर को जीतकर उस समय वापस आया जब मजनूं खां आ पहुंचा था। दोनों में शिष्टाचार की बातें हुईं। इसी बीच में दाऊद के विनाश का दिन भी आ गया थ। वह दुस्साहस करके जौनपुर की तरफ चला गया। उसने लूदी को अच्छी सेना और हाथी देकर आगे भेजा। तो उसने जमानिया को छीन लिया। मुहम्मद कासिम मुहरदार ने कुछ शर्त करके यह स्थान समर्पित किया था। खानेखाना ने अधिकारियों को एकत्र किया और मुहम्मद कुली खां बरलास और राजा गजपति को एक बड़ी सेना के साथ आगे भेजा। वह स्वयं धीरे-धीरे प्रयाण करने लगा।

जब जमानियां छीन लिया गया तो लूदी का अभिमान और साहस बढ़ गया और उसने यूसुफ मुहम्मद को जो गोरखपुर से भागकर अफगानों में शामिल हो गया था। 5 या 6 हजार आदमियों के साथ गंगा पार भेजा। मिर्जा हसन खां, राजा गजपति और मुनीम खां के दूसरे सेवकों ने बादशाह के सौभाग्य पर भरोसा करके संभल कर लड़ाई लड़ी। विद्रोही हार गये, कितने ही मारे गये, बहुत-से नदी में डूंब गये। इसके पश्चात् मुहम्मद कुली खां बरलास और अन्य अफसर शाही सेना में आ मिले और गाजीपुर में सेना खड़ी हो गई। खानखाना भी उपयुक्त सेनासहित उनमें शामिल हो गया। लूदी ने सियाह आब और गंगा के मध्य में एक दुर्ग का निर्माण किया और वहाँ पर एक बड़ी सेना जमाई। दोनों पक्ष के वीर लोगों में प्रतिदिन लड़ाई होने लगी। यद्यपि शाही सेनापतियों ने वीरतापूर्वक लड़ाई लड़ी। परन्तु शत्रु उनसे अधिक सबल था और उसके पास हाथी और तोपें अधिक थीं। उधर शाही सेना सूरत के घेरे में व्यस्त थी इसलिये मुनीम खां ने सन्धि का प्रस्ताव किया। जो लूड़ी खां ने अभिमान में आकर स्वीकार नहीं किया। तब शाही सेनापति विचित्र स्थिति में पड़ गये। लड़ाई करना तो उचित नहीं था और पीछे हटना कठिन था। एकाएक बादशाह की विजय का शुभ समाचार आया तब लूदी संधि करके वापस चला गया।

इस घटना का शिक्षाप्रद वृत्तान्त यह है कि जब दाऊद बंगाल से मूंघेर गया तो उसने

ताज के लड़के यूसुफ खां को इस भय से मार डाला कि लूदी उसको गद्दी पर बिठा देगा। यद्यपि इसकी प्रेरणा बादशाह के सौभाग्य से मिली थी तथापि यह वास्तव में द्वेषपूर्ण लोगों की बातों का परिणाम था। लूदी ताज का पुराना सेवक था और उसकी पुत्री की सगाई यूसुफ के लड़के से हुई थी। दाऊद को द्वेषपूर्ण लोगों की उन बातों पर विश्वास हो जाता था, जो वे लूदी के विषय में कहा करते थे। जब यह खबर लूदी को मिली तो उसने दाऊद को छोड़ दिया और मुनीम खां से समझौता करके शाही दरबार में उपयुक्त भेंटें भेजीं। जब दाऊद ने सुना कि लूदी उसके विरुद्ध हो गया है तो दाऊद बड़ी परेशानी से वापस हट गया और उसने गद्दी का दृढ़ीकरण किया। उसने पिता का कोष सैनिकों में बांट दिया। जलाल खां सधोरी और काला पहाड़ जो राजू कहलाता था लूदी को छोड़ गये। तब उसके अनुयायियों में बहस खड़ी हो गई। लूदी, दाऊद पर अभियान कर रहा था। उसको विवश होकर पीछे हटना और रोहतास में शरण लेनी पड़ी और उसने मुनीम खां से सहायता मांगी। उसने स्पष्ट लिख दिया कि वह शाही दरबार का सेवक बन गया है और तुरन्त ही उससे मिलना चाहता है और उसे आशा है कि उसको शाही दरबार में उपस्थित होने का गौरव प्राप्त होगा। मुनीम खां ने उसको सहायता भेजी और शाही सेना के आगमन की प्रतीक्षा की।

सूरत के घेरे में एक घटना यह हुई कि मुहम्मद हुसेन मिर्जा और दूसरे विद्रोही हार गये।

***

प्रकरण 5

खान आजम मिर्जा अजीज कोकलताश की मुहम्मद हुसेन मिर्जा और फुलादियों से लड़ाई और उनकी पराजय

जब इब्राहीम हुसेन मिर्जा को शाही सेना ने गुजरात से निकाल भगाया तो वह राजधानी (अहमदाबाद) की ओर गया। उस समय मुहम्मद हुसेन मिर्जा, शाह मिर्जा और फुलादी लोग पहाड़ियों में बिखरे हुए थे, उन्होंने आपस में मिलकर पट्टन नगर पर आक्रमण किया। सैयद अहमद खां ने दुर्गरक्षा के निमित्त भरसक प्रयत्न किया। जब खान आजम को खबर मिली कि विद्रोही लोग एकत्र हो गये हैं तो उसने सेना जुटायी। उसी समय शेर बेग

तवाची जिसको मालवा के अधिकारियों को लाने के लिये भेजा गया था वह तीन बड़े-बड़े और अन्य जागीरदारों को मालवा से ले आया। खान आजम ने भी सैनिक भेजे और मुहम्मद बुखारी को, जो शाही आदेशानुसार सूरत जा रहा था, वापस बुला लिया।

जब सब अधिकारी एकत्रित हो गये तो खाने आजम ने अपनी सेना की व्यवस्था की। मध्य में वह स्वयं रहा, उसके साथ शाहबुदा खां आदि पांच बड़े सरदार और बहुत-से अन्य लोग थे। कुतुबुद्दीन मुहम्मद खां और अन्य लोगों को दायें पार्श्व का नेतृत्व दिया गया। शेख मुहम्मद बुखारी आदि पांच अफ़सर बाएं पार्श्व के अध्यक्ष बने। शाह फखरुद्दीन आदि बाएं पार्श्व के पास रहे। रुस्तम खां आदि ने अग्रसेन का नेतृत्व किया। बाज बहादुर और अन्य लोग अल्तिमश (सुरक्षित सेना) का नेतृत्व करने लगे। इस प्रकार अपनी सेना को व्यवस्थित करके खाने आजम नहरवाला की ओर कूच करने लगा जो पट्टन के नाम से प्रसिद्ध है। शत्रु ने घेरा छोड़कर शाही सेना का मुकाबला किया। उनकी सेना के मध्य का नेतृत्व शेख खां फुलादी कर रहा था, मुहम्मद हुसेन मिर्जा और अन्य दो मिर्जा दाएं पार्श्व में थे। शेर खां जेष्ठ पुत्र मुहम्मद खां बांए पार्श्व का अध्यक्ष था। शेर खां का छोटा पुत्र विदर खां हरावल (अग्रसेन) के नायक थे। विद्रोही लोग उस दिन लड़ाई शुरू करना नहीं चाहते थे; क्योंकि जुझार खां आदि राजद्रोही लोग उनके पास अभी नहीं पहुंचे थे। शेर खां फुलादी ने अपना प्रतिनिधि भेजकर समझौते का प्रस्ताव किया। सेना के अग्रणी लोग भी शान्ति के पक्ष में थे। शाहबुदा खां ने खाने आजम के कान में कहा, सचेत रहो। संधि का प्रस्ताव मत मानो। इन कुटिल लोगों का उद्देश्य समय टालना है। खाने आजम ने कहा, मैं आपसे सहमत हूं। अधिकारियों का झुकाव संधि के पक्ष में था, वे मामले को नहीं समझते थे। शेर खां के कारिन्दों ने कपटपूर्ण भाषा का प्रयोग किया तो खाने आजम ने कहा ''यदि तुम लोग वास्तव में संधि चाहते हो तो अपने स्थान से पीछे हटो और डेरे लगा लो फिर हम तुम्हारा पीछा करेंगे। हमारे लिये पीछे हटना अच्छा नहीं है। इन लोगों की बातों में छल और कपट था, सच्चाई बिलकुल नहीं थी इसलिये उन लोगों ने यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया तब शाही अधिकारी रणभूमि की ओर चले। प्रातः यह कहा जाता था कि मिर्जा लोग शाही सेना पर पीछे से आक्रमण करेंगे। इसलिये मिर्जा मुकीम आदि को मध्य भाग के पीछे रखा गया।

जब दोनों सेनाओं का सामना हुआ तो शत्रु के बाएं पक्ष ने शाही सेना के दायें पक्ष पर आक्रमण किया और कुतुबुद्दहीन खां के अधिकांश लोगों को पीछे धकेल दिया फिर भी कुतुबुद्दीन खां अपने अनुचरों के साथ रणभूमि पर डटा रहा। उसने शत्रु के एक हाथी के दोनों दांतों के बीच में तलवार का ऐसा प्रहार किया कि दर्शक चकित हो गये। विद्रोही अग्रसेना के शाही अग्रसेना पर वार किया। नोरंग खां के मस्त हाथी ने उसी की सेना के एक सवार पर आक्रमण किया और उसको कुचल डाला तब शत्रु की अग्रसेना के वीर पुरुषों ने शाही अग्रसेना को धकेल दिया। अल्तिमश के भी पैर नहीं टिके, उन्होंने कायरता दिखा

दी। लड़ाई के समय उनमें से कुछ दायीं और कुछ बायीं ओर भाग गये। अफगानों ने उनका पीछा किया। लगभग 500 सवार खाने आजम के सामने पहुंच गये परन्तु उनको तितर-बितर कर दिया। जिस दल ने अग्रसेना को और अल्तिमश को खदेड़ा था वह शाही सेना के बायें पक्ष पर टूट पड़ा। शाही सेना का उत्साह भंग हो गया। मुराद खां ने पीछे हट कर एक दृश्य उत्पन्न कर दिया। शाह मुहम्मद खां आहत हो गया। उसको नौकर अहमदाबाद ले गये। शेख मुहम्मद बुखारी और उसके कुछ रिश्तेदारों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी। विद्रोहियों ने समझा कि विजय-प्राप्त हो गई इसलिये वे लूट करने लग गये। मिर्जा लोगों ने मीर फखरुद्दीन खां पर आक्रमण किया तो उसके पैर नहीं टिक सके। कुतुबुद्दीन थोड़े-से लोगों के साथ शत्रु के सामने डटा रहा। जब विद्रोही कुतुबुद्दीन के सैनिकों को खदेड़ कर लूटमार करने में लग गये तो उसने उन पर पीछे से आक्रमण किया। ईश्वर की सहायता से पूर्ण पराजय पूर्ण विजय में परिवर्तित हो गई। खाने आजम और शाही सेना के मध्य ने अफगानों को खदेड़ भगाया और शत्रु के मध्य भाग पर आक्रमण किया जो कुतुबुद्दीन की ओर जा रहा था। शत्रु के अधिकांश लोग लूट में लग गये थे इसलिये वे शाही सेना को देख कर घबरा गये और ईश्वर की कृपा से ऐसी कीर्तिमय विजय प्राप्त हो गई। खाने आजम अपने लोगों के साथ पहाड़ी की चोटी पर खड़ा हुआ विजय घोष सुन रहा था और हर्षित हो रहा था। इस समय मिर्जा लोग दिखाई दिये, जोर की लड़ाई के बाद उन्होंने शाही सेना के बाएं पार्श्व के पास की सेना को खदेड़ भगाया था और दो कोस तक उसका पीछा किया था। यह बहुत अच्छा हुआ, यदि वे मध्य भाग पर आक्रमण करते तो स्थिति नाजुक हो जाती। जब वे चले गये और उनके आदमी लूटमार करने के लिये बिखर गये तो उन्होंने सुना, शेर खां हार गया और वे रणक्षेत्र में वापस आ गये। वास्तव में यदि वे हारे हुए लोगों का अहमदाबाद तक पीछा करते तो उनको सफलता मिल जाती परन्तु दुर्भाग्यवश वे रणभूमि को लौट आये। जब मिर्जाओं की सेना आई तो खाने आजम कितने ही स्वामिभक्त वीरों के साथ सेना सजा कर खड़ा था। शाह खुदा खां ने कहा, यह आक्रमण करने का समय है। खाने आजम आक्रमण करने ही वाला था कि यार मिर्जा ने उसके घोड़े की लगाम पकड़ ली और कहा, इतने ही सेनानायक चुपचाप खड़े हैं, आप आक्रमण कैसे कर सकते हैं। जब मिर्जा लोग और समीप आये तो उन्होंने शाही सेना की विशालता देखी और वे भागने लगे। इस प्रकार ईश्वर केअनुग्रह से दुष्कर कार्य सुकर हो गया। यदि वीर लोग उनका पीछा करते तो उनमें से शायद ही कोई प्राण बचाकर भागता। अंत में ईश्वर के अनुग्रह को देख कर अवसरवादी लोगों में कर्तव्यनिष्ठा जाग्रत् हो गई और उनके ध्येय निश्चित हो गये।

उस दिन एक आश्चर्यकारक घटना यह हुई कि शत्रु की सेना का एक मस्त हाथी, जिसका महावत बाण का शिकार हो चुका था, इधर-उधर स्वेच्छा से घूमने लगा। जहाँ वह ढोल की ध्वनि सुनता था उधर ही जाकर सैनिकों को तितर-बितर कर देता था।

आनन्द के बाजे जब थोड़ी देर के लिये बन्द हुए तो हाथी की मस्ती भी जाती रही। फिर उसको शाह खुदा खां के लोगों ने पकड़ लिया और पेशकश के साथ अकबर को भेंट किया।

जब विद्रोही हरा दिये गये तो शेर खां फुलादी शीघ्रता से जूनागढ़ की ओर तथा मिर्जा लोग दक्षिण की ओर चले गये। खाने आजम और अधिकारियों ने उनका पीछा किया। जब ईश्वर के अनुग्रह का सुसमाचार अकबर ने सुना तो उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया और आदेश दिया कि खाने आजम कुतुबुद्दीन खां और बुदा खां आदि को सेनासहित विद्रोहियों का पीछा करने के लिये भेजे और वह स्वयं दरबार में आये। जब खाने आजम रुस्तम खां आदि के साथ सरनाल जिले में था तो रिजवी खां यह फरमान लेकर उसके पास पहुंचा। इसके अनुसार 23 फरवरी, 1573 को खान आजम दरबार में पहुंच गया तो बादशाह उससे अनुग्रहपूर्वक मिला।

सूरत के घेरे के समय मुजफ्फर खां आया। यह पहले ही लिखा जा चुका है कि बादशाह ने उसके अपराध क्षमा कर दिये थे और उसको बुलाया था। जब वह अहमदाबाद पहुंचा तो खाने आजम मिर्जाओं का दमन करने के लिये चला गया था। यद्यपि खाने आजम ने उससे कहलाया था कि मिर्जाओं के दमन में वह साथ दे। परन्तु सेवा के इस अच्छे अवसर से लाभ नहीं उठाया। वह यात्रा करता रहा और बड़ौदा पहुंच गया। उस समय उसको यह फरमान प्राप्त हुआ कि जहां भी वह भाग गया हो वहीं से वापस मुड़कर शीघ्रता से खाने आजम की सहायता के लिये चला जाये। इसलिये उसको वापस जाना पड़ा। जब वह अहमदाबाद आया तो प्रकट हुआ कि शाही सेवकों को विजय प्राप्त हो गई है और शाही आदेशानुसार खाने आजम दरबार में जा रहा है। मुजफ्फर खां भी शीघ्रता से दरबार के लिये रवाना हो गया और खाने आजम के आगमन से पहले ही उसको बादशाह को सलाम करने का अवसर मिल गया। बादशाह उससे अनुग्रहपूर्वक मिला।

सूरत के घेरे के समय एक घटना यह हुई कि गोवा के और उसके पास के ईसाई शाही राज्यसिंहासन के सामने उपस्थित हुए। उनको बादशाह से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वास्तव में उनको घिरे हुए लोगों ने बुलाया था। वे दुर्ग को उन्हीं के सुपुर्द करना चाहते थे, उसकी सहायता से सुरक्षित समुद्री तट पर पहुंचना चाहते थे, परन्तु जब ईसाई दल ने शाही शक्ति का वैभव देखा और सेना की विशालता तथा घेरे के साधनों का अवलोकन किया तो उन्होंने कहा, हम राजदूतों की हैसियत से बादशाह की सेवा में आये हैं। उन्होंने अपने देश की दुर्लभ चीजें भेंटस्वरूप नजर की। अकबर ने कृपापूर्वक स्वीकार की और पुर्तगाल के विषय में तथा योरप के शिष्टाचार तथा प्रथाओं के विषय में पूछताछ की। ऐसा विदित होता था कि उसको ज्ञान की अभिलाषा थी। इसलिये उसने यह प्रश्न किये थे।

***

प्रकरण 6

सूरत दुर्ग का आत्मसमर्पण

सूरत दुर्ग को जीतने में अकबर को 1 मास 17 दिन लगे। इसके लिए लम्बी लम्बी सुरंगें बनाईं। इनसे प्राचीरें गिराई जाने लगीं। दुर्ग के चारो ओर टीले बनाये गये। वहां से दुर्ग पर गोले डाले जाने लगे। जब दुर्गरक्षकों ने यह स्थिति देखी तो उनकी निद्रा भंग हुई। अनुनय-विनय करने लगे। हमजबान ने अपने ससुर मुल्ला निजामुद्दीन लारी को शाही दरबार में भेजा। दरबारियों ने उसका बादशाह से परिचय करवाया और उसने अपनी कलामय भाषा में दुर्गरक्षकों के त्रास का वर्णन किया। बादशाह उसके प्रति कुछ नर्म हुआ। निजामुद्दीन की प्रार्थना के अनुसार अकबर ने कासिम अली खां और ख्वाजा दोस्त किला को यह आदेश देकर हमजबान के पास भेजा कि उसको लाकर उससे अधीनता स्वीकार करवावे। 26 फरवरी, 1573 को हमजबान ने दरबार में उपस्थित होकर अधीनता प्रकट की। अकबर ने उदारतापूर्वक दुर्गरक्षकों को प्राण और उनकी सम्पत्ति और प्रतिष्ठा की रक्षा का वचन दिया। परन्तु हमजबान ने व्यर्थ बकवास किया, इसलिए उसकी जीभ काट दी गई। कुछ लोगों को कारावास में रख दिया कि बड़ी-बड़ी सुलेमानी तोपें राजधानी में भेज दी जायें। ये तोपें तुर्की सुल्तान सुलेमान की मालूम होती थीं। उसका इरादा था कि हिन्दुस्तान की सीमा पर जो योरोपियन बन्दरगाह हैं वे छीन लिये जायें। परन्तु इस काम में गर्वनर के शासकों ने सहायता नहीं दी और खाद्य पदार्थों की कमी हो गई इसलिए सेना को वापस मुड़ना पड़ा।

इसी समय बकलाना का शासक बहार जी दरबार में आया। यह उधर की ओर बड़ा प्रभाव शाली जमीदार था। वह शरफुद्दीन हुसेन मिर्जा को उसके गले में जंजीर डालकर दरबार में लाया था। अकबर ने इस मिर्जा पर आरम्भ से ही कृपा रखी थी।

ख्वाजा का पुत्र

यह दर-दर घूमा करता था, जिससे इसकी नीचता प्रकट होती थी। पहले तो उसने फुलादियों को जालौर दे दिया। इस कस्बे पर बादशाह की कृपा से उसका अधिकार हो गया था फिर वह फुलादियों में मिल गया। उसने कुछ समय पट्टन में व्यतीत किया। फिर वह चंगेज खां के पास चला गया। जब चंगेज खां की मृत्यु हो गई तो वह मिर्जाओं से जा मिला। जब खान देश का शासक गुजरात पर चढ़ाई करके आया और विफल हो गया तथा क्षति उठाकर वापस चला गया तो शफरुद्दीन उससे जा मिला। तदनन्तर दुःख पाकर वह वापस आया और मोहम्मद हुसेन मिर्जा से मिल गया। जब अकबर गुजरात को जीतने के लिये आया और गुजरात के विद्रोहियों में फूट फैल गई तो ख्वाजा-ज़ादा को चाहिए

था कि दरबार में आकर क्षमा मांगता परन्तु वह दक्षिण की ओर भाग गया। उसको उपरोक्त जमींदार के इलाके में होकर गुजरना था। इस जागीरदार ने वफादारी प्रकट करने के लिये या कोई लाभ उठाने के लिये मिर्जा को पकड़ लिया और उसका सब सामान लूट लिया, जब इब्राहीम हुसेन मिर्जा की पत्नी और बच्चे इस इलाके में से होकर जा रहे थे तब भी इस जमीदार ने उनको पकड़ना चाहा था। परन्तु वह सफल नहीं हुआ तथापि इब्राहीम मिर्जा की दो वर्ष की बन्दी उसके हाथ में आ गई। जब बादशाह ने यह खबर सुनी तो उसने मीर खां यथावल को आदेश दिया कि जमींदार और उसके कैदियों को दरबार में हाजिर करे। इस समय खान देश के शासक में अपने भाई राजा अली खां को दरबार में भेज दिया था और वह नदरबार प्रदेश में पहुंच गया था। परन्तु फिर वह विचित्र विचारों के कारण वहीं रुक गया था। मीर खां को आदेश हुआ कि उसको भी ले आये। फिर ज्योतिक राय आदि को भेजा गया कि जमींदार आने में विलम्ब न करे। तब ही इन दूतों ने आदेश मान लिया और उसे तथा उसके कैदियों को दरबार में ले आये। निरपराध बच्ची को अपने संरक्षण में लेकर बादशाह ने अन्तःपुर के संरक्षकों को दे दिया, ख्वाजा-जादा को एक मानव घातक हाथी द्वारा डराया परन्तु मारा नहीं गया और कारावास में रख दिया गया।

बगलाना देश 100 कोस लम्बा और 30 कोस चौड़ा है। यहां के सरदार के पास 2000 सवार और 16000 प्यादे हैं। यहां की आय साढ़े 6 करोड़ दाम है। यहां का शासक बहारनी कहलाता है। पहाड़ियों की चोटी पर सालही और मालहीर दो दुर्ग हैं। इस देश में अन्तःपुर व चिन्तापुर दो बड़े नगर हैं। यह देश गुजरात और दक्षिण के बीच में स्थित है। इन दोनों में से बगलाना उस देश के अधीन हो जाता है जो अधिक बलवान हो। जब गुजरात शाही सेवकों के हाथ में आ गया तो बगलाना के जमींदार ने बादशाह की अच्छी सेवा की।

अकबर के हाथ में चोट

एक रात्रि को कुछ चुने हुए लोगों की मद्यगोष्ठी हो रही थी। वहां यह प्रसंग आया कि हिन्दुस्तान के लोग अपने प्राणों की चिन्ता नहीं करते। राजपूतों में ऐसा होता है कि दोनों सिरों पर तीक्ष्ण भला कोई थाम लेता है और फिर एक पुरुष इधर से, एक उधर से दौड़ने हैं। भाले की एक अणी एक आदमी को और दूसरी अणी दूसरे आदमी को छेद कर पार हो जाती है। यह सुनकर अकबर ने अपनी तलवार एक दीवार में लगा दी और उसकी नोक अपने सीने में लगा कर कहा, यदि राजपूत ऐसा करते हैं तो मैं भी इस तलवार की नोक की ओर झपटूंगा, यह सुनकर सब स्तब्ध हो गये। परन्तु मान सिंह ने तलवार पर ऐसी चोट मारी कि वह नीचे गिर गई। परन्तु अकबर को अंगूठे और तर्जनी में घाव लग गया। लोगों ने तलवार हटा दी परन्तु अकबर ने क्रुद्ध होकर मानसिंह को भूमि पर पटक दिया और दबोच दिया। सैयद मुजफ्फर ने मानसिंह को छुड़ाया। इसमें घाव और बढ़ गया परन्तु फिर वह मर गया।

अकबर ने सूरत का दुर्ग कुलीच खां को सुपुर्द करके उसको अच्छी शिक्षाएं दीं और 8 मार्च 1573 को अहमदाबाद की ओर प्रयाण किया। उस समय भी राजा अली खां दरबार में उपस्थित हुआ।

***

प्रकरण 7

राज्यारोहण से अठारहवां इलाही सम्वत्

12 मार्च, 1573 को इस वर्ष का आरम्भ हुआ। इस वर्ष चंगेज खां की माता ने शाही दरबार में शिकायत की कि लोभी हब्शी जुझार खां ने मित्र के वंश में आकर मेरे पुत्र को मार डाला है। यह खबर चारों ओर फैली हुई थी और शिविर में भी इसकी चर्चा हुआ करती थी परन्तु ऐसी झूठी खबरें तो प्रत्यक्ष में सच्ची मालूम होती हैं प्राय: फैल जाया करती हैं, अत: विचार करने की आवश्यकता थी। बादशाह ने आदेश दिया कि बुद्धिमान और निष्पक्ष लोग इस मामले की पूरी जांच करें और साक्षियों से पूछताछ करके परिणाम की खबर करें। फिर अपना निर्णय भेजें। उन लोगों ने जांच की तो मालूम हुआ कि आरोप सच्चा था, तब आदेश दिया गया कि चंगेज खां के हत्यारे को प्राण दंड दिया जाये। अत: छोटे ओर बड़े लोगों के समक्ष जुझार खां को हाथी के पैरों में फेंक दिया। उस वृद्ध स्त्री ने कल्पना भी नहीं की थी कि ऐसे शक्तिशाली पुरुष को दुष्कर्मों के लिये दण्ड दिया जायेगा। बादशाह के न्याय को देख कर यह चकित हो गई।

जब बादशाह की सवारी अहमदाबाद के निकट पहुंची तो नागरिकों ने बाहर आकर उसका स्वागत किया। और शुक्रवार 29 जिल्कदा को शाही डेरा अहमदाबाद के समीप खड़ा किया गया 10 दिन में वहां की व्यवस्था ठीक कर दी गई। प्रान्त का शासन खानेआजम को और सरकार पट्टन का शासन खाने किला को सौंप दिया। दुल्का, ददोंका, सैयद हमीद बुखारी को दिये गये। खाने किला और कुतुबुद्दीन खां खानेआजम के चाचा वृद्ध थे। फिर भी दूरदर्शी बादशाह ने उनको खाने आजम के अधीन रखा। क्योंकि आयु की अपेक्षा बुद्धि को अधिक महत्त्व दिया जाता है।

***

प्रकरण 8

गुजरात विजय के पश्चात् बादशाह की आगरा वापसी

विस्तृत गुजरात प्रान्त को जीत कर वहां के प्रशासन की व्यवस्था करके तथा ईद का त्योहार मनाकर बादशाह ने 13 अप्रैल, 1573 को पट्टन और जालौर के मार्ग से राजधानी की ओर प्रयाण किया। सिद्धपुर पहुंच कर उसने खानेआजम को फिर हिदायतें भेजीं। बादशाह ने लिखा कि सदैव सक्रिय रहना चाहिये, लोगों की छोटी-छोटी भूलों की उपेक्षा करनी चाहिये। विवादों का निर्णय बहुत सोच-विचार कर करना चाहिये तथा मित्रों और शत्रुओं के प्रति निष्पक्ष व्यवहार करना चाहिये। उसी दिन बादशाह उस प्रान्त के जागीरदारों से कृपापूर्वक मिला और फिर उन्हें बिदा कर दिया। राजा अली खान को भी कृपापूर्वक वापस खानदेश में भेज दिया। मालवा का शासन मुजफ्फर खां को सौंप कर उसको वहीं भेज दिया। मानसिंह और छः मुसलमान सरदारों को तथा जगन्नाथ और राजा गोपाल को आदेश दिया कि ईडर के मार्ग से शीघ्रतापूर्वक डूंगरपुर जाये और वहीं से राजधानी आये। राणा के साथ और आस-पास के अन्य जमींदारों के साथ ऐसा व्यवहार किया जाये जैसा शासक लोग करते हैं और उनको अधीनता प्रकट करने के लिये लाया जाये और जो आज्ञा नहीं माने उनको दण्ड दिया जाये।

बादशाह ने मंजिल दर मंजिल कूच किया। सिरोही पहुंचने पर उसने माधोसिंह (राजा भगवानदास के पुत्र) को और कई अन्य आदमियों को शाहजादा सुल्तान दानियाल को अजमेर ले जाने के लिये भेजा। उसको अजमेर से आगरा भेजा गया था। राजा भगवानदास की बहन को जिसका शाही अन्तःपुर में ऊंचा स्थान था, आमेर भेजा गया। वह भूपत की मृत्यु पर शोक प्रकट करने के लिये गई थी। भूपत ने सरनाल की लड़ाई में वीरगति प्राप्त की थी।

इब्राहीम हुसेन मिर्जा का अन्त

इब्राहीम हुसेन मिर्जा ने बादशाह के विरुद्ध विद्रोह किया था। जिसमें वह हारकर अपने भाइयों के पास ईडर चला गया था परन्तु भाइयों में फूट हो गई तो वह अपने छोटे भाई मसउद मिर्जा को साथ लेकर दिल्ली प्रान्त में चला गया था। वह जालौर और जोधपुर के मार्ग से नागौर आया। उस कस्बे की सुरक्षा का काम फरुख खां के सुपुर्द था। इब्राहीम ने कस्बे को घेर लिया और स्थिति वश से बाहर निकलने ही वाली थी कि राय रायसिंह और अन्य लोग जिनको बादशाह जोधपुर में छोड़ गया था, आ पहुंचे। मालदेव का लड़का राय राम भी जो सोंजत का जागीरदार था आ पहुंचा। यह सब गुजरात जा रहे थे, इन्होंने

मिलकर इब्राहीम मिर्जा का पीछा किया, जब वे निकट पहुंचे तो इब्राहीम घेरे से निकल कर शीघ्रतापूर्वक आगे चला गया। 7 जनवरी, 1573 को शाही अधिकारी नागौर आ पहुंचे और फरूख खां उनके साथ शामिल हो गया। अफसरों को मिर्जा का पीछा करने के विषय में शंका थी परन्तु राय रायसिंह के आग्रह पर सब एक हो गये और अगले दिन उसका पीछा करने लगे। शाह होते-होते कहन्तौनी नामक गांव के निकट जो नागौर के अधीन है वे इब्राहीम हुसेन मिर्जा के समीप पहुंच गये। परन्तु रात्रि के कारण उनको ठहरना पड़ा। फिर उन्होंने अपनी सेना की व्यवस्था की राय रायसिंह अपने साथियों के साथ मध्य भाग का, राय राम दाहिने भाग का और फरूख खां तथा आठ अन्य मुसलमान अधिकारी दायें भाग का नेतृत्व करने लगे। पास के तालाब सब शत्रु के हाथ में थे परन्तु जब शाही सेना के लोगों को प्यास से व्याकुलता होने लगी तो उन्होंने एक तालाब पर कब्जा कर लिया। इब्राहीम हुसेन मिर्जा ने अपनी सेना को तीन भागों में विभक्त करके शाही सरदारों पर आक्रमण किया। शत्रु ने सर्व-प्रथम राय राम की अग्रसेना पर आक्रमण किया और कुछ आगे बढ़े परन्तु राय राम ने उनको खदेड़ भगाया। इब्राहीम हुसेन मिर्जा ने अपने कुछ सैनिक मुगल अधिकारियों के विरुद्ध आगे बढ़ाये। मिर्जा ने स्वयं आक्रमण किया, शाही सेना डगमगाने लगी। परन्तु राय रामसिंह ने उसकी सहायता की। तब इब्राहीम हुसेन मिर्जा रणभूमि में डट नहीं सका और भाग गया। अधिकांश शाही लोगों की कोई क्षति नहीं हुई। परन्तु नकीब खां एक बाण से आहत हो गया परन्तु फिर वह स्वस्थ हो गया। शाही सेना रणभूमि से रात में भी नहीं हटी। दुर्भाग्य वश मिर्जा के घोड़े को तीर लगा जिससे वह मर गया तब मिर्जा को थोड़ी दूर पैदल भागना पड़ा फिर एक सेवक ने उसको घोड़ा दिया। यदि शाही अफसर अगले दिन पूर्ण परिश्रम करते तो उसको पकड़ सकते थे। परन्तु अपनी विजय से सन्तुष्ट होकर अपनी-अपनी जागीरों पर चले गये थे। इब्राहीम हुसेन मिर्जा दिल्ली की ओर चला गया। राजा बिहारी मल ने खंगार को एक सेना के साथ दिल्ली भेजा और सारे जागीरदार दिल्ली में एकत्रित हो गये। इब्राहीम मिर्जा भाग कर सम्भल पहुंच गया, वहां तैयारी करने लगा। हुसेन खां ने, जो पटियाली में था कुछ जागीरदारों को इकट्ठा किया उसी समय समाचार आया कि सूरत ले लिया गया है ओर शाही सेना कूच कर रही है। तब विवश होकर इब्राहीम को पंजाब जाना पड़ा। खान जहां और पंजाब के अन्य अधिकारी नगर कोट को छीन लेने में लगे हुए थे। इब्राहीम ने सोचा कि वहां कोई नहीं होगा और वह सफल हो जायेगा या वह सिंध के मार्ग से गुजरात लौट आयेगा। ऐसा सोचकर वह सम्भल से पंजाब चला गया।

हुसेन कुली खां ने शाही आदेशानुसार नगर कोट दुर्ग के अधिकारियों के पास सलाह का पत्र भेजा परन्तु उन्होंने ध्यान नहीं दिया। अफसरों ने कूच करके उस स्थान को घेर लिया। घेरे का काम समाप्त होने ही वाला था फिर खबर आई कि इब्राहीम हुसेन मिर्जा पंजाब पर आक्रमण करेगा तब शाही अफसरों ने परस्पर परामर्श किया। बड़े-बड़े

अधिकारियों की राय थी कि संधि कर लेनी चाहिये। और पहाड़ी प्रदेश से प्रान्त के मध्य में पहुंच जाना चाहिये। शत्रु के आने से पहले ही वहां रक्षा की व्यवस्था करनी चाहिये। खाने जहां की दूसरी राय थी उसने कहा, हमने बड़ा परिश्रम किया है। दुर्ग रक्षको की स्थिति बिगड़ गई है। इसलिये हम संधि करने के लिये तैयार नहीं हैं। अफसरों ने कहा इस दुर्ग को जीतना या नहीं जीतना महत्त्व की बात नहीं है। विचारणीय बात यह है कि विद्रोही गड़बड़ कर रहे हैं। खाने जहां ने कहा मैं इस शर्त पर संधि कर सकता हूं कि आज की कार्यवाही लिख ली जाये। और परामर्श का वृत्तान्त भी लिख लिया जाये फिर प्रत्येक व्यक्ति उस पर हस्ताक्षर कर दे। यदि यहां से हटना बादशाह को पसन्द न आये तो मुझ पर और मेरे साथियों पर कोई उत्तरदायित्व नहीं रहेगा। अफसरों ने कार्यवाही लिख ली। जयचंद राजा ने समझा कि छुटकारा हो गया। चार शर्तें रखी गईं—

1. राजा अपनी लड़की को शाही अन्त:पुर में भेजे।

2. वह उपयुक्त कर अदा करे।

3. अपने पुत्रों और रिश्तेदारों में से कुछ लोगों को अफ़सरों के साथ वह शाही दरबार में भेजे। यदि बादशाह संधि का अनुमोदन न करे तो ये लोग बादशाह के ही पास ठहरें और दुर्ग अर्पित कर दिया जाये तो वापस आयें।

4. यह प्रान्त राजा बीरबल को ज़ागीर में दे दिया गया है उसको अच्छी धनराशि मिलती रहनी चाहिये।

राजा जयचंद ने, जो दुर्ग की रक्षा कर रहा था, चारों शर्तें मान लीं। खाने जहां ने एक पांचवी शर्त रखी कि राजा गोपीचंद स्वयं सलाम करने के लिये आये और राजा के संतोष के लिये मिर्जा युसुफ खां के भाई दुर्ग में रहेंगे। और जब राजा वापस आ जायेगा तब वह दुर्ग से निकलेंगे या युसुफ खां और खुर्रम खां दुर्ग में आकर रहेंगे। अन्त में उसने युसुफ खां के भाई को भेज दिया, राजा उनको अपने साथ ले गया। राजा ने जाकर खाने जहां से सलाम की और बिदा ली तब शाही सेना ने इब्राहीम हुसेन मिर्जा के दमन का कार्य अपने हाथ में लिया। थोड़े समय बाद राजा ने वफादारी की भावना से कहा, आप सब लोग शत्रु के विरुद्ध प्रयाण कर रहे हैं तो मैं अपने स्थान को वापस क्यों लौटूं। वह सहर्ष शाही सेना के साथ हो लिया।

लूट-खसोट करता हुआ इब्राहीम मिर्जा दिपालपुर की सीमा पर आ पहुंचा था जब उसने सुना कि शाही अधिकारी लोग आ रहे हैं तो उसको छोड़ कर वह मुल्तान चला गया। शाही अफ़सरों ने अपना सामान छोड़कर इसका पीछा किया। जब वेतलम्बा नामक कस्बे के समीप पहुंचे तो उन्हें मालूम हुआ कि मिर्जा पिछले दिन ही आकर वहां ठहरा हुआ है। तब अफसरों ने अपनी सेना की व्यवस्था बनाई और उसके अनुसार आगे प्रयाण किया। उस दिन इब्राहीम हुसेन मिर्जा कुछ लोगों के साथ शिकार करने गया हुआ था। शाही सेना

के निकट आ पहुंचने की खबर सुनकर मसउद हुसेन मिर्जा लड़ने के लिए तैयार हो गया और इब्राहीम मिर्जा को ले आने के लिये उसने एक आदमी भेजा। इब्राहीम शीघ्र ही लौट आया और अपनी सेना जमा कर लड़ने के लिये आगे बढ़ा। उसने शाही सेना के बायें पक्ष के साथ और अग्रसेना के साथ लड़ाई की। ईश्वर की कृपा से विजय प्राप्त हुई। हुसेन खां, जो सम्भल से आया था वीरतापूर्वक लड़ा। मसऊद हुसेन मिर्जा पकड़ लिया गया और बहुत से पराजित विद्रोही लोग मारे गये। इस बहुत बड़ी विजय के लिये अफ़सरों ने ईश्वर को धन्यवाद दिया और मुल्तान के सूबेदार सईद खां को लिखा कि हमने तुम्हारा कर्तव्य पूरा कर दिया है और अब हम अपनी जागीरों को जा रहे हैं। विद्रोही इब्राहीम थोड़े से आदमियों के साथ इस प्रान्त में आ गया है उसको पकड़ लेना उपयुक्त सेवा होगी और सारी गड़बड़ दब जायेगी।

इब्राहीम हुसेन मिर्जा की बड़ी दुर्दशा हो रही थी। जब वह मुल्तान के जिले में पहुंचा तो विलूचियों ने उसको आगे जाने से रोका और लड़ाई हुई जिसमें उसके कुछ आदमी मारे गये। स्वयं वे भी आहत होकर एक विलूची के घर में छिप गया। जब यह बात सईद खां ने सुनी तो वह उसकी तलाश में निकला। इब्राहीम मिर्जा मिल गया और पकड़ लिया गया। इसकी खबर सईद खान ने शाही दरबार में भेज दी। जब दरबारियों ने यह पत्र बादशाह के सामने पेश किया तो उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया और आदेश दिया कि इब्राहीम हुसेन मिर्जा को दरबार में पेश किया जाये। परन्तु अब इब्राहीम की मृत्यु हो चुकी थी। 13 मई, 1573 को बादशाह अजमेर पहुंचा। वह दरगाह में तथा और वहां के लोगों को उसने बख्शीशें दीं। विशेष दरबारी लोग सुल्तान दानियाल को वहां ले आये थे। एक सप्ताह बाद बादशाह राजधानी की ओर रवाना हुआ।

जब शाही सेना सांगानेर पहुंची तो बादशाह ने निश्चय किया कि वह कुछ लोगों के साथ शीघ्रता से राजधानी की ओर चलेगा और उसके डेरे शनैःशनैः आयेंगे। एक दिन और दो रात में उसने यह लम्बी यात्रा पूरी कर ली और वह बचूना नामक कस्बे के पास पहुंच गया जो फतेहपुर से 8 कोस पर है। हिन्दू ज्योतिष ने निवेदन किया कि राजधानी में प्रवेश करने का मुहूर्त तीन दिन बाद है इसलिये बादशाह तीन दिन तक बचूना में ही ठहरा। उसने फतेहपुर सीकरी में प्रवेश किया तो शेख सलीम और अन्य बड़े-बड़े प्रतिष्ठित नागरिक उसका स्वागत करने के लिए उपस्थित हुए।

***

प्रकरण 9

बादशाह का राजधानी से आगमन

3 जून, 1573 को बादशाह ने राजधानी में प्रवेश किया। सब लोगों को प्रसन्नता हुई और सबने अधीनता प्रकट की। शेख मुबारक भी इसका स्वागत करने और उसको बधाई देने के लिये आया। यह अपना समय ईश्वर प्रार्थना में लगाया करता था। प्रत्यक्ष में उसका बादशाह से बहुत कम परिचय था परन्तु उसके हृदय में बड़ी स्वामिभक्ति थी। उसकी पवित्रता और भक्ति के कारण बादशाह के हृदय में भी उसके लिए ऊंचा स्थान था।

इस अवसर पर प्रान्तों से बड़े-बड़े अधिकारी उपस्थित हुए जिनमें लाहौर का सुबेदार हुसने कुली खां भी था। उसके साथ उसके प्रान्त के अनेक अधिकारी बादशाह के प्रति अधीनता प्रकट करने आये थे। वह अपने साथ मसूद हुसेन मिर्जा को और उन तमाम बन्दियों को लेकर आया था जो लड़ाई में पकड़े गये थे। इन सब लोगों को गायों के कच्चे चमड़ों में लपेटा हुआ था। उनके सींग भी नहीं हटाये थे। ऐसी दशा में इन लोगों को देखकर शाही दरबार के लोगों में हर्ष उमड़ पड़ा। दयालु बादशाह ने उनकी दुष्टता क्षमा करके आदेश दिया कि इस प्रकार की पोशाक से उनको मुक्त किया जाये और उनमें से प्रत्येक को किसी के सुपुर्द किया जाये, जिससे प्रत्येक व्यक्ति के चरित्र का ठीक-ठीक पता लग सके।

महाराणा प्रताप और कुंवर मानसिंह

जब शाही सेना डूंगरपुर पहुंची तो वहां के जमींदार ने अभिमानपूर्ण व्यवहार किया और लड़ाई की तैयारी कर ली। शाही सेना ने उस विद्रोही को दण्ड दिया और उसके बहुत-से आदमियों को मारकर उसके देश को लूटा। शाही सेना का एक अफसर जिसका नाम दरवेषक था, मारा गया। बादशाह के आदेशानुसार शाही सेना वहां से उदयपुर गई जो राणा का निजी देश है। राणा कंवर मानसिंह का स्वागत करने के लिए बाहर आया और उसने शाही खिलत पहन ली। वह मानसिंह को अतिथि के रूप में अपने महल पर ले गया परन्तु दरबार में जाने के विषय में बहाने करते हुए उसने कहा कि—"मेरे हितैषियों को मेरा वहां जाना अच्छा नहीं लगेगा। उसने दरबार में उपस्थित होने का वचन तो दिया परन्तु आपत्तियां भी कीं और मानसिंह को विदा करके वह वहीं रह गया और समय टालता रहा। इसी समय हुसेन कुली खां को खान जहां की उपाधि से सम्मानित किया गया। प्रत्येक अधिकारी को, जिसने अच्छी सेवा की थी, कृपा करके पुरस्कार दिया गया।"

बिहार और बंगाल की विजय

खान आलम आदि कई अफ़सरों को पूर्वी प्रान्तों की ओर भेजा गया। मुनीम खां खानखाना के नाम आदेश हुआ कि ''जब शाही सेना गुजरात की विजय में लगी हुई थी तो तुमने परिस्थिति को समझ कर समझ से काम लिया था और विलम्ब किया था परन्तु अब विजय प्राप्त हो चुकी है इसलिये इस आदेश को प्राप्त करते ही तुम उस देश की विजय के लिये रवाना हो जाओ और राजद्रोहियों को दण्ड दो। यद्यपि जो स्वामिभक्त अधिकारी उन प्रान्तों में जागीरदार थे इस काम के लिये पर्याप्त थे तो भी यह समझा गया कि उनकी संख्या जितनी बड़ी होगी, उतना ही काम सरल हो जायेगा। अतः बहुत से लोगों को नियुक्त किया गया और दूरदर्शिता के लिये राजा टोडरमल को आदेश दिया कि मुनीम खां के पास जाकर उसको विजय के नियम समझाये और कहे कि यह नियम अकबर ने मुझे बतलाये हैं। अधिकारियों की क्षमता के विषय में पूछताछ की जाये और यह भी देखा जाये कि उनमें मेल है या नहीं। फिर इसकी रिपोर्ट बादशाह को भेजी जाये यदि उन लोगों से काम नहीं चलेगा तो फिर स्वयं बादशाह को प्रयाण करना पड़ेगा। राजा टोडरमल शीघ्रता से वहां गया और वापस आकर उसने सूचना दी कि वहां सेना का बाहुल्य है और सब में मेल है। सबके विचार भी सच्चे हैं। तब बादशाह का चित्त शान्त हो गया।''

***

प्रकरण 10

अकबर का गुजरात पर दूसरा अभियान और विजय प्राप्त करके लौटना

गुजरात में फिर उत्पात खड़ा हो गया, जिसका दमन करने के लिए स्वयं अकबर वहां पहुंचा। इसका संक्षिप्त वृत्तान्त इस प्रकार है—

बादशाह खान आजम मिर्जा कोका को बिदा करके राजधानी में चला गया था। कोका को मालूम हुआ कि ईडर में इख्तियारुलमुल्क ने वहां के जमींदार राय नारायण से मिलकर विद्रोह खड़ा कर दिया है और शेर खां फुलादी उससे मिल गया है। कोका ने समझा कि रियासत के मामलों में विलम्ब नहीं होना चाहिए इसलिए वह अहमदाबाद नहीं गया और सीधा वहां पहुंचा। मिर्जा मुकीम की उधर की ओर जागीर थी। वह इन षड्यन्त्रकारियों के कारण वहां से चल कर कोका से आ मिला।

खान आजम, उस दल को निर्मूल करने में लगा हुआ था कि मुहम्मद हुसेन मिर्जा का उत्पात फिर खड़ा हो गया। इसका वृत्तान्त इस प्रकार है—

दौलताबाद दक्षिण में मुहम्मद हुसेन मिर्जा ने सुना कि अकबर राजधानी की ओर प्रयाण कर रहा है तो उसने सूरत में आकर उत्पात खड़ा कर दिया। कुलीज खां ने दुर्ग में घुस कर आत्मरक्षा करना शुरू किया। मिर्जा उस स्थान को छोड़कर भड़ौच आ गया और कुतुबुद्दीन के सेवकों ने वफादारी नहीं की इसलिये मिर्जा ने भड़ौच छीन लिया। वहां से मिर्जा खम्बात पहुंचा और हसन खां की उपेक्षा के कारण, जो अहमदाबाद आ गया था, मिर्जा ने उस स्थान को भी ले लिया। खान आजम ने कुतुबुद्दीन खां की सहायता करने के लिए सैयद हामिद आदि तीन सरदारों को भेजा। इसी समय इख्तियारुलमुल्क और दूसरे लोगों की जो पर्वतीय देश की घाटियों में थे, शक्ति बढ़ गई और वे आगे आये। खान आजम ने एक दृढ़ स्थान की शरण ली। विद्रोही लोग उस पर आक्रमण करने का साहस नहीं कर सके। उन्होंने सोचा, ''देखें वह, वहां कब तक ठहरता है। उसको इससे क्या लाभ होगा। हम तो अहमदाबाद पर आक्रमण करेंगे। यदि खान आजम उस दृढ़ दुर्ग में से निकल आयेगा तो हम लड़ेंगे और शायद हमारी विजय होगी। यदि वह बाहर नहीं निकलेगा तो हम अहमदाबाद पर अधिकार कर लेंगे।'' इस कुविचार के साथ उन्होंने प्रयाण किया। सायंकाल को जब खानआजम ने शत्रु के प्रयाण की खबर सुनी तो वे शीघ्रता से अहमदाबाद की ओर कूच करने लगा। रात होने वाली थी इसलिए शत्रु ने उसको नहीं रोका। खान आजम रात में निरन्तर चलता रहा और प्रातःकाल उसने नगर में प्रवेश किया। उसी रात को मुहम्मद हुसेन मिर्जा खम्बात में हार कर पास से ही निकला और उसने कुछ सामान लूट लिया। उसकी दशा दयनीय थी इसलिए वह खान आजम की सेना से दूर होके निकला था। वह इख्तियारुलमुल्क और शेर खां फुलादी के लड़कों से जा मिला। इसका वृत्तान्त यह है कि खान आजम के सेवक कुतुबुद्दीन खां आदि खम्बात आये। मुहम्मद हुसेन मिर्जा के साथ थोड़े-से आदमी थे परन्तु उसने खूब सामना किया तथापि वह बुरी तरह से हार गया। सैयद बहाउद्दीन बड़ी वीरता से लड़ा। अफसरों ने मिर्जा का पीछा नहीं किया। यदि वे परिश्रम करते तो उसको पकड़ लेते।

इस दल में शामिल होने के बाद मिर्जा उनके साथ अहमदाबाद की ओर कूच करने के लिये बड़ा आतुर था। गुजरातियों ने बड़े लम्बे-लम्बे भाषण दिये और तीन दिन तक बहस की। खान-ए-आजम ने किले का आने-जाने का मार्ग रोक दिया। खम्बात के अफसर भी आ गये। कुछ दिन बाद मिर्जा और उसका दल भी अहमदाबाद आ पहुंचा। यद्यपि शाही सेना ऐसी थी कि लड़ाई की जाती तो उसकी विजय होती परन्तु खान आजम को अपने लोगों पर भरोसा नहीं था और न कुतुबुद्दीन के लोगों पर उसको भरोसा था इसलिए उसने लड़ाई नहीं की। उसको बिदा करते समय बादशाह ने सलाह दी थी कि यदि राजद्रोही लोग आपस में मिल जायें और जोर की गड़बड़ हो जायें तो लड़ाई के विषय में बड़ी सावधानी

करनी चाहिए। खान आजम ने यह सलाह मानी। एक दिन फाजिल खां खानपुर दरवाजे के बाहर आया और उसने युद्ध के लिए आवाहन किया। तब शत्रु का एक दल उस पर झपटा। ज्योंही उन्होंने फाजिल खां के लोगों पर आक्रमण किया त्योंही उसके आदमी भाग गये और फाजिल खां बुरी तरह घायल हो गया। जब वह नगर के अन्दर आया तो उसकी मृत्यु हो गई। सुल्तान ख्वाजा अपने घोड़े से अलग होकर एक खाईं में गिर गया तब उसको एक टोकरी के रस्से बांधकर बाहर खींचा गया। वे सब लोग इस बात पर सहमत थे कि जो कुछ सेना है उसके द्वारा लड़ाई नहीं की जाये इसलिए खान आजम ने बादशाह की सेवा में रिपोर्ट भेजी और सुल्तान ख्वाजा को भी भेजा। रिपोर्ट में उसने सारी स्थिति का वर्णन करके बादशाह से सहायता मांगी। जब ख्वाजा दरबार में पहुंचा और उसने बादशाह को उत्पात का पूरा वृत्तान्त सुनाया तो बादशाह ने निश्चय कर लिया कि उस देश पर स्वयं ही अभियान करना चाहिए। इसका एक कारण यह भी था कि बादशाह को कोका के प्रति बड़ा प्रेम था। अब समय बहुत कम था, लोग प्रस्थान की तैयारी इतनी जल्दी नहीं कर सकते थे इसलिये अकबर ने राजकोष खोलकर अपने सेवकों को उदारतापूर्वक सहायता दी। उसने अपने अन्तःपुर को सुजात खां, राजा भगवन्तदास, सैयद महमूद बारहा और राय रायसिंह के साथ रवाना किया। फिर बादशाह ने कहा, मैं लोगों की खानगी की व्यवस्था कर रहा हूं परन्तु मेरा हृदय कहता है कि मुझसे पहले वहां कोई नहीं पहुंच सकेगा। खान जहाँ और सैयद खां तथा पंजाब के अनेक अफसरों को बिदा करके आदेश दिया कि वे पंजाब की सुरक्षा करे परन्तु उनमें से यूसुफ खां और मखसूस खां को उसने अपने साथ लिया और आदेश दिया कि मुजफ्फर खां मालवा के अधिकारियों को अपने साथ लेकर गुजरात की ओर शीघ्रता से प्रयाण करे, कंवर मानसिंह कछावा, जागीरदारों को अपने साथ लेकर दरबार में आये, राजा बिहारी मल, राजा टोडरमल, शेख इब्राहीम, हाकीम उलमुल्क, शेख अहमद और बहुत-से स्वामिभक्त लोगों को राजधानी में शाहजादों के पास छोड़ा।

रविवार 23 अगस्त, 1573 को बादशाह ने एक शीघ्रगामी ऊंटनी पर सवार होकर प्रयाण किया। उसके वफादार अफसर उसके साथ कोई घोड़ों पर और कोई ऊंटों पर सवार होकर चले। जब एक पहर रात व्यतीत हो गई तो अपने स्वामिभक्त लोगों को विश्राम देने के लिये वह टोडा कस्बे में ठहरा। प्रातःकाल वह फिर रवाना हो गया और सोमवार को हंस महल पहुंचा और वहाँ थोड़ी देर विश्राम किया। वहाँ से वह और भी अधिक शीघ्रता से चला और एक पहर से अधिक रात्रि जब व्यतीत हो गई तो वह मुईज्जाबाद पहुंचा। उस दिन उसके बहुत-से अनुयायियों में उसके साथ-साथ कूच करने की शक्ति नहीं रही और स्वयं उसको भी शरीर में किंचित् भारीपन मालूम हुआ। तथापि आधी रात को वह एक रथ पर सवार होकर शीघ्रता से कूच करने लगा।

उसने आदेश दिया कि यदि निद्रा के वश होकर वह रथ को धीरे चलाने के लिये कहे तो यह आज्ञा नहीं मानी जाये और रथ पूर्वतः तेजी से चलता रहे। सेवकों ने इस आदेश

का पालन किया और रथ चलता रहा। अन्त में प्रात:काल नाश्ते के समय मंगलवार को वे अजमेर पहुंचे। बादशाह दरगाह में गया और उसने प्रार्थना की तथा ख्वाजा से सहायता के लिये याचना की और दरगाह के लोगों को बख्शीसें बांटी। फिर उसने उस महल में विश्राम किया, जो वहाँ बनाया गया था। सायंकाल वह घोड़े पर सवार होकर शीघ्रता से रवाना हुआ और बुधवार के प्रात:काल मेरठा जिले में शाह कुली खां मुहर्रम, सईद मुहम्मद खां बारहा, मुहम्मद कुली खां, तोकबाई जो अग्रसेना में थे परन्तु जो वहाँ ठहर गये थे, उससे मिले। वह थोड़ी देर ठहरा और फिर चल दिया। एक पहर दिन चढ़ने पर वह जयतारण पहुंचा और एक पहर दिन शेष रहने पर वह फिर चल दिया। सायंकाल उसको शिकार करने की इच्छा हुई। तब एक काला हिरण प्रकट हुआ, बादशाह ने कहा, ''यदि एक शीघ्रगामी चित्ता इस हिरण को पकड़ लेगा तो यह इस बात का सूचक होगा कि मुहम्मद हुसेन मिर्जा हमारे हाथ में आ जायेगा।'' इस विचार से उसने एक चीता छोड़ा जिसने हिरण को पकड़ लिया। मध्य रात्रि के समय अकबर सोजत (जोधपुर) पहुंचा और वहाँ बृहस्पतिवार के सूर्योदय तक उसने विश्राम किया। जब प्रकाश हुआ और वह सवार हुआ तो उससे कहा गया कि अन्त:पुर और अग्रसेना पाली (जोधपुर) में है। उसने आदेश दिया कि सेवक लोग तो अपनी यात्रा जारी रखें और वह स्वयं निजी और खास सेवकों के साथ पाली की ओर चला। थोड़ी दूर जाने पर उसे ज्ञात हुआ कि रिपोर्ट झूठी है तब वापस लौट कर उसने अपनी यात्रा शूरू कर दी। सायंकाल सेवक लोग भगवानपुर के कस्बे के पास ठहरे हुए थे। अब तक शाही सेना के आने में देर हो रही थी, जिससे वे दुखी थे। इसी बीच में अकबर आ गया तो उनको बड़ा हर्ष हुआ। अकबर सिरोही के मार्ग से गुजरात जाना चाहता था, क्योंकि वह मार्ग अपेक्षाकृत छोटा था परन्तु उसके हितैषियों ने प्रार्थना की कि जालौर के मार्ग से जाना चाहिये। उनके कहने का अभिप्राय यह था कि सिरोही के मार्ग पर बहुत बदमाश लोग हैं और बादशाह के साथ थोड़े आदमी हैं इसलिये शायद उत्पात हो जाये और बादशाह की गति रुक जाये परन्तु अकबर ने यह सलाह नहीं मानी और सिरोही के मार्ग से ही प्रयाण किया। अकबर के हितैषियों ने पथ-प्रदर्शक सुगुना से मिल कर षड्यन्त्र किया और उससे कहा कि वह कहे कि ये मार्ग सिरोही जा रहा है परन्तु वास्तव में वह जालौर ले जाये। इस इरादे से वे सायंकाल रवाना हुए। पथप्रदर्शक की भूल से वे ऐसे वन में पहुंच गये जहाँ कीचड़ भरा हुआ था। स्वामिभक्त लोगों को कुछ दु:ख हुआ और साथियों में से कई अलग हो गये। प्रात:काल वे एक गांव में पहुंचे तो मालूम हुआ कि यह जालौर के अधीन एक गांव है और वे जालौर जा रहे हैं। अकबर को क्रोध आया और कुछ समय के लिये वह वहाँ ठहरा। शुक्रवार के प्रात:काल वह आगे बढ़ा तो बायीं ओर एक शेर दिखाई दिया। सेफ खां कोका, मीर जादा अली खान, उसके शिकार के लिये तैयार हो गये। अकबर ने कहा कि हमारा उद्देश्य दूसरा है, तुम शपथपूर्वक कहो कि शिकार नहीं करेंगे। हम को जान-बूझकर ऐसे काम में नहीं लगना चाहिये। इसके

अतिरिक्त भारतवर्ष में यह अच्छा सगुन माना जाता है कि बायीं ओर शेर दिखाई दे। कुछ आगे जाने पर मालूम हुआ कि जो शाही सेना आगे भेजी गई थी वह उसी मार्ग से गई है। साबास खां को आदेश दिया गया कि वह परिचरों को धीरे-धीरे अपने साथ लाये। अकबर कुछ साथियों के साथ गया।

जब शाही सेना जालौर के जिले में पहुंची तो ढोलों की आवाज़ सुनाई दी जो अग्रसेना की मालूम होती थी। दोपहर दिन को शाही सेना जालौर पहुंची तो बड़े अधिकारियों ने आकर भूमि पर लेट कर बादशाह को सलाम किया। तब आदेश दिया गया कि शिविर के सेनानायक बादशाह के साथियों को अपने निवासस्थान पर ले जाये और उनका आतिथ्य करे। बादशाह ने अपने हरम (अन्त:पुर) में प्रवेश किया और बाहर आने पर उसने लोगों को सलाम करने का मौका दिया। शिविर के साथ घोड़ों के व्यापारी भी थे। उनको अपने घोड़ों के साथ पेश होने का आदेश हुआ। उचित मूल्य पर उनसे घोड़े खरीद कर बहुत-से लोगों में वितरित किये गये। फिर आदेश हुआ कि शाहबाज खां और जालौर का कमाल खां शिविर के साथ रहे और दूसरे अधिकारी बादशाह के साथ प्रयाण करें। अर्धरात्रि को वह एक तेज घोड़े पर सवार हुआ और शनिश्चर की आधी रात तक शीघ्रतापूर्वक कूच करता रहा। फिर वह पट्टनवाल में ठहरा। वहाँ जमादल अव्वल का चांद देखा और कुछ समय मनोविनोद करके आगे चला। वह इतनी शीघ्रता से चल रहा था कि रविवार के अन्त तक उसने कोई विश्राम नहीं किया था। सोमवार की सायंकाल वह पट्टन से 20 कोस के अन्तर पर दिसा पहुंचा। वहाँ खानकिलां की ओर से शाहअली लंगा शासन करता था। उसने भूल से यह समझ कर कि कोई शत्रुसेना आ गई है, दुर्गद्वार बन्द कर लिये। जब तथ्य का पता लगा तो उसने अधीनता प्रकट की। सारे अधिकारियों की सम्मति थी कि बादशाह शीघ्रता से पट्टन जाकर वहाँ एक दिन ठहरे जिससे जो वीर लोग पीछे रह गये हैं आ जायें। बादशाह की राय यह थी कि पट्टन जाने की कोई आवश्यकता नहीं है और खानकिलां या और अन्य लोगों को भी सूचित नहीं किया जाये। यह सम्भव है कि वे लोग बादशाह की ओर उसके अनुचरों की शीघ्रगति को अपनी लम्बी सेवाओं के आधार पर रोकें। घनिष्ठ दरबारियों के प्रयत्न से यह निश्चय हुआ कि पट्टन को एक ओर छोड़कर बादशाह गुजरात की ओर अर्थात् राजधानी अहमदाबाद की ओर जाये और शीघ्रगामी धावन पट्टन से सेना लाये। जिसके लिए धावन भेजा गया और बादशाह आधी रात को अपनी सेना के साथ आगे चला। सोमवार को नाश्ते के समय वह बालिसाना के इलाके में पहुंच गया जो पट्टन से 5 कोस है। उसी समय खानेखाना अपनी सेना और कुछ अधिकारियों के साथ जिनमें खंगार (भगवानदास का भतीजा) भी था आया। उन सबको बादशाह से सलाम करने का अवसर प्राप्त हुआ। इन लोगों को उत्पात से पहले ही नियुक्त कर दिया गया था। मार्ग भयानक था इसलिये सावधानी की दृष्टि से ये लोग पट्टन में ठहर गये थे। इस स्थान पर शाही सेना को व्यवस्थित किया गया। मिर्जा खान आदि 5 सरदारों को मध्य भाग का खान

किला और अन्य वीरों को दायें पक्ष का, वजीर खां आदि को बायें पक्ष का मुहम्मद कुली आदि को अग्रसेना का नेतृत्व दिया गया। बादशाह स्वयं और उसके कुछ स्वामिभक्त लोग अल्तमिश (सुरक्षित) सेना में रहे। अकबर के पास लगभग 100 सवार थे। सोमवार के अन्त में बालिसाना से रवाना हुआ। पथप्रदर्शक सुगुना को आदेश दिया गया कि शीघ्र अहमदाबाद पहुंच कर वह शाही सेना के आगमन की सूचना दे और कहे कि युद्ध की तैयारी की जाये। जब शाही सेना समीप पहुंचे तो अहमदाबाद की सेना बाहर निकलकर उसमें आ मिले।

बादशाह रात भर घोड़े पर सवार होकर चलता रहा और कुछ दिन चढ़े वह चैताना नामक गांव पर पहुंचा जो कारी के अधीन है। वहाँ मालूम हुआ कि राबलिया के नेतृत्व में, जो शेर खां फुलादी का सेवक था शत्रुओं ने दुर्ग को दृढ़ करके युद्ध की तैयारी कर ली है। उन लोगों ने समझा कि खान किला ने पट्टन से कारी के विरुद्ध सेना भेजी है इसलिये वे दुर्ग से बाहर निकल कर युद्ध के लिये जम गये। साथ ही बादशाह ने अपनी सेना के कुछ लोगों को आदेश दिया कि आगे बढ़ कर शत्रु को प्रमाद निद्रा से जगाया जाये। क्षण भर में ही शत्रु के बहुत-से लोग मारे गये। शेष भाग कर दुर्ग में चले गये। इसी अर्से में शाही सेना आ पहुंची। बादशाह ने अनुभवी अधिकारियों से पूछा कि शत्रु अपने दुर्ग में चला गया है इसलिये क्या करना उचित होगा। जल्दबाज लोगों ने सलाह दी कि दुर्ग को जीत कर आगे बढ़ा जाये। बादशाह ने कहा कि ऐसे छोटे-से दुर्ग को जीतने से कोई लाभ नहीं होगा। सारा प्रयास गुजरात के विद्रोहियों के दमन पर केन्द्रित कर देना चाहिये। यदि इस दुर्ग की विजय पर ध्यान दिया जायेगा तो काम लम्बा हो जायेगा। शत्रु को बादशाह के आगमन की खबर मिल जायेगी और वह हट जायेगा। इसी समय बादशाह के पास खड़े हुए सैनिकों में से एक सैनिक को गोली लगी। वह गोली उसके कपड़ों में घुसते-घुसते ठंडी हो चुकी थी तो भी उस सैनिक का साहस भंग हो गया और उसकी भीरुता प्रकट हुई।

अन्त में सब लोग बादशाह की राय से सहमत हो गये और दुर्ग को छोड़ कर आगे बढ़े। दो कोस जाने पर अकबर ने आदेश दिया कि सेना ठहरकर ताजा हो जाये। दूसरे दिन पीछे से आने वाले यूसुफ खां और कासिम खां आदि सेनानायक आ पहुंचे। दुर्गसेना ने समझा कि बादशाह की विशेष सेना आ गई है। वे दुर्ग में से निकल और युद्ध किये बिना ही चले गये। बुधवार को प्रातःकाल पूर्व निश्चित व्यवस्था के अनुसार सेना आगे बढ़ी।

जब बादशाह अहमदाबाद से तीन कोस के अन्दर जा पहुंचा तो उसने आसफ खां को राजधानी में भेज कर कहलाया कि अफसर लोग शाही सेना में सम्मिलित हो जायें। बादशाह के साथ सत्ताईस सेनानायक थे, जिनमें 13 हिन्दू और शेष मुसलमान थे। हिन्दुओं के नाम जगन्नाथ रायसाल, जयमल, जगमल पटवार, राजा बीरबल, राजा दीपचन्द, मानसिंह

दरबारी, रामदास कछावा, रामचन्द्र, सावलदास, जाइन कायथ, हरदास, ताराचन्द, खवास और लाल कलावंत थे।

रूप सिंह का पुत्र जयमल एक भारी कवच पहन कर बादशाह के समक्ष उपस्थित हुआ तो बादशाह ने अपने निजी मेजर से उसको हल्का कवच दिलवा दिया और भारी कवच मालदेव के पौत्र कर्ण को भेंट कर दिया जिसके पास कवच नहीं था। जब जयमल रूपसिंह के सामने गया तो रूपसिंह ने कवच के विषय में पूछा और जब उसको तथ्य का पता लगा तो उसने एक आदमी भेज कर कवच मांगा। कारण यह था कि मालदेव के कुटुम्ब से उसकी शत्रुता थी और वह कवच भी बहुत ही अच्छा था। संदेशवाहक ने बात ज्यों का त्यों पहुंचा दी। तो बादशाह ने कहा, हमने इस कवच के बदले में हमारा एक निजी कवच दिया है। तुम्हारी बात शिष्ट नहीं है। रूपसिंह ने मूर्खतावश अपना कवच उतार दिया और खुले बदन खड़ा हो गया। तब बादशाह ने कहा, हमारे सेवक बिना कवच के वीरतापूर्वक युद्ध में जाना चाहते हैं तो हमारे लिये भी यह उचित नहीं है कि हम सशस्त्र होकर जायेंगे। जब राजा भगवानदास ने रूपसिंह के दुर्व्यवहार की बात सुनी, तो उसको अच्छी सलाह दी और उसके क्षुब्ध चित्त को शान्त किया। तब उसने अकबर के समक्ष आकर पश्चात्ताप प्रकट किया और क्षमा मांगी। राजा भगवानदास ने निवेदन किया कि रूपसिंह ने भांग पी रखी थी। अकबर ने रूपसिंह के अपराध की उपेक्षा की दृष्टि से देखा। अब बादशाह व्यवस्थापूर्वक आगे बढ़ा। बादशाह नूर-बेजा नामक घोड़े पर सवार था। राजा भगवानदास ने उसको गुजरात विजय पर बधाई दी और कहा, विजय के तीन चिह्न प्रकट हुए हैं। प्रथम चिह्न तो यह है कि आपने इस शुभ मुहूर्त में घोड़े की सवारी की है। दूसरा चिह्न यह है कि शाही सेना के पीछे से हवा चल रही है। तीसरा चिह्न यह है कि हमारे साथ बहुत-से कौवे और चीलें उड़ रही हैं। इस बात को सुनकर सब लोगों को प्रसन्नता हुई।

***

प्रकरण 11

अकबर का अहमदाबाद पहुंचना, विजय-प्राप्ति, मुहम्मद हुसेन मिर्जा की पराजय

अकबर ने अल्पकाल में तीन या चार सौ प्रथम श्रेणी के सैनिक इकट्ठे किये और नौ दिन में इतनी लम्बी यात्रा की जिसमें कारवों को दो या तीन मास लगते हैं। उसने 20,000

विद्रोहियों का सामना किया और 2 सितम्बर, 1573 को उन पर विजय प्राप्त की। इसका संक्षिप्त वृत्तान्त यह है कि :—

शाही ध्वज शत्रु के निकट पहुंचे। गुजरात की सेना का चिन्ह भी दिखाई नहीं दिया। अकबर के समीपवर्ती लोगों ने कहा कि आक्रमण रात में करना चाहिये। अकबर ने उसका अनुमोदन नहीं किया। उसने आदेश दिया कि नगाड़े और बिगुलें बजाई जायें।

विद्रोहियों को अपनी संख्या पर भरोसा था और घेरे को आगे बढ़ा रहे थे। उनको शेर खां फुलादी के आने की आशा थी। जब शाही सवारी साबरमती नदी के समीप पहुंची तो आदेश दिया गया कि सेना को व्यवस्थित करके नदी पार की जाये। शाही समय 300 सवार दिखाई दिये। वे सरकेच से आये थे। अकबर ने सालीवाहन कादिर अली, रणजीत और अन्य बन्दूकचियों को जो एक बाल भर भी निशाना नहीं चूकते थे, उन पर गोलियां चलाने का आदेश दिया तो वे अपनी खाइयों में भाग गये। ढोलों की आवाज की प्रतिध्वनि होने लगी। शत्रुओं ने समझा कि शेर खां फुलादी आ रहा है। अन्य लोगों ने समझा कि खान कलां पट्टन से खानआजम की सहायता करने आ रहा है। इस घोष से मुहम्मद हुसेन मिर्जा को आश्चर्य हुआ तो खबर जानने के लिए वह स्वयं बाहर आया। शुभान कुली तुर्क और कुछ स्वामिभक्त वीर और आगे बढ़कर शत्रु की स्थिति के विषय में पूछताछ कर रहे थे। मिर्जा ने उच्च स्वर से पूछा कि ये सैनिक कौन हैं? शुभान कुली तुर्क ने शत्रु में त्रास और भेद उत्पन्न करने के लिए उत्तर दिया, "अरे मूर्ख, देख, बादशाह स्वयं बड़ी सेना के साथ आ गया है, तुम चुपचाप क्यों खड़े हो? अपनी सेना को दूर ले जाओ।" मिर्जा का दिल तो हिल गया परन्तु उसने उत्तर दिया, "ये भाई, क्या मुझे डरा रहे हो? क्या तुम स्वयं स्थिति को जानते हो और सच बात कह रहे हो। यदि यह बात सत्य है तो मुझे शाही हाथियों के और विशाल सेना के चिन्ह बतलाओ। सच तो यह है कि हमारे दरबारियों ने बादशाह को 14 दिन पहले ही तो फतेहपुर छोड़ा था।" शुभान कुली ने कहा, "बादशाह ने यह लम्बी कूच 9 दिन में की है और वह अपने स्वामिभक्त अनुचरों के साथ आ पहुंचा है।" यह बात सुनकर मिर्जा अपने शिविर में चला और अपनी सेना की व्यवस्था करने लगा। जब बादशाह को मालूम हुआ कि शत्रु को उसके आगमन का पता नहीं है तो वह युद्धोचित वीरता और उदारता के साथ उस समय तक ठहरा और फिर शीघ्रगामी लोगों ने घोषित किया कि शत्रु कवच पहन रहे हैं और पंक्तिबद्ध हो रहे हैं। तब बादशाह ने नदी को पार करने का आदेश दिया। यद्यपि स्फूर्तिवान लोगों ने खान कलां को लाने का प्रयत्न किया परन्तु इसमें सफलता नहीं मिली और उन्होंने निवेदन किया कि शत्रु की संख्या बहुत बड़ी है इसलिये गुजरात की सेना के आ जाने तक नदी को पार नहीं करना चाहिये। अकबर ने उत्तर दिया, इस अभियान में मेरा ईश्वर पर ही भरोसा है। यदि मैं साधारण साधनों का विचार करता तो इतनी लम्बी कूच इतने थोड़े लोगों के साथ नहीं करता। जब शत्रु युद्ध के लिये तैयार हो रहा है तो चुपचाप किसी आशा में खड़े रहना उचित नहीं है। तो भी उन वीरों

ने नदी पार करने में विलम्ब किया और युक्तिपूर्वक अकबर को भी रोका। फिर अकबर को क्रोध आया, वह साथियों से अलग होकर उस नदी में, जिसमें बाढ़ आ रही थी, कूद पड़ा। उसके साथ केवल वे ही साथी थे जो उसके साथ रहा करते थे। अकबर ने नदी में घोड़ा डाला तो घोड़े के पैर टिक गये, जिससे सबको हर्ष हुआ। यह विजय का सूचक था। उसने अपना टोप मंगलवार राजा दीपचन्द को दिया और कहा कि अपने साथ लेते आओ। परन्तु जल्दी के कारण टोप के पेश-बीनी (नाक की टोपी) मार्ग में गिर पड़ी। तब अकबर ने कहा, ''अब हमारा पेशगाह (आगे का मार्ग) साफ हो गया है। यह अच्छा शगुन है।'' उसने अपने आंदमी से कहा कि अब विजय हो जायेगी। उसी समय एक सक्रिय वीर ने किसी विद्रोही का सिर पेश किया, जो विजयसूचक माना गया। अकबर अपने स्वामिभक्त अनुचरों के साथ आगे बढ़ा। जब बड़े-बड़े अधिकारियों ने यह देखा तो आगा-पीछा न सोचकर वे नदी पार करने लगे।

मिर्जा अपने दुर्भाग्य के कारण अपने हितैषी और उस समय के बादशाह से लड़ने के लिये निकला। उसने वली खान को दाहिने पक्ष का और कुछ हब्शी लोगों को तथा गुजरातियों को नेतृत्व दिया। मुहम्मद खान को बहुत-से अफगानों के साथ बायीं ओर खड़ा किया और मध्य में मुहम्मद हुसेन मिर्जा स्वयं शाह मिर्जा के साथ और स्वामिद्रोही बदख्सियों के साथ (मध्य में) खड़ा हो गया। अकबर नदी से एक कोस दूर एक ऊंची भूमि पर आ पहुंचा था। तब आसफ खां ने आकर सलाम किया और कहा कि मिर्जा कोका को शाही ध्वजों के आने की खबर नहीं थी। जब उसको मालूम हुआ कि बादशाह आ गया है तो उसने समझा कि मीर अबू तुराब और उस देश के स्वामिभक्त लोगों ने मजाक किया है। जब उसको कई बार विश्वास दिलाया गया तब उसको भरोसा आया। अब वह गुजरात की सेना को साथ लेकर आ ही रहा है। उसने अपनी कहानी पूरी नहीं सुनाई थी और शाही सेना भी नहीं आई थी कि शत्रु वृक्षों में दिखाई देने लगा। मुहम्मद कुली खां तोकबाई और अन्य वीर जो मध्य में हरावल में थे, आगे बढ़े परन्तु थोड़ी-सी लड़ाई के बाद पीछे हट गये। अकबर चट्टान की भांति खड़ा था। उसने राजा भगवानदास से और उसके द्वारा सारे सैनिकों से कहा कि शत्रु की संख्या बहुत जान पड़ती है। फिर भी ईश्वर-कृपा की मनुष्य कल्पना नहीं कर सकता है। हमको डरना या घबराना नहीं चाहिये और सबको एक दिल और एक मन होकर मुहम्मद हुसेन मिर्जा की लाल ध्वज वाली सेना पर आक्रमण करना चाहिये। जब हम मुख्य-मुख्य लोगों को समाप्त कर देंगे, तब शेष लोग आसानी से समाप्त हो जायेंगे।

अभिमानवश मुहम्मद हुसेन मिर्जा अपनी सेना से अलग होकर कुछ साथियों के साथ आगे आया। शाह कुली खां महरम आदि ने अकबर से कहा कि अब इस अभिमानी को दण्ड मिल जाना चाहिये। बादशाह शान के साथ परन्तु व्यवस्थापूर्वक आगे बढ़ा। शाही सेना भी पास पहुंच गई, परन्तु उनकी व्यवस्था बिगड़ गई। दायें पक्ष के लोग जब जोर की

लड़ाई होने लगी तो पीछे हट गये। जब शत्रु निकट आया तो अकबर ने आक्रमण करने का निश्चय किया और हापा-चारण ने चिल्ला कर कहा यह आक्रमण करने का समय है। फिर युद्धप्रिय और स्वामिभक्त लोगों ने तलवारें निकाल कर आक्रमण किया तो ''अल्लाह अकबर या मुईद'' के युद्धघोष से आकाश गूंज उठा। थोड़ी-सी लड़ाई के बाद ही अकबर के दायीं ओर के लोगों ने विद्रोहियों को खदेड़ भगाया। मुहम्मद हुसेन मिर्जा ने अकबर की बायीं ओर के लोगों को खदेड़ डाला। उसने समझा कि विजय हो गई। थोड़ी दूर जाकर वह ठहर गया। उसको अपनी ही सेना दिखाई नहीं देती थी। तब दायें, बायें और मध्य से वीरों ने आकर खूब लड़ाई की। एक प्रकार के रोकेट (फहक बानहा) शाही सेना पर चलाये जा रहे थे परन्तु शाही सेना की कोई क्षति नहीं हुई। एक रोकेट कांटेदार झाड़ियों में गिरा, जिससे ऐसा शोर मचा कि शत्रु का एक प्रसिद्ध हाथी भयभीत हो गया, जिससे शत्रु सेना में भगदड़ मच गई। अकबर ने अपने घोड़े की लगाम खींचकर स्थिति का अध्ययन किया तो उसको मालूम हुआ कि मध्य सेना अभी नहीं आई है और दूसरे सैनिकों ने शत्रु की सुरक्षित सेना को भगा दिया। अकबर रणभूमि में खड़ा हुआ लड़ाई में व्यस्त था। ताराचन्द और आलम खां के अतिरिक्त और कोई उसके पास नहीं था। उसके दायीं और बायीं ओर सेनायें लड़ रही थीं। मुहम्मद हुसेन मिर्जा भी लड़ने में व्यस्त था। मानसिंह दरबारी ने अकबर के सामने बड़ी वीरंता दिखाई और वह विजयी हुआ। रघुदास कछावा कवच नहीं पहने हुए था, उसने अकबर के समक्ष अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। मुहम्मद बफन भी आहत होकर घोड़े से गिर पड़ा। मालदेव के पौत्र कर्ण ने भी अकबर के समक्ष वीरता का काम किया। उस दिन से भी शाही सेवकों ने बड़े काम किये परन्तु जिनके नामों का मैंने उल्लेख किया है उनके काम विशेष वीरता के थे। परन्तु उनको ज्ञात नहीं था कि बादशाह उनको देख रहा है।

युद्ध के मध्य में शत्रु के एक सैनिक ने अकबर पर आक्रमण किया और उसके घोड़े पर तलवार का वार किया। घोड़ा पीछे हटा, परन्तु अकबर ने उस सैनिक की गर्दन पकड़कर उसको गिरा दिया। फिर उस पर अपने भाले का ऐसा वार किया कि कवच को फोड़ कर भाला उसके शरीर में प्रवेश कर गया। अकबर भाले को निकाल रहा था तो उसका सिरा टूट गया और शत्रु भाग गया। तब एक और शत्रु ने आगे आकर बादशाह की जांघ पर तलवार का वार किया परन्तु बादशाह बच गया। फिर एक और दूसरे शत्रु ने बादशाह पर भाला चलाया तो चेला गूजर ने उसको अपने भाले से आहत कर डाला। अकबर अपने साहस के द्वारा रणभूमि को अलंकृत कर रहा था। शत्रु भी बड़ी वीरता से लड़ रहे थे।

इसी समय सुर्ख बदख्शी मूर्खतापूर्वक आहत होकर आया और अकबर के विषय में बुरी खबर लाया। वह शाही सेना के मध्य भाग के साथ था। तब अकबर की दृष्टि इस सेना पर पड़ी तो उसने चिल्लाकर कहा, ''वीर पुरुषो, आओ और इन शत्रुओं को समाप्त करो।'' सुजात खां और अन्य लोगों ने अकबर की आवाज पहचान ली और शत्रुओं को

मारने के लिये उन्होंने घोड़े दौड़ाये। उन्होंने मुहम्मद हुसेन मिर्जा को और अन्य लोगों को जो रणभूमि में थे, भगा दिया। अकबर की कुशलता से बहुत बड़ी विजय प्राप्त हो गई। उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया और अहमदाबाद की ओर प्रयाण किया। उसने सैनिकों के विषय में पूछताछ की और मिर्जा कोका ने तथा गुजरात की सेना ने आने में विलम्ब क्यों किया? यह भी पूछा गया तो अकबर को शोक हुआ। अन्त में यह पता लगा कि सेफ खां रुस्तम की भांति वीरतापूर्वक लड़ा था। उसके चेहरे पर दो घाव लगे थे और वह अकबर की तलाश कर रहा था। जब मुहम्मद हुसेन मिर्जा युद्ध कर रहा था तो कोका उसके पास आया और वीरतापूर्वक लड़कर संसार से चल बसा। वह सरनाल के युद्ध में सम्मिलित नहीं था। तब ही से वह मृत्यु का आवाहन किया करता था। आज उसने अकेले ही शत्रु सेना का सामना करके अपनी जीवन-यात्रा समाप्त कर दी। कोका के माता-पिता मानते थे कि कोका बादशाह का ही दिया हुआ था।

इसका वृत्तान्त यह है कि उसकी माता के सदा लड़कियां ही हुआ करती थीं। उसका बाप परेशान और क्षुब्ध रहा करता था। जब वह गर्भवती थी तो उसके पिता ने कहा, "यदि अब भी लड़की ही हुई तो मैं तुम्हारे पास कभी नहीं आऊंगा।" तब उस महिला ने मरियम मकानी के पास जाकर अपना सारा हाल सुनाया और कहा कि "मुझे गर्भपात करने की इजाजत दे दी जाये। रास्ते में उसको अकबर मिल गया, उसने यह हाल पहले ही सुन लिया था। उसने कहा "तुमको ऐसा काम कभी नहीं करना चाहिए। ईश्वर तुमको पुत्र प्रदान करेगा।" यद्यपि मरियम मकानी ने उसको गर्भपात की ईजाजत दे दी थी परन्तु अकबर हिदायत सुनने के बाद उसने अपना विचार छोड़ दिया था। अकबर के मुख से जो शब्द निकले वे सच्चे हुए।

जब अकबर को कोका के विषय में बड़ा रंज था तो कोका का छोटा भाई वीरतापूर्वक आप आया और शत्रु के दो आदमियों को उसने गिरा दिया। वह सुभान कुली तुर्क को भी रणक्षेत्र से उठा लाया। वह बादशाह के चरणों में उपस्थित होने के लिए आ रहा था तो उसने सुना कि उसका भाई आहत हो गया है। जब अपने भाई की सहायता के लिये जा रहा था तो उसने सुना कि कोका की मृत्यु हो गई है। कुछ समय के लिए वह सन्ताप में डूब गया परन्तु अकबर ने उसको सान्त्वना दी। बादशाह ने अब्दुर-रहमान को आदेश दिया कि जैन खां कोका की देखरेख करें।

जब ऐसे स्वामिभक्त अनुचर की मृत्यु पर और मिर्जा कोका के विलम्ब से आने पर अकबर दु:खी था तो उसे खबर मिली कि मुहम्मद हुसेन मिर्जा को शाही सेवकों ने पकड़ लिया है तब उसने कहा, यदि मैं दूरदर्शिता से विचार करूं तो मुझे ऐसे अदम का रक्तपात करना चाहिए। उसी समय उसको उपस्थित किया गया। उसके चेहरे पर घाव था। जब आहत होकर वह अकबर के सामने से भाग रहा था तो उसके घोड़े के पैर कांटेदार झाड़ियों में फंस गए और वह गिर पड़ा, एक शाही सैनिक ने जिसका नाम गदा अली था, उससे

कहा "आओ, मैं तुमको इस रणभूमि से बाहर ले चलूंगा।" हुसेन मिर्जा सहमत हो गया। गदा अली ने उसको अपने आगे घोड़े पर बिठा लिया। उसको अकबर के सामने ले जाने लगा। जब हुसेन मिर्जा घोड़े पर सवार हो रहा था तो खान किलां का एक आदमी साथ हो गया। जब वे हुसेन मिर्जा को अकबर के समक्ष लाये तो दोनों ने ही पुरस्कार मांगा। अकबर के पास खड़े हुए लोगों ने हुसेन मिर्जा से ही पूछा कि तथ्य क्या है तो उसने कहा "मुझको बादशाह के नमक ने गिरफ्तार किया है।" तब बादशाह ने दया करके हुसेन मिर्जा के हाथ खुलवा दिए और उसको मानसिंह दरबारी के सुपुर्द कर दिया। ठीक उसी समय शाह मदद को जो मिर्जा का कोका था, अकबर के सामने पेश किया गया। अकबर ने उसको अपने भाले से छेद कर मार डाला। शाही दरबार में ऐसा कहा जाता था कि राजा भगवानदास के भाई भूपत को सरनाल के युद्ध में इसी आदमी ने मारा था।

जब बादशाह ईश्वर को धन्यवाद दे रहा था तो एक गड़बड़ी मची और शोरगुल मचा। पूछने पर प्रकट हुआ कि मुहम्मद हुसेन मिर्जा मानसिंह दरबारी से पानी मांग रहा है। फरहत खां के चेले ने उसके सिर पर मारा और कहा, "ऐसे बेईमान विद्रोही को पानी क्यों दिया जाये।" जब बादशाह ने यह सुना तो फरहत खां को फटकारा और मुहम्मद हुसेन को पानी दिया।

ऐसी आश्चर्यजनक विजय प्राप्त हो जाने के बाद भी मिर्जा कोका और गुजरात की सेना नहीं आई। अकबर ने मुहम्मद हुसेन मिर्जा को राय रामसिह के सुपुर्द कर दिया। और कहा कि उसको हाथी पर बिठा कर नगर में ले जाये। इस समय अकबर के पास लगभग 100 आदमी थे। एक दिन अचानक ही एक सेना दिखलाई दी जिसमें 5000 से अधिक सैनिक थे। लोगों ने सोचा कि यह मिर्जा कोका और गुजरात की सेना है, कुछ ने विचारा कि शाह मिर्जा आ रहा है जो युद्ध के आरम्भ में भाग कर महमूदाबाद चला गया था। फिर अकबर को पता लगा कि विद्रोही इख्तियार-उल-मुल्क आ रहा है। अकबर ने एक तेज घोड़े पर सवार होकर युद्ध की तैयारी की और सैनिकों से प्राणप्रद बातें की। उसने आदेश दिया कि खूब ढोल बजाये जायें और बांकिये बजाये जायें। शुजात खां राजा भगवन्तदास आदि ने आगे बढ़कर तीर चलाये। अकबर ने कहा "त्वरा न करो। इस गड़बड़ में राजा भगवन्तदास और राय रामसिंह के कहने से बादशाह ने आदेश दिया कि मुहम्मद हुसेन मिर्जा को जो विद्रोह का मूल है वध कर दिया जाये।"

जिस सेना में इतना ठाट दिखाई दिया था उसमें ज्यों-ज्यों वह पास आई परेशानी पैदा हो गयी। इख्तियार उल-मुल्क अपने प्राणों की रक्षा करने के लिए सेना से पृथक् हो गया। वह कांटों में फंस गया और घोड़े से गिर गया। शाही सवार सुहराब तुर्कमान ने दूर से ही उसको अपना निशाना बना रखा था। गिरते ही वह इख्तियार उल मुल्क के पास पहुंचा और उसका सिर काट डाला।

जब अहमदाबाद को घेरा गया था तो मिर्जा कोका, कुतुबुद्दीन खां और अन्य लोगों के मार्ग में किसी ने रुकावटें डालीं। मिर्जा मुहम्मद हुसेन की गिरफ्तारी और अकबर की विजय की खबर सुनकर वह परेशान होकर भाग गया था। वह दो सौ आदमियों के साथ अकबर के दायीं ओर होकर निकला था और उसकी बड़ी सेना और हाथी बायीं ओर होकर निकले थे। रणभूमि पर बारह सौ आदमी मरे पड़े थे। आहतों की संख्या 500 मानी गयी थी। जो आहत होकर भाग गये उनकी संख्या और भी कम होगी।

इब्राहीम हुसेन मिर्जा, सईद खां की सुपुर्दगी में मर गया। मुहम्मद हुसेन मिर्जा भी तलवार के घाट उतार दिया गया। शाह मिर्जा लज्जित होकर इधर-उधर भटकता फिरता था। शाही सेना के लगभग 100 वीर काम आ चुके थे। इनमें मुख्य सेफ खां कोका था। सुहराब, रघुदास, तीमार अली, जालेर ने भी आत्मबलिदान किया था।

इख्तियार उल मुल्क के अन्त के बाद जब अकबर का चित्त शान्त हो गया तो वह आगे बढ़ा। सायंकाल होते-होते एक दूसरी सेना दिखाई दी, वीर लोग तो लड़ने के लिये तैयार हो गये परन्तु एक व्यक्ति ने आगे जाकर देखा कि मिर्जा कोका जा रहा है। तब अकबर को और शाही सेवकों को बड़ी प्रसन्नता हुई। अकबर ने कोका का पुत्रवत् आलिंगन किया। कुतुबुद्दीन खां और अन्य गुजराती अफसरों ने अधीनता प्रकट की और बहुत-बहुत धन्यवाद दिये। तब सुहराब इख्तियार उल मुल्क का सिर लेकर आया। तो अकबर ने ईश्वर को बड़ा धन्यवाद दिया। आम लोगों को शिक्षा देने के लिये आदेश हुआ कि विद्रोहियों के सिरों का एक मीनार बनाया जाये। सायंकाल अकबर अहमदाबाद पहुंचा और गुजरात के सुल्तानों के महल में उसने निवास किया। विजय की सूचना विभिन्न देशों में भेजी गई। मुजफ्फर खां मालवा के अधिकारियों को तथा राजा मानसिंह को लिखा गया कि पूर्ण विजय प्राप्त हो गई है और बादशाह ने वापस कूच करने का निश्चय कर लिया है इसलिये राधानी में आकर उसको सलाम किया जाये। महलों में ठहरे हुए अकबर ने स्वामिभक्त-सेवकों की उदारतापूर्वक उन्नति की। उसने छोटे और बड़े सबको बख्शीशें दीं। मिर्जा कोका ने निवेदन किया कि ऊंचे दर्जे के फकीरों ने और विद्वानों ने विद्रोहियों के साथ षड्यंत्र किया है। अकबर ने पता लगाया तो वह लोग षड्यंत्र में सम्मिलित नहीं पाये गये। अतः उन पर शाही कृपा की गई। इन लोगों में बजीहुद्दीन था जो ऊंचे दर्जे का विद्वान् था और संतोषपूर्वक एकान्त में रह कर अध्यात्म चिंतन में लगा रहता था। मिर्जा ने निवेदन किया कि उसके घर में विद्रोहियों की सम्मति मिली है। बादशाह ने शेख से पूछा, तुम्हारा ऐसे मामलों से क्या सम्बन्ध था। उसने उत्तर दिया, मेरा उनसे परिचय था और लिहाज के कारण मैंने उनको एक मकान दे दिया था। उसकी ईमानदारी बिल्कुल प्रत्यक्ष थी इसालिये उसका कोई बिगाड़ नहीं हुआ। इसी प्रकार मीर गयासुद्दीन काबेरी को भी पेश किया गया, उसके घर में इख्तियारुल मुल्क का सामान मिला था। अकबर ने उसको भी कोई दण्ड नहीं दिया। इसी समय शेख अब्दुलबी के रिश्तेदार शेख मुजफ्फर को जो गुजरात का सदर था पेश किया

गया, मिर्जा ने उसको दंड दिया था। क्योंकि उसको मालूम हुआ था कि मुजफ्फर को बड़ा लोभ है और वह रिश्वत लेने का प्रयत्न करता है। जब मुजफ्फर को अकबर के सामने पेश किया गया, तो उसको कोई दंड नहीं दिया गया। इसी प्रकार बहुत-से आहत लोग अकबर के समक्ष पेश किये गये। अकबर ने उनको भी दंड नही दिया। फिर इतिमाद खां गुजराती के मकानों पर जाकर अकबर प्रशासनिक कार्य में व्यस्त हो गया। जब अकबर इतिमाद खां के निवास में टिका हुआ था तो शुजात खां ने मूर्खता का काम किया। उसने मुनीम खां के विषय में अंनुचित भाषा का प्रयोग किया और यह नहीं सोचा कि मैं बड़े ऊंचे दर्जे की सभा में बैठा हुआ हूं। अत: उसको उचित रूप से फटकारा गया और कासिम अली खां के सुपुर्द करके आदेश दिया कि उसको खानखाना के पास ले जाये और खानखाना उचित समझे तो उसको दण्ड दे या उसको क्षमा करे। शुजात खां भाग कर भडौच के इलाके में चला गया था। इसलिये उसको पकड़ कर उपयुक्त दंड देने के निमित्त कुतुबुद्दीन खां और नवरंग खां को सेना के साथ भेजा गया। राजा भगवन्तदास, शाह कुली खां, मेहरम लश्कर खां और कई अन्य सेवकों को आदेश दिया कि वे ईडर के रास्ते से उदयपुर के राणा प्रताप के देश में जायें और वहाँ के विद्रोहियों का दमन करें और जो आज्ञा न माने उसको यथोचित दंड दें। दंदूका और दुल्ला आदि बजीर खां को जागीर में दिये गये और उसको वहाँ भेज दिया गया।

***

प्रकरण 12

अकबर का राजधानी को लौटना

13 सितम्बर, 1573 को अकबर राजधानी की ओर कूच करने लगा, पहले दिन वह महमूदाबाद में ठहरा और दूसरे दिन उसका शिविर दुल्का में लगा जो बड़ा सुखद स्थान था। वहाँ वह एक दिन रुका। वहाँ मिर्जा कोका को सम्मान प्रदान किया गया और शिक्षा देकर उसको जाने की ईजाजत दे दी गई। ख्वाजा गयासुद्दीन अली कजविनी बख्शी को जिसने अच्छा काम किया था, आसफ खां की उपाधि दी गई और गुजरात का बख्सी बनाये रखा। जिससे वह कोका को प्रशासन में सहायता दे सके। दो मंजिल के बाद अकबर कारी कस्बे पर पहुंचा और वहाँ से दो मंजिल चल कर सथपुर आया।

वहाँ उसने सुना कि जो सेना राजा भगवानदास के नेतृत्व में ईडर के मार्ग से रवाना की गई थी वह बढ़ नगर आ पहुंची है और रावलिया जो शेर खां फुलादी का दास था

और जिसने कारी के दुर्ग को उस समय दृढ़ कर लिया था, जब बादशाह गुजरात की ओर प्रयाण कर रहा था। अब बढ़नगर में सामना कर रहा है। अगले दिन भी अकबर वहीं ठहरा रहा। वह यह देखना चाहता था कि भगवानदास को उसकी सहायता चाहिये क्या? जब यह प्रकट हुआ कि दुर्ग छीन लिया गया है और रावलिया, जो जोगी बन गया था, पकड़ लिया गया है तो बादशाह ने शीघ्रता से कूच किया और सिरोही पहुंच कर शादिक खां को कुछ आदमियों के साथ वहीं छोड़ा और आदेश दिया कि वहाँ शान्ति बनाये रखे और राजद्रोह का दमन करें। 27 सितम्बर, 1573 को अकबर अजमेर पहुंचा और ख्वाजा मुईनुद्दीन की दरगाह में गया। वहाँ अकबर की उदारता से सम्बन्धित लोगों को लाभ हुआ। दूसरे दिन सायंकाल आदेश हुआ, प्रधान सेना मंजिल पार करती हुई धीरे-धीरे चले। स्वयं उसने वायुवेग से आगे जाने का निश्चय किया। उस दिन और रात भर तथा उसके अगले दिन सायंकाल तक चल कर कह बकर के पास पहुंचा। राजा टोडरमल को राजधानी से शीघ्र बुलाया गया था। वह आकर मिला। उसको गुजरात का बन्दोबस्त करने के लिये भेज दिया गया। उसको हिदायत की गई कि बन्दोबस्त न्यायानुकूल हो और उसमें लोभ नहीं किया जाये और उसका विवरण दरबार में भेज दिया जाये।

जब सायंकाल होने लगा तो नेवटा नामक गांव में रामदास कछावा ने उसका आतिथ्य किया। फिर अर्द्धरात्रि के पश्चात् तेज घोड़े पर सवार होकर वह चला और सायंकाल हंस महल पहुंच गया। वहाँ नहीं ठहरा और रात भर तथा दूसरे दिन भी कूच करता रहा। रविवार को उसने टोडा परगना में विश्राम किया। जब एक पहर दिन शेष रह गया तो वह वहाँ से चला और अर्द्ध रात्रि के बाद बसावर पहुंचा। वहाँ ख्वाजा जहाँ और शिहाबुद्दीन अहमद खां राजधानी से उससे मिलने के लिये आये हुए थे। आगे की यात्रा में वह उसके साथ रहे और प्रातःकाल बजुना नामक कस्बे में पहुंच गये और वहाँ थोड़ी देर विश्राम किया। वहाँ आदेश दिया गया कि जो विजयी वीर परिचरों में थे, हाथ में भाले लेकर राजधानी की ओर चले। दिन डेढ़ पहर के बाद 5 अक्टूबर, 1573 को वह राजधानी में पहुंचा। जब एक पहर दिन शेष था तब ही वह फतेहपुर पहुंच गया था। अफसरों और सरदारों ने उसका स्वागत किया। बेगमें और शाहजादे उससे मिलकर प्रसन्न हुए। सब को जागीरें दी गईं। गुजरात की विजय इस प्रकार 43 दिन में पूरी हो गई। अभी एक मास भी नहीं निकला था कि राजा भगवन्तदास उस सेना के साथ आ पहुंचा जो ईडर के मार्ग से रवाना की गई थी। उसने बहुत अच्छी सेवा की थी, जिससे उसकी कीर्ति बढ़ गई थी। बादशाह के प्रति अधीनता प्रकट करने के लिये वह अपने साथ राणा के पुत्र उमरा को और रावलिया को लेकर आया था। बादशाह ने उस पर अनेक कृपायें कीं।

इस सेना का संक्षिप्त वृत्तान्त यह है कि थोड़े-से समय में इसने बढ़नगर के दुर्ग को जीत कर ईडर की ओर प्रयाण किया था। वहाँ के जमीनदार नारायणदास राठोड़ ने सेना

का स्वागत किया और उपयुक्त भेटें दीं। जब यह सेना गोगून्दा पहुंची, जहाँ राणा का निवास था तो राणा कोका ने अपने पिछले व्यवहार के लिये लज्जा और पश्चात्ताप प्रकट किया और अधीन भाव से राजा भगवन्तदास से भेंट की। राजा को अपने महल पर ले जाकर उसका आदर और आतिथ्य किया। राणा ने अपने पुत्र और उत्तराधिकारी को राजा भगवन्तदास के साथ भेज कर निवेदन किया कि दुर्भाग्यवश मेरा चित्त शान्त नहीं है इसलिये मैं अपने पुत्र को भेज रहा हूं। जब मेरे हृदय को सान्त्वना प्राप्त हो जायेगी तो कुछ समय बाद मैं स्वयं आकर अधीनता प्रकट करूंगा। थोड़े समय बाद राजा टोडरमल भी गुजरात से आ गया। उसने वहाँ के बन्दोबस्त के सब कागज शाही अभिलेखागार में सौंप दिये। उससे भी राणा मार्ग में मिला था और उसने चाटुता और अधीनता प्रकट की थी।

गुजरात से यह आदेश दिया गया था कि मुजफ्फर खां जहाँ हो, वहीं से वापस मुड़कर उस समय राजधानी पहुंचे, जब शाही सेना वहां पहुंच जाये। मुजफ्फर खां अपने साथ खानदीन खां आदि मालवा की सेना के अधिकारियों को गुजरात की ओर ले गया था। उज्जैन के निकट वह राजा मानसिंह के साथ शामिल हो गया। राजा मानसिंह काचीवाड़ा से गुजरात को जा रहा था। ख्वाजा शमसुद्दीन सवाफी का कहना है कि जैन साधुओं ने अपने ज्योतिष के द्वारा पता लगा कर कहा था कि ''सेना शीघ्र ही वापस आ जायेगी। इनकी परीक्षा लेने के लिये मुजफ्फर खां ने उनको निगरानी में रखा। धूब कस्बे में जो मालवा और गुजरात की सीमा पर स्थित है, पत्र मिले कि बादशाह के सौभाग्य से गुजरात पर विजय हो गई है और राजद्रोहियों तथा विद्रोही का अभिमान चूर हो गया है। तब एक फरमान जारी किया गया कि अधिकारी लोग जहाँ हों वहीं ठहर जायें और राजधानी की ओर प्रयाण करने की तैयारी करें। इन दोनों साधुओं की बात ठीक निकली, इस पर आश्चर्य प्रकट किया गया। मानसिंह अपनी जागीर पर चला गया। मुजफ्फर खां अभी सारंगपुर नहीं पहुंचा था तो उसको खबर मिली कि शाही सेना राजधानी पहुंच गई है इसलिये वह शीघ्रता से चला और अकबर से मिला। अकबर ने उस पर राजसी कृपा की और उसको वकील के पद पर नियुक्त कर दिया। फिर उसको वियज का मद चढ़ गया और वह सोचने लगा कि प्रशासन में जो भी सफलता प्राप्त होती है वह उसकी योग्यता के कारण होती है। उसका अभिमान बहुत बढ़ गया। उसने यह नहीं सोचा कि अकबर उसके कामों की ओर नहीं देख रहा है। जब सखन-ए-दाद-ए-सिपाही का प्रश्न सामने आया तो उसने मूर्खता की बातें कीं।''

शासन-व्यवस्था ठीक करने के लिये अकबर ने दाग के नियम जारी किये। खालसा भूमि को निजी भूमि में परिणत किया और राज्य के अफसरों की श्रेणियां निश्चित की। राजा टोडरमल की सम्मति थी कि अकबर का विचार बड़ा उत्तम है परन्तु लोगों में समझ की कमी है इसलिये इन सुधारों की उत्तमता को नहीं समझते हैं परन्तु शायद मुनीम खां और मुजफ्फर खां को यह योजना पसन्द नहीं थी।

जब यह प्रस्ताव मुजफ्फर खां के सामने रखा गया तो दम्भ और समझ की कमी के कारण उसने इन सुधारों को कार्यान्वित करने के प्रति अनिच्छा प्रकट की। तब उस पर बादशाह की कृपा नहीं रही।

***

प्रकरण 13

बंगाल और बिहार पर अकबर का दूसरा अभियान और राजद्रोहियों का दमन

जब सुलेमान करारानी बंगाल-बिहार का शासन करता था तो वह अकबर के प्रति आदर प्रकट किया करता था और उसकी आज्ञा का पालन करता था परन्तु यह बाह्य उपचार मात्र था तथापि अकबर समझता था कि वह हृदय से आज्ञाकारी है इसलिये शाही सेना से वहां के अफगानों को किसी प्रकार की क्षति नहीं हुई थी। जब सुलेमान की मृत्यु हो गई और उसका छोटा पुत्र दाऊद उसकी गद्दी पर बैठा तो मिथ्याचार प्रकट हो गया। वह देश में उत्पात मचाने लगा। दाऊद को अब तक यथोचित दण्ड नहीं मिला था परन्तु अब अकबर गुजरात के विद्रोहियों के विषय में निश्‍चित हो चुका था इसलिये उसने पूर्वी प्रान्तों की दशा के सुधार की ओर ध्यान दिया और दम्भी तथा अभिमानी लोगों के विनाश की योजना बनाई। राजधानी को पहुंचते ही अकबर ने लश्कर खां, मीर बख्सी और टोडरमल के रिश्तेदार परमानन्द को रवाना किया। परमानन्द युद्ध पोतों का अधिकारी था। इन नावों में ही तोपें और बन्दूकें थीं। बड़े-बड़े अधिकारियों और जागीरदारों को आदेश दिया गया कि वे मिलकर काम करें और मुनीम खां खानखाना की हिदायतों से नहीं डिगें।

दाऊद ने लूदी खां को मार डाला था। लूदी खां युक्तियों में निपुण था और पूर्वी प्रान्तों में वह अफगानों का हित चाहता था। वह दाऊद खां का विरोधी बन गया था। दाऊद खां ने ताज खां के पुत्र को मार डाला था जो दाऊद खां का चचेरा भाई था। इससे लूदी खां का चित्त क्षुब्ध हो गया था। हम पहले ही लिख चुके हैं कि मुनीम खां इस खतरे से बच गया था। लूदी खां ने अकबर से कोई सम्बन्ध नहीं जोड़ा था। प्रत्यक्ष में वह झगड़े किया करता था इसलिये स्वामिभक्त अफगान उसके विरोधी बन गये थे। दाऊद खां ने कतल्‌शमस खां मुसाजाई आदि के परिश्रम से गढ़ी को दृढ़ कर लिया और सुलेमान के कोष को लोगों में वितरित करने लगा। बुद्धिहीन और चल प्रकृति वाले लोग उसके पास

इकट्ठे हो गये। लूदी खां असहाय होकर रोहतास के दुर्ग में चला गया। दाऊद ने उसके विरुद्ध सेना चढ़ाई जो रोहतास पहुंच गई। लूदी ने विवश होकर शाही दरबार की ओर देखा और मुनीम खां से सहायता मांगी। मुनीम खां ने कुछ अफसरों के साथ सेना भेजी और आदेश दिया कि उसको सैनिक सहायता तथा सलाह दी जाये। मुनीम खां स्वयं भी आगे चला। उसने सोचा था कि बहुत सम्भव है कि लूदी उससे मिलने आयेगा और बंगाल तथा बिहार के मामलों का निर्णय आसानी से हो जायेगा।

इन मामलों की खबर अकबर को उस समय मिली जब वह राजधानी में था। तब उसने उस देश की विजय की ओर ध्यान दिया। राजा टोडरमल को जो भरोसे का आदमी था, आदेश दिया कि ऐसी सेना भरती की जाये जो स्वामिभक्ति के साथ सेवा करे।

जब मुनीमखां खानखाना तीर मोहिनी नदी के तट पर पहुंच गया जहाँ गंगा, यमुना और सरु का संगम है तो राजा टोडरमल ने आकर परिश्रमपूर्वक काम करना शुरू कर दिया। थोड़े अर्से में एक विशाल सेना खड़ी हो गई, तब उसका निम्नलिखित विभाग किया गया। उसके मध्य भाग दाहिना पक्ष और बायां पक्ष का नेतृत्व योग्य अधिकारियों को दिया, सेनाग्रभाग खान-आलम और मिर्जा अली के सुपुर्द किया। जब राजा टोडरमल सेना को देख चुका तो लश्कर खां ने और खानखाना के अन्य लोगों ने नदी को पार किया। निजाम जिसके पास एक बड़ी अफगाना सेना थी, भाग गया। उसी समय खबर आई कि लूदी ने दाऊद से समझौता कर लिया है और अब वह लड़ने के लिये तैयार है और उसके पास बहुत बड़ी सेना है। इस मनसूबे का रहस्य बाद में प्रकट हुआ।

अन्त में दाऊद की चालाकियों से लूदी रास्ते से हट गया। दाऊद कुतलु और गुजर की सलाह में था। दाऊद ने लूदी के पास सन्देश भेजा कि "तुम सुलेमान के स्थान पर हो, उस कुटुम्ब के प्रेम के कारण यदि तुम मुझसे क्रुद्ध हो तो तुमने अपने कर्तव्य का पालन किया है। मैं तुमसे नाराज नहीं हूं। मैं तो हर काम में तुम्हारी सहायता चाहता हूं। अब मेरे विरुद्ध शाही सेना आ गई है तो तुम भी लड़ाई के लिए कमर कस लो। मैं सेना क्रोस, और तोपखाना तुम्हारे सुपुर्द करता हूं।" फिर लम्बी संधि वार्ता के पश्चात् गूजर के परिश्रम से दाऊद और लूदी में संधि हो गई। दाऊद ने उसको सान्त्वना दी और आगे भेज दिया। कुछ दिन बाद लूदी के शाही सेना से सामना हो गया, वह एक दुर्ग का निर्माण करके लड़ाई में व्यस्त हो गया, सोन नदी के तट पर निरन्तर युद्ध होने लगे। शाही सेवकों को सदैव विजय प्राप्त होने लगी। वीर पुरुष नदी पार करके लड़ने लगे। एक दिन कुछ सैनिकों को लाल खां के नेतृत्व में नदी पार करके जरन्दाकोट के विरुद्ध भेजा गया। लाल खां ने शत्रु की 14 नावें छीन लीं। बहुत-से विद्रोही मारे गये और लाल खां के पुत्र . भी वीरगति प्राप्त की। अफगानों में गड़बड़ मच गई और खबर आई कि लूदी खां मारा गया।

जब लूदी खां आश्वस्त होकर परिश्रमपूर्वक लड़ाई कर रहा था तो दाऊद खां नीचे

से आकर जलाल खां गिधोरिया के मकान पर पहुंचा, उसने एक आदमी को लूदी, कालू और फूल को बुलाने के लिए भेजा और कहलाया कि कई विषयों पर बातें करनी हैं। लूदी विश्वास के साथ गया, फूल उसके साथ था परन्तु कालू नहीं गया। उसने कहा कि इस बुलावे में अच्छी गन्ध नहीं आ रही है। पहले तो दाऊद ने लूदी के साथ आदरपूर्ण व्यवहार किया, फिर वह वहां से हट गया। कतलू और अन्य लोग आकर लूदी को पकड़ने ही वाले थे। तब लूदी के नौकर ने कतलू पर तलवार का वार किया परन्तु स्वयं उसके टुकड़े-टुकड़े हो गये। लूदी को पकड़ लिया और अफगानों में बड़ा क्षोम उत्पन्न हो गया। सारे अफ़सर इस बात पर सहमत थे कि लूदी का बध कर दिया जाये। दाऊद ने पूछा कि क्या करना चाहिये तब लूदी ने उत्तर दिया, ''मेरी प्रतिष्ठा भंग मत करो।'' मैं अदूरदर्शी लोगों के बहकाने से संकट में पड़ गया हूं। मेरे लिये उचित बात यह होगी कि मैं एक एकान्त कमरे में अपने जीवन का अन्त कर दूं। परन्तु मूर्खों ने उस पर वार किया और उसको तथा फूल को मार डाला। इस प्रकार उन्होंने अपनी ही शक्ति पर प्रहार किया। तब हितैषी लोग लूदी के पुत्र ईस्माइल को खानखाना के पास ले गये। खानखाना इस समय सोन नदी को पार कर चुका था। लूदी के वध से शत्रुओं में फूट पड़ गई। यदि शाही अफसर शक्ति और दृढ़ता से काम करते तो वह जल्दी ही उसको समाप्त कर देते परन्तु काम तो अकबर के हाथ से होना था इसलिये इसमें विलम्ब हुआ। सारी सेना ने कवच धारण किये। सब लोग घोड़ों पर सवार हुए। राजा टोडरमल और लश्कर खां आदि आगे बढ़े। उन्होंने शिविर के लिये एक स्थान चुना। थोड़े समय में ही एक दृढ़ दुर्ग और गहरी खाई बना ली गई। इस प्रकार उन्होंने पटना के सामिप्य तक सावधानी की।

बादशाह को मालूम हुआ कि सेफ खां कोकलताश स्वामिभक्ति पूर्वक लड़ता हुआ काम आया था और शेख मुहम्मद बुखारी जिसने गुजरात के प्रथम अभियान में अमर पद प्राप्त किया, बहुत बड़ा ऋण छोड़ कर गया है। अकबर ने सब स्वामिभक्तों का ऋण चुका कर अपनी उदारता का परिचय दिया। इसी वर्ष शाहजादों का खतना हुआ तो 22 अक्टूबर, 1573 को बड़ा उत्सव मनाया गया। साथ ही अकबर की तुला हुई और लोगों को बख्शीशें दी गईं तथा कितनों ही के अपराध क्षमा किये गये।

***

प्रकरण 14

शाहजादा सुल्तान सलीम का शिक्षारम्भ

बादशाह ने अब निश्चय कर लिया था कि शाहजादा सलीम को शिक्षा के लिए कसी योग्य अध्यापक के सुपुर्द किया जाए। मौलाना मीर कलां हरबी तत्कालीन सब प्रकार की विद्याओं के लिए प्रसिद्ध था। उसको 18 नवम्बर, 1573 को शाहजादे का अध्यापक नियुक्त किया गया। बहुत बड़ी दावत दी गई और शाहजादे ने शिक्षा-क्षेत्र में पदार्पण किया। पहले ईश्वर को फकीरों ने और स्वामिभक्त सेवकों ने अकबर को बधाइयां दीं और ईश्वर से प्रार्थनाएं कीं।

इस वर्ष हाजी बेगम का शुभागमन हुआ, मक्का और मदीना की यात्रा से वापस लौटने पर भी अकबर ने साथ उसका गहरा स्नेह होने पर भी उसने दिल्ली में ही निवास करना उचित समझा। वह हुमायूं के मकबरे के समीप रहा करती थी और पुण्य कार्यों में लगी रहती थी।

जब गुजरात पर विजय प्राप्त हो गई और उसके उपलक्ष्य में दावतें होने लगीं तो वह अकबर को बधाई देने के लिए आई। अकबर ने बाहर जाकर उसका स्वागत किया। हाजी बेगम बादशाह हुमायूं की माता के मामा की पुत्री थी। अलामान मिर्जा उसका पुत्र था। हुमायूं इस महिला का बड़ा आदर करता था। मैंने अकबर को कहते हुए सुना है, ''उसका मेरे प्रति इतना स्नेह और अनुग्रह था और मेरा उसके प्रति इतना अनुग्रह था कि उसका पता नहीं लग सकता, जिनके तथ्य का पता नहीं था, वह तो यही समझते थे कि वह मेरी माता नहीं है। एक बार जब मैं 6 वर्ष का था तो मेरे दांत में दर्द हुआ। उसने कहा कि मेरे पास इसकी परीक्षित औषधि है फिर वह औषधि लेने गई। मेरी स्वर्गीय माता मरियम मकानी बड़ी सचेत और सजग थी। उसको बड़ी आन्तरिक वेदना हुई कि यह औषधि दी जाये या नहीं परन्तु मेरे पिता के प्रति उसका इतना आदर था कि उसको कुछ भी कहने का साहस नहीं हुआ। अतः उसने मुझ को अपने निवास पर ले जाने का यत्न किया। लेकिन मैं हाजी बेगम को छोड़ना नहीं चाहता था। तत्काल ही हाजी बेगम औषधि ले आई। परन्तु वह मरियम मकानी की भावना को भी समझ गई और मेरे प्रेम के वश होकर उस औषधि में से कुछ वह भी निगल गई, उसके पश्चात् उसने वह मेरे दांत पर लगाई। मेरी पीड़ा जाती रही और उथले विचार वाले लोगों के चित्त भी शान्त हो गये।''

मधुकर पर अभियान

इस वर्ष एक घटना यह हुई कि राजा मधुकर (बुंदेला) ने उत्पात खड़ा करके अकबर की आज्ञा का पालन करना बंद कर दिया। तब सैयद महमूद खां और बारहा के अन्य सैयदों

को एक बड़ी वीर सेना देकर उसके राज्य ओरछा पर अभियान करने के लिये रवाना किया। सैयदों ने बड़े साहस का काम करके उस राज्य में व्यवस्था स्थापित कर दी। विद्रोह करने वालों की शक्ति सीमित हो गई, थोड़े समय बाद सईद महमूद खां की मृत्यु हो गई।

इसी वर्ष वीर मुहसिन रिजवी मशहदी दक्षिण के शासक से भेंटे लेकर और अधीनतासूचक प्रार्थनाएं लेकर वापस आया। इसको गुजरात के प्रथम अभियान के समय राजदूत बनाकर दक्षिण में भेजा गया था। इसका संक्षिप्त वृत्तान्त यह है कि जब मुहम्मद हुसेन मिर्जा और कितने ही विद्रोही दक्षिण की ओर भाग गये तो अकबर ने यह आवश्यक समझा कि किसी योग्य आदमी को भेज कर दक्षिण के शासकों को अच्छी सलाह दी जाए और उनको आज्ञापालन के मार्ग पर लाया जाये। राजदूत विद्रोहियों को दरबार में लाये या उन्हें साम्राज्य की सीमा से दूर भगा दे।

अहमदनगर के शासक निजाम उल मुल्क ने भाग कर उसके राज्य में गये हुए विद्रोहियों को पकड़ कर समर्पित तो नहीं किया पर इतना अवश्य किया कि उनको अपने राज्य में नहीं टिकने दिया। अब उसने अपने राज्य के विश्वसनीय सेवकों द्वारा उपयुक्त भेंटें भेज कर स्वामिभक्ति प्रगट की। राजदूत ने निवेदन किया कि शाही सेना के कार्यों को दक्षिण के लोगों पर बड़ा प्रभाव पड़ा है और उन्होंने अपना माल-असबाब पर्वतों की घाटियों में छिपा दिया है। परन्तु अकबर ने दक्षिण-विजय को स्थगित रखा और अपनी समस्त शक्ति पूर्वी प्रान्तों की विजय पर तथा वहाँ के विद्रोहियों की शक्ति नष्ट करने पर केंद्रित कर दी। अकबर को यह भी आशा थी कि मुनीमखां पटना के दुर्ग को घेरे हुए है और बड़ा कुशल नेतृत्व कर रहा है। फिर भी आवश्यकता होगी तो मैं स्वयं उधर की ओर जाऊंगा।

एक घटना यह भी हुई कि बादशाह ने घोड़े की सवारी करके रमजान की ईद को अलंकृत किया। ईद की नमाज के समय उसने सुना कि नासिरुद्दीन ख्वाजा अब्दुल्ला का पौत्र ख्वाजा अब्दुलशहीद भी उपस्थित है, यह ख्वाजा अहराड़ है। अकबर ने उसकी ओर विशेष ध्यान दिया, वह बड़ा सत्पुरुष था और ईश्वर की भक्ति में लगा रहता था। अकबर ने पास बिठाकर सम्मानित किया।

***

प्रकरण 15

दरगाह यात्रा

इसी समय बादशाह को यह विचार हुआ कि बिहार और बंगाल की विजय उस सेना के द्वारा नहीं हो सकती जो वहाँ पर नियत है। वहाँ शाही सेना को जाने की आवश्यकता होगी इसलिये उसने पहले ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह की यात्रा करने का और उसकी परिक्रमा करने का विचार किया। 8 फरवरी, 1574 को उसने अजमेर की ओर कूच किया। पहले दिन वह दाबर (फतहपुर से 4 कोस) पहुंचा, वहाँ 4 दिन ठहरा। ख्वाजा अब्दुलशहीद बादशाह के साथ था, यहाँ से उसने बिदा ली। फिर जब अकबर टोडा के निकट ठहरा हुआ था तो मिर्जा कोका शीघ्रतापूर्वक गुजरात से आया और अकबर ने कुछ कदम आगे बढ़कर उसका स्वागत किया और उसके प्रति बड़ा अनुग्रह प्रकट किया। फिर अजमेर से 7 कोस की दूरी पर पहुंच कर अकबर ठहर गया और अगले दिन दरगाह की यात्रा के लिये पैदल रवाना हुआ। अकबर जब भी यात्रा करने आता था तो ऐसा ही किया करता था। सायंकाल वह दरगाह में पहुंचा और अपनी भक्ति प्रकट करके दरगाह से सम्बन्धित लोगों को अपार बख्शीशें दीं, इसके पश्चात् वह उन सुखद राजप्रासादों में ठहरा जो अब पूरे हो चुके थे। राय रामदास जो प्रशासनिक योग्यता और समता के लिये प्रसिद्ध था, अजमेर का दीवान नियुक्त किया गया, यह भी आदेश जारी हुआ कि राज्य कर्मचारी राजा टोडरमल के आदमी होने चाहिए।

***

प्रकरण 16

शासन के उन्नीसवें वर्ष का प्रारम्भ

शासन के 19 वें वर्ष का आरंभ 11 मार्च, 1574 को हुआ। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर बहुत बड़ा भोज दिया गया और एक विशाल सभा हुई। रात और दिन रुपया दान दिया गया।

जब अकबर अजमेर में ही था तो सूचना मिली कि राजा मालदेव के पुत्र चंद्रसेन ने विद्रोह कर दिया है। सिवाना के दुर्ग को दृढ़ कर लिया है और संकट के समय उसमें शरण लेना चाहता है। तब अकबर ने तीन मुसलमान और दो हिन्दू सरदारों को जिनमें राय

रामसिंह भी था, विद्रोही को दण्ड देने के लिये नियुक्त किया। इन लोगों ने सोजत नगर की ओर प्रयाण किया। राय मालदेव का पौत्र काला वहाँ पर डटा हुआ था परन्तु शाही सेना के आगमन पर वह भाग कर सिरबारी[1] चला गया। वहाँ भी शाही सेना ने उसका पीछा किया तो वह विवश होकर शाही सेना में शामिल हो गया और अपने साथ अपने भाई केशवदास को और महेशदास और पृथ्वीराज राठोड़ को भी लाया। फिर अवकाश प्राप्त करके वह अपनी व्यवस्था करने के लिए ठहर गया, तब शाही अधिकारी सिवाना की ओर चले। विद्रोही के अनुचर रावल सुखराज का उस स्थान पर कब्जा था। इस समय राय रायसिंह के सेवकों ने गोपालदास के नेतृत्व में चंद्रसेन के राज्य पर आक्रमण किया तो रावल की सहायतार्थ चन्द्रसेन ने सूजा और देवीदास को कुछ वीर लोगों के सहित सहायतार्थ भेजा। रावल ने उन पर आक्रमण किया, लड़ाई में दोनों पक्षों के लोगों ने बड़ी वीरता दिखाई। इस लड़ाई में सूजा देवीदास और रावल का भाई मान मारे गये। शाही सेना को विजय प्राप्त हुई। लड़ाई की खबर सुनकर राय रामसिंह ने स्वयं रणभूमि की ओर प्रयाण किया। परन्तु उसके आने से पूर्व ही विजय प्राप्त हो चुकी थी। इस प्रकार पराजित हो जाने पर रावल ने अपने पुत्र को शाही सेना में भेजा, इसके पश्चात् शाही सेना ने सिवाना की विजय के लिए प्रयाण किया। चंद्रसेन ने उस दुर्ग में ठहरना उचित न समझ कर उसकी पटाई राठोर और पटाई बक्काल के सुपुर्द कर दिया। शाही सेवकों ने दुर्ग को घेर लिया। जब इस प्रान्त के मामलों के विषय में अकबर निश्चिंत हो गया तो उसने राजधानी की ओर प्रस्थान किया और 17 मार्च, 1574 को वहां पहुंच गया।

अब वर्षा का आरम्भ होने वाला था। पूर्वी प्रान्तों से मुनीम खां ने खबर भेजी कि पटना का घेरा लम्बा होता जा रहा है। दुर्ग के एक ओर नदी है। इसलिये घिरे हुए लोगों के पास खाद्य-सामग्री खूब पहुंच जाती है। दुर्ग सम्पन्न है और कोष, तोपखाना और हाथियों की विपुलता के कारण दुर्गसेना को बड़ा विश्वास है। वर्षा के कारण भी शाही सेना दुखी है, यदि बादशाह स्वयं आयें तो गुत्थी सुलझ सकती है। काकर अली खां और उनका पुत्र मारे जा चुके हैं। खाने आलम भी बड़े वीर कार्य कर चुका है। हसन खां वतनी आकर पुनपुन के बांध को तोड़ने की योजना बना रहा है। हसन खां वतनी अपने समय में बड़ा वीर पुरुष था, वह शत्रु को छोड़ कर शाही सेना में आ गया था। मुनीम खां ने उस पर बड़ी कृपा की थी। उसने शत्रु का सामना करने के लिये कई उपाय सुझाये और दो बातों को अत्यावश्यक समझा। पहले तो पुनपुन नदी का बांध तोड़ा जाये, जिससे संग्रहीत जल बह कर गंगा में चला जाये। अन्यथा यह रुका हुआ पानी दुर्ग की ओर बढ़ेगा और शाही सेना का काम कठिन हो जायेगा। दूसरी बात यह थी कि हाजीपुर से शत्रु का अधिकार हटाया जाये क्योंकि वहीं से दुर्ग में खाने-पीने की चीजें पहुंचती थीं। मुनीम खां ने खाने

1. यह शायद सरवार है।

आलम को आदेश दिया कि वह हाजीपुर छीन ले। परन्तु उसने उत्तर दिया कि मेरी नियुक्ति दरबार से अग्रसेना में हुई है। इस विवाद के कारण योजना स्थागित करनी पड़ी। फिर मजनूं खां और कुछ वीर पुरुष बांध को तोड़ने के लिये भेजे गये, उन्होंने रात में यह काम उत्तम ढंग से कर दिया। बांध की देखरेख के लिये सुलेमान और बाबा मंकली नियुक्त थे। परन्तु उस दिन यह प्रमाद-निद्रा में सोये हुए थे। घेरा लम्बा हो रहा था और अकबर का ध्यान पूर्वी प्रान्तों की विजय की ओर लगा हुआ था, फिर मुनीम खां की रिपोर्ट मिली तो अकबर का निश्चय और भी दृढ़ हो गया। शाही सेना ने आगरा से फतेहपुर को प्रयाण करके अभियान की तैयारी शुरू की, इसके लिये बड़ी-बड़ी नावें बनवाई गईं और यह निश्चय हुआ कि बादशाह साहब जादे और कुछ महिलाएं तथा चुने हुए दरबारी नावों द्वारा जायेंगे। मुख्य सेना तथा शिविर स्थलमार्ग से चलेगा। उस समय सैनिक उपस्थित कम थे और अनुपस्थित अधिक थे।

अबुल फजल

अबुल फजल को 5 वर्ष की आयु में समझ आई। उसने अपने पिता से शिक्षा प्राप्त की और पन्द्रह वर्ष की आयु में उसने सब प्रकार के परम्परागत और बुद्धिसगत विद्याएं (फगून-ए-विकमी ओ अलूम-ए-नकली) ग्रहण कर ली। इससे उसमें स्वाभिमान और दम्भ बहुत बढ़ गया। एक बार उसे संसार से विरक्त होने का भी ध्यान आया। परन्तु उसके पिता ने उसको इस पागलपन से बचाया तथापि अबुल फजल की आत्मा को शान्ति नहीं हुई। उसका ध्यान पेलेस्टाइन, तिब्बत और पोचुगाल के साधुओं कीं ओर आकर्षित होता था। कभी-कभी वह ईरान के विद्वानों से मिलता था और जिन्दावस्था के रहस्यों के ज्ञान से उसकी आत्मा में खलबली मच जाती थी। अन्त में उससे अकबर की धर्म-सभाओं की बात की गई, उसके भाई वह मित्रों ने और स्नेही रिश्तेदारों ने कहा कि तुमको सांसारिक और आध्यात्मिक शासक की सेवा करने का अवसर प्राप्त होना चाहिये। अन्त में उसके पिता ने उसको सत्य मार्ग पर लगाया। वह अकबर की सेवा में पहुंचा। बादशाह ने उसकी ओर कृपादृष्टि से देखा। उस समय अकबर को उस जैसे आदमी की ओर ध्यान देने का अवकाश नहीं था। फिर पूर्वी प्रान्तों की विजय के पश्चात् जब अकबर वापस लौटा तो उसको अबुल फजल का ध्यान आया। इसका वर्णन यथास्थान किया जायेगा।

एक घटना यह हुई कि खाने खाना के पास से सुजात खां आया। उसको कासिम अली खां की देख-रेख में खाने खाना के पास भेजा गया था और आदेश दिया गया था कि खाने खाना उसको दंड दे; परन्तु खाने खाना ने सुजात खां के साथ स्नेह और सोहार्द का व्यवहार किया और उसके लिये क्षमा मांगी। अकबर ने यह प्रार्थना स्वीकार करके सुजात को बुलाया, उसने आकर खाने आलम के छूटे हुए नौ हाथी बादशाह को भेंट किये। थोड़े समय में अभियान की व्यवस्था बन गई। ऐसी नावें तैयार हुईं जिनका वर्णन नहीं

किया जा सकता, उन पर सुखद निवासस्थान और बनाये गये। प्रत्येक नाव के आगे का भाग किसी न किसी पशु के आकार का बनाया गया था। इनको देख कर दर्शक लोग चकित हो जाते थे।

एक घटना यह घटी कि मुजफ्फर खां को शिविर का अध्यक्ष बनाया गया। अकबर चाहता था कि उसको बाहर निकाल कर शिक्षा दी जाये। परन्तु उसने मूर्खतावश इस काम को स्वीकार करने के विषय में अनुचित भाषा का प्रयोग किया, इसलिये उस पर बादशाह की कृपा नहीं रही और शिविर की अध्यक्षता मिर्जा यूसुफ खान रिजवी को दे दी गई।

जब अकबर पूर्वी प्रान्तों की ओर प्रयाण कर रहा था तो उसने सुना कि गुजरात में पुन: गड़बड़ हो गई है और इख्तियार उलमुल्क के पुत्रों ने विद्रोह कर दिया है। तब मिर्जा कोका को सम्मानित करके उधर की ओर रवाना किया गया।

***

प्रकरण 17

जलमार्ग द्वारा अकबर का पूर्वी प्रान्तों पर अभियान

जब अभियान की व्यवस्था बन गई तो शिहाबुद्दीन अहमद खां को, जो दीवान-ए-खालसा का वकील था, अकबर ने आगरे में छोड़ा। साथ ही तैईब खां को पृथक् करके राय भगवानदास को सारे साम्राज्य का मुस्तोफी (डिप्टी दीवान) नियुक्त किया और राय पुरुषोत्तम को बख्शी बना कर खिलत प्रदान किया। 15 जून, 1574 को अकबर ने शाहजादों और पर्देदार महिलाओं के साथ जलमार्ग से प्रस्थान किया। अकबर के साथ इस अभियान में कितने ही उपराव थे, जिनमें 19 मुख्य थे और इनमें 4 हिन्दू थे। 4 में से एक राजा बीरबल था, शेष तीन राजा भगवन्तदास, राजा मानसिह और माधो सिंह (यह तीनों आमेर के) थे। विद्वान् लोगों में शेख अब्दुलनवी सदर, हकीम-उल-मुल्क, काजी याकूब और कुछ अन्य प्रसिद्ध लोग थे। बादशाह के साथ दो विशाल हाथी भी थे, एक का नाम बालसुन्दर, दूसरे का समान था। दोनों नावों में चढ़ा कर ले जाया गया था। प्रत्येक हाथी के साथ दो हथिनियां भी थीं। जब नौ सेना इटावा ठहरी तो यमुना नदी में तूफान आया और बहुत-सी नावें, जिन पर मकान बने हुए थे, डूब गईं फिर नौ सेना कालपी पहुंची

और फिर चकूर नामक गांव आया जहाँ एक ब्राह्मण को प्राणदंड दिया गया। इसके बाद शाब के दिन नौ सेना इलाहाबाद ठहरी। ओरभुज के प्रथम दिन जब अकबर ने इस सुखद स्थान से प्रस्थान किया तो नदी में बड़ा तूफान था। आंधी चल रही थी। 11 नावें डूब गईं। अकबर चाहता था कि सारा सामान और शिविर जौनपुर ठहरे। इसलिये मुहासन खां ने जो उस नगर का हाकिम था आदेशानुसार स्थलयात्रा के लिये सामान जुटाया। इलाहाबाद के पास कासिम अली खां ने खानखाना के पास से आकर सलाम किया, वह शाही सेना की विजय की खबर लाया था। यहीं अकबर को हुसेन खां का स्मरण आया। उसने पूछा कि इस अभियान में वह साथ क्यों नहीं है तो उससे निवेदन किया गया कि वह उन्मत्त हो गया है और किसानों को लूटता है और प्रजा पर अत्याचार करने में लगा हुआ है। यह खबर सुनकर अकबर को क्रोध आया। परन्तु अभियान हो रहा था इसलिये अकबर ने हुसेन खां को दण्ड देने के लिये किसी को नहीं भेजा। बहमान दो अमर दाद के दिन अकबर ने बनारस में अपने ध्वज फहराये। उस दिन भी नदी क्षुब्ध थी। चुनार दुर्ग के निकट तूफान और भी अधिक जोर का था इसलिये नाविक अधिकारी भयभीत हो गये। बहुत-से लोग नावों को छोड़कर स्थलमार्ग से चलने लगे, परन्तु अकबर ईश्वर पर भरोसा करके नाव द्वारा ही चलता रहा। वह बनारस में तीन दिन ठहरा और खिरदाद के दिन उसकी नाव ने गोदी गांव के निकट जो सईदपुर के अधीन है और जहाँ गोदी नदी गंगा से मिलती है, लंगर डाले। उसी दिन शाही शिविर भी शाही ध्वजों के पास पहुंचा और कई अफसर अकबर से मिले।

जब अकबर नाव द्वारा यात्रा करता था तो कई बार मीर शरीफ सुन्दर स्वर से आध्यात्मिक स्नेह का संगीत सुनाया करता था। तब अकबर प्रेमविभोर हो जाता था और उसको आंखों में आंसू भर आते थे।

अकबर राजधानी से रवाना हुआ, उससे पूर्व ही खाने खाना के पुत्र आये थे कि यदि बादशाह की सेना जौनपुर तक आ पहुंचेगी तो दाऊद नष्ट हो जायेगा। अकबर ने यह सुझाव स्वीकार नहीं किया। परन्तु वह चाहता था कि विजय प्राप्त हो जाय। इसलिए उसने आदेश दिया कि नावों को गोदी नदी के ऊपर की ओर ले जाकर जौनपुर के निकट ठहराया जाये। अतः मिरदाद सात अमरवास को शाही झंडे बहिराज नामक गांव में ठहरे जो कराकट परगना के अधीन है। दिवाजर के दिन जब वह लोग याहियापुर नामक गांव के समीप, जो जौनपुर के अधीन है, ठहरे हुए थे तो अधिकारियों ने खबर भेजी कि दुष्कर कार्य यदि अकबर स्वयं आ जायेगा तो सफल हो जायेगा। आज के दिन शाहजादों और महिलाओं को गोदी नदी द्वारा जौनपुर भेज दिया गया। उनके साथ हकीम उल मुल्क सैयद अहमद, इखलास खां और अन्य लोगों को भेजा गया और बादशाह स्वयं पटना की ओर चला।

इसी समय खबर मिली कि भक्खर पर विजय प्राप्त हो गयी है। इसका संक्षिप्त वृत्तान्त निम्नलिखित है—

यह पहिले लिखा जा चुका है कि नाहिद बेगम की प्रार्थना पर मुहिब्ब अली खां और मुजाहिद खां को ठट्टा जाने की अनुमति प्रदान कर दी गयी थी। सुल्तान महमूद ने विद्रोह कर दिया था। परन्तु इन दोनों सरदारों ने पहुंच कर भक्खर को घेर लिया। सुल्तान महमूद अपने दुर्ग की रक्षा में व्यस्त हो गया। अकबर के सौभाग्य से दुर्ग में दुर्भिक्ष हो गया। सुल्तान महमूद ने सारा संग्रहीत अन्न अपने लोगों में बांट दिया, फिर सूजन की बीमारी फैल गई। एक विचित्र बात यह हुई कि जिस भी सूजन की बीमारी वाले ने सिरीष वृक्ष की छाल को उबाल कर खाया वह स्वस्थ हो गया। इसलिये इस वृक्ष की छाल सोने के भाव बिकने लगी।

जब सुल्तान महमूद की मृत्यु होने वाली थी तो उसने दरबार से प्रार्थना-पत्र भेजा कि उसने सदैव आज्ञा का पालन किया है। अब दुर्भाग्यवश उस पर यह विपत्ति आई है, अब वह दुर्ग का शाहजादा सलीम को समर्पित करने के लिये तैयार है। मुहिब्ब अली खां और उस (सुल्तान महमूद) में वैमनस्य है यदि दुर्ग मुहिब्ब को सौंपा जायेगा तो महमूद को घृणित समझा जायेगा, उसमें और मुहिब्ब में कई लड़ाइयां हो चुकी हैं। उसने आशा की कि एक दरबारी को भेजा जाये तो दुर्ग और जिला उसको सुपुर्द करके वह अधीनता प्रकट करेगा। अकबर ने यह प्रार्थना स्वीकार करके एक वृद्ध और योग्य अफसर मीर गेसू को अधिकार करने के लिये भेजा। परन्तु उसके वहाँ पहुंचने से पहले ही सुल्तान महमूद की मृत्यु हो चुकी थी और दुर्ग सेना मीर गेसू की प्रतीक्षा कर रही थी। जब वह पहुंचा तो मुजाहिद खां गंजेबा के दुर्ग को घेरे हुए था। मुहिब्ब अली खां की पुत्री समिया बेगम जो मुजाहिद खां की माता थी, मीर गेसू के आगमन की खबर सुनकर क्रुद्ध हुई। उसने उस (गेसू) के विरुद्ध कुछ जहाज भेजे और उसके लिये कठिनाई उत्पन्न कर दी। मीर गेसू को लगभग पकड़ लिया गया। ख्वाजा मुकीम हैरात जो ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद बख्शी का पिता था, वहाँ अमीन था। उसने अच्छी सलाह देकर मुहिब्ब अली खां को इस झगड़े से दूर रखा और जब मीर गेसू दुर्ग पर आया तो उन्होंने दुर्ग की चाबियां उसके सुपुर्द कर दीं। इस प्रकार एक विस्तृत प्रदेश जिसमें खेती होती थी, बादशाह के अधिकार में आ गया। मुहिब्ब अली और मुजाहिद खां के स्वभाव में दुष्टता थी और लोभ था। इसलिये वे उस देश से अलग नहीं होना चाहते थे। साथ ही शाही आदेश के बिना उनका वहाँ ठहरना भी कठिन था, जब मुहिब्ब अली खां ने संधि कर ली। अन्त में मीर गेसू ने निश्चय किया कि मुजाहिद पटना पहुंचे और मुहिब्ब अली खां अपनी पत्नी तथा पुत्री के साथ लुहारी कस्बे में रहे। जब यह समझौता हो गया तो मीर गेसू एक बड़ी नौ सेना के साथ मुहिब्ब अली खां के विरुद्ध रवाना हुआ। मुहिब्ब अली उसका सामना नहीं कर सका और मातीला चला गया। आक्रमणकारियों ने लौहारी नगर को लूट लिया और समीया बेगम ने अपने मकान को दुर्ग बनाकर सामना करना शुरू कर दिया। एक रात और एक दिन तक वह साहस और कौशल के साथ अपनी बाहर दीवारी के अन्दर डटी रही। जब उसकी स्थिति बिगड़ने

लगी तो मुजाहिद खां ने शीघ्रता से प्रयाण करके मीर गेसू के सिपाहियों को हटा दिया। तीन मास तक मीर गेसू ने सिन्धु नदी के इधर का अर्थात् पूर्व की ओर का प्रदेश अपने कब्जे में रखा। अन्त में भक्खर तारसोन खां को बख्श दिया गया, उसके भाई-बन्धु उस प्रान्त में पहुंच गये। मूर्खतावश मीर गेसू भाग कर दुर्ग पर कब्जा रखना चाहता था परन्तु फिर उसमें बुद्धि आई और उसने राजविद्रोह का विचार त्याग दिया।

अवानदास अमरदाद की शाही नौका ने गोदी नदी से गंगा में प्रवेश किया और चौचकपुर ठहरी। यहाँ मिर्जा यूसुफ खां आया। इसके बाद शाही सेना शाही नौका के सामने ठहरा करती थी। अगले दिन अकबर ने मुबारक कदम नामक हाथी पर सवार होकर उसको स्वयं चलाया। उसके पीछे 500 हाथी नदी में उतरे और सब पार उतर गये। परन्तु युष्का नामक एक हाथी बह गया। नदी की लहरों में से एक बड़ी मछली उछल कर अकबर के सामने आई तो शकुन-शास्त्रियों ने इसके विजय सूचक चिन्ह समझा और ईश्वर को धन्यवाद दिया। माह 1 अमरदाद की शाही नौका गाजीपुर पहुंच गई। बादशाह प्रति दिन नाव से उतर कर चीतों के द्वारा शिकार किया करता था। एक दिन एक हिरन दिखाई दिया तो अकबर ने उस पर चीता छोड़ा। परन्तु हिरन उसके पंजों से निकल कर भाग गया। तब दूसरा चीता छोड़ा गया, उसने हिरन को मार डाला। तब उसने दरबारियों से कहा, हमने इस हिरन के व्यवहार से दाऊद के विषय में शकुन लिया था तो हमको ख्याल आया कि दाऊद पर इस समय विजय प्राप्त नहीं होगी। वह हमारे पंजे से निकल जायेगा। परन्तु दूसरी बार वह पकड़ा जायेगा। दाऊद का अन्त वैसा ही हुआ जैसा अकबर ने सोचा था।

तीन अमरदाद के दिन नावें दासपुर पहुंची जो गंगा के तट पर स्थित है। इतिमाद खां ख्वाजा सदा घेरे से एक शीघ्रगामी नाव द्वारा अकबर के पास आया। उसने सूचना दी कि शत्रु बड़ा प्रबल है। लोगों के क्षुब्ध हृदयों में विश्वास उत्पन्न करने के लिये अकबर ने इस्फहान के मीर अब्दुल करीम जाफरी के पुत्र सईद मिराकी को बुलाकर आदेश दिया कि अभियान का भविष्य बतलाया जाये तो उसने गणित करके बतलाया कि अकबर शीघ्र ही इस देश को दाऊद से छीन लेगा।

पौष 14 अमरदाद के दिन शाही जहाज चौसा में ठहरे हुए थे तो खानखाना ने एक नई विजय की सूचना भेजी। उसने लिखा कि अफगानों का एक दल हीसा खां नियाजी के नेतृत्व में कीया खां की खाइयों पर टूट पड़ा तो बड़ी लड़ाई हुई। बादशाह के सौभाग्य से कीचा खां की दृढ़ता से और राजा टोडरमल के आगमन से शत्रुओं को पीछे हटा दिया गया। हीसा खां, लश्कर खां के हाथ से मारा गया। बादशाह ने खानखाना का पत्र शाहजालू के पास भेज दिया ताकि उनके हृदय शान्त हो जायें। इसी दिन बादशाह की मुख्य सेना ने, जो स्थलमार्ग से कूच कर रही थी, कर्मनासा नदी को पार किया जो गंगा की एक शाखा है। दूसरे दिन शाही शिविर गंगा नदी के तट पर लगा। जब बादशाह दोमनी नामक गांव

के पास ठहरा हुआ था, जो भोजपुर के अधीन है, तो मुनीम खां ने यह रिपोर्ट भेजी ''बादशाह को जलमार्ग से और मुख्य शिविर से आना चाहिए। घेरा अर्से से चल रहा है और वर्षा निरन्तर हो रही है इसलिए सेना के पास पर्याप्त सामान नहीं है। यदि बादशाह अपने शस्त्रागार से खास हथियार भेजे तो वह उपयोगी होंगे। इस प्रार्थना के अनुसार बादशाह ने कवच और कई प्रकार के शस्त्र भेज दिये। राशन 18 अमरदाद के दिन शाही शिविर लोदीपुर पहुंच गया। उस दिन भी नदी क्षुब्ध थी। जिस नाव में चीता था, वह डूब गई और भगवानदास का कोषाध्यक्ष शेर बेग बह गया। फखरुद्दीन 19 अमरदाद के दिन बादशाह मानेर कस्बे के सामने ठहरा। यहाँ सोन नदी गंगा से मिलती है और इसके बाद सोन का नाम लुप्त हो जाता है। अगले दिन आदेश दिया गया कि सादिर खां और शाहबाज खां मुगल शिविर से सोन नदी के पास उतरे। मीर गयासुद्दीन अली नकीब खां को बहुत-सा रुपया दिया गया और उसको शेख याह्या मनेरी की दरगाह में भेज दिया गया।''

यह शेख हिन्दुस्तान के एक प्रसिद्ध संत शेख इजराईल का पुत्र था और चिश्ती सम्प्रदाय का था। यह फिरदुसी सम्प्रदाय को भी मानता था। लोग उस पर बड़ा विश्वास करते थे। शेख शरफुद्दीन पानी पत्ती के पास फिरदुसी ने जाकर पुत्र जन्म की याचना की थी तो उसके पुत्र हुआ। इस संत के शब्दों का सूफी सम्प्रदायों पर बड़ा प्रभाव है और उसने तीन उत्तम ग्रंथ लिखे हैं। उसने धर्म के विषय में तीन संग्रह किए थे। एक संग्रह में 150 पत्र, दूसरे में 100 उपदेश और तीसरे में 25 हैं। यह शेख के सुल्तान कु० मुहम्मद तुगलक के समय था और बड़ी तपस्या करता था। फिर यह दिल्ली आया और शेख निजाम से मिला। फिर यह शेख निजामुद्दीन फिरदुसी की सेवा करने लगा।

राम 21 अमरदाद के दिन जब शाही ध्वज शेरपुर में थे तो राजा टोडरमल आया और उसने सेना की स्थिति सूचित की। उसने पूछा कि मुनीम खां स्वागत के लिये कितनी दूर आये। अकबर ने आदेश दिया कि घेरा चल रहा है इसलिये दो कोश से अधिक नहीं आये और अन्य अधिकारी अपना-अपना काम करते रहें। राजा उसी दिन विदा होकर चला गया। उसी समय हाशीम खां के पुत्र ने पूर्वी जिलों की घटनाऐं सुनाईं, अकबर ने उसको नियाबत खां की उपाधि प्रदान की।

***

प्रकरण 18

अकबर का पटना के समीप पहुंचना और नगरकोट जीतने का प्रयत्न करना

अकबर ने जलमार्ग ग्रहण किया। उस समय अन्धड़ (झंझावात) चल रहा था और निरन्तर वर्षा हो रही थी, परन्तु 3 अगस्त, 1574 को अकबर शान्तचित से अभीष्ट स्थान पर पहुंचा। यहाँ से दो कोस के अन्तर पर खानखाना मिलने आया। जब मुलाकात हुई तो तोपें चलाई गईं। उनकी ध्वनि से अकबर के आगमन की लोगों को सूचना मिली फिर अकबर घोड़े पर सवार होकर खानखाना के स्थान पर गया और वहाँ उसने बहुमूल्य भेटें प्राप्त कीं। सेना के बड़े-बड़े सेनापतियां ने सलाम किया। उसके बाद सरदार मिले। अगले दिन अकबर ने दुर्ग का परिवेक्षण किया। उसने देखा कि हाजीपुर पर अधिकार कर लेने से इस दुर्ग को जीता जा सकेगा। यह दुर्ग पटना के सामने हैं। वहाँ नदी का पाट दो कोस है और वह इन दोनों नगरों के बीच में होकर बहती है। अगले दिन खान आलम के नेतृत्व में मिर्जा अली, आलम शाही आदि सेनानायकों को और वीर पुरुषों के दल को आदेश दिया गया कि नावों पर सवार होकर अपने साथ उपयुक्त तोपखाना ले जाये और हाजीपुर को छीन लेने का प्रयत्न करें।

इस दिन खानखाना के द्वारा दाऊद का राजदूत मिला। शाही सेना के आगमन से पहले ही खानखाना ने दाऊद के पास खालदीन खां नामक राजदूत भेजकर निम्नलिखित सलाह दी थी। अभी तो मामला आपके हाथ में है। अपनी स्थिति को सोचो और देखो कि अकबर के राज्य का प्रतिदिन विस्तार हो रहा है। आप अपने ऊपर दया करो। आप लोगों के रक्तपात का कारण न बनें और इतने लोगों की सम्पत्ति और प्रतिष्ठा का विनाश न करें। सांसारिक मद की सीमा होनी चाहिये। सामने आकर बादशाह की नौकरी क्यों नहीं कर ली। तब सोच-विचार के बाद दाऊद ने खालदीन खां के साथ अपना एक अधिकारी भेज कर कई प्रकार की प्रार्थनायें कीं। उसने कहलाया, मैं अपने लिये शासक की उपाधि नहीं चाहता। लोदी ने मुझ को इस विचार-भंवर में डाल दिया है। कि उसको अपने कर्मों का दण्ड मिल चुका है। अब मेरे हृदय में बादशाह के आज्ञा-पालन ने घर कर लिया है। मुझको जितना भी प्रदेश दिया जायेगा उसी को मैं सौभाग्य समझूंगा। मैंने यौवन और प्रमादवश अनेक अपराध किये हैं। मैं बादशाह की सेवा में उस समय उपस्थित होऊंगा जब अच्छी सेवा करके मैं पिछले कर्मों के लिये पश्चात्ताप कर लूंगा।

अकबर बुद्धिमान् बादशाह था। वह दाऊद की बातों को समझ गया। उसने उत्तर दिया, ''हम कम लेते हैं और अधिक देते हैं। हमको बदला लेना अच्छा नहीं लगता। शर्त

यह है कि तुम शब्दजाल न बिछाओ। सत्य का दर्शन करो और अधीनता स्वीकार करो तो तुम दुर्भाग्य से बच सकते हो, अन्यथा तीन में से एक बात करो जिससे हजारों लोगों के प्राण नष्ट न हों। आपकी ओर से हमारी सेना में एक दर्शक भेज दो। हमारे पक्ष से भी एक सैनिक आपकी सेना में जायेगा, यह दोनों देखते रहें कि कोई भी रणभूमि में न कूदे। फिर हम दोनों रणभूमि में उतरे और चाहे जिन शस्त्रों के द्वारा युद्ध करें, फिर ईश्वर की सहायता से जिसकी जीत हो वही राज्य ले ले। यदि आपमें इतना साहस नहीं है तो अपने सैनिकों में बल और पराक्रम के लिये जो प्रसिद्ध हो उसको आप चुन लो। हम भी ऐसा ही सैनिक चुन लेंगे। और ये दोनों रणभूमि में लड़ेंगे। जो जीतेगा उसकी सेना विजयी मान ली जायेगी। यदि आपकी सेना में कोई ऐसा वीर नहीं है तो आप एक हाथी पसन्द करो और हम भी एक हाथी पसन्द करें। जिस पक्ष का हाथी जीतेगा वही पक्ष विजयी माना जायेगा।'' इस प्रस्ताव से दाऊद किंकर्तव्य विमूढ़ हो गया। उसने कोई भी विकल्प स्वीकार नहीं किया।

एक घटना यह हुई कि अकबर हाथी पर सवार होकर पंचपहाड़ी की ऊंचाई देखने के लिये गया। यह दुर्ग के सामने ऊंचाई पर है। ये ईंटों के बने हुए पांच मण्डप हैं जिनको प्राचीन काल के शासकों ने स्मारक के रूप में बनाया था। ये पांच मण्डप पहाड़ियों जैसे मालूम होते हैं। अफगानों ने अकबर पर गोले चलाये, परन्तु अकबर बच गया।

दूसरी घटना यह हुई कि हाजीपुर पर अधिकार हो गया। इसका संक्षिप्त वृत्तान्त निम्नलिखित है:—अराड़ 25 अमरदाद के दिन नाश्ते के समय ऐसा प्रकट हुआ कि हाजीपुर की दिशा में लड़ाई हो रही है। अकबर शाहम खां के तोपखाने में पहुंचा। वहाँ से हाजीपुर दिखाई देता था। यद्यपि वीरों के कार्य स्पष्ट दिखाई नहीं देते थे परन्तु इतना प्रत्यक्ष था कि युद्ध की ज्वालाए उठ रही थीं। फिर अकबर ने युद्धतोपों पर कुछ अनुभवी सैनिक सहायतार्थ भेजे तो और भी जोर से लड़ाई होने लगी। शाही सैनिकों ने शत्रुओं को हरा दिया। सहायक सेना घेरने वाली सेना तक पहुंची, उससे पहले ही शत्रु हार चुके थे और दुर्ग छीन लिया गया था। बहुत-से शत्रु मारे गये थे। इसका वृत्तान्त निम्न प्रकार है:—जब खान आलम को यह सेवा सौंपी गई तो बहुत-से नाविकों ने उसका पथ-प्रदर्शन किया। दीन 24 अमरदाद के सायंकाल वह नावों में सवार होकर चला। उसके पथप्रदर्शक उसको नदी के ऊपर की ओर इस प्रकार ले गये कि शत्रु को पता नहीं लगा। खान आलम की नव सेना उस धारा में पहुंची जो गंगा से अलग होकर हाजीपुर के निकट बहती है। तब दोनों सेनाओं में अग्निवर्षा होने लगी परन्तु अफगान लोग हारने लगे तो भी नदी का वेग इतना जोर का था कि शाही नावें आगे नहीं आ सकीं और शत्रु को समाप्त नहीं किया जा सका। तब पथ-प्रदर्शक नावों को गण्डक की ओर ले गये और फिर हाजीपुर की ओर लाये। दुर्ग की ओर से तोपों के गोलों की वर्षा होने लगी और शाही सेना का जोरदार सामना हुआ, शत्रु पक्ष के फतह खां आदि बहुत-से लोग मारे गये। बदमाशों ने नगर में आग लगा दी और लूटना

शुरू किया। दुर्ग शाही सेवकों के हाथ में आ गया। इस लड़ाई में राजा गजपति, मिर्जा अली बेग आलम शाही आदि ने खान आलम की बड़ी सहायता की। तमाम वीरों के परिश्रम से दुष्कर कार्य सुगम हो गया।

***

प्रकरण 19

पटना दुर्ग को छीनना, दाऊद का पलायन और अकबर का शीघ्र प्रयाण

जब हाजीपुर पर विजय प्राप्त कर ली गई तो दाऊद को होश आया और उसने अपनी स्थिति पर विचार करना शुरू किया। अब वह शक्तिहीन हो गया परन्तु अकबर की शरण में आने के बजाय उसने पलायन-मार्ग अधिक अच्छा समझा। आराड़ 25 अमरदाद की रात्रि को वह दरवाजे की खिड़की से निकलकर एक शीघ्रगामी नाव पर सवार हुआ और बंगाल की ओर चला। उसके बहुत-से आदमी नदी में नष्ट हो गये, बहुत-से मार्ग में उलझकर मर गये और बहुत-से खाई में डूब कर मर गये। जब अकबर ने देखा कि शत्रु भाग रहा है तो उसने चाहा कि उसी अन्धेरी रात में अभियान किया जाये परन्तु खानखाना ने निवेदन किया कि बादशाह को प्रातःकाल होने पर रवाना होना चाहिये। अकबर ने यह सुझाव स्वीकार कर लिया। इरुहताद 26 अमरदाद को प्रातःकाल अकबर के विजयी ध्वजों ने दिल्ली दरवाजे से पटना में प्रवेश किया। बड़े-बड़े अधिकारियों और अन्य लोगों ने बधाई दी। लूट में बहुत-सा धन, माल और हाथी मिले। नगर की व्यवस्था करने में दो घंटे व्यतीत हुए। खानखाना और अन्य योग्य सेवकों को आदेश दिया गया कि वे प्रधान सेना को शनैः-शनैः लायें। अकबर नूरबेजा घोड़े पर सवार होकर सेना के साथ चला। उसने सोचा था कि यदि दाऊद नदी के मार्ग से भागा है तो गूजर को पकड़ लिया जायेगा और उसके अच्छे-अच्छे हाथी पकड़ लिये जायेंगे। जब अकबर पुनपुन नदी पर पहुंचा तो उसमें बाढ़ आ रही थी, परन्तु उसने ईश्वर पर भरोसा करके नदी में घोड़ा तैरा दिया। उसके साथियों ने भी उसके पीछे-पीछे अपने घोड़े नदी में डाले और सब पार उतर गये। अकबर दरियापुर पहुंचा, जो 20 कोस के अन्तर पर है। यह मार्ग उसने एक ही दिन में पार कर लिया। गंगा के तट पर ठहर कर उसने मजनूं खां, शाहबाज खां और अन्य सक्रिय पराजित शत्रुओं का पीछा करने के लिये भेजा। परन्तु शत्रु नहीं पकड़ा जा सका। इस विजय में शाही सेना ने 265 हाथी छीन लिये थे। उस रात को अफगानों की माल से भरी हुई नावें प्रबल वायु

के कारण शाही शिविर की ओर आ गई तो विजेताओं को खूब लूट मिली। आदिली का पुत्र हुसेन भागकर शत्रुओं में मिल गया था। उसको बन्दी बना लिया गया और खानखाना के कहने पर उसका वध करवा दिया गया।

जब खानेखाना प्रधान शाही सेना को लेकर आया तो एक कमरा तैयार किया गया जिसमें निजी समिति और काउंसिल की बैठक हुई। विभिन्न अधिकारियों ने विभिन्न रायें दीं। उसने कहा कि पहले बिहार से विरोध नष्ट करना चाहिए और तत्पश्चात् बंगाल विजय का कार्य अपने हाथ में लेना चाहिये। दूसरे लोगों ने कहा कि बंगाल पर तुरन्त ही आक्रमण कर देना चाहिए और शत्रु को तैयारी करने का मौका नहीं मिलना चाहिये। तब अकबर बंगाल विजय की तैयारी करने लगा। मुनीम खां ने बंगाल विजय का कार्य और उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया और चाहा कि यह सेवा उसके सुपुर्द कर दी जाये। उसकी प्रार्थना स्वीकार करके बादशाह ने उसको 20000 आदमी और आवश्यक सामान दिया और बिहार में जागीर दी। रजवी खां को जौनपुर का वजीर नियुक्त किया और राजा टोडरमल को निशान और नक्कारे से सम्मानित किया। इसी प्रकार अन्य लोगों को भी यथायोग्य सम्मानित किया गया और औरमज्द एक शहरी यार के दिन खानेखाना को बंगाल की ओर रवाना किया गया और बादशाह वापस जौनपुर चला गया, जहाँ शाहजादे और शाही बेगमें ठहरी हुई थीं। बंगाल की विजय के लिए खानेखाना के साथ बड़े-बड़े इक्कीस सेनानायक भेजे गये थे, जिनमें राजा टोडरमल भी था।

उस दिन गंगा के तट पर स्थित गाजीपुर के कस्बे के पास शाही शिविर लगाया गया और अकबर 4 दिन तक वहाँ ठहरा तथा दाऊद से छीने हुए हाथी देखे गये। फिर हाथी पर सवार होकर बादशाह ने प्रयाण किया और खिरदाद के दिन वह दरियापुर नामक सुखद नगर के समीप पहुंच गया, वहाँ हाथियों की लड़ाई देखी, इसमें दाऊद के हाथी लड़ाए गये।

रोहतास विजय

अब अकबर ने रोहतास दुर्ग को जीतने का विचार किया। यह दुर्ग बड़ा दृढ़ है। इसकी अवन्तिका पर कई गाँव बसे हुए हैं और कई प्रकार की खेती होती है। इससे दुर्ग-रक्षकों को पर्याप्त अन्न प्राप्त हो जाता है। इस पर कितने ही पानी के चश्मे हैं तथा थोड़ी-सी खुदाई करने पर मीठा जल निकल आता है। इसकी विजय के लिए फरहत खां और मुजफ्फर खां को नियुक्त किया गया। उसको सहायता देने के लिए हाजी खां सीस्तानी, फतह खां मैदानी आदि लोगों को नियुक्त किया गया।

इस काम से निश्चित होकर मीर दाद सात शहरियार के दिन अकबर ने पटना से प्रस्थान करके शेरपुर में अपने डेरे लगाये। उसके दूसरे दिन शाही शिविर फतेहपुर, पटना पहुंचा जो 21 कोस के अन्तर पर है। उस दिन सोन नदी में बाढ़ आ रही थी, सादिक अली

को आदेश दिया गया कि वह मुख्य सेना में पहुंच कर लोगों को और निजी विभाग के अफसरों को तथा हाथियों को पार करवाने में सहायता करे। आजर 19 शहरियार के दिन अकबर ने निरंतर कूच किया और सायंकाल को चौसा के नाव घाट पर पहुंच गया। गंगा का पाट बहुत चौड़ा था और नदी बड़ी गहरी थी जो अच्छे-अच्छे वीरों को भयभीत करने के लिये काफी थी। अकबर ने नदी पार कर ली और कुछ लोगों के साथ वह आबान 10 शहरियार को जौनपुर पहुंच गया। शहजादों को और बेगमों को इससे बड़ा हर्ष हुआ।

एक घटना यह हुई कि कासिम खां, जो कासू कहलाता था और महमूद खां तथा कुछ दुष्ट अफगान लोग बिहार की सीमा पर आ गये। अकबर ने मीरजादा अलीखान शाहगाजी खां तबरीजी और अनेक वीर लोगों को भेजा और आदेश दिया कि मुम्हसिनखां तथा उधर के अन्य जागीरदार एकत्र होकर प्रान्त में शान्ति स्थापित करें। जब इन लोगों को आदेश प्राप्त हुआ तो इन्होंने विद्रोहियों का दमन करके शान्ति स्थापित कर दी।

एक दूसरी घटना यह हुई कि खाने आलम शाही अनुग्रह और दया पर भरोसा करके खानखाना से लिखित अनुमति प्राप्त किये बिना ही दरबार में आ गया। खानखाना की अनुमति आवश्यक थी, इसलिये बादशाह ने उसको आदेश दिया कि वापस चला जाये। तब विचारशील और कुशल लोगों ने बीच-बचाव किया तो बादशाह ने खान आलम को मिलने की इजाजत दे दी। उसकी इच्छा पूर्ण हो गई और उसे वापस लौटने की इजाजत मिल गई।

एक घटना यह हुई कि ईश्वर की मर्जी से कुछ समय से वर्षा नहीं हुई थी इसलिये फसल अच्छी नहीं थी। कृषकों तथा अन्य लोगों को दुर्भिक्ष का भय था, इसलिये वे रोते-पीटते बादशाह के पास आये और उन्होंने एक दिल और एक जुबान होकर प्रार्थना की कि वह सर्व शक्तिमान ईश्वर से याचना करके दयाद्वार खुलवाये तो दया के बादल उमड़े और एक सप्ताह तक निरंतर विपुल वर्षा होती रही। फसल हरी हो गई। लोगों को संतोष हो गया और पता लग गया कि बादशाह की प्रतिष्ठा कितनी ऊंची है।

इसी समय सादिक खां को बुरा-भला कहा गया। मिर्जा यूसुफ खां और सादिक खां बड़े शिविर के नेता थे। वे आवान 10 मिहर को हाजिर आये। तो मालूम हुआ कि लाल खां नामक हाथी चौसा के नाव घाट पर डूब गया। साहिद खां ने हाथियों को उतारते समय पूरा परिश्रम व सावधानता नहीं की थी, इसलिये उसकी जागीर छीन ली गई, उसको दरबार में भी नहीं आने दिया और ठट्टा भेज दिया तथा आदेश दिया कि जब तक वह वैसा ही अच्छा हाथी पेश न कर देगा तब तक उसको सलाम करने की इजाजत नहीं दी जायेगी।

***

प्रकरण 20

अकबर का राजधानी के लिये प्रस्थान, मार्ग में ही बंगाल-विजय की सूचना का आना

जब अकबर पूर्वी प्रान्तों की ठीक व्यवस्था कर चुका तो 22 सितम्बर, 1574 को जौनपुर से उसने फतहपुर की ओर प्रस्थान किया और खानपुर नामक गांव के समीप उसका शिविर लगा। वहाँ अचानक ही खबर आई कि शाही सेना ने बंगाल पर विजय प्राप्त कर ली है। इसका संक्षिप्त वृत्तान्त निम्न प्रकार है :—

जब बंगाल-विजय के लिये सेना ने प्रयाण किया तो सर्व-प्रथम सूरजगढ़ नामक कस्बे को उसने जीत लिया। अफगान लोग शाही सेना का सामना नहीं कर सके और युद्ध किये बिना ही भाग गये। तत्पश्चात् मूघेर पर कब्जा कर लिया। खड़कपुर के जमीनदार राजा संग्राम ने और गिधोर के राजा पूर्णमल ने तथा उधर के बहुत-से जमीनदारों ने बादशाह की अधीनता स्वीकार कर ली। खानखाना ऐसी वर्षा में एक विशाल सेना को स्थलमार्ग और जलमार्ग से ले गया। उसने दूरदर्शिता से काम लिया। शाही सेना जहाँ पहुंचती थी, वहीं सफल होती थी। भागलपुर और कोलगोंग, जहाँ अफगान लोग एकत्र हुआ करते थे शाही सेना के अधिकार में आ गये।

जब शाही सेना गूना नामक गांव पर पहुंची तो प्रकट हुआ कि ईस्माईल खां सिहलदार ने वहाँ के दुर्ग को दृढ़ करके एक बड़ी सेना खड़ी कर ली है। सेना के शिविर से गढ़ी तक का प्रदेश पानी में डूबा हुआ था इससे शिविर लगाने में अड़चन होती। गढ़ी बंगाल का फाटक है। इसके एक ओर बहुत ऊंचा पहाड़ है जिस पर घुड़सवार क्या, प्यादे भी नहीं चढ़ सकते। इस पर्वत से अनेक नदियां निकल कर गंगा में गिरती हैं। इनके बीच में यह दुर्ग स्थित है। तब एक समिति बुलाकर सोचा गया कि दुर्ग को जीतने के लिये कौन-से उपाय का आश्रय लिया जाये। वहाँ के जमीनदारों ने कहा कि तेली राजा के राज में होकर एक गुप्त मार्ग है, उस मार्ग से लद्दू जानवर तो नहीं जा सकते परन्तु हल्के सवार गुजर सकते हैं। अतः उचित यह होगा कि शाही सेना गढ़ी पर कब्जा करे और मुख्य मार्ग से वहाँ जाये। कुछ साहसी वीर लोग दूसरे मार्ग से जा सकते हैं।

इस प्रकार शत्रु विचलित होकर भाग जायेगा। तब मजनूं खां काकसाल को घुड़सेना के साथ उस मार्ग से रवाना किया गया और कियां-खां ने कुछ प्रसिद्ध वीरों के साथ गढ़ी की ओर प्रस्थान किया। पहले तो खानखाना के कुछ सैनिकों ने हलचल मचाकर शत्रु में भय उत्पन्न कर दिया और जब कियां खां सुसज्जित सेना सहित आ पहुंचा तो शत्रु घबरा कर भाग गया। इस प्रकार आसानी से उस स्थान (गढ़ी) पर शाही सेना का अधिकार हो गया। अगले दिन खानखाना ने आकर ईश्वर को धन्यवाद दिया। मजनूं खां भी नालों को

पार करके उसी दिन आ पहुंचा। इस विजय की खबर सुनकर बादशाह ने आदेश दिया कि ईश्वर को धन्यवाद दिया जाये।

एक घटना यह हुई कि गाजी खां बदख्शी आया। इसने काबुल में यात्री का वेष धारण कर लिया था। पहले यह सांसारिक विषयों का अध्ययन करता था और फिर सत्य मार्ग पर आया था। फिरोजा खास-खेल मिर्जा हकीम का विशेष कृपापात्र था। वह और अन्य लोग भी उस प्रदेश से बादशाह के दरबार में आये। वहाँ से अकबर ने राजधानी की ओर प्रयाण किया। दिवानदीन 23 मिहर को जब शिविर इसकन्दरपुर में था, जो माणिकपुर के समीप है, तो खानखाना का प्रार्थना-पत्र आया। उसमें लिखा था कि दाऊद ने विनाश-मार्ग ग्रहण कर लिया है और शाही सेना टांडा आ पहुंची है। जब गढ़ी पर शाही सेना ने कब्जा कर लिया तो दाऊद इस धक्के को नहीं सह सका और भाग गया। टांडा के पास गंगा नदी की दो शाखायें हो जाती हैं, एक सतगांव को जाकर उड़ीसा में समाप्त हो जाती है, दूसरी, महमूदाबाद फतहाबाद, सुनार गांव और चटगांव की ओर जाती है। दाऊद सतगांव की शाखा से गया था। उसको आशा थी कि उड़ीसा की सेना पर उत्पात खड़ा किया जा सकता है। खानखाना ने टांडा में प्रवेश करके वहाँ व्यवस्था जमाई।

दूसरी घटना यह हुई कि ख्वाजा जहाँ की मृत्यु हो गई। वह जौनपुर में बीमार पड़ा हुआ था। एक मस्त हाथी उसकी ओर दौड़ा। ख्वाजा जहाँ का पैर डेरे के रस्से में उलझ गया और वह गिर पड़ा। इससे उसका स्वास्थ्य नष्ट हो गया और लखनऊ में उसकी मृत्यु हो गई। उस सभय बादशाह भी वहीं था। अरदी बिहिस्त 3 अबान के दिन शाही ध्वज कन्नौज के समीप गंगा के तट पर ठहरे। जब बादशाह पटियाली (जिला ऐठा) पहुंचा तो हुसेन खां हाजिर आया परन्तु उसको सलाम करने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। वह शाही शिविर में था और उसको मानसिक रोग था। जब बादशाह राजधानी से तीसरी मंजिल पहुंचा तो उसको इच्छा हुई कि दिल्ली और अजमेर की दरगाहों की परिक्रमा करनी चाहिये। अवाम मास में वह दिल्ली पहुंचा और वहाँ उसने अपने धार्मिक कर्तव्य का पालन किया।

एक घटना यह हुई कि हुसेन खां वैभव का त्याग करके फकीर बन गया। बादशाह ने उस पर कृपा की और उसको एक तीर प्रदान किया जो सत्ता का प्रतीक था। उसके द्वारा वह अपनी जागीर को, जो छीन ली गई थी, पुनः प्राप्त कर सकता था। दिल्ली से बादशाह नारनौल के मार्ग द्वारा अजमेर की ओर चला। नारनौल में खानेजहाँ मिला जिसने लाहौर में यात्री का वेश धारण कर लिया था। बादशाह ने उस पर कृपा की। नारनौल के समीप खाने अजीम मिर्जा कोका भी गुजरात से लम्बी यात्रा करके आया। बादशाह ने उसके प्रति बड़ी कृपा प्रदर्शित की। अजमेर पहुंच कर बादशाह ने दरगाह की परिक्रमा की। दरगाह में खूब उत्सव मनाये गये।

जब बादशाह अजमेर में टिका हुआ था तो सिवाना दुर्ग से राय सिंह ने आकर सूचना दी कि मालदेव का पुत्र चन्द्रसेन जोधपुर में उत्पात कर रहा है और उसका दमन करने के

लिये जो सेना सिवाना भेजी गई थी वह सफल नहीं हुई। अब कोई वीर सेना उसके विरुद्ध जाये तो इस अभियान का अन्त सफल हो सकता है। उसकी प्रार्थना उचित मानी गई और उसको कृपापूर्वक वापस अपने काम पर भेज दिया गया तथा कई सेनानायक चन्द्रसेन के विरुद्ध रवाना किये गये। चन्द्रसेन रामपुर से पर्वतों में चला गया। शाही सेना ने वहाँ उसका पीछा किया, उनको कुछ सफलता प्राप्त हुई और अनेक अपराधियों को कुचल दिया गया। चन्द्रसेन उनका सामना नहीं कर सका और इधर-उधर भटकने लगा। अनुभवहीन और अदूरदर्शी गाजियों ने उसके भाग जाने से समझा कि उनका काम पूरा हो गया और वे बिना बुलाये ही दरबार में वापस लौट गये। जब बादशाह को यह मालूम हुआ तो उसने उन सबका दर्जा घटा दिया।

थोड़े समय में ही वहां की सब व्यवस्था पूरी करके 21 सदाई को बादशाह ने खान हकीम पर बड़ी कृपा की और गुजरात के मामलों का प्रबन्ध करने के लिये उसको रवाना कर दिया। बादशाह स्वयं राजधानी की ओर रवाना हो गया। यात्रियों को आराम के लिए उसने आदेश दिया कि आगरा से अजमेर तक प्रति एक कोस के अन्तर पर एक मीनार खड़ा किया जाए। उसमें हिरन के सींग लगाये जायें। जिससे रास्ता भूल जाने वालों को चिन्ह मिल सके और श्रान्त यात्रियों को शक्ति प्राप्त हो सके।

***

प्रकरण 21

इबादत खाना

जब बादशाह फतेहपुर सिकरी में ठहरा हुआ था। (1575) तो उसने आदेश दिया कि एक इबादतखाना (प्रार्थना-गृह) का निर्माण किया जाये जिसके चार बरामदे हों। इसकी घोषणा शुक्रवार के दिन की गई। और कहा गया कि सब सम्प्रदायों के लोग जो आध्यात्मिक सत्य की खोज करना चाहते हैं, जो अपने हृदय में जागृति की इच्छा करते हैं, वे इस पवित्र भवन में एकत्र हों और अपने-अपने आध्यात्मिक अनुभव सुनायें और अपने सत्यज्ञान की बात करें।

भवन में सैकड़ों और हजारों लोग जाते थे, परन्तु बादशाह ने प्रत्येक वर्ग के कुछ लोगों की बात सुनी। इस प्रकार सत्य का विकास होने लगा। इस सभा में चार मुख्य वर्ग थे। पूर्व की ओर वे ऊंचे दर्जे के अधिकारी बैठते थे जो अपने ज्ञान के कारण दरबार में

प्रसिद्ध थे। दक्षिण की ओर उनके लिये स्थान था जो बड़े सूक्ष्मशोधक थे। पश्चिमी भाग में वे लोग बैठते थे जो उच्च कुलीन थे और शुभ कलाओं का प्रयोग करते थे। उत्तरी भाग में शुद्ध हृदय वाले सूफी लोग बैठते थे। बादशाह के मुख से गंभीर, उच्च और सूक्ष्म शब्द निकलते थे। बुद्धिमान् लोग प्रश्न पूछते थे और उत्तर लिखित रूप में देते थे। विविध वर्गों के लोगों की शंकाओं का निवारण किया जाता था। रात भर शास्त्रार्थ चला करता था जिससे पता लग जाता था कि किसमें तर्क है, कल्पना है और बुद्धि है।

इस ज्ञानरूपी वसन्त के अवसर पर इस पुस्तक का लेखक दूसरी बार बादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ तो उसका (लेखक का) दूसरा जन्म हुआ। इसका संक्षिप्त वृत्तान्त यह है कि पहले वह बादशाह से आगरे में मिला था। उसने अभिमानवश पूर्वी प्रान्तों को जाने में विलम्ब किया।

अन्त में मेरे भाई का पत्र आया कि बादशाह तुमको याद करते हैं। परन्तु मेरे साधन पर्याप्त नहीं थे इसलिये शाही सेना करने का मेरा इरादा पूरा नहीं हुआ।

मैं स्वप्नों के संसार में रहा करता था। एक दिन मेरी आत्मा अचानक रहस्यमय संसार को देखने लगी। मैंने बंगाल की विजय आदि से अन्त तक चकित होकर देखी। मैंने अपना अनुभव अपने पिता को सुनाया तो उनको बड़ा हर्ष हुआ। जब बादशाह अजमेर पहुंचा और बुद्धि विलास करने लगा, तब मेरे नेक भाई ने मुझे बादशाह की सेवा में उपस्थित करवाया। मैं बहुत अरसे से बादशाह के दर्शन करना चाहता था। मेरा भाई मुझसे आयु में बड़ा है और बुद्धि में भी ऊंचा है। अगले दिन बादशाह मस्जिद में आया, मैंने दूर से ही भूमि पर माथा टिका कर सलाम किया और सोचा बादशाह मुझे नहीं देख रहा है तो क्या मुझे उसे देख कर प्रकाश प्राप्त हो गया है। अन्त में मैं शिष्य मंडल में पहुंच गया।

एक घटना यह हुई कि मुनीम खां खानखाना को बंगाल में जागीर मिल गई। जब बादशाह पूर्वी प्रान्त में गया था तो खानखाना को बिहार में जागीर दी गई थी परन्तु जब बंगाल के विद्रोही लोग बार-बार हार गये और देश में शान्ति स्थापित हो गई तो खानेखाना ने ख्वाजा शाह मंसूर शिराजी को दरबार में भेजकर निवेदन करवाया कि बंगाल में जागीर दी जाये। बादशाह ने प्रसन्न होकर यह प्रार्थना स्वीकार की।

एक विचित्र बात यह हुई कि आगरे के आसपास मकड़ी के जाले जैसी चीजें, परन्तु जाले से कहीं अधिक मोटी खेतों पर और चरागाहों पर गिरीं। कहीं-कहीं ये चीजें आधी जरीब लम्बी और चौड़ी थीं और कहीं-कहीं इससे कम लम्बी-चौड़ी थीं।

***

प्रकरण 22

दाग[1] नियम का जारी करना, मनुष्यों का सत्य और भक्ति की ओर नेतृत्व

इस समय बादशाह ने दाग का नियम जारी किया, मनुष्य पर प्रायः लोभ और क्रोध का प्रभाव रहता है। दाग आरंभ वर्ष के शुरू में ही कर दिया गया था तब पूर्वी प्रान्तों में गड़बड़ शुरू भी नहीं हुई थी। बादशाह ने इस विषय में विचार करना आरम्भ कर दिया था और अधिकारी लोग इसके लिये काम करने लगे थे। परन्तु इस कार्य की व्यवस्था उस समय हुई जब शाही सेना राजधानी में आ पहुंची। जांच करके अफसरों की श्रेणियां बनाई गईं। साम्राज्य की नींव को जमाने के लिये और जनता को शान्ति देने के लिये खालसा भूमि को निजी भूमि बना दिया गया। अधिकारियों और दूसरे सेवकों को वेतन रुपये में दिया जाने लगा।

योग्य और विश्वसनीय आदमियों को इसलिये नियुक्त किया गया कि भारत की विस्तृत भूमि का पर्यवेक्षण करके देखें कि उत्पादन कितना होता है और भूमिकर जिसकी बजाय नकद में निश्चित करे। बंगाल, बिहार और गुजरात को पूर्ववत् छोड़ दिया गया। काबुल, कन्धार, गजनी, कश्मीर, ठट्टा और बाजोर के हिस्से तथा बंगश, सौरठ और उड़ीसा पर अभी विजय नहीं हुई थी। एक सौ बयासी आमिल खालसा (निजी भूमि) के लिये नियुक्त किये गये। एक आमिल के सुपुर्द इतनी भूमि की गई जिससे एक करोड़ टंक की आय होती थी। इन लोगों को शायद करोड़ी कहा जाता था। इसके लिये बड़े-बड़े अधिकारी शाहबाज खां, ख्वाजा गयासुद्दीन, अली आसफ खां, राय पुरुषोत्तम और राय रामदास थे। इस व्यवस्था से सेना का सामान मिल गया और देश का प्रशासन अच्छा हो गया। बादशाह ने भूमि के नाप के नियम बनाये जिससे अधिक भूमि जोती जाने लगी। पिछले दिनों में भूमि की नाप एक रस्से के द्वारा होती थी, जब रस्सा गीला या सूखा होता था तो उसकी लम्बाई घट जाती थी या बढ़ जाती थी, इससे बेइमानी करने का मौका मिलता था। बादशाह ने रस्से के बजाय बांस जारी किये। एक बांस को दूसरे बांस से लोहे की कड़ियों से जोड़ा जाता था। इस विधि से लोग शान्त हो गये और काश्त अधिक होने लगी। एक संस्था का नाम अभिलेखागार (मुहाफिज खान) था। यह आदेश दिया गया था कि दरबार से जो भी आदेश जारी हो, उसकी नकल रखी जाय जिससे अधिकारियों को सहायता मिले।

---

1. इस प्रकरण का शीर्षक तो दाग नियम है परन्तु इसमें दाग का वर्णन नहीं है। इसका विवरण 'आइने अकबरी' में दिया हुआ है। 'इकबालनामा' में और भी अच्छा वर्णन है।

एक घटना यह हुई कि अरब शाह की पुत्री कासिमा बानू शाही अन्त:पुर में प्रविष्ट हुई। इस अवसर पर बहुत बड़ा भोज दिया गया। बड़े-बड़े अधिकारियों को साम्राज्य के अधिकारियों को निमंत्रित किया गया और उत्सव मनाया गया।

***

प्रकरण 23

बंगाल में मुनीम खां खानखाना की लड़ाइयां, दाऊद की पराजय और अन्य घटनाएं

जब बंगाल पर विजय हो गई तो दाऊद खां सतगांव और उड़ीसा चला गया। काला पहाड़, सुलेमान आदि अन्य अफगान घोराघाट चले गये। जहाँ पहुंचे वहीं उन्होंने उत्पात खड़ा किया। खानखाना राजा टोडरमल के साथ राजधानी टांडा में रहकर राजनैतिक और वित्तीय मामलों की व्यवस्था करने में लग गया। टांडा के पास और चारों ओर सेनाएं नियत कर दी गईं जिससे विरोध खड़ा न हो सके। फिर मुहम्मद कुली खां तोकबाई आदि वीर और सक्रिय लोगों को मुहम्मद कुली खां बरलास के नेतृत्व में सतगांव की ओर इसलिये भेजा गया कि वे दाऊद को सैनिक तैयारी न करने दें और उसको पकड़ लें। मजनूं खां आदि को घोराघाट इसलिये भेजा गया कि वे उत्पातों को शान्त करें। मुराद खां को सेनासहित फतहाबाद और बंगाल इसलिये रवाना किया कि वहाँ शांति स्थापित करें। इतिमाद खां तथा अन्य लोगों को सुनार गांव भेजा गया कि वे अत्याचारियों को रोकें।

जब लोगों की विपत्तियों का दमन इस प्रकार कर दिया गया तो यह घोषण कर दी गई कि जुनेद करारानी, जो दरबार में से भाग गया था, गुजरात और दक्षिण से झारखंड आकर गड़बड़ करने का विचार कर रहा है। राजा टोडरमल, किया खां, नजर बहादुर आदि उसका दमन करने में लग गये। ईश्वर की कृपा से शत्रु की क्षति हुई और वह विनाश की ओर अग्रसर हो गया। घोराघाट में काकशाल लोगों ने वीर कार्य किये तो शत्रु हारकर कूच बिहार की ओर भाग गया। सुलेमान मनकली मारा गया, विजेताओं को लूट का बड़ा माल मिला। अफगानों के कुटुम्बों को कैद कर लिया गया और वह विस्तृत देश शाही सेवकों के हाथ में आ गया। जुनेद झारखंड से बाहर निकल आया था। परन्तु वह गाजियों का सामना नहीं कर सका और पहाड़ियों में जा छिपा। शाही सेना बर्दवान लौट आई।

इस समय सिकन्दर खां के पुत्र महमूद खां ने और मुहम्मद खां और कुछ अन्य

विद्रोहियों ने सलीम को फिर कस्बे में उपद्रव खड़ा कर दिया। राजा टोडरमल ने इनके विरुद्ध उपयुक्त सेना भेजी परन्तु लड़ाई हुई। जिसमें मुहम्मद खां मारा गया और सिकन्दर का पुत्र भाग गया। उसी समय खबर आई कि जुनैद उत्पात कर रहा है। राजा टोडरमल उधर की ओर गया। जुनैद झारखंड से दाऊद के पास गया। वह दाऊद को धोका देकर गड़बड़ करने के लिये साधन जुटाना चाहता था परन्तु दाऊद के साथ उसका तालमेल नहीं बैठा। जब वह वापस लौट रहा था तो उसने विजयी सेना का घोष सुना और वह अचंभित हो गया। बजर बहादुर आदि पांच सरदार विजयी सेना के आगे-आगे चल रहे थे। अनुभव शून्यता के कारण वे बहुत आगे बढ़ गये। जुनैद उन पर झपट पड़ा। इसमें शाही सेना के कुछ सरदार मारे गये, जब रांजा टोडरमल को यह खबर मिली तो विद्रोहियों को दंड देने के लिये वह सावधानतापूर्वक आगे बढ़ा। जुनैद उसका सामना नहीं कर सका, वह शीघ्रतापूर्वक झारखंड की तरफ भाग गया।

एक घटना यह हुई कि यार मुहम्मद अरगून करावल मुहेर (मुलहेर नहीं) की ओर जाकर लूटमार करने लगा और उसने बहुत सी सम्मत्ति हथिया ली, उसने अपार नामक एक हाथी भी छीन लिया। मुनीम खां, खाने खाना ने उसको बुलाया परन्तु वह बहाना बना कर रह गया और झारखंड की सीमा पर जाकर सम्पत्ति बटोरने लगा। उधर के बदमाश उसके पास इकट्टे हो गये। वहाँ से उसने बेलघाटा तक लूट-मार की और लूनी तथा कंकर के जंगलों तक पहुंच गया। जहाँ अफगानों के परिवार को शरण मिला करती थी वहाँ भी उसने बहुत सारी सम्पत्ति लूट ली। वह यह युक्ति कर रहा था कि झारखंड के मार्ग से शाही दरबार में पहुंच कर अपने संग्रह की रक्षा की जाये। जब वह तारा पहुंचा तो भूपत चौहान जंगल में आया और कपट करके यार मुहम्मद से मिला। उसके निर्देश से जुनैद ने रात में आक्रमण करके यार मुहम्मद अरगून की सारी सम्पत्ति छीन ली, फिर राजा टोडरमल की सेना आ पहुंची तो जुनैद ने पुनः पहाड़ियों की शरण ली।

मुहम्मद कुली खां बरलास ने एक सेना के साथ दाऊद पर अभियान किया। जब बरलास सतगांव से बीस कोस के अन्दर पर आ पहुंचा तो शत्रु की स्थिति डावाडोल हो गई। और वह उड़ीसा की ओर भाग गया। विजयी सेना ने सतगांव नामक बंदरगाह के समीप शिविर लगाया। तब मेरी खबर लाये कि दाऊद का मित्र सिर हरि शीघ्रता से चतर प्रदेश की ओर जा रहा है। मुहम्मद कुली खां ने बड़ी जल्दी की परन्तु उसको सफलता नहीं मिली और शीघ्र ही तरकीब से भाग गया। शाही सेना में शिथिलता थी। राजा टोडरमल ने उनसे कठोरतापूर्वक बात की और उड़ीसा की ओर आगे बढ़कर दाऊद को निर्मूल करने पर जोर दिया। उसने मुहम्मद कुली खां बरलास का समर्थन किया। जब सेना मंडलपुर के कस्बे के पास थी तो मुहम्मद कुली खां की मृत्यु हो गई। उसने नाश्ता करके पान खाया था और फिर उसको ज्वर हो गया था। इसके अतिरिक्त कोई अन्य कारण मालूम नहीं हुआ। दूरदर्शी

लोगों का कहना था कि उसके ख्वाजा सरा के दास के प्रपंचों से उसकी मृत्यु हुई थी। किया खां खाने खाना का शत्रु था और बकवासी लोगों का अगुआ था। उसने झारखंड के मार्ग से दरबार में पहुंचने का निश्चय किया। लोग जुन्नैद की हार का यश लेना चाहते थे। राजा टोडरमल ने अपनी बुद्धि और स्वामिभक्ति का उपयोग किया परन्तु उसको सफलता नहीं मिली। उसने खाने खाना के पास धावन भेज कर कहलाया कि उस दल के पास किसी मधुरभाषी स्वामिभक्त के द्वारा द्रव्य भेजा जाये। तभी वह लोग रुकेंगे। मुनीम खां ने लश्कर खां के द्वारा एक बड़ी धनराशि भेजी और धमकी दी तथा आशा भी दिलाई। राजा की सलाह के अनुसार दास लोग द्रव्य से शान्त हो गये। मुनीम खां की कोशिश और दूरदर्शिता से शाह खां, ख्वाज अब्दुल्ला और वीर तथा स्वामिभक्त लोगों का एक दल सेना में आ मिला जिससे शान्ति स्थापित हो गई। अब सब ने दाऊद को नष्ट करने का निश्चय कर लिया और इसके लिये प्रयाण किया।

दाऊद हिन्दुस्तान की सीमाओं पर चला गया था और एकान्त में छुप कर अपने दिन काटना चाहता था। परन्तु जब उसने सुना कि शाही सेना में फूट है और खाने जहाँ लोदी से जो उड़ीसा में उसका नायब था उसको प्रोत्साहन मिला तो वह लड़ाई के लिये वापस आ गया। अधिकारी लोग बर्दवान छोड़ कर मदारन के मार्ग से चितवा आ गये। अब भी कुछ अधिकारियों के मन में राजद्रोह था इसलिये राजा टोडरमल ने सोचा कि ऐसी स्थिति में लड़ाई के दिन क्या होगा क्योंकि लड़ाई में तो साहस और एक मन होना चाहिये। यह स्पष्ट था कि यदि खानखाना आ जायेगा तो दुष्ट लोग उसका कुछ नहीं कर सकेंगे, इसके अनुसार उसने खानखाना को लिखा। उस समय खानखाना विचित्र विचारों में मग्न था। परन्तु बादशाह ने यह मामला अपने हाथ में लिया और खानेखाना को आदेश दिया कि देश शाही सेवकों के हाथ में आ चुका है तो भी शत्रु का पराजय मामूली बात नहीं समझनी चाहिये और उसके उन्मूलन पर सारी शक्ति केंद्रित कर देनी चाहिये। खानखाना को आदेश का पालन करना पड़ा। वह चितुआ में आया। दाऊद एक बड़ी सेना के साथ हरपुर में था जो बंगाल और उड़ीसा के बीच में स्थित है। वह मार्गों को रोकना चाहता था। बहुत से शाही अफ़सरों ने चाहा कि दाऊद के साथ समझौता हो जाना चाहिये। खाने खाना ने एक समिति बुलाकर उसको बादशाह का आदेश सुनाया। प्रत्येक अफसर ने अपनी-अपनी समझ, हिम्मत और स्वामिभक्ति के अनुसार बात की। किसी ने कहा, लड़ाई की जाय, किसी ने कहा सुरक्षित रहना चाहिये और किसी ने कहा कि मार्ग बड़े दुर्गम हैं, अन्त में राजा टोडरमल और मुनीम खां खानेखाना के प्रयास से सब लोग लड़ने के लिये तैयार हो गये। परन्तु एक दूसरा मार्ग तलाश किया गया। क्योंकि सीधे मार्ग से जाना कठिन था। इलियास खां लंगा ने एक सुगम मार्ग बतलाया, उसको मजदूरों के द्वारा और भी अच्छा करवाया गया, तब सेना उस मार्ग से उड़ीसा पहुंची। दाऊद मार्गों को रोकना चाहता था परन्तु वह सफल नहीं हुआ। उसने वापस मुड़ कर युद्ध करने का निश्चय किया। दोनों दलों में तुकारोई के पास

लड़ाई हुई। दोनों पक्ष वीरतापूर्वक लड़े। 3 मार्च, 1574 को दाऊद हार गया। इसका संक्षिप्त वृत्तान्त इस प्रकार है:—

खानखाना ने अपनी सेना का व्यूह इस प्रकार बनाया। मध्य भाग लश्कर खां आदि के नेतृत्व में, अन्तिमास किया खां आदि के नेतृत्व में, हरावल आलम खां आदि के नेतृत्व में, दायां पक्ष शाह खां जालेर आदि के नेतृत्व में, बायां पक्ष असरफ खां और राजा टोडरमल आदि के नेतृत्व में रखे। शत्रु भी व्यूह बनाकर आया। उसका मध्य भाग दाऊद के हाथ में था। दायां भाग सिकन्दर के सुपुर्द था। बायां भाग इस्माइल को सौंप दिया गया था। हरावल गूजर खां को दिया गया था। लड़ाई एकदम शुरू हुई। खान आलम दुस्साहस करके बहुत आगे निकल गया। इससे खानखाना परेशान हुआ और उसको वापस बुलाया। गूजर खां ने हाथियों से हमला करवाया, उनके दांतों पर, सिरों पर और गर्दनों पर जानवरों के चमड़े बंधे हुए थे जिससे वे बड़े भयंकर मालूम होते थे। शाही सेना के घोड़े उनको देख कर डर गये। खाने आलम के घोड़े को तलवार लगी। वह गिर गया। वह दूसरे घोड़े पर सवार हुआ, परन्तु एक हाथी ने उसको गिरा दिया। खानेखाना आहत हो गया, उसके सिर, गर्दन और कंधे पर कई घाव लगे। हाजी खां, लश्कर खां और हाशिमखां भी आहत हो गये। फिर भी उसने पीछे हटने का विचार नहीं किया। इसके बाद युद्ध का स्वरूप बदलने लगा। गूजर खां मारा गया, जिससे अफगानों का साहस टूट गया। दाऊद खां शाही सेना के बाएं पक्ष के सामने आया। राजा टोडर मल अचल खड़ा रहा। शाह खां जलेफ (अफगान पक्ष) वापस मुड़ने लगा। युद्ध का स्वरूप ऐसा बदला कि थोड़े समय में ही शत्रु के पैर उखड़ने लगे। टोडरमल और दाऊद में युद्ध चलता रहा। फिर गूजर की मृत्यु का समाचार सुनकर दाऊद भी हताश हो गया और उसकी सेना में भगदड़ मच गई। शाही सेना को विजय मिली। विजय के उल्लास से खानेखाना के घाव भरने लगे। खानेखाना ने विजय के लिए ईश्वर को धन्यवाद दिया। अगले दिन अफगानों के सिरों के मीनार बनाये गये। लश्कर खां के घाव भरने लग गये थे। परन्तु उसने सावधानी नहीं की इसलिये उसकी मृत्यु हो गई।

एक घटना यह हुई कि यार मुहम्मद अरगून की मृत्यु हो गई, वह प्रसिद्ध सेवक था। उसने बंगाल में अच्छी सेवा की थी परन्तु वह बड़ा अभिमानी बन गया था और अपने को प्रधान सेनापति मानने लगा था। वह लूट के माल के विषय में भी झगड़ा करता था इसलिए मुनीम खां ने क्रोध में आकर उसको प्राण दण्ड दिया। उसको इतना पीटा गया कि उसकी हड्डियां चूर-चूर हो गईं और वह मर गया।

***

प्रकरण 24

राज्यारोहण से बीसवें इलाही संवत् का आरम्भ

इस वर्ष के आरम्भ में एक शुभ घटना हुई। दाऊद ने जो अपने सिर पर ताज पहना करता था, शहन शाह के दरबार में अधीनता प्रकट की।

***

प्रकरण 25

दाऊद का मुनीम खां खानखाना से मिलना और मेल की दावत

यह पहले लिखा जा चुका है कि दाऊद शाही सेना के सामने से भाग गया था और गूजर की मृत्यु हो चुकी थी। इसके बाद खानखाना ने अनुभवी लोगों की सलाह से साहस खां जलेर और राजा टोडरमल को दाऊद का पीछा करने के लिए भेजा। बहुत-से अन्य सक्रिय लोग भी इस काम के लिए रवाना किये गये। जहान खां दाऊद से मिल गया था। और उसको कटक के दुर्ग की ओर ले गया था। अन्य कितने ही लोग दाऊद के साथ हो लिये थे। उन लोगों का विचार था कि यदि शाही सेना उधर आये तो लड़ाई लड़ी जाये। ऐसी स्थिति में शाही सेना में डर फैल गया और प्रपंच होने लगे। राजा टोडरमल ने सबको समझाने का प्रयास किया परन्तु उसको सफलता नहीं मिली। तब उसको विवश होकर खानखाना से प्रार्थना करनी पड़ी कि वह स्वयं आये और स्थिति को अविलम्ब संभाले। अभी खानखाना के घाव नहीं भरे थे तो भी वह पालकी में बैठकर शीघ्र आ गया और सब लोगों को समझा कर आगे बढ़ा तथा उस दुर्ग के निकट पहुंच गया जहाँ अफगानों ने शरण ले रखी थी। उनके पास सुरक्षा का और न लड़ने का सामान था और न भागने का कोई साधन था। शाही सेना की संख्या बहुत बड़ी थी। तब दाऊद नेफन्तू और अन्य अधिकारियों को भेजा, जिन्होंने द्रव्य और चाटुता के द्वारा शाही सेना के अधिकारियों को समझौता करने पर तैयार कर लिया। राजा टोडरमल वास्तविक स्थिति को जानता था। उसने भरसक प्रयत्न किया कि समझौता नहीं किया जाये परन्तु उसकी नहीं चली। खानखाना ने आसिम खां और कतलग कदम खां को भेजकर संधि की शर्त समझाई जिनका सारांश यह था कि दाऊद स्वयं आकर शाही दरबार में सेवा करना स्वीकार करे और अपने अच्छे-अच्छे हाथी और

दुर्लभ वस्तुएं भेंट करे। कुछ समय बाद जब वह अच्छी सेवा कर चुके तब वह शाही दरबार में उपस्थित हो। अभी वह अपने प्रतिनिधि के रूप में अपने एक विश्वस्त रिश्तेदार को दरबार में भेज दे।

दाऊद ने सब शर्तें मान लीं और 12 अप्रैल, 1575 को उत्सव मनाया गया और दावत की गई। इसके लिये शिविर के बाहर शामियाना सजाया गया। खानखाना स्वयं वहाँ आया। असरफ खां और गाजी खां दाऊद और उसके जागीरदारों को लेकर आये। खानखाना ने कालीन के अन्त तक जाकर उसका स्वागत किया। दाऊद ने अपनी तलवार पीछे डाल दी। खानखाना ने दाऊद को एक खिलत दी। ये खिलत तलवार और जरीदार कमर पेटी थी। दाऊद ने राजधानी की ओर मुंह करके सलाम किया और अपने चुने हुए हाथी और दुर्लभ वस्तुएं और बहुत-सा रुपया भेंट किया और अपने भतीजे बायजीद के पुत्र शेख मुहम्मद को मुनीम खां के सुपुर्द कर दिया। फिर दाऊद को विदा दे दी गई और उड़ीसा में उसको कुछ जागीरें भी दी गईं। फिर मुनीम खां अपने शिविर में आ गया। राजा टोडरमल के अतिरिक्त सबने खुशी मनाई। वह दावत में नहीं गया और न उसने संधिपत्र पर हस्ताक्षर किये।

एक घटना यह हुई कि घोरा घाट में उत्पात हो गया। जब अधिकांश सेना अपने साथ लेकर खानखाना कटक गया तो कितने ही अफगानों ने उत्पात करके काकसालों पर आक्रमण कर दिया। काकसाल थोड़ी ही देर सामना कर सके। अफगानों ने घोरा घाट छीन लिया और काकशालों का पीछा किया। काकशाल भाग कर टांडा आ गये। खानखाना तेजी के साथ वापस लौटा। वह टांडा के अन्दर नहीं गया और शत्रु का मुकाबला करने के लिये वापस लौट गया। शत्रु नदी के उस पार खुशी मना रहे थे। शाही सेना नावों द्वारा उस स्थान पर पहुंच गई जहाँ गंगा की दो शाखाएं बनती हैं। सेना ने एक धारा पर तो पुल बना लिया और दूसरी पर बनाने वाली थी कि शत्रु का उत्साह भंग हो गया। वह हार मानकर भाग गये। खानखाना टांडा की सीमा तक गया और वहाँ से मजनूं खां के नेतृत्व में घोरा घाट सेना भेजी। शाही सेना के लड़ाकू सैनिकों ने उस प्रदेश को पुनः जीत लिया। खानखाना ने ईश्वर को धन्यवाद दिया।

***

प्रकरण 26

बिहार प्रान्त के मामले, मुजफ्फर खां के कार्य, उस पर पुनः बादशाह की कृपा

रोहतास का घेरा

एक दिन हैबत खां के पुत्र बहादुर ने रोहतास दुर्ग से बाहर निकलकर उत्पात मचाया। मुजफ्फर खां ने उसको उपयुक्त दण्ड दिया और उसके हाथी छीन लिए। उसी समय दुर्ग को घेरने के लिए अधिकारी लोग आ पहुंचे। मुजफ्फर ने उनका साथ दिया। फिर थोड़े समय बाद एक आदेश आया कि यदि मुजफ्फर खां और दूसरे अधिकारी दुर्ग को जीत लेने का कोई दिन निश्चित कर सकते हैं तो वे परिश्रम करें परन्तु ऐसा दिन निश्चित नहीं किया जा सकता हो तो घेरे का काम छोड़कर बिहार प्रान्त में उत्पात मचाने वाले अफगानों का दमन किया जाये और उनसे कहा जाये। यदि वे स्वेच्छा से अधीनता स्वीकार कर लेंगे तो उनको क्षमा कर दिया जायेगा। अन्यथा उन्हें ऐसा दण्ड दिया जायेगा कि दूसरों को उससे शिक्षा मिलेगी।

यह आदेश प्राप्त होने पर मुजफ्फर खां ने पृथ्वी पर माथा टिका कर निवेदन किया कि ''मेरे पास दुर्ग को घेरने के साधन नहीं हैं इसलिए उसको जीतने का कोई समय निश्चित नहीं किया जा सकता। पहला कार्य तो यह है कि इस प्रान्त में से विद्रोहियों को समाप्त किया जाये।'' तब वह शाही सेना के साथ इस दमन-कार्य में लग गया। कई शाही अधिकारी उसके साथ गये। मुजफ्फर खां की योग्यता प्रकट हुई और सारे प्रान्त में विद्रोह शान्त हो गया। आदम-खां-बतनी बिना लड़े ही भाग गया। इसी प्रकार दरिया खां भी भाग गया।

जब सब काम पूरा हो गया तो मुनीम खां के कारिन्दे मुजफ्फर खां से ईर्ष्या करने लगे और लज्जाजनक विधि से उसको रवाना कर दिया। उसके पास कोई जागीर नहीं थी इसलिये उसको विवश होकर चौंड और सहसराम जाना पड़ा। मार्ग में उसको मालूम हुआ कि रोहतास दुर्ग की सेना ने दो कस्बों पर कब्जा कर लिया है। तब वह उधर की ओर रवाना हुआ और उसने उन दोनों स्थानों को शत्रु से मुक्त कर दिया। फिर वह लूटमार करने लगा। तब बिहार में एकाएक फिर उत्पात मच गया। तब लोगों ने उसको बुलाया। मुजफ्फर खां ने पहुंच कर अच्छी सेवा की। इसका संक्षिप्त वृत्तान्त यह है कि मुनीम खां खानखाना अरब बहादुर को माहेर में छोड़ आया था, जो बिहार और झाड़खण्ड के बीच में स्थित है। इस समय झाड़खण्ड से हाजी और गाजी नामक दो भाइयों ने आकर दुर्ग पर कब्जा कर लिया। उनके साथ कुछ अफगान भी थे। दुर्गसेना के बहुत-से लोग मारे गये, परन्तु

अरब बहादुर ज्यों-त्यों बच कर भाग गया। तब प्रान्त के अफ़सरों ने एकत्र होकर उत्पात का दमन करने के लिये सहायता मांगी। अफगान लोग पर्वतों की घाटियों में जाकर शेखी बघारने लगे। शाही अफसर उधर पहुंच तो गये परन्तु आगा-पीछा सोचने लगे। न तो वे आगे बढ़ते थे और न पीछे हटने का निश्चय करते थे। एक दिन राजा भगवन्त दास के 300 राजपूत साहस करके उन घाटियों में घुस गये परन्तु वे हार गये। राजा भगवन्तदास उनके साथ नहीं था। लगभग एक सौ वीर पुरुष मारे गये। तब अफसरों में दृढ़ता नहीं रही। उन्होंने मुजफ्फर खां के पास अपने दूत भेज कर सहायता के लिये याचना की। वह तुरन्त ही उनसे आ मिला। जब विजय मिलने वाली थी तब अफ़सर लोग घिलमिल हो रहे थे। इसका कारण था, खानखाना का एक पत्र आया, पत्र में लिखा था कि जूनेद झाड़खण्ड से आ रहा है। टेंगरी बर्दी भी एक बड़ी सेना लेकर प्रयाण कर रहा है। सहायक सेना के आने से पहले लड़ाई करना उचित नहीं है। इसी पत्र में यह भी लिखा था कि मुहम्मद खां गखखड़ की मृत्यु हो चुकी है। यार मुहम्मद करावल लूटा जा चुका।

मुजफ्फर खां ने अटल रहकर उत्तर दिया कि ऐसी स्थिति में और भी अधिक साहस और स्फूर्ति के साथ युद्ध करना चाहिये, जिससे जूनेद के आने से पहले ही विद्रोहियों को समाप्त किया जा सके। अभी यह पता नहीं है कि जूनेद किस दिन समाप्त किया जा सकेगा। तब अधिकारियों में साहस आया और सब लड़ाई के लिये तैयार हो गये। मार्ग को जाने वाले लोगों ने कहा कि एक और मार्ग है। तब यह निश्चय हुआ कि सेना सीधी शत्रु के विरुद्ध प्रयाण करे परन्तु धीरे-धीरे चले। उससे दूसरी सेना ऊपर बतलाये हुये मार्ग से शत्रु के पीछे की तरफ पहुंच जाये। इस बात पर सब सहमत हो गये और सेना का ब्यूह बना लिया गया। ख्वाजा शमसुद्दीन और कुछ अन्य वीर तथा अनुभवी लोगों को इसलिये नियुक्त किया गया कि वह दूसरे मार्ग से जाकर शत्रु के पीछे की ओर पहुंच जाये। शत्रु को अपनी संख्या और स्थान पर बड़ा भरोसा था परन्तु एकाएक शाही सेना उनके आगे और पीछे पहुंच गई। तब शत्रु में अचलता नहीं रही। उसका साहस भंग हो गयाा। बहुत बड़ी विजय प्राप्त हुई और बहुत-सी लूट मिली। तब शत्रु ने रामपुर के पर्वतीय प्रदेश में पहुंच कर पीछा करने वालों का सामना किया। मुजफ्फर खां ने अपनी सेना को भली भांति जमाया। दोनों दलों में लड़ाई शुरू हुई ही थी कि ख्वाजा शमसुद्दीन के दल ने शत्रु पर पीछे की ओर से आक्रमण कर दिया तो उसके अग्रगण्य तीन सरदार मारे गये। शत्रु भाग निकले। बादशाह के सौभाग्य से महान् विजय प्राप्त हुई। ईश्वर को धन्यवाद दिया गया। सेना को उसी स्थान पर टिकना उचित नहीं समझा गया। इसलिये वह विजयपूर्वक वापस लौट आई। जब जूनेद ने इस घटना की खबर सुनी तो उसने आगे बढ़ना छोड़ दिया और अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ दिन बाद जूनेद ने सोचा कि उपयुक्त अवसर आ गया तो वह बिहार में गड़बड़ करने लगा। तब अफसरों ने पटना में एकत्र होकर विचार किया कि क्या करना चाहिये? उन्होंने मुजफ्फर खां से सहायता मांगी तो वह उनकी ओर चला। वहाँ पहुंचने से पहले

उसको बादशाह का पत्र भी मिल गया और उसको सरकार हाजीपुर की जागीर भी दे दी गई। उसने पुल बना कर पुनपुन नदी पार की।

इस समय खानखाना से एक आवश्यक सन्देश मिला कि जूनेद से लड़ाई करने में जल्दी नहीं की जाये क्योंकि मैंने स्वयं निश्चय कर लिया है कि मैं जल्दी पहुंचू। तब अफसरों ने विचार छोड़ दिया और वे ढील करने लगे। मुजफ्फर खां ने उनको नेक सलाह दी परन्तु कोई असर नहीं हुआ। उसको इस बात का दु:ख था कि वह क्यों आया और वापस कैसे लौटे। उसमें युद्ध के लिये इतना आवेश था कि वह जूनेद से अकेला ही लड़ना चाहता था। फिर हाजीपुर में बड़ा उत्पात हो गया तो उसको उधर की ओर जाना पड़ा। इसका संक्षिप्त वृत्तान्त यह है कि ताजा खां, पंवार, फतेह खां मूसाजाई ने आकर महमूद शोक्ती को मार डाला, जो मुजफ्फर खां ने हाजीपुर में नियुक्त कर रखा था। साथ ही लगभग एक सौ लोग और भी मारे गये। अत: मुजफ्फर खां ने जूनेद से लड़ने का विचार छोड़ दिया और वह खुदादाद बरलास आदि के साथ हाजीपुर गया। उसके शत्रुओं की संख्या बहुत बड़ी थी तथापि वह लड़ाई के लिये तैयार हो गया। शत्रु के सामने नदी पार करना कठिन था। इसलिये वह गंगा पार करके सिवाना पहुंचा। उसके और हाजीपुर के बीच गंडक नदी में बड़ी बाढ़ आ रही थी। अफगानों को अपनी बड़ी संख्या पर और शाही सेना की अल्प संख्या पर बड़ा हर्ष था। उदयकरण नामक एक जमीनदार की युक्ति और सहायता से मुजफ्फर ने ख्वाजा शमसुद्दीन और खुदादाद बरलास के नेतृत्व में शत्रु के सामने ही अपनी सेना को नावों द्वारा नदी के पार उतार दिया। बहुत-से अफगान मारे गये, शेष भाग गये और हाजीपुर छीन लिया गया। विजयी लोगों को बड़ी लूट मिली।

एक शिक्षाप्रद घटना निम्नलिखित है। जब हाजीपुर पर विजय प्राप्त हो गई तो विश्वस्त लोगों ने खबर दी कि फतहा खां मूसाजाही आदि साहसी अफगान मदहागंडक के उस पार एकत्र हो गये हैं। मुजफ्फर खां उनको दबाने के लिए चला। नदी के तट पर डेरे लगाकर अपने कुछ आदमियों के साथ नदी को देखने के लिए गया कि उसको कहां पार किया जा सकता है नदी का पाट एक बाण के पहुंच के बराबर है परन्तु यह बड़ी गहरी है। जब वह थाह तलाश कर रहा था तो दूसरी ओर 200 घुड़सवार दिखाई दिये, तब उसने ख्वाजा शमसुद्दीन अरब बहादुर और कुछ वीर पुरुषों को आदेश दिया कि कुछ दूर जाकर नदी को पार करे और उन लोगों को दण्ड दे तो ख्वाजा आदि चले। शत्रु को इसका पता लगा तो सहायतार्थ और लोग बुलवा लिये। जब सेना का एक भाग ख्वाजा शमसुद्दीन आदि दिखाई दिया तो घुड़सवार अपने शिविर में चले गये। मुजफ्फर खां नदी पार करके अपनी सेना के भाग में जा मिला। तब पीछे हटते हुए शत्रु की सहायतार्थ उसकी दूसरी सेना आ गई और वे लड़ाई के लिये तैयार हो गये। शत्रु की संख्या अधिक थी। शाही सेना कम थी इसलिये शाही सेना तितर-बितर हो गई। उनमें से बहुत-से घबरा कर पानी में कूद पड़े और मर गये। मुजफ्फर खां अपने घोड़े को नदी में डालने ही वाला था कि

ख्वजा शमसुद्दीन ने उसको रोक लिया और वह पहाड़ी प्रदेश में चला गया। फिर एक संदेशवाहक को भेज कर सहायतार्थ वीरों को बुलाया। परन्तु शत्रु ने उसका पीछा किया। हाजी पहलवान ख्वाजा शमसुद्दीन अरब बहादुर और कुछ अन्य लोग जिनकी संख्या 50 के लगभग थी, वापस मुड़कर अपने तीर चलाते रहे, जिससे शत्रु शिथिल हो गया। इसी अरसे में विजय की आशा होने लगी। शिविर में यह शोर मच गया था कि मुजफ्फर खां मारा गया है। सब लोग भागने ही वाले थे कि संदेशवाहक आया तब सबको साहस हुआ। लगभग 300 आदमियों ने नदी पार की। शत्रु जीत रहा था, परन्तु गरमी बड़ी तेज थी। कवच आग की भांति तप रहे थे। इसलिये लोग घबरा गये और भाग गये। शाही सेना को विजय प्राप्त हो गई।

दूसरी घटना यह हुई कि जब लड़ाई चल रही थी तो शेख जमाल परसरु गिर कर अचेत हो गया। उसने बादशाह की ओर मुंह करके भूमि पर सिर टिका कर सलाम किया। पूछने पर उसने कहा कि वह स्वप्न देख रहा था और बादशाह को देख रहा था। उसी ने मुझे बेहोशी से उठाया है। कायर लोगों ने यह बात नहीं मानी परन्तु शीघ्र ही विजयी सेना ने आकर विजय की खबर दी।

फिर अगले दिन शाही सेना ने अफगानों का गांव लूट लिया और शत्रु का उत्पात दब गया। फिर अफगानों ने ताज खां पंवार के पास शरण लेकर सेना की मस्ती शुरू की। इस प्रकार राजविद्रोह उठ खड़ा हुआ और लड़ाई की तैयारियां होने लगीं। मुजफ्फर खां ने सावधानी करके मदहागंडक को पार किया और वह ऐसे स्थान पर जाकर जम गया जिसके तीन ओर नदी थी और चौथी ओर एक बड़ा तालाब था। वह सैनिकों और युद्ध-सामग्री का संग्रह करने लगा। जब मुजफ्फर खां इस प्रकार एक तरफ हट गया तो अफगान लोगों का साहस और बढ़ गया, उन्होंने शाही शिविर के सामने अपना शिविर खड़ा किया, परन्तु कोई लड़ाई नहीं हुई। वे प्रतीक्षा ही करते रहे। फिर शाही सैनिक एकत्रित होने लगे और जमींदारों से सहायता मिलने लगी। फिर विजय-प्राप्ति के लिये एक पुल बनाई जाने लगी और यह सोचा गया कि पुत्र के सामने एक खाई बनाई जाय और उसकी मिट्टी से एक दीवार बना ली जाय। परन्तु इस काम के लिये कोई तैयार नहीं हुआ, तब ख्वाजा शमसुद्दीन खाफी ने यह काम अपने हाथ में लिया। थोड़े ही दिन में पूरा कर दिया। अफगानों ने एक तरकीब की, वह अपने शिविर को खाली छोड़ कर कोने में चले गये। उनका ख्याल था कि शाही सेना नदी पार करके उनके शिविर को खाली देख कर यह समझेगी कि अफगान लोग भाग गये और वे शिविर को लूटने में लग जायेंगे। इस स्थिति का लाभ उठाकर शाही सेना को दबा दिया जायेगा। मुजफ्फर खां ने सावधानता और सुरक्षा का प्रबन्ध किया। अफगानों को उसकी गतिविधि का पता लग गया तो उन्होंने अपनी युक्ति का प्रयोग नहीं किया। उन्होंने उन शाही लोगों पर आक्रमण किया जो नदी पार कर चुके थे, तब प्यादे लोग घबरा कर भागने लगे, उनकी कायरता से सवारों का भी उत्साह भंग हो गया। वह

भी छिन्न-भिन्न हो गये। इस भगदड़ में पुल टूट गया और वे नदी में गिर गये। 300 के लगभग सवार और प्यादे डूब कर मर गये। परन्तु शत्रु के एक नायक हुसेन खां के घोड़े को बाण लगा और वह भूमि पर गिर पड़ा। उसके साथी घबरा गये। फिर पुल की मरम्मत कर ली गई और शाहीसैनिक शान के साथ पार उतर गये। अफगान लोग हार कर ताज खां के दृढ़ शिविर में चले गये। मुजफ्फर खां ने उनका पीछा किया। जब शाही सेना पास पहुंची तो खबर मिली कि अफगान लोग पास ही एक खाई के निर्माण का पर्यवेक्षण कर रहे हैं। उनको यह कल्पना भी नहीं थी कि शाही सेना इतनी शीघ्र आ पहुंचेगी। मुजफ्फर खां ने खुदा दाद बरलास को शिविर में छोड़ा और वह शत्रुओं पर टूट पड़ा। शत्रु ने समझा कि भाग जाने में ही श्रेय है। उनके बहुत से लोग मारे गये। हाजी खां पहलवान ने बाज खां का सिर काट डाला। जमाल खां गिरजी को जीवित पकड़ लिया गया। बहुतों को बंदी बना लिया गया। बहुत-से भाग गये।

जब यह उत्पात शान्त हो गया तो सत्री और चत्री अफगानों से आ मिले और उन्होंने तेजड़ा नामक इलाके को दबा लिया। यह प्रदेश 30 कोस लम्बा और 20 कोस चौड़ा था। यह मुंगेर के सामने स्थित है और दोनों के बीच में गंगा है। जब मुजफ्फर खां ने उत्पात की खबर सुनी तो वह वजीर जमील खुदा दाद और कितने ही अन्य सरदारों और सैनिकों को साथ लेकर अफगानों के दल को नष्ट करने के लिये चला। दोनों में बड़ी लड़ाई हुई। फतह खां इस दल का नायक था। वह वीरतापूर्वक लड़ता हुआ मारा गया। इसी के साथ 79 लोग और धराशायी हो गये। तेजड़ा के इलाके पर शाही अधिकारियों का कब्जा हो गया।

जब मुजफ्फर खां को विजय और यश प्राप्त हो रहा था, तो मुनीम खां ने उसको आदेश दिया कि वह तुरन्त शाही दरबार में पहुंचे। इससे मुजफ्फर खां का उत्साह और उल्लास भंग हो गया। बादशाह का आदेश था कि ज्योंही खानखाना उसको प्रस्थान की अनुमति दे त्योंही वह शाहीदरबार के लिये रवाना हो जाय। इससे मुजफ्फर खां को आन्तरिक संताप था, परन्तु उसको उसी समय बादशाह का दूसरा पत्र मिला, जिसमें लिखा था, तुम चिन्ता मत करो, तुम्हारे ऊपर बादशाह की कृपा है। तुम अपने कर्तव्य का उल्लास के साथ पालन करते रहो। यदि खानखाना तुमको प्रस्थान करने के लिये कहे तो भी तुम दरबार में न आओ। जब तुमको दूसरा आदेश मिले तब आओ। यह पत्र प्राप्त होने पर मुजफ्फर खां ने सबके सामने ईश्वर को धन्यवाद दिया और उसे बड़ा हर्ष हुआ। बादशाह ने चौसा से गढ़ी तक का प्रदेश उसके सुपुर्द कर दिया और यह भी आदेश दिया कि इस प्रान्त के छोटे और बड़े सैनिक मुजफ्फर खां की सलाह के अनुसार काम करें।

घटना यह हुई कि बादशाह ने गुजरात के अधिकारियों के प्रति अनुग्रह प्रकट किया। उसने इतिमाद खां को दरबार का अफ़सर बनाया और जवाहरात तथा रत्नजटित पात्र उसके

सुपुर्द कर दिये। उलूग खां हब्शी को उपयुक्त जागीद दी गई। मलिक अशरफ को थानेसर का फौजदार और वाजीह-उल-मुल्क को गुजरात में कुछ खालसे की जायदादों का दरोगा नियुक्त किया।

सादिक खां को क्षमा प्रदान

यह पूर्वी प्रान्तों पर अभियान किया गया था, तो सादिक खां ने अच्छी सेवा नहीं की थी इसलिये उसको आदेश दिया गया था कि उसने जो एक हाथी नष्ट कर दिया है उतना ही अच्छा हाथी लाये। सदिक खां को इधर-उधर भटकना पड़ा और गहरा पश्चात्ताप हुआ। जब एक हाथी के बजाय उसने अर्थदण्ड के रूप में एक सौ हाथी पेश किये तब अकबर ने उसको क्षमा कर दिया और पुनः उस पर कृपा की।

हुसेन खां की मृत्यु

हुसेन खां ने बड़ी कृतघ्नता की। वह पहले बहराम खां के पास था, फिर दरबार का सेवक बन गया। वह अच्छा प्रशासक नहीं था, परन्तु अकबर ने विशेष कृपा करके उसको अमीर बना दिया। जब शाही सेना पूर्वी प्रान्तों की ओर प्रयाण करने लगी तो वह सेना के साथ नहीं गया। अकबर ने उसकी जागीर छीन ली, परन्तु फिर दया करके वापस दे दी और उसको दाग की व्यवस्था करने के लिये भेज दिया। जब वह दरबार से दूर चला गया तो लूटमार करने लगा। एक स्थान पर लड़ाई हो गई, जिसमें वह बाण और गोली से आहत हो गया। जब इस उत्पात की खबर बादशाह को मिली तो उसने सादिक खां को बारहा और अमरोहा के सैयदों के साथ रवाना किया। हुसेन खां घावों के कारण कुछ समझदार बन गया था, परन्तु जब उसने सुना कि अकबर की सेना को विजय प्राप्त हो गई है तो उसको और भी समझ आ गई। अब उसने यही मुनासिब समझा कि वह नाव द्वारा मुनीम खां खानखाना के पास चला जाये। शायद उस प्रधान सेनापति के बीच-बचाव से क्षमा प्रदान हो जाये। इस उद्देश्य से गढ़मुक्तेश्वर के निकट वह नाव में बैठा परन्तु उसको मारहरा (एटा जिला) के पास सचेत शाही नौकरों ने पकड़ लिया और अकबर के आदेशानुसार उसको आगरा लाया गया तथा दरबार में पेश किया गया। फिर थोड़े ही अर्से में घातक घावों के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

हकीम अबूल फतह, हकीम हमाम और हकीम नूरुद्दीन का आगमन

हकीम अबूल फतह, हकीम हमाम और हकीम नूरुद्दीन तीनों भाई थे और मौलाना अब्दुल रजाक जिलानी के पुत्र थे। जिलानी जन्मपत्री बनाने में कुशल था। ये तीनों भाई अकबर के दरबार में उपस्थित हुए और उनको उसकी कृपा प्राप्त हुई। जब जिलान ईरान के शासकों के हाथ में आया और वहां का शासक खान अहमद कैद हो गया तो मौलाना

अब्दुल रजाक इन तीनों नवयुवकों को साथ लेकर दरबार में आया था। बादशाह की कृपा प्राप्त करके उनकी बुद्धि और भी बढ़ गई। अपने गुणों के लिये तीनों ही भाई प्रसिद्ध थे, परन्तु हकीम अब्दुल फतह अपनी कुशलता, संसार ज्ञान और ज्योतिष तथा अनेक अन्य गुणों के कारण विशेष प्रसिद्ध था।

***

प्रकरण 27

बादशाह के अन्तःपुर की कुछ महिलाओं की हजयात्रा

अकबर की बुवा गुलबदन बेगम की बड़े अर्से से तीर्थयात्रा करने की बड़ी अभिलाषा थी परन्तु उस समय मार्ग खतरे से खाली नहीं थे इसलिये उसकी इच्छा पूर्ण नहीं हुई। अब गुजरात का उपद्रव शान्त हो चुका था और फिरंगी लोग अधीन हो गये थे तथा आज्ञा मानने लगे थे और सारे देश में शान्ति स्थापित हो चुकी थी, इसलिये बेगम के हृदय में पुनः यात्राभिलाषा जागृत हुई। अकबर ने उसको एक बड़ी धनराशि और सामान दिये। उसके साथ जाने के लिये अन्य कई महिलाओं की भी इच्छा हुई तो दस महिलाएं उसके साथ रवना हुईं। उनमें सलिमा सुल्तान बेगम (मिर्जा असकरी की पत्नी), उम्म कुल्सुम खानम (गुलबदन बेगम की दोहित्री), गुलनार बेगम (बाबर की एक पत्नी), बीबी सफिया, बीबी सर्वशाही और शाहम-आगा (ये तीनों बादशाह हुमायूं की सेविकायें थीं। सलीमा खानम (खिजी ख्वाजा की पुत्री) थी। 8 या 9 अक्टूबर, 1575 को इनकी डोलियां ऊंटों पर रखकर रवाना की गईं। इनके साथ कितने ही आदमी गये जिनको खाना और खर्च दिया गया। सम्मानार्थ शाहजादा सुल्तान मुराद को आदेश हुआ कि वह समुद्र तट तक गुलबदन के साथ जाये। पहले दिन यह पार्टी डाबर पहुंची और वहीं ठहरी। वहीं सुल्तान सलीम और बहुत-से उमरा सलाम करने के लिये उपस्थित हुए। गुलबदन ने समझा कि सुल्तान मुराद अल्पवयस्क है इसलिये इतनी लम्बी यात्रा करने से उसको हानि हो सकती है इसलिये उसने बादशाह से कहलाया कि शाहजादे को नहीं भेजना चाहिये। तब बादशह ने मुराद को रख कर बाकी खां आदि तीन सरदारों को और कुछ सचेत दरबारियों को गुलबदन के साथ भेजा और प्रत्येक प्रदेश के अमीरों और अधिकारियों को नदी के अफसरों और बन्दरगाहों के अधिकारियों को आदेश दिया गया कि यात्रियों की अच्छी सेवा करे।

गोआ से कारीगरी की चीजें मंगवाना

जब गुजरात प्रान्त साम्राज्य में मिला लिया गया और कितने ही बन्दरगाह बादशाहों के हाथ में आ गये तथा यूरोपीय बन्दरगाहों के गवर्नरों ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली तो गोआ की अनेक विचित्र और दुर्लभ वस्तुयें तथा वहाँ के कुशल कारीगर अकबर ने देखे तब बादशाह ने हाजी को गोआ भेजा। उसकी विचारशक्ति अच्छी थी, देखना और समझना अच्छा आता था। उसको बड़ी धनराशि और भारत की अच्छी-अच्छी चीजें देकर गोआ भेजा गया और आदेश दिया गया कि वहां से आश्चर्यजनक चीजें लाये। उसके साथ बहुत-से कुशल कारीगर भेजे गये। विचार यह था कि गोआ और यूरोप के आश्चर्यकारी चीजों को देखकर भारत के कला-कौशल की उन्नति की जाये।

सात चौकियां

अकबर ने एक प्रशासनिक सुधार यह किया कि दरबार के समस्त सेवकों को सात वर्गों में विभक्त कर दिया। इनमें प्रत्येक वर्ग 24 घण्टा पहरा देता था। प्रत्येक वर्ग पर एक अमीर नियुक्त किया गया जो 24 घण्टे तक सब कुछ देखता था और व्यवस्था करता था। एक कुशल दरबारी को मीर अरजी नियुक्त किया। उसका कर्तव्य था कि वह लोगों की अर्जियां पेश करे और जनता को बहुत प्रतीक्षा न करनी पड़े तथा विविध कष्ट न हो।

मिर्जा कोका

मिर्जा कोका अकबर की कृपा से बड़े ऊंचे पद पर पहुंचा था। उसको गुजरात से बुलाकर आदेश दिया गया कि वह दाग के काम को देखे। दूसरा कारण यह था कि मिर्जा सुलेमान दरबार में आने की तैयारी कर रहा था और अकबर चाहता था कि उस अवसर पर मिर्जा कोका विद्यमान रहे। जब मिर्जा कोका आया तो उसके प्रति अपार कृपा प्रदर्शित की गई परन्तु चाटुकार लोगों की संगति से उसकी बुद्धि बिगड़ गई थी। उसने दाग के मामले में ऐसी भाषा का प्रयोग किया जो साधारण बुद्धिमान पुरुष भी नहीं करता। ऐसी बातें मिर्जा कोका को शोभा नहीं देती थीं। क्योंकि वह स्वामिभक्त था। अकबर ने उसको पुत्रवत् शिक्षा दी थी। कोका ने दाग के विषय में जो कुछ कहा, वह अकबर ने सुनी-अनसुनी कर दी। परन्तु कोका पर सत्-परामर्श का प्रभाव नहीं हुआ। तब बादशाह ने उसको अमीर के पद से हटा दिया और उसको उसके ही बाग में रहने का आदेश दिया।

जो लोग दूरदर्शी थे, उन्होंने दाग का काम किया और लाभ उठाया। जो लोग निकम्मे थे उन्होंने अपना अहित किया। ऐसे लोगों में सुजात खां, मिर्जा अब्दुल्ला, वीर नुईजुल्मुल्क, कासिम खां, कोहबर दोस्त मुहम्मद, बाबा दोस्त और मुहम्मद अमीन थे जिनको मुनीम खां खानखाना के पास बंगाल भेज दिया।

***

प्रकरण 28

मिर्जा सुलेमान का शाही दरबार में जाना

बादशाह बाबर ने मिर्जा सुलेमान को बदख्शां का शासन प्रदान किया था। वह बादशाह की आज्ञा मानता था और अच्छी सेवा करता था, परन्तु बुरी संगति के कारण वह अपने हित और अहित को नहीं समझता था इसलिए उसने आज्ञा पालन करना बंद कर दिया और काबुल जीत लेने का विचार किया। अकबर भारत की विविध समस्याओं में व्यस्त था इसलिए उसने सुलेमान की ओर ध्यान नहीं दिया। सुलेमान मिर्जा भी कई प्रकार की झंझटों में फंस गया था।

पहली झंझट यह थी कि खानिम आई, उसमें और हरम बेगम में शत्रुता हो गई। हरम बेगम किबचाक जाति के एक सरदार की पुत्री थी। सुलेमान से विवाह हो जाने पर उसने अपने राज्य का प्रशासन कुशलता से किया। सेना की अच्छी व्यवस्था की और उसका प्रभाव इतना बढ़ गया कि सुलेमान ने सब कुछ उसी के हाथ में सौंप दिया। खानिम का प्रथम विवाह मिर्जा कामरान से हुआ था। जब वह काबुल से बदख्शा के मार्ग द्वारा काशगर जा रही थी तो मिर्जा सुलेमान उस पर मोहित हो गया। हरम बेगम को यह अच्छा नहीं लगा इसलिए उसने खानिम का विवाह अपने पुत्र मिर्जा इब्राहीम से कर दिया, इससे दोनों में द्वेष रहने लगा।

दूसरी बात यह हुई कि शायद खानिम ने ही हरम बेगम पर यह लांछन लगाया कि उसका अपने सगे भाई हैदर अली बेग से अनुचित सम्बन्ध है। हरम बेगम बदख्शां में सर्वेसर्वा बन चुकी थी, वह योग्य शासक थी। परन्तु उसमें बदला लेने की भावना बड़ी प्रबल थी। इसलिए वह न्यायानुकूल दंड नहीं देती थी, परन्तु बदला लिया करती थी। फिर उसके पुत्र मिर्जा इब्राहीम की मृत्यु हो गई तो हरम बेगम खानिम की निन्दा करने लगी और कहने लगी कि यह तो केवल मुसाफिर थी। मैंने इसको ठिकाने लगाया था, मुझे पता नहीं था कि इसमें इतने दुर्गुण हैं और यह इतनी अशुभ है। तब खानिम भी हरम बेगम से बदला लेने का विचार करने लगी, साथ ही काशगर निवासी अब्दुर्रशीद खां की पत्नी चूचक खानिम बदख्शां आ पहुंची। उसके साथ उसके दो पुत्र—सूफी सुल्तान और अबू सईद सुल्तान थे, उसने खानिम का साथ दिया और वह हरम बेगम के लिए कहने लगी कि उसको राजसी ठाठ के साथ नहीं रहना चाहिये और सभाओं में खानिम का स्थान उससे ऊंचा होना चाहिये। बदख्शां के लोगों में कूट की आग सुलग गई। मिर्जा शाहरूख (सुलेमान का पौत्र) के संरक्षक मीर निजामी शेख बाबा इबली और बदख्शां के बहुत-से लोगों ने उपरोक्त चूचक बेगम के पुत्र सूफी सुल्तान को एक खानकाह में बिठाया और उसके सामने शपथ ली कि "हम हरम बेगम का अस्तित्व समाप्त कर देंगे और मिर्जा सुलेमान को घृणा के कोने में

बिठा देंगे। इस षड्यंत्र का पता मिर्जा सुलेमान को लग गया तो वह और हरम बेगम दोनों षड्यन्त्रकारियों के विरुद्ध युद्ध करने की तैयारी करने लगे। चूचक खानिम इस षड्यन्त्र से लज्जित हुई और अपने दोनों पुत्रों सहित काशगर लौट गई। उसने मिर्जा सुलेमान को पत्र लिखा कि यह सब कांड मीर निजामी ने किया है। तब मिर्जा सुलेमान, हरम बेगम और चूचक खानिम में मेल हो गया और हरम बेगम (खानिम नहीं) ने अपनी सबसे बड़ी पुत्री का विवाह अबू सईद सुल्तान से कर दिया और फिर अपने पुत्र को मिर्जा के पास छोड़कर चूचक खानिम काशगर चली गई।''

हरम बेगम ने कुलाब का शासन नदीम कब्बूजी के सुपुर्द कर दिया जो कुलाब की सेना को और वहाँ के लोगों को पसन्द नहीं आया। उन्होंने बेगम के भाई के पुत्र को शासक के स्थान पर बिठा दिया और नदीम को मारा डाला। तब बेगम ने कुलाब पर आक्रमण किया। वह अपने साथ शाहरूख और अबू सईद सुल्तान को भी ले गई थी। लड़ाई हुई, जिसमें बेगम का सेनापति मारा गया और बेगम को वापस हटना पड़ा, परन्तु बेगम की कुछ सम्पत्ति लूट कर वापस चला गया। शीघ्र ही बेगम मिर्जा सुलेमान और उसकी सेना से जा मिली और फिर उसने कुलाब पर चढ़ाई की। अब्दुल्ला ने किरंगिज में शरण ली परन्तु शत्रुओं ने उसका सारा सामान लूट लिया।

बदख्शां में एक बुरी घटना यह हुई कि मिर्जा हकीम और वहाँ के लोगों ने मिर्जा सुलेमान के सेवकों को बहुत बुरी हालत में अफगानिस्तान से निकाल दिया। मिर्जा सुलेमान काबुल गया परन्तु विफल होकर वापस लौट गया। उसने मुहम्मद कुली सिघारी और अन्य लोगों को जिन्होंने सेवा में शिथिलता की थी, दण्ड दिया। मुहम्मद कुर्दुज की फौजदारी हटा कर यह पद हाजी तमनबेग को दे दिया। तब कई लोग भाग कर हाजी तमन के पास पहुंच गये और वह इस कृतघ्न लोगों से मिल गया। वे लोग खानिम से भी मिल गये और मिर्जा साहरूख को आगे रख कर उन्होंने राजद्रोह किया। शाहरूख उस समय केवल सात वर्ष का था। विद्रोही लोग चाहते थे कि मिर्जा इब्राहीम का मुल्क मिर्जा शाहरूख को मिल जाये। इस बात की खबर सुनकर मिर्जा सुलेमान ने उनके विरुद्ध प्रयाण किया। वे लोग कुर्दुज के दुर्ग में छिप गये। मिर्जा सुलेमान ने दुर्ग का घेरा डाला जो चालीस दिन तक चला, फिर मिर्जा सुलेमान के पास आया और सारे विद्रोही लोग पकड़े गये। मिर्जा ने उनको करातगीन भेज दिया। वहाँ भी वह लोग दुर्गसेना से मिल गये। करातगीन के अधिकारियों ने विद्रोहियों से कहा, या तो आप लोग मिर्जा शाहरूख को ले आओ या यहाँ से चले जाओ। तब विद्रोही लोग बल्ख पहुंचे। हर्म बेगम ने बल्ख के फौजदार से निवेदन करवाया कि उनको दण्ड दे, परन्तु वे लोग काबुल पहुंच गये। फिर हाजी तमन बेग और कुछ अन्य लोग बदख्शां चले गये। तब उनमें से कई अग्रणी लोगों ने अकबर से सहायता मांगी तो मुहम्मद कुली को कुर्दुज का दुर्ग दे दिया गया और शाह तईब, जो हर्म बेगम का निकट सम्बन्धी था, मिर्जा शाहरूख का संरक्षक नियुक्त कर दिया गया।

विद्रोहियों ने मिर्जा शाहरूख का बहाना लेकर फिर उत्पात खड़ा कर दिया, इसका संक्षिप्त वृत्तान्त यह है कि तुरान के शासक अब्दुल्ला खां ने हिसार को छीनना चाहा तो वहां के लोगों ने मिर्जा सुलेमान से सहायता मांगी। मिर्जा सुलेमान उधर की ओर रवाना हुआ। उस समय उसमें और मुहम्मद कुली में कुछ बोलचाल हो गई तो मिर्जा न उसको फटकारा और साथ ही हर्म बेगम से कहलाया कि वह आकर मुहम्मद कुली को दण्ड दे। मुहम्मद अली कुर्दुज चला गया और लड़ाई की तैयारी करने लगा। उसने अपने छोटे भाई को तालिकान भेजा कि वह खानिम से सम्पर्क करे। मिर्जा शाहरूख को लाये और झगड़ा खड़ा करे। खानिम और मिर्जा शाहरूख जो अब 15 वर्ष का था, किसी बहाने से तालिकान से चल दिये। शाह तईब उनको रोकना चाहता था इसलिये मिर्जा शाहरूख ने कुछ लोगों के बहकाने से उसको मरवा दिया।

मुहम्मद कुली के भाग जाने की खबर सुनकर मिर्जा सुलेमान कुर्दुज आया तो मुहम्मद कुली दुर्ग छोड़कर भाग गया और सुलेमान ने दुर्ग पर कब्जा कर लिया। फिर वह विद्रोहियों के दमन के लिए चला, उसी समय खानिम, मिर्जा शाहरूख को साथ लेकर ऐमाक लोगों से सहायता प्राप्त करने के लिये हिन्दू कोह को चल दिये। मुहम्मद कुली भी उससे आ मिला। खानिम का विचार था कि ऐमाक लोगों से सहायता न मिलेगी तो वह अकबर की शरण लेगी। उस पर अकबर की बड़ी कृपा थी। जब खानिम और शाहरूख हिन्दू कोह पहुंचे तो बहुत-से एमाक लोग इकट्ठे हो गये। मुहम्मद कुली उन्हीं में शामिल हो गया। मिर्जा शाहरूख ने वापस लौट कर अन्दराब पर आसानी से कब्जा कर लिया। फिर वह कहमर्द पहुंचे। खानिम मिर्जा शाहरूख को छोड़कर गोरी गई। सुल्तान इब्राहीम ने जो मिर्जा सुलेमान का रिश्तेदार था, गोरी दुर्ग की लड़ाई के लिए तैयार कर लिया और स्वामिभक्त सेवक की भांति उसने दुर्ग की रक्षा की। यह खबर सुनकर मिर्जा सुलेमान ने उधर की ओर प्रयाण करने की तैयारी की। इसी बीच में हरम बेगम की मृत्यु गई। शोक मना कर मिर्जा सुलेमान गोरी की ओर रवना हुआ। शाहरूख विफल होकर अन्दराब चला गया। मिर्जा सुलेमान ने निश्चय किया कि हिन्दूकोह पहुंच कर ऐमाक लोगों के कुटुम्ब और सम्पत्ति को छीन कर मिर्जा शाहरूख की सेना को तितर-बितर कर दे। उसी समय कुछ दुष्ट लोगों के बहकाने से शाहरूख ने प्रार्थना की कि मिर्जा इब्राहीम की जायदादे मुझे दे दी जायें तो यह उत्पात बन्द हो जायेगा। मिर्जा सुलेमान के हाथ में आ गई और मिर्जा शाहरूख की स्थिति सुरक्षित नहीं रही तो शाहरूख को विवश होकर सिराब जाना पड़ा। वहाँ से वह खोस्त पहुंचा। वह बदख्शां की घाटियों की शरण लेना चाहता था। मिर्जा सुलेमान ने उधर की ओर कूच किया। जब मिर्जा सुलेमान ऐसे स्थान पर पहुंचा, जहाँ से एक मार्ग गोरी को तथा दूसरा कुर्दुज को जाता था तो उसको यह शंका हुई कि कौन-से मार्ग से जाना चाहिये। ठीक उसी समय मिर्जा सुलेमान की अग्रसेना आ पहुंची और शाहरूख की सेना तितर-बितर हो गई। फिर भी शाहरूख ने शत्रु को मार भगाया, वे अंजुमन जिले के पहाड़ों में

चले गये। मिर्जा सुलेमान ने शाहरूख का डेरा लूट लिया। शाहरूख ने पहाड़ों को पार करके कुर्दुज पर कब्जा कर लिया। तब मिर्जा सुलेमान के लोग भी शाहरूख से आ मिले क्योंकि उनके परिवार कुर्दुज में रहते थे। मुहम्मद कुली और बहुत-से अन्य बदख्शी लोग चाहते थे कि पीछा करके मिर्जा सुलेमान का वध कर देना चाहिए परन्तु शाहरूख ने यह सलाह नहीं मानी। वह कुर्दुज में जम गया। मिर्जा सुलेमान ने इब्राहीम का प्रदेश उसको दे दिया, फिर दुष्ट लोगों ने शाहरूख को बहकाया कि मिर्जा सुलेमान कुलाब दुर्ग को दृढ़ कर रहा है इसलिये उसको निर्मूल कर देना चाहिये। शाहरूख ऐसे लोगों से परेशान होकर तालीकान चला गया। वहाँ सब लोग मिर्जा सुलेमान का साथ छोड़कर उसके पक्ष में हो गये, फिर भी शाहरूख ने मिर्जा सुलेमान से मिलना चाहा और उससे मिला, परन्तु मिर्जा सुलेमान बहुत डरा हुआ था। परन्तु शाहरूख ने बहुत बड़ी दावत दी, परस्पर दोनों ने शपथ ली और शाहरूख ने निश्चय कर लिया कि वह मिर्जा सुलेमान का अहित कभी नहीं करेगा।

इसके बाद मिर्जा सुलेमान ने कहा, ''मिर्जा इब्राहीम के समय में मेरी इच्छा थी कि मैं हज्ज की यात्रा करता। अब वह इच्छा फिर जागृत हो गई है। मैं चाहता हूं कि तुमसे प्रेमपूर्वक बिदा लूं और देश का जो विभाजन हो गया है वह स्थिर रहे। मिर्जा शाहरूख ने वचन देने से कुछ आगा-पीछा किया। तब मिर्जा सुलेमान उसकी प्रत्येक बात पर सन्देह करने लगा। जब सुलेमान किसी भी प्रकार से सन्तुष्ट नहीं हुआ तो शाहरूख ने उसकी आदरपूर्वक बिदा कर दिया। मिर्जा सुलेमान काबुल पहुंच कर शाहरूख से बदला लेने की तैयारी करने लगा। उसने सोचा, यदि हकीम मिर्जा सहायता करेगा तो मैं बदला लूंगा। यदि हो सकेगा तो मैं काबुल में उत्पात करूंगा और फिर बदख्शा ले लूंगा। अन्यथा मैं अकबर के दरबार में पहुंचूंगा और अपने हार्दिक उद्देश्य की पूर्ति करूंगा। तब मिर्जा हकीम ने उसको भारत भेज दिया। तब मिर्जा सुलेमान ने अकबर को प्रार्थना पत्र भेजा। अकबर ने पंजाब के अधिकारियों को आदेश दिया कि वह नगर के बाहर जाकर मिर्जा का स्वागत करें। अकबर ने उसके लिए भारत की दुर्लभ वस्तुयें भेंटस्वरूप भेजीं। अकबर का अधिकारी ख्वाजा आकाजान सिंध नदी के तट पर मिर्जा से मिला और उसको सान्त्वना दी। जागीरदारों ने मिर्जा का स्वागत किया। जब वह राजधानी में पहुंचा तो बादशाह के आदेश से बड़े-बड़े उमरावों ने उसका विधिपूर्वक स्वागत किया। जब मिर्जा राजधानी से तीन कोस के अन्दर आ पहुंचा तो बादशाह घोड़े पर सवार हो गया। नगर को और दीवानें आम को खूब सजाया गया। हाथी और चीते सामने खड़े किए गये। अक्टूबर, 1575 को मिर्जा का राजसी ठाट से स्वागत हुआ। बादशाह घोड़े से उतर कर उसकी ओर चला, मिर्जा ने भी सिजदा किया। अब मिर्जा पिछले दु:खों को भूल गया तथा कृतज्ञता पूर्वक वापस लौटा और बादशाह का अनुचर बन गया। बादशाह ने मिर्जा पर अनुग्रह की वर्षा कर दी और वचन दिया कि बदख्शा उसको दिला दिया जायेगा और इसके लिये खानजहां के नेतृत्व में पंजाब से सेना भेजी जायेगी।''

राजा टोडरमल ने आकर सिजदा किया। वह 54 अच्छे हाथी और बंगाल की दुर्लभ वस्तुयें लाया था, जो टकराई के युद्ध में और संधि के समय प्राप्त हुई थीं। बादशाह ने उस पर अनेक प्रकार से कृपा की और उसको मसरिफ-ए-दीवान नियुक्त किया। उसने ईमानदारी से काम किया और लोभ नहीं किया, परन्तु उसमें बदला लेने की भावना बहुत थी और जो कोई उसका थोड़ा-सा भी विरोध करता, उससे वह बदला लेना चाहता था। प्रशासक में ऐसा दुर्गुण नहीं होना चाहिये। धर्म के मामले में भी वह बड़ा कट्टर था।

एक घटना यह हुई कि गढ़ा का इलाका राय सुर्जन से लेकर सादिक खां को जागीर में दे दिया गया। राज सुर्जन जागीर में दिया गया।

एक और घटना यह हुई कि मासूम खां अफगानिस्तान से आकर शाही सेना में प्रविष्ट हो गया। उसको ऊंचा पद देकर बिहार भेज दिया गया। वह खुरासान का सैयद था। उसका चाचा बादशाह हुमायूं की सेवा करता था और वजीर बन गया था। वह मिर्जा हकीम का कोकलतास (धाय भाई) था। वह अपनी वीरता के लिये प्रसिद्ध था। वह दरबार में आया और उसको शाही कृपा प्राप्त हुई। इसी वर्ष मीर सईद मुहम्मद, मीर आदिल का भक्कर को शासन सुपुर्द किया गया।

एक घटना यह हुई कि जलाल खां की मृत्यु हो गई। उसको शाही सेना के सहायतार्थ सिवाना भेजा गया था। जब वह मेरठा पहुंचा तो सुल्तान सिंह और रामसिंह ने, जो राय राय सिंह के भाई थे तथा अली कुली ने उससे कहलाया कि बादशाह के आदेशानुसार वह चन्द्रसेन को नष्ट करने में लगे हुए हैं। परन्तु प्रदेश पथरीला है, मार्ग दुर्गम है और लोग बड़े साहसी हैं इसलिये चन्द्रसेन कड़ा सामना कर रहा है। हमको सहायता की आवश्यकता है। जलाल खां ने शीघ्रता से उधर की ओर प्रयाण किया। तब चन्द्र सेन ने युक्ति का उपयोग करना चाहा। शाही सेना ने उसका भाव समझ लिया और उसके विरुद्ध प्रयाण किया तो उसने कनूजा नामक पहाड़ की शरण ली और फिर लड़ने के लिये आया। बहुत-से लोग मारे गये और वह फिर पहाड़ियों में पीछे हट गया। शाही अधिकारी रामगढ़ के दुर्ग में घुस गये। उस समय एक चालाक आदमी ने कहा कि मैं देवीदास हूं तो बदमाश लोग उसके पास इकट्ठे हो गये। बहुत से लोगों को यह निश्चय था कि देवीदास, मिर्जा सरफुद्दीन हुसेन से लड़ता हुआ मेरठा की लड़ाई में मारा जा चुका था। इस दावेदार ने कहा कि मैं उस लड़ाई में आहत हो गया था और मृतक की भांति भूमि पर पड़ा रहा। तब एक साधु मुझे कन्धे पर उठा कर अपनी कुटिया में ले गया। मेरे घावों पर उसने पट्टियां बांधी और उनको भर दिया। फिर मैं उस साधु की सेवा में गया। साधु ने अब मुझे छुट्टी दे दी है और आज्ञा दी है कि मैं लोकसेवा करूं। कुछ लोगों ने उसकी बात पर विश्वास किया और कुछ ने नहीं किया। वह जलाल खां के साथ हो लिया। वह चाहता था कि उसकी अच्छी सेवा का उल्लेख बादशाह के सामने किया जाये।

जब शाही सेना चन्द्रसेन का जोर से पीछा कर रही थी तो इस कपटी ने कहा कि चन्द्रसेन, रामराय के पुत्र कला की जागीर में है और रामराय चन्द्रसेन के भाई का पुत्र है। चन्द्रसेन की दशा बहुत बिगड़ी हुई है। तब शाही सेना ने उधर की ओर प्रयाण किया। कला ने कहा कि चन्द्रसेन मेरे पास नहीं है। उसने छल और धोखे से सीमाल खां को अपनी ओर मिला लिया और वह देवीदास को नष्ट करने में लग गया। एक दिन सीमाल उसको अपने मकान पर ले आया, परन्तु देवीदास उस चक्कर में से निकल गया। अब उसको शाही सेना से निराशा हो गई तो वह अब कला का साथी बन गया। नवम्बर 1575 में जब शाही सैनिक विविध दिशाओं में ठहरे हुए थे तो देवीदास के जीवन का दीपक बुझ गया। देवीदास और कुछ अन्य साहसी लोग बदला लेना चाह रहे थे। उन्होंने जलाल खां के डेरे को सीमाल खां का डेरा समझा और उस पर आक्रमण कर दिया। जलाल खां, वीरतापूर्वक लड़ा परन्तु वह मारा गया। तब बदमाश लोग सीमाल खां के डेरे पर पहुंच गये। उसी समय बहुत-से सैनिकों के सहित जयमल आ गया। जब इस दुर्घटना की खबर बादशाह को मिली तो उसने सैयद अहमद, सैयद हाशिम और बारहा के सैयदों को आदेश दिया कि विद्रोहियों को दण्ड दिया जाये। उन्होंने अच्छी सेवा की और विद्रोहियों का दमन किया।

***

प्रकरण 29

बंगाल का शासन खाने जहाँ के सुपुर्द किया गया

23 अक्टूबर 1575 को मुनीम खां की मृत्यु हो गई और दाऊद खां ने गत संधिभंग करके विद्रोह कर दिया। बंगाल के शाही अफसरों में परस्पर मतभेद हो गया और वे लड़े बिना ही प्रान्त छोड़ कर जाने लगे। इसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है:—

संधि करने के पश्चात् मुनीम खां घोरा घाट गया और उसने विद्रोह का दमन कर दिया। वहाँ से लौट कर वह गोड़ नगर में निवास करने लगा। यह नगर पहले राजधानी था। उसने यह नहीं देखा कि यह नगर बरबाद हो चुका हो चुका था और वहाँ का जलवायु दूषित हो गया था। लोगों ने उसको यह बात सुझाई परन्तु उसने ध्यान नहीं दिया। इसलिये उसके साथ के 15 बड़े-बड़े अफ़सर और अन्य कितने ही अधिकारी काल के ग्रास बन गये। जब मृत्युएं बहुत ही होने लगीं तो वह सोचने लगा कि क्या करना चाहिये। उसी समय

यह भी खबर आई कि जुनैद ने बिहार में विद्रोह करना शुरू कर दिया है। खानेखाना नदी पार करके बिहार जाना चाहता था परन्तु टांडा पहुंचते ही कुछ बीमार रह कर वह मर गया। सैनिक अधिकारियों ने शाह खां को अपना सेनापति बना दिया और इतिमाद खां, ख्वाजा सरा ने कुशलता से काम करना शुरू कर दिया। परन्तु अफसरों में मेल नहीं था और परस्पर झगड़ा करते थे। यह स्थिति देख कर दाऊद ने संधिभंग कर दी और भद्रक नामक कस्बे में नजर बहादुर को घेर लिया। वचन देकर उससे आत्मसमर्पण करवाया और फिर उसको मार डाला। मुराद खां जलेसर (जलासोर) से भाग कर टांडा आ गया। अफगानों ने शाही नौ सेना और तोपखाने पर भी आक्रमण किया। शाही सेना के अधिकारियों ने काम करना छोड़ दिया, वह गंगा पार करके गौड़ की तरफ आ गये आ गये और पूर्णिमा तथा तिरहुत के मार्ग से बिहार पहुंच गये। आदम ताज बंद अकबर का फरमान लेकर खानेखाना के पास आया था। परन्तु वह भी दुष्ट लोगों के बहकाने से लूटमार करने लगा। उसने मुनीम खां की सम्पत्ति और हाथी छीन लिये।

जब बादशाह को इन घटनाओं की खबर मिली तो उसने चाहा कि बंगाल का शासन मिर्जा सुलेमान को सौंप दिया जाय, जिससे उसका जीवन सुखमय हो सके और फिर यदि वह बदख्शां को जीतना चाहे तो यह भी सम्भव हो, परन्तु मिर्जा सुलेमान तो मिर्जा शाहरूख से बदला लेने पर तुला हुआ था उसको यह प्रस्ताव पसन्द नहीं आया। अकबर उससे नाराज तो नहीं हुआ, परन्तु बंगाल का मामला अधिक नाजुक था अतः खानेजहाँ को जो बदख्शां की विजय के लिए रवाना होने वाला था, बंगाल भेज दिया गया। 15 नवम्बर, 1575 को राजा टोडरमल के साथ जो योग्य और अनुभवी पुरुष था, उसको रवाना करा दिया गया। बंगाल के अधिकारियों और कर्मचारियों के नाम आदेश जारी किया कि वे खानेजहाँ की आज्ञाओं का पालन करें और बंगाल की विजय में उसका साथ दें। पंजाब का शासन जो खानेजहां के हाथ में था, शाह कुली खां मरहम को सुपुर्द कर दिया।

जब खाने-जहाँ ने पूर्व की ओर प्रयाण किया तो उसने देखा, बंगाल ने अफ़सर भाग कर भागलपुर तक़ जा पहुंचे हैं। उसको देख कर वह भयभीत हो गये, न तो वे वापस लौटना चाहते थे और न खानेजहाँ के साथ सहयोग करना चाहते थे। वापस लौटने में वे कई प्रकार के बहाने बनाने लगे। खानेजहां के धर्म के विषय में भी (वह शिया था) वे चर्चा करने लगे। परन्तु बादशाह के प्रभाव से एवं राजा टोडरमल की राजनैतिक कुशलता से सब शान्त होकर उसके साथ जाने के लिए तैयार हो गये। शाही सेना ने गढ़ी छीन ली, वहाँ का हाकिम अयाज-खास-खेल जीवित पकड़ लिया गया और मार डाला गया। दाऊद ने कल्पना भी नहीं की थी कि शाही सेना इतनी जल्दी आ जायेगी। खानेजहां ने आकमहल में अपना शिविर लगाया, इसके एक ओर नदी है दूसरी ओर ऊचा पर्वत है और सामने एक लम्बा-चौड़ा दलंदल है और यह बंगाल की सीमा पर स्थित है। खानेजहां ने अपनी सेना तो जमा ली परन्तु प्रदेश की दुर्गमता के कारण लड़ाई नहीं हुई।

एक घटना यह हुई कि दिसम्बर, 1575 में मीर मुहम्मद खां खानकिला की पट्टम गुजरात में मृत्यु हो गई। उसके लिए बादशाह ने फातिहा पढ़ा और उसके कुटुम्बियों को सान्त्वना दी।

सुलेमान मिर्जा

सुलेमान मिर्जा दरबार में आया तब से अब तक उस पर कृपाएं कर रहा था। परन्तु मिर्जा का सारा ध्यान शाहरूख से बदला लेने पर तुला हुआ था। बदख्शां को पुन: प्राप्त करना चाहता था। जब खानेजहां बंगाल चला गया और सुलेमान की इच्छापूर्ति में विलम्ब होता दिखा तो सुलेमान ने हज्जाज जाने की इजाजत मांगी। उसका ख्याल था कि इस मार्ग से शायद वह बदख्शां पहुंच जाय और अपनी हार्दिक अभिलाषा की पूर्ति कर सके। बादशाह ने अनुमति दे दी और उसको विदा कर दिया। कुलीज खां और रूपसी को आदेश दिया गया कि वे सुलेमान को गुजरात के बन्दरगाहों तक पहुंचा दे। दोनों ने आज्ञा का पालन किया और सुलेमान को हज्जाज रवाना कर दिया।

***

प्रकरण 30

अकबर की अजमेर यात्रा

अकबर फतेहपुर सीकरी से, जो उसकी राजधानी थी, रवाना हुआ और 18 मार्च, 1576 को उसने अजमेर में अपना शिविर लगाया। अपनी निर्दिष्ट प्रथा के अनुसार उसने अन्तिम मंजिल पैदल पार की। दरगाह में रहने वाले लोगों में उसने बड़ी धनराशि वितरित की और जो लोग आशा कर रहे थे उनको अच्छा वेतन दिया।

***

प्रकरण 31

अकबर के राज्याभिषेक के बाद इक्कीसवें इलाही संवत् का आरम्भ

11 मार्च, 1576 को इक्कीसवें वर्ष का आरम्भ हुआ। आरंभ में अकबर ने गुजरात की ओर ध्यान दिया। मिर्जा कोका ने सक्त पथ छोड़ दिया था, इसलिये उसको पदच्युत करके शिक्षा दी जा रही थी। अकबर चाहता था कि यदि वह सक्त पथ पर आ जाये तो उसको पुनः गुजरात भेज दिया जाये। परन्तु अभी उसका सुधार नहीं हुआ था, इसलिये गुजरात का प्रशासन करने के लिये मिर्जा खान, वजीर खान आदि अधिकारियों को नियत किया गया। उन सब की पदवृद्धि कर दी गई थी। उस प्रान्त का शासन मिर्जा खान को सौंपा गया था और प्रशासन वजीर खां को दिया गया था। मिर्जा अलाउद्दीन को अमीन और दीपकदास (पियागदास) को दीवान नियुक्त किया गया। मीर मुजफ्फर को सेना का बख्शी बनाया था।

महाराणा मेवाड़

अब अकबर महाराणा मेवाड़ को उखाड़ फेंकने का विचार करने लगा। इस काम के लिये कंवर मानसिंह को नियत किया गया। वह दरबारियों में बड़ा बुद्धिमय स्वामिभक्त वीर पुरुष माना गया था। उसको फरजन्द की उपाधि भी दी गई थी। वह 3 अप्रैल 1576 को अजमेर से रवाना हुआ। उसके साथ गाजी खां बख्शी ख्वाजा, गयासुद्दीन अली, आसफ खां, सईद अहमद, सईद हाशिम बारहा। जगन्नाथ, सईद राजू, मिहतर खां, माधोसिंह, मुजाहिद बेग, खंगार, राय लूणकरण और अन्य कितने ही वीर अधिकारी थे। धार्मिक और प्रशासनिक विषयों पर अकबर ने मानसिंह को लिखित हिदायतें दी थी।

इसी समय मुहम्मद यूसुफ खां आदि अफसरों को पंजाब भेजकर आदेश दिया गया कि वहां स्थापित करे।

सिवाना विजय

एक घटना यह हुई कि सिवाना का दुर्ग जो अजमेर जिले में है और जो चंद्रसेन के अधिकार में था और जहां फत्ता राठोर दुर्गाध्यक्ष था, शाही सेना ने छीन लिया। शाह कुली खां महरम और राय रायसिंह सेना का संचालन भली भांति नहीं कर सके। घोड़े दुबले हो गये। घास और दाने का अभाव हो गया। इसी बीच में जलाल खां की मृत्यु की मृत्यु की खबर आई तो शक्तिशाली लोगों में हलचल मच गई। विशेष कर रामराय का पुत्र काला और कितने ही विद्रोही लोग देवकर (देवगांव) के दुर्ग में एकत्रित हो गये। इसमें सिवाना

का घेरा लम्बा हो गया। इस स्थिति का अन्त करने के लिये शाहबाज खां को नियुक्त किया गया और उसे आदेश दिया गया कि कार्य समाप्त हो जाने पर वापस दरबार में आ जाये। देवकर पहुंच कर शाहबाज ने देखा कि स्थिति बहुत बुरी है। उसने बड़ा श्रम करके दुर्ग छीन लिया और फिर वहाँ अपने आदमी रख कर वह सिवाना दुर्ग को जीत कर आगे चला। लूनी नदी पर उसका राठोड़ राजपूतों से मुकाबला हुआ, बड़ा घमासान युद्ध हुआ। फिर साबात बना कर थोड़े ही दिनों में सिवाना दुर्ग जीत लिया। उस समय अकबर अजमेर में था। जब इस प्रान्त का काम पूरा हो गया तो अकबर अजमेर से राजधानी की ओर रवाना हुआ जहां (फतेहपुर) पहुंच गया।

बिहार की सेना बंगाल भेजी

दूसरी घटना यह हुई कि बिहार की सेना बंगाल प्रान्त में नियुक्त की गई। यह लिखा जा चुका है कि गढ़ी पर कब्जा करके शाही सेनाएँ आकमहल पहुंची। मुजफ्फर खां और बिहार के दूसरे सैनिक अधिकारियों को आदेश दिया गया कि वे अपनी सेनासहित बंगाल की ओर चढ़ाई करे। इस काम के लिये उनको बड़ी धनराशि और सामान दिया गया। इसी बीच में खबर आई कि ख्वाजा अब्दुल्ला नक्शबन्दी मारा गया। अकबर को इससे बड़ा दुःख हुआ।

गजपति पर अभियान

एक और घटना यह हुई कि शाहबाज खां को गजपति के विरुद्ध रवाना किया गया। इसका संक्षिप्त वृत्तान्त यह कि गजपति बिहार प्रान्त का प्रसिद्ध जमीनदार था। उसने बंगाल विजय में बादशाह की अच्छी सेवा की थी। फिर वह छुट्टी लेकर अपने देश को चला गया। फिर जब खानेजहां आया तो उसने साथ नहीं दिया और लूटमार करने लगा। उसने बहुत-से आदमी एकत्र कर लिये। इस प्रकार राजविद्रोह बढ़ने लगा। फिर वह कस्बों और नगरों को भी लूटने लगा। वह दाऊद से मिल गया, शाही सेना के प्रयाण को रोकने का प्रयत्न करने लगा। उसने एक शाही अफ़सर को, जो नाव द्वारा बंगाल जा रहा था, लूट लिया। उसके साथ लड़ते हुए फरहत खां, उसका पुत्र और कराताक मारे गये। जब इस उत्पात की खबर बादशाह को मिली, तो उसने जून, 1576 को शाहबाज खां को आदेश दिया कि गजपति को दंड दिया जाय। दूसरे शाही अधिकारियों के नाम आदेश हुआ कि इस काम में शाहबाज खां का साथ दिया जाय। अब गजपति गाजीपुर में खानजहां के कुटुम्ब पर आक्रमण करने वाला था, उसी समय शाही सेना आ पहुंची तो वह लड़ने को तैयार हो गया और गजपति को उचित दंड मिला।

शाहबुद्दीन अहमद खां को मालवा भेजा गया

शाहबुद्दीन अहमद खां अपनी योग्यता के लिए प्रसिद्ध था और कृषकों का हितैषी था। अकबर ने उसको 5000 का मनसब प्रदान किया और उसे मालवा भेजा।

मीर शरीफ कजवीनी की मृत्यु

एक दिन चौगान का खेल हुआ जिसमें अकबर की कृपा से मीर गयासुद्दीन, नकीब खां और मीर शरीफ, जो दोनों मीर अब्दुल लतीफ कजवीनी के पुत्र थे, खेल में शामिल किये गये। जब खेल जोर पर था तो दोनों भाइयों के घोड़े आपस में टकरा गये। इनमें एक युवक ने अभी खेल सीखना शुरू ही किया था। वह गिर कर अचेत हो गया और उसके कान से रक्त बहने लगा। अकबर ने घोड़े से उतर कर उसके साथ सहानुभूति की। थोड़े समय बाद शरीफ कजवीनी की मृत्यु हो गई। बादशाह ने उसके कुटुम्बियों को आर्थिक सहायता दी।

***

प्रकरण 32

राणा का पलायन

शाही सेना कुछ दिन मांडल गढ़ में ठहरी। राणा मानसिंह को एक जमींदार समझता था और मांडलढ़ आकर उससे लड़ना चाहता था परन्तु उसके हितैषियों ने उसे नहीं आने दिया।

जब शाही सेना एकत्र हो गई तो कुंवर मानसिंह ने गोगूदा की ओर प्रयाण किया। कुंवर मानसिंह ने सेना की व्यवस्था इस प्रकार की। वह स्वयं मध्य भाग में था। बारहा के सैयद दायें पार्श्व में थे। गाजी खां बदख्शी और राय लूणकरण बायें पार्श्व में थे। जगन्नाथ और ख्वाजा गयासुद्दीन अली और आसफ खां हरावल में थे। माधोसिंह और अन्य बड़े-बड़े लोग अल्तमश या पृष्ठभाग में थे। मेहतर खां और अन्य लोग पीछे की ओर थे। शत्रु पक्ष में राणा मध्य में था। ग्वालियर का राजा रामशाह दायें पार्श्व में था। बाएं पार्श्व का नेतृत्व झाला जाति के वेदामाता को दिया गया था। जयमल का पुत्र रामदास अग्रसेना में था। 18 जून, 1576 को जब एक घड़ी दिन व्यतीत हो गया तो दोनों सेनाओं में खमनौर गांव के पास युद्ध हुआ। यह गांव हल्दी घाटी के मुख पर है और गोगूदा के अधीन है। लड़ाई बड़ी घमासान हुई। वीरों ने जीवन की अपेक्षा अपनी कीर्ति को अधिक ऊंचा समझा। शत्रु के दाएं पक्ष ने बाएं शाही पक्ष को पीछे धकेल दिया और उसके अग्रभाग का जोर बढ़ गया। बहुत-से शाही सैनिकों के पैर उखड़ गये। जगन्नाथ ने बड़ी वीरता का कार्य किया। वह अपने प्राणों को न्योछावर करने ही वाला था कि पृष्ठ सेना आ गई और कुंवर मानसिंह स्वयं युद्ध करने लगा। तब शाही सेना के दाएं पार्श्व ने शत्रु के बाएं पार्श्व को

दबा दिया। सैयद हाशिम घोड़े से गिर पड़ा परन्तु सैयद राजू ने उसे फिर सवार करा दिया। गाजी खां बदख्शी आगे बढ़ कर अग्रसेना में आ गया। लोग मार रहे थे और मर रहे थे। दोनों ओर के वीरों ने प्राणों का बलिदान करके सम्मान प्राप्त किया। वीरों के समान हाथियों ने भी विचित्र कार्य किये। शत्रु का हाथी लोना बड़ा पंक्तिभंजक था। जमाल खां फौजदार अपने गजमुक्ता हाथी को उससे लड़ाने के लिए लाया। इन दोनों हाथियों के आक्रमणों ने वीरों में खलबली मचा दी। शाही हाथी आहत होकर भागने ही वाला था कि उसके महावत को एक गोली लगी और वह पीछे हट गया। राणा का एक रिश्तेदार अपने मुख्य हाथी रामप्रसाद को लाया जिसने कई वीरों को पछाड़ डाला। कमाल खां अपने गजराज नामक हाथी को लाया जिसने बड़ी लड़ाई लड़ी। पंजू महावत रणमदार हाथी को रामप्रसाद के सामने लाया। रामप्रसाद हाथी के महावत को एक बाण लगा। तो रामप्रसाद लूट लिया गया। जगन्नाथ के प्रहार से जयमल के पुत्र रामदास की मृत्यु हो गई। राजा रामशाह अपने तीन पुत्रों—शालवाहन, मानसिंह, प्रतापसिंह सहित वीरतापूर्वक लड़ता हुआ मारा गया। इस घमासान युद्ध में कुंवर मानसिंह और राणा का सामना हो गया, दोनों वीरतापूर्वक लड़े। शत्रु जीतता हुआ मालूम होता था परन्तु इसी बीच में शाही अग्रसेना शोर मचाती हुई आ पहुंची और हल्ला मच गया कि अकबर स्वयं आ पहुंचा है। इससे लड़ाई का स्वरूप बदल गया और शत्रु का साहस भंग हो गया। शाही सेना को विजय प्राप्त हो गई। लगभग 150 गाजी धाराशायी हो गये। शत्रु के 500 आदमी मारे गये। प्रचण्ड गरमी और थकान के कारण शाही सेना ने शत्रु की सेना का पीछा नहीं किया। कुंवर ईश्वर को धन्यवाद देकर गोगूंदा पहुंचा। राणा भागकर पहाड़ियों की घाटियों में चला गया था, शाही सेना ने गोगूंदा में डेरे लगाये। लड़ाई की सूचना और वीरों की सेवाओं का वर्णन तथा लूट का माल और रामप्रसाद हाथी को लेकर मौलाना अब्दुल कादिर बदायूनी, जो बड़ा विद्वान् था और जिसने इस अभियान में सम्मिलित होने की अनुमति प्राप्त कर ली थी, दरबार में पहुंचा। जब बादशाह को विजय की सूचना मिली तो उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया। उसी दिन सैयद अब्दुल्ला खां को पूर्वी प्रान्तों की ओर यह खबर देने के लिए भेजा कि शाही सेना आ रही है और हल्दीघाटी में विजय प्राप्त हो गई है। उससे यह भी कहा गया कि यदि बिहार की सेना ने खानेजहां की सहायता करने के लिये प्रयाण नहीं किया हो तो उनको शीघ्र रवाना किया जाय।

***

प्रकरण 33

अकबर का बंगाल पर प्रयाण और प्रथम मंजिल से ही वापस लौटना

बादशाह ने आदेश दिया कि अभियान की तैयारी की जाय तथा जल और स्थल के मार्ग से सेना प्रयाण करे। कासिम खां को आगरा भेजा गया, उसने व्यवस्था की कि सेना नदी पर कहां-कहां ठहरेगी। 22 जुलाई, 1576 को अकबर फतेहपुर से रवाना हुआ। उस समय वर्षा बड़े जोर पर थी। उसका विचार था कि वह स्वयं कुछ दरबारियों के साथ नदी के मार्ग से और सेना स्थलमार्ग से कूच करेगी। पहले दिन अकबर आगरा जिले के बिरार नामक गांव पर पहुंचा। वहाँ सैयद अब्दुल्ला खां लम्बी यात्रा 14 दिन में पूरी करके बंगाल से आया और शाही सेना की विजय की खबर लाया। उसने सुनाया कि बंगाल प्रान्त जीत लिया गया! बादशाह ने दोनों (हल्दीघाटी और बंगाल) की विजय के लिए ईश्वर को धन्यवाद दिया।

यह विजय खानेजहाँ लोदी और राजा टोडरमल के निरंतर परिश्रम से प्राप्त हुई थी। जब आकमहल में शाही सेना और दाऊद का सामना हुआ तो स्थान की दुर्गमता के कारण जम कर लड़ाई नहीं हुई। शत्रु समझता था कि वर्षा का आरम्भ होते ही शाही सेना के डेरे उखड़ जायेंगे। शाही सेना में अधिकांश अधिकारी चगताई थे और खानेजहां किजिलबाश था। अधिकारियों में इतनी बुद्धि नहीं कि साम्प्रदायिक भेद पर ध्यान न देकर बादशाह की सेवा करें। इसके अतिरिक्त सेना में बीमारी फैली हुई थी परन्तु खाने जहां और राजा टोडरमल ने लोगों को प्रोत्साहित किया। फिर बादशाह का फरमान आ पहुंचा और बिहार से शाही सेना आ गई। मुजफ्फर खां चिन्तित होकर अपना समय नष्ट कर रहा था परन्तु अब उसने अपनी सेना सजाकर लड़ने की तैयारी की। 10 जुलाई को बिहार और बंगाल की सेनाएं सम्मिलित हो गईं। खाने जहां ने बिहार की सेना के अधिकारियों का सम्मान किया। वह मुजफ्फर खां के डेरे पर गया और उससे मिला, तब सब युद्ध के लिये कार्यबद्ध हो गये। शाही सेना का व्यूह बनाया गया। मध्य भाग का नेतृत्व खाने जहां के हाथ में रहा। बिहार की सेना ने दायां पार्श्व बनाया। बायें पार्श्व में राजा टोडरमल, बाबा खान काकशाल और अन्य लोग थे। हरावल में शाह खां, मुराद खां आदि थे। अल्तमश में इस्माइल कुली खां और अन्य लोग थे। शत्रु ने अपनी सेना की व्यवस्था इस प्रकार की थी। मध्य में दाऊद खां था, दाईं ओर काला पहाड़ था। बायें पार्श्व का नेतृत्व जुनैद खां के हाथ में था। हरावल में उड़ीसा का शासक खाने जहां और कतलू थे। 12 जुलाई को लड़ाई हुई। चारों ओर बाढ़ आई हुई थी, परन्तु सैनिक व्यवस्थापूर्वक जमे रहे। आगे चलने पर एक नदी आई। परन्तु

उनको थाह मिल गई और उन्होंने नदी पार कर ली। काला पहाड़ और अन्य लोग डटे रहे। फिर राजा टोडरमल वीरतापूर्वक आगे आया, उसने वीरों को प्रोत्साहित किया तो शत्रु को धकेल दिया। काला पहाड़ आहत होकर भाग गया। उत्साही वीरों ने शत्रु का पीछा नहीं किया। जुनैद जो अफगान में बड़ा वीर सरदार था, मारा गया। खाने जहां जो शत्रुओं का नेतृत्व कर रहा था, समाप्त हो गया। शाही सैनिकों ने चारों ओर जयघोष किया और वे दाऊद को पकड़ कर ले आये। खाने जहां ने उससे पूछा, ''तुमने शपथपूर्वक संधि की थी उसका क्या हुआ। दाऊद ने उत्तर दिया, वह संधि खाने खाना के साथ हुई थी अब नई संधि करके मित्रता करने का समय आ गया है। तब आदेश उसके सिर को सैयद अब्दुल्ला के साथ दरबार में भेज दिया और उसके धड़ को टांडा में एक सूली पर टांग दिया। सैयद अब्दुल्ला को बादशाह ने बड़ी बख्शीशें दीं और इतना धन दिया कि उसको वह उठा भी नहीं सका। दूसरे ही दिन बादशाह फतेहपुर के लिये वापस लौट गया।''

इसी समय एक घटना यह हुई कि कुतुबुद्दीन खां को 5 हजार का मनसब प्रदान किया गया।

एक घटना यह हुई कि रणथम्भौर के शासक रामसुर्जन के पुत्र दूदा को दण्ड देने के लिये एक सेना रवाना की गई। दूदा बिना इजाजत बूंदी चला गया था, वहाँ पहुंच कर बहादुर खां, अत्याचार करने लगा था। तब बादशाह ने सफदर खां, मुहम्मद हुसेन शेख, कन्दारराय, जान्दून सुल्तान, जयमल और अन्य यौद्धाओं को आदेश दिया कि दूदा को हरा कर वहाँ के निवासियों की रक्षा करें।

***

प्रकरण 34

अजमेर की यात्रा आदि

15 सितम्बर, 1576 को अकबर ख्वाजा मुईनुद्दीन की यात्रा करने के लिये रवाना हुआ। वह घोड़े पर सवार था और कुछ स्वामिभक्त अमीर और सेवक उसके साथ थे। पहली मंजिल पर उसको मिर्जा खान मिला वह आदेशानुसार गुजरात से आया था।

एक घटना यह हुई कि कुंवर मानसिंह और प्रान्त के अन्य अधिकारी (मेवाड़ के) बाहर आकर मिले। जब राणा हार कर पहाड़ियों में चला गया था तो यह लोग गोगूंदा में ठहर गये थे। उन्होंने दूरदर्शिता से उसका पीछा नहीं किया था। उनके पास खाद्य पदार्थों

की बड़ी कमी थी और उन तक अन्न नहीं पहुंच सकता था। चालाक लोगों ने बादशाह से कहा था कि राणा के साथ युद्ध करने में शिथिलता की गई। इससे बादशाह अफ़सरों से नाराज होने को था। परन्तु जब उसने मामले की जांच की तो वास्तविकता मालूम हो गई।

2 अक्टूबर, 1576 को अकबर की तुला[1] हुई।

एक घटना यह हुई कि पेशरो खां गजपति के पराजय की खबर लाया। इसका संक्षिप्त वृत्तान्त निम्नलिखित है।

गजपति दुर्गम देश में निवास करता था। इसलिये बादशाह की आज्ञा का पालन करना छोड़कर वह विद्रोही बन गया था। जब शाहबाज खां सेना लेकर आया तो गजपति गाजीपुर को लूट रहा था। सेना को देखकर वह भाग गया और चौसा के पास गंगा पार करके लड़ने के लिये तैयार हो गया। परन्तु शाही सेना ने उसको हरा कर भगा दिया और उसकी तोपें, नावें और सामान लूट लिया। फिर सेना माहद के दुर्ग पर पहुंची और उसको घेर लिया। दुर्गपति संग्राम ने दुर्ग की चाभियां शाहबाज खां को अर्पित कर दीं तो वह दुर्ग को कुशल आदमियों को सुपुर्द करके गजपति को दण्ड देने के लिये आगे बढ़ा। गजपति भोजपुर के वन में छिप गया। शाही सेना ने इधर-उधर प्रयाण किया, परन्तु उसका पता नहीं लगा। तब सेना ने वापस मुड़कर दूसरा मार्ग ग्रहण किया। अगले दिन गजपति अवसर देख कर नदी के दूसरे तट पर लड़ने के लिये तैयार हो गया। मार्ग दुर्गम था इसलिये शाही सेना ने उसके सामने से नदी पार नहीं की। फिर संग्राम को पथ-प्रदर्शक बनाकर सेना आगे बढ़ी और उसके इलाके को लूटा। फिर गजपति हार कर जगदीशपुर चला गया जो उसका दृढ़तम दुर्ग था। परन्तु इस दुर्ग पर अधिकार कर लिया गया और गजपति के परिवार को बंदी बना लिया गया। गजपति बड़ा परेशान हो गया। एक ओर तो उसको अपने प्राणों का भय था, दूसरी ओर अपने परिवार को बचाने की चिन्ता थी।

पेशरों ने बादशाह को बतलाया कि एक बार वह गजपति के हाथ में पड़ गया था परन्तु बाल-बाल बच गया। एक घटना यह हुई कि बैरीसाल के जीवन का अन्त हो गया। गजपति शेरगढ़ के दुर्गम दुर्ग में जा छिपा था। वहां भी उसके पैर नहीं टिक सके और वह रोहतास के पर्वतीय प्रदेश में चला गया। उसका भाई वैरीसाल और अन्य विद्रोही पहाड़ियों

---

1. बदायूँनी ने लिखा है कि मानसिंह ने विजय के बाद राणा का पीछा नहीं किया इसलिये अकबर उससे नाराज हो गया था। दूसरी बात यह थी कि मानसिंह ने गोगूंदा में ठहर कर सेना को भूखां मरने दिया और राणा के राज्य को नहीं लूटा। बदायूंनी ने यह भी लिखा है कि मानसिंह और आसफ खां से अकबर कई दिन तक नहीं मिला।
   यह तुला वर्ष में दो बार की जाती थी। एक चान्द्र संवत् के अनुसार दूसरी सौर संवत् के अनुसार 2 अक्टूबर, 1576 की तुला चान्द्र तुला थी, परन्तु सौर तुला का दिन भी अब निकट ही था।

और घाटियों में छिप गये। परन्तु शाही सक्रिय वीरों ने पीछा करके उनको मार डाला और उनका सामान लूट लिया।

दूसरी घटना यह हुई कि रोहतास का दुर्ग शाही सेना ने छीन लिया। गजपति के पुत्र श्रीराम ने कुछ विद्रोहियों को एकत्र करके शेरगढ़ में जमाव कर लिया था। शाहबाज खां ने दुर्ग को घेर लिया और साबात का निर्माण शुरू कर दिया। वहां के अधिकांश विद्रोहियों ने अधीनता स्वीकार कर ली। रोहतास का संक्षिप्त वृत्तान्त निम्नलिखित है—यह दुर्ग जुनैद के हाथ में आ गया था। उसने यह सैयद मुहम्मद के सुपुर्द कर दिया था। जुनैद की मृत्यु पर सैयद मुहम्मद ने चाहा कि इस दुर्ग के आधार पर वह शाही सेवक बन जाये। परन्तु वह खुले तौर पर बात नहीं करता था। फिर मुजफ्फर खां बिहार की सेना के सहित इस दुर्ग को हस्तगत करने के लिये रवाना हुआ, तब दुर्ग सेना ने परेशान होकर शाहबाज खां के पास विश्वस्त आदमी भेजे और उससे प्राणरक्षा के लिये प्रार्थना की। उसने दुर्गरक्षकों का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और स्वयं दुर्ग पर पहुंच गया और ईश्वर को धन्यवाद दिया। मुजफ्फर खां दुखी होकर वापस लौट गया।

फिर शेरगढ़ भी जीत लिया गया। रोहतास के आत्मसमर्पण के बाद शेरगढ़ के निवासियों में कोई दम नहीं रहा। श्रीराम ने समझ लिया कि शाही शक्ति दुर्धर्ष और दुर्दम्य है। वह शाहबाज खां से मिला और दुर्ग की चाबियां उसके सुपुर्द कर दीं।

एक घटना यह हुई कि जालौर और सिरोही के प्रान्त में शाही सेना भेजी गई और उसको विजय प्राप्त हुई। इसका वृत्तान्त इस प्रकार है। ताज खां जालौरी ने शाही आज्ञा मानना छोड़ दिया और सिरोही के देवड़ा राय ने भी विद्रोह कर दिया। तब तरसू नावां, राय रामसिंह, सैयद हाहिक बरहा और बहुत-से कुशल सैनिकों को नियुक्त किया गया और उन्हें आदेश दिया कि पहले तो वे बात-चीत करके ही विद्रोहियों को आज्ञापालन के लिये लाने का प्रयास करें, यदि ऐसा न हो सके तो फिर युद्ध करें। जब यह सेनानायक जालौर पहुंचे तो ताज खां ने अधीनता प्रकट की। इसके पश्चात् ये लोग सिरोही की ओर कूच करने लगे। वहां का राय भी अधीन हो गया और ताज खां के साथ वह बादशाह के दरबार में पहुंचने के लिये रवाना हो गया। फिर शाही आदेश से तरसूम खां पट्टन गुजरात की ओर चला। सैयद हाशिम और राय रामसिंह नाडौत (गुजरात) में ठहरे और वहां के विद्रोहियों का दमन किया।

एक घटना यह हुई कि शाही सेना गोगूंदा की ओर रवाना हुई। अकबर शिकार करने के लिये उधर की ओर गया। उस समय राणा दक्षिण की पहाड़ियों में चला गया था। ईडर में राय नारायण दास विद्रोह कर रहा था। दूसरे लोग भी विद्रोह करने के लिये छटपटा रहे थे। 11 अक्टूबर 1576 को अकबर बाल सुन्दर हाथी पर सवार होकर रवाना हुआ। उसके साथ शाही सेवक थे। जब वह गोगूंदा पहुंचा तो बहुत-से लोगों ने अधीनता प्रकट की।

राणा पहाड़ी देश में था। अकबर ने कुतुबुद्दीन खां, राजा भगवानदास और कुंवर मानसिंह को बहुत-से शाही सेवकों के साथ राणा को ढूंढ़ने के लिये भेजा और उसी दिन कुलीच खां, ख्वाजा गयासुद्दीन, अली आसफ खां, मीर गयासुद्दीन, अली नकीब ख़ां, तैमूर बदख्शी, मीर अब्दुल गैस, नूरम कुलीच और अन्य कई लोगों को ईडर की ओर भेज कर आदेश दिया कि वहां के विद्रोहियों को समाप्त कर दें।

एक घटना यह हुई कि अकबर को हज करने की इच्छा हुई, परन्तु साम्राज्य के अधिकारियों की प्रार्थना पर उसने अपना विचार त्याग दिया। अकबर को स्पष्ट ज्ञात होता था कि सत्य की खोज करने वालों को यात्रा करनी चाहिये। परन्तु वह इस बात को भी मान गया कि सांसारिक काम भी एक प्रकार की पूजा है।

सुल्तान ख्वाजा नक्शबन्दी को अमीर-ए-हज नियुक्त करके रवाना किया। उसके साथ छः लाख रुपये और बारह हजार खिलतें भेजी गईं और उसको आदेश दिया गया कि वह इनको उचित रूप से बांट दे और उन लोगों को भी बख्सीसें दे जो उसके साथ जाना चाहें। यह भी आदेश हुआ कि उस देश में जो लोग ईश्वर की भक्ति में लगे हुए हैं और कोई व्यवसाय नहीं करते हैं उनकी एक सूची तैयार करे। अकबर चाहता था कि प्रतिवर्ष कोई शिक्षित पुरुष दरबार से उस देश को भेजा जाये जो वहां के निर्धन लोगों की उचित सहायता करे। ख्वाजा नक्शबन्दी के साथ कई प्रकार के लोग थे। विशेषकर ऐसे लोग थे जिनका समय ईश्वर के ध्यान में ही व्यतीत होता था। यात्रियों में शादत यार कोका, शाहख्वाजा, मलिक महमूद आदि मुख्य थे। बादशाह ने आदेश दिया कि जो लोग गोगूंदा और ईडर भेजे गये हैं, वे इन यात्रियों के साथ जायें। यात्रियों का दल हल्दीघाटी के मार्ग से गोगूंदा पहुंचा और पर्वतों की घाटियों को पार करता हुआ पनवाड़ा गया। वहां से कुतुबुद्दीन खां, राजा भगवानदास और दूसरे लोग वापस आकर गोगून्दा चले गये। जब वे गोगूंदा पहुंचे तो राणा फिर छिप गया। जो सेना ईडर भेजी गई थी वह यात्रियों के दल के साथ हर एक मंजिल पर रही। ईडर के पास बहुत-से राजपूत मंदिरों और मकानों में जमकर लड़ने के लिये तैयार हो गये। तब हीरा भान, उमर खां अफगान और हसन खां बहादुर, उनका मुकाबला करने के लिये चले। जब लड़ाई हुई तो बहुत-से शाही सैनिक पीछे हट गये परन्तु बड़े-बड़े सेनानायक खूब लड़े। उमर खां और हसन बहादुर मारे गये। ईडर पर शाही सेना ने कब्जा कर लिया। वहां से यात्रियों का दल गुजरात की ओर रवाना हुआ। उसके साथ तीमूर बदख्शी और कितने ही अन्य अधिकारी रक्षार्थ चले। यह समय समुद्रयात्रा के अनुकूल नहीं था, इसलिये यात्रीदल अहमदाबाद ठहर गया।

एक घटना यह हुई कि बादशाह ने ख्वाजा शाह मनसूर सिराजी को वजीर के पद पर नियुक्त किया। उसका मुजफ्फर खां के साथ झगड़ा हो गया था इसलिए उसको सेवा से पृथक् कर दिया गया था। फिर वह मुनीम खां के पास काम करने लगा। जब बंगाल के मामलों के विषय में दरबार में आया तो उसकी योग्यता प्रकट हुई। जब मुनीम खां की

मृत्यु हो गयी तो राजा टोडरमल हिसाब के मामले में ख्वाजा को कैद कर लिया था परन्तु अकबर ने ख्वाजा को दरबार में बुला लिया था। उसके बाद ख्वाजा का प्रभाव बढ़ने लगा।

एक घटना यह हुई कि जब अकबर का मुकाम मोही (नाथद्वारा के पास) था तो शिहाबुद्दीनअहमद खां, शाह फकरुद्दीन मसहक आदि मालवा के अधिकारी मिलने आये। पाँच बड़े-बड़े अफसर मोही में नियत किये गये और चार मदारिया में रखे गये। इसी प्रकार अन्य स्थानों पर भी वीर पुरुष नियुक्त किये गये। उद्देश्य यह था कि जब राणा प्रताप पर्वतों की घाटियों में से निकल कर आये तो उसको पकड़ा जाये। फिर बासवाड़ा के मार्ग से अकबर ने मालवा की ओर कूच किया।

एक घटना यह हुई कि कुतुबुद्दीन खां और राजा भगवानदास को बुरा भला कहा गया। कारण यह था कि जब शाही सेना के साथ ये लोग राणा के देश में पहुंचे और उसका कोई पता नहीं लगा तो वे शाही आदेश के बिना ही वापस लौट गये। बादशाह कई दिन तक उनसे नहीं मिला। जब उन्होंने अपनी भूल पर पश्चात्ताप किया तो उनको दरबार में बुलाया।

जब बादशाह उदयपुर से होकर जा रहा था तो गुजरात से खबर आई कि कुछ लोगों ने यात्रियों को सताया है। उनको फिरंगियों के थानों के अफसरों के विषय में डराया गया था। बेगमों ने उनको धैर्य दिलाया और शाही अधिकारियों ने भी समझाया परन्तु उनको शान्ति नहीं हुई। इन लोगों के दुःख का निवारण करने के लिए अकबर ने कुलीच खां को, जो गुजरात के कई भागों पर शासन करता था, ईडर से बुलाया और आदेश दिया कि वह समुद्र तट तक जाकर यात्रियों की सहायता करे। कुलीच खां ने बहुत अच्छी सेवा की। बेगमें, सलिमी नामक जहाज में सवार होकर रवाना हो गईं। सुल्तान ख्वाजा और दूसरे अधिकारी इलाही नामक जहाज में गये।

एक घटना यह हुई कि बांसवाड़ा के रावल प्रताप ने डूंगरपुर के रावल आसकर्ण ने दरबार में आकर पश्चात्ताप प्रकट किया, बादशाह ने उन पर कृपा की। मीरजादा अली खां पूर्वी प्रान्तों की लूट से 65 हाथी लाया और उसने उन देशों का आश्चर्य जनक वर्णन किया।

एक घटना यह हुई कि गोगून्दा पर सेना नियुक्त की गई। इस समय बादशाह ने सुना कि राणा फिर पहाड़ियों और घाटियों में जाकर उपद्रव मचा रहा है। राजा भगवन्तदास, कुंवर मानसिंह, मिर्जा खान और कई अनुभवी आदमियों को राणा के देश में भेजा गया।

दूसरी घटना यह हुई कि राजा टोडरमल और इतिमाद खां ख्वाजा सरा ने बंगाल से बांसवाड़ा आकर बादशाह से भेंट की। उन्होंने लूट का माल भेंट किया जिसमें 204 हाथी प्रसिद्ध थे।

एक घटना यह हुई कि रहमान कुली खां कुशबेगी ने हज्जाज से आकर दीपालपुर में बादशाह को सलाम किया। उसने हज्जाज के शरीफों और अन्य अधिकारियों के प्रार्थना-पत्र पेश किये।

डूंगरपुर के राजा ने कुछ दरबारियों के द्वारा प्रार्थना करवाई कि मेरी लड़की को महल में बुला लिया जाये अर्थात् अकबर के साथ उसका विवाह हो जाये तो मेरे रिश्तेदारों को बड़ी सहायता मिलेगी। अकबर ने यह प्रार्थना स्वीकार की और राजा बीरबल तथा राय लूणकर्ण को उस लड़की को लिवा लाने भेजा।

एक घटना यह हुई कि सिरोही और आबूगढ़ जीते गये। इसका संक्षिप्त वृत्तान्त यह है, सिरोही का राजा सुल्तान देवड़ा विद्रोह करने लग गया था। तब अकबर ने राय रायसिंह, सैयद हासिम और अन्य सेवकों को उस देश को जीतने को भेजा। उन्होंने सिरोही राज्य में प्रवेश करके राजा को घेर लिया। उसका दुर्ग बड़ा दृढ़ था। अधिकारियों ने जल्दी नहीं की। राय रायसिंह ने अपने देश से अपने कुटुम्ब को बुला लिया। सिरोही के राजा ने इन लोगों पर मार्ग में आक्रमण किया। उनके साथ रायमल था। उसने और बहुत से राजपूतों ने वीरतापूर्वक लड़ाई लड़ी। दोनों पक्ष के बहुत-से राजपूत मारे गये परन्तु सिरोही का राय हार कर आबूगढ़ को भाग गया। तब सिरोही को साम्राज्य से मिला लिया गया और शाही सेना ने अबूगढ़ की ओर प्रयाण किया। इस स्थान का वास्तविक नाम अर्बुद अचल है जो बिगड़ कर आबू गढ़ बन गया है। लोगों का कहना है कि अर्बुद एक भूत का नाम है जो स्त्री के वेष में प्रकट हुआ करता है और भूले-भटकों को मार गिराता है। अचल, पर्वत को कहते हैं। आबू गढ़ सिरोही के निकट है और गुजरात की ओर अजमेर की सीमा पर स्थित है। यह सात कोस तक फैला हुआ है। इस पर्वत पर राणा ने पिछले समय में एक ऊंचा दुर्ग बनवाया था, उसका मार्ग दुर्गम है। इस पर अच्छे पानी के चश्मे और मीठे पानी के कुयें हैं और इतनी खेती होती है कि दुर्गसेना का निर्वाह हो सके। यहां कई प्रकार के फूल और पौधे हैं और वायु सुखद है। सम्पन्न लोगों ने आत्मोन्नति के लिये यहां मन्दिर बनवाये हैं। यहां का दुर्गम दुर्ग शाही सेना के हाथ में आ गया। सुल्तान देवड़ा सिरोही ने दुर्ग की चाबियां शाही अधिकारियों के सुपुर्द कर दीं। राय रायसिंह ने दुर्ग पर योग्य आदमी नियुक्त कर दिये और सिरोही के राजा के साथ उसने दरबार की ओर कूच किया।

एक घटना यह हुई कि खानदेश का शासक राजा अली खान दक्षिण के दूसरे शासकों के उकसाने से शाही सेवा में शिथिलता करने लगा। वह आज्ञापालन भी नहीं करता था। तब अकबर ने शिहाबुद्दीन अहमद खां के नेतृत्व में सेना भेजी। उसके साथ अन्य कई अधिकारी थे। उनको आदेश दिया गया कि पहले तो अली खान को सत्परामर्श देकर समझाया जाये, फिर भी उसकी नींद न खुले तो तलवार का उपयोग किया जाये।

एक घटना यह हुई कि राजा टोडरमल को गुजरात प्रान्त में भेजा गया। जब अकबर

को यह पता लगा कि वजीर खां की असावधानता से उस देश में गड़बड़ मच रही है तो योग्य और विश्वसनीय लोगों को वहां व्यवस्था जमाने के लिये भेजा गया।

एक घटना यह हुई कि शाबास खां पूर्वी प्रांतों से दीपालपुर आया। उसने अपनी अच्छी सेवा द्वारा सफलता प्राप्त कर ली थी। जब बादशाह को मालूम हुआ कि रोहतास दुर्ग छीन लिया गया है, गजपति हार गया है और शाबास खां ने अन्य कई अच्छी सेवायें की हैं तो आदेश दिया गया कि रोहतास दुर्ग मुहईब अली खां के सुपुर्द करके शाबास खां दरबार में आये। वह दरबार में आया और अकबर ने उस पर बड़ी कृपा की। अकबर चाहता था कि शाही सेना दक्षिण पर अभियान करे। शाबास खां ने आज्ञा का पालन किया और जब बादशाह राजधानी में था, तब आकर मिला।

जब ईडर के राजा ने विद्रोह शुरू कर दिया तो बादशाह ने वहां शाही सेना भेजी और आदेश दिया कि पहले तो राजा को समझाया जाये और यदि वह नहीं माने तब लड़ाई लड़ी जाये। जब कुलीच खां ईडर से गुजरात के बन्दरगाहों पर चला गया तो ईडर के राजा के मन में दुर्भावनायें उत्पन्न होने लगीं। आशा रावल ने उत्साही लोग एकत्र कर लिये और पहाड़ियों से निकल कर वह लड़ने के लिये तैयार हो गया। शाही सेवक उसका मुकाबला करने गए। ख्वाजा गयासुद्दीन अली आसफ खां ने सेना के मध्य भाग का नेतृत्व किया। तीमूर बदख्शी दायें पार्श्व का नायक था और मीर अबुल लेस बायें पार्श्व का नायक था। मिर्जा मुकीम नक्शबन्दी आदि हरावल में थे। सीमाल खां और अन्य लोग घात में बैठ गये। शत्रु दो दल बनाकर तेजी से आया। साहसी राजपूत जोर से लड़े। नूर कुलीज आहत हो गया तो भी लड़ता रहा। मुजफ्फर घोड़े से गिर पड़ा, परन्तु उसको फिर सवार करवा दिया। शाही सेना के हरावल में अव्यवस्था हो गई। मिर्जा मुकीम मारा गया। कुतुब खां की भी मृत्यु हो गई। शत्रु ने खूब युद्ध किया परन्तु उसको भागना पड़ा। शाही सेवक हारते-हारते जीत गये। इसकी खबर सुनकर अकबर ने ईश्वर को धन्यवाद दिया।

***

प्रकरण 35

बाईसवें इलाही संवत का आरम्भ

इस संवत् का आरम्भ 28 मार्च, 1577 को हुआ। इस वर्ष माही बेगम का देहान्त हो गया। यह जैसलमेर के रावल हरराज की दोहिती थी और अकबर की पुत्री थी। अंत:पुर को उसकी मृत्यु पर बड़ा शोक हुआ। अकबर ने इसको धैर्यपूर्वक सहा।

इस वर्ष के अन्त में राय सुर्जन के पुत्र दूदा ने विद्रोह किया तो बूंदी का दुर्ग छीन लिया गया, उसके विरुद्ध एक सेना भेजी गई थी। उसने अच्छा काम नहीं किया था इसीलिए नैन खां कोकलताश को भेजा गया (30 मार्च, 1577) कोकलताश के साथ दूदा का पिता राय सुर्जन और भाई भोज था। इनके अतिरिक्त रामचन्द्र और कर्म सहाय भी थे। थोड़े-से समय में ही बूंदी का दुर्ग जीत लिया गया और दूदा भाग कर पहाड़ियों में चला गया। फिर भोज को बूंदी में नियुक्त करके कोका राय सुर्जन के साथ दरबार के लिए रवाना हुआ। वह एक मंजिल ही गया था कि उसने सुना, बूंदी में फिर उपद्रव हो गया, बात यह थी कि कोका के प्रस्थान करते ही सेना के दुष्ट सैनिकों ने यह खबर फैला दी कि दूदा आ रहा है और लूटमार शुरू कर दी। कोकलताश ने वापस आकर बूंदी में मुकाम किया। उसने राय सुर्जन को दरबार में भेज दिया। तब राय सुर्जन के महल में ठहरा और वहां से फतेहपुर को रवाना हुआ। फतेहपुर में अधिकारियों ने और अन्य लोगों ने उसका स्वागत किया।

कोका ने बूंदी में मुकाम करके ही दूदा के विद्रोह को दबाया था। बहुत-से सिपाहियों ने गड़बड़ शुरू कर दी थी। दूदा ने कुछ लोगों को एकत्र करके ऊंट गर्दन नामक पहाड़ी को अपने विद्रोह का केन्द्र बना लिया था। जैन खां कोका ने अपने वीर सिपाहियों को पहाड़ियों पर चढ़ा दिया तब परस्पर गोलियाँ चलने लगीं, जिसमें दूदा के तीन आदमी मारे गये। फिर कोका जब पहाड़ी की चोटी पर पहुंचा तो जोर की लड़ाई हुई, दूदा के 120 आदमी मारे गये और वह हार गया। तब बूंदी का शासन राय भोज के सुपुर्द कर दिया।

इसी वर्ष राजकोष की व्यवस्था का संशोधन किया गया। सादिक खां ख्वाजा शाह मंसूर और कुछ अन्य ईमानदार और योग्य लोगों को शाही कोष की जांच करने के लिये फतेहपुर से आगरा भेजा। जांच के परिणाम से मालूम हुआ कि कोष के अधिकारी ईमानदार थे।

***

प्रकरण 36

गुजरात विद्रोह-दमन महत्वपूर्ण

इस वर्ष एक घटना यह हुई कि शाहजादा सुल्तान सलीम के शरीर पर फुड़ियां निकल आईं। अकबर ने उसके स्वास्थ्य, प्राप्ति के लिये ईश्वर से प्रार्थना की, फिर एक फोड़ा हो गया तो हकीमों ने कहा कि अब शाहजादा स्वस्थ हो जायेगा। थोड़े-से अरसे में फोड़ा सूख गया और शाहजादा स्वस्थ हो गया।

एक घटना यह हुई कि बाकी खां को निजाम-उल-मुल्क के पास अच्छी सलाह देने के लिये भेजा गया था। शाही आदेश प्राप्त होने पर निजाम ने अपने विश्वसनीय सेवक वफा खां को बाकी खां के साथ शाही दरबार में भेजा। दोनों अकबर के दरबार में आये और अच्छे हाथी और दक्षिण की दुर्लभ वस्तुएं अकबर को भेंट की गईं।

एक घटना यह हुई कि शेख जमाल बख्तियार को किसी ने विष पिला दिया। कारण यह था कि अकबर की उस पर बड़ी कृपा थी इसलिये कई लोग उससे द्वेष करते थे। विषपान करते ही उसकी स्थिति बिगड़ने लगी। तब उसके मित्रों ने जिसका नाम दराक था वही पेय पिया। तो उसकी भी स्थिति बिगड़ने लगी और एक रात और एक दिन उसकी हालत बड़ी नाजुक रही। तब अकबर ने उन दोनों की चिकित्सा करवाई और वे स्वस्थ हो गये।

एक घटना यह हुई कि मुजफ्फर हुसेन मिर्जा का विद्रोह बढ़ने लगा। मुजफ्फर हुसेन की माता गुलरुख सुल्तान बेगम अपनी चतुरता और परिश्रम के द्वारा इस अनुभवहीन लड़के को दक्षिण में ले गई थी इसका उल्लेख किया जा चुका है। उस देश में जाकर मुजफ्फर हुसेन की आशायें बहुत बढ़ गईं और कुछ सलाहकारों की बातों में आकर उसने गुजरात को खाली समझ कर घर की ओर प्रयाण किया। इसकी खबर सुन कर अकबर ने आदेश दिया कि उच्च कर्मचारी खानदेश की विजय से गुजरात के दमन को अधिक महत्वपूर्ण समझे और गुजरात की ओर प्रयाण करें। वे लोग पहले ही खानदेश के अभियान को अपनी क्षमता के बाहर समझते थे और टालटूल कर रहे थे। जब शाही फरमान आया तो बीजागढ़ में कानाफूसी होने लगी। अधिकारियों ने यह अपना सौभाग्य समझा कि उनको खानदेश नहीं जाना पड़ेगा। कुछ अधिकारी अपनी-अपनी जागीरों पर चले गये।

***

प्रकरण 37

वजीर खां और राजा टोडरमल की तलवारों से समरभूमि की कीर्ति

वजीर खां सैनिक-व्यवस्था करने में कुशल नहीं था। वह निर्बलों को सान्त्वना नहीं दे सकता था और दुष्टों को निर्मूल करना नहीं जानता था। मुजफ्फर हुसेन मिर्जा पर विपत्ति आई, उससे पहले ही गुजरात प्रान्त में बादशाह ने राजा टोडरमल को भेज दिया था जो

योग्यता, सेवा और साहस की दृष्टि से एक अद्वितीय पुरुष था। राजा टोडरमल ने वहां पहुंच कर प्रशंसनीय ढंग से शान्ति स्थापित करने का प्रयत्न किया। पहले वह सुल्तानपुर और नंदुरबार गया और वहां उसने उचित व्यवस्था की। फिर उसने सूरत का प्रबन्ध जमाया। तत्पश्चात् भड़ौच, बड़ौदा और चांपानेर का कार्य ठीक करके वह अहमदाबाद आया। जब वह वजीर खां के साथ प्रान्त में न्याय की स्थापना करने में लगा था तब राजद्रोह उठ खड़ा हुआ। मिहर अली कुलाबी जो इब्राहीम हुसेन का सेवक था, अपने जैसे दुष्ट लोगों से मिल गया और वह उस अनुभवशून्य नवयुवक (मुजफ्फर हुसेन मिर्जा) को दक्षिण से गुजरात लाया। उन्होंने सुल्तानपुर के पास राजद्रोह की चिनगारियाँ सुलग गईं। आरिफ और जाहिद के साथी और शरीफ खां के पुत्र स्वमिद्रोही बन कर मेहर अली से मिल गये। जब वह बड़ौदा के समीप पहुंचा तो वहां के दरोगा का साहस भंग हो गया और वह नगर को छोड़कर भाग गया। तब बिना लड़े ही वह नगर हाथ से चला गया। बाज बहादुर सेनासहित बाहर आया, परन्तु अपने सेवकों की अधमता के कारण वह कुछ नहीं कर सका। वजीर खां अहमदाबाद के दुर्ग में छिपने की तैयारी कर रहा था, परन्तु टोडरमल ने आकर स्थिति सुधार दी। वह नगर प्राचीर से बाहर निकल कर लड़ने के लिए तैयार हो गया। उसने बड़ौदे की ओर प्रयाण किया और जब वह वहां से 4 मील के अन्दर डेरे डाले हुए था तो शत्रु का दिल बैठ गया और वह लड़े बिना ही खम्भात की ओर भाग गया। शाही सेना ने उनका पीछा किया। शत्रु फिर साहस करके खम्भात के पास ठहरा और गड़बड़ करने लगा। खालसा, आमिल, सईद हासिम ने बाहर आकर प्रशंसनीय बल का परिचय दिया, परन्तु शत्रु की संख्या बहुत बड़ी थी इसलिये वह छिप गया। जब शाही सेना आई तो शत्रु घेरा छोड़कर जूनागढ़ को भाग गया। फिर अधिकारी लोग दुलाका के ईलाके में आये और रणभूमि में जम गये। वजीर खां ने मध्य भाग का नेतृत्व किया। ख्वाजा याह्यां, नक्शबन्दी, वजीर-उल-मुल्क और अन्य लोग दाहिने पार्श्व में थे। राजा टोडरमल, रूप राय गुजराती, शेख वली, बीपाक दास और कुछ वीर लोग बाईं बाजू पर थे। शाही सेना में कायरता और फूट थी, इसलिए शत्रु ने वापस मुड़कर पैर जमाये। उसका ख्याल था कि जब सेना आमने-सामने आयेगी तो शाही सेना के बहुत-से आदमी उनमें शामिल हो जायेंगे और कुछ भाग जायेंगे। वजीर खां तथा राजा टोडरमल मारे जायेंगे। वे राजा को मारने का सबसे अधिक प्रयास कर रहे थे। मिर्जा वजीर खां के विरुद्ध धीरे-धीरे आगे बढ़ा और मिहर अली अपनी सेना के सर्वोत्तम भाग के साथ राजा टोडरमल के विरुद्ध चला। राजा दृढ़ता से खड़ा रहा। वीर लोगों ने स्वामिभक्ति का परिचय दिया। शत्रु के 18 बड़े-बड़े लोग मारे गये और बड़ी लड़ाई करके शत्रु ने पीठ दिखा दी। उसकी बड़ी लज्जाजनक हार हुई। उसकी दाईं बाजू के सैनिक बिना लड़े ही भाग गये। मध्य भाग की भी यही गति हुई। वजीर खां स्वामिभक्त बना रहा। उसके प्राणों की आहुति होते-होते बची। राजा टोडरमल एकाएक आ पहुंचा और उसके शत्रु को उसने हरा दिया। शत्रु का सारा तानाबाना छिन्न-भिन्न हो गया। बहुत-से लोग मारे गये। बहुत-से पकड़ लिये गये। मुजफ्फर हुसेन मिर्जा कुछ आदमियों के साथ भागकर

जूनागढ़ चला गया। शाही सेना की बहुत बड़ी विजय हुई और लूट का बड़ा माल उसके हाथ में आया। इसकी सूचना उन लोगों ने बादशाह को भेजी और साथ ही अच्छे चुने हुए हाथी भी भेजे। विजय का समाचार सुनकर बादशाह ने ईश्वर को धन्यवाद दिया। इसी समय कन्धार से सुल्तान हुसेन मिर्जा का राजदूत आया। वह मित्रता और परस्पर सेवा को नई करना चाहता था। बादशाह ने उनकी इच्छा पूरी की और उन्हें बिदा कर दिया।

एक घटना यह हुई कि राजा मधुकर ठीक मार्ग पर आ गया। उसने बादशाह की आज्ञा मानना छोड़ दिया था और वह विनाश के मार्ग पर चलने लग गया था। उसकी निद्रा भंग करने के लिये शादिक खां, राजा आसकरण, मोटा राजा, उलूग खां, हब्सी तथा अन्य वीरों को भेजा गया।

एक घटना यह हुई कि रुस्तम खां को अजमेर का शासन करने के लिये भेजा गया। बादशाह ने देखा कि वह न्यायपरायण और प्रजापालक है इसलिये उसके पद में वृद्धि की। सरकार रणथम्भौर उसको जागीर में दिया गया।

एक घटना यह हुई कि राय लूणकरण और राजा बीरबल आये। यह लिखा जा चुका है कि ये दोनों विश्वस्त सेवक दीपालपुर से डूंगरपुर के राजा का सम्मान करने के लिये भेजे गये थे। उन्होंने वापस आकर इस राजा की पुत्री को शाही अन्तःपुर में भेज दिया। राजा लूणकरण के परिवार को बड़ी सहायता दी गई।

एक घटना यह हुई कि शाहरूख मिर्जा के राजदूत आये। उसकी माता खानिम की अकबर के साथ बचपन से ही घनिष्ठता थी। वह मिर्जा सुलेमान की कार्यवाहियों से डरी हुई थी। उसका ख्याल था कि सुलेमान ने न जाने बादशाह पर क्या प्रभाव डाला होगा और उससे शाहरूख मिर्जा के सम्मान की क्षति होगी। अब्दुल रहमान बेग और मिर्जा अशाक ने खानिम और उसके पुत्र की प्रार्थना प्रस्तुत की तो अकबर ने स्नेह और शिष्टता के साथ उसको स्वीकार किया और फिर उनको बिदा कर दिया। इसी समय दक्षिण से हकीम ऐनुल्मुल्क आया। उसको बीजापुर के सुल्तान आदिल खां का पथ-प्रदर्शन करने के लिये भेजा गया था। उसने वापस आकर आदिल खां की प्रार्थना प्रस्तुत की। यह प्रार्थना और बीजापुर की दुर्लभ वस्तुयें लेकर रसीदुल्मुल्क आया था। अकबर ने उसका सम्मान किया।

एक घटना यह हुई कि तुरान के शासक अब्दुल्ला खां एक मित्रता का पत्र और भेंटें लेकर आया। अब्दुल्ला खां अकबर के साथ मित्रता स्थापित करना चाहता था परन्तु अकबर अपने पैतृक प्रदेश को पुनः जीतना चाहता था इसलिये उसने राजदूत की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। बादशाह अर्से से शिविर में था, पहले तो अकबर बाहर था। वह गुजरात के प्रथम अभियान में रहा, फिर सरनाल के वीर कार्य से यह राजदूत अचम्भित हुआ। फिर जब बादशाह विजयी होकर वापस आया तो उत्तर लिखकर राजदूत को वापस भेज दिया। अकबर नहीं चाहता था कि पत्र-व्यवहार चलता रहे, इसलिये इस राजदूत के साथ किसी

को नहीं भेजा। तुरान का शासक चाहता था कि अकबर भारत से ईरान पर अभियान करे और मारन तथा तुरान के संयुक्त प्रयत्न से ईराक, खुरासान और फारस जीत लिए जायें। बादशाह ने इस दूसरे राजदूत के साथ मिर्जा खुलाद को भेजा और उत्तर लिखा कि ईरान का राजवंश पैगम्बर के वंश से सम्बन्धित है। इसलिए ईरान पर अभियान करना उचित नहीं है। इसके अतिरिक्त ईरान के साथ पुरानी मित्रता का सम्बन्ध है। अब्दुल्ला खां के पत्र में ईरान के शासक का उल्लेख सम्मानपूर्वक नहीं किया गया था इसलिए बादशाह ने लिखा कि यह मुनासिब नहीं है।

***

प्रकरण 38

पुनः अजमेर की यात्रा

अकबर प्रतिवर्ष अजमेर की यात्रा किया करता था इसलिये 2 सितम्बर, 1577 को वह घोड़े पर सवार होकर उस पवित्र स्थान की यात्रा के लिये चला। उस दिन वह करोहा ठहरा और रणसंगार हाथी पर सवार हुआ। यह हाथी उस समय मस्त था और अनुभवी लोग भी उसके पास नहीं जा सकते थे परन्तु जब अकबर उस पर सवार हो गया तो दर्शकों को बड़ा ही अचम्भा हुआ।

एक घटना यह हुई कि शेख सलीम फतेहपुरी के दूसरे पुत्र शेख अहमद की मृत्यु हो गई। वह अपने कई उत्तम गुणों के कारण संसार में प्रसिद्ध था। वह किसी की बुराई नहीं करता था और कुव्यवहार को देखकर दुःखी नहीं होता था। उसके चलने-फिरने और बातचीत करने में सरलता थी। इन गुणों के कारण उसको ज्येष्ठ शाहजादे का संरक्षक बनाया गया था। मालवा के युद्ध में उसको ठंड लग गई। उसने सलाह नहीं मानी और वह राजधानी में आ गया। वहाँ उसको पक्षाघात हो गया। इस वर्ष जब बादशाह अजमेर जा रहा था तो उसको सामने लाया गया और वह सिजदा करके चला गया। घर पर पहुंचने पर उसकी मृत्यु हो गई।

एक घटना यह हुई कि सईद हामिद बुखारी को मुल्तान का शासक नियुक्त किया गया। जब वह इस स्थान के लिये रवाना होने लगा तो अकबर ने उसको बतलाया कि असहाय लोगों की रक्षा किस प्रकार करनी चाहिये और दुष्टों को क्या दण्ड देना चाहिए।

एक घटना यह घटी कि जब राजा टोडरमल गुजरात से आया तो बादशाह उससे

अनुग्रहपूर्वक मिला। जब बादशाह का शिविर बसावर में था तो टोडरमल और बहुत-से बड़े-बड़े अधिकारियों ने आकर सिजदा किया। राजा ने अकबर को गुजरात की हजार बातें सुनाईं और बहुत-से विद्रोहियों को सामने उपस्थित किया। उनमें दाऊद बेग अगुवा था, उन सबको प्राण दण्ड दिया गया। टोडरमल ने वजीर के पद का निर्णय किया और अच्छे कानून जारी किये।

***

प्रकरण 39

मुजफ्फर हुसेन मिर्जा द्वारा दुबारा विद्रोह और उसकी विफलता

मिहर अली के दबाव से जो उत्पाती और बेसमझ व्यक्ति था, मुजफ्फर हुसेन मिर्जा ने विद्रोह शुरू कर दिया। जब राजा टोडरमल गुजरात से राजधानी को चला गया तो विद्रोही लोगों ने मिर्जा के बहाने से उत्पात किया। उन्होंने खम्भात के व्यापारियों को सताया और उनकी बहुत-सी सम्पत्ति छीन ली। वजीर खां अहमदाबाद से इस उत्पात का दमन करने के लिये उस जिले की ओर गया। जब वह पीरपुर पहुंचा तो उसने देखा कि बाज बहादुर के साथी लज्जाजनक कार्य कर रहे हैं। इससे वजीर खां का विश्वास हिल गया। बाज बहादुर ने लड़ने के लिये सरनाल से कूच किया, परन्तु उसके अधिकांश सेवक, जो धन के दास थे, उसको छोड़कर शत्रु से जा मिले। यह स्थिति देखकर वजीर खां विचार करने लगा। उसके भी सेवकों में स्वामिद्रोह दिखाई देने लगा तो वह वापस लौटकर अहमदाबाद में जा छिपा, तब विद्रोहियों ने उस नगर को घेर लिया। दुर्ग सेना में भी स्वामिभक्ति दृढ़ नहीं थी, कुछ लोग डगमगा रहे थे। वजीर खां ने कुछ लोगों को बेड़ियां डाल दीं और शेष को युद्ध के लिये प्रोत्साहित किया। आक्रमणकारी रात और दिन हमले करते थे और स्थिति बड़ी विषम हो गई थी। शत्रु दुर्गसेना के साथ षडयंत्र कर रहे थे। सीढ़ियां लगाकर वह प्राचीर पर चढ़ गये और लूटमार करने का विचार करने लगा। परन्तु संयोग से मिहर अली के एक गोली लगी जिससे उसका जीवन समाप्त हो गया। उसकी मृत्यु से विद्रोहियों का उत्साह जाता रहा और वे भागकर नन्दूरबार चले गये। मुजफ्फर हुसेन मिर्जा स्वभाव से अच्छा था इसलिये अकबर ने उस पर कृपा की। इसका वर्णन यथास्थान किया जायेगा।

एक घटना यह हुई कि मुजफ्फर खां दरबार में उपस्थित हुआ। यह लिखा जा चुका है कि उसको दूर भेज दिया गया था। उसने बादशाह को प्रार्थना-पत्र भेजे तो उसको दरबार में बुलाया गया। वह बिहार प्रान्त से आकर हंस महल में अकबर से मिला। उसने पेशकश दी और उस प्रदेश की दुर्लभ वस्तुएं भेंट की तथा 4 लाख रुपये बांटे।

तब अकबर ने उसकी पदवृद्धि की ओर आदेश दिया कि वह साम्राज्य के मामलों को सूक्ष्मता से देखे और न्याय के नियमों का पालन करे। राजा टोडरमल और ख्वाजा शाह मंसूर उससे परामर्श करके काम करे।

इस वर्ष अकबर ने अजमेर की यात्रा की। वह दरगाह में गया और अनुपम मुईनुद्दीन चिश्ती की पूजा की। जो अकबर के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे उनकी अभिलाषाएं पूर्ण हो गईं। इस अवसर पर दरबार के अधिकारियों ने अकबर को सोने से और दूसरी वस्तुओं से तौला [1] और खूब बख्शीशें देकर लोगों को संतुष्ट किया। पहले तो सोना और चांदी वितरित किया गया और फिर अधिकारियों ने आदेशानुसार रुपये दान दिये। इसी दिन मीर खलीफा के पुत्र मुहिब्ब अली खां को सम्मानसूचक ऊंची खिल्लत प्रदान किया और इसको अनुमति दी गई कि वह लोगों के प्रार्थना-पत्र पेश किया करे।

एक घटना यह हुई कि ख्वाजा कलां बेग के पौत्र मुजाहिद बेग की मृत्यु हो गई। उसको अजमेर प्रान्त में मोही का थानेदार नियुक्त किया गया था। कंवर मानसिंह और कितने ही वीर पुरुष पहाड़ियों की कन्दराओं में चले गये थे। उधर के राजपूतों ने शाही जनता की नयी फसलें और लोगों को लूट लिया था। यह खबर सुनकर मुजाहिद बेग बड़ी शीघ्रता से उधर गया परन्तु उसके पास पर्याप्त तैयारी नहीं थी। उसने रुस्तम का-सा साहस दिखाया। परन्तु उसकी मृत्यु हो गई।

अकबर अजमेर दुर्ग की चोटी पर पहुंचा [2], वहाँ के निवासियों को बख्शीशें दीं। सैयद हुसेन खङ्गसवार की कब्र पर ठहर कर उसने फातिहा पढ़ा, उसने दुर्ग की मरम्मत के लिये भी आदेश दिया। यह काम थोड़े ही समय में बहुत भली प्रकार सम्पन्न हो गया। फिर वहाँ से अकबर ने मेड़ता की ओर प्रयाण किया। वहाँ उसने सोचा कि यात्रियों के दल के वास्ते एक नायक नियुक्त करना चाहिये तब उसने मीर अबू तुराब को इस काम के लिये नियुक्त किया। वह शिराज के सलामी सैयदों की जाति का था। इसका पिता मीर गयासुद्दीन सैयद शाह मीर के नाम से प्रसिद्ध था और विज्ञान का अच्छा ज्ञाता था। वह सुल्तान कुतुबुद्दीन के समय में गुजरात आया था। सुल्तान कुतुबुद्दीन सुल्तान अहमद का पौत्र था। अहमदाबाद

1. यह तुला 5 रजब को की गई थी। चांद्र पंचांग के अनुसार उस दिन अकबर का जन्म हुआ था। मुईनुद्दीन का देहान्त 6 रजब को हुआ था। इसलिये बादशाह जन्मप्ति और मुईनुद्दीन का निधन दिन इस वर्ष पास-पास थे।
2. वह तारागढ़ गया था। जहां सैयद हुसेन की कब्र है।

नगर का नाम उसी पर रखा गया था। फिर सैयद शाह मीर वापस अपने देश को लौट गया। फिर सुल्तान महमूद बेगड़ा के समय में जब शाह इस्माइल (इस्माइल प्रथम) ने कुछ उत्पात किया था तो वह फिर गुजरात आया था। उसके दो पुत्र कमालुद्दीन, मीर कुतुबुद्दीन उसके साथ थे। सैयद शाह मीर वहीं बस गया था। वहीं उसकी मृत्यु हुई। मीर कमालुद्दीन के पुत्र मीर अबू तुराब ने गुजरात में अच्छी कीर्ति उपार्जित की और जब गुजरात अकबर के कब्जे में आया तो अकबर ने उस पर कृपा की। जब उसको सेवा के लिये नियुक्त किया गया तो उसे 4,00,000 रु० और दस हजार खिल्लतें हज्जाज के निवासियों के लिये दी गई थीं। हज्जाज के शरीफों के वास्ते एक लाख रुपये और बढ़िया सामान दिया गया था।

एक घटना यह हुई कि गुजरात का शासन शिहाबुद्दीन अहमद खां के सुपुर्द कर दिया गया। अकबर को यह ज्ञात हुआ था कि वजीर खां न्यायपूर्वक कार्य नहीं कर रहा है और गुजरात के लोग बड़े दुखी हैं। इसलिये उसको हटा कर उसका पद उपरोक्त खान को दिया गया था। यह खान परिश्रम, न्याय और प्रजा-प्रेम के लिये प्रसिद्ध था, उसको मालवा से इस पद पर बदला गया था। गुजरात प्रान्त में शान्ति स्थापित करने के लिये कासिम खां, नाहिर खां, सेफ उल मुल्क को नियुक्त किया गया था। यह भी आदेश दिया गया था कि जब नया सूबेदार उस सूबे में पहुंचे तो वजीर खां ईडर की सीमा पर आये और नया सूबेदार वहीं सूबे के कार्य को सम्भाल ले। पिछले शेष अधिकारी सब दरबार में आ जायें।

एक घटना यह हुई कि राणा का दमन करने के लिये सेना भेजी गई। राजा भगवन्तदास, कंवर मानसिंह, पाइन्दा खान मुगल, सैयद कासिम, सैयद राजू, उलूग असद तुर्कमान, कजरा चौहान और अन्य स्वामिभक्त वीरों को इस काम के लिये रवाना किया गया। शाहबाज खां कीर बख्शी को सेनापति नियुक्त करके सारा काम उसके सुपुर्द किया गया।

***

प्रकरण 40

शाहज़ादों की शिक्षा

अकबर ने देखा कि उसके पुत्रों में बुद्धि है और वे सत्य को समझते हैं। इसलिये उनकी अल्पायु पर विचार न करके उनको बड़े-बड़े पद दिये गये। खास घुड़सेना में 12000 सवार थे जो अहदी कहलाते थे। किसी भी अमीर का मनसब 5000 से ऊंचा नहीं था।

अब सुल्तान सलीम को 10000 का मनसबदार बनाया गया और सारी सेना उसके सुपुर्द कर दी। शाहजादा सुल्तान मुराद को 7000 का और शाहजादा सुल्तान दनियाल को 6000 का मनसब दिया गया।

एक घटना यह हुई कि अजमेर प्रान्त में वीर पुरुषों का एक दल भेजा गया। शाहबाज खां का पत्र पढ़ा गया तो विदित हुआ कि घाटियों की देखरेख के लिये कुछ अनुभवी पुरुष चाहिये। तब शेख इब्राहीम फतेहपुरी को कुछ सेना देकर भेजा गया और आदेश दिया गया कि वह लाद लाई में मुकाम करके वहाँ के विद्रोहियों का दमन करे और शाहबाज शां, राणा का दमन करने के लिये भरसक प्रयत्न करे।

***

प्रकरण 41

अकबर का पंजाब को अभियान और धूमकेतु का उदय

जब अजमेर की सब व्यवस्था हो गई तो अकबर ने पंजाब की ओर प्रयाण करने का निश्चय किया और माहारोट में पहुंच कर अपना शिविर लगाया। वह रूपसी के भाई नारायणदास के घर पर गया और 27 को आमेर ठहरा। उसी दिन कुतुब--उल-मुल्क के राजदूतों ने सुन्दर वस्तुएं भेंट की, उनमें एक फतह मुबारक नामक हाथी था।

एक घटना यह हुई कि राजा टोडरमल को निर्देश दिया गया। वह अपने समय में व्यवहारिक बुद्धि के लिये प्रसिद्ध था और अकबर उसको पूर्ण रूप से विश्वसनीय समझता था, परन्तु अन्धविश्वास और धार्मिक कट्टरता की दृष्टि से भी वह मनुष्यों में अग्रगण्य था। उसका नियम यह था कि जब तक वह अपनी मूर्तियों की पूजा न कर लेता था तब तक न वह खाता धा न पीता था न कोई काम करता था। जब शिविर उखाड़ा जा रहा था तो उस हलचल में राजा टोडरमल की मूर्तियां खो गईं तो उसने सोना और खाना छोड़ दिया। अकबर ने दया करके उसको सान्त्वना दी, जिससे उसको कुछ शान्ति हुई और वह अपना कार्य करने लगा।

एक घटना यह हुई कि मूल मनहर नगर के दुर्ग की स्थापना की गई। जब बादशाह आमेर ठहरा हुआ था तो उसने सुना कि निकट ही एक शहर था जो अब लुप्त हो गया है। परन्तु वहाँ एक टीला है जो उसको प्राचीन महानता को प्रकट करता है। बादशाह ने

उस नगर को पुनर्जीवित करने का निश्चय किया और वहाँ दुर्ग की नींव डाली। इस कार्य को पूरा करने के लिये उसने कई अधिकारी नियुक्त किये और थोड़े ही समय में वह पूरा हो गया। उसने उसका नाम राय लुणकरण के पुत्र मनहरदास के नाम पर रखा जो वहाँ का जमींदार था और दुर्ग का नाम मूल मनोहर नगर रखा गया।

एक घटना यह हुई कि सूर्यास्त के पश्चात् पश्चिम में एक धूमकेतू उदय हुआ। इसका संक्षिप्त वृत्तान्त यह है:—5 नवम्बर, 1577 को जब सूर्य वृश्चिक राशि में था तो ये धूमकेतू धनु राशि में पश्चिम की ओर कुछ उत्तर में झुकता हुआ प्रगट हुआ। इसकी बहुत बड़ी पूछ थी। कुछ देशों में यह प्रांत मास तक दिखाई देता रहा। ज्योतिषी लोगों ने जिनको आकाश का ज्ञान है, कहा कि भारतवर्ष के कुछ आबाद हिस्सों में अन्न महंगा होगा। उन्होंने इन स्थानों के नाम भी बताये। उन्होंने यह भी भविष्यवाणी की कि ईरान के शासक की मृत्यु होगी और ईराक तथा खुरासान में उत्पात मचेगा। जैसा उन्होंने कहा वैसा ही हुआ। इसमें किसी प्रकार की कमी या कसर नहीं हुई। उसी समय ईरान से एक कारवां आया जिसमें कुछ योग्य और सत्यवादी लोग थे। उन्होंने अकबर के दरबार में सूचना दी कि शाह तहमास्प की मृत्यु हो गयी, सुल्तान हैदर मारा गया और शक्ति शाह ईस्माईल के हाथ में आ गई। इसका संक्षिप्त वृत्तान्त यह है कि पांच खिरदाद को कजवीन में शाह की मृत्यु हो गई। उसका तीसरा पुत्र सुल्तान हैदर समझता था कि राज्य सत्ता पर उसका अधिकार है। कुछ अमीरों ने उसको प्रोत्साहित किया तो वह अपने को सुरक्षित समझने लगा परन्तु उसकी निर्दय बहन परीखानिम के प्रयत्नों से उसका वध हो गया और स्वर्गीय शाह का द्वितीय पुत्र ईस्माइल मिर्जा जो गत 22 वर्ष से कहका के दुर्ग में कैद था, गद्दी पर बिठा दिया गया। उसने अपने भाइयों और चचेरे भाइयों को समाप्त कर दिया। उसने एक ही दिन में सुल्तान इब्राहीम और अपने ही 11 भाइयों को मरवा डाला। धूमकेतू के उदय से पहले शाह तहमास्प का स्वर्गवास हो गया और उसके उदय के बाद शाह ईस्माइल की मृत्यु हो गई। उसने एक वर्ष और पांच मास रक्तपात में और लज्जा तथा व्यसन में व्यतीत किये। बहुत-से लोग इस बात पर सहमत हैं कि परीखानिम ने उसको विष दिलवाया था। शाह तहमास्प के समय में यह महिला व्यवस्था की केन्द्र थी और उसको आशा थी कि ईस्माइल के समय में और भी अधिक सत्ता उसके हाथ में आ जायेगी, परन्तु ईस्माइल ने दम्भ में आकर उसको अलग कर दिया। उसने यह नहीं सोचा कि इस महिला के प्रयत्नों से ही वह शाह बना है। (इससे आगे तीन पृष्ठों में ईरान का इतिहास है, जिसका अकबर के इतिहास से कोई सम्बन्ध नहीं है।)

एक घटना यह हुई कि दो आजर को कोटपुतली नामक कस्बे के पास अकबर ने मुजफ्फर खां, राजा टोडरमल और ख्वाजा शाह मनसूर परामर्श के लिए बुलाये और साम्राज्य के मामलों पर बातचीत की। बहुत-से मामलों का निर्णय कर दिया गया। सरकार बिहार सुजात खां के और मीर मुईनुल्मुलक तथा अन्य सेवकों के सुपुर्द की गई। अब तक साम्राज्य

की टकसालें चौधरियों के सुपुर्द थीं। अब उनका विभाजन कर दिया गया और सबके ऊपर एक निर्देशक नियुक्त किया, जिसका नाम ख्वाजा अब्दुल समद सीरी कलम था और जो राजधानी फतेहपुर का निवासी था। लाहौर की टकसाल मुजफ्फर खां को, बंगाल की टकसाल राजा टोडरमल को, जौनपुर की ख्वाजा शाह मसूर को और गुजरात की टकसाल ख्वाजा ईमादुद्दीन हुसेन को तथा पटना की टकसाल आसफ खां को दी गई। उसी दिन यह भी आदेश दिया गया कि रुपया सम-चतुर्भुज बनाया जाये। 9 आजर को अकबर नारनौल के कस्बे में पहुंचा और वहाँ शेख निजाम के निवास-स्थान पर गया, जो एक फकीर था और अत्यन्त सादगी से रहता था। अकबर ने देखा कि फटे-पुराने कपड़े पहनने से आध्यात्मिकता प्राप्त नहीं होती।

27 आजर को अकबर राजधानी दिल्ली पहुंचा। सर्व प्रथम उसने बादशाह हुमायूं के कब्र की परिक्रमा की और वहाँ रहने वाले आदमियों को बख्शीशें दीं। फिर वह अन्य कब्रों पर गया और वहां भी बख्शीशें दीं। 3 दाई को वह शेख फरीद बख्शी बेगी के स्थान पर गया। जिसने यमुना नदी के तट पर कई स्थान बना रखे थे। इन पर ईश्वर की प्रार्थना की जाती थी। इन स्थानों पर अकबर अबूल फजल के कहने से ही गया था। 5 दाई को अकबर सराय बावली पहुंचा और वहाँ कुछ दिन शिकार करने में और प्रशासनिक कार्यों में व्यतीत किये।

एक घटना यह हुई कि हाजी हबिबुल्ला वापस आया। यह पहले ही लिखा जा चुका है कि उसको एक बड़ी धनराशि देकर और योग्य कारीगरों के साथ गोआ भेजा गया था। उद्देश्य यह था कि वह गोआ की कला की चीजें और दुर्लभ वस्तुयें भारतवर्ष में लायें। 9 दाई को दरबार में उपस्थित हुआ। उसके साथ कई लोग थे जो ईसाइयों के कपड़े पहने हुए थे और यूरोप के बाजे बजा रहे थे। हबिबुल्ला ने अकबर के सामने गोआ की प्रसिद्ध वस्तुयें प्रस्तुत कीं, जो कारीगर हबीबुल्ला के साथ भेजे गये थे, उन्होंने बताया कि उन्होंने क्या-क्या काम सीखे। उनके कामों को देखकर अकबर ने प्रशंसा की। गोआ के गायकों ने अपने देश के साज पर गाना गाया। आंखें और कान प्रसन्न हो गये और उसी प्रकार मन भी प्रसन्न हुआ। इसी स्थान पर ईडर से ख्वाजा गयासुद्दीन अली आसफ खां आया और उसके भाई के लड़के जफ्फर बेग ने जो ईरान से आया था सिजदा किया।

***

प्रकरण 42

राजा मधुकर की हार

राजा मधुकर ने सम्राट् की आज्ञा मानना छोड़ दिया और विद्रोह करना शुरू कर दिया तो बादशाह ने बहुत बड़ी सेना के साथ सादिक खां को उसके देश पर अभियान करने के लिए भेजा। सादिक खां को आदेश दिया गया कि यदि राजा मधुकर उचित सलाह नहीं माने तो उसको दण्ड दिया जाये। शाही सेना ने नरवर के मार्ग से प्रयाण किया और आदमी भेजकर राजा मधुकर को समझाने का प्रयत्न किया, परन्तु उसने नहीं माना। तब जंगलों को काटती हुई शाही सेना अन्दचां (ओरछा) की ओर चली। जब वह करहरा के दुर्ग के पास पहुंची तो वहाँ परमानदं पंवार जो राजा मधुकर से मिला हुआ था, दुर्ग में छिपा हुआ था। शाही सेना ने दुर्ग को घेर लिया। दुर्गसेना के लोग प्रतिदिन बाहर आकर लड़ते थे और हार जाते थे। अन्त में परमानन्द पंवार ने प्राणदान के लिये याचना की, जो शाही सेवकों ने मंजूर कर ली। इसके पश्चात् वे आगे बढ़े। आगे घना जंगल था, इसलिए एक दिन जंगल काटकर मार्ग बनाया जाता था और दूसरे दिन सेना प्रयाण करती थी। ऐसा करते-करते वे धारा नदी पर पहुंच गये जो उन्दचां के उत्तर में है। राजा मधुकर अपनी सेना के साथ नदी तट पर युद्ध के लिये तैयार हो गया। प्रतिदिन कुछ झमट्टे हो जाया करती थी। फिर शाही सेना ने यह निश्चय किया कि नदी को पार किया जाये। पार करते समय सेना की व्यवस्था नहीं रह सकी। शत्रु की गोलियों के कारण अग्रसेना नदी को पार नहीं कर सकी। तब नदी में हाथी डाले और नदी पार की गई। फिर लड़ाई हुई, जिसमें शत्रु हार गया। शाही सेना ने राजा के महल पर कब्जा कर लिया, परन्तु वन की सघनता के कारण यह पता नहीं लगा कि मधुकर का क्या हुआ। सादिक खां का ख्याल था कि वह कहीं पर छिपा हुआ है और वह पुनः आक्रमण करेगा। उसनें बार-बार शाही सेना की सहायतार्थ आदमी भेजे। फिर मधुकर पीछे से आया और लड़ाई हुई। अधिकांश शाही सेना ने पीठ मोड़ ली, परन्तु उलूंग खां कुछ वीर लोगों के साथ रणभूमि पर डटा रहा। सादिक खां ने आकर विचलित लोगों को प्रोत्साहन दिया। तब अबू मआली और अन्य लोगों में साहस आया, सबने अपने प्राणों का मोह छोड़ कर प्रतिष्ठा की रक्षा करने का निश्चय कर लिया। तब एक जोर की लड़ाई हुई, जिसमें राजा मधुकर का ज्येष्ठ पुत्र होरल देव एक गोली से मारा गया। राजा मधुकर हार गया। उसके 200 राजपूत मारे गये। कुछ शाही लोग भी आहत हुए।

एक घटना यह हुई कि कासिम खां को आगरे का शासन करने के लिए नियुक्त किया गया। आगरे के लोग भारतवर्ष में साहस के लिए प्रसिद्ध हैं। वे अपने प्राणों की चिन्ता नहीं करते। विद्रोह करने के लिए तैयार रहते हैं। बादशाह के सान्निध्य के कारण वे लोग आज्ञा मानने लग गए हैं। इस समय बादशाह दूर था इसलिए उन्होंने सिर उठा लिया था

और निर्बलों को सताने लग गये थे इसलिए बादशाह ने कासिम खां को नियुक्त किया। उसको स्थिति का अच्छा ज्ञान था और बड़ा साहसी पुरुष था। उसने शान्ति स्थापित कर दी थी।

सतगांव में दाऊद का परिवार रहता था। उसकी जाति के मति और जमशेद तथा कितने ही दुष्ट अफगान उधर उपद्रव किया करते थे। जब बंगाल के मध्य में कोई विद्रोही नहीं रहा तो खानजहाँ ने सतगांव की ओर ध्यान दिया। मति ने चाहा कि उसको शाही सेवकों में सम्मिलित कर लिया जाये। तब जमशेद और दूसरे अफगानों ने उससे लड़ाई करना शुरू कर दिया। कई लड़ाइयों में मति हार गया और उसको एकान्त में चला जाना पड़ा। उसकी सम्पत्ति जमशेद और अफगानों के हाथ में आ गई। अब यूसुफ बलूच, समस्त अफगान और मति के कुछ मित्र बदला लेने का मौका देखने लगे। एक दिन जमशेद उन्हें समझाने के लिए उनके मकान पर गया तो उन्होंने उसको मार डाला। इस प्रकार ये सारे शत्रु स्वत: ही समाप्त हो गये। दाऊद की माता ने और उसके परिवार के अन्य लोगों ने रक्षा की प्रार्थना की, जो खानजहां ने मान ली। दाऊद की माता और उसके साथ के लोग शाही दरबार में उपस्थित हो गये।

शेख जमाल से भेंट

इसी मास की 26 तारीख को बादशाह हिसार के समीप शिकार करने के लिए गया। वहाँ मिहर अली सिरदौज के मकान पर जाकर उसको सम्मानित किया। वहाँ से बादशाह हांसी पहुंचा और शेख जमाल की दरगाह में जाकर उसने नमाज पढ़ी। वहां के लोगों को बख्शीशें दीं। शेख जमाल, शेख फरीद, शकरगंज का जानशीन था और अपने वीर के कहने से इस स्थान पर रहकर वह लोगों का मार्गप्रदर्शन किया करता था। जब शेख फरीद किसी मनुष्य में उत्तम गुण देखता था तो उसको किसी जिले में नियुक्त करके आदेश देता था कि नियुक्ति पत्र शेख जमाल को दिखाये। यदि शेख जमाल सहमत हो जाता था तो वह व्यक्ति अपना काम करना शुरू कर देता था, अन्यथा उससे कहा जाता था कि वह और अधिक तप करके उस पद के अनुरूप बने। ऐसा कहा जाता है कि शेख फरीद ने एक व्यक्ति को दिल्ली के लिये नियुक्त किया परन्तु शेख जमाल ने सहमति नहीं दी और बाद में शेख फरीद ने निजामुद्दीन औलिया को उस पद पर नियुक्त कर दिया इससे लोग समझते थे कि अमुक व्यक्ति ईमानदार है और शेख फरीद शकर गंज का पद बड़ा ऊंचा है।

मौलाना मुहम्मद अमीन का आगमन

इस समय मौलाना मुहम्मद अमीन आकर दरबार में उपस्थित हुआ। वह यज्द के एक प्रतिष्ठित कुल का वंशज था और अकदा नामक गांव का निवासी था। शीराज नगर में उसने मौलाना मिर्जा जान से अध्ययन किया था और विविध विषयों का ज्ञान प्राप्त किया

था। मंत्र-तंत्र के ज्ञान के लिये उसने नक्षत्र और ग्रहों का और रमल का भी कुछ संवत् क्रम का अध्ययन किया था। वह बड़ा वाग्मी था। लोगों को उसकी बातों पर विश्वास होता था इसलिये वह अपनी बात का बड़ा मूल्य लेता था। इस समय वह ईराक के शाही दरबार में आया था और दरबारी मित्रों के द्वारा उसकी बादशाह तक गति हो गई थी। अकबर ने उसकी प्रतिष्ठा और बढ़ाई और शाहजादा मुराद के साथ उसको शेख अब्दुन्नवी के मकान पर भेजा। उस समय अब्दुन्नवी बड़ा विद्वान् माना जाता था। उसकी सम्मति के बिना कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं किया जाता था। मुहम्मद अमीन का स्वभाव अच्छा नहीं था। उसकी योग्यता भी बढ़ी-चढ़ी नहीं थी। उसका मुलम्मा तुरन्त ही उतर गया। इसका वर्णन यथास्थान किया जायेगा।

मुहम्मद हुसेन मिर्जा को पकड़ लिया गया

मुहम्मद हुसेन मिर्जा पुनः गुजरात से दक्षिण चला गया था और बरार में उसने कुछ साथी जुटा लिये थे। परन्तु वहां की सेना से उसकी जोरदार लड़ाई हुई और वह हार कर खानदेश चला गया। वहाँ राजा अली खान ने उसको पकड़ कर उसकी लूटमार बंद कर दी। अमीखान ने प्रत्यक्ष में यह प्रगट किया कि मैं दरबार के प्रति स्वामिभक्ति कर रहा हूं। जब बादशाह को इसकी खबर मिली तो उसने मकसूद दम्बा को अलीखान के पास भेजा और आदेश दिया कि मुजफ्फर हुसेन मिर्जा को दरबार में भेजा जाये।

शेख अब्दुन्नवी की प्रतिष्ठा में कमी

अकबर ने शेख अब्दुन्नवी की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ाई थी। साम्राज्य के विद्वानों की व्यवस्था सदैव के लिये उसी के सुपुर्द कर दी थी और फिर राज्य के कीर्तिमान कार्यों के विषय में भी उससे सलाह ली जाने लगी थी। परन्तु झूठा सिक्का दीर्घ काल तक नहीं चलता। विचारशील लोगों को वास्तविकता का पता लग गया और अकबर को ज्ञात हो गया कि शेख चतुर और स्वार्थी व्यक्ति है। जब इसकी जांच करवाई गई तो पता लगा कि लोगों की धारणा ठीक थी।

गोहाना के कस्बे से शेख फरीद बुखारी को आदेश भेजा कि जब बादशाह उधर होकर निकले तो उधर की सयूरगाल के स्वामियों को बादशाह के सामने प्रस्तुत किया जाये, जिससे प्रत्येक की स्थिति का पता लगाया जा सके और प्रत्येक व्यक्ति को जो दिया जा रहा है उसके औचित्य की जाचं की जा सके। तब तुरन्त ही प्रकट हो गया कि धन के लोभ से और सिफारिशों के कारण नियमों का पालन नहीं किया जाता और योग्य या अयोग्य की जांच नहीं होती। अकबर ने अब्दुन्नवी के कार्यों का उदाहरण तो नहीं किया, परन्तु कहा कि विभिन्न कार्यों को एक व्यक्ति नहीं सम्हाल सकता और यह काम ऐसा है कि एक आदमी इस पर नियंत्रण नहीं रख सकता, अतः प्रत्येक प्रान्त में एक उच्चाधिकारी नियुक्त

होना चाहिये। इसी समय पंजाब की सदारत पंजाब के मौलाना अब्दुल्ला सुल्तान पुरी को दी गई और कुछ शिक्षित और बुद्धिमान् लोगों को सूचित किया गया कि वे इस काम के लिये किसी योग्य व्यक्ति का नाम सुझावें।

इस समय अकबर खुनाम पहुंचा, उसने मिर्जा यूसुफ खां को उपाधि प्रदान की और कहा, मेरा हृदय कहता है कि कश्मीर पर शाही सेवकों का कब्जा हो जायेगा। इक्कीस वहमान के दिन अकबर शादी बाल पहुंचा, वहाँ उसने कहा, यदि सामाजिक जीवन का बन्धन मेरे ऊपर नहीं होता तो मैं मांस खाना छोड़ देता, फिर भी अकबर प्रायः शुक्रवार को मांस नहीं खाता था।

9 इसफन्दर माज को लक्खी कियामपुर के पास एक पुल बनाया गया और शाही सेना ने सतलज नदी पार कर ली। इस स्थान के पास ही शाह कुली खां मेहरम ने लाहौर से आकर बादशाह को सिजदा किया। अकबर ने उस पर अनेक कृपाएं कीं।

बलूचिस्तान पर अभियान

बिलूचियों ने बादशाह की आज्ञा मानना बंद कर दिया था, इसलिये उसने मिर्जा यूसुफ खां, शाहकुली खां, मेहरम सईद, हामिद मुहम्मद जमान और अन्य लोगों को उधर की ओर भेजा और आदेश दिया कि पहले तो विद्रोहियों को समझा कर रास्ते पर लाया जाये। यदि यह प्रयास सफल न हो तो शस्त्र प्रयोग किया जाये। 12 इसकंदर माज को बादशाह पाटन (पाकपट्टन) पहुंचा और शेख फरीद शकरगंज से मिलने गया। उसी समय बल्ख से सूफी नासिर और जुखारा से मुल्ला मुश्फीकी आये और अकबर के समक्ष उपस्थित हुए। अकबर ने उनके अध्यात्म ज्ञान की परीक्षा ली।

***

प्रकरण 43

राज्यारोहण के बाद 23 वें इलाही संवत् का आरम्भ

11 मार्च, 1578 को मंगलवार के दिन दूसरे दशक को यह संवत् शुरू हुआ। उस दिन खानपुर के पास रावी नदी पर पुल बनाया गया और शाही सेना उस देश में पहुंची।

इब्राहीम की नियुक्ति

इब्राहीम को संसार का अच्छा ज्ञान था और वह प्रबन्ध-कार्य में निपुण था। आदेश देकर उसको लाडलाई की थानेदारी से बुलाया गया और फतेहपुर सीकरी के प्रान्त का सूबेदार नियुक्त किया।

शुजात खां को मालवा भेजा

यह भी आदेश हुआ कि शाहबुदाग खां, तोलक खां, मुन्नलिब खां और अन्य सैनिक एक होकर इस गड़बड़ को ठीक करें और शुजात खां का साथ दें तथा उसकी आज्ञा मानें।

कुम्भलमेर विजय

इसी वर्ष शाही सेना को कुम्भलमेर पर विजय प्राप्त हुई। यह दुर्गम दुर्ग है और आकाश से बातें करता है। राणा इसी में निवास करता था। जब शाहबाज खां वहां पहुंचा तो उसने राजा भगवन्त दास और कुंवर मानसिंह को वापस दरबार में भेज दिया। उसका ख्याल था कि ये दोनों जमींदार हैं इसलिए राणा को दबाने में देरी हो सकती है। शरीफ खां, गाजी खां और अन्य लोगों के साथ शाहबाज खां इस दुर्ग को जीतने के लिये आगे बढ़ा। पर्वतीय प्रदेश ओर घाटियों को पार करके शाही सेना वहां पहुंच गई। शाहबाज खां ने केलवाड़ा की घाटी पर अधिकार कर लिया। यह स्थिति देखकर दुर्गसेना का साहस बन्द हो गया। 3 या 4 अप्रैल, 1578 को दुर्ग घेर लिया गया। शाही सेना की शक्ति देख कर राणा चुपके से भाग गया। भाग्यवश दुर्ग की एक तोप फट गई, जिससे कितने ही वीर स्वाहा हो गये। दुर्ग द्वार के सामने और मंदिर के सामने खड़े होकर बहुत से राजपूतों ने कड़ा मुकाबला किया और वीरतापूर्वक लड़ते हुए उन्होंने प्राण न्यौछावर कर दिये। शाहबाज खां ने कुम्भलमेर दुर्ग गाजी खां बदख्शी के सुपुर्द करके बांसवाड़ा में राणा का पीछा किया। अगले दिन उसने गोगूंदा पर और मध्य रात्रि में उदयपुर पर कब्जा कर लिया। विजयी लोगों को बड़ी लूट मिली।

इस दुर्ग में एक फकीर रहा करता था। वह राणा के मन्दिर पर चढ़ कर 3 दिन से अजान दिया करता था और शाही सेना के आगमन की घोषणा किया करता था। दुर्गपति चकित होकर उससे इस विषय में प्रश्न किया तो फकीर ने उत्तर दिया, मुझे पिछली रात सूचना मिली है कि आज यह दुर्ग जीत लिया जायेगा। तब दुर्गपति ने उसका वध करवा दिया।

शाही सेना ने चिनाव नदी को पार किया

अकबर पुल के पास चीनियोट पहुंचा। उसकी कुछ सेना ने नदी पार की। उस दिन पुंडरीक नामक एक खास हाथी नदी में बह गया। एक दिन शिकारगाह में बड़े-बड़े ओले

पड़े। परन्तु अकबर को जो पालकी में बैठा हुआ था, कोई कष्ट नहीं हुआ। उसके साथियों की भी कोई क्षति नहीं हुई।

बलूचियों को क्षमा प्रदान

बलूची लोग समझते थे कि हम राजधानी से दूर हैं इसलिये वे विद्रोह किया करते थे। इसलिये अकबर ने आदेश दिया कि पंजाब से कुछ सैनिक अधिकारी बलूचियों के प्रदेश की ओर प्रयाण करके उनको दंड दें। सेना के आगमन से भयभीत होकर बलूचियों ने क्षमा मांगी। वह प्रदान की गई और सेना वापस बुला ली।

सायुरगाल की व्यवस्था

जो जमीनें लोगों को माफी में दी जाती थीं और जिनका भूमिकर नहीं लिया जाता था वे सायुरगाल कहलाती थीं। ऐसी माफियां फकीरों को दी जाती थीं। एक व्यक्ति को एक स्थान पर नहीं, किन्तु कई स्थानों पर ऐसी जमीनें दी जाती थीं। इसलिये कर्मचारी लोग उनको बहुत सताया करते थे। बादशाह ने आदेश दिया कि सायुरगाल को खालसा और जागीर की भूमियों से अलग रखा जाये और एक व्यक्ति की सारी माफी एक ही स्थान पर हो। इस काम के लिये प्रत्येक सरकार में और सूबे में कर्मचारी नियुक्त किये गये।

***

प्रकरण 44

कमारगाह में शिकार द्वारा अकबर का मनोविनोद

22 अप्रैल, 1578 को अकबर ने निश्चय किया कि भेड़ा के समीप शिकार के लिये कमारगाह बनाया जाये। बिहात (झेलम) नदी पार करके उसने अमीरों और अधिकारियों को आदेश दिया कि गिरझक से भेड़ा तक के जंगली पशुओं को 25 कोस के घेरे में लाया जाये। इस काम के लिये इन लोगों ने कितने ही दल बनाये। उसी समय हाजी खां और दूसरे बिलुची सरदार लज्जित होकर सिजदा करने आये और अकबर ने उनको क्षमा कर दिया ओर ईशारा किया कि उनको शिकारगाह में स्थान दिया जाये। फिर अकबर का विचार बदल गया और उसने हजारों पशुओं को मुक्त कर दिया और यह भी आदेश दिया कि कोई मनुष्य किसी पशु को स्पर्श भी न करे। इन्हीं दिनों में अकबर ने अपने बाल

कटवा दिये। पहले उसके बाल लम्बे-लम्बे और सुन्दर थे। उसी दिन बिहात नदी को पार करके वह अपने शिविर में आ गया और उसने आगे जाने का विचार त्याग दिया। उस समय राजा भगवन्तदास और कुंवर मानसिंह अजमेर से नदी के तट पर पहुंचे और उन्होंने सिजदा किया।

इसी समय मिलियम मकानी आई। जब अकबर का शिविर बिहात नदी के तट पर था तो अकबर को सूचित किया गया कि मकानी की पालकी पास ही है और वह मिलने के लिये अति उत्सुक है। अकबर को बड़ी ही प्रसन्नता हुई और उसने मकानी के प्रति आदर प्रकट करने की व्यवस्था करवाई। पहले तो यह आदेश हुआ कि सुल्तान सलीम अनेक अधिकारियों के साथ उससे मिलने के लिये जाये। इसके पश्चात् अकबर घोड़े पर सवार होकर अपनी माता, जिसको वह ईश्वर के समान पूज्य मानता था, मिलने के लिये और उसके प्रति श्रद्धा प्रकट करने चला।

इन्हीं दिनों बंगाल और कोचबिहार (कोच) से भेंटें आईं जब अकबर का शिविर बिहात नदी के निकट लगा हुआ था तो खानजहां के आदमी खबर लाये कि पूर्वी प्रान्तों में शान्ति हो गई है और कोच या कोचबिहार के जमीनदार राजा मल गुसाई ने अधीनता प्रकट कर दी है। पहले तो बंगाल की दुर्गम वस्तुयें जिनमें 54 अच्छे-अच्छे हाथी थे, नजर की गईं और फिर जमीनदार की भेंट प्रस्तुत की गई। परताब-तार-फिरंगी जो बंगाल के बन्दरगाह के व्यापारियों का एक कार्य करता था, आया और अकबर से मिला। उसकी पत्नी नसूरना अकबर के प्रशंसनीय गुणों को देखकर चकित हो गई। इसी समय अब्दुल बाकी तुर्किस्तानी ने भी उपस्थित होकर सिजदा किया। कुछ देर तक इस ईसाई ने अकबर से बात की ओर बतलाया कि ईसाई धर्म से उसने क्या सीखा। बात करने से शीघ्र ही विदित हो गया कि परताब-तर-फिरंगी ने ईसाई धर्म को सूक्ष्म बुद्धि से नहीं समझा है और उसको कुछ ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ।

सकीना बानू बेगम को हकीम मिर्जा के पास भेजा

अकबर को यह विचार आया कि काबुल जाकर हकीम मिर्जा को शिक्षा दे और उसको नींद से जगाये तथा आबुलस्तिान के बखेड़ों को मिटा दे। परन्तु फिर अकबर ने अपने मन में कहा, 'मेरी एकमात्र इच्छा यह है कि मिर्जा जंगलीपन छोड़ दे और शाही कृपा प्राप्त करे। वह अनुभवहीन युवक है।' उसकी संगति अयोग्य आदमियों की है। मेरे जाने पर शायद वह भाग जाये। योग्य और दूरदर्शी लोग छोटे भाई को पुत्रवत् समझते हैं परन्तु लोग यह भी कहते हैं कि कर्तव्यपरायण पुत्र शायद ही कोई हो और भाइयों का मेल तो असम्भव है इसलिये अच्छा यह होगा कि मैं दूर से ही उसको अच्छी सलाह दूं। शायद उसकी निंद्रा भंग हो जाये और वह मेरी आज्ञा मानने लग जाये। इसलिए अकबर ने सकीनाबानू बेगम के द्वारा मिर्जा हकीम से कहलाया कि वह शाहजादा सुल्तान सलीम की पुत्री से विवाह

कर ले। सकीना बानू 19 खुर्दाद को मीर अली खान सिलदौज और मीर अबू ईशाक सफवी के साथ रवाना हुई।

इसी समय शाहरूख मिर्जा के राजदूतों ने बिदा मांगी जो दे दी गई। अब्दुल्ला खां और अबदी ख्वाजा को इसलिए भेजा कि वे बदख्शी लोगों को सान्त्वना दें। यह पहले ही लिखा जा चुका है कि खानिम ने मिर्जा की ओर से चतुर व्यक्तियों को भेजकर बदख्शा के उत्पातों के लिए क्षमा मांगी थी। अकबर ने क्षमा कर दी। यह भी प्रकट किया गया कि जब खनिम दरबार में आयेगी तो बहुत अच्छी खबर मिलेगी।

अनूप तालाब को धन से भरा

यह आदेश दिया गया कि तालाब को धन से भर दिया जाये। फतेहपुर में एक तालाब है जो 20 गज लम्बा और 20 गज चौड़ा तथा 40 गज गहरा है। इसकी फर्श और दीवार लाल पत्थर की बनी हुई है और अच्छे जानकार लोग इसकी प्रशंसा करते हैं। पंजाब पर अभियान करने से अकबर ने कहा था कि पहले तो दर्शक लोग इस तालाब के निर्मल जल को देख कर प्रसन्न हुआ करते थे। अब इसको ऊपर तक मुद्राओं से भर देना चाहिये। तब लोगों को बड़े कोष दिखाई देंगे और गरीब लोग दुःख से मुक्त हो जायेंगे। तब कर्मचारियों ने तालाब को भरना चालू किया। राजा टोडरमल ने सूचना दी कि बादशाह की वापसी तक तालाब को भर दिया जायेगा। इसके लिए 17 करोड़ दाम गिनकर रख दिये गये हैं। ये दाम इसको भरने के लिए पर्याप्त होंगे।

दूदा और राणा

शाबास खां को अजमेर मुबा में इसलिए भेजा गया था कि वह वहाँ के विद्रोहियों का दमन करे। उसने बहुत अच्छा काम किया और कितने ही विद्रोहियों को मार डाला। उनमें से कुछ ने अधीनता प्रकट करके अपने प्राणों की रक्षा की। राणा अपने निवास-स्थान को छोड़कर पहाड़ियों में भाग गया तो उसके महल को लूट लिया गया। दूदा, विद्रोह के लिए प्रसिद्ध था, अब वह पश्चात्ताप करके अधीन हो गया था। शाबास खां उसको अपने साथ दरबार में लाया। तीहारा नामक गांव में उसने बादशाह के सामने सिजदा किया। अकबर ने उस पर शाहाना कृपा की। उसकी दयनीय दशा की ओर बादशाह का ध्यान आकर्षित किया गया तो उसको मिलने की इजाजत दे दी गई। उसका अपराध क्षमा कर दिया गया। जब अकबर ने पंजाब से राजधानी की ओर प्रयाण किया तो दूदा भाग गया। इस मास की 9 तारीख को कहलूर नामक कस्बे के समीप चिनाव नदी पर पुल बनाने का आदेश हुआ और 21 तारीख को सेना ने रावी नदी पार की। उस स्थान से कश्मीर के शासक के पास राजदूत भेजे गये। वहाँ के शासक अली खान ने अकबर की अधीनता अब तक स्वीकार नहीं की थी, इसलिए 24 तारीख को मुल्ला ईशकी गजनवी को और काजी सदरुद्दीन लाहौरी

को यह आदेश देकर भेजा कि वे कश्मीर के शासक को आज्ञापालन के मार्ग पर लाये, दूसरे दिन अकबर कालानूर नगर के बाग में ठहरा और वहाँ उसने दावत दी। 4 अमरदाद पुल द्वारा खोखरावल के पास बिया या व्यास नदी को पार किया और वहाँ से सैयद खां को पंजाब की सरकार के पास भेजा। जब अकबर इस प्रान्त में पहुंचा तो लोगों ने शिकायत की कि शाह कुली महरम अत्याचारियों को दण्ड नहीं देता है इसलिए प्रशासन की स्थिति ठीक नहीं है। अकबर ने शाह कुली महरम को फटकारा और लोगों को शान्त किया। अकबर ने सईद खां को लाहौर का प्रशासन सौंपकर कई हिदायतें कीं। गरीबों के वास्ते सैयद खां को बहुत-सा रुपया भी दिया गया। अकबर ने राजा टोडरमल से कहा कि पंजाब के कई कस्बों और गांवों में अफगान बसे हुए हैं, जिनमें कुछ अपने को सौदागर या किसान बतलाते हैं, परन्तु ये लोग बदमाश हैं। ये निर्बल लोगों को सताते हैं। अकबर चाहता था कि इन अफगानों को तितर-बितर कर दिया जाये। इस निमित्त उसने विविध सूबों में आदमी भेजे और उन्हें आदेश दिया कि अफगान लोगों को अत्याचार न करने दिया जाये। राजा बीरबल और सैयद मुजफ्फर को जालंधर इसलिए भेजा गया कि वह कुछ दिन दूर रहकर नि:सहाय लोगों के प्रति सहानुभूति का व्यवहार करे और जो व्यक्ति आर्थिक सहायता चाहता है उसको दरबार में भेजे।

मुहिब अली खां को जो मीर खलीफा का पुत्र था, दिल्ली का हाकीम नियत किया गया। वह बचपन से ही अकबर का बुद्धिमान् साथी था। अकबर ने उसको चार पद बतलाये (1) एक वीर अरजी, (2) दरबार-ए-शबीस्तान, (3) किसी दुरस्त सूबे की सूबेदारी, (4) दिल्ली की सूबेदारी मुहिब अली ने चतुर्थ पद पसन्द किया।

26 तारीख को बादशाह ने शतजल नदी पर नावों का पुल बनाया और सेना पार उतरी। उसी दिन हाजी खां और दूसरे बिलूची सरदार भाग गये। तब कवंर मानसिंह, जैन खां, कोका ख्वाजा, गयासुद्दीन, अली आसफ खां को उनका पीछा करने के लिये भेजा गया। उनको सूचना विलम्ब से मिली, इसलिये वे बलूचियों को नहीं पकड़ सके। बुराई करने वालों ने कहा कि उन्होंने तलाश करने में जल्दी नहीं की, इसलिये कुछ दिन तक बादशाह ने उनको दरबार में नहीं आने दिया।

जब अकबर फतेहपुर पहुंचा तो उसने राजा टोडरमल को कछावा परिवार के अफसरों की जागीरों की व्यवस्था करने के लिये भेजा। उसको यह भी आदेश दिया गया कि उत्तर के पहाड़ी देश के कुछ शासक आज्ञा नहीं मानते हैं। यदि सलाह देने से अधीनता स्वीकार कर लें तो बहुत अच्छा। अन्यथा उनका उच्छेद कर दिया जायेगा। थोड़े-से समय में ही राजा टोडरमल ने आज्ञा का पालन कर दिया। बहुत-से पहाड़ी राजाओं ने लज्जित होकर क्षमा मांग ली। जब बादशाह राजधानी में पहुंचा तो राजा भगवानदास और टोडरमल ने आकर सिजदा किया।

जब मालवा पर अभियान हुआ था तो दीपालपुर यह खबर पहुंची थी कि सैयद मुहम्मद मीर आदिल की मृत्यु हो गई। तब अकबर ने ख्वाजा सरा इतिमाद खां को वहाँ भेजा। तब इतिमाद सेना को शेहवान ले गया और वहाँ सफलता प्राप्त करके वह वापस लौट गया।

बादशाह जलमार्ग से चला और सेना स्थलमार्ग से चली। बादशाह के साथ कुछ दरबारी थे। वह सुल्तानपुर खिजराबाद की थाह से रवाना हुआ। 19 तारीख को वह दिल्ली के हवाली शहर में पहुंच गया और बादशाह हुमायूं के मकबरे पर गया। फिर वह अपनी नाव में चला गया और उसको एक स्थान पर ठहरा दिया। लोगों ने माल के अफसरों की शिकायत की तो मुजफ्फर खां और शाह मनसूर को उनके प्रति न्याय करने के लिये वहीं ठहरा दिया।

***

प्रकरण 45

बादशाह की अजमेर यात्रा और राजधानी को वापसी

अकबर ने यह नियम बना लिया था कि रजब मास के आरंभ में पवित्र दरगाह की यात्रा की जाये और बख्शीशें बांटी जायें। इस प्रकार से वह ईश्वर की भक्ति करता था। पहले तो उसने यह सोचा था कि ईश्वर की भक्ति किसी विशेष स्थान पर ही नहीं होती इसलिये इस प्रथा को छोड़ देना चाहिये परन्तु एकाएक ही उसको ख्याल आया कि अजमेर जाकर वापस आना चाहिये इसलिये वह मथुरा के पास से एक घोड़े पर सवार होकर चला। उसके साथ कुछ घनिष्ठ साथी थे। उसी दिन उसने ख्वाजा फतहउल्ला को आदेश दिया कि गुजरात जाकर कुतुबुद्दीन को दरबार में लाये। मिर्जा कोका सब कामों से निवृत्त हो गया था। परन्तु अकबर की उस पर कृपा थी। इसलिये उसको दरबार में बुलाया गया। परन्तु कोका ने अपना विचार नहीं बदला इसलिये कोका के चाचा कुतुबुद्दीन खां को जो उसके पिता के समान था, बुलाया। ख्याल यह था कि अपने चाचा की सलाह से कोका ठीक मार्ग पर आ जायेगा। बादशाह ने इतनी शीघ्रता से यात्रा की कि 4 दिन में 100 कोस की दूरी पार कर ली। पहले दिन वह हाजीपुर कस्बे में दाउद के मकान में ठहरा। अगले दिन मूलमनोहर नगर और उसके पश्चात् सांभर पहुंचा।

प्रति दिन शाहजादों के लिए गायें इकट्ठी की जाती थीं। उनकी माताओं और प्रपिताओं को सन्तुष्ट कर ले। बादशाह शाहजादों को अपने साथ लाया था। जब बादशाह मूलमनोहर नगर से आगे निकल गया तो मुझको और मेरे बड़े भाई शेख अबू फैजफैजी को गायें इकट्ठी करने को कहा गया। इस मास के आरम्भ में मेरा नेक भाई बादशाह के साथ-साथ चलता था और प्रगल्भता के साथ उससे बातें करता था, इसलिये गायों का संग्रह केवल मुझ पर ही, जो अनुभवशून्य था आ पड़ा। मैंने जहाँ भी गायों की तलाश की वहीं उत्पात हुए। बहुत-से लोगों ने तो यह सोचा था कि बादशाह इस मार्ग से नहीं जायेगा। फिर मैं एक छोटी-सी पहाड़ी पर पहुंचा, जहाँ मैंने कई गायें देखीं, वह स्वतः ही एकत्र हो गई, उनमें से दो अलग हो गईं। उन दो के पीछे-पीछे 20 गायें और चलने लगीं तब मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।

27 शहरीयार को बादशाह अजमेर पहुंचा, उसने दरगाह की परिक्रमा की और प्रत्याशी लोगों की अभिलाषाएं पूरी की। दूसरे दिन अर्द्धरात्रि के पश्चात् 9 साथियों सहित बादशाह घोड़े पर सवार होकर राजधानी के लिए रवाना हुआ। सबने 2 दिन में 120 कोस की यात्रा की (मास के अन्त में सब राजधानी पहुंच गये)।

गुजरात से शाही सेवकों ने खबर भेजी कि बेगमें समुद्र के खतरों को पार करके गुजरात आ पहुंची हैं। जब स्थलयात्रा की तैयारी हो जायेगी तब वे बादशाह से मिलने के लिए रवाना होंगी। इस खबर से अकबर को बड़ा हर्ष हुआ। उसने शिहाबुद्दीन अहमद खां को आदेश भेजा कि महिलाओं को शीघ्र ही फतेहपुर सीकरी भेजा जाये।

***

प्रकरण 46

बादशाह की उज्वल बुद्धि के कारण इबादत खाना के प्रकाश में वृद्धि

जब अकबर फतेहपुर सीकरी में था तो पिछली संस्थाओं को पुनर्जीवित किया गया और बृहस्पतिवार की रातों को बादशाह इबादतखाने में आने लगा। 3 अक्टूबर, 1578 को वहां विशेष सभा हुई और ज्ञानचर्चा हुई। उसमें बादशाह की सहिष्णुता और योग्यता प्रगट हुई। इस सभा में सूफी, दार्शनिक वक्ता, विधि ज्ञाता, सुन्नी, शिया, ब्राह्मण, जाति, सिइडा, चारवाक, ईसाई, यहूदी, सानी (ईसाइयों का एक सम्प्रदाय), पारसी और अन्य लोग

सम्मिलित हुए। बादशाह ने प्रधानता की। सबने निर्भय होकर अपने मतों का प्रतिपादन किया। उन्होंने चिन्तन और गहनता प्रकट की। दम्भी और लड़ाकू लोगों ने संकुचित विचार प्रकट किये। बादशाह का दरबार सत्य की शोध का दरबार बन गया। इसमें प्रत्येक धर्म और सम्प्रदाय के अनुयायी सम्मिलित थे। जिन लोगों पर बुद्धि का केवल कलेवर था वह टूट गया। कहर उलेमा जो अपने को बड़े दार्शनिक समझते थे, उनकी स्थिति कठिन हो गई। अब उनका कलेवर जाता रहा। एक दिन जब इबादतखाना में सभा हुई तो रेडिफ नामक एक ईसाई पादरी ने ज्ञानचर्चा की। कुछ झूठे कट्टर पंथी उससे उत्तर देने के लिये आगे बढ़े। उन्होंने बाइबिल की बुराई की। तब पादरी ने कहा, ''मुझे खेद है कि इस प्रकार की बातें सच्ची मानी जाती हैं। यदि हमारी धर्म पुस्तक के विषय में ऐसे विचार हैं और यह लोग कुरान को ईश्वर का वाक्य मानते हैं तो यह उचित होगा कि बहुत सारी आग जलाई जाये, फिर हम अपने हाथ में बाइबिल लें और उलेमा अपने हाथ में कुरान ले और सत्य की परीक्षा के लिये हम सब आग में प्रवेश करें। जो बच जाये उसका धर्म सत्य माना जाये।'' तब उलेमा डगमगाने लगे और कट्टरता और लड़ाई की बातें करने लगे। इससे अकबर की शान्त आत्मा को अप्रसन्नता हुई और उसने इस ज्ञानसभा में अपने विचार प्रकट किये और बड़ी गहन और सूक्ष्म बातें कहीं। उसने कहा, ''अधिकांश लोग बाहर अच्छे और भीतर बुरे होते हैं और समझते हैं कि बाहरी दिखावे से या मुसलमान धर्म की केवल बातें करने से काम चल जायेगा। आंतरिक विश्वास की आवश्यकता नहीं है इसलिये हमने त्रास और बल के द्वारा बहुत-से हिन्दूओं को अपने पूर्वजों के दल में सम्मिलित किया, अब सत्य के प्रकाश से हमारी आत्मा प्रकाशित हो गई है और यह स्पष्ट हो गया कि संसार में अनेक मत हैं। लोगों की बुद्धि अन्धकारमय है, उनमें बड़ा दम्भ है। बुद्धि पर कई दल जमे हुए हैं। सम्प्रदाय वही लाभदायक है जो बुद्धिसंगत हो। कलमा पढ़ने से और खतना करवाने से सिजदा करने से ईश्वर नहीं मिलता।'' उसने कहा, हमने पुराने नियमों के अनुसार और धर्म के विषय में हमारे हृदय में ज्ञान उत्पन्न हुआ उसने पहले जो कुछ किया, उसके लिये हम दोषी हैं। उसने विद्वान् ईसाइयों से कहा, आपके धर्म में स्त्रियों का आदर होता है और एक पत्नी से अधिक की इजाजत नहीं है परन्तु आपकी स्त्रियों में इतनी पतिपरायणता और आत्मबलिदान की भावना नहीं है। (जितनी भारत में है) यह असाधारण बात है कि हिन्दू धर्म में यह गुण मिलते हैं, यहाँ अगणित उपपत्नियां होती हैं, कई की उपेक्षा की जाती है और कई की कदर नहीं होती। वह एकान्त में, किन्तु सच्चरित्रता के साथ अपना जीवन बिताती है, इतनी कटुता होते हुए भी वे स्नेह के दीपक हैं। इन विचारों को सुनकर उपस्थित लोग चुप हो गये। उनको बड़ा आश्चर्य हुआ।

अकबर की दिनचर्या

अकबर अपने समय का बड़ा मूल्य समझता था। वह थोड़े-से समय को भी सुस्ती में या व्यर्थ नष्ट नहीं करता था। जब वह सोकर उठता था, तो वह सब ओर से अपना

ध्यान हटा कर ईश्वर का स्मरण करता था। भगवान् को धन्यवाद देकर अपना कार्य शुरू करता था। ईश्वर की प्रार्थना में वह 5 घड़ी से कम समय नहीं लगाता। फिर वह स्नान आदि से निवृत्त होकर वस्त्र धारण करता था, इसमें 3 घड़ी से अधिक समय नहीं लगता। तत्पश्चात् वह दरबार में बैठता था। उत्पीड़ित लोगों की प्रार्थनायें सुनता था। वह प्रमाण या शपथ पर भरोसा नहीं करता था। वह लोगों की बातों से, आकृति से सत्य की खोज करता था। इस काम में वह डेढ़ पहर लगाता था। फिर वह भोजन करता था और इसमें दो घड़ी से अधिक समय नहीं लगाता था। तत्पश्चात् वह हाथियों, घोड़ों, ऊंटों तथा खच्चरों को देखता था। उनके चारे और दाने पर ध्यान देता था और उनकी देखभाल को देखता था। इस काम के लिये वह 4 घड़ी दिया करता था। वह जनाने में दोपहर व्यतीत करता था और वहीं महिलाओं की प्रार्थनायें सुनता था। वह सब स्त्रियों को बराबर समझता था। वह ढ़ाई पहर तक सोता था, इसको स्वास्थ्य के लिये आवश्यक मानता था।

राजकोष की व्यवस्था

कुछ लोगों ने दुर्भावनावश बादशाह से शिकायत की कि कोषाध्यक्ष बेईमान हो गये हैं और धोखा देते हैं इसलिये बादशाह ने मुजफ्फर खां, ख्वाजा शाह, मनसूर कासिम खां और कुछ अन्य अनुभवी और बुद्धिमान् लोगों को इसकी जांच करने के लिये नियुक्त किया। उन्होंने शीघ्र ही राजकोष को देखा। धनराशि की मात्रा की जांच की तो विदित हुआ कि शिकायतें सत्य नहीं थीं।

अनूप तालाब का कोष खोला

यह लिखा जा चुका है कि अनूप तालाब को विविध प्रकार की मुद्राओं से भरने का आदेश दिया गया था। जब उसको ऊपर तक पूरा भर दिया गया तो अक्टूबर, 1578 के आरम्भ में अकबर ने तालाब के तट पर बैठ कर बख्शीशें देना शुरू किया। पहले उसने ईश्वर की प्रार्थना की और फिर उसमें से एक-एक मोहर, रुपया और दाम निकाले। जो बादशाह के पास बुलाये गये थे उनको इतना ही धन दिया। इस पुस्तक के लेखक पर भी कृपा की गई। तत्पश्चात् लोगों के झुण्ड आये। सब को मुट्ठी भर या झोली भर कर बख्शीशें दी गईं। उसने लोगों से कहा कि यह शाही बख्शीश एक प्रकार की ताबीज है। यह प्रण करो कि जो कुछ तुम संग्रह करोगे उसका एक विशेष अंश निर्धनों को दोगे।

खानजहां ने बंगाल की खबर भेजी

बंगाल में शान्ति स्थापित हो जाने के बाद भी इब्राहीम नारल और करीम दाद मुसाजाई भाटी मुल्क में गड़बड़ करने का मौका देखा करते थे। वहाँ के जीमनदार का समय विद्रोह करने में ही व्यतीत होता था। तब सेना नायक शाह बर्दी ने भी विद्रोह कर दिया। तब खानजहां वहाँ सेना ले गया। गवास नामक कस्बे के पास दाऊद की माता नौलखां और

उसके आश्रित लोग तथा महमूद खां खास खेल जो मति कहलाता था, अधीनता प्रकट करने के लिये भेंटें लाये। फिर नौलखां और मति में मतभेद हो गया। खानजहां ने उसका वध करवा दिया। उसने एक धोखे का आरोप लगाया था। उसका यह दण्ड था। शाह बर्दी आज्ञा नहीं मानता था और इधर-उधर घूमता-फिरता था। अब वह स्वामिभक्त बन गया। जब भावल नामक कस्बे के पास शाही सेना का शिविर लग गया तो इब्राहीम नारल, करीमदाद और दूसरे अफगानों ने आकर आज्ञापालन का प्रस्ताव किया और मेल करना चाहा तथापि ईसा आज्ञा भंग करता रहा। उसके विरुद्ध शाह बर्दी और मुहम्मद कुली के नेतृत्व में एक सेना भेजी गई। जो कियारा सुन्दर नदी के द्वारा गई और कस्ताल की सीमा पर एक जोर की लड़ाई हुई जिसमें ईसा हार कर भाग गया। शाही योद्धाओं के हाथ में लूट का बड़ा माल आया। फिर मजलिस दिलावर और मजलिस प्रताप जो उधर के जमीनदार थे, नावों में आदमियों को लेकर आये और विद्रोह करने लगे। तब शाही सैनिकों का उत्साह भंग हो गया और वे भागने लगे। इस मुठभेड़ में कुछ शत्रु भी नावें छोड़कर भाग गये, महमूद कुली ने शत्रु की नावों पर आक्रमण किया परन्तु वह बन्दी बना लिया गया। फिर एक विचित्र बात हुई। तिला गाजी नामक एक जमीनदार ने आकर बड़ा साहस दिखाया। तब निराशा में विजय का प्रकाश दिखाई देने लगा। शत्रु को निराशा होने लगी। इब्राहीम नारल ने अपने पुत्र को अपने देश के सुन्दर पदार्थ लेकर भेजा और उसने रक्षा के लिये प्रार्थना की। खां जहां ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। वहां से खां जहां सीहतपुर गया जो उसने टांडा के निकट स्थापित किया था। टांडा से उसने दरबार में खबर भेजी।

एक बलुची के 25 बच्चे

एक बलुची जिसके एक ही स्त्री से 25 बच्चे थे, दरबार में आया और उसने निवेदन किया, यह स्त्री बड़ी नेक है परन्तु बच्चें की विपुलता के कारण यह मेरे लिये हराम हो गई है। मेरे लिये क्या उपाय है और मेरे दुःख का क्या इलाज है। अकबर ने उसको सान्त्वना दी और कहा कि लोगों के कहने में कोई सत्य नहीं है। यह बात यूंही लोगों ने बना ली है। यदि किसी स्त्री के इतने बच्चे हैं तो यह तो पति और पत्नी दोनों के लिये प्रतिष्ठा का कारण है। इस हेतु स्त्री को हराम नहीं मानना चाहिये, यह तुम्हारा पुरुषार्थ है और तुम्हारी स्त्री की उर्वरता है।

बख्शू कव्वाल

इस कव्वाल ने अकबर के सामने बड़े सुन्दर ढंग से दो गजलें गाईं। अकबर जानता है कि अनेक देवों में एक देव है अर्थात् विभिन्नता में भी एकता है। गजल सुनने से अकबर का चेहरा आध्यात्मिक ज्योति से चमकने लगा और वह भक्ति में विभोर हो गया। जब उसकी स्थिति साम्य हुई तो उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया और गाने वाले की झोली बढ़ियां मुद्राओं से भर दी।

मिर्जा अजीज कोकलताश

मिर्जा अजीज कोकलताश एकान्त में से बाहर आया। मूर्ख चाटूकारों की संगति से और यौवन के उफान से उसमें दुरभिलाषायें जाग्रत् हो गई थीं। अत: न्यायकारी बादशाह ने उसकी ढ्योढ़ी बन्द कर दी थी। वह चाहता था कि कोकलताश की बुद्धि में वृद्धि हो। जब उसके मुख पर पश्चात्ताप के चिन्ह दिखाई देने लगे तो उसको बुलाया गया और उस पर कृपा की गई तो वह बादशाह की सेवा करने लगा।

राजा मधुकर

राजा मधुकर दरबार में उपस्थित हुआ। यह लिखा जा चुका है कि उसने युद्ध किया था और वह हार गया था फिर वह लज्जित होकर अपने दिन काट रहा था। शादिक खां ने बुद्धिमानी करके उसी देश में अपने डेरे लगा दिये। जब सेना के दबाव से राजा की स्थिति कठिन हो गई तो उसको नम्र और विनीत होना पड़ा। उसने अनुनय और विनय की और अपनी भूलों के लिये बहाने किये। अधिकारियों ने उत्तर दिया कि यदि वह युद्ध नहीं करता और अधीनता प्रकट करता तो वे उसकी प्रार्थना सुन सकते थे। अब तो इस विषय में बादशाह से निवेदन किया जायेगा। राजा स्वयं भी अपने योग्य आदमियों को भेजकर दरबारियों को प्रभावित कर सकता है। तदनुसार उसने अपने भाई के पुत्र सोमचन्द्र को भेटों के साथ दरबार में भेजा। ये लोग बादशाह से भेरा में मिले तो उसने उन पर दया की। जब राजा मधुकर को क्षमाप्रदान का समाचार मिला तो वह अपने कर्मचारियों के साथ दरबार में उपस्थित होने के लिये रवाना हो गया। 21 आबान को शादिक खां और दूसरे अधिकारियों ने आकर सिजदा किया। राजा ने भी अधीनता प्रकट की। अकबंर ने अपने वचन का पालन किया और उस पर अनेक कृपायें कीं।

मुजफ्फर हुसेन मिर्जा का बेड़ियां पहने हुए दरबार में आना

यह लिखा जा चुका है कि मुहम्मद हुसेन मिर्जा ने गुजरात में विद्रोह किया था और फिर वह भटकता हुआ खानदेश चला गया था। अकबर ने कृपा करके उसको दरबार में ले आने के लिए मकसूद दम्बा को भेजा था। उस देश के शासक ने मिर्जा को समर्पित करने में विलम्ब किया और अनोखी शर्त उपस्थित की। उस समय शाही सेना पंजाब में थी इसलिये इस शासक में ऐसी दुर्भावनायें पैदा हो गई थीं। फिर कुतुबुद्दीन खां ने ख्वाजगी फतहउल्ला को भेजकर उस शासक को समझाया। अब यह भी खबर आ गई थी कि बादशाह राजधानी को वापस लौट रहा है। अब उस शासक ने अनुचित विचार त्याग दिये और मिर्जा को शाही सेवकों के साथ दरबार में भेज दिया। मुत्तलिब खां और मालवा के कुछ अधिकारियों को उसके साथ भेजा। 27 आजार को मिर्जा दरबार में पेश किया गया। बादशाह ने उसको एक आदमी के हवाले कर दिया। थोड़े समय में ही मिर्जा का व्यवहार सुधर गया तो उसके अपराध क्षमा कर दिये गये। दूसरे दिन कुतुबुद्दीन खां ने गुजरात से

आकर सिजदा किया। लगभग इसी समय राजा भगवन्तदास, जगन्नाथ राजा, गोपाल, जगमल पंवार और कुछ अन्य परिश्रमी लोगों को पंजाब भेजा गया। प्रत्येक को एक घोड़ा और एक खिल्लत बख्सी गई और उनसे कहा गया कि सईद खां की सलाह मानें और प्रान्त के प्रशासन में सुस्ती न करें।

शाहबाज खां को सूबा अजमेर में भेजा

जब यह विदित हुआ कि सूबा अजमेर में राणा उत्पात कर रहा है तो गाजी खां, मुहम्मद हुसेन, शेख तैमूर बदख्शी, मीर जादा अली खां और कितने ही अन्य लोगों को चार दाई के दिन शाहबाज खां के नेतृत्व में इसलिये रवाना किया गया कि राणा को समझा-बुझा कर अच्छी सेवा में लगाया जाये और यदि वह न समझे तो शस्त्र बल से उसको नष्ट कर दिया जाये। उनके साथ बड़ी धनराशि भेजी गई। थोड़े-से समय में ही राणा भाग गया जिससे लोगों को बड़ी शान्ति हुई।

सरायों का निर्माण

बादशाह ने दया करके कारीगरों को आदेश दिया कि राजधानी के विविध भागों में सरायें खड़ी की जायें। उनको उदार तथा उपकारी लोगों के सुपुर्द किया जाये। संसार के निर्धन लोगों को, जिनके रहने के लिये कोई मकान नहीं है, वहाँ स्थान मिल सके और ये इधर-उधर मकान की तलाश में न घूमें। बादशाह के आदेश का थोड़े समय में ही भली-भांति पालन हो गया।

खां जहां की मृत्यु

जब खां जहां, भाटी से वापस लौटा तो वह सीहाटपुर में रहने लगा। अब उसकी मानसिक स्थिति बिगड़ गई। फिर वह बिस्तर में रहने लगा, उसको तीव्र ज्वर हो गया। भारतीय हकीम उसके रोग को नहीं समझ सके और उसको उष्ण औषधियां दी गईं जिससे उसका जीवन समाप्त हो गया। डेढ़ मास तक उसको उदर शूल रहा और दिसम्बर, 1578 को उसका प्राणान्त हो गया। इससे अकबर को दु:ख हुआ। उसने खां जहां की आत्मा को क्षमाप्रदान के लिये ईश्वर से प्रार्थना की।

सुल्तान ख्वाजा की वापसी

जब सुल्तान ख्वाजा को हज का दरोगा बनाया गया था तो वह बादशाह से छोटे और बड़े लोगों के लिए भेंटें लेकर वहां गया और वहाँ के लोगों की अभिलाषएं पूरी करीं। फिर वह एक बड़े दल के साथ वापस आया। जब बादशाह शिकार में गया हुआ था तो सुल्तान ख्वाजा उपस्थित हुआ। उसने अरबी घोड़े और अन्य दुर्लभ वस्तुएं भेंट कीं। ख्वाजा की अच्छी सेवा से अकबर प्रसन्न हुआ। उसको तरखान की उपाधि दी गई और सदर के पद

पर नियुक्त किया गया। साथ ही यह भी आदेश हुआ कि मीर फकीरुद्दीन मसहदी उज्जैन से जाकर पाटन की सरकार को संभाले। जब वह वहाँ पहुंचा तो तरमून खां जो वहाँ का सूबेदार था, दरबार में चला गया।

मीरहज को भेजना

जब यह खबर फैली कि अकबर ने अरब में रुपया बांटा है तो एशिया माईनर और सिरिया के कितने ही गरीब लोग अरब में एकत्र हो गये। तब अकबर ने आदेश दिया कि पहले से अब दुगुना रुपया भेजा जाये। इस रुपये को वहाँ वितरण करने के लिये ख्वाजा याह्यां को उपयुक्त समझा गया और उसने यह पद स्वीकार कर लिया। 26 दाई को वह कितने ही लोगों के साथ इन बख्शीसों को बांटने के लिए गया। वह ख्वाजा अहरार का पौत्र था और ख्वाजा अब्दुल्ला का वंशज था। उसने चिन्तन-क्षेत्र में तो अधिक गति प्राप्त नहीं की थी परन्तु उसको सूफी धर्म का और औषध विद्या का किंचित् ज्ञान था। सत्य और सरलता तथा स्पष्टता के लिए उसकी प्रसिद्धि थी। इसी समय कुलीच खां को गुजरात भेजा गया और उसे आदेश दिया गया कि वहाँ के अधिकारियों की सहायता करे और कृषकों तथा सैनिकों की देखभाल करे। हाजी इब्राहीम को उस प्रान्त का सदर नियुक्त किया परन्तु वह इस काम को कुछ नहीं समझता था। उसके स्वभाव की अधमता और मूर्खता प्रकट हुई तो उसको दण्ड दिया गया, जिसका यथास्थान उल्लेख किया जायेगा। इसी समय ख्वाजा गयासुद्दीन अली आसफ खां को मालवा और गुजरात भेजा गया। उसको आदेश था कि मालवा में दाग के नियमों का पालन करवाये और गुजरात पहुंचे और शिहाबुद्दीन अहमद खां तथा कुलीच खां की सलाह के अनुसार सेना का सुधार करे।

***

प्रकरण 47

राज्यारोहण के बाद चौबीसवें इलाही संवत् का आरम्भ

11 मार्च, 1589 बुधवार को इस संवत् का आरम्भ हुआ। इस वर्ष के आरम्भ में मुजफ्फर खां ने बंगाल का शासन सम्भालने की इजाजत मान ली। बादशाह ने उसको आदेश दिया कि वहाँ जाकर दुःखी लोगों को सान्त्वना दे। खां जहां मृत्युशैय्या पर था। मुजफ्फर खां में अनेक गुण थे। इसलिये उसको बंगाल का सूबेदार नियुक्त किया गया था। वह 14

मार्च, 1589 को रवाना हुआ। रिजवी खां को बख्शी और मीर आदम तथा राय पतरदास को दीवानी का काम सौंपा गया। अब्दुल फतह को सदर और अमीन नियुक्त किया गया। उनके साथ कई उच्चाधिकारी गये। सबको घोड़े और खिल्लतें देकर बिदा किया गया। इस्माईल कुली खां को यह आदेश दिया गया कि वह बंगाल का शासन नये अधिकारी को सौंप कर दरबार में आ जाये। किया खां, बाबा खां और जब्बारी को आदेश हुआ कि सेना की अच्छी देखरेख करते रहें। इसी समय मुजफ्फर हुसेन मिर्जा के अपराध क्षमा कर दिये गये। गुजरात में उसने विद्रोह किया था जो भुला दिया गया। इसी समय मिर्जा अजीज कोकलताश की ड्योढ़ी बन्द कर दी गई और वह एकान्त में रहने लगा। उसने बेईमानी के सन्देह पर मीर अलाउद्दीन अमल गुजार को अपने एक नौकर के सुपुर्द कर दिया था। इस नौकर को उस अमल गुजार से द्वेष था, उसे उत्पीड़ित किया गया और वह मर गया। मिर्जा ने नौकर को अपने अवसर पर दुरुपयोग करने के अपराध में प्राण दण्ड दिया। तब मीर अलाउद्दीन के पिता ने ईरान से आकर न्याय के लिये प्रार्थना की और कहा कि मीर पर बड़ा अत्याचार किया गया है। तब अजीज कोकलताश को मालूम हो गया कि अब उस पर बादशाह की कृपा नहीं रही इसलिये वह एकान्त में चला गया।

बीजापुर के राजदूत को बिदा

बीजापुर का सुल्तान आदिल खां अकबर के आदेशों का उचित पालन नहीं करता था परन्तु दक्षिण के अन्य शासकों की भांति वह अच्छी-अच्छी भेटें भेज कर दुर्लभ वस्तुएं उसने भेंटस्वरूप भेजीं जिनको लेकर उसका एक राजदूत आया। जब राजदूत ने विदा मांगी तो अकबर ने उसे इजाजत दे दी और उसी के साथ हकीम अली को भेजा और आदेश दिया कि वह आदिल खां को चेतावनी दे दे कि यदि वह आज्ञा का पालन नहीं करेगा तो उसके विरुद्ध युद्ध किया जायेगा।

मुराद का विद्यारम्भ

अब शाहजादा मुराद 8 वर्ष का हो गया था। वह बार-बार रुग्ण हो जाता था, परन्तु अब वह स्वस्थ था। अकबर ने चाहा कि अब उसकी शिक्षा का आरम्भ हो जाना चाहिये। उसके लिये शेख अबुल फेज फेजी को अध्यापक नियुक्त किया गया। थोड़े समय में ही बादशाह की इच्छा पूरी हो गई।

यह लिखा जा चुका है कि अब्दुला खां और अन्दि ख्वाजा को बदख्शां के राजदूतों के साथ भेजा गया था। मिर्जा शाहरूख ने उनका आगमन हर्ष का विषय समझा। खानिम रुग्ण थी और उसका जीवन अस्त होने वाला था इसलिये उसने अपनी पुत्री मीहमान और अपने दामाद मीर निजाम को जिससे मीहमान का विवाह हुआ था, अकबर के दरबार में भेजा। कई दरबारियों ने इन सबका स्वागत किया और उन्हें सम्मानपूर्वक दरबार में ले गये। 10% खिरदाद को वजीर खां ने सिजदा किया। बादशाह ने उससे भली प्रकार भेंट की।

गुजरात में शिहाबुद्दीन अहमद खां को सूबेदार नियुक्त किया जा चुका था इसलिये वजीर खां को ईडर जाने का आदेश हुआ। थोड़े समय में ही ईडर के राजा ने अधीनता स्वीकार की। उसका देश उसी को लौटा दिया गया और वह दरबार में उपस्थित हुआ। शाहबाज खां भी इसी समय आया, उसने अजमेर सूबा की व्यवस्था कर दी थी और विद्रोहियों का दमन कर दिया था।

***

प्रकरण 48

युग के समस्त बुद्धिमान् पुरुषों द्वारा बादशाह का इज्तिहाद स्वीकार करना

विद्वानों की एक सभा की गई जिसमें उन्होंने कहा कि इज्तिहाद का दर्जा नफ्सये कदसी से नीचा है। इज्तिहाद का अर्थ है शंकाओं के अन्धकार को दूर करना। सर्वोपरि शासक लोगों की शंकाओं और क्षोभ को शान्त करता है। नफ्सये कदसी की प्रत्येक व्यक्ति नहीं जानता, परन्तु इज्तिहाद को जानाता है इसलिये विद्वानों को मिलकर अपने पुराने सेना के विषय में इस नये हकीम (बादशाह) से पूछना चाहिये। इस युग की उपयुक्त औषध यह है कि बादशाह को इज्तिहाद शब्द से सम्बोधित करना चाहिये। फिर धर्मों और सम्प्रदायों की उलझनें उसके सामने प्रस्तुत करके निवेदन करना चाहिये कि वह उस ग्रन्थि को खोले।

पहले तो बादशाह ने यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया, तब विद्वानों ने उससे बहुत अनुनय-विनय किया। तब उसने प्रार्थना मानकर उनकी इच्छा पूरी की। 20 शहरीयार (12 अगस्त से 12 सितम्बर, 1579) या 2 सितम्बर, 1579 या 24 अगस्त से 23 सितम्बर, 1579 या 8 सितम्बर, 1579 या 29 अगस्त से 3 सितम्बर, 1579 को विद्वानों की सभा हुई और सबने सर्वसम्मति से निश्चय किया कि संसार का स्वामी बादशाह अकबर इस समय का इमाम या मुज्तिहिद है। (मुज्तिहिद का अर्थ है धार्मिक विषयों में विवेकपूर्ण निर्णय करने वाला) अकबर लम्बी बातें नहीं करता था केवल आवश्यक बात कहता था। कई बार उसने फतेहपुर की मस्जिद में अपना निर्णय दिया जिससे उपस्थित लोगों को शान्ति हुई। अकबर के एक खुतबे काप द्यात्मक भावान्तर अब्दुल शेख फेज फेजी ने किया था, जिसका अनुवाद निम्नलिखित है :—

''जिसने हमको सर्वोपरि सत्ता दी है।
जिसने हमको बुद्धियुक्त हृदय और सबल बाहु प्रदान की है।
जो हमको औचित्य और न्याय की ओर ले जाता है।
जो हमारे हृदय से औचित्य के अतिरिक्त सब अन्य भावनाओं को निकाल देता है।
उसका गुण कीर्तन हमारी विचारशक्ति से बाहर है।
बादशाह का स्थान ऊंचा हो, अल्लाहो अकबर।''

कुछ जोशीले और कट्टर लोगों ने कहा कि बादशाह ईश्वर का पैगम्बर होने का दावा करता है। सीमित दृष्टि और त्रस्त हृदय वाले लोगों को कई विचार आये और जब अकबर ने मस्जिद की वेदी (मिम्बर) पर बैठकर खुतबा पढ़ा जो प्रथा के विरुद्ध था तो लोगों की शंकाएं और भी बढ़ीं। कुछ लोग समझते थे कि अकबर इस्लाम दीन-ए-अहमदी की उपेक्षा करता है। कुछ कहते थे कि वह शिया सम्प्रदाय को मानता है और कुछ यह भी कहते थे कि वह हिन्दू धर्म का अनुयायी बन गया है। कारण यह था कि अकबर की अपनी धार्मिक सहिष्णुता के कारण हिन्दू संगठन से घनिष्ठता थी। प्रशासनिक आवश्यकताओं के कारण उसने हिन्दुओं का पद बढ़ा दिया था और देशहित सोचकर वह उनके प्रति कृपा रखा करता था। अकबर के विरुद्ध दुर्भावनाएं इसलिये फैलायी जा रही थीं कि वह विविध धर्मों के ज्ञाता दरबार में एकत्र होते थे। अकबर समझता था कि प्रत्येक धर्म में कुछ अच्छाई है। अकबर सुलह कुल (सबके लिये शान्ति) चाहने वाला था। परन्तु जिनके स्वभाव में दुष्टता और कुटिलता थी, उनको यह अच्छा नहीं लगता था।

***

प्रकरण 49

कुतुबुद्दीन खां की शाहजादा सुल्तान सलीम के अध्यापक पद पर नियुक्ति

1 सितम्बर, 1579 के आरम्भ में कुतुबुद्दीन खां शाहजादे का अध्यापक नियुक्त हुआ और उसको दाकू (सम्मानसूचक पोशाक) द्वारा सम्मानित किया गया तथा उसको बेग लारबेगी की उपाधि प्रदान की गई। इस सम्मान के लिये कृतज्ञता प्रगट करने हेतु कुतुबुद्दीन ने अपने स्थान पर भव्य भोज़ दिया और बादशाह से निवेदन किया कि उसमें उपस्थित हो।

बादशाह ने उसकी प्रार्थना मान ली जब बादशाह उसके मकान पर गया तो लोग उससे ईर्ष्या करने लगे। इस अवसर पर कुतुबुद्दीन ने शाहजादे को अपने कन्धे पर बिठाया।

***

प्रकरण 50

अजमेर का अभियान

8 सितम्बर, 1579 को बादशाह अजमेर के लिये रवाना हुआ। वह 6 अक्टूबर, 1579 को बादशाह खवास खां के तालाब पर पहुंचा (जो अजमेर से 5 कोस की दूरी पर है।) वहाँ भूमियों ने आकर सिजदा किया। 14 अक्टूबर, 1579 को वह अजमेर नगर में पहुंचा और ख्वाजा की दरगाह में गया, वहां के पुजारियों और प्रत्याशियों को उसकी उदारता से बड़ा लाभ हुआ।

शेख अब्दुन्नवी और मुल्ला अब्दुल्ला सुल्तानपुरी को हज्जाज भेजा

हज के यात्रियों में से अकबर ऐसे आदमियों को चुनता था जो सत्य और सज्जनता के लिये प्रसिद्ध हो और उनके सुपुर्द बड़ी धनराशि किया करता था। उसके मन पर हज्जाज के निर्धन लोगों का बड़ा प्रभाव थां इसलिये वह प्रतिवर्ष भले और योग्य व्यक्तियों के साथ बड़ी धनराशि वहाँ भेजा करता था। परन्तु हज्जाज के लोगों में बख्शीश प्राप्त करते समय बड़ा झगड़ा हुआ करता था और गरीबों के हाथ कुछ नहीं लगता था। परन्तु अकबर चाहता था कि वहाँ के निर्धनों को उचित धनराशि मिले और गुप्त रूप से मिले इसलिये कितनी धनराशि भेजी गई है इसकी घोषणा नहीं की जाती थी। यात्री दल के अध्यक्ष को मीरहज्ज कहा जाता था, वह हज्ज के लोगों की आवश्यकताओं को देखता था। अकबर चाहता था कि मीरहज्ज सदा के लिये अरब देश में ही रहे और अपनी उन्नति करे। परन्तु लोग तो धन के दास थे। इसलिये उन्होंने वहाँ रहना पसन्द नहीं किया और हजारों आपत्तियां खड़ी कीं। परन्तु अकबर ने तो उनको वहाँ भेज ही दिया।

फिर मेवात के मार्ग से अकबर ने अजमेर से राजधानी को वापस लौटना शुरू किया। जब वह सांभर के समीप पहुंचा तो उसने शाहबाज खां को कुछ सेना देकर उस प्रान्त के लोगों का दमन करने के लिये और शान्ति स्थापित करने के लिये भेजा।

जैन खां कोकलताश आहत हुआ

3 दिसम्बर को बादशाह का मुकाम भी थिराह में था। वह निजी तौर पर नमाज गुजार रहा था। उसके दौलतखाने के सामने शोर मचा और बन्द हो गया। भूपत चौहान कुछ समय तक विद्रोह करके बंगाल चला गया था। जब उस देश पर विजय प्राप्त हो गई तो उसने बादशाह के दरबार में शरण ली। फिर वह ईटावा में अपने घर पर चला गया और वहाँ पर किसानों को लूटने और सताने लगा। ईटावा कोकलताश की जागीर में था, इसलिये वह भूपत चौहान और दूसरे अभिमानी लोगों को नेक सलाह देकर सन्मार्ग पर लाने के लिये छुट्टी लेकर वहाँ पर गया। जब कोकलताश ईटावा पहुंचा तो वहाँ के निवासियों ने सरकार की आज्ञा मानना स्वीकार कर लिया और कोकलताश के कहने से सब ने राजधानी पहुंच कर बादशाह के सामने सिजदा करने का विचार प्रकट किया, परन्तु भूपत चौहान के दिमाग में तूफ़ान था, इसलिये उसने उन सब के साथ जाने से इन्कार किया। तब वहाँ के जमीनदारों के नाम आदेश हुआ कि वे उसको गिरफ्तार कर लें, परन्तु वह डर कर राजा टोडरमल और राजा बीरबल के शिविर में आया और उनसे शरण के लिये प्रार्थना की। उसने कहा कि उसके अपराधों को क्षमा कर दिया जाये और बादशाह की सेवा करने का अवसर दिया जाये, परन्तु वह घात में बैठा हुआ कोकलताश को क्षति पहुंचाने का विचार कर रहा था। कोकलताश ने उसकी दुर्भावनाओं की खबर बादशाह को दी। तब शाही आदेश से शेख इब्राहीम ने उसको बुलाकर समझाया कि रास्ते पर आकर कोई पद प्राप्त करके नौकरी करे और अपने चालचलन की जमानत दो। तब भूपत चौहान ने कुछ साहसी राजपूतों ने आगे आकर प्रार्थना की कि यदि कोकलताश भूपत चौहान से समझौता कर ले और शेख इब्राहीम उसको कृपा करने का वचन दे तो वह दरबार में उपस्थित हो जायेगा, अन्यथा वह अपने प्राणों का बलिदान करने के लिये तैयार है। शेख इब्राहीम और कोका ने सहमत होकर भूपत चौहान को मीठे शब्दों द्वारा सान्त्वना दी और उसको शाही दरबार में ले जाना चाहा, परन्तु आज्ञा के बिना किसी को सशस्त्र दरबार में नहीं ले जाया जाता था, इसलिये उन्होंने सद्भावनापूर्वक उसको रोका, उसके खंजर पर हाथ रखा, तो भूपत चौहान को क्रोध आया। उसने समझा कि उसके साथ कोई तरकीब की जा रही है। वह अपना खंजर निकाल कर लड़ने लगा। इस लड़ाई में कोका भी सम्मिलित हुआ। वह आहत हो गया। कुछ सेवकों ने भूपत चौहान को पकड़कर मार डाला। अगले दिन बादशाह अकबर, कोकलताश के निवास पर गया और उसके घावों के विषय में अनुग्रहपूर्वक बात की। कोकलताश का खतरनाक घाव भर गया और ईश्वर को धन्यवाद दिया गया। 19 दिसम्बर, 1579 बादशाह फतेहपुर पहुंचा।

यूसुफ खां कश्मीरी को दरबार में शरण मिली

यूसुफ खां का पिता अली खां चक कश्मीर का शासक था। वह पोलो खेलता हुआ

आहत होकर मारा गया तो सरदारों ने यूसुफ खां को उसका उत्तराधिकारी मान लिया। तब यूसुफ खां का चाचा अबदाल छलबल से गद्दी प्राप्त करने के लिये प्रयास करने लगा। यूसुफ खां ने जल्दी करके अब्दाल के मकान को घेर लिया और मुठभेड़ हुई तो अब्दाल मारा गया। अभी शान्ति नहीं हुई थी कि सैयद मुबारिक अली खां आदि सरदारों ने और अन्य लोगों ने चाहा कि हुसेन खां के पुत्र यूसुफ को जो सुल्तान यूसुफ खां कश्मीरी का चचेरा भाई था और जिसको खानखाना की उपाधि थी, सुल्तान बनाया जाये परन्तु इस यूसुफ खां ने सुल्तान बनने से इन्कार कर दिया, तब कलहप्रिय लोगों ने सैयद मुबारक को सुल्तान के पद पर बिठाकर राजद्रोह खड़ा कर दिया। तब ईदगाह के मैदान में लड़ाई हुई। यूसुफ खां ने सेना तैयार की और लड़ने के लिये चला। उसकी अग्रसेना में मुहम्मद खां था। वह लड़ाई के बाद मारा गया। तब यूसुफ खां रणभूमि में भी नहीं आया और भाग गया और थाना के पास जाकर ठहरा। तब दुष्ट लोग उसको वापस ले आये। मराज के पास सैयद मुबारक लड़ने के लिये आया, परन्तु यूसुफ खां के आदमी आगे नहीं बढ़े। तब राजा मानसिंह और मिर्जा यूसुफ खां की शरण में आया। वे उसको दरबार में ले आये। जनवरी, 1580 में उसने सिजदा किया और बादशाह ने उस पर अनेक प्रकार की कृपा की।

पेसरो खां दक्षिण से आया

पेसरो खां को दक्षिण में निजामुलमुल्क को सत्परामर्श देने के लिये भेजा गया था। उसने अपना दूतकार्य उचित ढंग से किया और निजाम को बुद्धिमत्तापूर्वक समझाया। निजाम एकान्त में रहता था और लोगों की संगति पसन्द नहीं करता था, तो भी उसको कुछ समझ आई और उसने अपने एक विश्वस्त आदमी को, जिसका नाम आसफ खां था, दुर्लभ वस्तुओं के साथ भेजा। अकबर उससे अच्छी तरह मिला।

यूरोपीय बन्दरगाहों पर अभियान

गुजरात और मालवा के अफसरों को कुतुबुद्दीन खां के नेतृत्व में फरवरी, 1580 में यूरोपियन लोगों के बन्दरगाहों पर अभियान करने के लिये नियुक्त किया। दक्षिण के शासकों को सूचित किया गया कि फिरंगियों के विरुद्ध सेना भेजी गई है; क्योंकि वे हज के यात्रियों के मार्ग में विघ्न डालते हैं। यह दक्षिण के सुल्तानों के लिये स्वामिभक्ति प्रकट करने का अच्छा अवसर है इसलिये वे अपनी सेनायें इस कार्य के लिये भेजें जो शाही सेना के साथ-साथ काम करें।

प्रशासनिक हेर-फेर

सरकार गाजीपुर मासूम खां फरन खुदी को और जौनपुर तारसोन मुहम्मद खां को दिये गये। तारसोन मुहम्मद खां के साथ मौलाना मुहम्मद यजदी को सदर बनाकर भेजा गया। उड़ीसा मासूम खां काबुली के सुपुर्द किया गया, उसको बिहार से उड़ीसा तक ले जाने के

लिये सुभान कुली तुर्क को उसके साथ भेजा गया और यह आदेश दिया गया कि कियां खां गंग को वह बिहार लाये।

हज से मीर अबू तुराब की वापसी

यह लिखा जा चुका है कि मीर अबू तुराब को यात्रियों का नायक नियुक्त किया गया था। इस समय खबर आई कि वह यात्रा समाप्त करके पैगम्बर का पदचिन्ह लेकर वापस आ रहा है। उसने यह कहा कि एक पदचिन्ह सुल्तान फिरोज के समय में सईद जलाल बुखारी लाया था। यह चिन्ह दूसरे पैर का है। अकबर जानता था कि यह बात सच नहीं है। विशेषज्ञों ने भी इसको असत्य सिद्ध कर दिया था, फिर भी अकबर ने आदेश दिया कि यात्रियों का कारवां राजधानी से 4 कोस की दूरी पर ठहरे। अकबर के लिए बहुत अच्छा शामियाना खड़ा किया गया और बड़े-बड़े अफसरों और विद्वानों के साथ वहाँ गया। उसने पदचिन्ह वाले पत्थर को अपने कन्धे पर रखा और कुछ दूर तक ले गया और फिर अफसरों ने उसको कन्धे पर रखा, अन्त में उसको मीर अबू तुराब के मकान में रख दिया गया।

देश का बारह सूबों में विभाजन

उचित सीमायें निश्चित करके अकबर ने देश को बारह भागों में विभाजित किया और प्रत्येक भाग पर एक सिपह शालार, एक दीवान, एक बख्शी, एक मीर अदल, एक सदर, एक कोतवाल, एक मीर बहर और वाका-नवीसे नियुक्त किया।

दस वर्ष के लिये भूमि पर कर निश्चित

अब तक हर फसल के समय नया भूमिकर निश्चित किया जाता था। उसमें घटती और बढ़ती हुआ करती थी। ऐसा नियम था कि देश के प्रत्येक भाग से अनुभवी और ईमानदार लोग भूमिकर की दरें लिख कर भेजें। भूमिकर की अदायगी के विषय में एक दस्तूरल असल बनाया जाता था। जब साम्राज्य विस्तृत हो गया और बड़े-बड़े राज्य इसमें मिला लिये गये तो खबरें विलम्ब से आने लगीं, जिससे सैनिकों और कृषकों की क्षति होने लगी। तब भूमिकर अदा करने की एक नई विधि जारी की गई। यह आदेश हुआ कि प्रत्येक परगने का गत दस वर्ष का विवरण तैयार किया जाये जिसमें लिखा जाये कि फसल कैसी थी? और अन्य का मूल्य क्या था? इसका दशमांश एक वर्ष का भूमिकर माना जाये। यह महाकार्य राजा टोडरमल और ख्वाजा शाह मनसूर के सुपुर्द किया गया था, परन्तु फिर राजा को पूर्वी प्रान्तों में भेज दिया गया और ख्वाजा ने ही सारी योजना कार्यान्वित की।

***

प्रकरण 51

बिहार विद्रोह और बदख्शां को शाही सेना का प्रयाण

बिहार के अधिकारियों का विद्रोह और उसके दमन के लिए सेना की नियुक्ति एकाएक ही बिहार के अफसरों ने, जिनके पूर्वजों पर बादशाह की बड़ी कृपा थी, विद्रोह कर दिया। इसका संक्षिप्त वृत्तान्त यह है, कि उस प्रान्त के अधिकारियों की कठोरता के कारण मासूम खां काबुली (पटना का जागीरदार) सैयद बेग बदख्शी और अरब खां (सहसराम के जागीरदार) शादत अली, हाजी कोका भी और कुछ अन्य लोग जिनकी जागीरें छिंदवाड़ा में थीं, सैयद बदख्शी, उसका पुत्र बहादुर, दरवेष अली, सखरु और अन्य लोग विद्रोह करने लगे। उन्होंने अन्य लोगों को भी उल्टा मार्ग बतलाया और साहम खां (हाजीपुर का जागीरदार), मीर मुअज्जुलमुल्क, मीर अली अकबर और समान्जी खां को भी विद्रोही बना दिया। यात्री लोग विद्रोही लोगों के कारण क्षुब्ध थे। इसलिए मुहिब्बअली ने उनको हब्श खां के साथ अपने ही निवास पर भेज दिया। इसी बीच में उन दुष्टों ने पटना नगर को लूटा, इससे उनके दुर्विचार प्रगट हो गये। फिर मुहिब्ब अली दुर्ग की देखरेख करने के लिये रोहतास पहुंचा। उसके साथ तेइब और मजदुद्दीन थे। राय पुरुषोत्तमदास गाजीपुर गया। वह चाहता था कि मासूम खां फरनखुदी को लड़ने के लिए ललकारे। शमशेर खां बनारस गया। वह भी चाहता था कि राजा टोडरमल के सैनिकों को एकत्र करके लड़ाई की जाये। इसी बीच में अरब ने यात्रियों के दल का पीछा किया। यात्रियों ने चौसा की थाह पार कर ली। अरब के हाथ में कुछ हाथियों के सिवाय कुछ नहीं आया। बादशाह ने अच्छा काम किया, परन्तु वह बन्दी बना लिया गया। अरब ने हब्श खां की ओर से चालाकियां करके मुहिब्ब-अली को अपनी ओर मिलाने का प्रयास किया, परन्तु सफल नहीं हुआ।

पुरुषोत्तम की मृत्यु

जब पुरुषोत्तम गाजीपुर पहुंचा तो मासूम खां फरनखुदी छल और कपट के साथ उसके पास आया और कहा कि मैं चौसा की थाह के पास आपसे मिलूंगा। पुरुषोत्तम धोके में आ गया और बक्सर में सैनिकों का संग्रह करने में लग गया। कमानुद्दीन सीस्तानी, सैयद हसन आदि उधर के जागीरदार उसके साथ शामिल हो गये। एक दिन वह गंगा के तट पर जब स्नान-पूजा कर रहा था तो कुछ दुष्ट आदमियों को साथ लेकर अरब वहां आया और उसने पुरुषोत्तम पर वार किया और वह पृथ्वी पर गिर पड़ा। उसके साथी उसको गाजीपुर ले गये, जहां दो दिन बाद उसकी मृत्यु हो गई। अब मुहिब्ब अली ने यह

समाचार सुना तो उसने अरब से लड़ाई लड़ी। हब्स खां मारा गया और अरब हार कर भाग गया।

इसफन्दार-मुज मास के मध्य में इन घटनाओं की खबर बादशाह के पास भेजी गई तो राजा टोडरमल, शेख फरीद बख्शी, राजा आसकरण, राय लूणकरण, नकीब खां, आदि के नाम आदेश हुआ कि वे शीघ्रतापूर्वक उस प्रदेश में पहुंच कर उत्पात करने वालों को दण्ड दें। तारसोन खां, मासूम खां फरनखुदी, गाजी खां, बदख्शी, राय सुर्जन और इलाहाबाद तथा अवध के प्रान्तों के अन्य जागीरदारों को भी आदेश दिया गया कि जब शाही सेना वहाँ पहुंचे तो वह अपनी सेनाओं को सुसज्जित करके उसके साथ हो जाये और मेलजोल से काम करे और तारसोन खां और राजा के निर्देशों का उल्लंघन न करे। यह भी आदेश दिया गया कि सादिक खां, बाकी खां, उलूग खां, हब्शी तेइब खां और मीर अब्दुल मुजफ्फर चेदेरी और नखर से उसी स्थान पर पहुंचे। काजी अली कादादी को बख्शी नियुक्त किया गया।

बदख्शां को शाही सेना का प्रयाण

यह लिखा जा चुका है कि मिर्जा सुलेमान ने हज्ज जाने के लिये इजाजत ली थी। समझने वाले समझ गये थे कि वह केवल बहाना कर रहा है, उसका वास्तविक उद्देश्य तो बदख्शां जाकर शाहरूख से बदला लेना था। वह यात्रा के स्थान से ईरान पहुंचा। वह ईरान के शाह से सहायता लेकर अपने उद्देश्य की पूर्ति करना चाहता था। उस समय शाह तहमास्प का पुत्र शाह इस्माइल हिंसात्मक विधि से शासन कर रहा था, उसने सुलेमान का सम्मानपूर्ण स्वागत किया और सहायतार्थ कुछ सैनिक देकर बिदा कर दिया। हैराद में उसको समाचार मिला कि शाह की मृत्यु हो गई है, तब सुलेमान ने कंदहार पहुंच कर मुजफ्फर हुसेन मिर्जा से मित्रता कर ली। परन्तु वहाँ भी उसको सफलता नहीं मिली तो वह काबुल चला गया, जहां मिर्जा हकीम ने उसका हार्दिक स्वागत किया। हकीम चाहता था कि मिर्जा सुलेमान जैसे अनुभवी पुरुष के मार्गदर्शन से बंगश जाकर भारत में गड़बड़ की जाये। परन्तु मिर्जा सुलेमान ने उसको रोका। फिर 20 अक्टूबर, 1579 को जब वर्षा और हिमपात हो रहा था तो सुलेमान और हकीम दोनों बदख्शां की ओर रवाना हुए। जब इस घटना की खबर अकबर को मिली तो उसने शाहरूख मिर्जा को सहायता देने का निश्चय किया। सईद खां, राजा भगवन्तदास, मानसिंह आदि। पंजाब और मुल्तान के अधिकारियों को आदेश दिया गया कि वे बदख्शां जायें। वे तैयारी करने ही लगे थे कि उन्हें खबर मिली कि काबुल का शासक मिर्जा हकीम मार्ग में ही रुक कर वापस काबुल चला गया। उन्होंने यह बात बादशाह से निवेदन कर दी और अपना प्रयाण स्थगित कर दिया। घटना इस प्रकार हुई कि मिर्जाओं में तालीकान के समीप युद्ध हुआ, जिसमें शाहरूख मिर्जा असफल रहा। गप्पें मारने वालों में यह चर्चा होने लगी थी कि (मिर्जा शाहरूख का) मुख्य अधिकारी मीर इमाद,

मिर्जा सुलेमान से मिला हुआ है और शाहरूख को पकड़ कर उसके सुपुर्द करना चाहता है। बदख्शी लोगों का एक दल सुलेमान से मिल गया था, जिससे शाहरूख का संदेह और बढ़ गया। लड़ाई होने से पहले ही शाहरूख कुन्दुज पहुंच गया। कुन्दुज के दुर्ग को दृढ़ करके वह कुलाब गया और मुहम्मद कुली शिंघाली को कारागार से निकाल कर उसने अपना वजीर (मंत्री) नियुक्त किया। मिर्जा सुलेमान, मिर्जा हकीम दोनों तालीकान के समीप 20 दिन तक पड़े रहे। जब उनको शाहरूख मिर्जा की स्थिति के विषय में पूरा निश्चय हो गया तो वे किला जफर के मार्ग से रुस्ताक आये। मिर्जा शाहरूख सुलेमान से मिलने के लिये नहीं आया, परन्तु शान्तिप्रिय और विचारशील लोगों के माध्यम से समझौता हो गया। तालीकान से हिन्दकोह तक का प्रदेश जो मिर्जा इब्राहीम की जागीर था, मिर्जा सुलेमान को दे दिया गया। इन शर्तों को मान कर मिर्जा सुलेमान कुलाल चला गया और मिर्जा हकीम काबुल लौट गया।

***

प्रकरण 52

बंगाल प्रान्त में विद्रोह, विद्रोहियों को दण्ड

जब मुजफ्फर खां ने बंगाल के सूबे का काम अपने हाथ में लिया तो उसने देश और सेना को भली प्रकार नहीं संभाला और वित्त की चिन्ता नहीं की। उसकी सहायतार्थ एक दीवान, एक बख्शी और एक अमीन नियत किये गये थे। उसने सारा काम उन्हीं पर छोड़ दिया।

बंगाल प्रान्त में हमेशा विद्रोह हुआ करते हैं, इसके कारण दिल्ली की सल्तनतों का पतन हुआ है, इसलिये पुराने लेखक इसको बुलगाक खाना (कलह का घर) कहा करते थे। मुजफ्फर खां दंभी था। उसने मित्रों को और अपरिचितों को अपने पास नहीं रखा। उसके साक्षी अधिकारी मुक्ति से काम लेना नहीं जानते थे। उन्होंने खाने जहां के धनसंग्रह की जांच करना शुरू कर दिया, जिससे खिन्न होकर इस्माइल कुली खां और अन्य तुर्कमान विद्रोह करने लग गये। फिर कुछ शान्ति हो गई, परन्तु अधिकारी लोग तुर्कमानों से धन निचोड़ने लगे, तब विद्रोह और बढ़ गया। 19 जनवरी, 1580 को राजधानी टांडा के निकट विद्रोही गंगा पार चले गये। 28 जनवरी, 1580 को उन्होंने विद्रोह शुरू कर दिया। इनके मुख्य नेता बाबा खां जद्धबारी और वजीर जमील थे, परन्तु विद्रोह की अग्नि को प्रज्वलित करने में और लोगों का भी हाथ था। उड़ीसा के किया खां, फतहाबाद के मुराद खां और

मुनारगांव के शाहवर्दी ने मेल के विषय में बातें कीं परन्तु बातों के सिवाय और कुछ नहीं किया। इस विद्रोह में जौनपुर के रजवी खां का भी हाथ था। उसके हाथ में खालसे का हिसाब था। जब उसको बख्शी नियुक्त किया गया। उसने काम और बिगाड़ा। फिर अलेसर, मीर जलालुद्दीन हुसेन अंजु को दे दिया गया। यह पहले खालदीन खां की जागीर में था। खालदीन खां वहाँ से कुछ धनसंग्रह कर चुका था। मुजफ्फर खां ने उसको एक हाथ बांधकर लटका दिया, तब दूसरे लोग भयभीत हो गये और विद्रोह करने लगे। खाने जहां की मृत्यु पर इस्माइल कुली खां की जागीर में बादशाह के आदेश बिना ही वृद्धि कर दी गई थी। विद्रोह का कारण यह भी था कि रोशन बेग को प्राणदंड दिया गया था। वह खालसे का एक मालगुजार था, दण्ड की खबर सुनकर वह काबुल भाग गया और फिर बंगाल आकर विद्रोह में शामिल हो गया। तब बादशाह ने आदेश दिया कि उसको मार दिया जाए। मुजफ्फर खां ने उसको तुरन्त ही मरवा दिया। उसने सोचा था कि इससे विद्रोही लोग दब जायेंगे परन्तु इससे विद्रोह और दुगुना हो गया। दीवान ख्वाजा शाह मंसूर ने भूमिकर बढ़ा दिया। बादशाह ने आदेश दिया था कि बंगाल की जलवायु घोड़ों के लिये हानिकारक है, इसलिए बंगाल के सैनिकों का वेतन दुगुना और बिहार के सैनिकों का वेतन ड्योढ़ा कर दिया जाये। ख्वाजा ने स्थिति को नहीं समझा और बंगाल के सैनिकों का वेतन ड्योढ़ा ही किया और बिहार के सैनिकों के वेतन में 20 प्रतिशत की ही वृद्धि कर दी। विद्रोह का एक कारण यह था कि अकबर ने सुलह कुल (सर्व शान्ति) का सिद्धान्त स्थापित किया था। दुष्ट और कट्टर लोगों को यह पसन्द नहीं था। इसके बहाने से उन्होंने उपद्रव को और भी बढ़ाया।

मुजफ्फर खां ने उनसे युद्ध करने के लिये गंगा के तट पर मीर जमालुद्दीन, हुसेन रजवी खां आदि कई सैनिक अफसर भेजे। निजात खां, जो मुजफ्फर खां का दामाद था, डर कर उनमें शामिल नहीं हुआ। वजीर जमील गया तो परन्तु वह दोनों ही पक्षों की ओर ताकता रहा। विद्रोही लोगों ने समझा कि उनसे भूल हुई इसलिये उन्होंने समझौते का प्रस्ताव किया, परन्तु शाही सेवकों ने उस पर ध्यान नहीं दिया। तब विद्रोहियों ने अपनी प्रार्थना सीधी बादशाह को भिजवाई तो उसने मुजफ्फर खां को फटकारा। कासिम नौला घोड़ों की डाक से आया तो शाही सेवकों की आंखें खुलीं और उन्होंने विद्रोहियों की क्षमायाचना स्वीकार कर ली। उन्होंने यह चाहा कि मुजफ्फर खां इस बात की पुष्टि करे कि उनकी बात पर अनुकूल विचार किया जायेगा तभी वे निर्भय होकर बादशाह की सेवा करेंगे। तब उनके भाव जानकर उन्हें सान्त्वना देने के लिये 4 अधिकारी भेजे गये। उन्होंने समझौते की बातें कीं परन्तु इसमें सफलता नहीं हुई। शाही सेना के नारायण दास गहलौत और कुछ राजपूतों ने सोचा कि शत्रुओं को मार डालने का यह अच्छा अवसर है। यह बात फैल गई तो विद्रोही लोग मीटिंग छोड़ कर चले गये और उपद्रव करने लगे। फिर लड़ाई हुई, सब ओर राजद्रोह फैल गया। तब खबर दरबार में पहुंची तो कुछ दरबारियों ने कहा कि बादशाह

को स्वयं उधर जाना चाहिये। तब अकबर ने कहा, मेरी आत्मा कहती है कि हमारे स्वामिभक्त सेवकों के प्रयत्नों से यह विद्रोह थोड़े समय में दब जायेगा। यह स्पष्ट है कि विद्रोहियों को काबुल के शासक से प्रोत्साहन प्राप्त हो रहा है। यह हो सकता है कि चाटुकार लोग उसको भारत में ले आये। यदि मैं सेना लेकर बंगाल में चला जाऊं तो इधर प्रजा की क्या दशा होगी? थोड़े समय बाद जो अकबर ने कहा था, वही हुआ।

***

प्रकरण 53

शासन के पचीसवें वर्ष का आरम्भ

शुक्रवार, 11 मार्च, 1581 को इस वर्ष का आरम्भ हुआ। इस वर्ष बीज और तमगा नामक करों को हटा दिया गया। इसके लिये अकबर ने अपने शासन के आरम्भ होते ही आदेश दे दिया था परन्तु अब तक इसका पालन नहीं हुआ था इसलिये अब उस आदेश का नवीनीकरण हुआ और उसको कार्यान्वित करवाने की ओर उसने विशेष ध्यान दिया। अकबर ने कहा, प्राचीन शासक इन करों को इसलिये लगाते थे कि उनको विश्वविजय और प्रशासनिक कार्यों के लिये साधन चाहिये थे परन्तु अब ईश्वर ने बहुत-से राजाओं के राज्य पर मेरा नियंत्रण कर दिया है और मेरे हाथ में कितने ही कोष आ गये हैं इसलिये न्याय की दृष्टि से यह कर उचित नहीं है।

इसके बाद ही बंगाल से भूमिकर आया। इसका संग्रह खाने जहां ने किया था और अब यह मुजफ्फर खां ने भेजा था और इसे फतेहचंद लेकर आया था। कोष के साथ 170 अच्छे-अच्छे हाथी थे।

बैराम खां के पुत्र को मीर अर्ज नियुक्त किया। प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करने वालों की संख्या बहुत बड़ी थी। अब काम बहुत बढ़ गया था, इसलिये बादशाह ने सोचा कि कोई योग्य और उच्चकुलीन तथा ईमानदार आदमी को मीर अर्ज के पद पर नियुक्त किया जाये। बादशाह ने देखा, बैराम खां के पुत्र में यह सब गुण हैं इसलिये उसको इस पद पर नियुक्त कर दिया गया।

दक्षिण के राजदूत

दक्षिण के शासकों को बादशाह की सेवा करना और उसकी आज्ञा का पालन करना पसन्द नहीं था, परन्तु वे प्रार्थना-पत्र और भेंटें सदैव भेजा करते थे। गोलकुण्डा के सुल्तान

ने अधीनता और नम्रता प्रगट करते हुए एक प्रार्थना-पत्र भेजा। उसके राजदूत के साथ वहाँ की दुर्लभ वस्तुएं भी भेंटस्वरूप भेजी गई थीं। राजदूतों का अच्छा स्वागत किया गया। यह भी खबर आई कि बीजापुर के सुल्तान ने दुर्लभ वस्तुओं का संग्रह कर लिया है, इनको वह जब शाही दूत हकीम अली वहाँ से वापस आयेगा तो भेजेगा। परन्तु आदिल खां की अचानक मृत्यु हो गई, इसका संक्षिप्त वृत्तान्त यह है कि इस सुल्तान की बुद्धि को जंग लग गया था। वह शाही आदेशों को नहीं मानता था और तरकीबों से काम लेता था। उसका जीवन विलासमय और अपवित्र था। उसका ढंग ईश्वर को भी पसन्द नहीं था।

उसको विदार के सुल्तान मलिक बरीद से दो ख्वाजे सरा मिले थे जो सुन्दरता और गौरवर्ण के लिये प्रसिद्ध थे। जब आदिल खां ने उनको देखा तो उसने चाहा कि अपनी कामवासना उनमें से एक के द्वारा तृप्त करे। परन्तु ख्वाजे सरा राजी नहीं हुआ। उसने आदिल खां को खंजर का प्रहार करके मार डाला। आदिल के बाद उसके भाई का पुत्र इब्राहीम अमीर फतह उल्ला शिराजी के प्रयत्न से बीजापुर का सुल्तान बना।

मिर्जा अली आलम शाही और अन्य लोगों का कैद होना

मिराकी, इदी, कोर आदि षड्यन्त्र किया। वे पिछली कृपाओं को बिल्कुल भूल गये और कलहकारी धूर्तों का संग्रह करने में लग गये। वे कुछ उपद्रव करके पूर्वी प्रान्त में जाना चाहते थे। परन्तु उनकी गतिविधि का पता लग गया। बादशाह ने स्वयं षड्यन्त्र की छानबीन की और उसने इनको कारावास में रख दिया। केवल मिराकी को प्राण दंड दिया गया।

मुजफ्फर खां की मृत्यु

यह लिखा जा चुका है कि सेवकों में लोभ आ गया था और उन्होंने तथा जागीरदारों ने अज्ञानवश अधीनता का मार्ग त्याग दिया था। गंगा के तट पर दोनों पक्षों ने गोलियां चलाई थीं और विद्रोही लोग अधिक संख्या में होते हुए भी हार गये थे। तब कुछ विद्रोहियों ने विचार किया कि बंगाल की राजधानी टांडा पर सेना भेज कर शाही सेवकों को तंग किया जाये। इसके अनुसार शाही सेना ने ऊपर की ओर मुहम्मद बेग काकशाल और हमजबान ने नदी पार करके उस नगर (टांडा) की ओर उत्पात खड़ा किया। मुजफ्फर खां ने ख्वाजा शमसुद्दीन आदि को उत्पात शान्त करने के लिये भेजा। उन्होंने कितने ही विद्रोहियों को मार डाला और कितनों ही को हरा दिया। तब विद्रोही लोगों को धैर्य नहीं रहा और वे अनुनय करने लगे, परन्तु शाही सेवकों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। तब यह विद्रोही बंगाल के विद्रोहियों में शामिल हो गये और उत्पात जाग्रत हो गया। जब यह खबर आई कि बिहार में शाही सेना आ गई है तो विद्रोही परेशान हो गये, अब न तो वे लड़ सकते थे और न भाग सकते थे। ऐसी स्थिति में उनको मालूम हुआ कि बंगाल के कर्मचारी शाही आज्ञा नहीं मानते हैं और प्रान्त की व्यवस्था बिगड़ी हुई है। तब विद्रोही और आगे बढ़े, तब मुजफ्फर खां को सलाह दी गई कि तीमूर खां आदि को नदी की रक्षा के लिए भेजा जाये परन्तु

तीमूर खां आदि के पहुंचने से पहले ही विद्रोहियों ने गढ़ी पर अधिकार कर लिया था। फिर भी लड़ाई हुई जिसमें तीमूर खां ने और उसके अधिकांश साथियों ने कायरता दिखाई। ख्वाजा शमसुद्दीन घायल हो गया। फिर बाबा काकशाल और अन्य विद्रोही लोग अक महल (राजमहल) के पास गंगा पार करके बिहार के विद्रोहियों में मिल गये। विद्रोहियों का मार्ग रोकने के लिये मुजफ्फर खां ने हुसेन बेग और इतराद अली आदि को आदेश दिया कि गंगा से निकलने वाली नदी के सिरे पर कब्जा कर लें। यह गंगा में से निकाली हुई एक नहर है। इस स्थान पर शाही सेवक नियुक्त थे। परन्तु एक रात को जब वर्षा और तूफान आया और पहरेदार सो गये तो विद्रोही लोग उस नहर को पार करके उत्पात मचाने लगे। जो विद्रोही मुजफ्फर खां का सामना कर रहे थे वे भी उनमें आ मिले। फिर शाही और विद्रोही दलों में प्रतिदिन जोर की झड़पें होने लगीं।

एक दिन विद्रोहियों के एक दल ने नदी पार करके इतराद अली पर आक्रमण किया। तब ख्वाजा शमसुद्दीन ने युद्ध की गति को बदला और शाही सेना की विजय होने लगी। इस लड़ाई में हुसेन बेग मारा गया। 19 दिन तक लड़ाई चलती रही और विद्रोही बार-बार हारते रहे। उनको इस खबर से भी व्याकुलता हो रही थी कि शाही सेना आ रही है। इससे उन्होंने विचार किया कि उस नहर के द्वारा गंगा पर पहुंच कर उड़ीसा में शरण ली जाये और यदि अवसर मिले तो खाइयों पर आक्रमण किया जाये। इस दुर्भावना के साथ वे 20 तारीख को रवाना हुए। शाही सेवकों ने समझा कि विद्रोहियों में फूट हो गई है और उनमें से कुछ लोग नावों में बैठ कर जा रहे हैं। इसलिये कासिम अली सीस्तानी ने कुछ लोगों के साथ विद्रोहियों की नावों को आक्रमण करके छीन लिया। यह खबर सुनकर मुजफ्फर खां ने खुशी के बड़े बाजे बजाये, परन्तु उसको यह भी धोखा था कि शायद शत्रु युक्ति कर रहे हैं इसलिये वह लड़ाई करने के लिये भी तैयार रहा। प्रातःकाल शत्रु ने छोटों और बड़ों सब को दबा लिया इसका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है।

जब शत्रुओं में गड़बड़ मची और उन्होंने नावों के लंगर उठाये और कितने ही काकशाल उपरोक्त नहर द्वारा गंगा में आये, उस समय शाही सेवकों ने कुछ नावें लूट लीं। फिर मासूम आया और शाही खाइयों पर तोप के गोले चलाने लगा तो शाही सेवक हार गये। वे लड़े भी नहीं। जुल्फअली बदख्शी और कोचक कन्दूजी और कितने ही अधम धूर्त, स्वामिद्रोह करके शत्रुओं से जा मिले। यह खबर सुनकर मुजफ्फर खां को घबराहट हुई। उनके कार्यों में कोई व्यवस्था नहीं रही। फिर कुछ बातचीत के बाद वह इस बात पर राजी हुआ कि ख्वाजा शमसुद्दीन के नेतृत्व में कुछ सैनिक जायें और स्थिति की वास्तविक सूचना लायें। परन्तु ख्वाजा के साथ कुछ लोग तो कायरतावश कुछ परिवार के मोह के कारण नहीं गये, कितनों ही ने अपने सिर पर कलंक ले लिया।

इस विषय में ख्वाजा ने कहा, जब मैं कुछ दूर गया तो मैंने देखा कि सब ओर से लोग शत्रु के पक्ष में जा रहे हैं और मेरा साथ छोड़ रहे हैं, थोड़ी ही देर में केवल मुत्तलिब

ही मेरे साथ रह गया। मैं और मुत्तलिब लड़े जिसमें वह आहत होकर गिर पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई। फिर मुहम्मद अली अरलाद आया। मैंने समझा कि वह मेरी सहायता करेगा। फिर मिर्जा मुहम्मद मुझे कृपा करके मासूम खां के पास ले गया, जिसने मुझको काजी जादा के सुपुर्द कर दिया। मुझे हाथी पर रख कर बांध दिया गया। वहां से मैंने देखा कि विद्रोहियों की संख्या तो बढ़ती जाती थी। परन्तु वे भयभीत हो रहे थे, फिर एकाएक वजीर जमील सेना लेकर आया। तब उनमें फिर साहस आया। वजीर जमील केवल बकवासी था। वह दोनों पक्षों की बातें करता था। उसकी समझ में नहीं आता था कि मुजफ्फर खां से लड़ाई किस प्रकार की जाये। इसी बीच में मुजफ्फर खां ने टांडा के प्राचीर के अन्दर शरण ली और लोगों को अपने पक्ष में करने के लिये वह धन-वितरण करने लगा। परन्तु कृतघ्न लोगों ने उसको घेर लिया और इससे कहा या तो हमारा साथ दो या हज्ज करने चले जाओ। तब उसने हज्ज जाना पसंद किया, विद्रोहियों ने उसको एक तिहाई सामान देना मंजूर कर लिया। परन्तु उसको विद्रोहियों की बात पर विश्वास नहीं था, इसलिये उसने कुछ विश्वस्त लोग मासूम खां के पास भेजे और 20000 अशर्फियां उसको भेंट की और रक्षा के लिए प्रार्थना की। मासूम ने प्रार्थना स्वीकार करके रक्षा का वचन दिया, रात के समय मिर्जा शर्फुद्दीन हुसेन दुर्ग में से भाग कर मासूम खां के पास चला गया। यह मिर्जा पहले बंदी था। गत वर्ष बादशाह ने इसको मुक्त करके नदी द्वारा बंगाल भेज दिया था और आदेश दिया था कि यदि वह पश्चात्ताप करे तो उसको वहां जागीर दे दी जाय, अन्यथा उसको हज्ज भेज दिया जाये। परन्तु वह पागल का-सा व्यवहार करता था इसलिये मुजफ्फर खां ने उसको दुर्ग में कैद कर लिया था। अब वह पहरेदारों से बातचीत करके दुर्ग में से निकल गया था। जब वह भागा जा रहा था तो उस पर कुछ तीर चलाये गये थे इसलिये वह आहत होकर मासूम खां के पास पहुंचा था। उसने विद्रोहियों को दुर्ग के अन्दर की परिस्थिति से परिचित किया, तब विद्रोहियों में और साहस आया। प्रातःकाल काकशाल लोग लूटमार करने लगे, मासूम खां अपने वचन पर दृढ़ रहा। वह दुर्ग में गया और मुजफ्फर खां को नहीं सताने दिया। मासूम खां के साथ कुछ सशस्त्र दास खड़े थे। जब मासूम खां आया तो मुजफ्फर खां के जनाने में बड़ा शोर मचा, जिससे उसका धैर्य टूट गया। इस गड़बड़ में मुजफ्फर खां ने 80000 रुपये एक तालाब में डाल दिये। शर्फुद्दीन को इसका पता लग गया तो उसने सारा रुपया निकलवा लिया और इससे विद्रोहियों को सहायता दी। लूट के समय विद्रोही लोग मुजफ्फर खां को देख रहे थे। कुछ लोगों को उन्होंने कारागार में भेज दिया था, उसके कुछ लोग शत्रु से जा मिले थे। ख्वाजा शमसुद्दीन अपनी जान-पहचान की वजह से बच गया था।

आठ अरदी बिहिश्त को मुजफ्फर खां का वध कर दिया गया और विद्रोहियों ने नई नियुक्तियां कीं और जागीरें बांटी तथा मिर्जा हकीम के नाम का खुतबा पढ़ा गया। अग्रणी विद्रोहियों को उपाधियाँ दी गई, मासूम खां को वकील बनाया गया और खान दौरा की उपाधि दी गई। जब्बारी को दस हजार का मनसब दिया। सईद खां तोकवाई को 1500 का

मनसब मिला। जो भी उस समय दरबार में उपस्थित था उसको जागीर दी गई। कितने ही धूर्तों को सुल्तान की उपाधि प्रदान की गई। उपाधि और जागीरों के वितरण के बाद मिर्जा हकीम के नाम खुतबा पढ़ने का निश्चय किया गया।

इसी समय यह अफवाह हुई कि शाही सेना आ रही है। तब विद्रोहियों ने मिर्जा हकीम का ख्याल छोड़ कर लड़ने का विचार करने लगे। प्रत्यक्ष में मिर्जा सरफुद्दीन हुसेन उनका नेतृत्व कर रहा था परन्तु वास्तव में मासूम और बाबा खान उनके नेता थे।

अब मैं बिहार की घटनाओं का शाही सेना के आगमन तक का वर्णन करूंगा। जब बिहार में विद्रोही लोग उत्पात कर रहे थे तो बहादुर कृतघ्नता का काम कर रहा था। वह सईद बदख्सी का पुत्र था। सईद बदख्सी अपने देश से भारत में आ गया था और अपनी चालाकी से यहां काम किया करता था। इस समय वह त्रिहुत का आमील गुजार था। जब बिहार के अधिकारियों ने विद्रोह किया तो सैयद बदख्सी ने अपने पुत्र को त्रिहुत में छोड़कर विद्रोहयों को सहायता दी। इसी बीच में बहादुर के मस्तिष्क में भी मूर्खता आई और उसने बदमाशों की सहायता करने में सरकारी रुपया खर्च किया। गड़बड़ करके उसने नाम कमाया। जब मासूम खां ने यह बात सुनी तो उसने सईद बदख्सी को कहा कि अपने पुत्र को सलाह दे कि वह विद्रोहियों के साथ-साथ काम करे। बहादुर ने यह सलाह नहीं मानी, बल्कि अपने पिता को कारागार में डाल दिया और वह बड़ा दम्भी बन गया। इसी अर्से में शाही सेना के आने की खबर फैल गई और मासूम खां कुछ विद्रोहियों के साथ जल्दी से बंगाल की ओर चला गया। वह अरब और कुछ बदमाशों को पटना में छोड़ गया। वह चाहता था कि वे लोग पटना पर शासन करें और आस-पास लूटमार करें। शाहम खां ने विद्रोहियों से पृथक् होकर हाजीपुर में स्वामिभक्ति का ध्वज खड़ा किया। उसने बहादुर के विरुद्ध सेना भेजी परन्तु वह हार गई। इससे बहादुर का दम्भ और बढ़ गया परन्तु फिर शाहम खां ने सेना चढ़ाई तो उसको विजय प्राप्त हुई और सईद बदख्सी मारा गया। मुहिब्ब अली खां ने अरब को दबा दिया। वह पटना से बाहर निकल आया था। जब वह हार कर वापस आया तो उसने देखा कि सादत अली खां जिसके सुपुर्द वह अपना घरबार कर गया था, विरोधी बन गया है। फिर लड़ाई हुई जिसमें सादत खां को आहत होकर भागना पड़ा। लगभग इसी समय मुहिब अली खां ने पटना नगर पर कब्जा कर लिया। फिर कुछ दिन में तैयारी करके सेना रवाना हुई। जौनपुर में तरसून खां, शादिक खां, गाजी खां, उलूग खां और कितने ही अधिकारी सेना में शामिल हो गये। गाजीपुर के दो कोस के अन्तर पर मासूम खां फरनखुदी भी शिविर में आ गया। यह मालूम था कि वह व्यर्थ बकवास किया करता है इसलिये यह निश्चित किया गया कि वह सेना के एक या दो मंजिल आगे चले, ताकि उसका रुख भलीभांति समझ में आ जाये। जब सेना गंगा के तट पर पहुंची तो मुजफ्फर खां की मृत्यु की खबर मिली। कुछ लोगों का उत्साह भंग हो गया परन्तु समझदार लोगों ने माना कि मुजफ्फर खां का अन्त उसके दम्भ के कारण हुआ, इसलिये उन्होंने हर्षनाद

किया। यहीं पर मुहिब्ब अली खां, शाहम खां समांजी खां और बाकी कोलाबी सेना में शामिल आ हुए। पटना के पास एक सभा हुई जिसमें अमीरों ने परस्पर मेल रखने की शपथ ली। इसके बाद उन्होंने भावी योजना पर विचार किया और सेना का व्यूह बनाया। तरसून खां, राजा टोडरमल, राय सुर्जन, राजा आशकरण, मीहतर खां और अन्य लोग मध्य भाग में रहे। दायें पार्श्व का नेतृत्व मुहिब्ब अली खां, शाहम खां, मीर आबूल मुजफ्फर खां और अन्य लोगों को दिया। बायीं ओर शादिक खां, उलूग खां, नकीब खां, कमर खां और अन्य लोग थे। अग्रसेना में मासूम खां फरनखुदी आदि थे। उस समय अरब और हबीब पास में ही उत्पात कर रहे थे। जब उन्होंने शाही सेना के आने की खबर सुनी तो वे वापस चले गये। सात खुर्दाद को सेना का शिविर मुघेर में लगा। मासूम खां फरनखुदी के मन में बहुत अर्से से कुविचार थे। वह राजा टोडरमल को मार डालना चाहता था। उसका खयाल था कि राजा को मार कर वह अपना उद्देश्य पूरा कर सकता है। इस काम के लिये उसने कितने ही बदमाश तैयार कर लिये और चाहा कि राजा उनका निरीक्षण करने आये। राजा को इस षड्यंत्र का पता लग गया तो उसने बहाना कर लिया और नहीं आया।

इस समय बंगाल के दुष्ट लोग लड़ने के इरादे से मढ़ी से आगे निकल आये थे। उनमें और शाही सेना के लोगों में लड़ाई हुई। राजा टोडरमल ने एक समिति बुलाकर विचार किया कि क्या करना चाहिये। कुछ ने कहा कि युद्ध करना चाहिये परन्तु दूरदर्शी लोगों ने कहा कि चारों ओर राजद्रोह फैल गया है और मासूम खां फरनखुदी का व्यवहार सन्तोषप्रद नहीं है इसलिये दीवार बनाकर सेना अपनी रक्षा करे और मौका देखे। कुछ लोग जो विद्रोहियों से जा मिले थे, अब वापस आ गये और उन्होंने उस दल की स्थिति की खबर दी। तब यह निश्चय हुआ कि सुरक्षित होकर मौका देखना चाहिये। थोड़े-से समय में ही 4 हाथ ऊंची और चौड़ी दीवारें बना ली गईं और नगर के दुर्ग से भी काम लिया गया। तब उस स्थान के चारों ओर विद्रोहियों ने गड़बड़ मचाई तो शाही सेना ने तोपें और बन्दूकें चलाईं। दोनों पक्ष निरन्तर लड़ते रहे। शाही सेना के कुछ लोग विद्रोह करके शत्रु से मिल गये। परन्तु शीघ्र ही विद्रोहियों ने अधीनता प्रकट की।

मिर्जा कोका को पूर्वी प्रांतों में भेजा गया। जब बादशाह को अन्तःपुर के विश्वस्त लोगों से मालूम हुआ कि कोकलताश लज्जित है और पश्चात्ताप कर रहा है तो उसको क्षमा कर दिया गया और उसके पद की वृद्धि की गई। उसको 5000 का मनसब प्रदान किया गया। कोकलताश ने निवेदन किया कि सेना का प्रबन्ध उसके सुपुर्द कर दिया जाये तो वह अच्छी सेवा करेगा। तब उसको खान आजम की उपाधि प्रदान करके विदा किया गया, उसके साथ सैयद अब्दुल्ला खां आदि को भेजा गया। बिदा करते समय उन्हें खिल्लतें और घोड़े दिये गये। यह आदेश दिया गया कि सेना के अफसर कोकलताश की आज्ञानुसार काम करें।

इसी समय हकीम अबुल फतह दरबार में आया और अपनी ओजस्विनी भाषा में बंगाल के विद्रोह का और सैनिकों के राजद्रोह का वर्णन सुनाया। उसने कहा, मैं टांडा के दुर्ग में से कूद कर आया हूं। मेरे पैरों में छाले पड़ गये हैं। मीर मुईजुलमुल्क पहले तो विद्रोहियों से मिल गया था परन्तु फिर उसने उनका साथ छोड़ दिया। फिर भी यह विचित्र बात है कि वह जौनपुर में बदमाशों को इकट्ठा कर रहा है। इस काम में मौलाना मुहम्मद यजदी उसका साथ दे रहा है। तब आदेश दिया गया कि मणिकपुर से असत खां तुर्कमान उधर जाये और बदमाशों को दरबार में लाये। तब वह उनको पकड़ कर ले आया। जिस नाम में वे लोग आ रहे थे, वह जमुना में डूब गई और मर गया। रामचन्द्र ने खान-ए-आजम को आदेश दिया कि मुईजुलमुलक के छोटे भाई मीर अली अकबर को बेड़ियां पहना कर दरबार में भेजा जाये। वह विद्रोहियों को प्रोत्साहन दे रहा था। मीर अली उसको नहीं ला सका तो रामचन्द्र हैदर दोस्त उसको दरबार में ले आये। बादशाह ने उसको कारावास में डाल दिया।

इन्हीं दिनों में शेख कुतुब का वास्तविक रूप प्रकट हो गया। वह जलेसर में जो आगरे के अधीन है एक कुटियां बना कर रहता था। शेख जमाल बख्तियार उसके जाल में फंस गया। बख्तियार ने शाही दरबार में खबर भेजी कि शेख कुतुब करामाती फकीर है तो बादशाह ने उसको मिलना चाहा। बादशाह ने मुहम्मद खान और हकीम अब्दुल फतह को भेजा कि कुतुब की गतिविधि को देख कर और समझ कर सूचना दे। उन्होंने जांच की तो मालूम हुआ कि कुतुब ठग है। तब्र बादशाह ने उसको कारागार में भेज दिया, ताकि वह लोगों को धोखा न दे। सैयद जमाल को अपने काम पर लज्जा आई।

***

प्रकरण 54

शरीफ खां का शाहजादा सुल्तान मुराद का संरक्षक नियुक्त होना और अन्य मामले

18 जुलाई, 1580 को शरीफ खां शाहजादा सुल्तान मुराद का संरक्षक नियुक्त किया गया। वह शमसुद्दीन अतगा खां का भाई था। इस समय सुजात खां की मृत्यु हो गई। जब पूर्वी प्रान्तों में उत्पात खड़ा हुआ तो गुजरात और मालवा के अफ़सरों को आदेश दिया गया कि वे दक्षिण को प्रयाण न करे। वजही यशाबल सुजात खां को ले आने के लिये रवाना हुआ। सुजात खां सिजदा करने के लिये चला, परन्तु पहली मंजिल पर ही उसकी मृत्यु

हो गई। तब ईवजबेग बरलास आदि ने हाजी शिहाबुद्दीन को अपना नेता बना लिया। तब बदमाशों ने शोर मचाया। ईवजबेग का पुत्र कवीम खां बाहर यह देखने के लिये आया कि क्या खबर है तो वह मारा गया। तब सुजात खां बाहर आया परन्तु अपनी स्थिति अच्छी ने देखकर वह अपने डेरे में भाग गया। मार्ग में उसके कई घाव लगे। तब उसके स्वामिभक्त सेवक उसे हाथी पर बिठाकर सारंगपुर ले गये। उन्होंने यह प्रकट किया कि वह जीवित है। इस प्रकार उसको अपने स्थान पर पहुंचा दिया और उसकी सम्पत्ति लुटने से बच गई।

जब बादशाह को यह खबर मिली तो उसने सुजात खां की ओर से ईश्वर से क्षमा मांगी।

इसी समय शाहबाज खां दरबार में आया। उसको अजमेर सूबा के दम्भी लोगों को दण्ड देने के लिये भेजा गया था। उसके परिश्रम से राणा प्रताप को भाग कर छिपना पड़ा और बड़े कष्ट सहने पड़े। शाहबाज खां ने तेजमल सिशोदिया के निवास पर भी सफल आक्रमण किया। कितने ही दुष्ट लोग मारे गये और उनके मकान लूट लिये गये। शाहबाज खां का आतंक छा गया। जब पूर्वी जिलों में फूट फैली तो शाहबाज खां को उधर की ओर भेजा गया। इसी समय पूर्व से सेना ने प्रार्थना-पत्र भेजा कि उत्पात को दबाने में देर लगेगी। यदि स्वयं बादशाह आये तो जल्दी हो सकती है। तब बादशाह ने सहायक सेना भेजी।

एक घटना यह हुई कि शत्रु की नवसेना पूर्वी सेना के वीर लोगों के हाथ में पड़ गई। शत्रु की सेना की संख्या बढ़ गई थी। इसलिये शत्रु को बड़ा दम्भ हो गया था। शाही सेना में सैनिक कम थे और दुर्ग में बन्द थे। उनके पास खाने की चीजें जलमार्ग से पहुंचती थी। इसलिये मिर्जा सरफुद्दीन हुसेन और मासूम खां ने पटना से रवाना होकर स्थलमार्ग छीन लिया। फिर शत्रु की 300 नावें जिन पर युद्ध-सामग्री लदी हुई थी, छीन ली गई, इससे शाही सेना की शक्ति बढ़ गई। इसी समय ख्वाजा शमसुद्दीन खाफी विद्रोहियों में से भाग कर आ गया। जब मुजफ्फर खां मारा गया तो मासूम खां ने इस ख्वाजा को अपने पास रख लिया था। मासूम खां को सन्देह था कि ख्वाजा के पास धन है। जब मासूम खां को ठंडे तरीके से धन नहीं मिला तो उसने ख्वाजा को दुष्ट और निर्लज्य लोगों के सुपुर्द कर दिया, जिन्होंने उसको बड़ी यातनायें दीं।

सौभाग्य से अरब बहादुर ने पुरानी मित्रता के कारण ख्वाजा को सम्भाल लिया और बहाना यह किया कि वह ख्वाजा से संग्रहीत धन निकलवा लेगा। उसने ख्वाजा की पैरों क़ी बेड़ियां उतरवा दीं। तब अवसर मिलते ही ख्वाजा भाग कर गोरखपुर में राजा संग्राम के पास चला गया और शत्रु के काफिलों पर आक्रमण करने लगा। उनके पशुओं को पकड़ने लगा। कुछ समय बाद हुसेन अली अरब, आफाक दीवाना आदि जो विवश होकर शत्रु के

पास चले गये थे, ख्वाजा के पास आ गये। इस प्रकार ख्वाजा के पास 1200 आदमी इकट्ठे हो गये और शत्रु की संख्या घटने लगी।

शाहमंसूर दीवान को कैद किया

शाहमंसूर वजीर था और बड़ी ईमानदारी से भूमिकर का संग्रह करता था। परन्तु वह समय को देख कर नहीं चलता था। ख्वाजा भी भूमिकर को बढ़ाना चाहता था। राजा टोडरमल ने सूचना भेजी कि शाही सेवक युद्ध में लगे हुए हैं और अधिकारी लोग समय पर विचार किये बिना काम कर रहे हैं, इस प्रकार भूमिकर बढ़ाना और मांगना उचित नहीं है। तब बादशाह ने शाह मंसूर को पदच्युत करके उसको शाह कुली खां महरम के सुपुर्द कर दिया। वजीर का पद वजीर को दिया गया। इस कृपा के कारण पूर्वी प्रान्तों में सैनिक अधिक उत्साह से लड़ने लगे और कितने ही लोगों ने कृतघ्नता छोड़ कर अधीनता स्वीकार की।

शाहजादा दनियाल की अजमेर-यात्रा

बादशाह प्रति वर्ष अजमेर की यात्रा किया करता था। परन्तु इस वर्ष उसने शाहजादा दनियाल को दरगाह की यात्रा करने के लिये भेजा। शाहजादा ने 8 जुलाई, 1580 को प्रस्थान किया। शेख जमाल, माधोसिंह, शेख फैजी, जमाल खां और अन्य घनिष्ठ दरबारी लोग उसके साथ थे।

हकीम-उल-मुल्क को हज्जाज भेजा

बादशाह ने हकीम-उल-मुल्क को हज्जाज जाने का आदेश दिया। उसके मन में लोभ था, इसलिये वह हज्जाज नहीं जाना चाहता था। उसने चाहा यह बात टल जाये। परन्तु नहीं टली इसलिये अगस्त, 1580 में वह रवाना हो गया और संग्रहीत द्रव्य अपने साथ ले गया।

शाहजादा दनियाल अजमेर से वापस आ गया। उसने वहां खूब खैरात बांटी।

बिना कान का आदमी

शाही दरबार में एक ऐसा आदमी आया जिसके कान नहीं थे, न छेद थे। परन्तु वह सब कुछ सुन सकता था।

इतिमाद खां गुजराती के उत्तरदायित्व में वृद्धि हुई

जब गुजरात की प्रथम विजय हुई तो इतिमाद ने अच्छा काम किया था। अब बादशाह उसको पुरस्कृत करना चाहता था इसलिये सरकार पट्टन उसको जागीर में दे दिया गया और गुजरात के खालसे की भूमि का प्रबन्ध भी उसी के सुपुर्द कर दिया। बिदा करते समय भी

उसको 30 हाथी और 100 घोड़े दिये गये। मीर अबू तुराब का उसका सलाहकार नियुक्त किया गया।

यूसुफ खां चक की कश्मीर को वापसी

यह लिखा जा चुका है कि कश्मीरियों की दुष्टता के कारण यूसुफ खां चक को बड़ी विपत्ति उठानी पड़ी थी। पर भाग्यवश वह शाही दरबार में आया। राजद्रोहियों ने सैयद मुबारक को गद्दी पर बिठा दिया। परन्तु दो मास भी नहीं बीते कि दुष्ट और निर्लज्ज लोगों ने उसको कोने में डाल दिया और यूसुफ खां के चचेरे भाई लौहर चक को गद्दी पर बिठा दिया। यूसुफ खां को कश्मीर जाने की अनुमति दे दी गई और पंजाब के अधिकारियों को आदेश दिया गया कि उसके साथ उपयुक्त सेना कर दी जाये। जब कश्मीरियों की नींद खुली और वे अनुनय-विनय करने लगे। यूसुफ खां का बड़े-बड़े आदमियों ने स्वागत किया। तब सैयद मुबारक ने शम्स चक और हैदर चक को आदेश दिया कि यूसुफ खां को भगा दिया जाये। वह लोग लड़ने को तैयार हो गये। परन्तु यूसुफ खां को युद्ध करने का साहस नहीं हुआ। लौहर चक ने सेना सहित उसको रोका। लौहर चक की अधिकांश सेना अन्यत्र गई हुई थी इसलिये यूसुफ खां ने 8 नवम्बर, 1580 को विहात (झेलम) नदी पार की और विरोधी सेना को छिन्न-भिन्न कर दिया तथा लौहर चक को पकड़ लिया। फिर उसकी आंखें फुड़वा दी गईं। इस प्रकार यूसुफ खां चक ने कश्मीर का राज्य पुनः प्राप्त कर लिया।

चन्द्रसेन की पराजय

पहले लिखा जा चुका है कि मालदेव के पुत्र चन्द्रसेन ने अधीनता स्वीकार कर ली थी परन्तु फिर वह विद्रोही बन गया। वह एकान्त में जाकर अनुकूल अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। फिर पहाड़ियों में से निकल कर अजमेर की कुछ जागीरों में उसने उपद्रव करना शुरू किया। तब सूबा अजमेर के मुसलमान जागीरदारों को आदेश दिया गया कि वे मिलकर चन्द्रसेन को दंड दे। उन्होंने आदेश का पालन किया तो चन्द्रसेन ने शाही सेना का सामना किया और ज़ोरदार लड़ाई हुई जिसमें क्षति उठा कर चन्द्रसेन पीछे हट गया।

***

प्रकरण 55

पूर्वी प्रान्तों के विद्रोहियों की पराजय

शाही सेना और विद्रोही सेना आमने-सामने खड़ी थी। प्रतिदिन कुछ झपटें हुआ करती थीं। तरसूम खां, राजा टोडरमल आदि स्थिति को जानते थे इसलिये वे आगे नहीं बढ़े। परन्तु सादिक फरीद और उलूग खां ने खूब युद्ध किया। बुद्धिमान बादशाह की दृष्टि इन घटनाओं पर लगी हुई थी। वह एक के बाद दूसरी सेना सहायतार्थ भेज रहा था और धन भी भेजता था इससे लोगों को शक्ति मिलती थी। वह अपने कुछ चुने हुए दरबारियों को घोड़ों और खिल्लत भेज कर पूर्वी प्रान्त के अधिकारियों को प्रोत्साहन दिया करता था।

विद्रोही लोगों ने दुर्ग को दो मास से घेर रखा था। परन्तु अब उनकी स्थिति बिगड़ने लग गई थी। खाने अजीम शाहबाज खां और अन्य अफ़सर अभी नहीं आये थे परन्तु उनके आने की सूचना से ही विद्रोही लोग घबरा गये थे। जो शाही अधिकारी दूरदर्शिता के कारण बाहर निकल कर लड़ना नहीं चाहते थे। उन्होनें भी अब बाहर निकल कर वीरतापूर्वक लड़ना ठान लिया। तब 25 जुलाई, 1580 को विद्रोही भी लड़ने के लिये तैयार हो गये। फिर भी शाही अधिकारियों के मन में आशंका थी और वे आगा-पीछा कर रहे थे। अन्त में वह बाहर निकले, फिर ख्वाजा शमसुद्दीन 1200 सवारों सहित आ गया। उसके आ जाने से शत्रु की परेशानी और बढ़ गई, शाही सेना की विजय हो गई। जब अकबर ने यह खबर सुनी तो उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया।

उस देश की घटनाएं

जब लोगों के वास्तविक रूप का पता लग गया तो उनमें से कुछ तो देश में ही रहकर नष्ट हो गये। कुछ युद्ध में जाकर समाप्त हो गये। उड़ीसा वाला कियां खां, फतहाबाद वाला मुराद खां, सतगांव वाला मिर्जा निजात खां की जबान पर सेवा की बात रहा करती थीं परन्तु उन्होंने बातों के सिवाय कभी कुछ नहीं किया, मुराद खां की स्वाभाविक मृत्यु हो गई। उस देश के जमींदार ने उसके पुत्रों को बुला कर मार डाला। किया खां के दिन विफलता में व्यतीत हुए, उस देश के जमींदारों का जोर बढ़ गया। कत्लू खां ने मिर्जा निजात पर चढ़ाई की। सलीमाबाद में युद्ध हुआ तो मिर्जा निजात हार कर प्रताब बार फिरंगी की शरण में चला गया। समय ने इन चिमगादड़ों से उपयुक्त बदला लिया उसी समय बाबा ई काकशाल को एक बुरा रोग हुआ तो भी उसने मिर्जा निजात की सहायता के लिये हमजबान को भेजा। वह आधे ही रास्ते पहुंचा, कि उसने कत्लू खां की विजय का हाल सुना। मंगलकोट के पास उसकी कत्लू से लड़ाई हुई। वह हार कर भाग गया। तब बाबाई काकशाल बदला

लेने के लिये तैयार हो गया। तब कत्लू खां ने आगे आकर मीठी-मीठी चालाकी की बातें कीं। इसको कैंसर का असाध्य रोग हो गया। वह कहा करता था, मैंने दुष्टता और नमकहरामी की है इसलिये मेरी यह गति हुई है। जब बिहार के विद्रोहियों ने इस घातक रोग का समाचार सुना तो वे तितर-बितर हो गये। मिर्जा शरफुद्दीन हुसेन जब्बारी और कुछ दुष्ट लोग बंगाल चले गये। मासूम खां काबुली और कुछ अन्य लोग बिहार पहुंच गये। अरब बहादुर और नूरम आदि लूटमार करने लगे। चौधरी कृष्ण शाही सेवकों के लिये कोष ले जा रहा था तो अरब बहादुर और अन्य लोग उसको लूटने के लिये दौड़े। तो कृष्ण चतुरता से भाग कर पटना पहुंच गया। बहादुर खां ने स्वामिभक्तिपूर्वक दुर्ग की रक्षा की। जो लोग मासूम खां का पीछा कर रहे थे वे पटना चले गये। वे इस बात पर सहमत हो गये कि मुख्य सेना तो आगे बढ़ती जाये और कुछ लोग पटना की ओर चले। मासूम खां फरनखुदी ने प्रार्थना की कि यह सेवा उसके सुपुर्द की जाये। राजा टोडरमल ने उसकी बात मानी परन्तु दूरदर्शिता के विचार से मुहिब्ब अली खां और मिहर अली खां को उसके पीछे-पीछे भेजा। जब विद्रोही लोग दुर्ग के बाहर के हिस्से को छीन चुके थे और दुर्गसेना की दशा नाजुक हो गई थी तो उपरोक्त लोग आये। विद्रोहियों ने सामना किया परन्तु हार गये। दुर्ग की कोई क्षति नहीं हुई। मासूम खां ने अच्छी सेवा की थी। परन्तु शाही सेवकों की अनुमति बिना ही वह जौनपुर चला गया था। मार्ग में उसने बहादुर के सेवकों से हाजीपुर छीन लिया। उसके बाद हाजीपुर पर उसका अधिकार रहा।

***

प्रकरण 56

मासूम खां काबुली ने रात में आक्रमण किया और वह हार गया

अरब बहादुर के उत्पात को दबाने के पश्चात् शाही सेना सराय रानी से रवाना होकर बिहार पहुंच गई। वह मासूम खां काबुली के उत्पातों को दबाना चाहती थी। जब सेना आगे बढ़ी तो मासूम खां बिहार के बाहर आया और उत्तर की पहाड़ियों की ओर चला। सितम्बर, 1580 में शाही सेना कस्बा गया के पास पहुंच गई। प्रात:काल शत्रु ने वहां से चलकर बहीरा नगर के पास डेरे लगाये। अगले दिन शाही सेना ने 4 कोस कूच किया। अब मासूम खां दो परसंग की दूरी पर था, राजा टोडरमल और सादिक अली ने लड़ने की तैयारी कर ली। उस रात्रि को उलूग खां हबसी और उसके लोगों ने पहरा दिया। सेनानायक सो गये और

उलूग खां हबसी ने सुस्ती की। तब शत्रु ने उत्पात करना शुरू किया। जब एक पहर रात बीत गई तो उन्होंने आक्रमण किया। पहरे वाले असावधान थे इसलिये माह बेग और कुछ हबसी लोग मारे गये। विद्रोहियों का उत्पात सादिक खां के डेरे तक पहुंच गया। सादिक खां डटा रहा। इसी बीच में कमाल खां दो हाथियों के साथ आया तो लड़ाई और भी जोर से होने लगी। विद्रोहियों में गड़बड़ मच गई और विजय शाही सेना की ओर झुकने लगी। हाथियों ने शत्रु में तहलका मचा दिया और कितने ही घुड़सवारों को गिरा दिया। एक हाथी को 82 और दूसरे को 55 बाण लगे। कितने ही शाही सेवक आहत हो गये, परन्तु मृत्यु किसी की नहीं हुई और शाही सेना की विजय हुई, परन्तु उन्होंने शत्रु का पीछा नहीं किया। कारण यह था कि रास्ते पानी से भरे हुए थे और घना जंगल था। शत्रु केवल तीन कोस की दूरी पर था, परंतु उसका पीछा नहीं किया गया।

खान आजम, शत्रु से मिल गया

कोकलताश के आने में विलम्ब इसलिये हुआ, जब उसने चौसा के पास नदी पर की तो वह दलपथ उज्जैनिया के उत्पात को दबाने में लग गया। उसी समय शाहबाज खां आ गया और उसने खान आजम को भी रोक लिया। सबने मिलकर जगदीशपुर को लूट लिया जो विद्रोही का स्थान था। शाही सेवकों ने वहीं ठहर कर प्रतिदिन लड़ाइयां कीं। नित्य प्रति बकवासी लोग इधर-उधर की बातें करते थे, जिससे खान-ए-आजम और शाहबाज खां में अनबन पैदा हो गई। कोकलताश पीछे हट गया और दूसरे दिन शाही शिविर में पहुंच गया।

सादत अली खां की मृत्यु

अरब बहादुर और कुछ अन्य विद्रोहियों ने शाहबाज खां के विरुद्ध प्रयाण किया। उसकी सहायता के लिये शाही सेवकों ने सादत अली खां, कमर खां आदि को सैनिकों के साथ रवाना किया तो विद्रोही लोग तितर-बितर हो गये। देश की रक्षा के लिये शाहबाज खां ने जहां-तहां सैनिक नियुक्त कर दिये और कान्त दुर्ग जो रोहतास के अधीन है, सादत अली खां, पाईन्दा, रुस्तम और रूपनारायण को दे दिया और अरब और दलपत को मौका मिला और उन्होंने आक्रमण किया। फिर लड़ाई हुई जिसमें वे मारे गये। सादत अली खां विद्रोह के आरम्भ में शत्रु के साथ था, लेकिन मरने से पहले वह पुनः स्वामिभक्त बन गया था।

जब खान-ए-आजम शाही सेना में आ गया तो बड़ा हर्ष हुआ। विद्रोही लोग बंगाल की ओर भाग गये। उनका न तो पीछा किया गया और न बंगाल पर अभियान किया गया। अन्यथा उनके पर कट जाते। शहर बहीरा से रोहतास तक का मुल्क मुहिब्ब अली खां के सुपुर्द कर दिया गया। उसके साथ कुछ अधिकारी भेजे गये। उस दिन दोस्त मुहम्मद बाबा

दोस्त, 200 आदमियों के सहित शाही सेवकों में आ मिला। जब शाही सेना गयासपुर के निकट पहुंची तो मालूम हुआ कि अरब बहादुर शाहबाज खां से हारकर सारंगपुर चला गया है और निर्बल लोगों को लूट रहा है। तब उसको दण्ड देने के लिये शाहम खां और अन्य जागीरदारों को भेजा गया। गाजी खां बदख्शी को सेनासहित बिहार में रखा गया। जब यह खबर आई कि मासूम खां फरनखुदी विद्रोही बन गया है तो तारसन खां को जौनपुर भेजा गया। सादिक खां आदि को विद्रोहियों को दबाने के लिये मुंगेर की ओर रवाना किया। खान-ए-आजम राजा टोडरमल और अन्य लोग पटना और हाजीपुर की ओर रवाना हुए। शाहबाज खां ने दलपत और अरब बहादुर को हराकर हाजीपुर को छीन लिया था। इसलिये वह दम्भी हो गया। जब मासूम खां फरनखुदी जौनपुर पहुंचा तो बहादुर हाजीपुर पर अधिकार कर चुका था। विजय-प्राप्ति से उसका मस्तिष्क भिन्ना गया और वह शत्रु का-सा व्यवहार करने लगा। पहले तो उसने हाजीपुर समर्पित करने में विलम्ब किया जो दरबार से कोकलताश को दे दिया गया था। राजा टोडरमल ने समझा-बुझा कर उससे हाजीपुर दिलवाया। खान-ए-आजम और राजा टोडरमल हाजीपुर में और शाहबाज खां पटना में रहने लगे। अब खान-ए-आजम को सब बातों से ग्लानि हो गई थी। राजा टोडरमल भी प्रत्येक काम को स्थगित किया करता था अतः सारा भार शाहबाज पर आ गया था। लोगों ने प्रयत्न किया, परन्तु इन बड़े-बड़े अधिकारियों में मेल नहीं हुआ। खान-ए-आजम और राजा टोडरमल कुछ अधिकारियों के साथ तिरहुत चले गये। उनका कहना तो यह था कि बहादुर का दमन करना चाहते हैं परन्तु वास्तव में वे शाहबाज खां से दूर रहना चाहते थे। थोड़ी दूर जाकर उन्होंने गाजी खां को आगे भेजा। बहादुर लड़ने के लिये तैयार हो गया तो वह हार गया और उसका घर लूट लिया गया तथा उसके परिवार को बन्दी बना लिया गया। शाहबाज खां एक बड़ी सेना लेकर जौनपुर चला गया। उसके भी विचार अच्छे नहीं थे परन्तु वह कहता यह था कि मैं मासूम खां फरनखुदी को समझाकर पुनः उससे सेवा कराऊंगा।

सरफुद्दीन हुसेन मिर्जा की मृत्यु

जब मासूम खां काबुली बंगाल की ओर भाग गया तो उसमें और मिर्जा में अनबन हो गई और एक-दूसरे की घात करने में लग गये। मिर्जा को अभिमान आ गया। तब चालाक मासूम उसको विष देने का षड्यन्त्र सोचने लगा। मिर्जा के पास महमूद नामक एक हिन्दुस्तानी लड़का था जिससे वह प्रेम करता था। मासूम ने उसको रुपया दिया और उसके द्वारा मिर्जा की अफीम में विष मिलवा दिया। थोड़े समय में ही मिर्जा की मृत्यु हो गई।

दस्तम खां की मृत्यु

गत वर्ष उसको विद्रोहियों का दमन करने के लिये सूबा अजमेर भेजा गया था और उसने अच्छा काम किया था। इसी समय मोहन सूरदास और तीलूकसी की जो राजा बिहारीमल के भाई के पुत्र थे, पंजाब से अनुमति लिये बिना ही देश आकर लूनी कस्बे

में उत्पात करने लगे। तब आदम ताजबन्द को दरबार से आदेश दिया गया कि दस्तम खां उनको अधीनता के मार्ग पर लाये और यदि वह न माने तो उन्हें दण्ड दे। विद्रोहियों के साथ उसकी थोरी गांव के निकट लड़ाई हुई। शाही अग्रसेना पर मोहनदास, सूरदास और तिलूकसी टूट पड़े। शाही सेना के अग्रभाग का नेतृत्व मिसकीन अली कर रहा था। वह वीरतापूर्वक लड़ा। दस्तम खां ने अपने आदमियों को आगे भेजा तो बड़ी जोर की लड़ाई हुई। मोहनदास और सूरदास और तिलूकसी मारे गये। प्रधान नेता ऊचला ज्वार के खेते में छिप गया। फिर उसने एकदम बाहर निकल कर दस्तम खां को ललकारा और उस पर भाले का वार किया तो उसको घातक घाव लगा। दस्तम खां ने उसको फिर भी अपनी तलवार से मार डाला और स्वयं अचेत होकर भूमि पर गिर पड़ा। शेष शत्रु भाग गये। विद्रोहियों के मकान लूट लिये गये और बड़ी विजय प्राप्त हुई। लड़ाई के बाद शाही सेवक उसी गांव के निकट ठहरे। अगले दिन लौटते हुए दस्तम खां शेरपुर के पास मर गया तो बादशाह अकबर को बड़ा दुःख हुआ और उसने दस्तम की मां को सान्त्वना दी।

ख्वाजा शाह मनसूर पर बादशाह की कृपा

पहले लिखा जा चुका है कि इस ख्वाजा को वजीर के पद से हटा दिया गया था, फिर प्रकट हुआ कि हिसाब तैयार करने में और बकाया के संग्रह में ख्वाजा शाह मनसूर का केवल इतना ही दोष था कि वह भूमिकर में वृद्धि करना चाहता था और उसने तत्कालीन परिस्थिति पर विचार नहीं किया था इसलिये उसको पुनः उसी उच्च पद पर आसीन कर दिया गया।

वजीर खां को अवध भेजा गया। वहाँ कोई बड़ा अफ़सर नहीं था। उसके साथ कितने ही अच्छे सेवक और सैनिक रवाना किये गये।

नियाबत खां को दण्ड

इसका नाम अरब था और यह मीर हासिम निशापुरी का पुत्र था। इसने लड़कपन से ही शाही सेवा की थी। बादशाह का इस पर बड़ा विश्वास था। कुछ दिन उसने खालसा की भूमि का प्रबन्ध किया। तब कोरकून लोगों ने उस पर बकाया का दोष लगाया। तब उसने विद्रोह करके करा के कस्बे को घेर लिया। इलियास खां लंका ने एक लड़ाई की जिसमें वह मारा गया। यह खबर सुनकर बादशाह ने इस्माइल कुली खां आदि स्वामिभक्त सेवकों को भेजा। वजीर खां और प्रान्त के अन्य अफ़सरों को आदेश दिया कि मिलकर काम करें और अरब को दण्ड दें। जब शाही सेना आई तो अरब ने कुछ दुर्गों को दृढ़ किया और वह अरेल चला गया। इस्माइल कुली खां और अन्य लोगों ने नियाबत खां का पीछा किया और कनतित नदी के पास लड़ाई हुई। शाही सेना हारने ही वाली थी कि अचानक इस्माइल कुली खां आ गया जिससे युद्ध की ज्वाला धधक उठी और शाही सेवकों

को विजय प्राप्त हो गई। शत्रु के बहुत-से आदमी मारे गये, उनका सामान और घोड़े आदि लूट लिये गये।

***

प्रकरण 57

मासूम खां फरनखुदी का वृत्तान्त

जब अकबर का प्रताप बढ़ने लगा, विद्रोहियों की क्षति होने लगी और साथ ही यह खबर आने लगी कि हकीम मिर्जा पंजाब पर आक्रमण करने वाला है और अकबर उधर की ओर प्रयाण करेगा तो मासूम खां फरनखुदी की कृतघ्नता और दम्भ प्रकट होने लगे। उसने तारसून खां के सैनिकों से जौनपुर छीन लिया। बहुत अर्से तक तो दरबारी लोगों को विश्वास ही नहीं हुआ कि जिस पर बादशाह ने इतने उपकार किये हैं वह ऐसी अधमता कर सकता है। अन्त में बादशाह ने एक बुद्धिमान आदमी को उसके पास भेजने का निश्चय किया और आदेश दिया कि फरनखुदी को समझाया जाये कि या तो वह शाही सेना में सम्मिलित हो जाये या दरबार में आकर अधीनता प्रकट करे। जब फरनखुदी ने दोनों में से एक भी काम नहीं किया तो आदेश दिया गया कि वह जौनपुर से हट कर अवध चला जाये और अवध को अपनी जागीर समझे। प्रत्यक्ष में तो फरनखुदी ने आदेश मान लिया, परन्तु वास्तव में वह उत्पात के साधन जुटाने लगा। जब उसकी शिकायतें आने लगीं तो कुछ विश्वसनीय आदमियों को वास्तविक स्थिति जानने के लिये भेजा। परन्तु इन लोगों ने लोभवश यह सूचना दी कि फरनखुदी स्वामिभक्त सेवक है और झूठी खबरों के कारण कुछ अशान्त हो गया है। यदि एक या दो उदार दरबारी उसके पास भेजे जायेंगे तो वह दरबार में आकर सब प्रकार अधीनता प्रकट करेगा। यह सलाह मान कर अकबर ने इस काम के लिये शाह कुली खां महरम और राजा बीरबल को भेजा। पास पहुंच कर इन लोगों ने फरनखुदी के पास बादशाह का कृपापूर्ण संदेश भेजा। परन्तु उसने इसका उत्तर अनुचित भाषा में दिया।

तब विफल होकर वे लोग वापस चले गये। शाहबाज खां ने सेनासहित आकर राजद्रोह दबा दिया।

शाही सेना में भी एकता नहीं थी, उनकी नीति एक नहीं थी। खाने आजम, राजा टोडरमल तिरहुत चले गये। शाहबाज खां जौनपुर पहुंच गया, इस प्रकार बंगाल की विजय और विद्रोहियों के दमन में विलम्ब हो गया। जब शाहबाज खां विहिया नामक कस्बे पर

पहुंचा तो उसको खबर मिली कि तारसेन खां के आदमियों ने अरब बहादुर को हरा दिया है। हारने के बाद भी वह पास ही लोगों को लूट रहा है। तब कुछ आदमियों को भेज कर उसको उपयुक्त दंड दिया गया। विहिया से शाहबाज खां जगदीशपुरी पहुंचा, वहां ठीक पता लगा कि मासूम खां फरनखुदी विद्रोही बन गया है और नियामत खां उसकी सहायता कर रहा है, तब शाहबाज खां अवध गया। मासूम खां के नाम एक आदमी के साथ पत्र भेजा, इसमें लिखा था कि तुम अरब नियामत खां और शाहदाना को पकड़ कर दरबार में ले जाओ। परन्तु मासूम खां की बुद्धि मंद हो गई थी इसलिये उसने यह सलाह नहीं मानी, उसने अपने कुटुम्ब को सरयू पार दुर्गम देश में भेज दिया। फिर मासूम खां फरनखुदी और शाहबाज खां दोनों लड़ने के लिये तैयार हो गये। शाहबाज खां ने अपनी सेना का व्यूह बनाया, उसी प्रकार मासूम खां ने भी तैयारी की। 22 जनवरी, 1581 को एक पहर दिन चढ़े सुल्तानपुर विलहरी के निकट जो अवध से 25 कोस की दूरी पर है यह युद्ध हुआ, जिसमें फरनखुदी हार गया। परन्तु लड़ाई बड़ी जोर की थी और मासूम खां वीरतापूर्वक लड़ा था। शाहबाज खां का साहस भंग हो गया था और वह भाग गया था। फिर यह खबर उड़ा दी गई थी कि मासूम खां मारा गया है। मासूम खां कुछ दूर चला गया था परन्तु वह (मासूम खां) वापस रणभूमि में आ गया, वहां उसका एक भी आदमी नहीं था। परन्तु फिर उसकी सेना अचानक ही आ गई। तो भी शत्रु हार गया और शाही सैनिक उसके डेरों को लूटने लगे। अब शीघ्रगामी संदेशवाहकों के द्वारा विजय का समाचार शाहबाज खां के पास भेजा गया। उस समय शाहबाज खां रणभूमि से 30 कोस दूर जौनपुर में था। जब बादशाह को विजय का समाचार मिला तो उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया।

इसी समय अकबर ने सोचा कि बारह वर्ष में 1 दिन चूहे नहीं मारना चाहिये, एक दिन बैलों को खूब खिलाना पिलाना चाहिये (उन्हें किसानों को दे देना चाहिये), एक दिन चीते नहीं पकड़ना चाहिये, उसके द्वारा शिकार नहीं करना चाहिये, एक दिन न खरगोश खाना चाहिये न शिकार करना चाहिये, एक दिन मछलियों के साथ भी ऐसा करना चाहिये, एक दिन सांपों को भी नहीं मारना चाहिये। एक दिन घोड़ों को न खाना चाहिये न मारना चाहिये, एक दिन भेड़ों के विषय में भी ऐसा करना चाहिये, बंदरों के विषय में ऐसा करना चाहिये। जो पकड़ लिये गये हैं उन्हें छोड़ देना चाहिये। एक दिन मुर्गे नहीं खाना चाहिये और न उन्हें लड़ाना चाहिये। एक दिन शिकार में कुत्तों का उपयोग नहीं करना चाहिये और इनके पालने पर ध्यान करना चाहिये। एक दिन सुअरों को क्षति नहीं पहुंचानी चाहिये। इसी प्रकार वर्ष के प्रति मास में भी अच्छा काम करना चाहिये।

1. मुहर्रम मास में प्राणियों को नहीं मारना चाहिये।
2. सफर मास में कैदियों को छोड़ना चाहिये।
3. रवि उल अव्वल में 30 चुने हुए निर्धनों को भेंट देनी चाहिये।
4. रवि उल आखिर में शरीर को शुद्ध करना चाहिये। विलास नहीं करना चाहिये।

5. जमादुल अव्वल में बढ़िया कपड़े या रेशम नहीं पहनना चाहिये।
6. जमादिल आदिर में चमड़े का उपयोग नहीं करना चाहिये।
7. रजब मास में अपनी आयु के 40 आदमियों की सहायता करनी चाहिये।
8. शाबान मास में किसी पर अत्याचार नहीं करना चाहिये और न किसी को कटने देना चाहिये।
9. रमजान मास में 30 गरीब आदमियों को कपड़ा देना चाहिये और भोजन करवाना चाहिये।
10. शव्वाल मास में प्रतिदिन ईश्वर के 1000 नाम लेने चाहिये।
11. जिलकदा मास में प्रतिदिन दूसरे धर्म वाले लोगों को भेंट देनी चाहिए।
12. जिलहज्जा मास में उपयोगी मकान बनवाने चाहिये।

इसी समय बहादुर बस्की की मृत्यु हो गई, वह बंगाल के विद्रोहियों का नेता था। बिहार प्रान्त में उसने जान मुहम्मद बिहसूदी से मिल कर अत्याचार किये थे। जब शाही अधिकारियों में फूट फैल गई और इस कारण शाही सेना का बंगाल की ओर प्रयाण स्थगित हो गया तो सादिक और साथी मुंगेर के निकट डट गये। उलूग खां हब्शी आदि लोग भागलपुर गये और अपने कर्तव्य की उपेक्षा करने लगे, तब बहादुर और उसके साथियों ने उन पर आक्रमण किया। शाही अफ़सर उनको नहीं रोक सके और वापस मुंगेर चले गये। तब सादिक खां ने विद्रोहियों से लड़ाई करने के लिये कुछ अनुभवी आदमी भेजे तो उनका मुखिया बहादुर मारा गया और दूसरे लोग बंगाल की ओर भाग गये।

***

प्रकरण 58

पंजाब पर अभियान, हकीम मिर्जा का पलायन और काबुल की वापसी

जिस समय विद्रोहियों ने पूर्वी प्रान्तों में उत्पात मचा रखा था, तब शाही सेवकों ने आग्रह किया था कि पंजाब पर अभियान किया जाये, परन्तु अकबर ने यह बात स्वीकार नहीं की। पिछले वर्ष ही मिर्जा भारत के शान्त देश में गड़बड़ मचाना चाहता था परन्तु मिर्जा सुलेमान ने उसका ध्यान बदख्शां की ओर मोड़ दिया था। वहां की सफलता से उसका साहस और बढ़ गया और जब उसने पूर्वी प्रान्तों की खबर सुनी तो उसने हाजी नूरुद्दीन के नेतृत्व

में 1580 के दिसम्बर मास में भारत पर आक्रमण करने के लिये एक सेना रवाना की। हाजी नूरुद्दीन ने सिन्धु नदी पार की तो उस प्रदेश के जागीरदार मिर्जा यूसुफ खां ने हसन बेग के नेतृत्व में एक शाही सेना भेजी। सैयद खां गक्खड़ और कुछ अन्य लोग भी नूरद्दीन के साथ शामिल हो गये। थोड़े समय बाद एक लड़ाई हुई जिसमें नूरुद्दीन मारा गया। उसके मारे जाने की घटना विचित्र है। जब शाही सेना के डेरे लगने ही वाले थे, तो हिरणों का एक समूह अचानक ही दिखाई दिया और हसन बेग ने एक हिरण को तीर मारा और उसका पीछा किया। दूसरी सेना का नायक इस दृश्य को देखने के लिए बाहर निकला। इस प्रकार हसन बेग और हाजी नूरुद्दीन का मुकाबला हो गया। तब हाजी नूरुद्दीन आहत होकर भाग गया। शत्रु के कुछ लोग पकड़ लिये गये और बहुत-से नदी में डूब गये। पेशावर के पास विद्रोह शान्त हो गया। हाजी नूरुद्दीन हिसार का निवासी था। उसने मुहम्मद हुसेन मिर्जा के साथ कृतघ्नता की थी। जब इस मिर्जा की मृत्यु हो गई तो उसने काबुल पहुंच कर कुछ विश्वास प्राप्त कर लिया।

कुंवर मानसिंह सीमा प्रान्त का सूबेदार

मिर्जा यूसुफ खां ने सीमा प्रान्त का शासन अच्छा नहीं किया था इसलिये उसके स्थान पर कुंवर मानसिंह को नियुक्त कर दिया गया। कुंवर मानसिंह ने स्यालकोट से प्रयाण किया और जैनूद्दीन अली को कुछ सेना देकर आगे भेजा। जब हकीम मिर्जा ने सुना कि नूरुद्दीन मारा गया तो उसने सादमान को एक बड़ी सेना देकर रवाना किया, जिसने सिन्धु नदी पार करके नील आब के दुर्ग को घेर लिया। जैनूद्दीन अली और अन्य लोगों ने दुर्ग की रक्षा करने में बड़ा परिश्रम किया। जब कुंवर मानसिंह वहां पहुंचा और लड़ाई हुई जिसमें सादमान आहत होकर भाग गया और कुछ दूर जाकर मर गया। वह अन्दीजान के सुलेमान बेग का पुत्र था। उसका बाबा लुकमान बेग था जो बाबर बादशाह का सेवक था। उसकी माता ने हकीम मिर्जा को खिलाया था और सादमान हकीम मिर्जा के साथ-साथ ही बड़ा हुआ था। अफगान जाति में वह वीरता के लिये प्रसिद्ध था। इस विजय की खबर सुनकर अकबर ने ईश्वर को धन्यवाद दिया और कहा ऐसा मालूम होता है कि अब पंजाब पर अभियान करना ही पड़ेगा जब मिर्जा सादमान की मृत्यु का समाचार सुनेगा तो वह भारत पर आक्रमण करेगा। दूरदर्शिता के विचार से अकबर ने राय रायसिंह जगन्नाथ, राजा गोपाल और अन्य स्वामिभक्त सेवकों को आगे भेजा। सिन्धु नदी के अधिकारियों को आदेश दिया गया कि यदि मिर्जा नदी पार करना चाहे तो उसको नहीं रोके और लड़ाई को टाले। फिर 14 बहमान को अकबर ने सुना कि मिर्जा पंजाब में प्रवेश कर चुका है। तब उसने सुल्तान सलीम को राजधानी में छोड़कर पंजाब की ओर प्रयाण करने का विचार किया, परन्तु शाहजादे ने साथ जाने के लिए प्रार्थना की, तब सुल्तान दनियाल को राजधानी में छोड़ा और सुल्तान सलीम के साथ बादशाह ने 6 फरवरी, 1581 को मुहूर्त के अनुसार प्रयाण किया। सकून शास्त्रियों

ने कहा कि उसकी विजय होगी। जब अभियान का आरम्भ हुआ तो विजय की नई खबर आई, जिससे अकबर को प्रसन्नता हुई।

***

प्रकरण 59

शाही सेवकों की विजय और मासूम खां फरनखुदी की पराजय

विद्रोहियों का सामना करने के लिये शाही सैनिक पंक्तिबद्ध हो गये, शत्रु ने भी अपना व्यूह बना लिया। 2 फरवरी, 1581 को अवध नगर से सात कोस दूर पर युद्ध हुआ, जिसमें विद्रोही लोग भाग गये। शाहबाज खां ने इस विजय को ईश्वर की बहुत बड़ी देन समझी और वह रणभूमि से एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा। इस कारण शत्रु बच कर भाग गया और मामला स्थगित हो गया। मासूम खां फरनखुदी अनेक विपत्तियां उठा कर घर पहुंच गया। फिर उसने यह खबर सुनी कि अनेक शाही सेवक मारे गये और शाहबाज खां भी उन्हीं में था। तब मासूम खां आगे बढ़ा और तुरन्त ही उसको पता लग गया कि यह खबर गलत थी। फिर उसका कोई प्रयास सफल नहीं हुआ। उसने दरवाजे के ऊपर एक तोप जमाई। ज्योंही उसको चलाया तो दरवाजे की छत फट गई और उसके सैनिक भाग गये। उसको बाहर निकलने का भी साहस नहीं हुआ। इस नाजुक समय में उसके तीन बड़े साथी उसको छोड़ गये, फिर मासूम खां भी अपने कुटुम्ब को और वर्षों के संगृहीत धन को छोड़कर भाग गया। आगे चल कर उसके साथ केवल सात आदमी रह गये। उसने अपने बाल कटवा दिये और पागल की भांति इधर-उधर भागने लगा, ऐसी स्थिति में गवारिच का जमीनदार उसको अपने घर ले गया और मित्रता का नाटक रचकर जो कुछ धन और सामान उसके पास था, छीन लिया और फिर उसको निकाल दिया। तब उधर का जमीनदार राजा मान उसको अपने मकान पर ले गया। शाहबाज खां ने राजा मान को धमकाया कि मासूम को मेरे सुपुर्द कर दो या मार डालो। उसने राजा को लालच भी दिया परन्तु राजा ने इन्कार किया और कुछ साथी देकर उसने मासूम को लूटमार करने के लिये रवाना कर दिया। विजय के दूसरे दिन शाहबाज खां ने अवध नगर में प्रवेश किया तो मासूम खां फरनखुदी का कुटुम्ब उसके हाथ में पड़ गया और उसके 150 हाथी तथा बहुत-सा सामान लूट लिया। यह खबर सुनकर अकबर ने ईश्वर को धन्यवाद दिया और शाहबाज खां को

आदेश दिया कि विद्रोही के कुटुम्बियों के साथ कोई दुर्व्यवहार नहीं किया जाये क्योंकि इस विद्रोह में बेचारी औरतों का कोई हाथ नहीं है।

फिर ऐसी खबर आई कि मासूम खां उत्तरी पहाड़ों के सहारे-सहारे काबुल के विद्रोहियों से जा मिलेगा। इसलिये कुलीच खां को उधर की ओर भेजा गया। दस इसफन्दरमाज को अकबर ने दिल्ली पहुंच कर मुसलमान साधुओं के मजारों के दर्शन किये। अग्रसेना अभी 4 कोस से अधिक आगे नहीं गई थी। 12 तारीख को शाही सेना सोनपत कस्बे के पास पहुंची। कुलीच खां ने वापस आकर सिजदा किया और मासूम खां की विपत्तियों की पुष्टि की।

किया खां कंग की मृत्यु

बंगाल में विद्रोह हुआ तब से किया खां कंग कुछ वीर और स्वामिभक्त लोगों के साथ उड़ीसा में अपने दिन काट रहा था। उसमें विद्रोह शान्त करने की योग्यता तो नहीं थी परन्तु उसने अपने देश में कोई उत्पात नहीं होने दिया। जब वहां से शाही सैनिक चले गये तो कुतुलुग खां ने लड़ाई लड़ी और शक्ति प्राप्त कर ली। तब किया खां सैनिक सामग्री अपने साथ लेकर दुर्ग में चला गया, परन्तु लड़ाई लम्बे अर्से तक चली। इसलिये उसको बड़ी विपत्ति उठानी पड़ी। अन्त में उसने कुछ वीरों के साथ बाहर निकल कर लड़ाई लड़ी और वह मरकर अमर हो गया।

17 तारीख को थानेसर के समीप बादशाह का शिविर लगा। वहां वह शेख जलाल से मिलने के लिये उसकी गुफा में गया। शेख जलाल अपना जीवन ईश्वर के ध्यान में बिता रहा था और सब लोग उसको सन्त मानते थे। थोड़ी देर तक अकबर और शेख में धर्मचर्चा हुई। अकबर के इशारे पर इस ग्रंथ के लेखक ने शेख से पूछा ''आपने दीर्घ जीवन बिताया है और सन्तों की संगति की है। क्या आप आत्मिक दुःख की कोई चिकित्सा बतला सकते हैं।'' पहले तो शेख ने आंसू बहाये और फिर कहा, ''ओह, मधुर सन्तोष इतनी अच्छी चीज है, इसने अभिमान को समाप्त कर दिया है।''

ख्वाजा शाह मनसूर दीवान की मृत्यु

ख्वाजा मनसूर को अपने पद से बड़ा मोह था। उसमें लोभ की मात्रा भी बढ़ी-चढ़ी थी। वह वित्तीय मामलों में छोटी-छोटी बातों पर बड़ा ध्यान देता था और कठोरता किया करता था। ऋणी लोगों के साथ वह कोई सहानुभूति नहीं करता था। जब शादमान की मृत्यु हो गई और उसके सामान की तलाशी हुई तो मिर्जा हकीम के मुन्शी के हाथ में लिखे हुए कुछ परवाने मिले जो कुंवर मानसिंह ने दरबार में भेज दिये। इनमें से एक परवाना ख्वाजा शाह मनसूर के नाम था, जिसका सारांश यह था कि ख्वाजा के प्रति मिर्जा की सद्‌भावना और सहानुभूति तथा सम्मान बढ़ते जाते हैं। अकबर ने यह कागज बनावटी माने और ख्वाजा

को नहीं दिखाये। सोनपत के पास मिर्जा का एक पुराना सेवक अपने कुटुम्ब सहित दरबार में आया। ऐसा कहा जाता था कि वह भेदिया बनकर आया था। तब अकबर ने ख्वाजा मनसूर को निलम्बित कर दिया। इसके बाद ख्वाजा की कई बातें प्रकट हुईं। तब उसको एक कमरे में बुलाया गया और वह परवाना उसको दिखाया गया। उसके उत्तरों से सन्देह और बढ़ गया। फिर 19 तारीख को मुख्य कोतवाल ने कई पत्र पेश किये, जिससे ख्वाजा के विरुद्ध सन्देह और भी बढ़ गया। इससे प्रकट हुआ कि ख्वाजा के सैनिक मिर्जा हकीम से शीघ्र ही मिलने वाले थे। तब अकबर का क्रोध भभक उठा और उसने कहलाया कि यदि ख्वाजा जमानत दे दे तो वह पूर्ववत् कारागार में रह सकता है, अन्यथा उसका वध करवाया जायेगा। ख्वाजा जमानत नहीं दे सका और उसने अपशब्दों का प्रयोग किया। तब बादशाह ने आदेश दिया कि ख्वाजा सुलेमान, जो ख्वाजा मनसूर का रिश्तेदार है, जमानत दे तो मंजूर कर ली जायेगी। ख्वाजा सुलेमान डर गया और उसने जमानत नहीं दी। तब मनसूर को प्राण दण्ड दिया गया और कोट कचवाहा के निकट उसको एक पेड़ पर फांसी दे दी गई। बादशाह ने वजीर का पद कुलीच खां को प्रदान किया और आदेश दिया कि जैन खां कोकलताश और हकीम अबुल फतह भी वजीर के कार्यालय में मामलों को देखा करें।

***

प्रकरण 60

हकीम मिर्जा की पराजय और काबुल को शीघ्र वापसी

जब भारत में कुछ राजद्रोह फैला तो अफगानिस्तान के तथा भारत के कुछ लोगों ने हकीम मिर्जा को बुरा रास्ता बतलाया। उसने कुछ सैनिक भेजकर उत्पात किया परन्तु वह सफल नहीं हुआ। तथापि वह निराश होकर नहीं बैठा, उसने युद्ध की तैयारी की। जब उसने सिन्धु नदी को पार किया तो उधर के शाही अधिकारी एकत्र होकर लाहौर दुर्ग की रक्षा की तैयारी करने लगे। मिर्जा यूसुफ खां ने रोहतास की रक्षा की। हकीम मिर्जा का साथ किसी ने नहीं दिया। अन्त में उसने लाहौर घेर लिया। शाही सेना वहां से पीछे हट गई, परन्तु बड़ी वीरता दिखाकर हटी।

इधर अकबर ने पंजाब की ओर प्रयाण किया। इस समय उसने कहा, व्यर्थ की बात

करने वालों ने हकीम मिर्जा को बहका दिया है, जब हम सरहिंद पहुंचेंगे तो वह भाग जायेगा। ज़िस दिन अकबर ने राजधानी से प्रयाण किया उसी दिन हकीम मिर्जा ने लाहौर में विद्रोह खड़ा कर दिया। सैयद खां, राजा भगवानदास, कुंवर मानसिंह, सैयद हामिद खां, मुहम्मद जमान और पंजाब के अन्य जागीरदारों ने दुर्ग को दृढ़ करके युद्ध की तैयारी की। विपक्ष के लोगों ने क़ई बार आक्रमण किया परन्तु उनको हटा दिया गया। फिर अचानक ही हकीम मिर्जा ने सुना कि अकबर आ रहा है तो लाहौर से ऊपर की ओर रावी नदी को पार करके वह काबुल की ओर भागने लगा। दूसरे दिन उसने जलालाबाद के समीप नदी को पार किया तो उसके बहुत-से साथी नदी में डूब गये। इसी प्रकार भेड़ों के पास भी कितने ही साथी जलधारा में नष्ट हो गये। खिद्य के निकट सिन्धु नदी को पार करके हकीम मिर्जा स्वदेश लौट गया। जब अकबर ने यह समाचार सुना तो उसने सेना को आदेश दिया कि मिर्जा का पीछा नहीं किया जाये अन्यथा कहीं उसकी नाव डूब न जाये। किसी दिन उसमें समझ आयेगी। भाई पुत्र से भी बड़ा माना जाता है।

24 इसफन्दर माज को शाही सेना ने सरहिन्द में अपने डेरे लगाये।

प्रशासनिक कार्य

अकबर ने आदेश जारी किया कि जागीरदार, शिकदार और दारोगा लोग प्रत्येक गांव के निवासियों की संख्या व्यवसाय आदि का विवरण तैयार करे और उनका वर्गीकरण करे। कोई भी आदमी ऐसा न हो जो कोई न कोई धन्धा न करता हो।

अधिकारी लोगों की आय और व्यय को भी बारीकी से देखें। इससे सारे साम्राज्य को बड़ी शान्ति हुई।

28 इसकन्दर माज को अकबर ने मच्छीवाला के निकट एक पुल पर होकर सतलज नदी को पार किया। वहां पंजाब के अधिकारियों ने उसके सिजदा किया।

***

प्रकरण 61

राज्यारोहण से छब्बीसवें इलाही संवत् का आरम्भ

11 मार्च, 1581 को 26वें इलाही संवत् का आरम्भ हुआ। बादशाह का ध्यान नगर कोट की ओर आकर्षित हुआ। उसने सुन रखा था कि एक साधु ने अपनी जीभ काटकर अकबर के महल की देहली पर फेंक दी थी और उसके फिर दूसरी जीभ आ गई थी। अकबर को सत्य की खोज थी। जब वह कांगड़े के निकट पहुंचा तो उसको इस घटना का स्मरण आया और कुछ घनिष्ठ लोगों के साथ वह करामात देखने गया। प्रथम मंजिल पर राजा जयचंद अकबर से मिला। अकबर ने उसको सम्मानित किया। देसुहा नामक कस्बे के पास अकबर ठहरा तो राजा बीरबल, जो वहां का जागीरदार था मिलने आया। रात्रि में अकबर ने एक स्वप्न देखा। उसके सामने एक अलौकिक स्वरूप ने खड़े होकर अकबर से कहा कि वह कांगड़ा नहीं जाये। प्रात:काल उसने अपना स्वप्न सबको सुनाया। 17 तारीख को खोकोवाल और कानवाहन के बीच में उसने व्यास नदी को पुल द्वारा पार किया और कालानूर के बाग में मुकाम किया।

अरब बजादुर की पराजय

जब ख्वाजा फरनखुदी अपने दुर्भाग्य के कारण नष्ट हो गया तो अरब बहादुर नियामत खां और शाहदाना आदि दुष्ट लोगों ने सम्भल में राजद्रोह किया। वे लूटमार करके आर्थिक साधन जुटाना चाहते थे। उनका यह भी विचार था कि यदि इसमें सफलता नहीं होगी तो वे रात्रि में ही मिर्जा हकीम के पास चले जायेंगे। यह खबर सुनकर हकीम एनुलमुल्क ने, जो वहां क़ा फौजदार था, बरेली के दुर्ग को दृढ़ करना और सैनिक जुटाना शुरू किया। राजद्रोहियों ने उसको धमकाया और लालच भी दिया कि वह उनसे मिल जाये। परन्तु वह उनसे नहीं मिला तब विद्रोही लोग दुर्ग पर आक्रमण करने के लिये आये। हकीम को दृढ़ता और बुद्धि के द्वारा विजय मिल गई। रात्रि हो चुकी थी इसलिये विद्रोही लोग अपना मार्ग भूल गये और उन्होंने अपना प्रयाण प्रात:काल तक स्थगित कर दिया। उन्होंने दुर्ग को नहीं घेरा और कुछ दूरी पर चले गये। फिर थोड़े समय में ही बदायूं से बख्तियार बेग, शमसाबाद से शेख मुहम्मद गज-नवी, अमरोहा से शेख मुअज्जम और मीर अबुल हसन, सलीमपुर से गुलाम हुसेन, लखनऊ से कासिम और सम्भल से मौलाना महमूद और अबुल कासिम आ गये। तब हकीम ने चाहा कि लड़ाई करनी चाहिये। उस समय विद्रोही लोग दुर्ग से कुछ दूर लूटमार कर रहे थे। हुमायूं का राजा रामसाह मुकुट सेन, राजा कर्ण और बहुत-से राजा कुटिल और दम्भी राजा एकत्र होकर उत्पात कर रहे थे। हकीम ने उनमें फूट पैदा

करके रामशाह मुकुटसेन और राजा कर्ण को अपने पक्ष में कर लिया। उनके द्वारा नियाबत खां भी शाही सेना में मिल गया। अकली की सीमा पर लड़ाई करने का निश्चय हुआ। जब युद्ध शुरू हुआ तो प्रथम आक्रमण शाहदाना ने किया। बख्तियार बेग वीरतापूर्वक दृढ़ता के साथ लड़ा। शत्रु विफल होकर भाग गया। कितने ही वीर धराशाही हो गये।

अकबर ने कालानूर के पास रावी नदी पर पुल बनाकर नदी को पार किया। तत्पश्चात् रामगढ़ के निकट उसने चिनाव को पार किया, उसके बाद झेलम नदी को उसने पुल द्वारा झेलम के नाव घाट और रसूलपुर के बीच में पार किया। कुछ दिन तक शिकार किया। वहां उसने एक सुन्दर बाग भी लगाया। इसी समय वह बालानाथ किल्लाह की गुफा पर गया। यह रोहतास के पास एक ऊंचे स्थान पर स्थित है। इतनी प्राचीन है कि इसके आदि का पता नहीं है। ऐसा कहा जाता है कि बालानाथ जोगी यहां भगवदाराधना किया करता था। इस स्थान को पवित्र माना जाता है। भारत विस्तृत देश है। यहां मुक्ति के अनेक मार्ग हैं। एक सम्प्रदाय के अनुयायी जोगी कहलाते हैं। वे पातंजलि के सिद्धान्त को मानते हैं। वे लोग अपने अस्तित्व को मिटा कर अमर होते हैं। इनमें अनेक लोग बड़े संतोषी हैं, सबको प्रकाश की प्राप्ति होती है। बालानाथ इनका गुरु था। लोग कहते हैं कि वह रामचंद्र का छोटा भाई था और संन्यासी होकर तप करने के लिए इस स्थान पर रहता था। बादशाह ईश्वर भक्तों की तलाश में रहता था इसलिये वह इस स्थान पर गया। 31 तारीख को अकबर मिर्जा यूसुफ खां के मकान पर गया। रोहतास का प्रसिद्ध दुर्ग उसकी जागीर था। मिर्जा यूसुफ ने प्रार्थना की थी जो अकबर ने स्वीकार कर ली थी। इसके पश्चात् बादशाह सिंह सागर पहुंचा जो निलाब कहलाता है। एक घटना यह हुई कि ख्वाजा सरा, ख्वाजा आलम की मृत्यु हो गई, उसके अधीन बहुत-से पहलवान थे, उसने एक को लकड़ी मारी तो उस पहलवान ने बदला लेने के लिये खंजर का वार किया और उसको समाप्त कर दिया। ख्वाजा आलम बादशाह का पुराना सेवक था। ख्वाजा के हत्यारे को प्राणदंड दिया गया।

***

प्रकरण 62

शाही सेना का सिन्धु नदी के तट पर पहुंचना

13 खुरदाद को अकबर ने सिन्धु नदी के तट पर डेरे लगाये। अकबर चाहता था कि मिर्जा हकीम का सुधार हो जाए इसलिये उसने मिर्जा के नाम एक आदेश जारी किया और एक चतुर आदमी उसके पास भेजा, जिसका सारांश यह था कि ''जो हमारे इतना निकट

सम्बन्धित है वह पहाड़ियों में क्यों छिपा हुआ है। उसको बुरे सलाहकारों की बातें नहीं सुननी चाहिये और हमारे दरबार में आना चाहिये। तुम कब तक तलवार उठाये रहोगे।'' हकीम मिर्जा की नींद नहीं खुली। उसने समझा कि यह पत्र धोखा देने के लिये लिखा गया है, उसने इसका अशोभनीय उत्तर भेजा। फिर अकबर ने लिखा कि तुम स्वयं नहीं आना चाहते हो तो अपने पुत्र और पुत्री बख्तुलिसा को भेज दो और यह भी नहीं करना चाहते तो ख्वाजा हसन नक्शबन्दी को कुछ अधिकारियों के साथ भेज दो जो शपथ ले सके और संधि कर सके। इसका भी हकीम मिर्जा पर प्रभाव नहीं हुआ। तब राजा मानसिंह और कुछ वीर स्वामिभक्त लोगों के नाम आदेश जारी हुआ कि वे सिन्धु नदी को पार करके पेशावर की ओर प्रयाण करके और उधर के विद्रोही लोगों का दमन करे। जून, 1581 में शाहजादा सुल्तान मुराद और बहुत-से अधिकारियों को आदेश दिया गया कि वे नदी पार करके पेशावर की ओर कूच करें। यदि हकीम मिर्जा अधीनता स्वीकार कर ले तो ठीक है, अन्यथा वह शीघ्रता से काबुलिस्तान की ओर प्रयाण करे। इसके लिये सेना को भी यथाभाग व्यवस्थित कर दिया गया। इस सेना में कितने ही बड़े-बड़े अधिकारी थे, जिनमें राय रायसिंह, रायदुर्ग आदि भी सम्मिलित थे। बायां पार्श्व सईद हामिद बुखारी आदि आठ बड़े अफसरों के और अन्य बड़े लोगों के नेतृत्व में था। दायां पार्श्व का नायकत्व कुलीच खां, जलाल खां आदि अन्य लोगों को दिया गया था। राजा मानसिंह, राजा भगवानदास और अन्य हिन्दु और मुसलमान उच्चाधिकारी अग्रसेना में थे। मिर्जा हकीम को पुनः पत्र लिखा गया कि तुमको चाहिये कि ''अधीनता की रस्म पूरी करो तो शाही सेना विग्राम से वापस आ जाये और तुम्हारा नाम बना रहे।'' मिर्जा ने इस आदेश पर ध्यान नहीं दिया।

तब योग्य सेवक नावों का संग्रह करने तथा नदी पार करने की तैयारी में लग गये।

फतहदोस्त की मृत्यु

फतहदोस्त, अली दोस्त बार बेगी का पुत्र था, उसने मुझसे कई बार कहा था कि मैं बादशाह का शिष्य बनना चाहता हूं। बादशाह से इस विषय में निवेदन करो जिससे मेरी अभिलाषा पूरी हो जाये। उसके हृदय और वाणी में संगति नहीं थी इसलिए बादशाह उसको टालता रहा। अब बादशाह का शिविर सिंधु नदी पर था, उसने फिर मुझ से इस विषय में बात की। जब मैंने बादशाह से निवेदन किया तो उसने फतहदोस्त की प्रार्थना स्वीकार की। अकबर ने उसको अच्छी सलाह दी, परन्तु उसका आत्मा शुद्ध नहीं था। वह किसी व्यक्ति का घनिष्ट मित्र था। उसके साथ वह पास ही एक विनोद-गृह में मद्यपान करने गया तो इर्ष्यालु और उत्पाती लोगों ने उसको मार डाला। लोगों का कहना था कि मतलिब खां का इसमें हाथ था।

अटक बनारस की स्थापना

अकबर का यह विचार था कि जब शाही सेना सीमा पर पहुंचे तो एक ऊंचे दुर्ग

की वहां स्थापना की जाये। मई, 1588 में 15 खुरदार को जब दो घड़ी दिन व्यतीत हुआ तो अकबर ने इस दुर्ग की नींव डाली। उस समय ख्वाजा शमसुद्दीन खाफी आया हुआ था। यह दुर्ग उसके सुपुर्द कर दिया गया। यह हिन्दुस्तान और काबुलिस्तान के बीच में एक अच्छी रोक थी और उस प्रान्त के विद्रोहियों को दबाने के लिये एक साधन था।

***

प्रकरण 63

काबुल पर अभियान

जब सेना सिन्धु नदी के तट पर थी तो विचार यह था कि नदी पार करके जबुलिस्तान पर प्रयाण किया जाये। अधिकांश लोगों की सम्मति थी कि अभियान को छोड़ दिया जाये। तब इस लेखक को यह आदेश हुआ कि अधिकारियों की सम्मति लिखी जाये और फिर बादशाह से निवेदन किया जाये। अन्त में 11 जुलाई, 1588 को अकबर ने आदेश दिया कि नदी पार करनी चाहिये। बादशाह ने सिन्धु और काबुल नदी के संगम पर अपने डेरे लगवाये। प्रधान शिविर और सामान को सिंधु नदी के तट पर छोड़कर कासिम खां को उसका नेतृत्व दिया गया और पुल बनाने के लिये आदेश दिया। 19 जुलाई, 1588 को हाजी हबी बुल्ला ने सिजदा किया और हकीम मिर्जा का प्रार्थना-पत्र बादशाह के सामने प्रस्तुत किया। मिर्जा ने शपथपूर्वक आज्ञा मानने का वचन दिया परन्तु बादशाह को विश्वास नहीं हुआ। उसने मिर्जा की प्रार्थना स्वीकार नहीं की। यह आदेश दिया कि शाहजादा विक्रम की ओर आये और मैं (बादशाह) स्वयं उधर की ओर आऊंगा। फिर शाही झंडे काबुल नदी के तट पर जाकर ठहरे। वहां से बादशाह ने ख्वाजा मुहम्मद अली और कुछ लोगों को मिर्जा के पास भेजा। शायद इन लोगों का मिर्जा पर प्रभाव पड़े और वह विनाश से बच जाये। फिर मिर्जा का एक धावन आया, जिसने मिर्जा की पिछली भूलों पर खेद प्रकट किया और भविष्य में अच्छी सेवा का वचन दिया। परन्तु अकबर पर इसका कुछ प्रभाव नहीं पड़ा। परन्तु बड़े-बड़े अधिकारी चाहते थे कि मिर्जा को क्षमा करके शाही सेना वापस कूच कर दे। इस लेखक ने कहा कि ''सेना लम्बी यात्रा कर चुकी है और 6, 7 मंजिल पार करने पर उद्दिष्ट स्थान पर पहुंच जायेगी। इसलिये दूतों की बातों के आधार पर शाही सेना वापस क्यों फिरे। लोगों ने मेरी शिकायत की परन्तु बादशाह ने मेरी बात मानी और मेरी पद-वृद्धि की।''

प्रकरण 64

बादशाह का काबुल को शीघ्र प्रयाण

बादशाह धीरे-धीरे प्रयाण कर रहा था। वह प्रत्येक मंजिल पर कुछ समय के लिये ठहर जाता था। उसने शहजादा सलीम को, जो आगे प्रयाण कर रहा था, लिखा था कि शीघ्रता नहीं की जाये। बादशाह का ख्याल था कि शायद हकीम मिर्जा सुधर जाये। मिर्जा की बहन दरबार में जाना चाहती थी, परन्तु नहीं जा सकी। ख्वाजा हसन बदख्शां चला गया। मिर्जा ने अपने परिवार को दुर्गम और दृढ़ स्थानों पर भेज कर लूटमार करना शुरू कर दिया। जब उसको मालूम हुआ कि बादशाह विग्राम के समीप ठहरा हुआ है और सेना शाहज़ादे के नेतृत्व में कूच करती हुई आ रही है तो वह युद्ध करने के लिये तैयार हो गया। तब बादशहा ने शीघ्रता से कूच किया। उसने मुख्य शिविर का नेतृत्व शाहजादा मुराद को आदेश देकर दिया कि शिविर धीरे-धीरे आगे बढ़े। शाहजादे के साथ सईद खां, राजा भगवन्तदास और बहुत-से स्वामिभक्त सेवक थे। उस दिन बादशाह जमरूद ठहरा। दूसरे दिन खैबर की घाटी को पार करके नदी के तट पर ढाका के पास पहुंच गया। फिर रात में कूच करके वह लाजीपुर टिका और प्रातःकाल जलालाबाद जा पहुंचा। दूसरे दिन वह बागरफा पहुंचा। धावन लोग हकीम मिर्जा की ओर अग्रसेना की, जो मुराद के नेतृत्व में थी, खबर लाया करते थे। फिर बादशाह सुरखाब पहुंचा। वहां अपनी सेना को व्यवस्थित किया। बादशाह स्वयं मध्य में रहा। दायां पार्श्व जैन खां कोकलताश को दिया, बायां भाग का नायक मुत्तलिब खां को बनाया। कुछ बेग और अहूदी अग्रसेना में रखे गये। जब सूर्यास्त होने वाला था तो खबर आई कि विजय प्राप्त हो गई। परन्तु दूरदर्शी लोगों ने इस पर विश्वास नहीं किया क्योंकि धावन लोग अफगान थे। फिर जमींदारों से भी यही खबर मिली। दूसरे दिन बादशाह सुरखाब से जगदलक की ओर चला। तब शाहजादा मुराद के आदमियों ने आकर विजय की सूचना दी। तब ईश्वर को धन्यवाद दिया गया।

***

प्रकरण 65

सुल्तान मुराद की विजय और मिर्जा हकीम की लज्जाजनक पराजय

मिर्जा हकीम की बहन बदख्शां चली गई थी। फरीदून और अन्य लोग जो राजद्रोह के प्राण थे, दरबार में आने से डरते थे। मिर्जा कभी तो सोचता था कि खैबर में दुर्ग बनाया जाये और कभी विचार करता था कि ''भारत में पहुंच कर उत्पाद मचाया जाये। कभी उसको ख्याल आता था कि काबुल के दुर्ग में छिपा जाये, परन्तु वह कुछ भी नहीं कर सका। उसने विवश होकर नगर के लोगों को दुर्ग की चाबी दे दी। उसने कहा कि यह अकबर को दे दी जाये।'' उसने अपने कुटुम्ब के प्रत्येक सदस्य को दूर स्थान पर भेज दिया। मिर्जा ने यह सोचा था कि यदि शाही सेना उसको बहुत अधिक दबायेगी तो वह तूरान चला जायेगा, अन्यथा वह पहाड़ों और रेतीले मैदानों में छिपा रहेगा। उसने फरीदून को कुछ साथियों सहित सैनिक एकत्र करने के लिये आक-सराई भेजा। उसके पीछे-पीछे स्वयं मिर्जा चला। शाही सेना पास आ पहुंची थी। मिर्जा की सेना अभी संगठित नहीं हुई थी, इसलिये उसने संजददरा में टिकने का निश्चय किया। फरीदून शाही सेना को क्षति पहुंचाने के लिये घात में बैठ गया। शाही सेना ने बारीकाब से कूच किया। फरीदून छिपकर बैठा हुआ था। शाही सेना के लोग सावधानी से निकल गये। 30 जुलाई, 1581 को फरीदून के आदमी शाही सामान पर टूट पड़े और कुचले गये। फिर खरबूजे के खेत में लड़ाई हुई। लड़ाई हो ही रही थी कि पीछे से फरीदून भी आ गया। शाही सेनानायक वीरतापूर्वक लड़े। मिर्जा भी अपनी सेना को व्यवस्थित करके लड़ा। फिर हकीम मिर्जा एक ऊंची पहाड़ी पर चला गया। उसमें लड़ने का साहस नहीं था। काबुली लोग लूटमार करने में लग गये।

शाही सेना के वीर दृढ़ता से डटे रहे। 1 अगस्त, 1581 को मिर्जा घाटियों में से निकल कर रणभूमि में आया। लड़ाई अच्छी तरह शुरू भी नहीं हुई थी कि मिर्जा का साहस भंग हो गया और वह भाग गया। शाही सेना के शाह बेग कुलाबी, रफी उरुताफी, फतह मुबारक मारे गये। जब जाबुली लोग कुछ जीतते हुए मालूम होते थे तो राजा मानसिंह आगे झपटा। माधोसिंह, सूरतसिंह और अनेक वीर पल्टनें बनाकर युद्ध में उतरे। तब हाथियों ने लड़ाई की। इब्राहीम खां फौजदार, रणमोहन हाथी पर था। जुझार खां, जगतराय हाथी पर था। मुहम्मद खां गजमंगल हाथी को; चांदी खां लक्ष्मीसुन्दर हाथी को सम्भाल रहे थे। हुसेन खां के हाथी का नाम मुकुट था। हाथियों पर रखी हुई तोपें चलाई गईं। हाथियों के आक्रमणों से काबुलियों का उत्साह भंग हो गया। मिर्जा के हितैषी उसके घोड़े की लगाम पकड़ कर उसको अलग ले गये। बादशाह को बड़ी विजय प्राप्त हुई। मिर्जा के कितने ही सिपाही

लड़ते हुए मारे गये। मिर्जा भाग कर कराबाग पहुंचा और फिर काबुल के उत्तर में इस्तरगज चला गया। उसके बहुत-से निकट सम्बन्धी और उसका ज्येष्ठ पुत्र केकुवाद उसके पास आ गये, वहां से मिर्जा घोरबंद चला गया।

भाग्यशाली शाहजादा 3 अगस्त को जलगाह पहुंचा। वहां उसने सभा की। जब बादशाह सुरखाब से जगदलक की ओर जा रहा था तो उसको विजय की खबर मिली तो उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया। अगले दिन उसका मुकाम बकरीकाब में और 25 तारीख को बुतखाक में हुआ। यहां पर कुंवर मानसिंह और अन्य लोगों ने बादशहा को सिजदा किया। अगले दिन उसने प्रयाण किया और वह सियासंग पर ठहरा। ज्योतिषियों की बात मान कर वह कुछ दिन वहीं टिका रहा। उसको उन सब स्थानों का स्मरण हो आया जो उसने बचपन में देखे थे। उसने अपने हाथी सईद हमीद खां आदि के साथ जलालाबाद भेज दिये। अब मिर्जा भयभीत हो गया था और घोरबंद में ठहरा हुआ था। उसका ख्याल था कि यदि शाही सेना ने उसको और अधिक दबाया तो वह कलंदर बनकर तूरान चला जायेगा। अकबर ने उदारतापूर्वक लतीफ ख्वाजा और काजी अब्दुल लतीफ को उसे अच्छी सलाह देने के लिये भेजा। 9 अगस्त, 1581 को अकबर ने ठाट के साथ काबुल के दुर्ग में दरबार किया और भोज दिया और वहीं उसकी तुला हुई। लोगों ने बड़ा आनन्द मनाया।

***

प्रकरण 66

बादशाह का मिर्जा हकीम के अपराध क्षमा करना और शाही सेना की भारत को वापसी

बादशाह के स्वामिभक्त और अनुरक्त सेवकों को कई बार यह ख्याल आया कि घात करके मिर्जा हकीम को समाप्त कर दिया जाये। परन्तु अकबर ने इसका अनुमोदन नहीं किया। मिर्जा की जीवन-लीला समाप्त ही होने वाली थी कि काबुल से अकबर के दूत यह खबर लेकर उसके पास आये कि उसके अपराधों को क्षमा कर दिया गया है। पहले तो मिर्जा को विश्वास नहीं हुआ, फिर पत्र देखने पर वह अपनी भूल पर रोने लगा।

फिर काजी अब्दुल लतीफ और लतीफ ख्वाजा ने आकर हकीम मिर्जा की परेशानियों से अकबर को सूचित किया। मिर्जा के अपराध क्षमा कर दिये गये और जाबुलिस्तान पुनः

उसको प्रदान कर दिया गया। शाही सेना उस प्रदेश में ठहरी हुई थी इसलिये मिर्जा बहुत व्याकुल रहता था अत: अगले दिन अकबर ने भारत की ओर प्रस्थान किया। इससे पूर्व वह बाबर के कब्र पर गया वहां प्रार्थना की। सायंकाल उसने आदेश दिया कि शाहजादा सुल्तान मुराद मंजिल ब मंजिल आगे चले। अकबर डाक द्वारा जलालाबाद के लिये रवाना हुआ जहां-जहां शाही शिविर ठहरा हुआ था। अकबर के साथ तीन दरबारी थे, जिनमें एक इस ग्रंथ का लेखक अबुल फजल भी था। जब रात हुई तो वह कुछ देर के लिये काबुल के पास विग्राम में ठहरा। जब एक पहर रात बीत गई तो वह चल दिया और अगले दिन दोपहर को उसने बारीकाब में विश्राम किया। उसके अगले दिन वह जलालाबाद पहुंच गया, वहां शाहजादा सलीम और बेगमें उससे मिलीं। अधिकारियों ने उसको सिजदा किया। फिर अकबर ने भारत की ओर प्रयाण किया। अकबर और कुछ बेगमें बागसफा देखने के लिये गयीं और वापस शिविर में आ गईं। अगले दिन शाहजादा मुराद पीछे से आ गया। इसी मंजिल पर बिहार से शेख फरीद ने आकर सिजदा किया। उसने शत्रु की पराजय और विद्रोहियों से प्रदेश की मुक्ति का समाचार दिया। शहरीयार की 15 तारीख को अकबर ने खैबर घाटी पार करके जमरूद में मुकाम किया।

मासूम खां फरनखुदी को क्षमादान

पहले लिखा जा चुका है कि शाहबाज खां के साथ लड़ाई हुई, जिसमें मासूम खां फरनखुदी लज्जित होकर और जमींदारों से बचकर इधर-उधर जंगलों में घूम रहा था। ऐसी स्थिति में उसका पुराना सेवक मकसूद आकर मिला। मकसूद ने उसको अपनी संगृहीत धनराशि दे दी, तब फरनखुदी और भी उत्पाद करने लगा। उसने बहराइच नगर को लूट लिया। वजीर खां के पुत्र फख अली ने उससे युद्ध किया, परन्तु वह हार गया। नगर और पास का इलाका फरनखुदी के हाथ में आ गया। तब उधर के जागीरदार मिलकर उससे लड़ने के लिये आये। दोनों सेनाओं में से एक सेना सारू नदी के इस तट पर और दूसरी दूसरे तट पर खड़ी हुई थी। फरनखुदी को यह डर था कि जागीरदारों की और सेना आ जायेगी और हुआ भी यही। कुछ देर तक दोनों सेनाओं ने एक-दूसरे पर गोले और गोलियां बरसाईं, तब फरनखुदी रात्रि में ही कहीं भाग गया। विजयी सैनिकों ने उसका कल्याणपुर तक पीछा किया। फिर वह वापस चले गये। मासूम ने जालूपरा जाकर उत्पात खड़ा किया और फिर मोहमदाबाद लूट लिया। लोगों को यह भय था कि जौनपुर भी लूटा जायेगा। तब तिरहूत, गाजीपुर, चांदपुर के जागीरदार आ पहुंचे, जिससे मासूम परेशान हो गया और लूट का माल वहीं छोड़ कर कुछ गिनती के आदमियों के साथ हल्दी के नाव घाट पर उसने सारू नदी को पार किया। फिर उसने खाने-आजम मिर्जा कोका को, जो उस समय हाजीपुर में था, पत्र लिख कर क्षमा मांगी। खाने आजम ने उसको रुपया, सामान और जायदाद प्रदान की और बादशाह से निवेदन किया कि मासूम को क्षमा दे दी जाये तो कोकलताश को इस विषय में विश्वास दिलाया गया।

सईद हाशिम बुखारी की मृत्यु

इस अभियान के आरम्भ में मीर को सिरोही का शासन करने के लिये भेजा गया था। उसके साथ मीर कलां कमालुद्दीन, हुसेन दीवाना और कुछ अन्य लोग भी रवाना किये गये थे। जब वे सिरोही पहुंचे तो वहां के सुल्तान देवड़ा ने प्रत्यक्ष में अधीनता और मित्रता का व्यवहार किया। परन्तु कुछ राजपूत घात में बैठ गये और मौका देखा तो सुल्तान देवड़ा ने सईद पर आक्रमण किया। सईद और कुछ अन्य लोग वीरतापूर्वक लड़ते हुए धराशायी हो गये, जिन्होंने भीरुता दिखलाई अकबर ने उनको दण्ड दिया।

तारीख 16 शहरीयार को अकबर विश्राम के निकट ठहरा। कासिम खां ने जोरदार सिंधु नदी पर पुल बना ली थी। लोगों के समूह इस पर होकर निकल गये।

शेख जमाल बख्तियार को दण्ड

जब अकबर खैबर की घाटी में से बाहर निकल रहा था तो उसने देखा कि शेख जमाल बख्तियार मद्यपान कर रहा है। बख्तियार ने कई बहाने बनाये। अकबर ने उसको फटकारा और सिजदा नहीं करने दिया। फिर वह पागल-सा हो गया और अपनी सम्पत्ति नष्ट करके भिखारी बन गया। उसको शिक्षा देने के लिये अकबर ने उसको कैद में डाल दिया। शेख अब्दुर्रहीम लखनवी और उसके कुछ साथियों को भी फटकार कर दरबार से निकाल दिया।

अकबर की भारत को वापसी

22 तारीख को पुल द्वारा सिंधु नदी को पार करके अकबर ने भारतभूमि पर कदम रखा। सिंधु नदी का प्रदेश रक्षार्थ कुंवर मानसिंह के सुपुर्द कर दिया गया। पास ही बादशाह ने कमारगाह बनवा कर शिकार किया। उसी समय राजा टोडरमल आ गया। उसने बिहार का सब काम पूरा कर दिया था। अब उसको वापस बुलाकर वजीर का पद दिया गया। फिर बादशाह सिंधु नदी से रवाना हुआ और रसूलपुर के पास तारीख 20 मिहर को उसने बिहात नदी (झेलम) को 25 तारीख को पुल द्वारा पार किया है। हेलान के पास जुगाली नाव घाट पर चिनाव नदी को पार किया गया। तारीख 5 अरबान को रावी नदी पार की गई और सराय दौलत खां के पास शाही डेरे लगे। उसी दिन अकबर ने सदर लोगों की नियुक्तियां कीं। अकबर ने कृषको की संख्या पर विचार किया और उनकी सुविधा के लिये एक अफ़सर का पद हटा कर उसका काम कई ईमानदार और अनुभवी लोगों को बांट दिया। दिल्ली, मालवा और गुजरात का सदर हकीम-अबुल-फतह, आगरा, कालपी और कालिंजर का सदर शेख अबुल फेज फैजी, हाजीपुर से सारु तक का सदर-हकीम-हमाम और बिहार का सदर-हकीम-अली, बंगाल का सदर-हकीम एन-उल-मुल्क, और पंजाब का काजी अली-बख्श को नियुक्त किया। बड़े-बड़े नगरों में उसने ऐसे काजी नियुक्त किये जो कट्टर

नहीं थे। इसी समय राजा भगवानदास ने जो अकबर की सेना का सेनाध्यक्ष था, बादशाह से निवेदन किया कि उसके मकान पर आये। 8 तारीख को बादशाह उसके निवास पर गया। 21 तारीख को पुल द्वारा व्यास नदी पार करके 28 तारीख को पुल द्वारा ही सतलज नदी को पार किया। अगले दिन अकबर सरहिन्द ठहरा। यहां राजा भगवानदास, राय रायसिंह, सईद हामिद बुखारी, जगन्नाथ और पंजाब के अन्य जागीरदारों को विदा दे दी गई। 7 आजार को पानीपत पर शाहबाज खां ने सिजदा किया। उसने मासूम खां फरनखुदी को खदेड़ कर भगाया, तब से अब तक अकबर के आदेश से वह फतेहपुर में था। जब उसने बादशाह की वापसी की खबर सुनी तो वह मिलने आया। 10 तारीख [1] को अकबर दिल्ली पहुंचा। उसने हुमायूं के मकबरे पर जाकर वहाँ के लोगों को खैरात दी। वह अपनी विमाता हाजी बेगम के मकबरे पर भी गया। सायंकाल उसको सूचना मिली कि मरियम मकानी की डोली पास ही है। शाहजादा सुल्तान दनियाल उसके साथ था, अब अकबर भी उससे आदरपूर्वक मिला, शाहजादा दनियाल भी अकबर से मिला। 17 तारीख को अकबर मथुरा के पास था। उसने इस पुराने तीर्थस्थान को देखा। मथुरादास की प्रार्थना पर अकबर उसके मकान पर गया।

***

प्रकरण 67

अकबर का फतेहपुर पहुंचना

तारीख 19 आजर को अकबर फतेहपुर सीकरी पहुंचा। वहां उसका भव्य स्वागत हुआ। नगर से 4 कोस की दूरी तक मार्ग के दोनों ओर स्वामिभक्त सेवक पंक्ति बद्ध खड़े थे। पर्वताकार हाथी सजे-सजाये मौजूद थे, एक विशाल हाथी पर सवार होकर अकबर उनके बीच में से निकला, आज्ञाकारी शाहजादे व्यवस्थापूर्वक चल रहे थे। बड़े-बड़े अमीर बादशाह के आगे थे। खुशी के बाजे बज रहे थे। दरवाजों और छतों पर दर्शकों की भीड़ थी, सायंकाल को अकबर दौलतखाने में तख्त पर बैठा और शासन-कार्य किया।

बहादुर को प्राणदंड

यह दुष्ट सईद बदख्शी का पुत्र था और कृषकों को बहुत सताया करता था। तिरहुत

1. तबकाते नासिरी के अनुसार वह रमजान के अन्तिम दिन 28 अक्टूबर, 1581 को लाहौर पहुंचा था और 22 नवम्बर को दिल्ली पहुंचा था।

की पहाड़ियों में उसने बड़ा उत्पात मचाया था। वहां से निकल कर लूटमार किया करता था। वह प्रदेश गाजी खां बदख्शी की जागीर में था, जिसको खाने आजम से सहायता मिलती थी। बहादुर खां को वहां कई बार हारना पड़ा। उसका घर और परिवार लुट गये। उसके बच्चे पकड़ लिये गये। तब उसने दया की भिक्षा मांगी। वह गाजी खां के पास आया तो गाजी खां ने उसको पकड़ कर खाने आजम के पास हाजीपुर भेज दिया खाने आजिम ने उसको पैरों और गर्दन में बेड़ियां डालकर दरबार में भेज दिया।[1]

हैदर का आगमन

हैदर सिजदा करने आया। अकबर ने सालिह आकी को कश्मीर के सुल्तान यूसुफ खां के पास यह सलाह देने भेजा था कि वह बादशाह की आज्ञा पालन करे। यूसुफ ने यह सलाह मान ली और अपने तीसरे पुत्र को अच्छी-अच्छी भेंटें लेकर भेजा। बादशाह ने उस पर बड़ी कृपा की।

शाहबाज खां को कारावास

24 तारीख दाई को दरबार के बख्शियों ने शाहबाज खां को मिर्जा खान के नीचे रखा था, मिर्जा खान को खाने खाना की उपाधि थी, उसने शाही आदेश नहीं माना। स्वामिभक्ति और कृतज्ञता समाप्त कर दी। वह शान्त भी नहीं रहा और अपनी तरंगों से काम करने लगा, तब बादशाह ने उसको राइसाल दरबारी के सुपुर्द कर दिया। अगले दिन प्रातःकाल बादशाह वापस राजधानी में आ गया।

हाजी बेगम का देहान्त

हजास से वापस आने के बाद हाजी बेगम अपना कर्त्तव्य पालन करने के लिये हुमायूं के मकबरे के पास रहा करती थी और उसकी देखरेख किया करती थी। वहां के गरीब लोगों को वह पुण्यदान करती थी। 17 जनवरी, 1582 को उसका देहान्त हो गया। अकबर के शोक का वर्णन नहीं किया जा सकता। उसको हाजी बेगम से बड़ा प्रेम था। अन्तःपुर की महिलायें भी वियोग से व्याकुल हो गईं, परन्तु इसमें किसी का वश नहीं था।

बादशाह ने कासिम अली खां को आदेश दिया कि दिल्ली जाकर हाजी बेगम के सेवकों को सान्त्वना दे और बेगम की सद्‌गति के लिये पुण्यदान करे।

मासूम खां फरनखुदी का दरबार में आना

बहमान मास के मध्य में मासूम खां फतेहपुर आया, परन्तु वह पीर-गेब के मकबरे

---

1. तबकाते अकबरी-इलियट, जिल्द 5, पृष्ठ 426 और बदायूंनी ला, पृष्ठ 507 से ऐसा प्रकट होता है कि उसको खाने आजम के लोगों ने मार डाला था।

में ठहर गया और बादशाह को सिजदा करने नहीं आया। यदि उसे वास्तविक पश्चात्ताप होता तो, वह बादशाह से अवश्य मिलता।

जब मासूम खां असहाय हो गया तो उसने चाटुतापूर्वक खान-ए-अजीम कोका की शरण ली। मिर्जा ने समझा कि वह जो कुछ कहता है, हृदय से कहता है इसलिये उसको रुपये, सामान और जागीर देकर उसकी सहायता की। कोका ने यह भी वचन दिया कि जब बादशाह वापस भारतवर्ष में आयेगा तो मासूम खां को दरबार में ले जाकर बादशाह की कृपा प्राप्त की जायेगी। फिर मासूम खां अपनी जागीर पर चला गया। वह विद्रोह करने के लिये अवसर देखने लगा। उसका निचार था कि यदि राजद्रोह सफल नहीं होगा तो वह दरबार में जायेगा। परन्तु मासूम की माता, बहन और पत्नी कैद में थी। उसके पास लड़ाई करने के साधन नहीं थे इसलिये वह उत्पात नहीं कर सका और दम्भ में दिन काटने लगा।

अब्दुल-समी की काजी के पद पर नियुक्ति

इस समय अब्दुल-समी को सेना का काजी नियुक्त किया गया। वह अन्दीजान के एक अच्छे कुल का वंशज था और ऊंचे दरजे का विद्वान् था। वह अच्छा विचारशील था और विषय प्रतिपादन करने की उसमें शक्ति थी। पहले ही इस पद पर काजी जलाल मुल्तानी था। परन्तु वह लोभी था और सत्य के मार्ग से विचलित हो चुका था, इसलिये उसको इस पद से हटा दिया गया और उसको हज्जाज आने का आदेश दिया और वह मक्का में ही मर गया। तब बादशाह ने अब्दुल-समी को इस पद पर नियुक्त किया।

24 तारीख को खान-आजम बिहार से आया। बादशाह उससे कृपापूर्वक मिला।

***

प्रकरण 68

27 वें इलाही संवत् का आरम्भ

11 मार्च, 1582 को 27 वें इलाही संवत् का आरम्भ हुआ। तो बड़ा भव्य उत्सव मनाया गया और एक बड़ी सभा हुई जिसमें सर्वप्रथम अकबर बोला कि ईश्वर ही वास्तव में स्वामी है और मनुष्य उसका सेवक है। मुझ जैसा निर्बल व्यक्ति मनुष्यों को दास कैसे बना सकता है। इसी समय उसने हजारों दासों को मुक्त कर दिया और कहा कि ये लोग चेले कहलायेंगे। तत्पश्चात् अकबर ने कहा कि सभा में उपस्थित लोग अपने-अपने विचार

प्रकट करें। तब शाहजादा सुल्तान सलीम ने कहा कि बारह वर्ष की आयु से पहले विवाह नहीं होना चाहिये। इससे बड़ी हानि होती है। खान-अजीम मिर्जा कोका ने कहा कि सूबेदारों को प्राणदंड देने का अधिकार नहीं देना चाहिये। ऐसे मामले पहले बादशाह के सामने पेश करने चाहिये। खान-खाना ने कहा कि छोटी-छोटी चिड़ियों को और रेंगने वाले प्राणियों को नहीं मारना चाहिये। राजा टोडरमल ने कहा कि महल पर प्रतिदिन दान देना चाहिये और अधिकारियों के नाम आदेश होना चाहिये कि प्रति सप्ताह, प्रतिमास और प्रति वर्ष खाली हाथ लोगों का ध्यान रखना चाहिये। मिर्जा यूसुफ खां ने कहा कि सारे नगरों और कस्बों से दैनिक घटनाओं का विवरण मंगवाना चाहिये। राजा बीरबल ने कहा कि भले और परिश्रमी आदमियों को विभिन्न स्थानों पर इन्स्पेक्टर नियुक्त किया जाये जो उत्पीड़ित लोगों की दशा की ओर ध्यान दिलवायें और जो अनिवार्य विपत्तियाँ आयें उनकी सूचना देवे। कासिम खां ने सुझाव दिया कि सारे साम्राज्य के रास्तों पर यात्रियों के आराम के लिये सरायें बनायी जायें। शेख जमाल ने निवेदन किया कि निरपक्ष और अनुभवी पुरुषों को नियुक्त करके आदेश दिया जाये कि वे दुखी लोगों को दरबार में लायें। शेख फैजी ने निवेदन किया कि कुछ अनुभवी और सहानुभूतिपूर्ण लोगों को नगरों और बाजारों में नियुक्त किया जाये, जो चीजों के भाव निश्चित करे। हकीम अब्दुल फतह ने चाहा कि अस्पताल स्थापित किये जायें। इस पुस्तक के लेखक ने प्रार्थना की कि प्रत्येक नगर और कस्बे में दारोगे नियुक्त किये जायें जो वहां के गृहस्थों के नाम और व्यवसाय की सूची बनायें और लोगों के आय और व्यय पर दृष्टि रखें और जो निकम्मे और बदमाश लोगों को वहां से निकाल दें, बादशाह ने यह सारे सुझाव स्वीकार कर लिये।

प्रशासनिक कार्य

इस वर्ष के आरम्भ में बादशाह ने साम्राज्य की व्यवस्था पर ध्यान दिया और प्रशासनिक तथा वित्तीय नियम बनाये। इससे पहले वजीर का काम राजा टोडरमल के सुपुर्द था। अब इस दीर्घ दृष्टि और क्षुब्ध पुरुष को असरफ-ए-दीवान नियुक्त किया गया, एवं वह आस्ता में प्रधानमंत्री बन गया। सब काम उससे पूछकर किया जाता था। उस पर किसी प्रकार का कलंक नहीं लगा। उसने साम्राज्य का हित किया और आपना नाम अमर किया। वह शक्तिशाली और धूर्त लोगों से डरता नहीं था। प्रशासन के लिये उसने निम्नलिखित नियम बनाये—

(1) खालसा और जागीर के अमल गुजार (कलेक्टर) नियम के अनुसार भूमिकर और अन्य कर का संगह करें। यदि किसानों से उचित से अधिक कर लिया जाये तो अत्याचारियों को दण्ड दिया जाये। फसल के समय सब बारीक बातों की जांच करके प्रजा की रक्षा की जाये। इस प्रकार कृषकों को अधिक देने से बचाया जाये और अधिक लेने वालों को दण्ड दिया जाये।

(2) खालसा के अम्ल गुजारों के पास पहले दो लेखक रहते थे। एक कारकून और दूसरा खास नवीस कहलाता था। ये लोग गावों के पटेल से मिलकर किसानों पर अत्याचार किया करते थे। अब बादशाह ने इन दो के स्थान पर एक आदमी नियुक्त किया।

(3) खालसा की हत भूमि प्रतिवर्ष कम होती जाती थी, इसलिये यह सोचा गया कि भूमि का नाम हो जाये तो किसान अधिक भूमि जोतेंगे। यह नियम बनाया गया कि जो भूमि चार वर्ष से पड़त पड़ी हुई है उसका, जब जोती जाये तो निश्चित कर से आधा लिया जाये। दूसरे वर्ष तीन चौथाई लिया जाये और तीसरे वर्ष पूरा लिया जाये। इसी प्रकार जो भूमि दो वर्ष से पड़त है उसका प्रथम वर्ष 3/4 भूमिकर लिया गया। जब गरीब किसानों को तकाबी दी जाये तो प्रसिद्ध लोगों से लिखावटें लिखवा ली जायें और इसकी वसूली कुछ पहली फसल पर और कुछ दूसरी फसल पर की जाये। प्रति वर्ष अमल गुजारों के विषय में सूचना दी जाये जिससे अच्छे सेवकों को पुरस्कृत किया जा सके और जो अच्छा काम नहीं करते हैं उनको दण्डित किया जाये।

(4) जब फसल खड़ी हो तो भूमि का नाप करने के लिये आवश्यकतानुसार कई दल नियुक्त किये जायें और समझ के अनुसार नाप शुरू की जाये। क्या फसल है और कितनी है? यह दर्ज किया जाये। जब भारी वर्षा हो और खेतों में पानी भर गया हो तो ढाई बिसवा का कोई लगान नहीं लिया जाये और जंगलों और रेतीले प्रदेशों में 3 बिसवा भूमि छोड़ दी जाये। इसका विवरण प्रति मास भेजा जाये।

(5) जो भूमि बिगड़ गई है, उसकी सूची दरबार में पेश की जाये।

(6) नदियों के नालों में रहने वाले लोग उत्पात करते हैं, इसलिये सिपह-सालार, फौजदार, जागीर तथा अमल गुजार परस्पर मिलकर इसका सुधार करें। ऐसे आदमियों को पहले तो समझाया जाये यदि वे नहीं माने तो उनकी फसल को बरबाद कर दिया जाये। यदि इस कार्य में कोई सैनिक आहत हो जाये तो लोगों पर जुर्माना किया जाये। अमल गुजारों को हर तीसरे मास वेतन दिया जाये। चौथी बार वेतन तब दिया जाये जब किसानों पर कोई बाकी न रहे।

(7) किसान लोग स्वयं ही भूमिकर राजकोष में जमा कर दे। उन पर किसी निगरानी की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये। जो लोग आज्ञा नहीं माने उनकी जमानत ली जाये। यदि जमानत न मिले तो उनकी फसल के अन्न पर चौकीदार रख दिये जायें। प्रत्येक पुरुष से जो भूमिकर लिया जाता है, उसका हिसाब रखा जाना चाहिये। अमल गुजार पटवारी के हस्ताक्षर करवा कर रुपये राजकोष में भेजे।

(8) कोषाध्यक्ष ऐसी मुहरें, रुपये और दाम ले जिन पर अकबर का नाम हो और पुराने सिक्कों पर बट्टा लिया जाये। लाल जलाली 400 दाम का होता है और सम चतुष्कोण

रुपया 40 दाम का। साधारण अशर्फी और गोल अकबर शाही रुपया हो घिस गया है, उसके दाम निम्नलिखित माने जायें—

यदि अशरफी का वजन 2 चावल कम हो तो उसका मूल्य 360 दाम आंका जाये। यदि 3 चावल कम हो तो उसका मूल्य 355 दाम समझा जाये। यदि डेढ़ से दो सुर्ख कम हो तो उसका मूल्य 350 दाम माना जाये। जो रुपया वचन में एक सुर्ख कम हो उसका मूल्य 39 दाम होना चाहिये। यदि डेढ़ से दो सुर्ख तक कम हो तो उसका मूल्य 38 दाम होना चाहिये। पूरे वजन का लाल जलाली ओर डेढ़ से दो सुर्ख कम वजन का जलाली तथा सिक्का सनबात अकबर शाही जो 3 चावल से एक सुर्ख तक कम हो तो राजकोष में ले लिया जाये। यदि उससे भी अधिक घिस गये हों तो तहवीलदार ऐसे सिक्को को अलग रखे और उनका दैनिक हिसाब बड़े दफ्तर में भेजे। जागीरदार और सर्राफ लोग इन नियमों का पालन करें।

(9) एक बीघे पर एक दाम भूमि नापने वालों के लिये लिया जाये। इस हिसाब से प्रत्येक दल को 24 दाम निम्नलिखित दर से मिल जायेंगे—

15 सेर आटा	सात दाम की दर से
1¾ सेर मक्खन	पांच दाम की दर से
1½ सेर दाना (पशुओं के लिये)	चार दाम की दर से
	आठ दाम
	योग 24 दाम

इसमें से अमीन को 5 सेर आटा, आधा सेर मक्खन, 7 सेर दाना और 4 दाम नकद मिलेंगे। लेखक को 4 सेर आटा, आधा सेर मक्खन, साढ़े पांच सेर दाना और 2 दाम नकद मिलेंगे; और तीन नौकरों को 6 सेर आटा और चौथाई सेर मक्खन और तीन दाम नकद मिलेंगे।

रबी के दिनों में जब दिन लम्बे होते हैं तो कम से कम 250 बीघा जमीन प्रति दिन नापी जाये और खरीफ के समय जब दिन छोटे होते हैं, तो कम से कम 200 बीघा जमीन नापी जाये।

मासूम खां और नियाबत खां को क्षमा

मासूम खां बड़ा परेशान था। कुछ भले आदमियों की सहायता से मरियम मकानी के पास पहुंच गया था नियाबत खां, ऐनुलमुल्क के पास चला गया था और फिर उसे छोड़-कर उत्पात के विचार करने लगा था जब इसमें उसको सफलता नहीं मिली तो, वह भी मरियम मकानी के पास जा पहुंचा। वह शाहबाज खां के आदमियों के हाथ में आ गया था। उसके पास मरियम मकानी का पुत्र था, जो बादशाह की सेवा में भेज दिया गया। 26

मार्च, 1582 को बादशाह ने मरियम मकानी का आदेश मान लिया और इन दोनों को क्षमा प्रदान कर दी गई।

खान-अजीम मिर्जा कोका को बंगाल दमन का आदेश

27 तारीख को कोकलताश को सेनानायक बनाकर रवाना किया गया। तारसून खां, शाहम खां, शाहकुली खां, महरम, शेख फरीद और कई अन्य अधिकारियों को इस सेना के साथ भेजा गया और उन्हें खिल्लत और अच्छे घोड़े देकर विदा किया गया। सादिक खां, मुहिब्ब अली खां और बिहार और अवध के सैनिकों को आदेश दिया गया कि वे तैयार होकर शाही सेना में सम्मिलित हो जायें। यह खबर आ चुकी थी, कि बंगाल में विद्रोहियों ने उत्पात खड़ा कर दिया। उनमें से बहुत-से उत्पाती बिहार में आकर लोगों को सता रहे हैं और उन्होंने हाजीपुर और अन्य कस्बों पर कब्जा कर लिया है। सादिक खां और मुहिब्ब अली खां उनका दमन करने के लिये चले। अफगानों के नेता विद्रोहियों की सहायता कर रहे थे।

सम-सुन-निशा बेगम की मृत्यु

यह बेगम छः मास की थी। बादशाह उसे देखकर बड़ा प्रसन्न होता था। अप्रैल, 1582 में उसकी मृत्यु हो गई। इस घटना से अन्तःपुर की महिलाओं को बड़ा दुःख हुआ। कुछ दिन में बादशाह का और अन्तःपुर का शोक-सन्ताप शान्त हो गया।

***

प्रकरण 69

गुलबदन बेगम और अन्य पर्दादार महिलाओं की हज्जाज से वापसी

जब अकबर ने सुना कि गुलबदन बेगम और अन्य महिलायें हज करके वापस आ गई हैं, तो उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया। जब गुलबदन बेगम अजमेर पहुंची तो शाहजादा सुल्तान सलीम को उसके स्वागत के लिये भेजा गया। प्रतिदिन एक दरबारी बेगम से सलाम करने के लिये जाया करता था। जब वह खानवा पहुंची तो 13 अप्रैल, 1582 को अकबर उससे मिला। मार्ग में ख्वाजा याह्यां ने आकर सिजदा किया। उसने हज्जाज के प्रतिष्ठित लोगों के प्रार्थना-पत्र पेश किये। बादशाह ने बेगमों से उनके स्वास्थ्य के विषय में प्रश्न किये।

उन्होंने बादशाह को विविध प्रकार की भेंटें दीं। अगले दिन सब फतेहपुर आ गये। इन महिलाओं को यात्रा में तीन वर्ष और छः मास लगे थे। जब ख्वाजा याह्यां ने बादशाह की इच्छा उन पर प्रकट की तो उनको यात्रा से लौटना पड़ा। महिलायें तेज-ख नामक जहाज पर और ख्वाजा और दूसरे यात्री सई नामक जहाज पर चढ़ कर वापस आये। आदन के पास बहुत-सी नावें डूब गईं। वहां सात मास तक सब को बड़ा कष्ट हुआ, वहां के गवर्नर ने उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। जब तुर्की के शासक सुल्तान मुराद ने यह खबर सुनी तो उसने गवर्नर को दण्ड दिया। जब बादशाह काबुल चला गया था तब ये महिलायें गुजरात पहुंची। वर्षा के कारण बादशाह जबूलिस्तान में था इसलिये विलम्ब हुआ।

ख्वाजगी फतह उल्ला को क्षमा प्रदान

वह बादशाह का एक निकट सेवक था, परन्तु वह बुरी संगति में रहने लगा और आवारा बन गया। जब बादशाह अजमेर गया तो फतह उल्ला को आदेश दिया गया कि कुतुबुद्दीन खां को मालवा के मार्ग से लाये, जिससे योग्य राजदूतों को भेजकर खानदेश के शासक को अच्छी सलाह दी जा सके और उसे धमका कर और पुचकार कर कहा जाये कि मुजफ्फर हुसेन मिर्जा को दरबार में भेज दे। खानदेश पहुंच कर राजदूतों ने आज्ञा पालन की। ख्वाजगी की चालाकी से उनके साथ बुरहानपुर चला गया था। जब यह काम पूरा हो गया तो उसको हज्जाज जाने की आज्ञा हुई, परन्तु उसने हज्जाज से वापस लौटती हुई महिलाओं के द्वारा बीच-बचाव करवाया, तो उसे क्षमा दे दी गई।

शेख अब्दुल नवी और मुल्ला अब्दुल्ला सुल्तानपुरी का आगमन

यह लिखा जा चुका है कि जब अकबर ने इन दोनों विद्वानों की परीक्षा ली तो, वे कठिनाई में और परेशानी में पड़ गये और वे उपयुक्त उत्तर न दे सके। बादशाह ने समझा कि इन दोनों को हज्जाज भेज देना उचित होगा चाहे उनको पसन्द हो या न हो, यात्रियों का दल उनके सुपुर्द कर दिया गया और यह आदेश दिया गया कि आदेश के बिना वे वापस न आये। तब उन्होंने प्रार्थना की कि उन्हें क्षमा किया जाये और हज्जाज न भेजा जाये, परन्तु इसमें वे सफल नहीं हुए। तब उन्होंने पर्देदार महिलाओं से रक्षा के लिये प्रार्थना की, तब बादशाह ने कुछ आदमियों को आदेश दिया कि इन दोनों को इस प्रकार कारावास में रख दिया जाये कि महिलाओं को कुछ पता न चले। मुल्ला अब्दुल्ला की मृत्यु हो चुकी थी, दूसरे व्यक्ति से प्रश्न पूछे गये और उसने कोई उत्तर नहीं दिया और लज्जापूर्वक चुप रहा। तब उसको कारागार में भेज दिया गया जहां उसकी मृत्यु हो गई।

***

प्रकरण 70

सादिक खां की विजय और खबीता खां की मृत्यु

जब नये वर्ष के उत्सव में सम्मिलित होने के लिये खान आजम और बिहार के अन्य अधिकारी दरबार में आये तो खबीता खां कुछ विद्रोही लोगों को साथ लेकर बिहार आया और वहां निर्बल लोगों को सताने लगा। उसने हाजीपुर तथा कई परगने दबा लिये। सादिक खां वीरतापूर्वक पटना में डटा रहा, उसने वहां के जागीरदारों को एकत्र कर लिया और विद्रोहियों से युद्ध करने की तैयारी की। सादिक खां सेना के मध्य भाग में, मुहिब्ब अली खां दायें पार्श्व में और उलूग खां बख्शी बायें पार्श्व में था। बिहार खां अब्बुल माली अग्रभाग में थे, तोपखान मुहम्मद कुली बेग तुर्कमान के नेतृत्व में था, विद्रोही लोग भी युद्ध के लिये तैयार हो गये। खबीता मध्य भाग में था, जब्बारी दायें पार्श्व में और उसके भानजे दस्तम और रुस्तम बायें पार्श्व में थे। तरखान दीवाना सईद बेग और शाहदाना अग्रभाग का नेतृत्व कर रहे थे। शाही सेवकों ने तोपखाने के साथ कुछ वीर लोगों को गंगा पार करवा कर हाजीपुर भेजा और गंडक नदी के तट पर एक दुर्ग बना लिया, जिससे विद्रोही कुछ नहीं कर सके, उन्होंने रात्रि में आक्रमण किया। दोनों सेनाओं में नित्य प्रति मुठभेड़ होती थी। शाही लोगों की विजय हुई और विद्रोही लज्जित होकर भाग गये। 40 दिन तक यह संघर्ष चलता रहा। सादिक खां का चचेरा भाई वीरतापूर्वक लड़ता हुआ मारा गया। अगले दिन 24 अधिकारियों ने नदी पार करके लड़ाई लड़ी तो खबीता के दोनों भानजे शाही पार्श्व पर टूट पड़े। मुहिब्ब अली दृढ़तापूर्वक खड़ा रहा। मुहिब्ब अली खां के पुत्र हबीब अली खां ने बड़ी वीरता दिखाई। फिर खबीता सादिक खां के सामने आया। तब शत्रु आ दायां पक्ष भागने लगा। थोड़ी देर में विद्रोही हार गये। यह विजय शाही सेना सेवकों को हारते-हारते प्राप्त हुई थी। फिर अचानक ही मिराक हुसेन खबीता खां का सिर काट कर ले आया। ऐसा प्रकट हुआ कि खबीता खां को एक तोप का गोला लग गया था। तब मिराक हुसेन उसका सिर काट कर ले आया था। इसके बाद ईश्वर को धन्यवाद दिया गया। खबीता खां मुगल जाति का था और बदख्शां की सेना में काम कर चुका था। मासूम खां काबुली के साथ-साथ उसने कई साहस के काम किये थे, फिर वह शीघ्र ही विद्रोहियों का सरदार बन गया था। उसका सिर दरबार में भेज दिया गया।

मिर्जा खान की सोरठ से वापसी

शिहाबुद्दीन अहमद खां ने मिर्जा खस के नेतृत्व में सोरठ की विजय के लिये अमीन खां गोरी के विरुद्ध सेना भेजी थी, परन्तु भीरुता के कारण और योजना के अभाव के कारण उसको विजय नहीं मिली। बादशाह ने उसका काम पसन्द नहीं किया और उसके अज्ञान

और दम्भ के लिये उसको फटकारा। मिर्जा खान ने अपने अपराध के लिये नम्रता-पूर्वक क्षमा चाही।

कश्मीर को राजदूत भेजा

कश्मीर प्रदेश में एक राजदूत भेजा गया। सालीह दीवाना ने बादशाह से निवेदन किया कि कश्मीर के सुल्तान के पास बादशाह ने कोई राजदूत नहीं भेजा है, इसलिये वह डरा हुआ है, तब शेख याकूब कश्मीरी को सुल्तान कश्मीर के पास भेजा गया और सुल्तान के पुत्र हैदर को भी स्वदेश लौट जाने की इजाजत दे दी गई।

मासूम खां फरनखुदी की मृत्यु

पहले लिखा जा चुका है कि बादशाह ने कृपा करके इस व्यक्ति को क्षमा प्रदान कर दी थी और प्राणदंड नहीं दिया था। जुलाई, 1582 में अर्ध रात्रि के समय वह महल से अपने मकान पर जा रहा था, तो कुछ लोगों ने प्रहार करके उसको मार डाला और जांच करने पर पता नहीं लगा कि हत्यारा कौन था। बादशाह ने दया करके मासूम खां के बच्चों का पालन किया।

जालेर को प्राणदंड

जालेर एक दलाल का पुत्र था। वह निर्लज्ज और अशिष्ट व्यक्ति था और घोड़ों का व्यापार करता था इसलिये शाही दरबार तक उसकी गति हो गई थी। उस पर बादशाह को बड़ा विश्वास था। फिर बादशाह को सूचना मिली कि उसने एक स्त्री को फुसला लिया है और उसके पति की हत्या कर डाली है। बादशाह ने जांच करवाई तो आरोप ठीक पाया गया। तब जालेर को कारागार में भेज दिया गया। इसके पश्चात् उसके अन्य अपराधों का पता लगा और 10 जुलाई, 1582 को उसको प्राणदंड दिया गया।

अमीर फतह उल्ला शिराजी को निमन्त्रण

बादशाह एक अर्से से अमीर फतह उल्ला से मिलना चाहता था। इस अमीर को भी दरबार में उपस्थित होने की बड़ी अभिलाषा थी, अन्त में आदिल खां के निमन्त्रण पर वह शिराज से दक्षिण आया। जब आदिल खां की मृत्यु हो गई तो अमीर फतह उल्ला के मन में दरबार में आने की पुरानी अभिलाषा जागृत हुई। बादशाह ने उस पर नाना प्रकार की कृपाएं कीं जिससे उसका दु:ख हल्का हो गया। दक्षिण के शासकों को और साम्राज्य के जागीरदारों को आदेश दिया गया कि फतह उल्ला को दरबार में पहुंचाए और मार्ग में उसके लिये व्यवस्था कर दें। तब फतह उल्ला दरबार में उपस्थित हुआ।

जीवन खां कोका की मृत्यु

जीवन खां कोका को पेट में दर्द हुआ और अर्श का रोग भी हो गया, जिससे उसकी

मृत्यु हो गई। बादशाह ने उसको क्षमा करने के लिये ईश्वर से प्रार्थना की और उसके दु:खित परिवार से मिलकर उनको सान्त्वना दी।

तालाब का फूट जाना

बादशाह ने फतेहपुर की पहाड़ी पर दरगाह के उत्तर की ओर एक तालाब बनवाया था, जिसके तट पर वह जाया करता था और अनेक लोग वहां आनन्द-प्रमोद किया करते थे। वहां कोई चौपड़, कोई शतरंज, कोई ताश खेला करते थे। बादशाह सब लोगों को देखा करता।

18 अमरदाद के दोपहर के समय एकाएक इस समुद्र जैसे तालाब की कुछ पाल टूट गई और पानी जोर से बाहर निकलने लगा, किसी दरबारी की क्षति नहीं हुई। परन्तु निम्न श्रेणी के अनेक लोग नष्ट हो गये और कितने ही के मकान बह गये। नष्ट होने वालों में महदी से बादशाह परिश्रित था। उस दिन अकबर ने व्रत किया कि प्रतिमास की अठारह तारीख को मांस नहीं खाया जायेगा। बादशाह ने यह भी निश्चय किया कि प्रति वर्ष इसकी दो बार तुला की जाय। उसके जन्म से अब तक उसको चान्द्र पंचांग के अनुसार 5 रजब को तौला जाता था, अब उसको सौर पंचांग के अनुसार आवान मास के और मुञ्ज के दिन भी तौला जाये। यह भी आदेश हुआ कि उसकी 12 वस्तुओं से तुला की जाये।

(1) सोना, (2) रेशम, (3) पारा, (4) सुगन्धित पदार्थ, (5) तांबा, (6) जस्ता, (7) औषधियां, (8) मक्खन, (9) चावल और दूध, (10) लोहा, (11) अन्न, (12) नमक। ईश्वर के सामने उसने यह भी व्रत लिया कि आवान मास में मांस नहीं खाया जायेगा और आजार महीने में उतने दिन तक उपवास किया जायेगा जितने वर्षां की बादशाह की उम्र है। आयु के वर्ष की संख्या के अनुसार भेड़े, बकरे और मुर्गियां उस सम्प्रदाय के लोगों को दान दी जाती थीं जो हिंसा नहीं करते थे। यह भी आदेश हुआ कि अकबर के चेले प्रति सौर वर्ष में अपने-अपने जन्म दिन को हिंसा न करे और अपने उदरों को प्राणियों की कब्रें नहीं बनायें। चान्द्र वर्ष के अनुसार तुला के लिए चांदी, कपड़ा, शीशा, टीन, फल, मिठाइयां, शाक और शीशम का तेल निश्चित किये गये। पहले शाहजादों की चांद्रमास के अनुसार तुला की जाती थी, अब वह सौर वर्ष के अनुसार की जाने लगी। शाहजादा सलीम की तुला पहले 17 रबी उल अव्वल को होती थी, अब वह18 शहरीयूर को की जाने लगी। शाहजादा सुल्तान मुराद की तुला 3 मुहर्रम की बजाय 27 खुरदादा को की जाने लगी, इसी प्रकार शाहजादा दनियाल की तुला 2 जमादिल अव्वल के बजाय 28 शहरीयूर को की जाने लगी। इस समय एक प्रयोग किया गया कि बच्चे बोलना कैसे सीखते हैं। एक सभा में इस विषय पर विचार किया गया।

24 इलाही संवत् को बादशाह ने अपना मन्तव्य प्रकट किया कि आदि काल से मनुष्य दूसरे को बोलते हुए सुनकर ही बोलना सीखता है, यदि ऐसी व्यवस्था की जाए कि कोई

बच्चा किसी को बोलते हुए सुने ही नहीं तो उसमें वाक् शक्ति नहीं आयेगी। यदि किसी-किसी में वाक् शक्ति उबल पड़ेगी तो समझा जायेगा कि यह ईश्वर की देन है। तब अकबर ने एक सराय बनवाई। जहां कोई भाषा की ध्वनि नहीं पहुंचती थी और नवजात बच्चों को प्रयोग के निमित्त उसमें रखा गया, उनकी निगरानी के लिये ईमानदार और सक्रिय पहरेदार नियुक्त हुए। कुछ समय तक धायें उनको चुपचाप दूध पिला जाती थीं। यह स्थान गूंगामहल कहलाता था। 9 अगस्त, 1582 को अकबर शिकार करने के लिए बाहर गया, उसके दूसरे दिन वह कुछ परिचारिकों को साथ लेकर उस प्रयोग-गृह में पहुंचा। वहां से न किसी के चीखने की आवाज़ आई न वाणी ही सुनी गई। वह बच्चे चार वर्ष से वहां रहते थे, केवल गूंगों जैसी ध्वनि करते थे। बादशाह का इस विषय में जो ख्याल था, वह सत्य सिद्ध हुआ।

***

प्रकरण 71

मिर्जा खान की शाहजादा सुल्तान सलीम के संरक्षक के पद पर नियुक्ति

कुतुबुद्दीन खां को इस पद पर नियुक्त किया गया था, परन्तु इस समय वह सुदूर गुजरात में नियुक्त था। इसलिये बैराम खां के पुत्र मिर्जा खान को इस पद पर नियुक्त किया गया। उसमें बुद्धि, दूरदर्शिता और स्वामिभक्ति थी। अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के हेतु उसने एक बड़ा भोज दिया और बादशाह को निमंत्रित किया। 27 शहरीयूर को कुछ लोगों के साथ बादशाह उसके मकान पर गया।

अकबर की बीमारी

1582 को अक्टूबर मास के आरम्भ में बादशहा के पेट में दर्द हुआ। शुरू में तो उसने चिकित्सा नहीं करवाई, परन्तु स्वामिभक्त लोगों के आग्रह से उसने औषध लेना शुरू किया, इसके लिये यूनानी और आयुर्वेदिक चिक़ित्सक इलाज करने लगे। इस रोग के लिये मंदरेचक अधिक उपयोगी हैं, परन्तु भारतीय वैद्य इसका उपयोग नहीं करते। अतः यूनानी चिक्रित्सा शुरू की तो 10 अक्टूबर को स्वास्थ्य का चिन्ह प्रकट होने लगे और थोड़े समय में ही अकबर स्वस्थ हो गया। पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करने में उसके 1 मास और 6 दिन लगे।

शाहबाज खां की कारागार से मुक्ति

शाहबाज खां ने अपनी कृत्वर्य-उपेक्षा के विषय में पश्चात्ताप प्रकट किया तो बादशाह ने उसको कारागार से मुक्त कर दिया और शाहबाज खां कृतज्ञ होकर राजभक्तिपूर्वक सेवा करने लगा।

पर्यवेक्षकों की नियुक्ति

अकबर को ज्ञात हुआ कि क्रय-विक्रय में व्यापारियों की बड़ी हानि होती है इसलिये विभिन्न वस्तुओं के व्यापार के लिये निम्नलिखित पर्यवेक्षक नियुक्त कर दिये गये—

1. मिर्जा खान घोड़ों का पर्यवेक्षक।
2. राजा टोडरमल हाथियों और अन्न का पर्यवेक्षक।
3. शाह कुली खां फल और मिठाई का पर्यवेक्षक।
4. जैन खां कोका तेल का पर्यवेक्षक।
5. सादिक खां सोने और चांदी का पर्यवेक्षक।
6. इतिमाद खां गुजराती जवाहरात का पर्यवेक्षक।
7. शाहबाज खां किमखाब का पर्यवेक्षक।
8. मिर्जा यूसुफ खां ऊंटों का पर्यवेक्षक।
9. शरीफ खां भेड़ों और बकरों का पर्यवेक्षक।
10. गाजी खां बदख्शी नमक का पर्यवेक्षक।
11. मखसूस खां कवचों का पर्यवेक्षक।
12. कासिम खां मादक पदार्थों का पर्यवेक्षक।
13. हकीम अब्दुल फतह मद्य का पर्यवेक्षक।
14. ख्वाजा अब्दुस्समद चमड़े की चीजों का पर्यवेक्षक।
15. नवरंग खां रंगों का पर्यवेक्षक।
16. राजा बीरबल पशुओं और भैसों का पर्यवेक्षक।
17. शेख जमाल औषधियों का पर्यवेक्षक।
18. जकीब खां पुस्तकों का पर्यवेक्षक।
19. लतीफ ख्वाजा शिकारी पशुओं का पर्यवेक्षक।
20. हबीबुल्ला शक्कर का पर्यवेक्षक।
21. अबुल फजल ऊनी कपड़ों का पर्यवेक्षक।

पर्यवेक्षक को क्रेता से आधा प्रतिशत और विक्रेता से 1 प्रतिशत मिलता था। विवाह

के दोनों पक्षों के खर्च को आंका जाता था और उसका 5 प्रतिशत बाकी खां को मिलता था उसको तुई बेगी की उपाधि प्रदान की गई थी।

नूर मुहम्मद को प्राणदण्ड

नूर मुहम्मद पूर्वी प्रान्तों के विद्रोहियों में बड़ा कुख्यात था और जनता पर अत्याचार किया करता था। जब खान आजिम मिर्जा कोका जौनपुर आया तो खबर मिली कि नूर मुहम्मद तिरहुत के मार्ग से बंगाल से आकर ख्वाजा अब्दुल गफ्फार से मिल गया है ओर सारन के जिले में लूटमार कर रहा है। नमक के व्यापारियों के काफिले को वह अपने साथियों के साथ लूटना चाहता था, परन्तु वे लोग नमक के बोरों की आड़ में खड़े होकर सामना करने के लिये तैयार हो गये। उन्होंने लुटेरों को वापस धकेल दिया। जब शाही सेना ने आकर गंगा पर पुल बना लिया और नदी पार करने की तैयारी की तो नूर मुहम्मद और उसके साथियों ने कल्याणपुर के जमीनदार से सहायता मांगी, जो नहीं मिली। भागते हुए लुटेरों का शाही सेना के लोगों ने पीछा किया तो अब्दुल गफ्फार तिरहुत के मार्ग से वापस भागना चाहता था परन्तु काशीह जाति के लोगों ने उसको और उसके 70 साथियों को मार डाला। नूर मुहम्मद को गया जाते हुए खान अजीम के लोगों ने चम्पारण के समीप पकड़ लिया और फिर उसको मार डाला।

बीरबल के महल पर बादशाह गया

बीरबल अकबर का बड़ा घनिष्ठ साथी था। उसके लिये अकबर ने फतेहपुर सीकरी में एक महल बनवाया था। जब वह तैयार हो गया तो बीरबल ने चाहा कि अकबर वहां आकर उसको सम्मानित करे। 7 बहमन (जनवरी, 1583) को बीरबल ने बहुत बड़ा भोज दिया, जिसमें बादशाह सम्मिलित हुआ।

राजा भगवन्तदास पंजाब का प्रधान सेनापति बना

इसी समय राजा भगवन्तदास को पंजाब प्रान्त की सेना का प्रधान सेनापति नियुक्त किया गया और सईद खां को सम्भल की जागीर दी गई। उसको आदेश दिया गया कि अरब बहादुर को दण्ड दे क्योंकि वह वहां के पर्वतीय प्रदेश में उत्पात कर रहा था। 8 इसफन्दर मूज को बादशाह शिकार करने गया और सायंकाल जलेशर नामक कस्बे में उतरा। फतेहपुर से 10 कोस के अन्तर पर एक पहाड़ी के ऊपर जगमल पंवार ने एक सुन्दर हवेली बनवाई थी और उसका नाम रूशिनास रखा था। यह मनोहर भवन था, जहां मस्तिष्क ताजा हो जाता था। अकबर उसमें 3 दिन तक ठहरा।

***

प्रकरण 72

राज्यारोहण के बाद 28 वें इलाही संवत् का आरम्भ

सोमवार, 10 मार्च, 1583 को 28 वें इलाही संवत् का प्रारम्भ हुआ। इस वर्ष की एक घटना यह हुई कि बंगाल की तृतीय विजय प्राप्त हुई। पिछले वर्ष खान अजीम मिर्जा कोका को बिहार के विद्रोहियों को दण्ड देने के लिये और बंगाल की विजय के लिये भेजा था परन्तु इस सेना के पहुंचने से पहले ही बिहार के विद्रोहियों को यथोचित दण्ड मिल चुका था। इसका उल्लेख किया जा चुका है। अब वर्षा का आरम्भ होने वाला था इसलिये उस वर्ष यह काम पूरा नहीं हो सका। जब बाढ़ें बन्द हो गईं तो शाह कुली खां महरम, सादिक खां, शेख इब्राहिम और शेख फरीद बुखारी को रवाना किया गया और हाजीपुर में एक बड़ी सेना इकट्ठी हो गई। खान अजीम ने बहुत-से वीर और स्वामिभक्त सेवकों के साथ गढ़ी की ओर प्रयाण किया परन्तु बड़े-बड़े नालों और कीचड़त था पानी के कारण वह आगे नहीं बढ़ सके, फिर मुंगेर के पास सारी सेनायें मिल गईं और काली गंग के पास विद्रोही लोग लड़ने के लिये तैयार हो गये। इससे पहले ही सरफुद्दीन हुसेन, बाबा खां काकशाल और बहुत-से विद्रोही मर चुके थे। मासूम खां काबुली विद्रोहियों का नेतृत्व कर रहा था। कुतलू नौहानी उड़ीसा में जोर पकड़ रहा था। वह बंगाल के एक भाग पर कब्जा कर चुका था। जब मासूस खां ने सुना कि शाही सेना आ रही है तो उसने कुतालू खां को अपने में शामिल कर लिया और फिर वह घोड़ा घाट की ओर चला और जब्बारी मिर्जा बेग और शेष काकशाल लोग से उसने मेल कर लिया, फिर कारी गंग पहुंच कर वह युद्ध की तैयारी करने लगा।

नौ फखरदीन को शाही सेना के अग्रभाग ने गढ़ी छीन ली। 16 तारीख को शाही अधिकारियों ने विद्रोहियों से लड़ाई लड़ने की तैयारी की और अपने शिविर से 12 कोस दूर वे शत्रु की घात में बैठ गये। प्रति दिन लड़ाई होने लगी। फिर शाही अधिकारियों में फूट हो गई और वे कहने लगे कि शत्रु की संख्या बहुत बड़ी है। उन्होंने अकबर को प्रार्थनापत्र लिखकर भेजा कि सहायक सेना तुरन्त भेजी जाये। तब अकबर ने अर्दी बिहीस्त मिर्जा खां आदि कई सरदारों को खिल्लतें तथा बढ़िया घोड़े देकर रवाना किया। उनके प्रस्थान से पूर्व ही विजय की सूचना मिल गई। फिर एक मास तक शाही सेना और विद्रोहियों में लड़ाई होती रही और दोनों पक्षों ने बड़ी वीरता के काम किये। 14 तारीख को शाही सेना को विजय प्राप्त हुई।

इसका वृत्तान्त निम्नलिखित है

काजीजादा जो विद्रोहियों का एक नेता था, कई युद्धपोतों के साथ फतेहाबाद से आ रहा था कि उसको एक तोप का गोला लग गया, जिससे वह मर गया। उसके स्थान पर मासूम खां ने काला पहाड़ को नियुक्त कर दिया परन्तु वह भी शीघ्र मारा गया। साथ ही मासूम खां और काकशाल लोगों में तथा खाल-दीन में फूट हो गई। उनमें से बहुत-से शाही सेना में आ मिले। सबसे पहले खाल दीन ही आया। उसके पश्चात् मिर्जा बेग काकशाल, जब्बारी और दूसरे लोग आये। फिर यह ठहरा कि वे युद्ध से हट कर अपने घर चले जायें और कुछ दिन बाद वह आकर बादशाह की सेवा करे। जैसा कहा गया वैसा ही उन्होंने किया। तब विद्रोही परेशान होकर भाग गये। खान अजीम उनका पीछा करना चाहता था, परन्तु डरपोक लोगों ने उसको रोक दिया। जब विजय की खबर आई तो ईश्वर को धन्यवाद दिया गया।

जब मासूम खां की हार हो गई तो वह काकशालों के पास चला गया। वह अपने परिवार को बचाना चाहता था। काकशाल घोराघाट के पास लड़ने के लिये तैयार हो गये। मासूम खां ने घोराघाट को लूटकर काकशालों पर आक्रमण करने के लिय कूच किया। खान-अजीम ने लगभग 4 हजार सवार तरसून खां के नेतृत्व में उधर की ओर भेजे तो विद्रोही लोग भाग गये। तब विजयी लोगों ने उनका पीछा किया। मिर्जा बेग, खालदीन और वजीर जमीर और अन्य लोग अपने वायदों पर कायम रहे।

अमीर फतह उल्ला सिराजी का दरबार में आना

अमीर फतह उल्ला बड़ा ज्ञानवान था। उसने ख्वाजा जमालुद्दीन महमूद, मौलाना कमालुद्दीन शेखानी और मौलाना अहमद कुर्द के स्कूलों में शिक्षा पाई थी परन्तु उसका ज्ञान उनसे अधिक ऊंचा था। बीजापुर के सुल्तान आदिल खां ने बड़े प्रयत्न से उसको सिराज से दक्षिण में बुलाया था। अब आदिल खां की मृत्यु हो गयी तो अमीर फतह उल्ला शाही दरबार के लिये रवाना हुआ और 25 तारीख को वहां पहुंचा। वह इतना विद्वान् था कि यदि प्राचीन ज्ञानग्रन्थ सारे ही नष्ट हो जाते तो वहां ज्ञान की नई स्थापना कर देता और लुप्तज्ञान की कोई चिन्ता नहीं करता। वह अकबर का शिष्य बनना चाहता था। सौभाग्य से उसकी इच्छा पूरी हो गई।

शाहबाज खां को बंगाल भेजना

जब मासूम खां हार गया तो शाही सेना ने कुतुलुग के विरुद्ध कूच किया। खान-ए-अजीम को उस देश की जलवायु पसन्द नहीं थी। इसलिये उसने प्रार्थना की कि उसकी नियुक्ति अन्यत्र कर दी जाये। कुछ दिन बाद शाहबाज खां ने खान-अजीम से काम संभाल लिया।

मालदेव की दौहिती को बचाया

भारत में पति के देहान्त पर उसकी पत्नी अपने शरीर को भस्म कर देती थी। यदि वह इससे पीछे हटती थी तो उसके पति के रिश्तेदार एकत्र होकर उसकी इच्छा न हो तो भी उसको अग्नि को भेंट कर देते थे। अकबर ने शासन के आरम्भ से ही प्रत्येक नगर और जिले में कर्मचारी नियुक्त कर दिये थे कि जो स्त्री सती न होना चाहे उसको बचाया जाये।

इस समय बादशाह ने जयमल को बंगाल के अधिकारियों के पास भेजा था। अभियान की अति और गर्मी की अधिकता के कारण उसकी चौसा के पास मृत्यु हो गई। उसकी पत्नी मोटा राजा की पुत्री थी। उसमें सती होने का साहस नहीं था। उदय सिंह और उसके पुत्र ने तथा कुछ मूर्ख लोगों ने चाहा कि उसको सती किया जाये। यह खबर प्रात:काल शाही अन्त:पुर में पहुंची तो बादशाह एक तेज घोड़े पर सवार होकर रवाना हुआ। जब बादशाह घटना स्थल पर पहुंचा तो सब गड़बड़ बन्द हो गई। जगन्नाथ और रायसाल ने आगे जाकर अगुवा लोगों को पकड़ लिया और बादशाह के सामने प्रस्तुत किया। बादशाह ने उनको कैद कर लिया। थोड़ी ही देर में अकबर ने सारा वातावरण शान्त कर दिया।

इतिमाद खां को गुजरात भेजा

गुजरात की विजय के आरम्भ में इतिमाद खां को वहां का सूबेदार बनाया गया था परन्तु उसमें बुरे विचारों का उदय हुआ तो बादशाह ने उसको कारागार में डाल दिया। इतिमाद खां में कुछ सुधार होने लगा। तब बादशाह ने उसको सेना का नेतृत्व और प्रान्त का शासन सौंप दिया, फिर भी इतिमाद खां का पूरा सुधार नहीं हुआ। तब मीर अबू-तुराब को गुजरात का, अमीन ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद को बख्सी और अबुल कासिम को दीवान नियुक्त किया गया। उनके साथ मुहम्मद हुसेन शेख अबुल मुजफ्फर आदि कितने ही लोग भेजे गये और प्रत्येक को खिल्लत और मनचाहा घोड़ा देकर बिदा किया गया। आदेश यह था कि जब नया सूबेदार आये तो शिहाबुद्दीन दरबार में आ जाये।

इसी समय निजामुल्मुल्क का राजदूत मीर-शरीफ जिलानी आया। उसके साथ दक्षिण के दूसरे राजदूत भी थे। सबने बादशाह के सामने सिजदा किया और भेटें प्रस्तुत कीं। बादशाह ने कृपापूर्वक सब भेंटें स्वीकार की।

***

प्रकरण 73

अकबर का प्रशासन सुधार

अकबर समय-समय पर प्रशासन में सुधार किया करता था। इस समय उसने कठोरता और नरमी तथा विवाह और जन्मदिन के उत्सवों की देखरेख शाहजादा से लीग के सुपुर्द की। उसकी सहायतार्थ मिर्जा, खान शेख अबुल फैज फैजी और फतह उल्ला को नियुक्त किया गया। शाही घराने का प्रबन्ध शाहजादा सुल्तान मुराद को सौंपा और राई साल दरबारी, कर्म उल्ला, ख्वाजा अब्दुस समद, सीरिकलम और मुहम्मद अली खजांची को उसकी सहायतार्थ नियुक्त किया। ईमान, धर्म और बुद्धि का पर्यवेक्षण शाहजादा सुल्तान दनियाल को सौंपा गया। उसकी सहायता के लिये गाजी खां बदख्शी, राय सुर्जन और अबुल फजल नियुक्त हुए। पुण्यदान और वृत्तियों का कार्य सुल्तान ख्वाजा, हकीम अब्दुल फतह, मीर अबू तुराब और काजी तथा मुक्ति को दिया गया। साम्राज्य का विकास और खालसा के अधिकारियों की नियुक्ति और निरस्ती राजा टोडरमल, ख्वाजा याह्यां, राय दुर्गा और यार अली को दी गई। सेना का वेतन शाहबाज खां, जाफर बेग और अली दोस्त खां को सौंपा गया। चीजों के भावों का निरीक्षण जैन खां कोका, इस्माईल कुली खां, आईन्दा खा और हाजी हबी-बुल्ला को दिया गया। कवचों की और मार्गों की रक्षा का कार्य कुलीच खां, जगन्नाथ, लूणकरण और सालीह आकिल को दिया। मृतकों की सम्पत्ति की देखरेख और उसे उत्तराधिकारियों को देने का काम शरीफ खां, राजा आशकरण, नकीब खां और अब्दुल रहमान को सौंपा गया। जवाहरात का क्रय और विक्रय इतिमाद खां गुजराती, बाकी खां जगमल, हकीम ऐनुलमुल्क और नियामत खां को दिया गया था। इमारतें नौरङ्ग खां, कासिम खां, मकसूस खां और लतीफ खां के सुपुर्द की गई। न्याय-विभाग के अध्यक्ष राजा बीरबल, कासिम अली खां, हकीम हमाम और समशेर खां कोतवाल को बनाया गया। इस पुस्तक के लेखक को भी इसी कार्यालय में नियुक्त किया गया। यह आदेश दिया गया कि न्याय-विभाग के लोग साक्षी और शपथ से ही सन्तुष्ट न हो जाया करें। वे मामले की गहरी जांच करें। रिश्वत, दुःखी लोग की असहाय अवस्था और ऊंचे लोगों के अत्याचार के कारण यह आवश्यक है कि जांच में कोई ढीलापन नहीं होना चाहिये।

वजीर खां की विजय और कुतलुग नोहानी की हार

यह पहले ही लिखा जा चुका है कि मासूम खां काबुली और दूसरे राजद्रोही लोग भाग गये थे। तब खान अजीम और दूसरे अफ़सर सोचने लगे कि चालाक कुतलू का क्या इलाज किया जाये। वह चाहता था कि यह संधि हो जाये। उसको उत्तर दिया गया कि यदि वह हृदय से बात करता है तो उसको शाही सेवा में ले लिया जायेगा और उड़ीसा उसको

वापस दे दिया जायेगा। इस समय आजिम खां अपनी जागीर पर जाना चाहता था। उसकी इच्छा थी कि थोड़े दिन में सादिक खां उससे काम संभाल कर कुतलू से बातचीत करे। सादिक खां ने असंगत शर्तें रखीं इसलिये खान आजीम ने वजीर खां की ओर देखा। तब वजीर खां और खान आजीम हाजीपुर गये। उनके चले जाने पर कुतलू ने और सिर उठाया और संधि के लिए अनुपयुक्त शर्तें रखीं। तब उससे लड़ने के लिये शाही कर्मचारी शेरपुर से रवाना होकर बर्दमान ठहरे। कुतलू खां 6 कोस दूर पड़ा हुआ था और चालाकियां करता था। शाही कर्मचारी उसकी मीठी बातों में आ गये। उन्होंने मदारन, मेदनीपुर और दूसरे स्थान उड़ीसा से मिला दिये। कुतलू खां आज्ञा मानने के लिए तैयार हो गया और अपने भाई के पुत्र को भेंटें लेकर भेजा परन्तु फिर उसमें विद्रोह की भावनायें उठीं। उसने सोचा कि एक कोई बड़ा शाही कर्मचारी उसके हाथ में आ जाये तो उसका उद्देश्य पूरा हो जाये। उसने लिखा कि ''मैं अपने भतीजे को दरबार भेज रहा हूं। अब सादिक खां थोड़े-से आदमियों के साथ आये और मैं भी थोड़े-से आदमियों के साथ चलूं। हम दोनों मिले और मैं अपने भतीजे को उसके सुपुर्द कर दूंगा। सादिक खां सद्भावना और सरलता से हुसने खां आदि चार सरदारों को अपने साथ लेकर चला। जब वह निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचा तो कुतलुग खां का चिह्न भी नहीं था। उसके सेवक सादिक खां को कुतलुग खां किसी दूर स्थान पर ले जाना चाहता था और फिर अपना उद्देश्य पूरा करना चाहता था। सादिक खां इस चालाकी को समझ गया और वापस जाने लगा तथा अपने हाथी पर बैठकर निकला। हाथी काबू में नहीं रहा और इधर-उधर भागने लगा। रात्रि का समय था, इसलिये उसके आदमी उसके साथ नहीं लग सके। फिर एकाएक कुछ आदमियों ने बाण चला कर उसको आहत कर दिया। तब वह उतर कर चलने लगा तो एक स्वामिभक्त आदमी ने उसको घोड़ा दिया और उसको शिविर में ले आया। जब शाही अधिकारी दामोदर नदी को पार करके लड़ाई की तैयारी करने लगे। कुतलुग भी अपने दुर्ग को दृढ़ करने लगा।''

कुतलू और कितने ही लोग एक दुर्ग में छिप गये। फिर शुरू में अमरदाद, सादिक खां आदि बहादुर से युद्ध करने चले। बड़े संघर्ष के बाद उन्होंने दुर्ग छीन लिया और वह भाग कर कुतलू के पास चला गया। दूसरे दिन लड़ाई हुई तो कुतलू भाग गया, परन्तु शाही अफसरों ने उसका पीछा नहीं किया। वे नदी के तट पर ही ठहर गये।

2 तारीख को बादशाह की 8 पदार्थों से तुला हुई और चान्द्र जन्म दिन के उपलक्ष में भोज दिया गया।

बुरहान उल मुल्क का दरबार में आना

बुरहान उल मुल्क, मरतजा निजाम उल मुल्क का छोटा भाई था, जब हुसेन निजाम उल मुल्क की मृत्यु हुई तो उसका ज्येष्ठ पुत्र मुर्तजा प्रत्यक्ष में उसका उत्तराधिकारी बना, परन्तु वास्तविक उत्तराधिकारी उसका माता बन गई। पिता की भांति माता भी बुरहान से

बड़ा प्रेम करती थी और अन्य बच्चों से उसको अधिक योग्य समझती थी। जब स्थिति बदली तो कलहकारी और प्रपंची लोगों के बहकाने से मुर्तजा ने अपनी माता और भाई को कैद करके एक दुर्ग में रख दिया। वह एक सम्प्रदाय में फंस गया, जिससे उसका मस्तिष्क विकृत हो गया और लोगों से मिलना-जुलना छोड़कर उसने सारा राजकाज हुसेन नामक एक निकम्मे व्यक्ति के सुपुर्द कर दिया और उसको असफ खां की उपाधि दी। फिर आसफ खां ने बीदर के वरीदशाही सुल्तानों के विरुद्ध युद्ध शुरू कर दिया तब मुर्तजा एकान्त छोड़कर बाहर आया। फिर निजाम उल मुल्क ने हुसेन से समझौता कर लिया। जब शान्ति हो गई तो उसने अपने साथियों से कहा, मेरा भाई शासन करना चाहता है, आप लोग सब उससे मिल जाओ। लोगों ने कहा, पहले अधम लोगों को हरा देना चाहिये अन्यथा ऐसा समझा जायेगा कि आपने दुर्बलता के कारण यह त्याग किया है। बुरहान में मुर्तजा का मुक़ाबला करने का सामर्थ्य नहीं था। बहुत-से लोगों ने उसका साथ छोड़ दिया तो वह बीजा नगर चला गया। वहां से बीजा नगर के सुल्तान आदिल खां के पास गया। जब उसकी कोई भी युक्ति सफल नहीं हुई तो वह अहमदनगर वापस आ गया और जोगी के वेष में रहने लगा। गुप्तरूप से अपना एक दल बनाने लगा। जब उसकी गतिविधि प्रकट हो गई तो वह बगलाना पहुंच गया। वहां से असफल होकर नदरकार कुतुबुद्दीन के पास चला गया। 11 तारीख को उसने शाही दरबार में उपस्थित होकर सिजदा किया। बादशाह ने उस पर कई प्रकार की कृपायें कीं। दो वर्ष पहले बुरहान नामक एक व्यक्ति दरबार में उपस्थित किया गया था। मीर जमालुद्दीन हुसेन अंजु ने उसका परिचय करवाया था और उसके लिये उच्च पद प्राप्त किया था। अब इस मौके पर दोनों का सामना हुआ और पूछताछ हुई। तब उस निर्लज्ज व्यक्ति ने कहा, मैं तो किसी दक्षिणी का पुत्र हूं जो हकीम उल मुल्की कहलाता था। निजाम उल मुल्क की माता मुझे पुत्र मानती थी। मैं लोभ और अदूरदर्शितावश पथ विचलित हो गया। वह भयभीत होकर भाग गया, परन्तु आगरे के मार्ग पर पकड़ लिया गया। फिर उसको कारागार में रख दिया।

अरब बहादुर को दंड

यह पहले दिखा जा चुका है कि अरब बहादुर ने कुव्यवहार किया था और वह असफल हो गया था। सम्भल में आवारा बन कर उसने बिहार में उत्पात खड़ा किया था। जब खान अजीम मिर्जा कोका बंगाल से उधर की ओर पहुंचा तो उससे बदला लेने के लिये सुभान कुली तुर्क के नेतृत्व में कुछ वीर पुरुष भेजे गये। दूरदर्शिता के कारण खान अजीम भी उधर गया तो तिरहुत और चम्पारन के बीच में लड़ाई हुई और अरब बहादुर को लज्जित होना पड़ा। वहां से वह जौनपुर पहुंचा। बादशाह के आदेश से राजा टोडरमल ने अपने पुत्र गोरधन को उसे दंड देने के लिये भेजा तो अरब बहादुर पहाड़ी प्रदेश में जा छिपा।

हाजी इब्राहीम सरहिन्दी को दंड

हाजी इब्राहीम ऐसे भाषण दिया करता था जिनका लोगों पर प्रभाव पड़ता था और कभी-कभी धृष्टता भी कर बैठता था। कुछ अरसे के लिये यह गुजरात का सदर था, उस समय कुछ लोगों ने आकर उसके अत्याचार की शिकायत की। जब उसका लोभ और दुष्टता प्रकट हुई और उसके अत्याचार की बातें बहुत फैल गईं तो उसको कैद करके रणथम्भौर के दुर्ग में भेज दिया। उसने एक फंदा बनाकर किले की दीवार से उतरना चाहा, परन्तु रस्सा टूट गया और उसके प्राणों का अन्त हो गया।

***

प्रकरण 74

गुजरात की अशान्ति के दमन के लिये मिर्जा खान को भेजा

गुजरात में प्रपंच होने लगे और राजद्रोह खड़ा हो गया। इसके मुख्य कारण शिहाबुद्दीन अहमद खां और कुतुबुद्दीन खां के सेवक थे। फिर यह दोनों अमीर भी कृतघ्न हो गये। उन्होंने शासन की उपेक्षा करना शुरू कर दिया। जब इतिमाद खां को गुजरात का शासन सौंप दिया गया तो जो लोग धन के दास थे, उन्होंने दरबार में जाना और घोड़ों के दाग लगवाने का काम छोड़ दिया। इतिमाद खां भी असावधान था, उसको पर्याप्त सहायता भी नहीं मिली, इसलिये 4 सितम्बर, 1583 को कलहकारी लोगों ने मुजफ्फर को गद्दी पर बैठा कर अहमदाबाद दबा लिया। मुजफ्फर के पूर्वजों को कोई नहीं जानता था, लोग उसको नन्नू कहा करते थे। इतिमाद खां पहले उसको सुल्तान महमूद गुजराती का पुत्र मानता था, जब गुजरात पर प्रथम अभियान हुआ तो इत्र विभाग के दरोगा करम अली ने नन्नू को कैद कर लिया था। फिर उसको मुनीम खां खाने खाना के सुपुर्द कर दिया था, जब खाने खाना की मृत्यु हो गई तो नन्नू पुनः दरबार में आया और उसको ख्वाजा शाह मंसूर के सुपुर्द कर दिया गया। जब वह 23 वर्ष का था तो उसने भाग कर राजपीपला के मालिक के पास शरण ली। कुतुबुद्दीन खां ने उसके विरुद्ध चढ़ाई की तो वह भाग कर जूनागढ़ चला गया।

अब शिहाबुद्दीन अहमद खां के सेवकों की सहायता से वह कोने से निकल कर उत्पात मचाने लगा। इस समय शिहाबुद्दीन अहमद खां को दरबार में बुला लिया गया था

और इतिमाद खां दरबार से गुजरात की ओर रवाना हो गया था। शिहाबुद्दीन अहमदाबाद से दरबार में चला गया और अगले दिन इतिमाद खां अहमदाबाद पहुंच कर सूबेदार की मसनद पर बैठ गया। तब मीर आविद खलील बेग आदि और कुछ बदख्शी और तूरानी खुले तौर पर राजद्रोह करके दुल्का चले गये।

इतिमाद के आने से पहले ये लोग शिहाबुद्दीन का वध करने के लिये षड्यंत्र कर रहे थे। परन्तु षड्यंत्र का पता लग गया। तथापि उन लोगों को क्षमा कर दिया गया। अब वह लोग पुनः षड्यंत्र करने के लिये नन्नू के पास पहुंचे। इनका मुखिया उमर हाजी था। यह व्यक्ति कुछ अरसे तक सदर का दीवान था और शरफुद्दीन जैसा ही दुष्ट था। गुजरात में इसने कुछ प्रतिष्ठा प्राप्त की और जब गुजरात जीत लिया गया तो वह दक्षिण को चला गया। यह शिहाबुद्दीन अहमद खां को जानता था इसलिये जब शिहाबुद्दीन गुजरात का सूबेदार बना तो वह शिहाबुद्दीन के पास चला आया। जागीरदारों की यह शिकायत थी कि हमारी जागीर गई, हमारे पास खाने को नहीं है इसलिये हम नन्नू का क्यों न साथ दें और क्यों न उपद्रव करें। इतिमाद के हितैषियों ने उससे कहा कि शिहाबुद्दीन अहमदाबाद में जा रहा है और सहायक सेना अभी आई नहीं है इसलिये यह उचित होगा कि उसको जाने से रोका जाये। उसकी जागीर उसी को लौटा कर और कुछ रुपया खर्च करके इस कोलाहल को दबाया जाये। इतिमाद खां ने यह सलाह नहीं मानी तब थोड़े ही समय में विद्रोहियों की संख्या बढ़ गई और यह खबर आई कि नन्नू आ रहा है। तब इतिमाद ने हितैषियों की सलाह मानी। शिहाबुद्दीन कुछ दूर चला गया था इसलिये उसने वापस लौटने से इन्कार किया। तब इतिमाद खां स्वयं उसको लौटाने के लिये गया। उस समय नगर में गड़बड़ थी इसीलिये उससे कहा गया कि उसको नगर छोड़ कर नहीं जाना चाहिये परन्तु वह साथ में चला गया। बातचीत होने पर शिहाबुद्दीन अहमद खां वापस लौटने पर सहमत हो गया तो उसकी जागीरें उसको लौटा दी गईं और 2 लाख रुपये ऋण के रूप में उधार दे दिये गये। तब खबर आई कि नन्नू ने विद्रोहियों में शामिल होकर अहमदाबाद को दबा लिया है और गड़बड़ में पहलवान अली सीस्तानी मारा जा चुका है। लोगों का माल और सम्मान लूटा जा रहा है तब शाही अधिकारियों ने लड़ने का निश्चय किया। परन्तु साबरमती के तट पर पहुंच कर वे सुस्त हो गये। उस समय विद्रोही लोग लूटमार करने में लगे हुए थे इसलिये उन पर आक्रमण करने का अच्छा मौका था, परन्तु ऐसा नहीं किया गया। तब शक्ति जुटाने के लिये इतिमाद खां एक सरदार को साथ लेकर परिचित लोगों के घरों पर गया और शिहाबुद्दीन अहमद खां ने बड़े सान्त्वनापूर्ण पत्र लिखे। शिहाबुद्दीन अहमद खां अपनी सेना को जुटाने में लग गया। परन्तु लगभग 500 शाही सेवक राजद्रोही बन गये और विद्रोहियों ने नदी पार करके शिविर पर आक्रमण किया। तो शाही शिविर में 7000 सवार थे, परन्तु सब भाग गये। शिहाबुद्दीन के पास केवल गिनती के लोग रह गये। तब एक विद्रोही ने शिहाबुद्दीन के कन्धे पर तलवार मारी, उसके घोड़े को गोली लगी, जिससे वह गिर गया। उसके सेवक उसको

वहां से उठा ले गये। विद्रोही लोग लूटमार करने में लगे हुए थे। इसलिये किसी ने उसका पीछा नहीं किया। मुजफ्फर खां ने अहमदाबाद दबाकर अपनी इच्छा पूर्ण की। उसने शाही शक्ति धारण करके अपने साथियों और सहायकों को उपाधियां प्रदान कीं। फिर मुजफ्फर के लोगों में फूट हो गई। खम्भात पर आक्रमण करके उसको लूट लिया। ख्वाजा इमादुद्दीन हुसेन वहां से 14 लाख रुपये लूट कर ले गया। सैयद दौलत के हाथ में 40 लाख रुपये पड़े।

जब अकबर को इन घटनाओं की खबर मिली तो उसने एक चुनी हुई सेना गुजरात प्रान्त की ओर रवाना की, जिसमें 12 बड़े-बड़े सेनानायक थे। सेना का नेतृत्व बैराम खां के पुत्र मिर्जा खान को दिया गया था और उन्हें आदेश था कि वह सीधे गुजरात पहुंचे। मालवे के अधिकारियों को भी आदेश दिया गया कि वे इस सेना में शामिल होयें।

जगमाल और रायसिंह की मृत्यु

जगमल राणा प्रताप का भाई था। रायसिंह मालदेव का पौत्र था, जब जगमल बादशाह के पास आया तो सिरोही राज्य उसके नाम लिख दिया गया। परन्तु सिरोही में सुल्तान देवड़ा शक्तिशाली आदमी था। इसलिये इतिमाद खां के नाम आदेश हुआ कि वह जगमाल को सिरोही राज्य दिला दे और आवश्यकता हो तो जगमाल की सहायता के लिये कुछ सैनिक छोड़ दे। इतिमाद खां ने आज्ञा का पालन किया और जगमाल ने सिरोही राज्य में प्रवेश किया। सुल्तान देवड़ा नदी-नालों में जा छिपा। जगमाल की सहायतार्थ रायसिंह आदि जालौर के लोगों को उसके पास छोड़ दिया। जब शाही सैनिक गुजरात की ओर कूच कर गये तो सुल्तान देवड़ा निकल पर उत्पात मचाने लगा। तब लड़ाई हुई जिसमें जगमल और रायसिंह लड़ते हुए मारे गये।

शब्बाल की दावत

मिहर मास की 25 तारीख को बादशाह ने यह दावत दी। उस अवसर पर जादू के अनेक खेल दिखाये गये और विविध कलाकारों ने आश्चर्यजनक प्रदर्शन किये। तीरंदाजी के खेलों को देख कर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। जब खेल हो रहे थे तो राजा बीरबल घोड़े-से गिरकर अचेत हो गया। बादशाह ने उस पर कृपादृष्टि की तो उसको होश हो गया तो ईश्वर को धन्यवाद दिया गया।

मीर गैसू खुरासानी की मृत्यु

मीर गैसू खुरासान के सैयदों का वंशज था। कुछ समय के लिये वह बकावल बेग (चौके का अधिकारी) था और फिर भक्खर का फौजदार बन गया था। इस समय वह मेरठा का फौजदार था और गंगा और यमुना के बीच के कुछ परगने भी उसके सुपुर्द थे। वह काम करना नहीं जानता था, इसलिये नीच सैनिकों के साथ उसकी कहा-सुनी हो जाया

करती थी। वह उनको कम से कम देना चाहता था और वे अधिक से अधिक लेना चाहते थे। अन्त में 8 अक्टूबर, 1583 को उसने कुछ लोगों को फटकारा और अपने मकान से बाहर निकाल दिया। प्रात:काल वह मद्यपान करके ईदगाह में गया। वहां भूसा बहलिम बड़ी नम्रता के साथ आया, परन्तु मीर गैसू ने उसको कारागार में रख दिया। वहीं मीर गैसू ने नारनौल के इब्राहीम को गालियां दीं। तब उसने मीर गैसू पर तलवार का वार किया। इस गड़बड़ में अधम लोगों ने मूसा को मुक्त करने का प्रयास किया तब गैसू ने उनके मुहल्ले में जाकर आग लगा दी। तब विद्रोही लड़ने के लिये बाहर निकले तो मीर गैसू मारा गया और उसको जला दिया गया।

***

प्रकरण 75

अकबर का इलाहाबाद को प्रयाण

अकबर बहुत अर्से से चाहता था कि प्रयाग में एक नगर बसाया जाये। जहां गंगा और यमुना का संगम है और भारत के निवासी इसको पवित्र मानते हैं। साधु-संत यहां यात्रा करने आया करते थे। अकबर यहां पर एक अच्छा दुर्ग बनाना चाहता था। वहां रह कर उधर के विद्रोहियों का दमन करके समुद्र तक सारे देश में शान्ति स्थापित करना चाहता था। उसकी योजना थी कि नगर की नींव डालने के बाद नावों द्वारा पूर्वी प्रान्तों में जाकर वहां के विद्रोह को निर्मूल किया जाये। उसके बाद दक्षिण की ओर प्रयाण किया जाये और उसको जीता जाये। तत्पश्चात् वह तूरान की ओर कूच करके मिर्जा हकीम का दमन करना चाहता था। साथ ही मिर्जा सुलेमान और शाहरूख मिर्जा को भी बदख्शां में एक-दूसरे के प्रति लड़ाई किया करते थे, दबाना चाहते थे और अपने पैत्रिक राज्य पर अधिकार करने की उसको इच्छा थी। इस उद्देश्य से अक्टूबर मास के मध्य में वह फतेहपुर से रवाना हुआ और एक विशाल हाथी पर सवार हुआ। वह प्रति दिन साढ़े तीन कोस चलता था। 10 तारीख को अकबर बरोही नामक गांव के निकट पहुंच गया। कुछ दरबारी उसके साथ थे और मुख्य शिविर स्थलमार्ग से चल रहा था। सामान और यात्रियों के लिये 300 नावें थीं। 17 तारीख को जब अकबर इटावा पहुंचा तो जैन खां कोका ने उसको दावत दी और कुछ समय के लिये बादशाह उसके पास ठहरा। 22 तारीख को बादशाह कालपी पहुंचा, वहां भी गंगा के तट पर मुतलिब खां ने भोज दिया। अगले दिन अकबर अकबरपुर के निकट राजा बीरबल के महल पर पहुंचा। बीरबल बहुत अर्से से अकबर का स्वागत करना चाहता था, उसकी

यह इच्छा पूर्ण हो गई। 1 आजर को उसने उद्दिष्ट स्थान पर पहुंच कर नगर की नींव डाली और चार दुर्गों के निर्माण की योजना बनाई। संगम के पास से नगर का निर्माण शुरू किया गया। प्रथम दुर्ग में 12 इमारतें बनाई गईं। उसमें एक सुन्दर बाग लगाया। यहां बादशाह का निजी निवास बनाया गया। दूसरे दुर्ग में बेगमों और शाहजादों के निवास बनाये गये। तीसरे दुर्ग में दूर के रिश्तेदारों और परिचरों के लिये मकान बनवाये गये। चौथा दुर्ग सैनिकों और प्रजा के लिये था। थोड़े समय में प्रथम दुर्ग नगर बन कर तैयार हो गया। इसी समय मरियम मकानी की टोली आई। कई कारणों से वह शुरू में नहीं आ सकी थी, अब वह ऊंट पर चढ़ कर आई और फिर दूसरी महिलाओं के साथ उसने जलयात्रा की। बादशाह ने उसके प्रति नये ढंग से आदर प्रकट किया।

***

प्रकरण 76

शाहबाज खां की विजय, मासूम खां काबुली का आवारापन

यह लिखा जा चुका है कि विद्रोहियों की विजय के बाद विजयी सेना उड़ीसा की ओर चली और दामोदर नदी के तट पर ठहरी, कुछ बड़े लोग घोराघाट गयें। वहां काकशालों को मुक्त किया, कुछ समय के बाद मासूम खां ने भाटी प्रदेश से आकर कुछ विद्रोहियों को एकत्र किया और मिर्जा बेग काकशाल से युद्ध करने के लिये चला। काकशाल ने ताजपुर जाकर तारसोन खां की शरण ले ली थी। मासूम खां ने देश को नष्ट करने के लिये कुछ आदमी भेजे। तारसोन खां दुर्ग में छिप गया और विद्रोहियों ने टांडा से सात कोस के अन्दर तक का प्रदेश लूट लिया, तब शाहबाज खां विद्रोहियों के दमन के लिये रवाना हुआ। अपने कुछ आदमी नावों द्वारा भेजे और स्वयं पटना से स्थलमार्ग द्वारा चला। उसके आने पर शान्ति हो गई और साहसी विद्रोही पीछे हट गये। मासूम खां यमुना नदी तक आया और वहीं ठहर गया। शाहबाज खां ने टांडा से अपने अफसरों को लिखा, कुतलू को शाही सेना के साथ युद्ध करने का साहस नहीं है। इसलिये कुछ लोग इधर आ जायें। तब वजीर खां शेख इब्राहीम आदि लगभग 20 उच्चाधिकारी और अन्य लोगों ने कुतलू को दबाने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया और शाह कुली खां मेहरम आदि शाहबाज खां की सहायता करने के लिये रवाना हो गये। फिर शाहबर्दी के तीन हजार बंदूकची भाटी से आकर शाही सेना में मिल गये। वह विजय की सूचना भी लेकर आये थे। शाहबर्दी की

इसी समय मृत्यु हो चुकी थी। फिर तारसोन खां और मिर्जा बेग काकशाल भी मिल गये। अब यह खबर आई कि बाबाई भरवारी के नेतृत्व में एक सेना संतोष नामक कस्बे की ओर चली थी। तारसोन खां के सेवक भाग गये थे। विद्रोही अग्रसेना के आगमन की खबर सुन कर भागे थे। फिर दुर्गम वन में 18 कोस चल कर शाही सेना यमुना के तट पर ठहरी। मासूम खां दूसरे तट पर था, परन्तु लड़ने के लिये तैयार था। शाहबाज खां ने उसको समझाना चाहा, परन्तु कोई सफलता नहीं मिली। अगले दिन मासूम खां नदी पार करके तट के निकट पहुंच गया। वहां उसने संधि का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और यह निश्चय हुआ कि अगले दिन वह क्षमा मान लेगा, परन्तु कलहप्रिय लोगों ने उसको मासूम खां फरनखुदी का उदाहरण देकर डरा दिया। तब शाही सेना ने नदी पार कर ली और एक जोर की लड़ाई हुई, तो 15 नवम्बर, 1583 को विजय प्राप्त हो गई। अभी शाही नौ सेना नहीं आई थी परन्तु नारायण जमींदार और मुराद काकशाल ने अपनी नावें दे दी थीं। तब मुहिव्ब अली खां आदि ने मासूम का पीछा किया। मासूम के कुछ अधिकारियों ने वापस मुड़ कर मुकाबला किया तब शाहबाज खां ने भी पीछा किया और एक जोर की लड़ाई हुई जिसमें बहुत-से विद्रोही समाप्त हो गये। कुछ रात के अंधेरे में भाग गये। उनके कई हाथी छीन लिये गये। अगले दिन विजयी सेना नदी-नाले पार करके घोराघाट पहुंची, उस नगर का एक भाग लूटा जा चुका था और मासूम खां भाटी में जा छिपा था। बहुत-से विद्रोही कूचबिहार और शेरपुर पहुंच गये थे। शाहबाज खां शेरपुर की ओर चला और अगले दिन वहां पहुंच कर उनके कुटुम्बों को पकड़ लिया और बहुत-सा माल लूट लिया। 150 विद्रोहियों को कैद कर लिया। जब यह समाचार इलाहाबाद पहुंचा तो ईश्वर को धन्यवाद दिया गया।

सादिक खां का अलग होना

एक दिन सादिक खां का हाथी शाहबाज खां की ओर दौड़ा। वह मरते-मरते बचा! वह आहत तो नहीं हुआ परन्तु इसी दिन से उसकी मित्रता में अन्तर आ गया और वह सादिक खां के क्रुद्ध रहने लगा। जब शाहबाज खां भाटी जा रहा था तो सादिक खां उसको छोड़कर अकबर के पास चला गया।

शेर खां पुलादी की पराजय

जब गुजरात में फूट फैली तो शिहाबुद्दीन खां, इतिमाद खां, निजामुद्दीन अहमद बख्शी और कुछ अन्य अधिकारी पट्टन में एकत्र हुए। वे गुजरात से हट कर जालौर जाना चाहते थे। परन्तु इसी समय मुहम्मद हुसेन आदि 10 उच्चाधिकारी और 1500 सैनिक आ पहुंचे। शत्रु के भी 1000 आदमी शिहाबुद्दीन अहमद खां से आ मिले। 700 सवार इतिमाद खां के पास आ गये। परन्तु यह सब रुपया मांगते थे। इतिमाद खां ने रुपया देकर 700 सवारों को रख लिया। इसी बीच में रवालिया खास खेल ने, जो शेर खां फुलादी की जाति का था, जुताना नगर में उपद्रव खड़ा कर दिया, परन्तु बेग मुहम्मद तोकबाई ने उसको हरा दिया।

इसकी खबर सुनकर शेर खां ने अपने दामाद को बड़ी सेना देकर भेजा। बेग मुहम्मद ने लड़ना पसन्द नहीं किया और पीछे हट गया, तब शाही सेवकों ने कुछ उच्चाधिकारियों को और कुछ अनुभवी सैनिकों को उसकी सहायतार्थ भेजा। तब शत्रु दब गया। एक बड़ी लड़ाई हुई, जिसमें बेग मुहम्मद घोड़े से उतर कर राजपूत की भांति लड़ने लगा। वह मारा ही जाने वाला था कि ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद कुछ वीर लोगों के साथ आ गया और शत्रु का साहस भंग हो गया। शेर खां वापस मुड़कर लड़ने के लिये तैयार हुआ, इतिमाद खां को सहायता देनी पड़ी। सेना का व्यूह बनाया गया। मध्य में शेर खां आदि थे। दायें पार्श्व में मुहम्मद हुसेन आदि थे और बायें पार्श्र्च में ख्वाजा अबुल कासिम, दीवान आदि थे, अग्रसेना का नेतृत्व मीर मुजफ्फर अदि कर रहे थे। ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद के पास सुरक्षित सेना थी। 27 आवान को मियाना के पास पट्टन से अठारह कोस की दूरी पर लड़ाई हुई। शाही सेना का बायां पार्श्व हिल गया। परन्तु शत्रु के दायें पार्श्व का नायक हुसेन खां मारा गया। उसका बायां पार्श्व भी पीछे धकेल दिया गया और मध्य भाग हार गया। शाही सेवकों की विजय हुई और उनको बहुत-सा माल लूट में मिला। इस विजय की खबर इलाहाबाद भेजी गई तो सेवकों को पुरस्कार दिया गया।

राजा रामचन्द्र को बुलाने जैन खां कोका और राजा बीरबल को भेजा गया

राजा रामचन्द्र पन्ना का शासक था और भारत में प्रसिद्ध था। उसने अपना पुत्र तो दरबार में भेज दिया था, परन्तु स्वयं नहीं आया था और बहाने करता रहा। अब बादशाह इलाहाबाद में था इसलिये बहाने की कोई गुंजाइश नहीं रही। उसके विरुद्ध एक सेना भेजी गई। तब रामचन्द्र के पुत्र ने निवेदन किया कि मेरे पिता डरते हैं इसलिये नहीं आये। यदि एक या दो दरबारी उनको लाने के लिये भेजे जायेंगे तो वे आ जायेंगे, इसलिये अकबर ने कोकलताश और राजा बीरबल को इसके निमित्त भेजा।

जब्बारी के उत्पात का दमन

यह लिखा जा चुका है कि शाहबाज खां आदि भाटी प्रदेश की ओर गये थे और वजीर खां आदि उड़ीसा की ओर लड़ाई करने के लिये रवाना हुए थे। बीच के प्रदेश में सैनिक नहीं थे। इसी बीच जब्बारी कूचबिहार से घोराघाट आया और उपद्रवी लोग उसके पास एकत्र हो गये। उसने सलीम खां सिरमूर के लोगों से ताजपुर और तारसोन खां के रिश्तेदारों से पूर्णिया छीन लिया, फिर वहां से टांडा की ओर प्रयाण किया। टांडा का कोतवाल हसन अली बीमार था। वहाँ का सदर शेख अल्ला बख्श क्षुब्ध और परेशान था। एकाएक शेखफरीद ने आकर शान्ति स्थापित कर दी।

इस समय बादशाह का ध्यान वर्षा की ओर और गंगा की बाढ़ की ओर दिलाया गया तो बादशाह ने एक कोस लम्बी एक दीवार बनवाई जो 40 गज चौड़ी और 14 गज ऊंची

थी। इससे लोगों की और फसल की रक्षा हुई चीजों के मूल्य बढ़ते जाते थे और लोगों को बड़ा कष्ट था। खाने आजम बंगाल से जाकर हाजीपुर में रह रहा था। जब अकबर इलाहाबाद आया तो उसने वहां आकर सिजदा किया और उसकी कृपा प्राप्त की। उसके साथ फरीदून बिरलास, हकीम मुजफ्फर आदि सम्भल से आये थे।

***

प्रकरण 77

बादशाह का राजधानी फतेहपुर को प्रयाण

बादशाह का विचार था कि इलाहाबाद से दक्षिण को प्रयाण किया जाये, परन्तु अचानक ही उसने सुना कि गुजरात प्रान्त में विद्रोह हो गया है इसलिये उसने सोचा कि राजधानी में पहुंच कर फिर गुजरात की ओर कूच किया जाये। अब यह भी खबर आई कि कुतुबुद्दीन की मृत्यु हो गई और गुजरात को भेजे हुए लोगों में फूट पड़ गई है। इसका संक्षिप्त वृत्तान्त निम्नलिखित है—

जब गुजरात में विद्रोह खड़ा हो गया तो कुतुबुद्दीन खां ने उसको नहीं दबाया। उचित तो यह होता कि वह तुरन्त ही विद्रोहियों पर अभियान करता परन्तु उसने बड़ी शिथिलता की। वह कहता रहा, किसी पहाड़ी के पास सामान नहीं है और मालवा से आने वाली सेना की प्रतीक्षा भी करनी चाहिये। जब विद्रोह बहुत बढ़ गया और उसको दरबार से फटकार पड़ी तब उसने सेना भेजी। इस सेना ने महीन्द्री नदी पार करके लड़ाई लड़ी, परन्तु उसकी लज्जाजनक हार हुई।

तब लगभग 15 अक्टूबर, 1583 को वह दुर्ग से बाहर निकला, परन्तु उसने सैनिकों को सन्तुष्ट नहीं किया। उधर 2 नवम्बर, 1583 को मुजफ्फर भी एक बड़ी सेना साथ लेकर आ गया। दोनों सेनायें लड़ने के लिये तैयार हो गईं। कुतुबुद्दीन और उसकी जाति के कुछ लोग बड़ौदा भेज दिये। अगले दिन विद्रोहियों ने बड़ौदा नगर को घेर लिया। उसी समय खबर आई कि शेर खां की हार हो गई है और मुजफ्फर खां घेरा छोड़ कर मेंसाना की ओर जाने वाला है। उसको यह डर था कि कहीं शाही सेना हट गई है तो उसका साहस बढ़ गया और उसने घेरा जारी रखा। अब कुतुबुद्दीन खां ने संधि करने का विचार किया और अपनी इच्छा प्रकट करने के लिये उसने जैनूद्दीन और सईद जलाल को कुतुबुद्दीन खां के पास भेजकर अपने लिये धनराशि के साथ हज्जाज जाने की इजाजत मांगी। यह सन्देश सुनकर मुजफ्फर को बड़ा गर्व हुआ। उसने जैनूद्दीन को हाथी के पैरों से कुचलवा दिया

और दूसरे राजदूत को छोड़ दिया तथापि कुतुबुद्दीन दीनतापूर्वक संधि-पत्र लेकर 23 नवम्बर, 1584 को मुजफ्फर के पास गया और लज्जाजनक संधि स्वीकार कर ली। मुजफ्फर ने उससे दो-चार बातें करके उसको बंधकों के सुपुर्द कर दिया। साथ ही उसकी बहन के पुत्र जलालुद्दीन मसूल को भी मरवा डाला। फिर भडौच के दुर्ग को घेर लिया गया। कोतवाल ने स्वामिद्रोह करके दुर्ग की चाबियां शत्रु को दे दीं। मुजफ्फर ने दुर्ग पर अधिकार कर लिया। खम्बात का कोष और वहां के फौजदार की सम्पत्ति लूट ली गई। मुजफ्फर को दामाद बनने का भी लोभ था, परन्तु माता ने अपनी पुत्री को विष देकर मार दिया, फिर मुजफ्फर लोगों को लूटने लगा।

यह खबर सुनकर अकबर ने गुजरात पर सेना चढ़ाने का निश्चय कर लिया। खान आजिम को गढ़ा राय सीमा के प्रदेश जागीर में दे दिये और खान-आजिम हाजीपुर सैनिक, सामान जुटाने के लिए चला गया। सैयद खां को 2000 का मनसबदार बना दिया और उसे हाजीपुर जागीर में दे दिया। उसी दिन वह बिदा लेकर रवाना हो गया (20 जनवरी, 1585 को)।

***

प्रकरण 78

सुल्तान मुजफ्फर गुजराती की पराजय

गुजरात के सैनिक मुजफ्फर से मिल गये थे और उसने बड़ी सम्पत्ति बटोर ली थी। उसी समय एक बड़ी सेना के साथ मिर्जा खान ने आकर शान्ति स्थापित कर दी परन्तु बेसमझ लोगों की सलाह से वह कुछ दिन रुक गया। मिर्जा खान ने कुतुबुद्दीन खां की मृत्यु के समाचार दबा लिये। 21 दिसम्बर, 1585 को उसकी सेना पट्टन में ठहरी तब उसको कई प्रकार की सलाह दी गई परन्तु अन्त में यह निश्चय हुआ कि सब एक होकर काम करें तो इतिमाद खां को पट्टन में छोड़ा गया और शेष सब लोग लड़ाई के लिये रवाना हुए। उन्होंने सेना का जमाव जमा लिया था। मध्य भाग, दायें और बायें पार्श्व और अल्तमश तथा सुरक्षित सेना की व्यवस्था कर ली थी।

इसीक खबर सुनकर मुजफ्फर खां एक बड़ी सेना के साथ अहमदाबाद आया। तब शाही सैनिकों ने एक बनावटी शाही फरमान तैयार किया जिसको प्रत्यक्ष में पढ़ा गया। इसका सारांश यह था कि ''शुभ मुहूर्त पर हम विजयी सेना की सहायता करने के लिए लाल घोड़े पर रवाना होकर शिकार के बहाने से चलेंगे। हमारे आने तक लड़ाई लड़ने की जल्दी मत

करना।'' इस फर्मान को पढ़ कर सुनाया गया और हर्ष मनाया गया तथा भोज दिया गया। दम्भी शत्रु में त्रास फैल गया। वह पहले सरकेंच गया और फिर रुक रणभूमि निश्चित की और आत्मरक्षा के लिए उन्होंने लकड़ी की आड़ खड़ी कर ली। शत्रु ने रात में ही आक्रमण किया तो विफल हो गया। प्रात:काल होने पर शाही सेना ने मिट्टी की दीवार बनाकर आड़ और भी दृढ़ कर ली। शाही सेना में लड़ने के लिये उल्लास नहीं था, परन्तु समझाने और बुझाने पर वे लड़ने के लिये तैयार हुए। लड़ाई में सईद हासिम मारा गया। खिजर आका ने बड़ी वीरता का काम किया। दोनों पक्ष के सैनिक वीरतापूर्वक लड़ते हुए मारे गये। मिर्जा खान के तीन सौ सैनिकों और एक सौ हाथियों ने आश्चर्यजनक काम किया। मुजफ्फर खां 700 आदमियों के समय मिर्जा खान के सामने आ डटा। कुछ लोगों ने मिर्जा खान को वहां से हटाना चाहा, परन्तु वह नहीं हटा। उसने शत्रु पर हाथी पेल दिये जिन्होंने बड़ा काम किया। राय दुर्ग ने शाही सेना में त्रास मचा दिया। एक सेनिक दूसरे से कहता था कि बादशाह आकर आक्रमण करने ही वाला है। शत्रु परेशान होकर बिना लड़े ही भाग गया। मुजफ्फर बहुत बुरी दशा में रणभूमि छोड़ कर महिन्द्री की ओर चला गया। शत्रुओं का वध सायंकाल तक होता रहा। शाही सेना में दस हजार सवार थे और शत्रु की सेना में चालीस हजार सवार थे, एकलाख प्यादे थे।

युद्ध करते-करते शाही सैनिक थक गये थे और सायंकाल भी हो गया था इसलिये भागती हुई सेना का पीछा नहीं किया गया दूसरे दिन अहमदाबाद में हर्षोत्सव मनाया गया। 8 फरवरी को कोड़ा खातमपुर के पास अकबर को इस विजय का समाचार मिला तो उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया। अगले दिन जैन खां कोकलताश अकबर से मिला। राजा रामचन्द्र भी दुर्ग से निकल कर दरबार की ओर रवाना हुआ। ईटावा के पास अकबर कोकलताश की प्रार्थना पर थोड़ी देर ठहरा। दूसरे दिन अकबर ने कोका को राजा रामचन्द्र के पास भेजा जो उसको सम्मानपूर्वक दरबार में लाया। 14 फरवरी, 1586 को शाही सेना फतेहपुर पहुंची तो जनता की बहुत बड़ी भीड़ ने आनन्द मनाया। राजा रामचन्द्र ने दरबार में आकर सिजदा किया और 120 हाथी अकबर को भेंट किये और एक बहुमूल्य लाल भी नजर की। तब राजा रामचन्द्र को उसका राज्य और दुर्ग लौटा दिया गया और उसको अनेक बख्शीसें देकर सम्मानित किया गया। इन बख्शीसों में 101 घोड़े थे।

मुहम्मद जमान की मृत्यु

मुहम्मद जमान, मिर्जा यूसुफ खां का चचेरा भाई था। यौवन के आवेश में और लोभ के कारण उसने मालवा के एक बड़े जमीनदार जालिया पर सेना चढ़ाई। जालिया ने अधीनता का नाटक रचा और सेवा करने का वचन दिया। मुहम्मद जमान ने यह संधि छिपा ली और लूटमार करने लगा। उसने महरिया और देवगढ़ नामक कस्बे लूट लिये। फिर वह सूरत की ओर चला। सामने एक दुर्गम घाटी थी तो वह एक मण्डली बनाकर मद्यपान करने

लगा, तब मौका देखकर जालिया आ गया। इस प्रकार मुहम्मद जमान का जीवन समाप्त हो गया।

***

प्रकरण 79

सुल्तान मुजफ्फर की दूसरी हार

यदि सुल्तान मुजफ्फर का पीछा किया जाता तो उसका उन्मूलन हो जाता, परन्तु विजय के उल्लास में उन्होंने उसका पीछा नहीं किया। एक दिन के बाद कुलीच खां, शरीफ खां आदि अन्य लोग आ गये। मुजफ्फर खां ने धन-वितरण करके लोगों को अपनी ओर मिलाया। फिर वह खम्भात गया और वहां व्यापारियों का धन छीना, फिर उसने दुबारा लड़ाई शुरू कर दी। शाही सेवकों में लड़ाई नहीं थी और यह बहाना किया कि हमारे पास कुछ नहीं है, परन्तु अधिकांश लोग चाहते थे कि सबको मिलकर मुजफ्फर को भगाना चाहिये। अन्त में उन्होंने मिलकर मुजफ्फर का दमन करने का निश्चय कर लिया। जब वे लोग मुजफ्फर खां से दस कोस के अन्तर पर पहुंच गये तो उसका साहस भंग हो गया और वह घबराकर बाशद चला गया, जो अचल हरपार नामक जमीनदार का निवास स्थान था। शाही सेना बड़ौदा की ओर चली गई। तुलाक खां को सैयद दौलत को दण्ड देकर वापस आने का आदेश दिया गया। शेष सेना मुजफ्फर को दण्ड देने में व्यस्त हो गई। 1 मार्च, 1584 को शाही सेना पहाड़ियों और घाटियों में फंस गई और विद्रोहियों के कई दलों के साथ उसको युद्ध करना पड़ा। उन्होंने शत्रु पर विजय तो प्राप्त कर ली परन्तु ग्रीष्म ऋतु की प्रचण्डता के कारण उनका पीछा नहीं कर सके। मुजफ्फर नर्बदा पार करके नडोत नामक कस्बे की ओर पीछे हट गया और वहां से कोहे चम्पा की ओर चला गया। यह एक गांव है जो अहमदाबाद से 60 कोस के अन्तर पर स्थित है। इस गांव के पूर्व, पश्चिम और उत्तर की ओर ऊंची-ऊंची पहाड़ियां हैं और दक्षिण में ताप्ती नदी है। जब शाही सेना नाडोत में ठहरी हुई थी तो एक युद्ध समिति बुलाई गई, जिसमें किसी ने आगे बढ़ने की, किसी ने ठहर जाने की, किसी ने पीछे वापस लौट जाने की सलाह दी। परन्तु आगे बढ़ने का निश्चय किया गया। इसी समय तुलक फिरोजमंद आया और उसने शकुन देखकर बतलाया कि विजय होगी। इसी समय सीमुक की मृत्यु हुई। यह व्यक्ति विद्रोह का स्रोत था और दुष्टता में इसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता था। जब शाही सेना निकट आई तो मुजफ्फर ने नासीर चरकस और सीमुक को भडौच में छोड़ा। सीमुक पायंद खां मुगल को निरंतर

मेल-मिलाप के पत्र भेजा करता था। इनमें से कुछ नासीर के हाथ में पड़ गये तो नासीर उसको मारने की घात में रहने लगा। उसने एक युक्ति सोची और बीमारी का बहाना किया। तब सीमुक उससे मिलने आया तो नासीर ने उसका वध करवा दिया। उसके साथ 300 तूरानी थे। उनको भी समाप्त कर दिया गया। इसी भांति सईद दौलत की मृत्यु से भी शाही सेवकों को प्रसन्नता हुई। जब तूलक खां ने उसको निकाल दिया था तो उसने वापस मुड़ कर फिर खम्भात पर कब्जा कर लिया और पेटलाद को लूटने लगा। तब थानेदार ख्वाजम वर्दी ने उससे लड़ाई लड़ी जिसमें वर्दी की विजय हई। इसी समय अतालिक बहादुर भाग गया। इस लड़ाई में यह निर्लज्ज उजबेग शत्रुओं का पक्ष त्याग कर शाही सेवकों में आ मिला। मियां बहादुर ने उसकी स्वामिभक्ति की बात की और उसको अपनी सुपुर्दगी में ले लिया। एक दिन शिविर नाडोत में था। वहां सईद दौलत को मार डाला गया और मियां बहादुर को कारागार में रख दिया, तब लड़ाई की तैयारियां हुईं। शाही सेना को इस प्रकार जमाया गया, मिर्जा खान शिहाबुद्दीन अहमद खां आदि मध्य भाग में थे। शहीद खां, नौरंग खां और अन्य लोग दायें पार्श्व में थे। कुलीच खां और तूलक खां और मालवा के जागीरदार बायें पार्श्व में थे। पाइन्दा खां और राय दुर्ग आदि अग्रसेना के अध्यक्ष थे। ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद और मीर मासूम भक्खरी सुरक्षित सेना के नायक थे। 10 मार्च को इन लोगों ने नादौत से प्रयाण किया। मुजफ्फर डर कर एक ऊंची पहाड़ी पर चला गया। दोनों पक्ष के प्यादे खूब लड़े। तब वीरों का एक दल ऊंची पहाड़ी पर चढ़ गया और मुजफ्फर को परेशान कर दिया गया। इसके बाद सामूहिक आक्रमण हुआ जिसमें बहुत-से शत्रु मारे गये, विद्रोहियों का नेता भाग गया। वीरों ने शत्रु का पीछा किया तो उसके 2000 आदमी मारे गये। 500 को पकड़ कर वध कर दिया गया। बादशाह ने इस विजय के लिये ईश्वर को धन्यवाद दिया। मिर्जा खान को 5000 का मनसबदार बनाया और खान खाना की उपाधि प्रदान की।

जिस समय गुजरात की विजय का समाचार आया तो बादशाह ने अमीर फतह उल्ला शिराजी से बातचीत की। शिराजी को ज्योतिष के सूक्ष्म सिद्धांतों का ज्ञान था। उसने नक्षत्रों और ग्रहों का अवलोकन करके कहा कि इस वर्ष दो बड़ी लड़ाईयां होंगी जिनमें शाही सेवकों को विजय मिलेगी। शिराजी की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई, तब फतह उल्ला शिराजी की ख्याति और भी बढ़ गई।

***

प्रकरण 80

29वें इलाही वर्ष का आरम्भ

इस वर्ष का आरम्भ 10 या 11 मार्च, 1584 को हुआ, बंगाल से मिर्जा बेग काकशाल और अन्य लोग आये। जब उस प्रान्त पर तीसरी विजय हुई तो मिर्जा बेग, वजीर जमील आदि लोग विचारशील लागों के समझाने से स्वामिभक्ति के मार्ग पर चलने लगे। परन्तु वे त्रस्त रहते थे। जब शाहबाज खां को विजय मिल गई और सादिक खां दरबार में जाने लगा तो उपरोक्त व्यक्ति उससे आकर मिले। जब यह खबर आई तो मोहनदास को घोड़ों की डाक से भेजकर सादिक खां को आदेश दिया कि वह वजीर खां की सेना में पहुंचे जो कुतलू का सामना कर रहा था और वह काकशालों को भी आशा दिलायेगी कि उन पर शाही कृपा की जायेगी। इस प्रकार उनको दरबार में लाया जाये। सादिक खां वजीर खां के पास चला गया। काकशालों का भय शान्त करने के लिये सादिक खां का ज्येष्ठ पुत्र जाहिद उन्हें दरबार में ले गया, बादशाह ने उनके साथ कृपापूर्ण व्यवहार किया।

तारसून खां की मृत्यु

जब मासूम खां हार गया तो शाहबाज खां भारी प्रदेश में गया। वह यह देखना चाहता था कि वहां का शासक ईसा खां जो सदा स्वामिभक्ति की बातें किया करता था, सच्चा है या नहीं। मासूम खां, ईसा खां के पास था। अगर ईसा खां, मासूम खां को समर्पित कर देगा तो उसकी स्वामिभक्ति सच्ची सिद्ध होगी। अन्यथा उससे दुष्टता का बदला लिया जायेगा। भाटी देश पूर्व से पश्चिम 400 कोस लम्बा और उत्तर से दक्षिण तक 300 कोस चौड़ा है। पूर्व में समुद्र है, पश्चिम में पहाड़ी प्रदेश है, दक्षिण में टांडा है। उत्तर में तिब्बत का पहाड़ी प्रदेश है। इस भूमिये का पिता बेस जाति का राजपूत था। सलीम खां के समय में ताज खां और दरिया खां एक बड़ी सेना लेकर इस देश में पहुंचे तो सलीम खां ने आत्म-समर्पण कर दिया, परन्तु उसने फिर विद्रोह किया जिसमें वह मारा गया और उसके ईसा और इस्माइल नामक दोनों पुत्रों को व्यापारियों को बेच दिया गया। जब ताज खां बंगाल का शासक बन गया तो ईसा खां के चाचा कुबुबुद्दीन तलाश करके ईसा खां और इस्माइल दोनों को तूरान से ले आया। ईसा खां ने बंगाल के जमीदारों को अपने अधीन कर लिया। परन्तु वह बंगाल के सुल्तानों की सेवा में उपस्थित नहीं हुआ। दूर से विनीत भाव प्रकट करता रहा।

जब खिजरपुर के निकट गंगा के तट पर शाही डेरा लगा तो उसके दोनों तटों पर दुर्ग थे। फिर इन दोनों तटों पर और मुनारगांव पर शाही सेना ने अधिकार कर लिया और वे कराबह पहुंचे, जहां ईसा रहता था, उस नगर को लूट लिया। फिर सेना वारा सिन्दर

पहुंची, उसे भी लूट लिया। थोड़ी और लड़ाई होने पर मासूम खां का धैर्य जाता रहा। उसने भागकर एक टापू में शरण ली। तब ईसा जो कूचबिहार चला गया था एक बड़ी सेना लेकर वापस आया। शाही सेवकों ने ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर किनारा सिन्दर नगर के सामने एक दुर्ग बना लिया। फिर दोनों पक्षों में जल और स्थल पर जोर की लड़ाइयां हुई, जिनमें शाही सेवकों की लगातार विजय होती रही। फिर शत्रु का ध्यान और शक्ति बटाने के लिये तारसून खां नदी के किनारे-किनारे प्रयाण करने लगा तो उसका शत्रु से सामना हो गया। मासूम खां ने उससे कहा, तुम मुझसे मिल जाओ तो तारसून खां ने उसको बहुत फटकारा, तब मासूम खां ने उसको मार डाला।

चित्रकार दसवन्त की मृत्यु

दसवनत एक कहार का पुत्र था और बड़े ऊंचे दर्जे का चित्रकार था। अकबर ने उसकी कला का आदर किया जिससे दसवन्त की प्रसिद्धि हो गई। उसकी चित्रकारी विहजाद और चीव के चित्रकारों के बाराबर थी। एकाएक ही न जाने क्यों दसवन्त को मानसिक दुःख रहने लगा और उसने अपने आपको खंजर मार लिया जिससे दो दिन बाद ही उसकी मृत्यु हो गई।

सांवल दास आहत हुआ

सांवल दास राजा गोपाल जाइन के भाई का पुत्र था, वह अकबर का निजी रक्षक था। सायंकाल वह अपने काम पर जा रहा था, बीका (बीजा) भाटी के साथ उसकी शत्रुता थी, उसको शीघ्रता से जाते हुए देखकर बीका ने समझा कि सांवल दास मुझे मारने के विचार से जा रहा है इसलिये बीका ने उस पर तलवार का ऐसा वार किया कि हकीमों को उसके बचने की कोई आशा नहीं रही। बादशाह उससे मिलने के लिये गया तो सांवल को कुछ शान्ति आई। तीन वर्ष में वह स्वस्थ हो गया।

बदख्शां में उत्पात, मिर्जा हकीम ने क्षमा मांगी

कलहकारी लोगों ने मिर्जा सुलेमान और शाहरूख में झगड़ा उत्पन्न कर दिया था। यह दोनों आपस में लड़ते रहते थे और राज्य-प्रशासन की उपेक्षा करते थे। वे अकबर की शरण में भी नहीं जाते थे और अपने दिन अभिमान में व्यतीत किया करते थे। इस स्थिति को अनुकूल समझ कर अब्दुला खां उजबेग तूरान के शासक ने बिना लड़े ही बदख्शां पर कब्जा कर लिया तब मिर्जा हकीम ने अकबर के पास अपने दूत भेज कर सहायता की प्रार्थना की। अकबर ने उत्तर दिया कि आप ऐसी सच्चाई का व्यवहार करो कि दूर और निकट के लोगों को आप सच्चे जान पड़ें। इसी बीच में तुम्हारे देश पर यदि कोई आक्रमण करेगा तो हम अब्दुल्ला को सलाह देने के लिये भले आदमियों को भेजेंगे और इससे काम नहीं चलेगा तो हम सेना रवाना करेंगे, जिसमें वीर सैनिक पंक्तिभंजक हाथी, विशाल

कोष तथा बड़ा तोपखाना होगा। इसका नेतृत्व हमारे पुत्र करेंगे। मिर्जा के राजदूत वापस पहुंचे इसके पहले ही उसका दूसरा प्रार्थना-पत्र आया कि बदख्शां के मिर्जाओं ने लज्जित होकर यहां काबुल में शरण ली है इस विषय में क्या आदेश है। इसका उत्तर भेजा गया कि मिर्जाओं को दरबार में भेज दिया जाये और उनसे कहा जाये कि डरने की कोई बात नहीं है।

कुतलू करारानी ने अधीनता प्रकट की

यह पहले ही लिखा जा चुका है कि बंगाल की सेना का एक भाग शाहबाज खां के नेतृत्व में भाटी प्रदेश में और दूसरा भाग वजीर खां की अध्यक्षता में बर्दवान में कुतलू करारानी के दमन के लिये गया हुआ था। वजीर खां समय के प्रतिकूल नम्रता करता था और उसकी सेना का वहां समय नष्ट हो रहा था, जब उसके पास सादिक खां पहुंचा तो स्थिति बदली। कुतलू का साहस भंग हो गया और वह अपने डेरे उखाड़ कर उड़ीसा की ओर भाग गया। तब शाही अफ़सर उसका पीछा करते हुए तुकरोई पहुंच गये। अब कुतलू ने निराश होकर धर्मपुर के वन में शरण ली। उसने अपने भाई के पुत्र को शाही दरबार में भेजा तो मेरे स्वरूप 60 अच्छे हाथी और दूसरी भेंटें लेकर गया। 11 जून, 1584 को इब्राहीम फतेहपुरी दूतों को दरबार में लाया। जब संधि सभा हो चुकी तो वजीर खां को टांडा और सादिक खां को पटना भेज दिया। तेरहवीं तारीख को बादशाह की चांद्र की तुला हुई।

राजा बीरबल का दूसरा जन्म

चौगान के चौक में हाथियों की लड़ाई हुई तो चाचर नामक हाथी, जो मनुष्यों को मारा करता था, एक व्यक्ति की ओर दौड़ा परन्तु उसको छोड़कर फिर वह राजा बीरबल की ओर झपटा। बीरबल को वह मारने ही वाला था कि अकबर ने साहस करके अपना घोड़ा दौड़ाया और वह हाथी और राजा के बीच में जा खड़ा हुआ। हाथी अकबर की ओर दौड़ा तो लोगों में कोलाहल मच गया, परन्तु फिर एकाएक वह खड़ा हो गया और दर्शक लोग चकित हो गये।

गाजी खां बदख्शी और सुल्तान ख्वाजा नक्शबंदी की मृत्यु

गाजी खां विद्वान् और वीर दोनों था, वह बहुत अच्छा लेखक था। वह सूफी सम्प्रदाय का अनुयायी था और अकबर का चेला था। वह प्रायः आंसू बहाया करता था और उसका दिल जला करता था। 15 जुलाई, 1584 को अवध नगर में उसकी मृत्यु हो गई। कहते हैं कि अनुचित भोजन खाने और एक प्रकार की कामुक क्रीडा करने से उसकी मृत्यु हुई थी।

सुल्तान ख्वाजा नक्शबंदी ने विशेष ज्ञान-संचय नहीं किया था। पांडित्य के लिये

उसकी कोई ख्याति नहीं थी परन्तु वह सूफी सिद्धान्तों की बातें किया करता था। बादशाह की उस पर सुदृष्टि थी इसलिये वह प्रसिद्ध हो गया। 25 जुलाई, 1584 को फतेहपुर में निर्बल पाचन-शक्ति और हृदयरोग से उसकी मृत्यु हो गई। इन दोनों लोगों की मृत्यु से अकबर को दुःख हुआ। उसने मृतकों के बच्चों को और आश्रितों को सान्त्वना दी, उनका पोषण किया।

खान अजीम मिर्जा कोका को मालवा भेजा

यह पहले लिखा जा चुका है कि जब खान अजीम मिर्जा कोका इलाहाबाद में था तो उसको बंगाल-बिहार की अपनी जागीरों से ग्लानि हो गई थी इसलिये उसको रायसीम और गढ़ा जागीर दी गई। 4 सितम्बर, 1584 को आदम खां के भाई बाकी खां की मृत्यु हो गई। अकबर ने मृतकों के कुटुम्ब के साथ सहानुभूति प्रकट की।

सईद दौलत को दंड

जब गुजरात में कुछ गड़बड़ मची तो इसने खम्भात को दबा लिया था। तब उसको दंड देने के लिये मोटा राजा, मेदिनी राय, राजा मुकुट मान आदि को आदेश हुआ, उनके आने से पहले ही उसने पेतलाद को लूटना शुरू कर दिया था। तब एक लड़ाई में वह आहत होकर भाग गया। इसी समय कुछ विद्रोही लोग राजपीपला की पहाड़ियों में से निकल कर कृषकों को सताने लगे। तब खान खाना ने कई अधिकारियों को भेजा। जब वह पहुंचे तो विद्रोही भाग गये थे इसलिये वे वापस आ गये।

वार खां गक्खड़ का विद्रोह

वार खां गक्खड़ ने बड़ नगर में विद्रोह खड़ा कर दिया। काविल खां गुजराती आदि ने उससे लड़ाई लड़ी जिसमें बहुत-से विद्रोही मारे गये और गक्खड़ को हार कर एक कोने में बैठना पड़ा।

सुल्तान मुजफ्फर गुजराती पर सेना भेजी

खान खाना अहमदाबाद पहुंचा और प्रान्त में शान्ति स्थापित करने लगा। इस समय राजपीपला के पहाड़ी प्रदेश से विद्रोही लोग निकल कर पट्टन की ओर चले तब मकसूद आदि कितने ही वीर लोग शादमान बेग के नेतृत्व में उसके दमन के लिये नियुक्त किये गये। यह खबर सुनकर मुजफ्फर ईडर की ओर चल दिया और फिर उसने काठियावाड़ में शरण ली। वहां से वह घोघा नामक बन्दरगाह पहुंचा। उसके साथी उसको छोड़ गये। शेर खां फुलादी बगलाना चला गया। वहां के शासक ने उसको पकड़ना चाहा तब फुलादी अपनी सम्पत्ति को वहां छोड़ कर निकल भागा और दक्षिण को चला गया। कुछ विद्रोही शाही सेना में आ मिले।

भडौच दुर्ग की विजय

मुजफ्फर खां दूसरी बार भाग गया तो मालवा के कई जागीरदार भडौच को छीन लेने के लिये रवाना हुए। उन्होंने दुर्ग घेर लिया। परन्तु घेरा बहुत लम्बा हो गया तो उनकी सहायता के लिये खान खाना ने शिहाबुद्दीन खां के नेतृत्व में कुछ लोग भेजे और भडौच सरकार शिहाबुद्दीन को जागीर में दे दिया। जब जोर से घेरा चला तो बंदूकचियों के सरदार ने कहलाया, यदि शाही सेवक दुर्ग द्वार पर आ जायेंगे तो द्वार खोल दिया जायेगा। तब ऐसा ही किया गया और कुछ विजय प्राप्त हुई।

31 मिहर को बादशाह राजा बीरबल के निवासस्थान पर गया। वहां एक बहुत बड़ा भोज हुआ जिससे बीरबल को बड़ी प्रसन्नता हुई।

शाहबाज खां विफल होकर भाटी से लौटा

शाहबाज खां ब्रह्मपुत्र की शाखा पनार नदी के तट पर पहुंचा और उसने ईसा को सुझाया कि वह या तो विद्रोहियों को समर्पित कर दे या उन्हें अपने यहां से निकाल दे। ईसा मीठी-मीठी बातें करता रहा। इस प्रकार सात मास निकल गये। शाहबाज खां से उसके सैनिक अफ़सर तंग आ गये थे और शत्रु की कार्यवाहियां बढ़ने लगीं तब शत्रु ने ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे को 15 जगह पर काट डाला। तब शाही शिविर में पानी भर गया और बहुत-सा तोपखाना डूब गया। तब दोनों ओर से गोलियां चलने लगीं। इस बीच में विद्रोहियों का एक नेता गोली से मारा गया। उनकी कुछ नावें भी टूट गईं और नदी की बाढ़ भी उतर गई। शत्रु के कितने ही लोग डूब गये। उसका बहुत-सा माल लूट लिया गया तो भी शत्रु ने ढाका के थानेदार सईद हुसेन को पकड़ लिया तब ईसा खां ने संधि का प्रस्ताव किया जो शाहबाज खां ने मान लिया। वह मासूम खां को हज्जाज भेजने के लिए तैयार हो गया। तब भेंटें वह पेशकश भेज कर उसने शाही नायकों को खुश कर दिया। तब शाहबाज खां की सेना वापस हट गई और भवाल पहुंच गई। परन्तु ईसा ने तुरन्त ही रुख बदल लिया और संधि की नई शर्तें प्रस्तुत कीं तब शाही सेनानायक ने युद्ध की तैयारी की और 30 सितम्बर, 1584 को ईसा लड़ने के लिये आगे आया। परन्तु शाही सेनानायक एक-एक करके खिसकने लगे। सबसे पहले मुहिब्ब अली खां लड़े बिना ही चला गया, फिर अन्य लोग चले गये। केवल शाह कुली खां मेहरम लड़ा परन्तु वह अकेला क्या करता, वह आहत होकर भवाल से चल दिया। तब शाहबाज खां की नींद खुली परन्तु अब क्या हो सकता था। वह विवश होकर टांडा की ओर चल दिया। उसका सब कुछ जाता रहा। मीर आदिल और अन्य लोग पकड़ लिये गये और मुहम्मद गजनवी आदि मारे गये। जब शाही अफ़सर जा रहे थे तो मार्ग में ही विद्रोहियों से एक जोर की लड़ाई हुई, जिसमें लोग अधमरे होकर भाग आये। शाहबाज खां ने फिर भी बदला लेने के लिये लड़ाई लड़ना चाहा, परन्तु उसके साथियों को उससे बड़ी ग्लानि हो चुकी थी। इसलिये उन्होंने उसका साथ नहीं दिया। जब

शाहबाज खां टांडा पहुँचा तो वजीर खां ने उसका अच्छा स्वागत किया परन्तु सब एकमत नहीं हुए। तब विवश होकर उन्होंने बादशाह के पास प्रार्थना-पत्र भेजा। तब सजावल लोगों के द्वारा आदेश दिया गया कि सेनानायक वापस चले जायें। उन सबको फटकारा भी गया, बंगाल और बिहार के जागीरदारों को और सईद खां को आदेश दिया गया कि वह सब मिलकर ईसा खां जमीदार को दण्ड दें। पहले तो इस कार्य के लिये पेशरू खां आदि को भेजा गया और फिर रामदास कछावा को रवाना किया गया।

16 आजार को बादशाह राजा टोडरमल के निवास पर गया। राजा लम्बे अर्से से चाहता था कि बादशाह उसके मकान पर आये। अब इसकी यह इच्छा पूरी हुई।

राणा प्रताप के विरुद्ध अभियान

यह खबर आई कि राणा ने पर्वतों की घाटियों से निकल कर उत्पात करना शुरू कर दिया है इसलिये जगन्नाथ के नेतृत्व में एक सेना भेजी गई। जफर बेग को बख्शी नियत किया। 24 आजार को जगन्नाथ रवाना हुआ, राणा प्रताप फिर पहाड़ों में चला गया, तब सईद राजू को कुछ आदमियों के साथ माडलगढ़ में छोड़ा गया और राणा के विरुद्ध एक अभियान किया। राणा इसका सामना नहीं कर सकता था इसलिये दूसरी घाटी में से निकलकर उत्पात करने लगा। सईद राजू उससे लड़ाई करने के लिये आगे बढ़ा तो राणा चित्तौड़ की ओर वापस हट गया। शाही सेनानायकों की विजय नहीं हुई। जगन्नाथ ने राणा के निवास पर आक्रमण किया फिर जगन्नाथ और सईद राजू दोनों शामिल हो गये।

22 दिसम्बर, 1584 को आराम बानू बेगम का जन्म हुआ।[1]

***

प्रकरण 81

शाहरूख मिर्ज़ा का शाही दरबार में आना

जब मिर्जा हकीम बदख्शां से काबुल लौट आया तो मिर्जा शाहरूख ने मिर्जा सुलेमान से मेल कर लेने का विचार किया। लम्बी-चौड़ी बात के बाद यह निश्चय हुआ कि हिसार का शासक उजबेक सुल्तान कुछ आदमियों को जमानत के तौर पर भेजे और दोनों मिर्जा

1. इसकी माता का नाम बीबी दौलतशाद था। अकबर उसको लाडली कहा करता था। इसकी बड़ी बहन का नाम शकरूलिसा था। आराम बानू की मृत्यु 40 वर्ष की अवस्था में हुई थी, वह अविवाहित ही थी।

आम् नदी से उस स्थान पर मिलें जहां नौ धाराएं हैं। यह भी ठहरा था कि मिर्जा सुलेमान चार धाराएं और मिर्जा शाहरूख 5 धाराएं पार करके परस्पर मिले। परन्तु जब सुलेमान ने एक धारा पार की तो वह डर कर वापस मुड़ गया तथापि मिर्जा शाहरूख 8 धाराएं पार करके मिर्जा सुलेमान से मिला और उसके मकान पर गया, तत्पश्चात् मिर्जा सुलेमान कुलाब चला गया। वहां जाकर उसने अपनी इच्छाएं ओर बढ़ा लीं और गड़बड़ करने लगा। उसने मिर्जा शाहरूख से कहलाया कि मिहर अली चूचक, मीर इमाद को सुपुर्द कर दिया जाये या उनको निकाल दिया जाये। मिर्जा शाहरूख ने दूसरी बात मान ली, यह तीनों सरदार काबुल पहुंचे, फिर इमाद एक ओर हट गया। फिर मुहम्मद कुली शिघाली, मिर्जा शाहरूख को छोड़ कर मिर्जा सुलेमान के पास चला गया। इससे वैमनस्य बढ़ा और मिहर अली काबुल से मिर्जा शाहरूख के पास चला गया। सुलेमान ने शाहरूख से कहलाया कि मिहर अली को समर्पित कर दिया जाये। तब शाहरूख ने मिहर अली को हाजी तमान के साथ भेज दिया। तो सुलेमान ने मिहर अली को कैद कर लिया। अब सुलेमान ने प्रस्ताव किया कि तालिकान भी मेरे राज्य में मिला दिया जाये। शाहरूख ने यह बात नहीं मानी तो सुलेमान लड़ने के लिये तैयार हो गया। शाहरूख भी आगे बढ़ा परन्तु फिर भी उसने चाहा कि सुलेमान से समझौता हो जाये। परन्तु समझौता नहीं हो सका और लड़ाई हुई जिसमें मिर्जा सुलेमान हार कर हिसार चला गया। मिर्जा शाहरूख ने उसका पीछा नहीं किया, फिर शाहरूख ने मिहर अली को अपने पुत्र मुहम्मद जामान का संरक्षक बना दिया और स्वयं कंदहार चला गया। अब मिर्जा सुलेमान उजबेक सुल्तान से सहायता लेकर बदख्शां की ओर चला तब शाहरूख भी लड़ने के लिये तैयार हो गया, तब लड़ाई हुई। फिर मिर्जा सुलेमान हार कर हिसार चला गया। इसी बीच में अकबर के राजदूत आ पहुंचे जिससे मिर्जा शाहरूख की स्थिति बड़ी दृढ़ हो गई। जब अकबर काबुल के पास आ गया था और मिर्जा हकीम को शाहजादा मुराद ने हरा दिया था तो मिर्जा शाहरूख के पास उसके स्वास्थ्य का समाचार पूछने के लिये और उसको दरबार में लाने के लिये या उसकी माता खानिम को भेजने के लिये अकबर ने राजदूत भेजे थे। हिसार के लोगों ने सुलेमान का साथ देना छोड़ दिया था। मिर्जा शाहरूख अकबर की सेवा में उपस्थित नहीं हुआ परन्तु वह अपनी माता को उसके पास भेजने पर सहमत हो गया परन्तु उन्हीं दिनों में वह बीमार हो गई। उधर सुलेमान उजबेगों को साथ लेकर बदख्शां में आ पहुंचा। उसने संधि का प्रस्ताव किया जो मिर्जा शाहरूख ने मान लिया और यह निश्चय हुआ कि दोनों नदी की धाराओं को पार करके मिलें और नई संधि करें। मिर्जा शाहरूख ने तो धाराएं पार कर लीं परन्तु सुलेमान ने नहीं कीं ओर शाहरूख से कहलाया कि तुम नदी के इस ओर आओ। शाहरूख ने सुलेमान की चालाकी को समझा ओर वापस मुड़ गया। इसी समय मिर्जा शाहरूख की माता का देहान्त हो गया, जिससे सारी स्थिति बदल गई। तब सुलेमान तूरान के शासक अब्दुल्ला खां उजबेग के पास सहायतार्थ गया। उस समय अब्दुल्ला ताशकंद गया हुआ था। इसलिये उसके पिता

सिकन्दर खान ने सुलेमान का स्वागत किया। जब अब्दुल्ला खां ने यह खबर सुनी तो कहलाया कि मेरे जाने तक सुलेमान पर चौकसी रखी जाये। उसको जाने न दिया जाये परन्तु सुलेमान ने मौका देख कर अंधेरी रात में हिसार का रास्ता लिया। जब अब्दुल्ला खान वापस आया तो उसने अपने वकील कुलबाबा को हिसार के सुल्तान उजबेग के पास भेजा और कहलाया कि मिर्जा को समर्पित कर दिया जाये। परन्तु कुलबाबा के आने की उजबेग सुल्तान को पहले ही खबर मिल चुकी थी। इसलिये उसने मिर्जा सुलेमान को बदख्शां भेज दिया। सुलेमान करातगीन के मार्ग से कुलाब पहुंचा। तब मिर्जा शाहरूख ने प्रस्ताव किया कि गत व्यवस्था के अनुसार राज्य का विभाजन कर दिया जाये। सुलेमान ने फिर भी चतुरता से प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और अपने लिये किशम की जागीर ले ली। मिर्जा शाहरूख ने अपने सहायक सरदारों को जागीरें दे दीं परन्तु उसने प्रशासन की ओर ध्यान नहीं दिया जिससे उसके राज्य की स्थिति बिगड़ने लगी। यह स्थिति देखकर अब्दुल्ला खां ने बदख्शां पर आक्रमण किया तो कोई लड़ाई नहीं हुई। उसने देश पर अपना कब्जा कर लिया। वह जानता था कि बदख्शां के दोनों मिर्जा आपस में लड़ रहे हैं और प्रशासन पर ध्यान नहीं देते, उसने उनके पास संदेश भेजा कि गौरी और कहमर्द मुझे दे दे और तूरान के ऐमाक लोगों को मेरे पास भेज दो। मिर्जा शाहरूख ने कोई उत्तर नहीं दिया और उसकी सुस्ती भी नहीं गई।

साथ ही यह भी खबर फैल गई थी कि तूरान के शासक की मृत्यु हो गई है और कुलबाबा अपनी ही ओर से बातें कर रहा है। जब अब्दुल्ला खां बदख्शां में आया तो दोनों मिर्जा (सुलेमान और शाहरूख) पर्वतों में जा छिपे। अनेक बड़े-बड़े राज कर्मचारी अब्दुल्ला खां से मिल गये। उसने बदख्शां के बड़े-बड़े शहर और कस्बे दबा लिये। मिर्जाओं का सब लोगों ने साथ छोड़ दिया, वे बदख्शां छोड़कर बहारक चले गये। वहां भी किसी ने उनका साथ नहीं दिया। फिर वे पंजसीर पहुंचे जो काबुल के अधीन है। उनका ख्याल था कि यदि मिर्जा हकीम सहायता देगा तो वह पुनः अपने देश को प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे, अन्यथा वे अकबर बादशाह के दरबार में चले जायेंगे। सुलेमान पहले ही अकबर के दरबार में जा चुका था। उसने कहा था कि मुझे बदख्शां की विजय की इच्छा नहीं है, मैं तो हज्जाज जाऊंगा। मैं दरबार में नहीं जाऊंगा। मिर्जा खाहरूख अकबर के पास जाना चाहता था। मिर्जा हकीम के पास जाने की उसको इच्छा नहीं थी। मिर्जा हकीम ने मिर्जा सुलेमान को बुलाया और निर्वाह के लिये उसको कुछ जागीर दे दी। शाहरूख का पुत्र मुहम्मद मिर्जा, मिर्जा सुलेमान के साथ था। शाहरूख को पकड़ कर शादमान हजारा के सुपुर्द कर दिया गया और उससे कहा गया कि शाहरूख को भारत नहीं जाने दिया जाये। मिर्जा शाहरूख अपने पांचों पुत्रों के साथ और अपनी माता और नौकरों के साथ बड़ी विपत्ति में शादमान हजारा के पास रहा। तब खबर आई कि अब्दुल्ला खां हार गया है। तब हजारा शादमान ने शाहरूख को बदख्शां की ओर भेज दिया। गांव के लोगों ने शाहरूख का साथ दिया और थोड़े समय

में ही यह पता लगा कि अब्दुल्ला की मृत्यु की खबर झूठी है। तब मिर्जा की स्थिति बिगड़ गई। वह वापस नहीं जा सका और बड़े परिश्रम के साथ काबुल की ओर लौटा और मिर्जा सुलेमान से मिला। मिर्जा हकीम ने सुलेमान को अब्दुल्ला की मृत्यु की झूठी खबर के आधार पर बदख्शां जाने की इजाजत दे दी थी। अब वह सहायक सेना की प्रतीक्षा कर रहा था, जब दोनों मिर्जा मिले तो दोनों की स्थिति बिगड़ी हुई थी। साथ ही अचानक यह खबर आई कि उजबेग लोगों ने उपद्रव खड़ा कर दिया है। इसी समय शाहरूख मिर्जा के एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसको एक स्त्री के सुपुर्द करके दोनों मिर्जा बदख्शां की ओर चले। मिर्जा सुलेमान के घोड़े को ठोकर लगी और वह गिर गया तो मिर्जा शाहरूख ने उसको सम्भाला, दूसरा घोड़ा भी भाग गया तो सुलेमान को तीसरे घोड़े पर सवार कराया गया। जब वह आगे पहुंचे तो दो मार्ग आये और दोनों अलग-अलग हो गये। शत्रु ने शाहरूख का पीछा किया। सामने एक नदी आई जिसकी पुल पर होकर उसने नदी पार की और फिर पुल तोड़ डाला। इस भगदड़ में उसका हसन नामक एक पुत्र कहीं रह गया। फिर अलसाई में शाहरूख सुलेमान से जाकर मिला। यहां मिर्जा हकीम का एक दूत मित्रता का सन्देश लेकर आया। मिर्जा हकीम को अकबर से फटकार मिल चुकी थी इसी समय कुंवर मानसिंह का आदमी भी आया। मिर्जा सुलेमान, मिर्जा हकीम के पास जाना चाहता था। मिर्जा शाहरूख अकबर के दरबार के लिए रवाना हो गया। मार्ग में उसको बड़े कष्ट सहने पड़े। मार्ग में उसकी लुटेरों से लड़ाई हुई जिसमें वह घोड़े से गिर पड़ा परन्तु एक मित्र ने उसको पुनः सवार करवा दिया। इसी प्रकार उसका पुत्र बादी उज्-जमा भी घोड़े से गिर पड़ा था। शाहरूख ज्यों-त्यों संकट में से निकल आया और रात्रि में उसने ढाका में विश्राम किया। प्रातः काल वह सोचने लगा कि क्या करना चाहिये। उसी समय मिर्जा सुलेमान का पता लगा। वह पास ही था और अपने नवजात पुत्र की मृत्यु के कारण संतप्त था। इसी समय मिर्जा हकीम की सेना ने आकर खबर दी कि बादशाह अकबर के दरबार से आदेश मिला है कि मिर्जा शाहरूख को दरबार में शीघ्र भेजा जाये। इस काम के लिये बादशाह ने मिर्जा हकीम को नियुक्त किया है। जब खैबर की घाटी पार की गई तो शाही अफ़सर मिलने के लिये आये। कुंवर मानसिंह ने शाहरूख का उचित सम्मान किया। इसी समय उसको यह भी खबर मिली कि जिस पुत्र से वह मुक्त हो गया था वह सकुशल है। जागीरदारों ने सर्वत्र शाहरूख का स्वागत किया। जब वह लाहौर पहुंचा तो राजा भगवन्तदास ने एक बड़ा भोज दिया और वह शाहरूख के साथ गया। उसके स्वागत के लिये फतेहपुर से शाहजादा दनियाल को एक मंजिल पर भेजा गया था। उसके साथ बड़े-बड़े सरदार थे। 3 जनवरी, 1585 को शाहरूख अकबर से मिला। अब शाहरूख की विपत्ति का अन्त आ गया।

मासूम खां की पराजय

शाहबाज खां ने दरबार में जाने का निश्चय कर लिया था। मुहिब्ब अली ख़ां के अतिरिक्त बिहार के अधिकारी अपनी-अपनी जायदादों पर रहते थे। ईसा अपने स्थान से

नहीं डिगा। परन्तु उसके कहने से मासूम शेरपुर [1] आया और माल्दा तक सारा देश विद्रोहियों ने दबा लिया। माल्दा शेरपुर से 12 कोस पर है। वजीर खां ने लड़ाई तो नहीं लड़ी परन्तु टांडा नगर की और अन्य स्थानों की रक्षा की। बादशाह के आदेश वाहकों ने कठोर शब्द कह कर शाहबाज खां को वापस लौटा दिया और जागीरदारों को आपस में मिला कर उसके पास भेज दिया। शाहबाज खां के नाम यह भी आदेश हुआ कि यदि उसको अधिक सेना चाहिये तो राजा टोडरमल आदि को उसके पास भेज दिया जायेगा। शाहबाज खां ने उत्तर दिया कि मेरे पास बहुत-सी सेना है। 28 दिसम्बर, 1584 को बंगाल में प्रवेश करके वह माटी की विजय में व्यस्त हो गया। जमुना (गंगा) के तट पर उसको सूचना मिली कि मासूम खां शेरपुर (फिरंगी बाजार) में ठहरा हुआ है। उसका ख्याल था कि शाही सेना नदी को पार नहीं करेगी, अब वीर विद्रोही भयभीत हो गये और बिना लड़े ही भागने लगे। शाहबाज खां नदी पार करके आगे बढ़ना चाहता था परन्तु उसके अधिकारियों की हिम्मत नहीं थी। केवल रामदास और ख्वाजगी फतह उल्ला ने नदी को पार किया। उनके पार आते ही मासूम खां दुखी होकर भाग गया। कुछ विद्रोही पकड़ लिये गये। उनका बहुत-सा सामान लूट लिया। फिर शाहबाज खां और कुछ अन्य लोग तो वहीं ठहर गये और सईद खां आदि रवाना हो गये। उनके प्रयाण की खबर सुन कर शत्रु देश छोड़ कर भाग गया और जो इलाका पहले उसने दबा लिया था वापस छीन लिया गया। लूट के माल के साथ अधिकारी लोग शेरपुर वापस आ गये। विजय की घोषणा कर दी गई।

दस्तम काकशाल की पराजय

वह विद्रोहियों का एक अगुआ था और बड़ा शक्तिशाली बन गया था। जब शाही सेना शेरपुर में एकत्र हुई तो मासूम ने उड़ीसा और फतहाबाद की दिशा में शीघ्रता से प्रयाण किया। दस्तम काकशाल शेरपुर के समीप ही रहा। उसका ख्याल था कि इससे शाही सेना के दो भाग हो जायेंगे। उसको विजय मिलेगी। मासूम के विषय में खबर आने से पहले ही शाही शिविर से 12 कोस की दूरी पर दस्तम ने उत्पात खड़ा कर दिया, तब शाह कुली खां आदि कई वीर लोग उससे लड़ने के लिये रवाना हुए। उनके आने की खबर से शत्रु के पैर उखड़ गये और शाही अधिकारियों ने दस्तम का शाहजादपुर तक पीछा किया।

शाही सेना के दो भाग हुए

शाहबाज खां में अब समता नहीं थी। वह अपने साथियों की दुर्भावना के कारण बड़ा क्रुद्ध था। सादिक खां को काम से ग्लानि हो गई थी। वह अपने विचारों को खुले तौर पर प्रकट किया करता था। अफ़सरों ने यह नहीं सोचा कि अपने स्वार्थ के विचारों को त्याग कर स्वामी का काम करना चाहिये। वह केवल स्वामिभक्ति की बातें करते थे।

---

1. यह फरीदपुर और जसौर का कुछ भाग है।

इस समय मासूम खां के विषय में चिार किया गया। यह निश्चय हुआ कि शत्रु दो स्थान पर उपद्रव कर रहा है इसलिये शाही सेना के भी दो भाग कर दिये जायें। 1 मार्च, 1585 के वजीर खां, शाह कुली खां आदि ने मासूम खां को हराने का काम अपने ऊपर ले लिया और वह सेना से जुदा हो गये। सईद खां, शाहबाज खां आदि जहां के तहां बने रहे और उधर के विद्रोहियों को दबाने में लग गये। अब आपसी और निजी झगड़े, जो नित्य प्रति हुआ करते थे, बंद हो गये।

कश्मीर का शाहजादा दरबार में आया

सुल्तान यूसुफ खां कश्मीरी शाही दरबार में आया था। अकबर ने उसके प्रति स्नेह प्रकट किया था, उसको ऊंचा पद दिया था। अब यूसुफ खां ने अपने ज्येष्ठ पुत्र याकूब को कश्मीर की दुर्लभ वस्तुएं भेंट के रूप में लेकर दरबार में भेजा। 9 फरवरी, 1585 को वह दरबार में आया और उसने कोरनिश किया।

***

प्रकरण 82

शाहजादा सुल्तान सलीम का विवाह

इस समय बादशाह से निवेदन किया गया कि राजा भगवानदास कछावा की एक पुत्री है, जो बड़ी सुन्दर और रूपवती है। राजा भगवानदास बड़े ऊंचे पद पर था। उसका कुल बड़ा ऊंचा था, उसमें अनेक योग्यताएं थी। बादशाह से कहा गया कि राजा के कुटुम्ब की इच्छा है कि उसकी पुत्री का विवाह शाहजादे से हो जाये। बादशाह ने यह इच्छा स्वीकार की और अनुभवी आदमियों को आदेश दिया कि आवश्यक व्यवस्था की जाये। तो दौलतखाने को थोड़े-से समय में ही सजा दिया गया। फिर बड़े जलसे और भोज हुए और नित्य उत्सव मनाये गये। बड़े आदमियों की प्रथा के अनुसार भेंटें दी गईं। 16 फरवरी, 1584 को बादशाह और साम्राज्य के बड़े-बड़े उमराव राजा के निवास पर गये और वहां विवाह हुआ।

***

प्रकरण 83

मुजफ्फर गुजराती की तीसरी हार

मुजफ्फर में शासक के कोई भी गुण नहीं थे, उसने कोष बिता दिया और अगणित लालची लोग इकट्ठे कर लिये और गौंडाल कस्बे में पहुंच कर, जो जूनागढ़ से 15 कोस के अन्तर पर है, वह उपद्रव करने लगा। वह अपना मौका देखने लगा, तब खानखाना ने अहमदाबाद में कुलीच खां को छोड़ कर दो सेनाएं तैयार कीं। एक दम्दू का मियां से 7 कोस दूर अदाला गांव के पास छोड़ी, दूसरी परान्ती के पास जो नगर से आठ कोस दूर है। खानखाना 22 नवम्बर, 1584 को कुछ उच्चाधिकारियों के साथ मुजफ्फर से लड़ने के लिये रवाना हुआ। मुजफ्फर उस समय मौखी में था और चारों ओर लूटमार करने के लिये अपने आदमियों को भेजा करता था, उसने राधनपुर को लुटवा लिया। फिर जब उसने सुना कि शाही सेना आ रही है तो वह परेशान हो गया और खरारी तथा राजूद् कोट (राज कोट) चला गया, जो काठियावाड़ में बड़ा नगर है। खानखाना ने उसका शीघ्रता से पीछा किया। रास्ते में 60 कोस तक कोई खेती नहीं होती थी इसलिये सैनिक लोग खाने की चीजें अपने साथ ले गये। मुजफ्फर कहीं भी नहीं टिक सका और वरदा के पर्वतों में चला गया जो समुद्र के निकट हैं। उनसे द्वारिका बीस कोस उत्तर की ओर है। उस इलाके के जमींदारों ने कहा कि वे विद्रोही के साथ नहीं हैं। तब जाम के आदमियों ने कहा कि मुजफ्फर 40 कोस की दूरी पर उत्पात कर रहा है। यदि सैनिक भेजे जायेंगे तो वह पकड़ लिया जायेगा। खानखाना ने पीछा किया परन्तु मुजफ्फर का कहीं चिन्ह भी नहीं मिला। इतना पता लगा कि वह बरदा के पर्वतीय इलाके में चला गया है। तब खानखाना ने अपनी सेना के 4 भाग किये और प्रत्येक भाग में उस इलाके के हर एक कोने में प्रवेश किया। उपजाऊ इलाके को लूट लिया परन्तु विद्रोही का पता नहीं लगा और जाम की चालाकी प्रकट हो गई। मुजफ्फर जाम के देश में गया था। फिर अपने पुत्र को वहां छोड़ कर अहमदाबाद चला गया था। तब खानखान ने जाम से लड़ाई करने का निश्चय किया। इधर जाम भी सेना बटोर कर आगे बढ़ा, परन्तु 4 कोस कूच करने के बाद उसने आकर दीनता प्रकट की जो राय दुर्गा और कल्याण राय के कहने पर मान ली गई। जाम ने अपने पुत्र जैसा को एक हाथी और भेंटें लेकर भेजा और शाही नौकरी स्वीकार कर ली। खानखाना नवा नगर से 10 कोस की दूरी से वापस आ गया और अहमदाबाद चला गया। विद्रोही के पलायन की ओर शाही सेना की विजय की खबर से मौरवी में बड़ा आनन्द मनाया गया। मुजफ्फर कुछ जमींदारों से मिलकर अहमदाबाद पहुंच गया। वहां उसने कुछ सैनिक इकट्ठे कर लिये। तब हदाला और परान्ती की सेनाएं मिल गईं और अन्य जागीरदार भी लड़ने के लिये तैयार हो गये। मुजफ्फर परान्ती के पास पहुंच गया, तब शाही सेना ने व्यूह बनाया। जब लड़ाई हुई तो

मुजफ्फर भाग गया। शाही सेना के अनेक सिपाही आहत हो गये, परन्तु शत्रु के कई सेनानायक मारे गये। शाही सेना को बड़ी विजय प्राप्त हो गई और उत्पात शान्त हो गया।

***

प्रकरण 84

30वें इलाही संवत् का आरम्भ

इस संवत् का आरम्भ 10 या 11 मार्च, 1585 को हुआ। इस उत्सव पर अच्छे सेवकों की अभिवृद्धि की गई। शिहाबुद्दीन अहमद खां को मालवा का सूबेदार नियुक्त किया गया। राजा भगवन्तदास को पंचहजारी, राजा टोडरमल को चार हजारी, जयन खां और मीर यूसुफ खां को 2500 का, अबुमुत्ताली खां को 1500 का, राजा आसकरण को 1000 का, हकीम अबुल फतह को 800 का, शेख फरीद को 700 का, मीर जमालुद्दीन को 600 का और बुरहानमुल्क को 500 का मनसबदार नियुक्त किया गया। इस ग्रन्थ के लेखक को भी 1000 का मनसब प्रदान किया गया। इसी समय अमीर फतह उल्लाह शीराजी को अमीन-उल-मुल्क बनाया गया। राजा टोडरमल के नाम आदेश हुआ कि वह मीर की सलाह के अनुसार साम्राज्य के वित्तीय और प्रशासनिक अधिकारियों का संचालन करे और मुजफ्फर खां के समय से जो मामले बिना जांच पड़े हुए हैं, उनकी पूरी जांच करे जिसमें खुल दिमाग से इस काम को पूरा किया और निम्नलिखित प्रस्ताव किये।

(1) कारकूनों ने स्पष्ट विवरण नहीं दिये हैं और नियमों का पालन नहीं किया है। मान अनुमान से काम लिया है और पूछताछ नहीं की है। जब सारे साम्राज्य की भूमि को खालसे में लाया गया तो लोगों का काम बहुत बढ़ गया। वे काम के तल तक नहीं पहुंच सके और बड़ी-बड़ी राशियां बकाया में दिखा दी गईं। उन्होंने उपज के पंचमांश का षडांश के आधार पर निर्णय कर दिये। इससे चालाक लोगों को हर्ष और ईमानदारों को कष्ट हुआ। धनराशि इतनी बड़ी निश्चित की गई कि लोग दे नहीं सके।

(2) यह नियम था कि मामलत गुजार (कलेक्टर) रिआया को रसीदें दें। सूचियां बनाये। उनके आधार पर हिसाब तैयार किया जाये। यह व्यवस्था त्याग दी गई और कलेक्टर लोग जो कुछ भी किसानों के नाम लिख देते हैं वही मान लिया जाता है। इस प्रकार जिन रुपयों को कलेक्टर हड़प जाते हैं उसे किसानों के नाम मढ़ दिया जाता है, इसलिये भविष्य में किसानों को प्राप्ति की रसीदें दी जाए।

(3) हिसाब साल-ए-कामल (16 आने साल) के आधार पर तैयार किया जाता है और इसमें जल्दी की जाती है। न्यायसंगत बात यह होगी कि कई साल के आधार पर हिसाब तैयार किया जाये और सीधे और ईमानदार तरीके से हिसाब बनाया जाए।

(4) कलेक्टरों के प्रमाद के कारण गुमाश्ते लोग बड़े शक्तिशाली बन गये हैं और किसानों को लूटते हैं, पटवारी लोग भद्दे (कागजे-खाम) कागजों को नहीं मानते। कानूनगो मुकाद्दम आदि लोग किसानों को लूटते हैं।

(5) यदि किसान से वाजिब से अधिक भूमि कर ले लिया जाये तो उसको बकाया में जमा करना चाहिये या अगले वर्ष में मुजरा दिया जाना चाहिये।

(6) कृषि में कमी और वृद्धि हुआ करती है यदि किसी गांव में कोई किसान कम काश्त करता है तो दूसरे गांव में उसकी पूर्ति करती है परन्तु अहलकार लोग उसकी एक गावं की काश्त से ही हिसाब बनाते हैं, वास्तव में उसकी सारी काश्त के आधार पर हिसाब बनना चाहिये।

(7) हिसाब की जांच करने वाले कलेक्टर के वेतन का चतुर्थांश सरकार में जमा रहता है इससे बकाया वसूल की जाती है। परनतु कई बार इसमें किसान का कोई उत्तरदायित्व नहीं होता। फिर कलेक्टर का क्या अपराध है।

(8) कुछ लोगों को कलेक्टर की सहायता करने के लिये नियुक्त किया जाता है और निश्चित समय का उनको वेतन दिया जाता है। कभी-कभी वह अधिक समय काम करते हैं, इसके लिये उन्हें तो वेतन दे दिया जाता है, पर कलेक्टर को कुछ नहीं दिया जाता।

(9) यदि पिछले कलेक्टर के बकाया हिसाब पर खर्च होता है तो उसी से वसूल होना चाहिये।

(10) जब कलेक्टर को हटाया जाये और बकाया वसूल करने के लिये वह ठहरे तो इसका उसको वेतन दिया जाये।

(11) कलेक्टरों और घोड़ों को दाग लगाने वाले अफ़सर को यदि हटाने के बाद भी काम करना पड़े तो इसका उनको रसीद लेकर वेतन दिया जाए।

(12) कभी-कभी सहायक अहलकारों को बकाया से वेतन चुकाया जाता है जो मुनासिब नहीं है।

(13) अफ़सरों को इसलिये गिरफ्तार कर लिया जाता है कि उन्होंने समय पर रिपोर्ट पेश नहीं की। वे उत्तर दिया करते हैं कि उन्हें उत्तर नहीं मिला, रिपोर्ट तो पेश की थी। इस बात को यथासमय देखा जाये।

(14) कलेक्टर के आधे वेतन के लिये उसको भूमि दे दी जाये तो अच्छा होगा।

(15) कलेक्टर के पास जितने प्यादे हों उनसे आधे सवार होने चाहिये। यदि कलेक्टर पर निगरानी रखना आवश्यक हो तो गिरानी करने वाले प्रतिष्ठित आदमी होने चाहिये।

(16) कानूनगो लोगों को बड़ा लाभ होता है। यदि प्रत्येक परगने का एक आदमी दरबार में रहे तो इस विषय पर अधिक प्रकाश पड़ेगा।

(17) परगने के खजांची को बड़ी-बड़ी राशिया पेशगी देनी पड़ती हैं। इस काम के लिये योग्य और ईमानदार आदमी नियुक्त किये जायें।

(18) पिछले कलेक्टरों के द्वारा तैयार किये गये गोषवारों को जांच के बिना मंजूर नहीं करना चाहिये।

(19) जो व्यक्ति अपनी जागीर को अच्छी दशा में रखता है और लोगों को समय पर अन्न बांटता है उसकी यथासमय पदोन्नति की जाये।

(20) जब किसी सवार का घोड़ा मर जाता है तो वह तत्काल ही दूसरा खरीद लेता है या कभी नया घोड़ा खरीदने में 2 साल लग जाते हैं। पहली अवस्था में सवार को हानि होती है, दूसरी अवस्था में बादशाह को हानि होती है। अन्तर के कारण वह अपने घोड़े को दाग लगवाने तुरन्त नहीं लाता। जिस दिन उसका घोड़ा मरा, तभी से उसके वेतन में से रुपया काटा जायेगा तो उस पर बड़ी कठोरता होगी। जो कुछ लेना है वह नया घोड़ा आने के बाद से लिया जाये।

इन सब बातों को स्वीकार कर लिया गया। पुराने कागजात व्यवस्थित कर दिये गये।

मासूम खां काबुली की पराजय

शाही अफ़सरों में फूट थी ओर कुछ समय के लिये विद्रोही जीतने लगे थे परन्तु फिर वह परेशान हो गये। मासूम खां भागकर उस स्थान पर चला गया, जिसका उल्लेख किया जा चुका है (उड़ीसा और फतहाबाद) वहां जाकर उसने दुर्ग बनाने शुरू किये। तिरमोहिनी पर उसने दो दुर्गों की नींव डाली और वहां कुछ अफसरों और जमीनदारों को रखा। शाही अफ़सरों ने लड़ाई के लिये तैयारी कर ली। ईसा ने योग्य आदमियों को भेज कर अधीनता प्रकट की। परन्तु अफ़सरों ने नहीं माना और दुर्गों को छीनने में लग गये। सात बार लड़ाइयां हुईं और सातों ही बार शत्रु के लोग भाग गये। फिर एक नौ युद्ध हुआ और एक दुर्ग छीन लिया गया और फिर मासूम के विरुद्ध अभियान हुआ तो वह सामना नहीं कर सका और नदी द्वारा भागने लगा। उसकी नावें डूब गईं। कुछ अधमरे लोग किनारे पर पहुंचे। अब दूसरी बार उसकी पराजय हुई तो शाही अफ़सरों ने ईश्वर को धन्यवाद दिया।

तरखान दीवाना और ताहीर ईलान चाक को दण्ड

पिछली बार हार जाने के कारण ये लोग छिपे रहते थे और अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। जब शाही अफ़सर सावधान नहीं थे तो ताहीर ने ताजपुर पहुंच कर उत्पात शुरू कर दिया। तीमूर बदख्शी ने जल्दी करके लड़ाई की तो वह हार गया। इससे ताहीर को प्रोत्साहन मिला और तर-खान-दीवाना टांडा आकर विद्रोह को पुष्ट करने लगा। तब शाहबाज खां ने कासिम खां, मुहम्मद नियाजी को उसे दण्ड देने के लिये भेजा, तो वह भाग गया और मौरंग में मर गया।

हबीब अली और शेख मुहिब्ब अली की मृत्यु

जब बिहार के अधिकारी लोग बंगाल चले गये तो युसुफ मति अफगान कुछ आदमियों को एकत्र करके लूटमार करने लगा। हबीब अली यौवन के आवेश में बिना तैयारी किये ही युद्ध में कूद पड़ा। उसने आश्चर्यकारी पराक्रम दिखाया, परन्तु उसकी मृत्यु हो गई। यह खबर सुनकर मुहिब्ब अली आगबबूला हो गया, परन्तु उसको अफ़सरों ने नहीं जाने दिया और शाह कुली को इस काम के लिये भेजा। थोड़े ही समय में विद्रोहियों को अपने कर्मों का फल मिल गया और विद्रोह शान्त हो गया।

सादिक खां को बंगाल का पट्टा

बंगाल के अफ़सरों में एकता नहीं थी। सादिक खां कुछ आदमियों के साथ एक दिशा में और शाहबाज खां दूसरी दिशा में गया। इस प्रकार अलग-अलग जाने से कोई लाभ नहीं हुआ। तब बादशाह ने ख्वाजा सुलेमान को उन्हें समझाने के लिये भेजा और उनसे कहा गया कि एक अफ़सर बंगाल का और एक बिहार का शासन करेगा। ख्वाजा पहले सादिक के पास गया, तब शादिक ने तुरन्त ही बंगाल पर कब्जा कर लिया। वह शाहबाज खां से मिला भी नहीं।

संग्राम

शाहबाज खां संग्राम से नाराज था। संग्राम बिहार के अफ़सरों की सेवा करने की कोई कमी नहीं रखता था। उसका व्यवहार इतना अच्छा था कि राजा टोडरमल उसको अपना पुत्र कहता था। जब शाहबाज खां बंगाल से वापस आ रहा था तो उसने संग्राम को नष्ट करने का प्रयास किया। संग्राम नालों में घुस गया। लड़ाई अर्से तक चली। फिर शाहबाज ने पूर्णमल को संग्राम पर आक्रमण करने के लिये प्रेरित किया। फिर पूर्णमल का एक राजपूत सेवक शाहबाज खां को मारने के लिये घात में बैठ गया और उसने भूल से एक दूसरे आदमी को मार डाला, तो पूर्णमल ने उस राजपूत को मार डाला। तब शाहबाज खां ने पूर्णमल को बेड़ियाँ पहना दी।

ईसा खां ने अधीनता प्रकट की

जब सहायक सेना आ गई तो ईसा खां भयभीत हो गया, परन्तु शाही सेना में ही स्वार्थवश फूट हो गई थी और अफ़सर एक-दूसरे से लड़ने लगे थे, इसलिये ईसा खां का साहस बढ़ गया था। उसने सादिक खां के पास अपने राजदूत भेजे और उससे बड़ी मीठी-मीठी बातें कीं। ईसा खां इस बात पर तैयार हो गया था कि मासूम खां काबुली को हज्जाज भेज देगा और स्वयं एक सेवक की भांति काम करेगा और अभी अपने एक रिश्तेदार को दरबार में भेज देगा। ईसा इस बात की तैयारी कर ही रहा था कि शाहबाज खां, सईद खां और दूसरे अफ़सर वापस आ गये। तब ईसा ने अधीनता का विचार छोड़ दिया तो भी उसने दरबार में हाथी और तोपें भेज दिये जो उसके हाथ में पड़ गई थीं। उसने मासूम खां को तो नहीं भेजा, परन्तु उनकी गतिविधि पर निगरानी रखी। ख्वाजा सुलेमान ने बादशाह को खबर दी कि मैंने शाहबाज खां को बहुत समझाया कि वह कुछ दिन वहीं रहे, परन्तु उसने नहीं माना। तब बादशाह ने सुलेमान और नाजिर दौलत को शाहबाज खां की गतिविधि की खबर लाने के लिये फिर भेजा।

सुलेमान कररानी की गड़बड़ का दमन

ईसा ने सुलेमान कररानी की सहायता से विद्रोह और खड़ा कर दिया। अफगान लोग मिलकर लूट-मार करने लगे। बर्दवान जिले में लड़ाई हुई। यह हमला सालीह शेख वजीर खां पर किया गया था। सालीह ने बर्दवान के दुर्ग में शरण ली। शाही अधिकारियों ने उसका पीछा किया। जब शाही सेना शत्रु से 6 कोस के अन्दर पहुंच गई तो शत्रु दुर्ग से पीछे हट गया और लड़ाई करने लगा। इसी बीच में ख्वाजा सुलेमान और नाजिर दौलत विजय की खबर लेकर आये। थोड़े ही समय में उन्होंने दो दुर्ग बना लिये। 10 जून, 1585 को शाही अफ़सरों की विजय हुई और ईश्वर को धन्यवाद दिया गया।

दस्तम काकशाल की मृत्यु

दस्तम काकशाल का दमन करने के लिये सईद, शाहबाज और बहार ने बड़ा प्रयत्न किया था, परन्तु वे असफल रहे। अब थोड़े-से और साधारण योग्यता वाले लोगों ने उसका अस्तित्व समाप्त कर दिया। दस्तम काकशाल ने घोरा घाट के दुर्ग को घेर लिया था, परन्तु शाही अफसरों ने उसकी जोरदार रक्षा की। इसी बीच में यह खबर उड़ी कि मुहिब्ब अली आ गया है। तब शत्रु घेरा छोड़कर दूर चला गया। शाही सेवकों ने दुर्ग से बाहर निकल कर युद्ध किया जिसमें दस्तम काकशाल मारा गया।

इस समय चीजें बड़ी सस्ती थीं इसलिये किसानों को भूमिकर देने में बड़ी कठिनाई होती थी इसलिये बादशाह ने इलाहाबाद, अवध और दिल्ली के सूबों में किसानों को छूट दी। साढ़े 5 हिस्सों में एक भाग माफ किया गया। इलाहाबाद और अवध में छठा हिस्सा

माफ किया गया। इस छूट से खालसा की जमीन के भूमिकर में 7 करोड़ और साढ़े 7 लाख दाम की कमी आई।

इस वर्ष बादशाह की चान्द्र वर्षीय तुला की गई। उसको 8 पदार्थों से तौला गया। उस दिन बंगाल से शाह कुली महरम आया। वहीं से सादिक खां भी आया, परन्तु वह बिना बुलाये आया था इसलिये उसको वापस रवाना कर दिया गया।

खानखाना भी दरबार में आया। उसके नाम आदेश भेजा गया था कि वह ज्यों ही गुजरात के मामलों से निवृत्त हो दरबार में आ जाये। अब गुजरात में शान्ति थी, इसलिये वह अहमदाबाद से रवाना होकर 16 दिन में राजधानी पहुंच गया।

राय रायसिंह झाला ने आकर कोरनिश किया। वह गुजरात का एक जमीनदार था और जाम तथा खंगार से उसकी रिश्तेदारी थी। वह अपनी वीरता के लिये प्रसिद्ध था। एक दिन उसने गाजे-बाजे के साथ विवाह का जुलूस निकाला। जब यह जुलूस खंगार के चचेरे भाई जैसा कि मकान के निकट पहुंचा तो रायसिंह झाला को सन्देश मिला कि या तो बाजा बन्द कर दिया जाये या लड़ाई लड़ी जाये। रायसिंह ने लड़ाई करना ठीक समझा और वह विजयी हुआ। जैसा मारा गया तब जैसा का भाई साहिब बदला लेने के लिये आया, परन्तु उसको भी अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। यद्यपि रायसिंह को विजय मिल चुकी थी और उसके शत्रु मारे जा चुके थे, तो भी भाग्य के खेल से वह लुप्त हो गया। रायसिंह आहत हो चुका था और उसकी गणना मरे हुओं में कर ली गई थी परन्तु रात में एक जोगी आया जो उसको उठा कर ले गया और उसकी सुश्रूषा की। जब वह स्वस्थ हो गया तो वह इधर-उधर घूमने लगा। उसकी जाति के लोग समझते थे कि वह मर गया। परन्तु कुछ लोग यह भी समझते थे कि वह जीवित है। 19 वर्ष बाद रायसिंह जोगी से छुट्टी लेकर अपने घर आया। लोगों ने उसको पहचान लिया, विशेष कर उसकी स्त्री ने। खानखाना की सहायता से उसको अपनी जागीर वापस मिल गई।

खान-ए-आजिम को दक्षिण की ओर भेजना

गढ़ा और रायसीन खान-ए-आजिम को जागीर में दिये गये। अब्दुल मुतलिब खां, राजा आशकरण आदि को आदेश हुआ कि वे सब अपनी-अपनी जागीरों पर जाये और दक्षिण को अभियान करने की तैयारी करे। मालवा के अफसरों को भी आदेश हुआ कि वे लोग भी इनमें शामिल हो आसफ खां को आदेश दिया गया कि वह उसे सूबा के कुछ सेनानायकों को साथ लेकर अभियान में शामिल होवें। फतह उल्ला शिराजी को अजदुद्दौला की उपाधि देकर खानदेश के राजा अली के पास भेजा गया।

शाहबाज को बिहार से बंगाल जाने का आदेश हुआ तो खबर आई कि उसको बंगाल जाने में एतराज है और वह शाही दरबार में उपस्थित होना चाहता है, तब कर्म उल्ला को

आदेश हुआ कि वह शाहबाज को संभाले और उसको समझाये तथा उससे आज्ञापालन कराये। मिर्जा यूसुफ को आदेश दिया कि वह अवध से रवाना होकर बिहार का काम संभाल लेवे।

***

प्रकरण 85

पंजाब पर अभियान

इस समय फतहपुर पर संसार की आंखें लगी हुई थीं और बादशाह को इस स्थान से बड़ा प्रेम था। परन्तु इसी समय खबर आई कि मिर्जा हकीम 30 जुलाई, 1585 को संसार से चल बसा और अफगानिस्तान में गड़बड़ मच रही है। अकबर को इससे बड़ा दुःख हुआ। उसने मिर्जा हकीम के बच्चों को सान्त्वना दी। उनको तुरान में ले जाने का विचार किया गया था, परन्तु अकबर ने आदेश भेजा कि उनको वहीं रखा जाये। कुंवर मानसिंह को आदेश दिया गया कि कुछ सेना लेकर वह काबुल पहुंचे और वहां छोटे-बड़ों को शाही न्याय के विषय में विश्वास दिलाये और मिर्जा के लोगों को सान्त्वना दे। फिर 22 अगस्त, 1585 को अकबर ने पंजाब की ओर प्रयाण किया और राजा टोडरमल के बनाये हुए तालाब की पाल पर अपने डेरे लगाये। यहां से खानखाना ने गुजरात वापस जाने की इजाजत दी। 31 तारीख को दिल्ली ठहर कर अकबर ने मुसलमान सन्तों की कब्रों और हुमायूं की कब्र की यात्रा की और वहां रहने वाले लोगों को पुण्यदान किया। उस दिन मिर्जा यूसुफ खां आया। जब शाहबाज खां को बिहार से पूर्व की ओर भेजा गया था, तो मिर्जा को बिहार में जागीर दी गई थी। इसका आदेश मिलते ही मिर्जा बादशाह के पास आया और फिर इजाजत लेकर वापस चला गया। प्रातःकाल अकबर शेख फरीद बख्शी के मकान पर गया और फिर सोनीपत और पानीपत होता हुआ, वह थानेश्वर पहुंचा। अब खबरें आ रही थीं कि काबूली लोग उत्पात करना चाहते हैं, इसलिये मीर सदर जहां मुफ्ती और बन्दा अली मैदानी को लोगों को शान्त करने के लिये उधर भेजा गया। फिर बादशाह का शिविर सरहिन्द ठहरा। उसी दिन खबर आई कि राणा प्रताप पकड़ा ही जाने वाला था, परन्तु वह ज्यों-त्यों भाग गया।

जगन्नाथ जफ्फर-बेग, सईद राजू आदि कूच करके राणा प्रताप के निवास पर पहुंच गये थे, परन्तु उसको इनकी पहले ही खबर मिल गई थी, इसलिये वह अपने कुटुम्ब को लेकर पर्वतों की घाटियों में चला गया, फिर शाही अधिकारी उधर से ही गुजरात चले गये।

थोड़ी दूर जाकर वे डूंगरपुर की ओर मुड़े। डूंगरपुर के राजा ने उनको रुपये और पशु भेंट किये। राणा प्रताप उत्पात करना चाहता था, परन्तु पीछे हट गया।

इसी समय सुर्जन के पुत्र दूदा की मृत्यु हो गई और शेख ईस्माईल भी मर गया। वह शेख सलीम फतेहपुरा का पोता था और बड़ा तेजवान था, परन्तु उसको मद्यपान का व्यसन हो गया था। थानेश्वर में वह बहुत बीमार हो गया तो बादशाह उसको छोड़ कर आगे चला गया। शेख ईस्माईल बड़ा दुःख पाकर मरा।

इस समय खबर आई कि कुंवर मानसिंह सिन्धु नदी को पार करके पेशावर आ गया है और उसके साथ कुछ सेना है। शाह बेग डरकर भाग गया था और अफगान लोग अधीनता प्रकट करने के लिये आये हैं। अकबर ने मच्छीवाड़ा पर पुल द्वारा सतलज को पार करके दीहकदार के पास विश्राम किया और फिर वह हादियाबाद जालन्धर और मुल्तानपुर होता हुआ आगे चला। तारीख 1 आबान को जलालाबाद के पास पुल बनवाकर उसने अपनी सेना बिया नदी (व्यास) के पार उतारी। स्वयं वह हाथी पर बैठ कर उस पार गया। उसी दिन उसकी शौरवर्षीय तुला हुई। छः आबान को वह कालानूर पहुंचा। यहीं उसका राज्याभिषेक हुआ था। यहां से उसने हकीम अली और बहाउद्दीन कम्बू को कश्मीर भेजा। यूसुफ खां वहां का शासक था, वह अपने को अकबर का कृपापात्र मानता था और निरंतर उसके लिये भेंटें भेजा करता था, और कहा करता था कि दूरी के कारण वह दरबार में आने में असमर्थ है। अब अकबर पंजाब में था इसलिये उसने यूसुफ खां को बुलाने के लिए आदमी भेजे, परन्तु यूसुफ के पुत्र याकूब को सन्देह हुआ कि उसके पिता को क्यों बुलाया गया है। उस समय याकूब अकबर के शिविर में ही था। वह भाग कर अपने पिता के पास चला गया था। यूसुफ को लिखा गया कि यदि वह स्वयं नहीं आ सके तो याकूब को भेज दे।

इसी समय शेख जमाल की मृत्यु हो गई, वह भारत का उच्च कुलीन अमीर था। उसकी बहन अकबर के अन्तःपुर में थी, वह साहस और शिष्टता के लिये प्रसिद्ध था, परन्तु उसकी संगति बहुत बुरी थी। वह मद्यपान करता था, जिससे उसकी दशा बहुत बिगड़ गई। अकबर उसको लुधियाने में छोड़ गया तो 8 आबान (अक्टूबर 1585) को उसकी मृत्यु हो गई।

14 आबान को अकबर ने परसरूर के इलाके में चिनाव नदी को पुल द्वारा पार किया और शियालकोट में अपने डेरे लगवाये।

इसी समय शेख अब्दुर रहमान लखनवी के पागलपन की खबर आई। बुरी संगति के कारण वह मद्यपान करने लग गया था। एक दिन उसने हकीम अब्दुल फतह से मूर्खता की बात की और फिर पागलपन के कारण हकीम का खंजर अपनी छाती में भोक लिया। तब लोगों ने एकत्र होकर उसके घाव को सी दिया। हकीमों की राय थी कि अब्दुल रहमान

नहीं बच सकता। नब्ज जानने वालों ने भी उसकी स्थिति निराशाजनक बतलाई, परन्तु वह थोड़े दिनों में ही अच्छा हो गया।

24 आबान को शाही सेना रसूलपुर पहुंची। सादिक को मुलतान और भक्कर की जागीर दी गई और वह वहीं से बिदा हो गया। 27 तारीख को अकबर ने झेलम नदी पुल द्वारा पार की। 7 आजर को अकबर के डेरे रोहतास में लगे। उस दिन वह बालनाथ की पहाड़ी पर चढ़ा और वहां के निवासी कुछ साधुओं से मिला। फिर सिन्धु नदी तक का मार्ग समतल करवाया गया और इसके बाद खैबर का मार्ग तथा काबुल का मार्ग भी गाड़ियों के जाने योग्य बनाया। इस स्थान पर फतहउल्ला और बेग, काबुल से आये तो मालूम हुआ कि अकबर की कृपा से काबुली लोग शान्त हो गये।

इसी समय मरियम मकानी आई। वह अकबर से इतना प्रेम करती थी कि वह दिल्ली में नहीं ठहर सकती थी। अकबर ने 11 आजर (23 नवम्बर) को उसका स्वागत किया और उसको डेरे पर लाया। आगे चलकर अकबर 7 दिसम्बर, 1585 को रावल पिण्डी के निकट पहुंचा।

इस समय खबर आई कि मुजफ्फर गुजराती का उत्पात शान्त हो गया है। जब खानखाना बादशाह से मिलने के लिये गुजरात से आ गया था तो मुजफ्फर ने समझा था कि अब उसके लिये मैदान साफ है। यह समझ कर उसने राजद्रोह खड़ा कर दिया था। मुजफ्फर ने अहमदाबाद को लूटने का भी विचार किया। इसके बाद वह जूनागढ़ पर आक्रमण करना चाहता था। उसका ख्याल था कि जाम उसका साथ देगा और गुजरात उसके कब्जे में आ जायेगा। मुजफ्फर को अमीन खां के इलाके में कुछ सफलता हुई, तो अमीन खां डर गया और उसने कहा, मुझमें मुजफ्फर खां से लड़ने की शक्ति नहीं है। परन्तु मुझे कुछ सैनिक सहायता मिल जाये तो यह उत्पात दब सकता है।

2 तारीख को कुछ साहसी लोग अहमदाबाद में लड़ाई के लिये तैयार हो गये और सईद कासिम काजी को उससे लड़ने के लिये भेजा। जब ये लोग 30 कोस चले गये तो मुजफ्फर का धैर्य टूट गया और वह काठियावाड़ की ओर भाग गया। तब उस पर दो ओर से आक्रमण किया गया। अमीन खां ने राजकोट का कस्बा लूट लिया। मुजफ्फर खां वहीं छिपा करता था। फिर मुजफ्फर कच्छ के रण में चला गया, जहां ज्वार-भाटा हुआ करता है। यह 200 कोस लम्बा और 40, 50 कोस लम्बा है। ग्रीष्म ऋतु के समय में यह सूख जाता है।

शाही अफसर दावरुल-मुल्क की दरगाह पर ठहरे। वहां अमीन खां उनके पास आ गया। जाम ने भी आकर स्वामिभक्ति की बातें कीं। जब सब काम हो चुका तो खानखाना आया। उसने मार्ग में ही सिरोही और जालौर की व्यवस्था कर दी थी, परन्तु जालौर का गजनी खां अलग रहा, तथापि जब उसने देखा कि कोई चारा नहीं है, तो वह भी अधीन

हो गया। उसने विवश होकर अधीनता की थी, इसलिये उसकी जागीर जालौर, अन्य लोगों को दे दी गई।

सिरोही के पास खानखाना के मन में अपनी स्त्रियों के साथ शिकार करने की बात मन में आई। वह जानवरों का पीछा करता हुआ आगे निकल गया और सेना पीछे रह गई और वह एक वृक्ष के नीचे आराम करने लगा। एक शिकारी ने अत्याचार करके एक गाय पकड़ ली। तब पड़ोस के राजपूत लड़ने के लिये आये। अन्य हिन्दू भी आ गये, तब जोर की लड़ाई हुई, परन्तु खानखाना हारते-हारते जीत गया और खतरे से बच गया।

इसी समय कच्छ के शासक की मृत्यु हो गई। उसका पुत्र बिहारा उसकी गद्दी पर बैठ गया। यद्यपि जाम के पास अधिक विस्तृत भूमि है और उसकी सेना भी बड़ी है तथा खंगार को बड़ा माना जाता है और उत्तराधिकार के समय उससे इजाजत ली जाती है।

***

प्रकरण 86

हकीम मिर्जा के पुत्रों का और काबुल के सैनिकों का शाही दरबार में आना

जब हकीम मिर्जा की मृत्यु हुई तो कुछ गड़बड़ मची और प्रत्येक व्यक्ति को अपने प्राणरक्षा की चिन्ता हुई। फरीदून खां ने मिर्जा के पुत्रों को शाही दरबार में जाने से रोका। वह कहता था कि अकबर उनको दण्ड देगा। इसी समय शाही फरमान आये और प्रपंच भंग हो गया। फरीदून मिर्जा के बच्चों को लेकर ट्रान्स आग्जियाना जाना चाहता था, परन्तु इसी समय शाही सेना आ गई तो फरीदून ने भागने का विचार छोड़ दिया और अधीनता प्रकट करना ठीक समझा, परन्तु वह आगा-पीछा कर रहा था कि कुंवर मानसिंह आ गया और तब फरीदून के मन में मेल-मिलाप की बात बैठ गई। जब शाही सेना आई तो सारे कृषक अधीन हो गये और अनेक वीर-पुरुष आगे बढ़े। काबुल के लोग भी अकबर के अनुयायी बन गये। बख्त-निशा-बेगम को भी हर्ष हुआ। हकीम मिर्जा ने इस महिला को अपने पुत्र अफराशियाब के साथ शाही दरबार में भेजा था और चाहा था कि वह बीच-बचाव करे और क्षमा दिलावे। उसी के साथ शाहरूख मिर्जा के दो जोड़ले बच्चे हसन और हुसने भी थे। अफराशियाब दूर नहीं पहुंचा था कि मिर्जा हकीम की मृत्यु हो गई, तो वह वापस मुड़ गया। 29 आबान को मानसिंह शीघ्रता से बुतखाक पहुंचा तो मिर्जा हकीम के

दो पुत्र मिर्जा केकूबाद जो 15 वर्ष का था और अफराशियाब जो 14 वर्ष का था अपने बहुत-से सैनिकों के सहित उसके पास आ गये। मानसिंह के व्यवहार से और इस आशा से कि अकबर उनके साथ उदारता करेगा। उनके चेहरे हर्ष से चमक उठे। 4 आजर को मानसिंह ने काबुल नगर अपने पुत्र जगत सिंह और ख्वाजा शमसुद्दीन के सुपुर्द किया और मिर्जाओं की सम्पत्ति के साथ और उस देश के मुखिया लोगों के साथ वह शाही दरबार के लिये रवाना हुआ। 25 आजर को रावल पिण्डी में वह अकबर से मिला। अकबर ने सब का आदरपूर्वक स्वागत किया। वह सबसे पहले अफराशियाब, केकूबाद और मिर्जा के भानजे वली से मिला और उसके बाद फरीदून आदि सरदारों से उसने भेंट की। सब को उपयुक्त खिल्लतें और घोड़े तथा मोहरें और रुपयों से भरी हुई तश्तरियों दी गई। फरीदून का स्वभाव कृतघ्न था और वह राजद्रोही था, इसलिये उसको जैन कोका के सुपुर्द कर दिया गया।

जब अकबर हसन अब्दाद पर ठहरा हुआ था, तो कश्मीर से हकीम अली और बहाउद्दीन आये। वहां का सुल्तान नहीं आया और उसने कई बहाने बनाये। उसने अपने पुत्र याकूब को भी नहीं भेजा। तब अकबर को क्रोध आया और उसने आदेश दिया कि शाही सेना जाकर उसकी आँखें खोले।

***

प्रकरण 87

कश्मीर की विजय के लिये सेना की नियुक्ति

जब राजदूतों ने कश्मीर से वापस लौट कर वहां के सुल्तान के दम्भ की बातें कहीं तो अकबर ने 20 दिसम्बर, 1585 को मिर्जा शाहरूख बहादुर, राजा भगवन्तदास, कुंवर माधोसिंह आदि वीरों को रवाना किया। अमीमुद्दीन को बख्शी बनाया। इसी दिन यूसुफ जाई लोगों को ठीक मार्ग पर लाने के लिये और स्वाद तथा बाजोर की विजय के लिये जैन खां कोका को भेजा। यूसुफ जाई लोग पहले कन्धार, काराबाग में रहते थे। वहां से काबुल आकर ये जोरदार बन गये। मिर्जा उलूग बेग काबुली ने एक युक्ति करके इनका वध करवाया था और जो बचे थे, लमगानाथ चले गये। अब पिछले एक सौ वर्ष से ये स्वाद और बाजोर में रहकर डकैतियाँ किया करते हैं। कुछ अर्से पहले इन लोगों ने अधीनता प्रकट

की थी, तो इनके मुखिया कालू के साथ उदारता का व्यवहार किया गया था, परन्तु पुनः वे डकैतियाँ करने लगे और कालू भी दरबार से भाग गया। परन्तु वह अटक के पास पकड़ कर वापस भेज दिया गया। बादशाह ने उसके साथ अच्छा बर्ताव किया परन्तु वह पुनः भाग गया।

इसी वर्ष इस्माईल कुली खां को बलुचिस्तान भेजा गया, क्योंकि वहां लोग उत्पात करने लग गये थे। राय रायसिंह, अबुल कासिम तुमकीन और अनेक बहुत-से वीर उसके साथ थे। हासिम को बख्शी बनाया गया था। इसी दिन कुंवर मानसिंह को काबुल भेजा गया और उसको आदेश दिया गया कि वहां न्याय स्थापित करे। उसके साथ कई बड़े-बड़े सेनानायक थे। मानसिंह को यह भी आदेश था कि खबर की घाटी में पहुंच कर वह तारीकी लोगों का दमन करे और मार्ग को साफ करवाये। 23 दिसम्बर को अकबर अटक बनारस पहुंच गया और प्रातः काल वह जैन खां कोका और कुंवर मानसिंह के डेरे पर गया। 15 तारीख को उसने फरीदून खां को हज्जाज भेज दिया। वह भक्कड़ तक नाव द्वारा गया और वहां से सादिक खां ने उसको यात्रा पर रवाना कर दिया।

यूसुफ जाई लोगों पर आक्रमण करने के लिये सैनिक भेजे गये। ये लोग स्वाद और बाजोर के पर्वतीय प्रदेश में रहते हैं। इनके दूसरी ओर काबुल नदी और उत्तरी पहाड़ी प्रदेश है। इनका देश 30 कोस लम्बा और 15-20 कोस चौड़ा है। कोकलताश को सहायता देने के लिये अकबर ने कराबेग, जियाउलमुल्क आदि को शेख फरीद बख्शी के नेतृत्व में रवाना किया। वे आक्रमण करके वापस लौट आये और उन्होंने सलाह दी कि एक दूसरी और बड़ी सेना को विद्रोहियों का दमन करने के लिये भेजा जाये। तब कई लोगों को भेजा गया। इनमें शेख फैजी भी था।

7 बहमान को मीर शरीफ अंगुली को अमीन और सदर बनाकर जबुलिस्तान भेजा गया। उसी दिन कासिम बेग तबरीजी को शिविर का मीर आदिल बनाया गया। राजा बीरबल को स्वाद भेजा गया। अब यह विदित हो गया था कि जो लोग पहले भेजे गये थे, उनसे काम नहीं चलेगा। साथ ही बीरबल ने भी निवेदन किया कि मुझे स्वाद भेजा जाये। अबुल फजल भी वहीं जाना चाहता था। फिर बादशाह ने शकुन लिये तो बीरबल को ही भेजा गया और वह 21 जनवरी, 1586 को रवाना हो गया। उसके साथ अन्य कई योग्य सेनानायक भेजे गये। थोड़े-से समय में ही शाही सेना ने मैदान साफ कर दिया और विद्रोहियों को यथोचित दण्ड दिया। तब वनीर या बूनेर की विजय का विचार हुआ और सेना डूक पहुंची। वहां अफ़गानों ने जोर की लड़ाई लड़ी तो बहुत-से मारे गये और बहुत-से बन्दी बना लिये गये। इसके बाद भी हकीम अबुल फतह को स्वाद भेजा गया; क्योंकि जैन ख़ां कोकलताश ने लिखा था कि बाजोर पर कब्जा कर लिया गया है और अधिकांश स्वाद को भी दबा लिया है, परन्तु निरन्तर प्रयाण करते-करते सैनिक थक गये हैं ओर अफगान लोग कराकर

में इकट्ठे हो रहे हैं। अतः कुछ और वीर सैनिक भेजे जायें तो सारे देश पर कब्जा हो सकता है। इसलिये सहन बेग, शेख उमरी आदि को रवाना किया गया। सायंकाल बादशाह हकीम के डेरों पर गया और उसे नेक सलाह दी।

थोड़े-से समय में सेना इकट्ठी हो गई और निर्दिष्ट मार्ग से शीघ्रतापूर्वक आगे बढ़ी। इसी समय यह खबर आई कि तुरान के शासक अब्दुल्ला खां का राजदूत और बल्ख का जागीरदार नजरबे अनेक साथियों के साथ आने को थे। परन्तु खैबर की घाटी में तारीकी लोग उनको कष्ट दे रहे थे। इसलिये शेख फरीद बख्शी बेगी के नेतृत्व में कुछ लोगों को भेजा कि राजदूतों को ले आये।

बंगाल में शान्ति स्थापना

जिस समय अकबर ने पंजाब पर अभियान करने का विचार किया था, तब खबर आई थी कि वजीर खां अकेला बंगाल में शान्ति नहीं कर सकता और वहां के विद्रोही बड़े सक्रिय हैं। अतः शाहबाज खां के छोटे भाई को आदेश दिया कि वह बिहार से बंगाल जाये। जब अकबर बीहात नदी के तट पर पहुंचा तो उसे सूचना मिली कि शाहबाज खां दरबार में आ रहा है। तब बादशाह ने आदेश भेजा कि शाहबाज खां वापस नौकरी पर जाये तो वह जौनपुर से ही वापस चला गया। उसने थोड़े दिन में ही अच्छा काम किया। अफगान लोग हार कर समझौते की बात करने लगे। फिर शाहबाज खां ने ईसा खां को दण्ड देने के लिये सेना भाटी की ओर भेजी। ईसा खां को लड़ाई करने का साहस नहीं हुआ और उसने दीनतापूर्वक भेंटें भेजीं। उसने कहा कि "मासूम खां ने कृतघ्नता का मार्ग ग्रहण कर रखा है इसलिये मुझे लज्जा है और मैं दूर रहकर ही बादशाह की सेवा करना चाहता हूं और अपने पुत्र को दरबार में भेज रहा हूं" तब उसको उत्तर दिया गया कि "मासूम के लिए अच्छा होगा कि वह हज्जाज चला जाये और फिर वहां से दरबार में आये।" कुतुलू के पास से भी बहुत-से अफगान चले गये थे। उसने भी शाहबाज खां से अनुनय किया तो उसको वापस उड़ीसा भेज दिया गया।

उड़ीसा और दक्षिण के बीच का प्रदेश कोकरा कहलाता है। वहां का जमीनदार माधोसिंह बड़ा दम्भी था। उसको अपने दुर्गम पर्वतों पर बड़ा भरोसा था परन्तु शाही सेना ने वहां पहुंच कर लूटमार शुरू कर दी। तब उसने कर देना मंजूर कर लिया और उसको शान्ति मिल गई।

पेगू के पास माघ प्रदेश है, वहां के शासक ने भी हाथी आदि बड़ी-बड़ी भेंटें भेजी और संधि का प्रस्ताव किया। वह केवल संयोग की बात थी; क्योंकि शाही सेना के पास नवसेना नहीं थी और माघ के शासक के पास बहुत बड़ी-बड़ी नावें थीं।

कश्मीर के सुल्तान यूसुफ खां का दरबार में आना

जब कश्मीर विजय के लिये शाही सेना ने प्रयाण किया तो उनका विचार मीमबर के मार्ग से जाने का था; क्योंकि वह मार्ग आसान था और उधर के जमीनदारों का रुख भी अच्छा था, परन्तु कश्मीर को शीघ्रातिशीघ्र दबाना आवश्यक था। इसलिए आदेश दिया गया कि सेना पकली के मार्ग से जाये। उस मार्ग में हिमपात कम है। तब यूसुफ खां ने लड़ाई करने का निश्चय कर लिया और अपने अनुभवी आदमियों को आदेश दिया कि नैनसुख नदी के निकट एक दुर्ग बनायें और प्रत्येक घाटी में जमाव करके युद्ध की तैयारी करें। जब यूसुफ के लोगों को अकबर के आगमन का पता लगा तो उसने अपनी योजना त्याग दी और अपने आदमियों को वापस बुला लिया परन्तु उसके विचारों में स्थिरता नहीं थी इसलिये उसने पुनः युद्ध करने की ठान ली। जब शाही सेना बुलियास के निकट पहुंच गई तब यूसुफ खां ने अपने आदमी भेजकर संधि का प्रस्ताव किया। शाही लोग भी ठंड से सामान की कमी से, मार्गों की दुर्गमता से और वर्षा और हिम से परेशान थे। इसलिये 14 जनवरी, 1586 को वे यूसुफ खां के आदमियों से मिले और उन्होंने वापस आ जाने का विचार किया।

जब अकबर को इसकी खबर मिली तो उसने आदेश दिया कि सेनानायकों का वापस आना उचित नहीं है। पहले सेना कश्मीर में प्रवेश करे और देश को जीत ले और फिर यूसुफ खां को पुनः स्थापित करे। अतः अफ़सरों को आगे बढ़ना पड़ा। तब कश्मीरियों ने भी लड़ाई की तैयारी की और घाटियों में युद्ध करने लगे। जहां माधोसिंह अमीमुद्दीन आदि ने बड़े वीर कार्य किये और कई ने प्राण बलिदान कर दिये। शत्रु के वीर 40 प्रसिद्ध सेनानायक मारे गये।

इसी समय करना के जमीदार शाही सेना के अधीन हो गये। तब यह निश्चय हुआ कि उनके गावों में से होकर शाही सेना कश्मीर में प्रवेश करे। यह स्थिति देख कर कश्मीरियों ने फिर संधि का प्रस्ताव किया और यह ठहरा कि अकबर के नाम का खुत्बा पढ़ा जायेगा, सिक्का चलेगा और टकसाल और केसर की खेती तथा रेशम का उत्पादन शाही सरकार के अधीन रहेगा और प्रत्येक विभाग पर एक दारोगा नियत कर देने के बाद शाही सेना वापस चली जायेगी। तब केसर, टकसाल आदि के लिये शाही अफ़सर नियुक्त कर दिये गये। अकबर को यह संधि पसन्द नहीं आई तथापि परिस्थिति पर विचार करके उसने यह समझौता मान लिया।

जैन खां कोकलताश

जैन खां कोकलताश को स्वाद (स्वात) और बाजौर विजय के लिये भेजा गया था। वहां 3000 यूसुफ जाई रहते थे। घाटियों की दुर्गमता के कारण उन लोगों को बड़ा दम्भ था। शाही सेना ने दानिस कोल के मार्ग से प्रवेश करके बहुत-से लोगों को दण्ड दिया।

जब यूसुफ जाई लोगों की दशा बिगड़ गई तो उनके मुखिया लोगों ने अधीनता स्वीकार करनी चाही और बाजौर प्रदेश में शान्ति स्थापित हो गई। उसके बाद कोकलताश ने स्वाद की ओर प्रयाण किया। वहां 40,000 कुटुम्ब रहते थे। वे लोग लड़ने के लिए तैयार हो गये परन्तु शत्रु हार कर भाग गये और कोकलताश ने उस प्रदेश के मध्य में चकदरा नामक दुर्ग बनाया। उसको 23 लड़ाइयां लड़ने के बाद एक विजय मिली परन्तु कराकर घाटी और बूनर जिले के अतिरिक्त उसने सारे प्रदेश पर अधिकार कर लिया था परंतु उसके सिपाही अब थक गये थे, इसलिये उसने सहायक सेना मांगी तो अकबर ने बीरबल, हकीम अब्दुल फतह और अन्य लोगों को भेजा। इससे पहले कोकलताश और राजा बीरबल में बोलचाल हो चुकी थी। हकीम और राजा में भी मेल नहीं था। जब सहायक सेना रवाना होने लगी तो बीरबल ने कहा था, मेरा भाग्य उलट गया है। मुझे हकीम के साथ कोष की सहायता देने के लिये पर्वत और मैदान पार करने पड़ेंगे। कोकलताश ने इस सेना का हार्दिक स्वागत किया। हकीम अबुल फतह चकदरा दुर्ग में चला। राजा बीरबल को यह बात अच्छी नहीं लगी। दूसरे दिन कोकलताश ने एक दावत दी, जिसमें राजा बीरबल नहीं आया। उस समय कूर राजा बीरबल के पास था। वह चाहता था कि सब कूर के नीचे एकत्र हों। तब कोकलताश राजा के पास आया। वहां सभा में राजा बीरबल और हकीम अबुल फतह में कठोर बातें हुईं, परन्तु कोकलताश ने कुछ शान्ति कर दी। कोकलताश ने कहा, अब सब काम समाप्त हो गया है। कराकर और बूनर के विद्रोहियों ने अधीनता प्रकट नहीं की है, इसलिये मैंने सहायक सेना मंगवाई है। अब यह काम आपको करना चाहिये था। आप चाहें तो चकदर में रहें ''और मैं लड़ने जांऊ,'' राजा बीरबल और हकीम अबुल फतह को दोनों ही प्रस्ताव पसन्द नहीं आये। उन्होंने कहा, शाही आदेश शत्रु को दबाने का है, देश की रक्षा करने का नहीं, इसलिये हम सब शत्रु को दबायें और फिर दरबार में चलें। कोकलताश ने उत्तर दिया, जीते देश को अव्यवस्थित दशा में नहीं छोड़ना चाहिये और जो मार्ग दुर्गम है, उसी से वापस नहीं लौटना चाहिये। यदि आपको मेरे दोनों ही प्रस्ताव पसन्द नहीं हैं, तो जिस मार्ग से हम आये हैं, उसी मार्ग से चलें। परन्तु बीरबल और अबुल फतह ने उसकी बात नहीं मानी। तब वह अनइच्छा से सहमत हो गया। 12 फरवरी, 1586 को सब ने कराकर की ओर प्रयाण किया। वापसी पर उनको एक घाटी में लड़ाई लड़नी पड़ी। जहां उनको विजय प्राप्त हुई और हजारों कश्मीरी बन्दी बना लिये गये, परन्तु फिर शाही सेना में ही गड़बड़ मच गई, परन्तु कोकलताश धैर्यपूर्वक लड़ता रहा। दिन और रात भर लड़ाई होती रही। सायंकाल विजय तो प्राप्त हो गई, परन्तु माल से लदे हुए शाही सेना के ऊंट और बैल लूट लिये गये। कोकलताश ने राजा बीरबल से सलाह की और कहा कि आगे की घाटियां अत्यन्त दुर्गम हैं, इसलिये दीवार बना कर ठहर जाना चाहिये और अवसर देखना चाहिये एवं सहायक सेना के लिये दरबार में लिखना चाहिये, परन्तु कोकलताश की बात नहीं मानी गई और 16 फरवरी, 1586 को शाही सेना ने बलन्दरी घाटी की ओर प्रयाण

किया। कोका सेना के पृष्ठ भाग का नेतृत्व कर रहा था। अफगान लोग शाही सेना को पीछे से दबा रहे थे, इसलिये वह शीघ्रता से आगे जा रही थी। अब अफगानों ने सब ओर से शाही सेना पर आक्रमण कर दिया। इससे बड़ी गड़बड़ मच गई और कितने ही लोग मारे गये। कोकलताश भी मरते-मरते बचा। शाही सेना के 500 आदमी मारे गये। इनमें राजा बीरबल मुख्य था। यह खबर अकबर को मिली तो राजा बीरबल की मृत्यु पर उसको बड़ा दुःख हुआ। प्रत्यक्ष में वह शान्त था, परन्तु दो दिन तक उसने कुछ भी खाया-पीया नहीं और जब उसकी माता मरियम-मकानी और स्वामिभक्त सेवक रोये-पीटे तब उसने भोजन किया। अकबर स्वयं विद्रोहियों को दबाने के लिये प्रयाण करने वाला था, परन्तु स्वामिभक्त सेवकों के आग्रह से वह रुक गया और अपने शाहजादा सुल्तान मुराद और बहुत-से सेवकों को भेज दिया। राजा टोडरमल भी शाहजादे के साथ था। अकबर के आदेश से जैन खां कोका, हकीम अबुल फतह और काजी भी इस सेना के साथ थे।

यूसुफ जाई लोग अपने दुर्गम पहाड़ों की सहायता से लूटमार किया करते थे और यात्रियों को बहुत सताते थे। काबुल के शासक कुछ नहीं कर सकते थे। भारत के शासकों ने भी इधर ध्यान नहीं दिया था। अब इनके कितने ही आदमी मारे गये और कितने ही बन्दी बनाकर तुरान और ईरान में बेच दिये गये। इस प्रकार स्वाद, बाजौर और बूनेर के प्रदेशों में शान्ति स्थापित हो गई।

कुंवर मानसिंह को विजय प्राप्ति

अब यह खबर आई कि तूरान का राजदूत और नजरबे बहुत बड़े कारवां के साथ आ रहे हैं, परन्तु रोशनियां लोगों के कारण वे खैबर की घाटी को पार नहीं कर सकते। तब उनकी सहायता करने के लिये शेख फरीद बख्शी को भेजा गया। जमरूद पहुंच कर मानसिंह ने माधोसिंह और अन्य कई लोगों को सहायता के लिये भेजा। उन्होंने खैबर में प्रवेश किया और कारवां से भेंट की। मानसिंह अली मस्जिद की ओर चला। तारीकी लोगों ने समझा कि मानसिंह की सेना छोटी-सी है इसलिये उन्होंने अली मस्जिद को घेर लिया। तब शाही सेना के वीरों ने शत्रुओं को दबा लिया। वे दुर्ग को छोड़कर एक ऊंचे पहाड़ पर चले गये। प्रातःकाल उनके बहुत-से आदमी मारे गये। अली मस्जिद की विजय की खबर अकबर को भेज दी गई। अगले दिन तूरान का कारवां खेराबाद की सराय पर पहुंच गया। तूरान के शासक ने अकबर के लिये कबूतर भेंटस्वरूप भेजे थे। उसके राजदूत का दरबार में सहर्ष स्वागत हुआ। नजरबे ने और उसके तीनों पुत्रों ने अकबर से भेंट की।

जब यह खबर फैली कि अकबर जाबुलिस्तान की ओर कूच कर रहा है और खैबर घाटी को घोड़े, ऊंट और गाड़ियां पार कर रही हैं तो तूरान में क्षोभ उत्पन्न हो गया। इसीलिये तूरान के शासक ने घोड़े, ऊंट, खच्चर, बहुमूल्य वस्त्र और अन्य दुर्लभ वस्तुयें लेकर अपना

राजदूत भेजा। जब वह आया तो अकबर को राजा बीरबल की मृत्यु का क्षोभ था, परन्तु फिर 1 मार्च, 1586 को अकबर राजदूत से दीवानखाने में मिला।

शाहजादा सुल्तान मुराद को वापस बुलाया

राजा टोडरमल ने अकबर से निवेदन किया, ''जब आप स्वयं रणभूमि में जाना चाहते थे तो अमीरों की प्रार्थना पर आपने शाहजादा मुराद को भेजा था, परन्तु शाहजादों को बड़े-बड़े शासकों का दमन करने के लिये भेजना चाहिये और वर्तमान कार्य किसी सेवक के सुपुर्द करना चाहिये।'' बादशाह ने यह बात मान कर कुंवर मानसिंह को जो उस समय तारीकी लोगों के दमन का विचार कर रहा था, इस कार्य के लिये भेजा। मानसिंह ने ओहन्द के निकट बूनेर की ओर सिंधु नदी के तट पर अपने डेरे लगाये। ओहन्द, एक प्राचीन और बड़ा नगर है और उसके स्थान पर इस समय एक टेकरी है जो इसका प्रमाण है। मानसिंह ने वहां एक दुर्ग बनाया। राजा टोडरमल ने कोह-ए-लूंगर के पास अपना डेरा लगाया। अफगान लोग चारों ओर से हमला करते थे, परन्तु उनसे कुछ नहीं बन पड़ा। अतः उन्होंने अधीनता प्रकट की।

***

प्रकरण 88

शासन के बाद 31वें ईलाही वर्ष का आरम्भ

शुक्रवार 10 या 11 मार्च, 1586 को 31वें ईलाही वर्ष का आरम्भ हुआ। 28 मार्च 1586 को अकबर ने बहुत बड़ा भोज दिया, जिसमें मिर्जा शाहरूख, राजा भगवन्तदास आदि उपस्थित थे। ये लोग कश्मीर के शासक को लेकर आये थे। अकबर ने उससे पूछा, तुम दरबार से क्यों भाग गये थे, तब सुल्तान कश्मीर लज्जित होकर चुप रहा और यह निश्चय हुआ कि कश्मीर को पहले जीता जाये और फिर यूसुफ खां के सुपुर्द कर दिया जाये। यूसुफ खां को राजा टोडरमल के हवाले कर दिया गया। उसी दिन बलूचिस्तान से ये शाही सेनानायक वापस आये, जिनको वहां के विद्रोहियों को दबाने के लिये भेजा गया था। अब उन्होंने आकर अधीनता प्रकट की तो उनका देश उन्हें ही वापस लौटा दिया गया और उन्हें खिल्लतें और घोड़े देकर सम्मानित किया गया। उसी दिन यूसुफ जाई देश से राजा टोडरमल वापस आया। अफगानों का दमन वह राजा मानसिंह के सुपुर्द कर आया था।

बरार पर सैनिक चढ़ाई

बरार दक्षिण में है और मालवा से मिला हुआ है। इसका वर्णन आईने अकबरी में किया गया है। दखिन के सुल्तान अकबर का आदेश नहीं मानते थे इसलिये उनका दमन करने के लिये खान-आजम मिर्जा कोका को नियुक्त किया गया। उसने नाहरराव से सानोली दुर्ग छीन दिया। दूसरे जमीनदार भीं अधीन हो गये। अकबर ने मालवा के अच्छे-अच्छे भाग मिर्जा कोका को जागीर में दे दिये। जब शाही अफ़सर मिले तो उनमें फूट पड़ गई, और काम में गड़बड़ी होने लगी। शिहाबुद्दीन खां परेशान होकर अपनी जागीर पर चला गया। तब प्रधान सेनापति ने उसका पीछा किया तो शिहाबुद्दीन लड़ने के लिये तैयार हो गया। दूरदर्शी लोगों के समझाने-बुझाने से लड़ाई तो नहीं हुई परन्तु दोनों अधिकारियों में सहयोग नहीं रहा। अमीर फतहउल्ला शिराजी परेशान होकर खानदेश से वापस लौट आया। वह कोई काम नहीं बना सका और बड़े दुःख के साथ गुजरात में खानखाना के पास चला गया। इससे दखिन के शासकों में साहस आया। खानदेश के शासक राजा अली बरार के सरदार और अहमदनगर की सेना सम्मिलित होकर लड़ाई के लिये तैयार हो गये। तब शाही सेनानायक विचार करने लगे। संयुक्त शत्रु का सीधा सामना न करके शाही अफ़सर बरार में पहुंचे। जो उस समय खाली पड़ा था। उन्होंने बरार को खूब लूटा, फिर बरार की राजधानी एलीचपुर को भी खूब लूटा। फिर वे अहमदनगर पहुंच गये परन्तु उसको नहीं लूटा। उनका ख्याल था कि गुजरात की सेना सहायता करेगी और लूट का माल वापस नहीं करना पड़ेगा। शत्रुओं ने शाही सेना का पीछा किया। उन्होंने हिन्दियों को लूट कर जला दिया। फिर एक जमीनदार से मुकाबला हो गया, जिसमें एक शाही सेनानायक मारा गया। जो कासगढ़ के शासक का पुत्र था। खानदेश के पास शत्रु का पक्ष त्याग कर मुहम्मद कुली उजबेग शाही सेना में आ गया। उसके कहने से लड़ाई करने की तैयारी हुई, परन्तु प्रातःकाल होते ही शाही सेना पीछे हट गई। तब शत्रु का साहस और बढ़ गया। खान-ए-आजम गुजरात गया। उसको वहां से सैनिक सहायता मिलने की आशा थी। खानखाना ने उसका स्वागत किया, परन्तु दोनों ने मिलकर दखनियों के पास संधि का प्रस्ताव भेजा, और फिर सब अपनी-अपनी जागीर पर चले गये। मिर्जा कोका ने मांडू और अन्य स्थानों को लूटा और कई स्थान जला दिये; क्योंकि उधर का प्रदेश खाली पड़ा था।

राजा भगवन्तदास को अफगानिस्तान भेजा

जब कुंवर मानसिंह को यूसुफ जाई लोगों को दबाने के लिये भेजा था तो राजा भगवन्तदास पंजाब में सेनानायक था, अब उसको अफगानिस्तान भेजा गया। उसने कुछ ऐसी इच्छायें कीं जिससे मालूम होता था कि वह पागल हो गया इसलिये अकबर ने उसको अफगानिस्तान जाने से रोक दिया और उसकी बजाय सुल्तान दनियाल को भेज दिया। इस शाहजादे के साथ तीन बड़े-बड़े अफ़सर भेजे गये। तब राजा भगवन्तदास ने अपनी भूलों

पर पश्चात्ताप करके क्षमा मांगी तो अकबर ने उसको बुद्धिमान् सेवकों के साथ अफगानिस्तान जाने की इजाजत दे दी।

***

प्रकरण 89

बादशाह का वापस फतेहपुर को प्रयाण

24 फखरद्दीन को एक पहर द्वरात व्यतीत होने पर अकबर ने भारत की ओर प्रयाण किया। 24 अप्रैल, 1586 को उसने पुल द्वारा झेलम नदी को पार किया और वहीं कुछ समय के लिये डेरे लगाये। उस दिन मिर्जा शाहरूख की दो बुआयें और उसका बिचला पुत्र शाह मुहम्मद मिर्जा और कुछ काबुली लोग अकबर की सेवा में उपस्थित हुए। जब अकबर सिन्धु नदी के तट पर ठहरा हुआ था तब भी इन महिलाओं ने उससे मिलने की इच्छा प्रकट की थी। खानजादा खानिम, काबुल से आई थी और भारत के लिये रवाना हुई थी, फिर वह मिर्जा शाहरूख के साथ हो गई। बेगम सुल्तान, मिर्जा सुलेमान के साथ हज्जाज और ईरान गई थी और वहीं उसका विवाह हो गया था। जब उसको मौका मिला तो काबुल आई। अब झेलम के तट पर दोनों को अकबर से मिलने का मौका मिला।

राजा भगवन्तदास को पागलपन का रोग

राजा भगवन्तदास ने काबुल जाने की इजाजत ली और सिन्धु नदी पार करके वह खेराबाग की सराय में ठहरा। कुछ दिन तक उसने सैनिक मामलों को देखा, फिर एकाएक ही उसकी बुद्धि विकृत होने लगी और उसको चक्कर आने लगे। इसलिये उसको वापस अटक लाकर सम्भाला गया। सामान नामक एक हकीम उसकी नाड़ी देख रहा था कि राजा ने एकाएक अपना खंजर निकाल कर अपने को आहत कर लिया। यह खबर सुनकर बादशाह ने राजा के लिये चार हकीम भेजे और राजा के मित्रों से कहलाया कि जिससे चाहे चिकित्सा करवा ली जाये। तब महादेव नामक एक वैद्य से इलाज करवाया गया तो लम्बे अर्से के बाद राजा स्वस्थ हो गया।

कुंवर मानसिंह को काबुलिस्तान भेजा

जब राजा भगवन्तदास बीमार हुआ तो उसके स्थान पर ईस्माईल कुली को भेजा गया था। उसको कोई अनुभव नहीं था और वह बड़ा स्वार्थी था। बादशाह को उसका काम

पसन्द नहीं आया तो आदेश दिया गया कि उसको नाव में बिठाकर भक्कर के मार्ग से हज्जाज भेज दिया जाये। तब ईस्माईल कुली को चेत आया और उसने क्षमा चाही। उसको क्षमा दो दे दी गई परन्तु उसको पद से हटा कर आदेश दिया गया कि यूसुफ जाई लोगों को दबायें। उसके साथ माधोसिंह आदि अधिकारियों को भेजा गया और कुंवर मानसिंह को काबुल रवाना किया गया।

अरब बहादुर की मृत्यु

अरब बहादुर एक काले पहाड़ के निकट बहराईच के प्रदेश में रहा करता था। वहां उसने एक दुर्ग बना लिया था। आस-पास लूटमार करके वह इस दुर्ग में छिप जाया करता था। एक दिन खड़कराय जमीनदार ने अपने पुत्र दुल्हराय को उस दुर्ग पर आक्रमण करने के लिये भेजा। जब दुल्हराय आया तो दुर्गरक्षकों ने समझा कि अरब बहादुर आ रहा है और दुर्गरक्षा की कोई चिन्ता नहीं की। उन्होंने दुर्ग पर अधिकार करके वहां का बढ़िया माल छीन लिया और वापस आ गये। यह खब़र सुनकर अरब बहादुर उन पर हमला करने के लिये घात में बैठ गया। जब मुठभेड़ हुई तो दुल्हराय ने अरब बहादुर को मार डाला।

राजा भगवन्तदास की पुत्री को पुत्री हुई

शाहजादा सुल्तान सलीम के घर में राजा भगवन्तदास की पुत्री ने एक पुत्री को जन्म दिया और बादशाह अकबर ने उसका नाम सुल्तान खिराद रखा तथा ईश्वर को धन्यवाद देने के लिये सभा की। जो उस समय की रीति के विरुद्ध था। मरियम मकानी के निवास स्थान पर भी भोज हुआ और पुरस्कार दिये गये।

मिर्जा शाहरूख को कश्मीर भेजा

कश्मीरियों ने संधि भंग कर दी थी और उनका धोखा प्रकट हो चुका था। उनको दण्ड देने के लिये मिर्जा शाहरूख को भेजा गया, परन्तु मिर्जा शाहरूख का मन इस काम में नहीं लगाता था। उसको स्वदेश की याद आया करती थी। इसलिये उसको इस काम से मुक्त किया गया और किसी दूसरे व्यक्ति को नियुक्त करने का विचार किया जाने लगा।

जब बादशाह सब मामलों की व्यवस्था कर चुका तो उसने आदेश दिया कि झेलम के तट से प्रयाण किया जाये। 5 खुर्दाद को उसने पुल द्वारा कंजा के समीप एक थाह से चिनाव नदी को पार किया।

***

प्रकरण 90

अकबर का लाहौर पहुंचना

अकबर चाहता था कि पंजाब में ठहर कर वह अफगानिस्तान में शान्ति स्थापित करे और स्वाद और बाजौर के विद्रोह का दमन करे और तारीकी (रोशनियां) लोगों को तीरा और बंगस में निर्मूल करे तथा कश्मीर छीन कर ठट्टा को अपने साम्राज्य में मिलाये। फिर यदि तुरान का शासक मित्रता के मार्ग से पीछे हट जाये तो फिर स्वयं चढाई करे इसलिये अकबर कुछ समय लाहौर ठहरा। अटक बनारस से रवाना होकर 24 मंजिल अर्थात् साढ़े 112 कोस पास करके 27 मई, 1586 को वह लाहौर पहुंचा और राजा भगवन्तदास के निवासस्थान पर ठहरा। कुछ कट्टर लोगों को और परम्परा के पुजारियों को प्रकाश दिखा। 12 जून, 1586 को चान्द्र वर्ष की तुला हुई तो बादशाह को 8 पदार्थों से तोला गया।

शाहजादा सुल्तान सलीम का विवाह

राय रायसिंह ने अकबर के कान में यह बात डलवाई कि वह अपनी पुत्री का विवाह शाहजादा सलीम से करना चाहता है। अकबर ने उसकी प्रार्थना मंजूर की और विवाह की सब व्यवस्था करवाई। 26 जून, 1586 को अपने शाहजादों और अमीरों के साथ बादशाह राय रायसिंह के निवासस्थान पर गया और शुभ मूहूर्त पर विवाह हुआ। प्रति दिन उत्सव मनाये गये। इसी समय सैयद खां गक्खड़ की लड़की के साथ भी शाहजादे का विवाह हुआ।

किसानों को छूट

प्रशासन की उत्तमता के कारण इलाहाबाद, अवध और दिल्ली के सूबों में अन्न बहुत ही सस्ता हो गया था, जिससे किसानों को भूमिकर देने में बड़ी कठिनाई हो रही थी। तब बादशाह ने षडांश भूमिकर छोड़ दिया, इससे खालसा की भूमि से 45605.96 दाम कम प्राप्त हुए। इससे अनुमान किया जा सकता है कि जागीरदारों को कितनी छूट दी गई होगी।

मुजफ्फर गुजराती की युक्तियां विफल

अब मुजफ्फर गुजराती में लड़ाई लड़ने की शक्ति नहीं रही थी इसलिये उसको दूसरी युक्तियों का आश्रय लेना पड़ा। उसने गुप्त रूप से अहमदाबाद में एक आदमी भेजा और शाही अफ़सरों के नाम कई पत्र लिखे। उसका ख्याल था कि यदि ये पत्र प्रान्त के अफ़सरों के पास पहुंच जायेंगे तो सन्देह किया जाने लगेगा और तब शायद कुछ अफ़सर शाही पक्ष छोड़कर उसका पत्र ग्रहण कर लेंगे। परन्तु पत्रवाहक और पत्र पकड़ लिये गये। पत्रवाहक को प्राणदण्ड दिया गया। मुजफ्फर ने अफ़सरों का वध करने के लिये कुछ लोगों को नौकर भी रखा था। इनमें से एक आदमी का नाम शाहबाज खां था, उसने मुकम्मल

(शाही अफ़सर) को मार डाला, परन्तु वह पकड़ लिया गया। अब उसको उचित दण्ड मिला।

यूसुफ जाई लोग

शाही अधिकारी यूसुफ जाई लोगों पर आक्रमण करते थे, उन्हें लूटते थे, मारते थे और बांधते थे। साथ ही अन्न बड़ा महंगा हो गया था और वायु अस्वास्थ्यकर बन गया था। चारों ओर बीमारी फैल गई थी इसलिये परेशान होकर यूसुफ जाई लोगों के बड़े-बड़े मुखिया लोग बड़ी नम्रता के साथ ईस्माइल कुली के पास उपस्थित हुए और यह ठहरा कि वे अपने कुटुम्बों सहित पहाड़ी प्रदेश से निकल कर क्षमा मांगे।

सादिक खां का सहवान पर आक्रमण

सादिक खां मुलतान से आया और सहवान की ओर सेना ले गया। तब वहां के शासक मिर्जा जानी बेग ने सामना करने के लिये सेना भेजी तो एक बड़ी लड़ाई हुई, जिसमें मिर्जा जानी बेग के दो बड़े आदमी मारे गये और एक को पकड़ लिया गया। तब प्रोत्साहित होकर सादिक खां ने सहवान के दुर्ग को घेर लिया। सुरंग लगाकर उसने कुछ प्राचीर तोड़ डाली, परन्तु उसकी सेना दुर्ग के अन्दर नहीं घुस सकी। तब दुर्ग रक्षकों ने एक नई दीवार बना ली। कार्य बड़ा दुष्कर था, और वहां का शासक लड़ने के लिये आ पहुंचा था इसलिये सादिक ने सोचा कि घेरा छोड़कर पीछे हट जाना ही अच्छा है।

***

प्रकरण 91

कासिम खां को कश्मीर-विजय के लिये भेजा

कश्मीरियों ने संधि नहीं निभायी। याकूब समझता था कि वह दुर्गम पहाड़ों के पीछे सुरक्षित है। इसलिये अकबर ने पुनः कश्मीर विजय का विचार किया और ज्योतिषियों से सलाह ली। इस समय दो कश्मीरी सरदार शाही पक्ष में आ गये और उन्होंने कहा कि यदि पंजाबी सेना के साथ कुछ कश्मीरी जमीनदार भेजे जायेंगे तो बिना लड़े ही उस देश पर कब्जा हो जायेगा। अकबर ने पहले तो यह बात मान ली, परन्तु फिर उसने सोचा कि यह कोई युक्ति है इसलिये उसने कश्मीर-विजय का काम कासिम खां को दिया। जो योग्यता और साहस के लिये प्रसिद्ध था। 28 जून, 1586 को 17 बड़े-बड़े अमीरों को, बहुत-से मनसबदारों को और अहदियों और अफ़सरों को कासिम खां के नेतृत्व में रवाना किया गया

और उन्हें आदेश दिया गया कि यदि कश्मीर का सुल्तान सीधे मार्ग पर आ जाये तो उसे क्षमा कर दिया जाये अन्यथा उसको दण्ड दिया जाये।

तूरान के राजदूत को बिदा दी

जब अकबर ने सिंधु नदी से प्रयाण किया तो तुरान के शासक का त्रास दूर हो गया। फिर भी उसने अकबर से निवेदन किया कि मेरा राजदूत लम्बे अर्से से आपके पास रुका हुआ है इसलिये मुझे चिन्ता है। तब 23 अगस्त, 1586 को राजदूत को बिदा दे दी गई और उसके साथ दुर्लभ वस्तुयें भेजी गईं। साथ ही हकीम हमाम को भी एक पत्र देकर भेजा गया और उसे आदेश दिया गया कि अकबर के गुणों को अब्दुल्ला खां के मन पर अंकित करें। मीर सदर जहां मुफती को आदेश हुआ कि वह अब्दुल्ला खां के पास जाकर सिकन्दर खां की मृत्यु पर शोक प्रकट करें। यद्यपि सिकन्दर खां की मृत्यु को तीन साल हो चुके थे, परन्तु इस अर्से में अकबर का तुरान को जीतने का विचार था इसलिये शोक प्रकट नहीं किया गया। अब अब्दुल्ला खां ने समझौता कर लिया था इसलिये मीर को इस काम के लिये भेजा गया था।

***

प्रकरण 92

अकबर के पत्र का प्रारूप

अकबर ने अब्दुल्ला खां को एक मैत्रीपूर्ण पत्र लिखा जिसका सारांश निम्न-लिखित है :

''अब हम दोनों में नई मित्रता का उदय हुआ है। मेल और सद्भावना हार्दिक शब्दों में प्रकट की गई है। हम गत 30 वर्ष से शासन कर रहे हैं। हमने युद्ध किये हैं और देश जीते हैं, परन्तु हमारा उद्देश्य इन देशों की रक्षा करना है। धन के लोभ से वह काम नहीं किया गया। हमने शत्रु और मित्र दोनों के प्रति सद्भावना रखी है। ईश्वर जानता है कि भारत के देशों को जीतने में हमारा कोई स्वार्थ नहीं था। हम तो अत्याचारियों को नष्ट करना चाहते थे। हमने जन्म लिया तब से और राजकाज सम्भाला तब तक हमारी एक मात्र अभिलाषा यह है कि धर्म और सत्य के मार्ग पर चला जाये जिससे सारी मनुष्य जाति और सत्प्राणी शान्तिपूर्वक अपना जीवन-यापन करें। कितने ही स्थानों पर जहां इस्लाम की सेना नहीं पहुँची थी अब वहां मुसलमान निवास कर रहे हैं। काफिरों के मन्दिर, गिरजे और

मस्जिदें बन गई हैं। हिन्दू और अन्य लोगों ने हमारी आज्ञापालन करना शुरू कर दिया है और हमारी सेना में भरती हो गये हैं। हमारा यह भी विचार है कि जब इन कामों से अवकाश मिल जाये तब फिरंगी काफिरों का विनाश हाथ में लिया जाये। ये लोग समुद्र पर आकर हज के यात्रियों को सताया करते हैं परन्तु हमने सुना कि ईरान के कुछ लोग राजद्रोही बन कर उत्पात करने लग गये हैं। तब हमने उचित समझा कि हम अपने पत्र को इस विद्रोह का दमन करने के लिये नियुक्त करें। इस समय सुल्तान टर्की ने ईरान की निर्बलता देखकर कई बार उस पर सेनायें चढ़ाई हैं। हमने यह विचार नहीं किया कि हम सुन्नी हैं और ईरान का सुल्तान शिया है। हमने यह समझ कर कि वह पैगम्बर के परिवार से सम्बन्धित है। अपनी सेना उधर भेजी, विशेष कर इसलिये कि उसने हमारे पास राजदूत भेजे और सहायता के लिये प्रार्थना की। यह भी हम उचित समझते हैं कि हम ईराक और खुरासान की सहायता करें। प्राचीन काल से अब्दुल्ला के कुटुम्ब से हमारा मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध है और अब यह सम्बन्ध नया हो गया है। परस्पर मिलकर सन्देश भेजकर ऐसा सम्बन्ध दृढ़ किया जा सकता है। इसलिये हम चाहते हैं कि अब्दुल्ला खां के साथ हमारी एकता हो। अब एकता हो गई है इसलिये यह प्रकट हो जायेगा कि हम ईराक और खुरासान को क्या सहायता देते हैं।''

आपने मिर्जा शाहरूख की ओर से क्षमा चाही है उससे हमको हर्ष हुआ है। उसने यौवन और दम्भ के कारण अनुचित काम किये हैं। अदूरदर्शी लोगों के बहकाने से उसने हमारी आज्ञा का पालन नहीं किया है और उसने आपके प्रति भी शिष्टता का व्यवहार नहीं किया है। उसने अपने पूज्य पितामह के प्रति अनुचित व्यवहार किया है, परन्तु अब उसकी निद्रा भंग हो गई है इसलिये हमें भी उसे क्षमा कर देना चाहिये और हम आशा करते हैं कि आप भी उसको क्षमा कर देंगे।

अपने स्नेह के आधार को दृढ़ करने के लिये हम हकीम हमाम को भेज रहे हैं, जो सत्यवादी और सिद्धान्तवादी है। यदि आप उसके साथ उचित व्यवहार करेंगे तो हम ऐसा समझेंगे कि आप और हम एक-दूसरे से बात कर रहे हैं।

सिकन्दर खां के देहान्त पर शोक प्रकट करने के लिये हम सदर जहां को भेज रहे हैं। यह इस देश में एक बड़ा पवित्र आदमी है।

मुहम्मद अली के साथ हम कुछ भेंटें भेज रहे हैं जिनकी सूची साथ है। आपने हमारे लिये सुन्दर उड़ने वाले कबूतर भेजे, जिससे हमको हर्ष हुआ।

सरहिन्द में बाढ़

8 सितम्बर, 1586 को वर्षा शुरू हुई जो तीन दिन और तीन रात तक होती रही। उत्तर की ओर से पानी आया तो नगर में तीन गज तक पानी भर गया। बाहर 5 गज था

लगभग 2000 मकान नष्ट हो गये और दुर्ग की 150 गज दीवार गिर गई। 500 पुराने बाग और 100 नये बाग तथा बहुत-सी सम्पत्ति बह गई। 100 मनुष्य और 2000 जानवर डूब कर मर गये। कुछ समय के लिये राजधानी का मार्ग बन्द हो गया। परन्तु सत्यपरायण शासक ने जनता को बचा लिया।

***

प्रकरण 93

कश्मीर देश की विजय

कश्मीर के याकूब खां को बड़ा दम्भ हो गया और उसने विद्रोह करना शुरू कर दिया। उसने सुना था कि शाही सेना परेशान है इसलिये उसने संधि भंग कर दी और शाह ईस्माईल की उपाधि धारण कर ली। वह लोगों को सताता था। इस देश में पहले हिन्दू धर्म और शाक्य मुनी का धर्म प्रचलित था, परन्तु लम्बे अर्से से वहां सुन्नी और शिया लोगों का आधिपत्य था। अब याकूब ने सुन्नी लोगों को सताना शुरू किया। उसने वृद्ध काजी मुसा का वध करवा कर उसका मकान लुटवा दिया। तब शम्सचक ने आगे आकर सल्तनत का दावा किया और बदला लेना चाहा। तब याकूब शम्सचक और अन्य सुन्नी विरोधियों को गुप्त रूप से समाप्त करने में लग गया। परन्तु शम्सचक ने स्थिति वश में कर ली। याकूब ने भी लड़ाई की तैयारी की। इसी अर्से में एकाएक शाही सेना का घोष सुनाई दिया, तब संधि हो गई। शम्सचक को कामराज का जिला दे दिया गया, परन्तु याकूब खां ने यह समझौता नहीं निभाया और शम्सचक को पकड़ लिया।

जब शाही सेना चिनाव नदी पर पहुंची तो उसको याकूब के बर्ताव का और कश्मीर के आन्तरिक कलह का समाचार मिला और एक के बाद दूसरा कश्मीरी आकर अपनी कथा सुनाने लगा। तब शाही सेना ने लड़ने की तैयारी की और सेना की व्यवस्था की। 1 सितम्बर, 1586 को सेना ने भीम भर की घाटी पार की। घाटियों के सरदारों ने शाही सेना में आकर अधीनता प्रकट की और कहा कि याकूब से सब लोग घृणा करते हैं और शाही सेना की प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन लोगों ने कहा कि कश्मीर में प्रवेश करने के दो मार्ग हैं, एक कपरताल का मार्ग है, यह सर्वाधिक खुला हुआ है। दूसरा मार्ग पीरपंजाल का है। इन रास्तों के सरदार ही आकर अधीन बने थे। उन्होंने कहा कि यदि शीघ्रता से प्रयाण किया जायेगा तो पीड़ित लोग मुक्त हो जायेंगे। समझदार लोगों की सलाह से कपरताल वाला मार्ग पसन्द किया गया। तब नवागत लोगों ने कहा कि घाटियां दुर्गम हैं और सेना बहुत बड़ी है इसलिये

पहुंचने में बहुत विलम्ब होगा। उधर कश्मीरी लोग पहाड़ी पर प्रतीक्षा कर रहे हैं इसलिये यह अच्छा होगा कि योग्य आदमियों को आगे भेजा जाये, जिससे उन लोगों को शाही कृपा की आशा दिलाई जा सके। तो याकूब और जय तबाची बाशी को कुछ बन्दूकचियों के साथ आगे भेजा गया। सेना उनके पीछे-पीछे गई। जब वे लोग कपरताल के ऊपर पहुंचे तो देखा कि तीन दीवारें जिनकी मोटाई चार गज और ऊँचाई 10 गज है, खड़ी कर दी गई हैं और उनमें तीस गज की लम्बाई के लट्ठे फंसा दिये गये हैं। पुराने लोगों ने मंत्रोपचार भी किया था कि जब विदेशी सेना आये तो हिम-पात हो और ओले बरसें। अत: बड़ी गड़बड़ मची और इस तूफ़ान में पहाड़ियां और घाटियां पार करके सेना आगे चली। तब हिमपात और अधिक होने लगा, जिससे बहुत-से जानवर मर गये। इसी समय जो बन्दूकची, जो जय तवाची बाशी के साथ गये हुए थे आहत होकर वापस आ गये और उन्होंने कश्मीरियों के छल और कपट की कहानियां कहीं। जब शाही सेना का अग्र भाग उधर गया तो मालूम हुआ कि वहां कोई कश्मीरी नहीं है। इसी बीच में कई कश्मीरी सरदार आ गये और लड़ने के लिये तैयार हो गये। शेख याकूब के दो घाव लगे, जिससे वह गिर कर मृतकप्राय हो गया, परन्तु उसके मित्रों ने उसको बचा लिया। जय तवाची बाकी के 12 घाव लगे और वह गिर पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई, फिर तुरन्त ही तूफ़ान आया और वर्षा हुई और हिमपात हुआ।

याकूब की गतिविधि

याकूब की अभिलाषा बहुत बढ़ी-चढ़ी थी। उससे मार्ग बन्द करवा दिये। छोटे आदमियों को उपाधि देकर सम्मानित किया। कुछ आदमियों को आगे भेज दिया और स्वयं तैयारी करने के लिये शहर में रह गया। हैदरचक भी कश्मीर का शासक बनना चाहता था और वह शाही सेना के साथ था। उसका पुत्र हुसेन कश्मीर में बरगला में उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। हुसेन के साथ कई कश्मीरी लोग थे और कहते थे कि वे हैदर चक का साथ देंगे और शाही सेना को भेंटें देकर और मीठी बातें करके वापस कर देंगे। कश्मीरी लोग चाहते थे कि कुछ शाही अधिकारियों को अपने साथ ले जाकर मस्जिद में अकबर के नाम का खुत्बा पढ़ावे और फिर भेंटें देकर शाही अफ़सरों को कश्मीर से बिदा कर दे।

जब कश्मीरी लोग पहाड़ी के ऊपर हैदर चक की प्रतीक्षा कर रहे थे तो उनको उसका पत्र मिला जिसमें लिखा था कि मेरी चौकसी की जा रही है, मेरे लिये यहां से निकलना कठिन है और अफ़सरों को समझाकर वापस मोड़ना भी सम्भव नहीं है। तब कश्मीरियों को इस प्रकार के पत्र से भी घृणा हुई और वे हीरापुर में इकट्ठे हुए और हुसेन चक को अपना नेता बनाकर लड़ाई की तैयारी करने लगे। इसी बीच में शम्स चक आ गया। शत्रु की एक.सेना लड़ने के लिये घाटी में आ गई। इसी के द्वारा शेख याकूब और जय-तवाची-बाजी की क्षति हुई थी।

जब शाही सैनिक अधिकारियों को कश्मीरियों के बुरे इरादों का पता लगा तो वे हैदर चक पर अधिक निगरानी रखने लगे। कासिम खां ने कश्मीर में प्रवेश करना शुरू किया। शम्स चक मीठी-मीठी बातों द्वारा समय टालने का प्रयत्न करने लगा परन्तु अब शाही अधिकारी ऐसी बातें सुनने के लिये तैयार नहीं थे। शत्रु की सेना पास आ गई। उसने व्यूह बना लिया था। शम्स चक मध्य भाग में था। जब शाही सेना घाटी में पहुंची तो शत्रुओं ने बन्दूकें चलाईं और ऊपर से पत्थर फेंके और शाही सेना के एक पक्ष को पीछे हटा दिया। अब कासिम स्वयं उस स्थान पर पहुंचा और खूब लड़ाई हुई, जिसमें शत्रु तितर-बितर हो गया और शाही सेना ने विजय के बाजे बजा दिये। यादगार हुसेन और कुछ और लोग कश्मीर की राजधानी श्रीनगर को भेजे गये। 6 अक्टूबर को अकबर के नाम का खुत्बा पढ़ा गया। फिर कासिम ने श्रीनगर में प्रवेश किया और उत्सव मनाया। हैदर चक को अलग रखा गया।

इससे 600 वर्ष पूर्व अनत इलाईल के समय में जो कश्मीर का शासक था। इस देश की विजय के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की गई थी। इसका उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में किया गया है। भाग्य के खेल से फिर इस देश में बड़ा अत्याचार हुआ। शिवदत्त नामक एक ब्राह्मण श्रीनगर में रहता था। वह बड़ा गुणवान और उसकी स्त्री बड़ी पतिव्रता और रूपवती थी। वह निरन्तर ईश्वर से प्रार्थना किया करता था कि अत्याचारियों से मुक्ति हो। एक योग्य आदमी ने उसको बेताल साधना सिखाई। भारत के सन्त लोग बेताल को पवित्र आत्मा मानते हैं। वह साधना द्वारा प्रकट हुआ करता है और सब विषय की सच्ची बातें बतला देता है। जो व्यक्ति बेताल को प्रकट करना चाहता है, उसको कई दिन तक कुछ क्रियायों करनी पड़ती हैं और विशेष प्रकार के मन्त्रों का जप करना पड़ता है। शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को उचित मुहूर्त पर उसको एक शव, जो ज्यों का त्यों हो, मशान में ले जाना पड़ता है और उसके चारों ओर कीलें गाड़ दी जाती हैं फिर वह व्यक्ति शव के कन्धे पर बैठ कर एक मनुष्य की खोपड़ी में दीपक जलाता है जिसकी बत्ती कफ़न की बनी हुई और जिसका तेल मनुष्य की चर्बी का बना होता है। फिर वह व्यक्ति मुर्दे के दांतों पर मंत्र फूकता है और शव पर पुष्प डालता है। तब ईश्वर की शक्ति से भयंकर आकृतियां प्रकट होती हैं। यदि मंत्रोपचार करने वाला सावधान बना रहता है तो वह शव हिलने लगता है और डरावनी आवाजें करता है। कुछ देर बाद वह कहता है, तुमने मुझको क्यों बुलाया है और मुझे यह पीड़ा क्यों दे रहे हो। उसके बाद वह प्रश्नों का उत्तर देता है। तब प्रश्नकर्त्ता को उपाय मिल जाता है और जो मामले करने के योग्य नहीं होते उनके विषय में कहा जाता है कि शान्ति रखो। पीड़ित, ब्राह्मण ने सामग्री बटोरना शुरू किया तो अभीष्ट शव तो मिल गया, परन्तु कुछ सामग्री नहीं मिली। फिर उसके सामने यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि जो कुछ सामग्री मिल गई है उसको सुरक्षित कैसे रखा जाये। वह शव को नगर में नहीं ले जा सकता था और यदि बाहर रखता तो वह डर था कि वह बिगड़ जायेगा इसलिये उसकी एक गठरी बाँध कर उसने एक चमार के मकान में रख दी। उसका ख्याल था कि वहाँ उसका पता

नहीं लगेगा, फिर वह ब्राह्मण शेष सामग्री की खोज में चला गया। मध्य रात्रि को शव चमार की ओर जोर से चिल्लाया तो चमार भयभीत हो गया, परन्तु भूत ने उससे कहा, ''एक ब्राह्मण को कष्ट है उससे कह देना कि अत्याचारी राजाओं का समय अभी दीर्घ काल तक चलेगा इसलिये वह धैर्य धारण करे और घबराये नहीं। इसी प्रकार के 20 राजा गद्दी पर बैठेंगे। जब उनका समय व्यतीत हो जायेगा तो कायस्थ जाति राज्य करेगी और तत्पश्चात् मुसलमान धर्म के मानने वाले शासक बनेंगे। प्रत्येक राजवंश के लिये समय निश्चित है। जब वह समय निकल जायेगा तो चक लोगों की बारी आयेगी और इस वंश के कई लोग राज्य करेंगे। आठवीं पुश्त में उनका राज्य भी समाप्त हो जायेगा और फिर एक शक्तिशाली और धार्मिक शासक का राज्य जमेगा जब ब्राह्मण चमार के घर पर आया तो उसको सब बातें ज्ञात हुईं। तब उसने और कोई क्रिया नहीं की और एक कोने में बैठ गया। उसने हिन्दी छन्दों में सब घटनायें लिखी। सुल्तान जैनुल-आबीद्दीन ने जो बुदुशाह भी कहलाता है और जो कश्मीर के शासकों में प्रसिद्ध है, कहा था कि इस देश का शासन शीघ्र ही चक लोगों के हाथ में चला जायेगा और फिर यह उनसे भी छीन लिया जायेगा।''

जब कश्मीर में मिर्जा शाहरूख और राजा भगवन्तदास के आने की जोर से खबर फैली तो सुल्तान यूसुफ पंजब्रारा के वाहिद सूफी के पास गया और उससे आगे की बात पूछी तो सूफी ने कहा कि ''यह सेना तो वापस चली जायेगी परन्तु ईश्वर ने यह देश एक दूसरे शासक को दे दिया है, उसकी सेना जल्दी आ जायेगी।

जब इस विजय का वृत्तान्त दरबार में पहुंचा तो ईश्वर को धन्यवाद दिया गया और योग्य राजा सेवकों को पुरस्कृत किया गया। हिन्दू ज्योतिषियों का कथन सत्य हुआ। आबान मास के प्रारम्भ में बादशाह की सौर तुला की गई। बादशाह को 12 पदार्थों से तोला गया। राजा भगवन्तदास ने सिचदा किया। अब वह स्वस्थ होकर वापस दरबार में आ गया था। 4 तारीख को बादशाह कर्म उल्ला कम्बू के मकान पर गया। वह बहुत अर्से से चाहता था कि बादशाह आये इसलिये उसकी प्रार्थना स्वीकार की गई।

याकूब का रात में हमला

कश्मीर के धूर्त लोग इकट्ठे होकर याकूब को पर्वत की कन्दराओं (कन्द्राओं) में से निकाल लाये। पंजब्रारा से 7 कोस दूरी पर चन्द्रकोट में उसने उपद्रव खड़ा कर दिया। तब कुछ वीर लोगों को उस स्थान पर भेजा गया। वह दिन में आक्रमण नहीं कर सकता था, इसलिये उसने रात में हमला करने का निश्चय किया। उससे कहा गया था कि शाही सेनापति ने अपनी सेना वापस भेज दी है और बेखबर है और नगर में लापरवाही हो रही है। तब याकूब नगर की ओर रवाना हुआ और 20 तारीख की रात को उसने नगर में प्रवेश किया और सोते हुए पहरेदारों को मार कर मुख्य द्वार पर उसने बखेड़ा शुरू कर दिया। कुछ लोग वीरतापूर्वक लड़े। हैदर चक के विषय में उनको सन्देह था इसलिये उसको मार डाला।

तब शाही सेना के लोगों ने बड़े वीर कार्य किये। बड़े संघर्ष के बाद उनको विजय प्राप्त हुई। जब चारों ओर विजय के ढोल बजने लगे तो शत्रु का धैर्य टूट गया। सायंकाल शत्रु विफल होकर पीछे हट गया तो कुछ अधिकारियों ने उनका पीछा किया, परन्तु याकूब भाग कर देशू की ओर चला गया।

ठट्ठा के शासक का राजदूत आया

उस देश का शासक मिर्जा पाईन्द मुहम्मद अरगून, पागल था इसलिये उसका पुत्र मिर्जा जानी शासन का संचालन करता था। 7 नवम्बर, 1586 को ठट्ठा का एक सरदार सईद जलाल दरबार में आया और वहां के शासक की ओर से उसने क्षमा मांगी कि वह स्वयं नहीं आ सका।

राजा बासू

यह राजा पंजाब के उत्तरी पहाड़ी देश का एक जमीनदार था और बड़ा आज्ञाकारी था परन्तु जब शाही डेरे पंजाब में पहुंचे तो वह विद्रोही बन गया, इसलिये हुसेन बेग आदि 5-6 बड़े-बड़े अधिकारियों को आदेश दिया कि वे जाकर राजा बासू को समझायें और यदि वह नहीं समझे तो उसको दण्ड दें। राजा टोडरमल ने भी उसके पास पत्र भेजा और लिखा कि आज्ञा भंग करने में बड़ा खतरा है। टोडरमल के पत्र से उसकी निद्रा भंग हुई और वह शाही अधिकारियों के साथ दरबार में उपस्थित हुआ।

जैन खां कोका को तारीकी लोगों के दमन के लिये भेजा

मोहमन्द और गोरी नामक जातियों को अपने कुकर्मों का बदला मिला। पेशावर में इन लोगों के 10,000 घर थे। उन लोगों ने जलाला तारीकी को अपना नेता बना लिया था। उनके साथ युद्ध हुआ जिसमें सईद आमीद बुखारी मारा गया। वह अफगानिस्तान के मार्ग की रक्षा करने के लिये नियुक्त था। इस समय उसके सैनिक उसकी जागीर पर चले गये थे और उसके साथ केवल गिनती के लोग थे। उसने सब काम मूसा के हाथ में छोड़ रखा था। वही सब प्रशासन चलाता था। मूसा लोभवश इन जातियों के धन और मान का हरण करने लगा और जलाला से मिल गया। सईद हामिद के पास थोड़ी-सी सेना थी इसलिये वह एक दुर्ग में घुसकर अपने भाई-बन्धुओं की ओर काबुल और अटक के सेनिकों की प्रतीक्षा करने लगा। उसको यह भी गलत खबर मिली कि शत्रु की संख्या थोड़ी-सी है इसलिये 150 आदमियों के साथ वह दुर्ग से बाहर निकला। युद्ध में उसका घोड़ा एक नहर में गिर गया और मारा गया फिर अफगानों ने दुर्ग को घेर लिया। उसके पुत्र सईद कमाल ने दुर्ग की रक्षा की। इसकी खबर मिलने पर कोकलताश के नेतृत्व में एक सेना भेजी और कुंवर मानसिंह को भी लिखा कि वह काबुल से आवश्यक सेना भेजे। माधोसिंह को भी

आदेश हुआ कि वह भी शाही सेना की सहायता करें और राजा भगवन्तदास के सैनिकों को अपने साथ ले आये।

सच्चे और बुद्धिमान् लोगों की नियुक्तियां

शासन में सुधार करने के लिये बादशाह ने प्रत्येक प्रान्त में सच्चे और बुद्धिमान् लोगों की नियुक्तियां कीं और दीवान तथा बख्शी के कार्यालयों में अच्छे विचारवान मुन्शी नियुक्त किये। प्रत्येक प्रान्त में दो योग्य अधिकारी रखे गये, जिससे यदि एक बीमार हो जाये या उसको दरबार में आना पड़े तो दूसरा काम करता रहे। अधिकारी के साथ एक दीवान तथा एक बख्शी भेजा गया। नियुक्तियां निम्नलिखित की गईं :

सूबा	सूबेदार	दीवान	बख्शी
1. इलाहाबाद	1. शिहाबुद्दीन अहमद खां	रहमान कुली	जफरबेग खां
	2. अब्दुल मुत्तालिव खां		
2. अवध	1. फतेह खां	मुल्ला नाजिर	ताराचन्द
	2. कासिम अली खां		
3. अजमेर	1. जगन्नाथ	मुजाहिद	सुल्तान कुली
	2. रायदुर्गा		
4. अहमदाबाद	1. खानखाना	अबुल कासिम	निजामुद्दीन अहमद
	2. कुलीच खां		
5. बिहार	1. सईद खां	राय पतरदास	अब्दुल-रज्जाक मामूरी
	2. मिर्जा यूसुफ खां		
6. बंगाल	1. वजीर खां	कर्म उल्ला	शाहबाज खां
	2. मुहिब्ब अली खां		
7. सुल्तान	1. सादिक खां	ख्वाजा अब्दुस	मुकीम समद
	2. इस्माईल कुली खां		
8. आगरा	1. शेख इब्राहीम	मुहिब्ब अली	हकीम एनुलमुल्क
	2. राजा आसकरण		
9. दिल्ली	1. शाह कुली खां महरम	तईब	हसन खां
	2. अबुल फजल		

10. काबुल	1. कुंवर मानसिंह	निजामुलमुल्क	ख्वाजा समसुद्दीन
	2. जैन खां कोका		
11. मालवा	1. खान आजम	मुखत्यार बेग	फतहउल्ला
	2. नौरंग खां		
12. लाहौर	1. राजा भगवन्तदास		
	2. राय रायसिंह		

इस समय दरबार लाहौर में ही था इसलिये महल के दीवान और बख्शी काफी समझ गये।

कला सिसोदिया की मृत्यु

यह राणा की जाति का था और उसी के साथ रहा करता था। फिर वह शाही सेवा में आ गया, परन्तु अपनी बेसमझी के कारण भाग गया। उसका पीछा करने के लिये सलाहुद्दीन और रामचन्द्र भेजे गये और उन्हें कहा गया कि यदि वह सलाह मान ले तो उसको अदालत में ले आये अन्यथा उसको मार डाले। 180 कोस चल कर वे कस्बा फतेहपुर पहुँचे परन्तु वह उनसे नहीं मिला। जब उसको सलाह पहुंचाई गई तो उसने समझा कि शाही अधिकारी डरपोक हैं और अपने नौ-साथियों के सहित लड़ने के लिये तैयार हो गया, जिसमें वह और उसके दो साथी मारे गये।

अली मुराद की मृत्यु

अली मुराद की जागीर परगना बड़ौदा (सरकार रणथम्भौर) में थी। यह परगना सूबा अजमेर में था। एक दिन अली मुराद चिड़िया मार रहा था तो शेख जादा शाहमुहम्मद ने आकर उसको बायें हाथ से सलाम किया। अली मुराद ने इसका कारण पूछा तो उसने उत्तर दिया ''मेरा सीधा हाथ तलवार के लिये है, सलाम करने के लिये नहीं। तब अली मुराद ने उसको गालियां दीं तो शाह मुहम्मद ने खंजर निकाला और उसकी तरफ झपटा। अली मुराद के नौकर डर कर भाग गये। अली मुराद के सीधे हाथ में घाव लगा तो वह लड़ने के लिये तैयार हुआ। तब उसके दूसरा घाव लगा। अली मुराद के एक सेवक ने शाह मुहम्मद को तो मार डाला परन्तु थोड़े समय बाद अली मुराद की भी मृत्यु हो गई।

तारीकी लोगों को दण्ड

सितम्बर, 1586 में मिर्जा सुलेमान काबुल आया। वह दरबार में जाना चाहता था इसलिये कुंवर मानसिंह ने काबुल में ख्वाजा शमसुद्दीन खाफी को नियुक्त किया और स्वयं सुलेमान का पथ-प्रदर्शक बन गया। जलालाबाद के निकट पेश बुलाक में उसको ज्वर हो

गया। इस विलम्ब से धूर्त लोगों का दम्भ बढ़ गया। उन्होंने विग्राम दुर्ग का घेरा छोड़कर नये मनसूबे बनाये। महमन्द और गोरी जातियों ने पेशावर से तीराह तक खैबर के मार्ग में पत्थरों के डेरे लगा दिये और दुर्ग बना लिये। यूसुफ जाई और अन्य अफगान लोगों ने उनको सहायता दी।

तीराह 32 कोस लम्बा और 12 कोस चौड़ा पर्वतीय प्रदेश है। इसके पूर्व में पेशावर, पश्चिम में मैदान, उत्तर में बारा, और दक्षिण में कन्धार का जिला है। इसमें दुर्गम घाटियाँ हैं। कोकलताश के आने में बिलम्ब हुआ और कुंवर मानसिंह को ज्वर था इसलिये अफगानों ने कुंवर पर आक्रमण करने का विचार किया, परन्तु वह निरोग हो गया। तब उसने मीर शरीफ आमूली आदि 5-6 सरदारों और अपने पुत्र हिम्मत सिंह को सुलेमान के पास रखा और 3000 सवार साथ लेकर उसने अफरीदियों पर आक्रमण किया और फिर अली मस्जिद पहुंचा। माधोसिंह राजा भगवन्त दास की सेना लेकर अटक के पास आ मिला।

कुंवर मानसिंह ने 13 दिसम्बर को रात भर प्रयाण किया और प्रात:काल चहारचौबा की घाटी में पहुंच गया। उस समय बर्फ पड़ रही थी। दूसरे दिन अफरीदियों पर आक्रमण किया गया, फिर गोरी जाति ने आत्मसमर्पण कर दिया। जब मानसिंह घाटियों में पहुंचा तब उस पर आगे से और पीछे से हमला किया गया, परन्तु मानसिंह के साथी सरदारों ने वीरतापूर्वक युद्ध किया। तब जगत्‌सिंह को पीछे रख कर कुंवर मानसिंह अली मस्जिद पहुंचा। वहां शत्रु चारों ओर से घिर आये और स्थिति विषम हो गई। मानसिंह रणभूमि में अचल खड़ा रहा, तब अग्रसेना के वीरों ने युद्ध किया। स्थिति नाजुक हो गई थी, परन्तु फिर विजय-चिन्ह दृष्टिगत होने लगे। शत्रु हार कर घाटियों में पीछे हट गया। तब ईश्वर को धन्यवाद दिया गया और सेना अली मस्जिद पहुंच गई। दोपहर को माधोसिंह और राजा भगवन्तदास सेना लेकर आ गये तो तारीकी लोग तितर-बितर हो गये। फिर मानसिंह पेश बुलाक पहुंचा और मिर्जा सुलेमान क़ो खर्पा के मार्ग से पेशावर ले गया। इसी समय जैन खां कोका भी अपनी सेना के साथ आ गया और तारीकी लोगों के दमन के लिये और अधिक प्रयास किया जाने लगा।

***

प्रकरण 94

मिर्जा सुलेमान का दुबारा दरबार में आना

मिर्जा सुलेमान इजाजत लेकर हज्जाज गया और उसके पश्चात् उस पर क्या विपत्तियां आईं। इसका वर्णन किया जा चुका है। जब मिर्जा शाहरूख दरबार के लिये रवाना हुआ तो सुलेमान लमघानात में टिका रहा। वह चाहता था कि बदख्शां उसको मिल जाये। मिर्जा हकीम ने कुछ विचार करके उसको कुछ बदख्शी और काबुली साथी दे दिये। तब सुलेमान ने तुरन्त ही प्रयाण करके तालीकान को जीत लेने का प्रयास किया तो मुहम्मद सुलतान उजबेग ने उसका सामना किया। उजबेग के पास एक बड़ी सेना थी इसलिये मिर्जा सुलेमान ने एक पहाड़ी की किलाबन्दी की, और उसमें डट गया। वह वहां से निकल कर आक्रमण करता था जिसमें उसको कई बार सफलता हुई और उसकी सेना भी बढ़ने लगी। तब उसने बाहर निकल कर वीरतापूर्वक युद्ध किया। उसको विजय प्राप्त होने ही वाली थी कि बल्ख का सुल्तान अब्दुल मुमीन आ गया। सुलेमान ने शत्रु को दो बार पीछे हटा दिया, परन्तु तीसरी बार जोरदार लड़ाई हुई और उजबेगों ने सुलेमान के किले पर आक्रमण किया। तब सुलेमान को हार कर अफगानिस्तान की ओर भागना पड़ा। जब वह काबुल पहुंचा तो कुंवर मानसिंह भी जलालाबाद से आ गया। उसने सुलेमान के साथ आदरपूर्वक व्यवहार किया, फिर मानसिंह सुलेमान को पेशावर ले आया। वहां से जगत् सिंह आदि के साथ सुलेमान राजधानी पहुंचा तो शाहजादा सुल्तान मुराद ने दो कोस आगे आकर उसका स्वागत किया। मुराद के साथ राजा टोडरमल आदि और अबुल फजल कई अधिकारी थे। कुछ दूरी पर मिर्जा सुलेमान और मुराद घोड़े से उतरे। उन्होंने एक-दूसरे का आलिंगन किया। 24 फरवरी, 1587 को मिर्जा सुलेमान दरबार में उपस्थित हुआ।

याकूब का उत्पात शान्त हुआ

जब याकूब ने रात में आक्रमण किया और उसको विफल होकर किश्त वाड़ा की घाटियों में आना पड़ा तो कश्मीर सैनिक वायदे करके उसको बाहर ले आये और उसने नगर से 25 कोस की दूरी पर उत्पात शुरू कर दिया। शाही सेना के लोग उस शीत प्रदेश में लड़ते-लड़ते तंग आ चुके थे इसलिये कासिम खां स्वयं सामना करने के लिये रवाना हुआ और फतेह खां को नगर में रखा गया। आगे बढ़कर कासिम खां ने सुना कि याकूब नगर पर हमला करने के लिए चला गया है। तब कासिम खां ने सेना का एक भाग नगर की ओर भेजा। याकूब नगर से 4 कोस की दूरी पर घात में बैठा हुआ था। शाही सेना आगे बढ़ गई। शत्रु ने रात्रि में आक्रमण किया, परन्तु वह विफल हुआ। उनमें फूट भी पड़ गई थी और शाही सेना बड़ी दृढ़ थी, इसलिये शत्रुओं ने शाही अफ़सरों के पास संधि-प्रस्ताव भेजा। साथ ही कुछ बड़े-बड़े कश्मीरी सैनिक अफ़सरों ने शाही सेनापति के पास सन्देश

भेजा कि हम उपस्थित होना चाहते हैं। वे लोग अपना पक्ष छोड़कर एक पहाड़ी पर चले गये थे। अगले दिन वे लोग शाही सेनापति से मिले तो उसने उनको दरबार में भेज दिया और उत्पात शान्त हो गया। 2 मार्च, 1587 को उनका कृपापूर्वक स्वागत हुआ। उनमें सैयद मुबारक पुंज, हैदर अली आदि 16 सरदार थे। ये लोग शाही सेना से डट कर लड़े थे तथापि अकबर ने उनके साथ अच्छा बर्ताव किया।

सैयद अब्दुल्ला और मीरजादा अली खां ने पूर्वी जिलों में अच्छी सेवा नहीं की थी इसलिये उनको कश्मीर भेजा गया ताकि वे अच्छा काम दिखा सकें।

अकबर को यह विचार हुआ कि प्रत्येक दरबारी को कुछ द्रव्य पुण्यार्थ देना चाहिये इसलिये उसने आदेश दिया कि प्रत्येक दरबारी प्रतिवर्ष एक दाम या एक रुपया या एक मोहर किसी सत् कार्य के लिये दें और जितने वर्ष की उसकी आयु हो उतनी मुद्रायें प्रथम बार दें। इससे कोई तालाब, सराय या बाग बनाया जाये। इस आवेदन का उचित रूप से पालन हुआ।

***

प्रकरण 95

---

32 वें इलाही संवत् का आरम्भ

इस वर्ष का आरम्भ 11 मार्च, 1587 को हुआ। 16 तारीख को खानखाना और अजदुद्दौला, गुजरात से आये और बादशाह से मिले। उसी दिन मिर्जा यूसुफ खां, बिहार से आया। अकबर शाही तख्त पर बैठा। उसके आज्ञाकारी अन्य बन्धु-बान्धव और बड़े-बड़े अमीर जहां-तहां बैठ गये। लोगों की इच्छायें पूरी की गईं। प्रात:काल बादशाह ने शाहबाज खां के बाग में जाकर ईश्वर को धन्यवाद दिया।

अकबर को मालूम हुआ कि जाबुलिस्तान में राजपूत लोग लोगों को बड़े सताते हैं और कुंवर मानसिंह उनको नहीं रोकता। उसको ठंडे मुल्क में रहना भी पसन्द नहीं है इसलिये उसको जाबुलिस्तान से हटा कर तारीकियों को दण्ड देने के लिये नियत किया गया और पूर्वी जिलों में उसको जागीर दी गई। कोकलताश को आदेश हुआ कि वह बेग ग्राम से काबुल पहुंचे और सतर्क होकर न्यायपूर्वक वहां का शासन करे।

***

प्रकरण 96

शाहजादा का विवाह, राजा टोडरमल आहत आदि

शाहजादा सुल्तान मुराद का विवाह

अब शाहजादा मुराद 17 वर्ष का हो गया था, इसलिये अकबर ने उसके विवाह की ओर ध्यान दिया। उसी समय अकबर से निवेदन किया गया कि खान आजिम मिर्जा कोका चाहता है कि उसकी पुत्री का भाग्य जगे। अकबर ने स्वीकृति दे दी और शाही दरबारियों ने सब व्यवस्था की तो 5 मई, 1587 को मरियम मकानी के महल पर अकबर की विद्यमानता में मुराद का विवाह हुआ।

काबुल का मार्ग निष्कंटक

काबुल और सिन्धु नदी के बीच में निवास करने वाले अफगान लोग यात्रियों को सताया करते थे इसलिये अकबर ने यह विचार किया कि उस मार्ग पर सरायें बना दी जायें और प्रत्येक सराय में वीर पुरुष नियुक्त किये जायें जिससे यात्रियों की रक्षा हो सके। तब खुर्द काबूल से अटक बनारस तक 10 सरायें बनाकर प्रत्येक सराय में एक योग्य और वीर पुरुष को देखरेख के लिये नियुक्त कर दिया। कोकलताश के पास एक बड़ी धनराशि इस निमित्त भेजी गई कि यह इन लोगों को बांट दी जाये और मिर्जा कोकलताश इस कार्य को देखते रहे। इस व्यवस्था से काबुल का मार्ग निष्कंटक हो गया। इसी समय गोरी जाति के लोगों ने भी काबुल के फौजदार की शरण ली तो उनको क्षमा कर दिया गया। पहले उनको जलालाबाद के पास और फिर पेशावर के पास बसायाा गया।

चान्द्र तुला

1 जून, 1587 को अकबर की चान्द्र तुला की गई और उसको भिन्न-भिन्न प्रकार की 8 चीजों से तौला गया। गरीब लोगों की इच्छायें पूर्ण हुईं। इसी समय भक्कर से सादिक खां आया।

राजा टोडरमल आहत

28 जुलाई, 1587 को राजा टोडरमल महल से अपने निवास स्थान को जा रहा था तो एक आदमी ने जो घात में बैठा हुआ था, उस पर तलवार का वार किया। राजा के साथियों ने उसको पकड़ कर मार डाला। दूरदर्शी दरबारियों ने इस मामले की जांच की तो विदित

हुआ कि किसी दुष्ट खत्री ने अवसर देखकर बदला लेना चाहा था। उसके साथियों को भी पकड़ लिया गया और सब को दण्ड मिला। राजा को स्वास्थ्य लाभ हो गया।

***

प्रकरण 97

मतलिब खां के नेतृत्व में सेना भेजी गई

जलाला तारीकी की दुर्दशा

मानसिंह पर्वतीय घाटियों में लड़कर विजय प्राप्त कर चुका था। अब दुबारा उस प्रदेश में जाने को उसका मन नहीं चाहता था इसलिये वह खैबर की घाटी के निकट जमरूद में अपना समय व्यतीत किया करता था। अकबर तारीकी का उन्मूलन करना चाहता था इसलिये वह बंगस के मार्ग से उसने दूसरी सेना पहाड़ियों में भेजी और मानसिंह को आदेश दिया कि वह बिगग्राम से रवाना हो। 18 अप्रैल को मतलिब खां के नेतृत्व में बेग नूरी खां आदि 20 बड़े-बड़े अफ़सरों को और अन्य वीर पुरुषों को रवाना किया गया। जब यह सेना समबाला के समीप सिन्धु नदी पर पहुंची तो नियाजी जाति के मुखिया लोग उसमें आ मिले। फिर जमाल तारीक भी इस सेना में शामिल हो गया तो उसके बतलाये हुए मार्ग से सेना ने प्रयाण किया तो मालूम हुआ कि जलाला लूचक से बाहर निकल कर दरसमन्द से तीन कोस के अन्तर पर आ पहुंचा है और रात्रि में आक्रमण करने का विचार कर रहा है। शाही सेना दर-समन्द पर दूसरे दिन पहुंच गई तो शत्रु ने अगस्त, 1587 के आरम्भ में दोपहर को आक्रमण किया। उनके साथ एक हजार सवार और पन्द्रह हजार प्यादे थे। उन्होंने शाही सेना के अग्रभाग से युद्ध किया। इसी बीच में सहायक सेना आ गई तो शत्रु की अग्रसेना को पीछे धकेल दिया गया। जलाला वापस हट गया, परन्तु दूसरे मार्ग से शिविर के पास आ पहुंचा। तब बड़ी लड़ाई हुई। शत्रु के 550 आदमी धराशायी हो गये। 1000 लड़ते हुए मारे गये। जलाला ने पहाड़ियों में शरण ली। शाही सेना का कोई प्रसिद्ध आदमी नहीं मारा गया। जलाला का पीछा किया गया और उसके मकान को लूटकर जला दिया गया। अफ्रीदी और ओरक जाई लोग उसको शरण दिया करते थे। अब वे अधीन हो गये। शाही सेना वापस बंगस लौट आई। मतलिब खां पागल हो गया और उसको शाही दरबार में भेज दिया गया।

मिर्जा यूसुफ खां को कश्मीर भेजा गया

कासिम खां ने अपनी योग्यता और परिश्रम से कश्मीर को जीत लिया था और वहां के कई विद्रोहियों को दरबार में भेजा दिया था। उसने कश्मीर में अच्छा शासन जमा दिया और शत्रु को दबा दिया था। परन्तु फिर वह कश्मीरियों को सताने लगा और उनका धन निचोड़ने लगा। तब लोगों ने तंग आकर याकूब को एकान्त से बाहर निकाला तो नगर से 23 कोस की दूरी पर जनीर में अच्छी बड़ी खटपट हुई, तब कासिम खां वहां पहुंचा तो याकूब गुप्त मार्ग से नगर की ओर भाग गया। शाही अफसरों ने उसका पीछा किया। उसने बहारह की पहाड़ी में शरण ली थी जो नगर से 3 कोस दूर है। शाही अफ़सर याकूब को न हरा सके, न पकड़ सके और उसकी शक्ति भी बढ़ गई। तब कासिम खां फिर मैदान में आया और प्रतिदिन लड़ाई होने लगी। फिर कासिम खां कुछ वीर सैनिकों के साथ आगे बढ़े तो बड़ी लड़ाई हुई जिसमें शत्रु का नेता फतह अली एक बाण से मारा गया, शत्रु लोग तितर-बितर हो गये और शाही लोग विजयी होकर बड़े हर्ष के साथ लौटे। फिर याकूब समस चक से मिल गया और नगर के निकट उत्पात करने लगा। दोनों ने बहुत-से सैनिकों के साथ एक तालाब पर डेरे लगाये और वहां से शाही सेना पर हमले करने लगे। तब कासिम खां ने तंग आकर वापस लौटने की इजाजत मांगी तो अकबर ने मिर्जा यूसुफ खां को सेनापति बनाकर भेज दिया और उसके साथ जगन्नाथ, हुसेन बेग आदि कई सैनिक अधिकारी भेजे और आदेश दिया कि जब शत्रु का दमन हो जाये तो कासिम खां दरबार में लौट आये। जब कश्मीरियों ने सुना कि शाही सेना आ रही है तो उन्होंने कुछ आदमियों को भेज कर मार्ग रोकने का प्रयास किया। तब मिर्जा यूसुफ खां ने शत्रु से मेल-जोल की बातें करने के लिये कुछ अफ़सर भेजे। जब यूसुफ आगे बढ़ा तो याकूब और समसचक मैदान से हट गये। यूसुफ ने कासिम खां को दरबार में जाने की इजाजत दे दी और गुप्तरूप से जगन्नाथ को भी विदा कर दिया। फिर उसने कुछ अधिकारियों को समसचक के विरुद्ध भेजा। उन्होंने उसको ऐसा हराया कि वह फिर नहीं उठा। मिर्जा यूसुफ ने उसको शाही दरबार में भेज दिया।

सुल्तान खुसरू का जन्म

1587 के अगस्त के मध्य में लाहौर नगर में राजा भगवन्तदास की पुत्री से शाहजादा सुल्तान सलीम को पुत्र जन्म हुआ। अकबर ने उसका नाम सुल्तान खुसरू रखा।

इसी वर्ष गुजरात प्रान्त का उपद्रव शान्त हो गया।

जैन खां कोका को स्वाद और बाजौर छीनने के लिये भेजा

यद्यपि यूसुफ जाई लोगों को यथोचित दण्ड मिल चुका था, परन्तु फिर भी वे लूटमार किया करते थे। जब जलाला तारीकी विपत्ति में फंस गया तो वह यूसुफ जाई लोगों के

पास पहुंचा और उन्होंने उसको अपना लिया। तब अकबर ने आदेश दिया कि जैन खां कोका अपने अफ़सरों के साथ स्वाद और बाजौर पहुंचे। जमरूद और बंगस की सेना को आदेश दिया कि तारीकियों के नेता को पकड़ने में पूरा सहयोग दे। शाही दरबार से कुछ लोग स्वाद भेजे गये, जिससे जहां भी जलाला मिले वहीं पकड़ लिया जाये। जगन्नाथ को भी कोकलताश के पास भेज दिया। तारीकी और यूसुफ जाई लोग लड़ने के लिये तैयार हो गये। तब शाही सेना एक अज्ञात मार्ग से बाजौर में घुसी तो लड़ाई हुई। शत्रु के बहुत-से आदमी मारे गये परन्तु जलाला भाग कर तीरा चला गया।

राजा मधुकर को दण्ड

राजा मधुकर पहाड़ी देश का निवासी था। जब उसको दक्खिन की सेना के साथ जाने का ओदश हुआ तो उसने नहीं माना। उसने क्षमा भी नहीं मांगी और विद्रोह करने लगा। तब शाहबुद्दीन अहमद खां और अन्य जागीरदारों को उसे दबाने के लिये भेजा गया। वह ओरछा का निवासी था। जब शाही अधिकारी इस नगर से 4 कोस के अन्दर पहुंच गये तो उसने आकर अधीनता प्रकट की, जो राजा आशकरण और राजा जगमन के कहने पर मान ली गई। फिर वह शाही सेनापति के पास आया, परन्तु इसके बाद ही वह पुनः उत्पात करने लग गया। तब उसका देश लूट लिया गया, परन्तु खाद्य-सामग्री की कमी के कारण शाही सेना वहां नहीं टिक सकी और उन्होंने कजवा के दुर्ग पर आक्रमण किया। राजा मधुकर के पुत्र इन्द्रजीत और सतराय ने तथा उसके पौत्र हरदेव ने इस दुर्ग को दृढ़ कर लिया था। उन्होंने बाहर आकर घाटियों में लड़ाई लड़ी और हार गये। फिर एक दिन मधुकर के भतीजे रघुदास ने लड़ाई की। इसमें वह मारा गया और शाही सेनानायकों की विजय हुई, फिर एक मास तक दुर्ग को घेरा। अन्त में शत्रु विफल हो गया और भाग गया।

सिहुन्दा नामक कस्बे के रहने वाले एक ब्राह्मण ने यह प्रकट किया कि मैं राजा बीरबल हूं। मैं आहत होकर यूसुफ जाई लोगों में से भाग आया था और अब मोक्ष की सामग्री जुटाने में अपना समय व्यतीत कर रहा हूं। उसकी आकृति बीरबल से मिलती-जुलती थी इसलिये भोलेभाले लोगों ने उसकी बात पर विश्वास कर लिया। दरबार के चतुर लोग इस बात पर सहमत थे कि वह बीरबल नहीं है, फिर भी तथ्य का पता लगाने के लिये लोग भेजे गये। उधर के लोग उसको दरबार में भेज रहे थे, परन्तु वह दरबार में नहीं पहुंच सका और पहले ही मर गया।

20 फरवरी, 1588 को कासिम खां कश्मीर से दरबार में आया। अली शेर माकरी और कश्मीर के अन्य मुख लोग ही दरबार में उपस्थित हुए।

***

प्रकरण 98

राज्यारोहण से 33 वें वर्ष का आरम्भ

इस वर्ष का आरम्भ रविवार, 11 मार्च, 1588 को हुआ। इसके आरम्भ में शाहजादा सुल्तान दनियाल का सुल्तान ख्वाजा की पुत्री से विवाह किया गया। विवाह विधि 30 मई, 1588 को मरियम मकानी के महल पर सम्पन्न हुआ।

उसी दिन अकबर की चान्द्र तुला की गई।

शादिक खां की सहायतार्थ सेना भेजी गई। जब जैन खां कोका ने स्वाद का कार्य अपने हाथ में लिया था तो शादिक को उसकी सहायतार्थ तीराह भेजा गया। उसके साथ तीन और सेनानायक रवाना किये गये। इसी वर्ष यह आदेश दिया गया कि सारे साम्राज्य में केवल इलाही गज का उपयोग किया जाये। इसका वर्णन आईने अकबरी में किया गया है।

इसी वर्ष अगस्त मास में खान-ए-आजम की पुत्री से सुल्तान मुराद के पुत्र उत्पन्न हुआ तो ईश्वर को धन्यवाद दिया गया और बादशाह ने स्वयं उसका नाम रखा।

शाहबाज खां का दरबार में आना

शाहबाज खां बिहार से बंगाल गया था। जब वह दरबार में आया तो उसको उपस्थित नहीं होने दिया, परन्तु जब यह प्रकट हुआ कि उसको बंगाल भेजते समय यह आदेश दिया गया था कि जब उस देश में शान्ति स्थापित हो जाये तो वह दरबार में आ सकता है, तो उसको इजाजत दे दी गई। राजा टोडरमल और शाहबाज खां में कुछ खटपट हो गई थी तो तीन अफसरों को इसकी जांच करने के लिये नियुक्त किया गया जिनमें अबुल फजल भी एक था। जांच से मालूम हुआ कि दोनों ही की भूल थी।

तारीख 1 आबान को अकबर की सौर तुला हुई। प्रथानुसार उसको 11 पदार्थों से तौला गया। तब उत्सव मनाया गया और निर्धनों की इच्छा पूरी की गई।

गुजरात का उपद्रव शान्त हुआ

खंगार के दो भतीजे पंचानन और जैसा ने जाम के चाचा मिहरावन और मुजफ्फर अरगून से मिलकर उपद्रव खड़ा कर दिया और राधनपुर नामक कस्बे को घेर लिया, तब राधन खां बलूचे और अन्य वीर लोगों ने उस स्थान की रक्षा करने का प्रयत्न किया। सैयद कासिम और अन्य लोग सहायतार्थ आये। इसी समय यह भी खबर फैल गई कि मुजफ्फर गुजराती और काठियावाड़ के लोगों ने उपद्रव कर दिया है और अन्य कई बड़े-बड़े लोग उनके साथ हो गये हैं। तब नौरंग खां बीरम गांव पहुंचा, जहां विद्रोही लोग इकट्ठे हो रहे थे और कुलीच खां अहमदाबाद में दृढ़तापूर्वक डटा रहा। उसके पास केवल गिनती के लोग

थे। जब शाही सेना आई तो विद्रोही लोग अपना सामान छोड़कर इधर-उधर भाग गये। शाही सेना ने विद्रोहियों के गांव लूट लिये। उधर के शासक ने अधीनता प्रकट की। फिर शाही सेना ने भयंकर रन को एक स्थान पर पार कर लिया। विद्रोही लोग तो हाथ नहीं आये परन्तु उनके देश को लूट लिया। फिर शाही सेना मौरबी पहुंची और वहां भी उसने लूटमार की। तब मौरबी के लोगों ने आत्मसमर्पण कर दिया।

बिहारजी की मृत्यु

बिहारजी की भूमि गुजरात के अधीन है। इस देश का नाम बगलाना है और वहां का राजा बिहारजी कहलाता है। उसके भाइयों ने उत्पात खड़ा कर दिया था और उसने मूलर नामक दृढ़ दुर्ग में शरण ले ली थी। वह बादशाह का स्वामिभक्त सेवक था इसलिये उसकी सहायता के लिए आलतून कुलीच, ख्वाजा, रफी और अन्य लोगों को भेजा गया। परन्तु इनके पहुंचने से पहले बिहारजी को उसके शत्रुओं ने छल से मार दिया।

गुजरात के उपद्रव की शान्ति

अमीन खां गोरी के छोटे पुत्र फतह खां ने अपने बाप से युद्ध किया और मुजफ्फर खां उससे मिल गया। अमीन खां स्थिति पर काबू नहीं कर सका इसलिये पीछे हट गया और उसने शाही सेवकों से सहायता मांगी। तब नौरंग खां आदि सात बड़े-बड़े अफ़सर और कुछ बारहा के सैयद उसकी सहायता के लिये गये। मुजफ्फर खां पहाड़ियों में चला गया और अमीन खां गोरी ने अपने पिता फतह खां से संधि कर ली। सब उत्पात शान्त हो गया और कुलीच खां को दरबार में बुला लिया गया।

तारीकियों को भगा दिया

यह लिखा जा चुका है कि तारीकियों को हराने के लिये सादिक खां को नियुक्त किया गया था। इसके बाद शाहम और अन्य लोग भी नियुक्त किये गये। विभिन्न स्थानों पर योग्य आदमी नियुक्त कर दिये गये और शत्रु पर हमला किया। फिर सादिक खां ने संधि की बात शुरू की और अफरीदियों और उर्कजाइयों को समझा-बुझा कर आज्ञाकारी बना दिया। विद्रोहियों के नेता मुल्ला इब्राहीम की बड़ी दुर्गति हुई। अन्त में वह भाग कर तुरान चला गया। 4 अक्टूबर, 1588 को अफगानों ने उसके कुटुम्ब को शाही सेवकों के सुपुर्द कर दिया। अफरीदियों और उर्कजाइयों ने अपने कुछ लोग जमानत के रूप में शाही अफ़सरों के सुपुर्द कर दिये और खैबर की घाटी में शान्ति की रक्षा करने का वचन दिया।

स्वाद की विजय

जब जैन कोका बाजौर पहुंचा तो उसने कुछ स्थानों पर दुर्ग बना लिये। विद्रोही लोग रात में बाहर निकल कर अन्न ले जाया करते थे, परन्तु कोका ने जहां-तहां घाटियों में अपने

आदमी बिठा दिये थे इसलिये जब अफगान रात में आते थे तो उनको आगे और पीछे से दबा दिया जाता था। इस प्रकार 8 मास तक लड़ाई होती रही और बहुत-से अफगान मारे गये। फिर कोकलताश ने जगन्नाथ और आसफ खां को बुलाया और स्वाद की ओर प्रयाण किया। इस देश की सीमा पर पजकोरा नदी है। उसके तट पर कोकलताश ने एक दुर्ग बना लिया और 19 अक्टूबर, 1588 को शाही सेना ने स्वाद में प्रवेश किया। अफगान लोग डरकर वापस हट गये, परन्तु उनमें से कुछ खूब लड़े। कोका आगे बढ़ा और उसने चकदरा, मलकन्द और सरोबी में दुर्ग बनवाकर उनमें अपने आदमी रख दिए। तब अफगानों के दो सरदारों ने पर्वतों में से निकल कर सरोबी दुर्ग को घेर लिया। खूब लड़ाई हुई, परन्तु दुर्ग शत्रु के हाथ में नहीं गया। इसके बाद आसफ खां छुट्टी लेकर दरबार में जा रहा था और उसके पीछे कुछ सेवक थे। उन्होंने जाते हुए जोर से बाजे बजाये तो शत्रु डरकर अपना सामान छोड़कर भाग गये।

कालू खां को दण्ड

कालू खां पर अकबर ने बड़ी कृपा की थी परन्तु एक दिन वह भाग गया। तब अफगानों ने उसको अपना नेता बना लिया। कोकलताश ने रात में ही प्रयाण किया और उसकी अग्रसेना ने जोर से बाजे बजाये, तो अफगान भाग गये, परन्तु 60 से अधिक अफगान मारे गये। और अफगान सरदार अपने-अपने सैनिक लेकर लड़ने के लिये आ गये, उनमें से 400 आदमी मारे गये। तब अफगानों की शक्ति कुछ भंग हो गई।

कुमाऊ के राजा रुद्र ने अधीनता प्रकट की

राजा रुद्र भारत के बड़े जमीनदारों में माना जाता है। उसके पास बड़ी राजशक्ति थी और उसने अपने पूर्वजों की वीरता की कहानियां सुनी थीं इसलिये वह दरबार में नहीं आया था, परन्तु बादशाह के प्रति आदर प्रकट करने के लिये वह कुछ भेंटें भेजा करता था। फिर मथुरादास सहगल बरेली में राजा रुद्र से मिला और उसने राजा को समझाया कि दरबार में जाकर मेल कर लेना चाहिये तो राजा ने कहा, ''मैं तो बड़े अर्से से यही चाहता हूं परन्तु मुझे विश्वास नहीं होता कि आपके द्वारा शाही कृपा प्राप्त हो जायेगी। यदि राजा टोडरमल मुझ को अपने साथ ले जायें तो मैं दरबार में चल सकता हूं।'' तब राजा टोडरमल ने अपने पुत्र कल्याणदास को भेजा और राजा रुद्र उसके साथ दरबार में गया।

यूसुफ जाईयों को दण्ड

यूसुफ जाई लोग उस दुर्ग से बड़े व्याकुल थे जो घाटी के ऊपर बनाया गया था। अब उन्होंने मिलकर उस पर आक्रमण किया तो प्रातः से सायं तक जोर की लड़ाई हुई। अन्त में बहुत-से शत्रु मारे गये और शाही सेवकों को विजय प्राप्त हुई। फिर दुर्ग का निर्माण पूरा हो गया जिससे विद्रोही लोग दब गये।

जमीदारों को छूट

वस्तुएं और अन्न इतने सस्ते हो गये थे कि कुछ सूबों के कृषक लोग भूमिकर नहीं चुका सकते थे इसलिये आगरा और दिल्ली के सूबों में रबी की फसल पर षष्ठांश भूमिकर छोड़ा गया और खरीफ की फसल पर इन दोनों प्रान्तों में और अवध में चतुर्थांश भूमि कर माफ किया गया। इससे शाही कोष को लगभग 20 करोड़ दाम की क्षति हुई।

इसी समय जैन खां कोका आया। जब स्वाद और बाजौर में शान्ति हो गई तो कोकलताश को दरबार में बुला लिया गया और सादिक को आदेश दिया गया था कि वह उधर जाकर शेष विद्रोहियों का दमन करे तो कोकलताश दरबार में आ गया।

सालीह का विद्रोह

जब वजीर की मृत्यु हो गई तो शाहबाज ने उसके मातहत सालीह के सुपुर्द कर दिये। यह वजीर का पुत्र था। जब शाहबाज खां दरबार में चला गया तो सालीह ने उपद्रव शुरू कर दिया। परन्तु तुरन्त ही उसके दमन के लिये आदेश दे दिया गया। सालीह ने अनेक युक्तियां कीं परन्तु कोई सफल नहीं हुई। इसी बीच में स्थानीय शाही अफ़सर परस्पर झगड़ने लगे। मीर मुराद जो उसको दबाने के लिये भेजा गया था, परेशान हो गया। सालीह ने बहुत-से सैनिक एकत्र कर लिये और मीर मुराद पर आक्रमण किया तो मुराद फतेहपुर हंसवा के दुर्ग में चला गया। सालीह ने दुर्ग घेर लिया और आस-पास के इलाके को लूटना शुरू कर दिया। गांव को जला दिया और लूट लिया परन्तु आस-पास के जागीरदार दुर्ग की रक्षा के लिये आ गये। विद्रोहियों के मनोरथ असफल हो गये और सालीह को बांध कर दरबार में भेज दिया गया। उसको बादशाह के सामने प्रस्तुत किया गया तो उसे मृत्युदण्ड देने के बजाय कारागार में रखवा दिया गया।

11 फरवरी, 1589 को बादशाह ने लेखक के भाई शेख अबुल फैजी की प्रतिष्ठा बढ़ाई। वह लेखक से आयु और ज्ञान दोनों में बडा़ था और उसको मलिकुश सआरा की उपाधि थी। वह काव्य के समस्त अंगों से परिचित था और फारसी तथा अरबी दोनों भाषायें लिखने में बड़ा निपुण था। वह लिखता क्या था? मानों मोतियों की वर्षा करता था।

***

प्रकरण 99

शासक का 34वां वर्ष

11 मार्च, 1589 को शासन का 34वां वर्ष शुरू हुआ। सैयद खां की पुत्री से शाहजादा सलीम को एक लड़की उत्पन्न हुई तो उत्सव मनाया गया और बादशाह ने उस बालिका का नाम अफ्फात बानू रखा।

मुहिब्ब अली को मुलतान भेजा

बादशाह चाहता था कि मुहिब्ब अली रोहताश से दरबार में आये। उसकी जागीर राजा भगवन्तदास को दे दी गई थी और उसको मुलतान दिया गया था। जब यह आदेश उसको मिला तो वह सहर्ष दरबार के लिये रवाना हो गया। जब वह दरबार में पहुंचा तो उसको अनेक प्रकार की कृपाएं प्राप्त हुईं।

मियां तानसेन की मृत्यु

26 अप्रैल, 1589 को मियां तानसेन की मृत्यु हो गई। बादशाह के आदेश से सारे गायक उसके जनाजे के साथ उसको दफनाने गये और मार्ग में गाना गाते गये। ऐसा जान पड़ता था मानों विवाह हो रहा हो। उसकी मृत्यु से उस युग का आनन्द समाप्त हो गया। बादशाह ने कहा कि तानसेन की मृत्यु से संगीत की मृत्यु हो गई। ऐसा मालूम होता था कि 1000 वर्ष में तानसेन की बराबरी का कोई मधुर गायक और कलाविद उत्पन्न नहीं हुआ।

***

प्रकरण 100

अकबर का कश्मीर को प्रयाण

अकबर को रमणीय और सुखद स्थानों को देखने का शौक था इसलिये 16 अरदी बिहिस्त को उसने रावी नदी को पार करके सराय माधोसिंह के निकट मुकाम किया। उसने एक दिन में एक कोस और बारह बांस की यात्रा की थी। बादशाह ने आदेश दिया था कि 3000 संग तरास सुरंग लगाने वाले, चट्टान तोड़ने वाले और 2000 बेलदार कासिम खां के अधीन आगे जायें और ऊंचे-नीचे मार्गों को ठीक करें। इसी समय बादशाह ने श्यालकोट,

जैन कोका को और सरकार सम्बल कुलीच खां को तथा मुलतान मुहिव्ब अली खां को जगीर में दिये। शाहबाज खां को सेना का कोतवाल नियुक्त किया। राजा भगवन्तदास, राजा टोडरमल और कुलीच खां को आदेश दिया कि वे लाहौर में ठहरें और उन्हीं की अनुमति से सब काम हो। 20 तारीख को बादशाह ने 2 कोस और 50 बांस यात्रा करके शाहदरा में मुकाम किया। 4 खुर्दाद को उसने 4 कोस 41 बांस यात्रा की और जोरा नामक गांव के पास डेरे लगवाये। वहां एक दिन ठहर कर वह सवा तीन कोस और 72 बांस चला और अमीनाबाद ठहरा। यहां रदोर के राजा ने अपने घर जाने की इजाजत मांगी तो उसको बढ़िया खिल्लत और 101 घोड़े देकर बिदा किया और उसकी जागीर में और परगने बढ़ा दिये गये। एक दिन पश्चात् बादशाह ने सवा चार कोस की यात्रा करके सीताराम की भूमि पर डेरे लगवाये और प्रातःकाल प्रयाण करके पौने पांच कोस तथा 35 बांस चलकर वह तलवंडी ठहरा। फिर एक दिन बाद उसने सुधीरा पार करके चिनाव नदी के तट पर अपने डेरे लगवाये। उस दिन छह कोस और 41 बांस का सफर किया गया था। उसी दिन बादशाह की चान्द्र तुला की गई और उसको 8 पदार्थों से तौला गया। 31 तारीख को अकबर ने नदी पार करके आदेश दिया कि सैनिक लोग पुल पर से आयें। यह यात्रा सवा कोस और 51 बांस की थी। दो दिन बाद अकबर गुनाचोर पहुंचा जो श्यालकोट में है। यह मंजिल 4 कोस और 5 बांस की थी। वहां बादशाह से लोगों ने निवेदन किया कि सादिक का कारिन्दा अल्लाह बर्दी, हानू और राईज का सिकदार अत्याचार करते हैं और निर्बलों को सताते हैं। तब आदेश दिया गया कि अजदुद्दौला, शाहबाज और कासिम बेग-मीर-आदिल उसका फैसला करें। तुरन्त ही उसका फैसला कर दिया गया और उसको अपने कर्मों का फल मिल गया अर्थात् उसका वध करवा दिया गया। अगले दिन बादशाह ने साढ़े चार कोस और 51 बांस की यात्रा करके श्यालकोट के इलाके में डीकरी पर डेरे लगवाये। दो दिन बाद वह साढ़े चार कोस और 60 बांस पार करके जयपुर खेड़ी ठहरा जो भीमबर का एक गांव है।

9 खुर्दाद (19 मई, 1589) को वह कुछ सेवकों को साथ लेकर भीमबर की घाटी देखने गया, जिसको कश्मीरी लोग काजीवार कहते हैं और पहाड़ी लोग अदीदात कहते हैं। वह उसके शिखर पर चढ़ा। वहां उसको एकदम विचार हुआ कि अब थोड़े-से आदमियों को साथ लेकर आगे जायेगा। शाहजादा सुल्तान मुराद को डेरों में भेज दिया गया और आदेश दिया कि शिविर में व्यवस्था की रक्षा और महिलाओं की देखरेख करें। फरीद बख्शी बेगी को घाटी में नियुक्त किया और उसे आदेश दिया कि उन लोगों के अतिरिक्त जिन लोगों के नाम उसको बतला दिये थे, किसी को पीछे-पीछे नहीं आने दिया जाये। यहां से आगे अकबर कहीं घोड़े पर और कहीं पैदल चला और उसने नीचे और ऊंचे स्थान पार किये। दोपहर को वह कुछ समय के लिये किसी वृक्ष के नीचे ठहर जाया करता था। उसके साथ खानखाना, जैन कोका, अजदुद्दौला, हकीम अब्दुल फतह, जगन्नाथ, मीर सरीफ आमूली, काजी हसन, नूर कुलीच, रामदास, लेखक अबुल फजल और कुछ युवा सवार थे।

घाटी में प्रवेश करते समय उसने बुरहानमुल्क को गम्भीर सलाह देकर दक्षिण की विजय के लिये भेजा। बुरहानुलमुल्क के बड़े भाई मुर्तजा निजामुलमुल्क के समय में किसानों और सैनिकों को बड़ी शान्ति थी। वह एक फकीर की भांति रहता था परन्तु उसने न्याय करने में कोई कमी नहीं की। इसलिये बादशाह ने बुरहानुलमुल्क के साथ कोई सेना नहीं भेजी। जब मुर्तजा निजामुलमुल्क की मृत्यु हो गई और दक्षिण में उत्पात होने लगे तो बादशाह ने बुरहानुलमुल्क को तीराह से वापस बुलाया। बादशाह उसको दक्षिण भेजना चाहता था। उस देश का विवरण इस प्रकार है—

ईरान के शासक शाह तहमाश्प ने शाह कुली गूरजी को कुछ भेंटे लेकर भेजा। गूरजी ने दक्षिण में बड़ा प्रभाव जमा लिया और उसको सलावत खां की उपाधि प्राप्त हो गई। जब मुर्तजा निजामुलमुल्क विरक्त और दुःखी होकर एकान्त में रहा करता था और उसके राज्य का वित्तीय राजनैतिक काम बिगड़ने लगा था तो उसको सलावत खां ने ही संभाला था। निजामुलमुल्क किसी से भी नहीं मिलता था। इसलिये राज्य में गड़बड़ होने लगी। तब निजामुलमुल्क ने बाहर के लोगों को लिखा कि सलावत को पकड़ कर एक दुर्ग में बन्द कर दिया जाये। तब सलावत स्वयं ही एक दुर्ग में चला गया। लोगों ने कहा कि ऐसे बेसमझ व्यक्ति के आदेश से वह स्वयं ही क्यों कैदी बन गया परन्तु उसने कहा कि मैं तो अपने स्वामी की आज्ञा मानूंगा। तब एक दुष्चरित्र स्त्री ने पागल निजामुलमुल्क पर प्रभाव जमा लिया और उसका भाई ईस्माइल प्रशासन का संचालन करने लगा। फिर मुहम्मद खां सब्जवारी का प्रभाव जम गया और उसने पागल निजामुलमुल्क के पुत्र को दौलताबाद के दुर्ग से निकाल कर गद्दी पर बैठा दिया, जिसने अपने पागल बाप का वध कर दिया। तब राज्य के मुख्य लोगों में आपसी झगड़े शुरू हो गये। फिर मिर्जा खां ने मौका देखकर उस नये लड़के को अहमद नगर में कैद कर दिया और ईस्माईल बुरहानुलमुल्क को गद्दी पर बैठा दिया। ईस्माईल खां दक्षिणी ने सेना इकट्ठी करके अहमदनगर के दुर्ग को घेर लिया। पितृघातक कैदी मीरान हुसेन का सिर काट कर फेंक दिया, तब लोग दुर्ग में घुस गये और मिर्जा खां भाग गया, परन्तु उसको मार्ग में ही पकड़ लिया गया। ऐसी स्थिति में अकबर ने बुरहानुलमुल्क को दक्षिण में भेजा।

फिर बादशाह ने राजोरी से सवा तीन कोस और 19 बांस कूच किया। शाही डेरा राजोरी इलाके के लाहा स्थान के निकट था। अगले दिन पौने दो कोस चलकर बादशाह ने थाना में विश्राम किया जो रत्नपंजाल नामक घाटी के नीचे एक गांव है। यहीं से कश्मीरी बोली शुरू हो जाती है। बादशाह ने कहा कि एक देश दूसरे देश से पर्वतों, नदियों, रेतीले मैदानों और भाषा के द्वारा विभक्त होता है। पहाड़ियों, नदियों और रेतीले मैदानों की दृष्टि से भीमबार कश्मीर की सीमा है और भाषा की दृष्टि से थाना है। यहां पर नायक लोग बादशाह के पास आये, उनका नेता बहराम नायक था। मुहम्मद भट्ट और अन्य कश्मीरी नेता भी दरबार में उपस्थित हुए। फिर अकबर ने रत्नपंजाल को पार किया और बहराम

गल्ला पहुंचा। यह सफर पौने तीन कोस और 5 बांस का था। यह स्थान बड़ा रमणीय और स्वास्थ्यप्रद है। यहां बादशाह का कोतल घोड़ा फिसल पड़ा और उसका एक चिन्ह भी नहीं मिला। उस दिन मुहम्मद यूसुफ खां ने कश्मीर से आकर सिजदा किया। उसके अतिरिक्त कश्मीर के और बड़े-बड़े लोग आये। अगले दिन दो कोस और 55 बांस चलकर बादशाह ने पुसयाना पर डेरे लगवाये। यह बड़ा सुन्दर स्थान है। इससे आगे दो कोस तक बर्फ जमी हुई थी। लोग आगे बढ़ने से घबराये, परन्तु बादशाह ने उन्हें प्रोत्साहित किया। बर्फ पर चलने के लिये चावल के डंठलों के जूते पहने जाते हैं परन्तु अकबर को यह पसन्द नहीं आया। अगले दिन मीरपंजाल को पार करके नाती बरारी नामक घाटी के निकट डूढं गांव में विजयध्वज खड़े किये गये। यह यात्रा साढ़े तीन कोस और 20 बांस की थी और बर्फ पर चलना पड़ा था। जब स्थान पर पहुंचे तो एक घण्टे तक हिमपात होता रहा। यहां से दो रास्ते थे। यहां के छोटे और बड़े सब लोग कहते हैं कि इन दोनों रास्तों पर प्राचीन लोगों ने जादू कर रखा है कि जब कोई बड़ी सेना उधर आती है या कोई घोड़ा या बैल मार दिया जाता है या ढोल बजाया जाता है तो काले बादल उमड़ते हैं और जल एवं बर्फ बरसने लगता है। अकबर ने आदेश दिया कि हर एक मंजिल पर अनुभवी आदमी नियुक्त किये जायें जो डेरे, ईंधन, घास और खाने की चीजें तैयार रखें। मार्ग में बादशाह ने एक ऐसा वृक्ष देखा जिसकी अनेक शाखायें थीं और जो पत्तों से लदा हुआ था। उसकी एक टहनी को स्पर्श करते ही सारा वृक्ष हिलने लगता था। कश्मीर में इस प्रकार के अनेक वृक्ष हैं, परन्तु वे एक टहनी छूते ही हिलने नहीं लगते हैं।

***

प्रकरण 101

विजय ध्वजों (बादशाह की सवारी) का कश्मीर की राजधानी में पहुंचना

5 जून, 1589 को बादशाह ने डेढ़ कोस और 18 बांस कूच करके अपने ध्वज श्रीनगर में खड़े किये। वह कश्मीर के शासक यूसुफ खां के महल में उतरा। यूसुफ खां के सैनिकों के मकान बादशाह के विभिन्न सेवकों को ठहरने के लिये दे दिये गये।

लाहौर से श्रीनगर 97 कोस 7 बांस दूर है। यह दूरी 24 मंजिल में पार की गई थी। श्रीनगर बड़ा और पुराना नगर है। झेलम नदी इसके मध्य में होकर बहती है। कितने ही

मकान लकड़ी के बने हुए हैं। इनमें से कुछ 5 मंजिल के हैं। उनके छतों पर बाग लगे हुए हैं।

28 खुर्दाद को अकबर शिहाबुद्दीनपुर देखने के लिये गया। यह सुखद स्थान झेलम नदी के तट पर स्थित है। जब कभी यहां लोगों के आने से गन्दगी हो जाती है तो दूसरे दिन वह भूतों द्वारा साफ कर दी जाती है। बादशाह ने इसकी सत्यता की जांच करने के लिये अधिकारी नियुक्त किये तो यह कहानी असत्य सिद्ध हुई। 31 खुर्दाद को शाहजादे को आदेश दिया गया कि महिलाओं को लिवा लाये, उसके साथ आसफ खां, माधो सिंह और अन्य सेवक भेजे गये। उस दिन बादशाह ने जल कुटकुटों का बाजुओं द्वारा शिकार किया।

महिलाओं का आगमन

शाहजादा सुल्तान मुराद, खानखाना, कासिम खां और अन्य लोगों ने रास्ता साफ करवाने में बड़ा परिश्रम किया और डोलियों को उठाने वालों की अच्छी व्यवस्था की। शाहजादा सलीम भी पुसाना में उनसे जा मिला। वहां से शाहजादा सुल्तान मुराद प्रधान शिविर में चला गया। जब महिलाएं दो कोस की दूरी के अन्दर आ पहुंची तो 20 जून, 1589 को बादशाह उनके स्वागत के लिये आगे गया। जिन अधिकारियों ने इस विषय में अच्छी सेवा की थी, उनको पुरस्कृत किया गया।

उज्जैन में बाढ़

12 तारीख को वर्षा शुरू हुई जो तीन दिन तक होती रही। सिप्रा नदी में बड़ी बाढ़ आ गई। इसके अन्दर के और बाहर के तालाब उमड़ पड़े और 1700 घर बह गये। मनुष्यों की क्षति तो कम हुई परन्तु बाढ़ में बहुत-से पशु बह गये। बाढ़ नगर के द्वार तक पहुंच गई, तब बाहर का तालाब फूट गया और सब ओर पानी ही पानी हो गया।

कश्मीर का बन्दोबस्त

मरारिज के काम की जांच करने हेतु बादशाह ने शेख फैजी, मीर शरीफ अमूली, ख्वाजगी मुहम्मद हुसेन को जांच करने के लिये मरारिज [1] भेजा और ख्वाजा शमसुद्दीन खाफी तथा कुंवर मानसिंह को कामराज [2] भेजा। खरीफ की फसल आ चुकी थी तो भी अफसरों ने अपनी बुद्धि से उसका अनुमान लगा लिया। भारतवर्ष में भूमि को बीघों में विभक्त किया जाता है परन्तु कश्मीर में ऐसा भूमिभाग पट्टा कहलाता है। ईलाही गज के

---

1. मरारिज ऊपरी कश्मीर का और कामराज नीचे के कश्मीर का नाम है। कुंवर मानसिंह को कामराज की जांच के लिये भेजा।
2. वही।

अनुसार पट्टा एक बीघा और एक बिसवा का होता है परन्तु कश्मीरी लोग ढाई पट्टे को लगभग एक बीघे के बराबर मानते हैं। उपज का तीसरा भाग सरकार को दिया जाता है। प्रत्येक गांव की जांच करके यह निश्चय किया गया कि उसमें कितने खरवार[1] चावल पैदा होते हैं। प्रत्येक गांव से निश्चित खरवार चावल वसूल किये जाते हैं। एक खरवार तीन मन और आठ सेर अकबरशाही के बराबर माना जाता है। कभी-कभी चावल का अनुमान त्राक द्वारा भी किया जाता है। एक त्राक आठ अकबर शाही सेरों के बराबर होता है। रबी की फसल का एक पट्टा गेहूं, जौ, दाल और राई का दो त्राक सरकार में लिया जाता है। लार में जांच करने के लिये जो लोग नियुक्त किये गये थे, उन्होंने पता लगाया कि एक मन 26 सेर गेहूं, एक मन 26¾ सेर जौ, एक मन साढ़े 30 सेर दालें और राई ली जाती है और खरीफ की फसल पर एक खरवार चावल, दो त्राक मूंग, मोठ और माश और चार त्राक मक्का ली जाती है। जब सरकारी कागज मंगवाये गये तो ज्ञात हुआ कि पांच मन चावल और एक मन साढ़े 30 सेर मूंग, मोठ और माश लिया जाता है और फंगजी तथा मक्का का 2 मन और साढ़े 22 सेर लिया जाता है। इसी प्रकार की सूचना वे लोग लाये जिनको मरारिज भेजा गया था। लोग बड़े बकवासी थे, सत्य को छिपाते थे और कश्मीर का गर्वनर भी सत्य बात नहीं कहता था इसलिये भूमिकर निश्चित नहीं किया जा सका। 2000000 खरबार चावल में 200000 बढ़ा दिये गये। परन्तु अकबर ने इस वृद्धि को कृषकों के लिये विनाशक समझा।

वाहीद सूफी से भेंट

2 जुलाई, 1589 को लेखक अबुल फजल को आदेश दिया गया कि वह वाहीद सूफी से मिले। उस समय शेख फैजी ने अबुल फजल को लिखा था कि ''यहां मैंने एक प्रकाशमान फकीर देखा है। वह 30 वर्ष से एक पुरानी चटाई पर बैठ कर आनन्द की खोज में लगा हुआ है और एक कोने में बैठा रहता है। कोई उसको देखता नहीं है। उसको आत्मविज्ञप्ति की कोई अभिलाषा नहीं है। वह बादशाह से कभी नहीं मिला है परन्तु अपनी आन्तरिक शुद्धि के द्वारा वह बादशाह के विषय में कुछ जानता है।'' जब मैंने इस फकीर के विषय में बादशाह से निवेदन किया तो उसने आदेश दिया कि इस विषय की पूरी जांच करके सूचना दी जाये। मैं उससे मिला तो मालूम हुआ कि वह एक वीरान जगह पर रहता है और लोगों के रहन-सहन या रीति-रिवाज से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। कोई लोग उसको पागल और कोई उसको नास्तिक कहते हैं। वह किसी से भी रूखी-सूखी रोटी के सिवाय कुछ नहीं लेता। उसको सुख और दुःख की कोई चिन्ता नहीं है। बहुत वर्षों के बाद उसने एक पुराना और फटा हुआ चोला बदला है। मैं कश्मीरी भाषा नहीं जानता था तो भी द्विभाषिय के द्वारा मैंने कुछ जानकारी प्राप्त की। इस फकीर ने मनुष्यों से नाता तोड़

---

1. खरवार, खरबार का रूपान्तर है। खर का अर्थ गधो और बार का अर्थ भार है।

लिया था और वह अपनी कुटिया से बाहर नहीं आता था। यह खबर सुनकर बादशाह को प्रसन्नता हुई और उसने कहा कि किसी अवसर पर उससे मिला जायेगा।

मरियम मकानी से मिलने की इच्छा

इस समय अकबर को मरियम मकानी से मिलने की इच्छा हुई तो उसने मरियम मकानी को पत्र लिखा, जिसके शुरू में लिखा कि यात्री लोग काबा जाते हैं परन्तु मैं चाहता हूं कि ईश्वर काबा को मेरे पास भेज दे।

3 जुलाई, 1589 को हाशिम खां को पाकली का मार्ग ठीक करने के लिये भेजा गया, क्योंकि बादशाह उसी मार्ग से वापस लौटना चाहता था। जैन खां कोका को वापस लौटने का और शाही शिविर को रोहतास ले जाने का आदेश दिया गया। इसी दिन यह भी खबर आई कि 11 मई, 1589 को पाटन गुजरात में खुराबन्द खां का देहान्त हो गया। वह दक्षिण में एक वीर पुरुष था। बादशाह ने उस पर कई कृपायें की थीं।

अकबर का मरारिज जाना

अकबर नावों द्वारा मरारिज जाना चाहता था। इस देश में 30,000 से अधिक नौकायें थीं परन्तु अकबर के लिये उनमें एक भी नहीं थी। तब कारीगरों ने नदी महल बना दिये और उनके ऊपर बाग लगा दिये। बड़े-बड़े लोगों ने और बादशाह के रिश्तेदारों ने नावें बनवाईं तो 1000 से भी अधिक नावें तैयार हो गईं और ऐसा मालूम होने लगा कि नदी के ऊपर नगर बस गया हो। 4 जुलाई, 1589 को महिलाओं के साथ अकबर नावों द्वारा रवाना हुआ। प्रथम दिन पौने छः कोस और 15 बांस चलकर मीनोर पर डेरे किये। नदी के दोनों ओर संरक्षक नियुक्त थे। अगले दिन अकबर ने साढ़े 4 कोस और 60 बांस की यात्रा की और वह पंजबिरारा के पास ठहरा। अगले दिन बड़े प्रातःकाल रवाना होकर वह साढ़े 5 कोस और 8 बांस चलकर नन्दी मार्ग के मैदान के सामने ठहरा। यह स्थान 3000 बीघा लम्बा-चौड़ा समस्थल और हरा-भरा है। नन्दी महादेव की एक सेविका थी। मार्ग का अर्थ मैदान है। ऐसा कहा जाता है कि नन्दी एक नवयुवक से प्रेम करती थी। जब वह यहां पोलो खेलने आता था तो नन्दी यहां आकर उसे देखा करती थी, इससे उसकी आत्मा को शान्ति रहा करती थी। कश्मीर के गवर्नर ने चाहा कि इस मैदान में खेती की जाये। नन्दी ने समझा कि यदि ऐसा हुआ तो पोलो का खेल बन्द हो जायेगा तो उसने बहुत-सा धन देकर वह मैदान खरीद दिया और शाप दिया कि जो कोई व्यक्ति इस मैदन का रूपान्तर करेगा उसका अनिष्ट होगा तब से और अब तक कई युग बीत गये हैं, परन्तु यह मैदान अब भी पूर्ववत् बना हुआ है।

मिर्जा सुलेमान की मृत्यु

मिर्जा सुलेमान बादशाह से दूसरी बार मिला, तब से अपने दिन शान्ति में व्यतीत किया करता था। कश्मीर के अभियान के समय सुलेमान को लाहौर में छोड़ दिया गया था। अब खबर आई है कि 23 जून, 1589 को उसकी मृत्यु हो गई है। तब बादशाह ने शोक मनाया। सुलेमान की आयु 77 वर्ष की थी। उसका साहस और सैनिक ज्ञान अद्वितीय था।

अगले दिन बादशाह 3 कोस और 44 बांस चल कर कहनापल पहुंचा। यहां से आगे नावें नहीं चलतीं। उस दिन वह वाहीद सूफी की कुटिया पर गया, जिसका वर्णन पहले ही किया जा चुका है। बादशाह ने उससे कहा, ''मेरा विचार अपनी आत्मा को यथाशक्ति ईश्वर के अनुकूल बनाना है। साथ ही यह भी आवश्यकता है कि साम्राज्य की शासन-व्यवस्था चलती रहे। मुझे आशा है कि आपके प्रकाशमान हृदय से इस इच्छा की पूर्ति के लिये बल प्राप्त होगा।''

इसी समय शाहजादा सलीम भी पीछे से आ गया तो उसको आदेश दिया गया कि वह भी उस सूफी से मिले। इस ग्रन्थ के लेखक को भी शाहजादे के साथ भेजा गया। शाहजादे ने सूफी से निवेदन किया कि ''आप मेरे लिये ईश्वर से प्रार्थना करें।''

अर्लज का चश्मा

यहां से बादशाह अर्लज के चश्मे को देखने के लिये गया। यह सुखद स्थान है और प्राचीन लोग यहां प्रार्थना किया करते थे। इसका जल निर्मल है और भूमि से ऊपर की ओर उछला करता है। कभी-कभी इसमें एक सुन्दर और पीली धब्बेदार मछली दिखाई देती है। तब वह साल बड़ा शुभ माना जाता है। इस साल भी ऐसी मछली दिखाई दी थी। यहां से अकबर शिकार करने गया। वह बिहात (झेलम) नदी के निकास को देखना चाहता था परन्तु वर्षा होने लगी और घाटी में पैर जमना कठिन हो गया इसलिये यह योजना सफल नहीं हुई।

तिब्बत को राजदूत भेजा गया

जब अकबर की विजयी सेना के आगमन का समाचार तिब्बत पहुंचा तो वहां के शासकों को स्वयं शाही दरबार में उपस्थित होने का साहस नहीं हुआ। वे भयभीत हो गये परन्तु उन्होंने भेटें भेजकर प्रकट किया कि वे आज्ञाकारी हैं। तब अकबर ने छोटे तिब्बत में मिर्जा बेग को और बड़े तिब्बत में मुल्लातालिब इस्फ़हानी को राजदूत बनाकर भेजा और वहां के शासको को सान्त्वनापूर्ण पत्र लिखे गये।

अकबर की बीमारी

9 जुलाई, 1589 को अकबर बीमार हो गया। उस दिन उसको बड़ा दर्द रहा। अगले

दिन आराम के चिन्ह दिखाई देने लगे। दो दिन बाद वह दो चम्मच शोरबा पीने लगा और फिर थोड़े समय में ही स्वस्थ हो गया। वह कहा करता था कि ''मैं कई बार बीमार हुआ हूं परन्तु ऐसा दर्द मुझे कभी नहीं हुआ।''

***

प्रकरण 102

बादशाह का कश्मीर से वापस लौटना

11 जुलाई, 1589 को बादशाह ने वापस लौटना शुरू किया। उसके सामने पकली का मार्ग था। वह 3 कोस और 25 बांस चलकर नन्दी मार्ग के सामने ठहरा। इस दिन अबिया (अभय) ने आकर सलाम किया। याकूब कश्मीरी ने भी आकर सलाम करना चाहा, परन्तु उसको आने का साहस नहीं होता था इसलिये उसने अपने भाई को भेज दिया। भाई ने वापस जाकर कहा कि डरने की कोई बात नहीं है। अगले दिन बादशाह ने 5 कोस और 59 बांस चलकर जोरास के निकट मुकाम किया। यहां बड़े शिविर से कुछ महिलायें आईं। आसफ खां ख्वाजा दौलत और अन्य लोग भी दरबार में उपस्थित हुए तो एक समिति बनी और निश्चय हुआ कि काबुल पर अभियान किया जाये। फिर अकबर ने 5 कोस चलकर पमपुर के निकट डेरे लगवाये और एक दिन बाद 4 कोस 36 बांस चलकर अकबर कोहे सुलेमान के निकट ठहरा।

मुहिब्ब अली खां से भेंट

मुहिब्ब अली खां अपने जीवन की अन्तिम यात्रा करने की तैयारी कर रहा था। उसे सान्तवना देने के लिये अकबर उससे मिलने गया। फिर वह अमीर फतह उल्ला शिराजी से भी मिलने गया। वह यहां आया जब से बीमार था और बादशाह के साथ नहीं जा सका था। बादशाह ने उसकी रोगशय्या के पास जाकर उदारतापूर्वक बात की। मुहिब्ब अली के दिन समाप्त हो रहे थे। किसी ने उससे कहा कि ''कहो कि ईश्वर के सिवाय और कोई ईश्वर नहीं है।'' मुहिब्ब अली बहुत दिनों से नहीं बोलता था तो भी आज उसने कहा, ''यह लाउल्ला अर्थात् ईश्वर नहीं है, कहने में विराजमान है, यह कहने का समय है। अकबर को मुहिब्ब अली की मृत्यु पर शौक हुआ और उसने मुहिब्ब अली के कुटुम्ब की परवरिश की।''

19 जुलाई, 1589 को बादशाह श्रीनगर में होकर तीन कोस चला और फिर डेरे

लगाये। मार्ग में उसकी नाव एक पुल से टकरा गई, परन्तु कोई क्षति नहीं हुई। दो दिन पश्चात् वह 4 कोस 60 बांस चलकर शिहाबुद्दीनपुर ठहरा। यहां कासगढ़ का सुल्तान कुरेश आया और उस पर शाही कृपा की गई। वह चंगेज खां का वंशज है। वह चगताई का दूसरा पुत्र था। चगताई चंगेज का पुत्र था और चंगेज चगताई से अन्य बच्चों की अपेक्षा अधिक प्रेम करता था। मवात खां सन् 1221 में एक तीर लगने से बामी आन दुर्ग के नीचे मारा गया था मवात खां का पुत्र बीसूनतवा था। उसने चंगेज खां की आमरण सेवा की थी। बुर्का खां ने कुबला खां की सेवा की थी। कुबला खां ने उसको ट्रान्स ओविजयाना भेजा था। वह बड़ा अत्याचारी था और अयाक सुल्तान उलागू के साथ ईरान में लड़ा था और हार गया था। उसने बुखारा में अहमदी धर्म स्वीकार करके अपना नाम गयासुद्दीन रख लिया था। उसकी मृत्यु हो जाने पर दवा सुल्तान बना और उसने शान से शासन किया और तुर्किस्तान बदख्सा तथा काबुल जीत लिये। उसने ईरान पर कई बार आक्रमण किया और भारतवर्ष में भी सेना लाया, परन्तु उसको सफलता नहीं मिली। उसकी मृत्यु के बाद ईसा बुक्का ने तुर्किस्तान, काशगढ़ और मुगलिस्तान में राज्य किया। फिर उसका पुत्र तुगलक तीमूर उसकी गद्दी पर बैठा। ऐसा कहा जाता है कि ईसा बुक्का के दो पत्नियां थीं, बड़ी का नाम सातिलमिश-खातीम और छोटी का नाम मानलिक था। उस समय यह नियम था कि बड़ी पत्नी अन्य पत्नियों पर शासन करती थी। जब खान किसी अभियान पर गया हुआ था तो सातिलमिश-खातिम को पता लगा कि मानलिक गर्भवती है और उसने मानलिक को एक अफसर को, जिसका नाम सरावल दुख्तुई था, दे दिया। जब खान अभियान से वापस लौटा तो वह बड़ा परेशान हुआ, परन्तु अब कोई चारा नहीं था। खान की मृत्यु पर उसकी जाति में बड़ी गड़बड़ मची। अमीर बालाजी दुगलत ने जो मिर्जा हैदर का दादा था, मानलिक के विषय में जांच शुरू की और इसके लिये तासू तैमूर को भेजा। बहुत कुछ जांच करने पर मालूम हुआ कि मानलिक की मृत्यु हो गई है तब तासू तैमूर अनेक कष्ट सहन कर तुगलक तैमूर खां को कलमाक लोगों के प्रदेश से ले आया। उस समय तुगलक तैमूर 16 वर्ष का था। वह ईसा बूका की गद्दी पर बैठा और उसने 24 वर्ष की आयु में अहमदी धर्म ग्रहण कर लिया। उसके समय में ट्रान्स ओविजयाना में हलचल मच गई तो उसने वहां जाकर शान्ति स्थापित की। उसने काश प्रदेश साहिब किरानी तीमूर को और ट्रान्स ओविजयाना अपने आदमियों को दे दिया। उसके बाद इलियास ख्वाजा खां शासक बना। जब वह मर गया तो मुगल जाति में गड़बड़ मच गई और अमीर कमरुद्दीन दुगलत तुगलक तैमूर के 18 पुत्रों और दामादों को मार कर गद्दी पर बैठ गया। तुगलक तैमूर के वंशजों में केवल खिजर ख्वाजा ही बचा। कमरुद्दीन के भतीजे अमीर खुदादाद ने इस बच्चे को अपनी माता की सहायता से छिपा लिया था। साहिब किरानी तीमूर ने कमरुद्दीन के विरुद्ध कई लड़ाई लड़ी और जब कमरुद्दीन मर गया तो खिजरख्वाजा को गद्दी पर बिठा दिया गया। उसने तीमूर के साथ शान्ति रखी और अपनी दूरदर्शिता से मुगलिस्तान की रक्षा की। उसने कैथे पर कई बार चढ़ाई की और तुफान और कर्रा ख्वाजा पर अधिकार कर लिया। उसकी

लड़की तकल खानिम को तैमूर के अन्त:पुर में प्रवेश करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तैमूर गुर्गान कहलाता था। गुर्गान दामाद की उपाधि थी।

अपने पिता मुहम्मद खां की मृत्यु के पश्चात् शेरअली उगलान अपने भाइयों के साथ रहा और उसकी मृत्यु जल्दी ही हो गई। तब उसके पुत्र अवीस खां ने अपने चाचा शेर खां मुहम्मद की सेवा की जो मुगलिस्तान का शासक था। वह लूटमार करने लगा और उसने अनेक लड़ाइयां लड़ीं। जब शेर मुहम्मद खां की मृत्यु हो गई तो वह खान बना। कहते हैं कि उसने कलमाक लोगों से 61 बार युद्ध किया और सदैव विजयी हुआ। उसको दो बार पकड़ लिया गया था परन्तु कलमाकों के शासक तास ने उसके उच्च कुल पर विचार करके उसको छोड़ दिया। जब सातुक खां ने उस पर चढ़ाई की तो वह भागने लगा परन्तु उस गड़बड़ में उसके ही एक आदमी का तीर उसको लग गया और वह मर गया। फिर गड़बड़ मची और उसके पुत्र यूनस खां को समरकन्द में उलूग बेग के पास ले जाया गया और ईसाबूका मुगलों का शासक बना दिया गया। उलूग बेग ने बहुत-से मुगलों को मार कर लूट लिया।

उलूग बेग ने यूनस खां को शाहरूख के पास भेज दिया और शाहरूख ने उसको मौलाना सरफुद्दीन अली यजदी को सौंप दिया, जिससे यूनस को कुछ प्रकाश प्राप्त हुआ। जब यह मौलाना मर गया तो यूनस अरब, ईरान अजर बेजान और फारस पहुंचा। वह सिराज में रहने लगा। वहां उसने कुछ भूमि खरीदी और विद्या पढ़ी तथा अपने परिश्रम से निर्वाह किया। जब वह 41 वर्ष का था तो सुल्तान अबू सईद ने उसको बुलाया और उसे एक सेना दी और उसको अपने भाई के विरुद्ध रवाना किया। बड़ी लड़ाई होने के बाद वह हार गया, परन्तु युक्ति और चालाकी से वह फर्गाना के पास जम गया और उसने बहुत-से आदमी एकत्र कर लिये। तब अमीर खुदादाद का पौत्र मीर सईद अली मर गया तो यूनस के अच्छे दिन आये।

थोड़े समय में ईसा बूका भी मर गया। तब उसका पुत्र दोस्त मुहम्मद खां गद्दी पर बैठा। थोड़े समय के बाद मुगलिस्तान की सरकार यूनस के हाथ में आ गई और उसने कृतज्ञतापूर्वक अपनी तीन लड़कियों के विवाह मिर्जा अबू के पुत्रों के साथ कर दिये अर्थात् समरकन्द के शासक सुल्तान अहमद के साथ मीहर निगार खानिम का विवाह किया। सुल्तान महमूद खां को सुल्तान निगार खानिम ब्याह दी। मिर्जा मुहम्मद सुलेमान का पिता इसी विवाह से उत्पन्न हुआ था। कुतलक निगार, खानिम उमर शेख मिर्जा, को दे दी। बाबर इसी विवाह से उत्पन्न हुआ था। यूनस खां 74 वर्ष तक जीवित रहा। अपने अन्तिम दिनों में सेवकों के व्यवहार से खिन्न होकर वह निवृत्त हो गया था।

सुल्तान अहमद खां यूनस का द्वितीय पुत्र था। उसने अच्छा शासन किया और कलमाकों के साथ युद्ध करके बड़ी विजय प्राप्त की। उसने उजबेगों और कज्जाकों को

दबाया। जब शाह बेग ने अहमद के बड़े भाई शेख महमूद को हराया तो अहमद ने उसकी सहायता की, परन्तु संयोगवश दोनों ही भाई हार गये, परन्तु शाह शाह बेग ने पुरानी बातों पर विचार करके दोनों को छोड़ दिया। अहमद संतप्त होकर मर गया। सुल्तान सईद अहमद के 16 पुत्रों में तीसरा पुत्र था और कुछ समय वह शाह बेग का कैदी था। वहां से भागकर वह अपने चाचा शेख महमूद के पास आ गया। फिर उसको भी छोड़कर वह मुगलिस्तान में अपने भाई खलील से जा मिला। इन दोनों भाइयों ने और इनके बड़े भाई मनसूर खां में युद्ध हुआ। सुलतान सईद खां को मरुभूमियां पार करनी पड़ी परन्तु ईश्वर की सहायता से वह काबुल में बाबर के पास पहुंच गया और बाबर ने उसका कृपापूर्ण स्वागत किया। उसने तीन वर्ष तक बाबर की सेवा की। फिर वह सेना लेकर कर्गाना पहुंचा और उस देश को जीत लिया। काशगढ़ का शासक मिर्जा अबू बकर लड़ने के लिये आया परन्तु हार गया। उसके बाद तुर्किस्तान का शासक सुंज खां एक बड़ी सेना लेकर आया। तब खान कासिम खां के पास गया जो दस्त किबचाक का शासक था और वहां से काशगढ़ के विरुद्ध सेना लेकर आते हैं। उसने मिर्जा अबू बक्कर से युद्ध किया और विजय प्राप्त की। उसने अपने बड़े भाई मनसूर खां से संधि कर ली और उसके नाम का खुत्वा पढ़वाया और सिक्का चलाया। ऐसा कहा जाता है कि मनसूर के मरने के बाद ही उसका पुत्र शाह खां शाह कहलाता रहा। जब वह मर गया तो शासन सईद के हाथ में आ गया। उसने मुगलिस्तान पर कई बार सेना चढ़ाई और सफल हुआ। उसने तिब्बत के लोगों से भी युद्ध किये जिनमें वह विजयी हुआ। उसने अपने पुत्र ईस्कन्दर को तिब्बत के मार्ग से मिर्जा हैदर के साथ कश्मीर भेजा और जीत लिया। इस आदमी की दुहरी नीति थी। हैदर ने उसके साथ संधि कर ली और वापस आ गया। तिब्बत की बुरी जलवायु के कारण सईद को दमा हो गया और वह मर गया। सईद की प्रार्थना पर बाकर ने उसके पुत्र का नाम अब्दुल रसीद रखा था। जब वह अपने पिता की गद्दी पर बैठा तो उसने न्यायपूर्वक शासन किया और उसने उजबेगों और कज्जाकों का दमन किया। उसने हुमायूं के साथ मित्रभाव बनाये रखा। मिर्जा हैदर ने इसी के नाम पर अपनी पुस्तक का नाम तारीख-ए-रशीदी रखा है। जब अब्दुल रसीद की मृत्यु हो गई तो अब्दुल करीम उसकी गद्दी पर बैठा और उसने 30 वर्ष तक योग्यतापूर्वक शासन किया। उसके छः भाई थे, जिनके नाम सूफी सुल्तान, महमूद, कुरेश, अबू सईद, अब्दुल रहीम और अब्दुल्ला थे। अपने पिता की इच्छानुसार इन्होंने अपने भाई अब्दुल करीम की सेवा की। फिर कुरेश के पुत्र खुदाबन्द और उसके चाचा मुहम्मद में झगड़ा हो गया तो कुरेश का पुत्र किरगीज के पास गया और उन लोगों की सहायता से उसने तुर्कान जीत लिया। जब अब्दुल करीद को कुरेश से भय रहने लगा तो उसको हज्जाज भेज दिया। कुरेश अपने सात पुत्रों (शाहमुहम्मद, आदिल, मुजफ्फर, अब्दुल्ला, संजर, अहमद और गजनफुर) के साथ बदख्शां आया और वहां से बल्ख चला गया। अब्दुल्ला की अनुमति से वह अकबर के दरबार में उपस्थित हुआ और वहां उसको प्रतिष्ठा प्राप्त

हुई। जब अब्दुल करीम मर गया था तो उसके देश का शासक मुहम्मद अब्दुल्ला के हाथ में आ गया और उसने ट्रान्स ओविजयाना के विरुद्ध सेना भेजी जो हार कर वापस आ गई।

23 जुलाई, 1589 को अकबर साढ़े तीन कोस और 12 बांस चलकर शोपुर पहुंचा। मार्ग में उसने मिर्जा हैदर का बनाया हुआ बाग सफा देखा और एक ऐसी पहाड़ी पर, जहां से दूर-दूर दिखाई देता था, कश्मीर देखा। अगले दिन साढ़े 4 कोस और 72 बांस चल़कर वह पाटन के पास ठहरा। यहां से वह नावों से उतर कर पैदल चलने लगा। उस दिन अकबर ने शेख फैजी और मीर शरीफ अमूली को बहुत-सा रुपया देकर नगर में भेजा और आदेश दिया कि यह रुपया उन लोगों में बांट दिया जाये जो निवृत होकर दिन काट रहे हैं और जिनको आवश्यकता है।

याकूब खां कश्मीरी का दरबार में आना

याकूब खां कंश्मीरी भयभीत होकर अपने दिन किश्तकारा की घाटियों में व्यतीत कर रहा था। वह अकबर की सेना से डरता था और उसको अन्देशा था कि कहीं जमीनदार लोग उसको पकड़ कर अकबर के सुपुर्द कर दें। जब याकूब खां के भाई ने आकर उसको शाही क्षमा का समाचार दिया था, उसका भय किंचित् कम हुआ। फिर भी वह दरबार में नहीं आया और मिर्जा यूसुफ खां के द्वारा उसने प्रार्थना-पत्र भेजा कि "मैं यौवन के नशे में था और दुष्ट लोगों के साथ मेरी घनिष्टता थी, अब मुझे बड़ा पश्चात्ताप है। अब मेरी प्रार्थना है कि बादशाह के जूते भेज दिये जायें जिनको सिर पर रखकर मैं दरबार में उपस्थित होऊंगा।" तब अकबर ने उसको क्षमा कर दिया और 18 अमरदाद को आकर उसने सन्तोष प्राप्त किया।

तीन दिन बाद अकबर ने फिर कूच शुरू कर दी और 3¼ कोस तथा 60 बांस चलकर उसने नौपाड़ा में डेरे लगाये। दूसरे दिन 2 कोस और 20 बांस चलकर अकबर बाहरा मूला में ठहरा जो कश्मीर का फाटक है। यहां एक और आकाशचुम्बी पर्वत है और दूसरी ओर झेलम नदी जोर के साथ भारत की ओर जा रही है। यहां पर एक फाटक बना हुआ है, पासपोर्ट के बिना इसमें कोई प्रवेश नहीं कर सकता। उस दिन जैन खां कोका, जो पकली से आया, उसको आदेश दिया गया कि वह आगे चलकर सिन्धु नदी पर पुल बनाये फिर सेना के 8 भाग किये गये। एक भाग बादशाह के साथ रहा और 7 भागों को अलग-अलग काम बतला दिया। 23 तारीख को अकबर झेलम से चला और पौन कोस तथा 20 बांस चलकर ठहर गया। उस दिन मीर आरिफ अर्दबिली ने आकर सलाम किया। वह बुद्धिमान् और तपस्वी पुरुष था। कुछ समय पूर्व वह लाहौर से कश्मीर चला गया था। वहां के शासक अली खां ने उसको अपना दामाद बना लिया था। तब ईर्ष्यालु लोगों ने कहा कि मीर आरिफ कश्मीर का सुल्तान बनना चाहता है। जब अली खां उससे मिलने आयेगा तो वह मारा जायेगा। लोगों के कुव्यवहार के कारण मीर आरिफ रात में ही भाग कर जंगलों में चला

गया, परन्तु पकड़ लिया गया और उसको बुरा-भला कहा गया। तब वह तिब्बत पहुंचा और वहां के शासक अली राय ने उसको अपनी बहन ब्याह दी। जब कश्मीर के शासक के राजदूत तिब्बत गये तो उनको आदेश दिया गया कि वे मीर आरिफ को अपने साथ लाये। मीर आरिफ अकबर का शिष्य बनना चाहता था इसलिये अकबर उससे कृपापूर्वक मिला। एक दिन बाद अकबर 3 कोस और 20 बांस चलकर खानपुर ठहरा। यहां उसको खबर मिली कि ख्वाजा सदल की मृत्यु हो गई है। यह ख्वाजा कबूतर उड़ाने का बड़ा शौकीन था।

अजदुद्दौला की मृत्यु

उसको बीमार हो जाने के कारण पीछे नगर में छोड़ दिया गया था। हकीम अली ने उसकी चिकत्सा ठीक नहीं की इसलिये बादशाह ने हकीम हसन को भेजा। हकीम हसन शाही शिविर में आया और उसने प्रकट किया कि अजदुद्दौला की मृत्यु हो गई है। इससे बादशाह को बड़ा दु:ख हुआ। अजदुद्दौला को देखकर पिछले सन्तों की याद आया करती थी। बादशाह कहा करता था कि ''मीर मेरा वकील दार्शनिक हकीम और ज्योतिषी था। उसकी मृत्यु से इतना दु:ख है कि कोई नहीं जान सकता। यदि उसको फेक लोग पकड़ लेते और उसके बदले में मेरा समस्त कोष मांगते तो मैं दे देता और फिर भी समझता कि वह रत्न मुझे सस्ता मिल गया है। मैं अबुल फजल जानता हूं कि अजदुद्दौला ने सारी विद्या प्राप्त कर ली थी। उस आध्यात्मिक पुरुष के मिलने से मेरे विचारों में बड़ी क्रान्ति आ गई थी। वह दुर्लभ, सत्यवादी, ईमानदार और व्यवहारकुशल था। बादशाह ने आदेश दिया कि उसके शरीर को मीर सईद अली हमदानी के खान का से कोहे सुलेमान पर पहुंचाया जाये जो सुखद स्थान है। वहां उसको दफनाया जाये।''

अगले दिन बादशाह 4 कोस 60 बांस चलकर कानपला नामक गांव पर उतरा। रास्ते भर बर्फ पड़ रही थी और दोनों ओर ऊंचे पर्वत थे। दायीं ओर के पर्वत पर कोई वृक्ष नहीं थे। दूसरी ओर सरु तथा चीड़ के पेड़ों की भरमार है। यद्यपि इन दोनों पर्वतों के बीच में बहुत ही कम अन्तर है। (तो भी एक नग्न है और दूसरा वृक्ष सम्पन्न है।) प्रात:काल बादशाह ने पौने चार कोस और 60 बांस यात्रा की और पाहूनार के निकट मुकाम किया जो दजनखारु के इलाके में है। बारामूला से किशनगंग जाते हुए जो इलाका दायीं ओर है वह दजनपाड़ा कहलाता है और बायीं ओर के इलाके का नाम खारू है। अगले दिन अकबर ने कूआर मस्त नामक घाटी को पार किया जो इस मार्ग पर दुर्गम घाटी है। बादशाह माहीपारा नामक गांव पर ठहरा। उससे सवा तीन कोस और 89 बांस यात्रा की थी। इस घाटी में होकर जाते समय अकबर कुछ समय के लिये ख्वाजा संदल की कब्र पर शोक मनाने के लिये ठहरा। वहां प्रथानुसार उसने कबूतरों को दाना डाला। इस दिन लोग अकबर के साथ नहीं चल सके इसलिये उसको ठहरना पड़ा। इसी बीच में सुवाद से मीर अबुल कासिम

तमकीन ने आकर सलाम किया। उसके साथ कालू अफगान था जिसने भाग कर यूसुफ जाई लोगों का दंगा करवाया था। जब उन लोगों को घेर लिया गया तो कालू अफगान ने अपने प्राण बचाने के लिये मीर अबुल कासिम तमकीन की शरण ली। वह प्राणदण्ड का पात्र था परन्तु अकबर ने उसको कारागार में भिजवा दिया। प्रात:काल अकबर ने सवा चार कोस और 26 बांस घाटी में चलकर बुलियास पर विश्राम किया। यहां कश्मीर देश की सीमा है और यहीं से मस्तंग का इलाका शुरू होता है। यह नाम उस इलाके का है जो बुलियास से किशनगंग तक फैला हुआ है। यहां शेख ईस्माइल पवित्र संत है और चमत्कार कर सकता है। उनका ख्याल था कि उसके बीच-बचाव करने से उनके अपराध क्षमा कर दिये जायें। इसी दिन मीर आरिफ अदेबिली को एक बड़ी धनराशि देकर आदेश दिया कि वह इसको तिब्बत के गरीब लोगों के लिये भेज दे। हकीम अबुल फतह को अपच रोग हो गया और बड़ी पीड़ा हो गई। अकबर ने उसको सान्त्वना दी। अगले दिन फिर अकबर 4 कोस चला ओर बुलियास घाटी को पार करके नोपारा के निकट ठहरा। मार्ग बड़ा ही दुर्गम, तंग और ऊंचा-नीचा था। उस दिन हकीम के मकान पर गया और उसको धैर्य बंधाया। अगले दिन 4 कोस और 10 बांस चलकर वह बर्की के समीप ठहरा। यहां सुल्तान हुसेन पकलीवाल भेंटें लेकर उपस्थित हुआ तो अकबर उससे कृपापूर्वक मिला। 11 अगस्त, 1589 को अकबर ने पुल द्वारा किशनगंग पार की और सवा 3 कोस और 82 बांस चलकर सीकरी के निकट मुकाम किया। यह सुन्दर नदी है, इसका जल निर्मल और स्वास्थ्यप्रद है। यह तिब्बत के नीचे से निकलती है। यहां से पकली नदी तक का प्रदेश मस्तंग कहलाता है। यहां तक अकबर झेलम नदी के सहारे आया था। अगले दिन साढ़े 3 कोस लम्बी घाटी को पार करके उसने नयनसुख नदी के निकट डेरे लगवाये। इस नदी का पानी उतना मधुर और स्वास्थ्यकर नहीं था जितना किशनगंग का। कासिम खां को आदेश दिया गया कि वह आगे चलकर सिन्धु नदी पर पुल बनाने की व्यवस्था करे। एक दिन पश्चात् बादशाह ने बतरास की घाटियां पर कीं। 5 कोस और 30 बांस चलकर उसने गही के समीप डेरे लगाये जो पकली के इलाके में है। यहां से मैदान दिखाई देने लगा। यहां खाने की चीजें भी सस्ती थीं। सुल्तान हुसेन ने अकबर से निवेदन किया कि मेरे मकान पर आये तो अकबर उसके यहां जाये। अगले दिन सवा चार कोस और 80 बांस चलकर घाघाल पर डेरे लगाये गये। उसके दूसरे दिन 3 कोस 90 बांस चलकर गढ़सा ठहरा। दमतूर का जमीनदार शाहरूख सलाम करने आया। हकीम को बड़ा दर्द था इसलिये मुकाम वहीं रहा। 18 अगस्त, 1589 को हकीम की मृत्यु हो गई। वह दूरदर्शी, बुद्धिमान् और प्रकाशमान पुरुष था। वह अन्त तक सचेत था और मृत्यु से नहीं डरा था। अकबर को उसकी मृत्यु पर इतना दु:ख हुआ कि वर्णन नहीं किया जा सकता। हकीम में स्वामिभक्ति, कार्य-कुशलता, प्रगलभता, सुन्दरता, गम्भीरता, कृपालुता आदि गुण थे। अकबर के आदेश से शमसुद्दीन और अन्य लोग उसके शरीर को हसन अब्दाल ले गये और वहां उसको ख्वाजा के बनाये हुए गुम्बद के नीचे दफना

दिया। अगले दिन अकबर ने पौने पांच कोस और 8 बांस चलकर दहकारी पर मुकाम किया। वह मार्ग बड़ा तंग था और इसमें कई नदियां थीं। अगले दिन प्रात:काल चलकर पौने चार कोस और 80 बांस पार करके खोरा और माणिक झाला के बीच में मुकाम किया गया जो दिल जाक लोगों की बैठक है। अगले दिन सवा 4 कोस चलकर अकबर शेर खां के निकट ठहरा। अगले दिन प्रात:काल 4 कोस चलकर सईद पीर सबज की सराय के निकट ठहरा। यहां से मुहम्मद यूसुफ खां बिदा होकर कश्मीर वापस लौट गया। अगले दिन अकबर बाबा हसन अब्दाल को पार करके जैनूद्दीन अली की सराय के समीप ठहरा। उस दिन सवा चार कोस और 50 बांस चला था। अगले दिन प्रात:काल उसने तराब्रदी नामक नदी पार की और फिर बहादुर की सराय से आगे निकल कर ठहरा। यह मंजिल पौने चार कोस की थी। 24 अगस्त, 1589 को साढ़े चार कोस चलकर वह सिन्धु नदी पर अटक बनारस के पास ठहरा। श्रीनगर से यहां तक 96 कोस 77 बांस का अन्तर है। यहां जैन खां कोका, कासिम खां और खाहबाज खां आये। अगले दिन शाहजादा सुल्तान मुराद महिलाओं के साथ उपस्थित हुआ। राय रायसिंह और बहुत-से लोगों ने आकर सलाम किया। 16 तारीख को सादिक खां भी आया तो उसको आदेश दिया कि वह अफगानों को दण्ड दे। वह मलकन्द की घाटी के मार्ग से सवाद पहुंचा। शाहबेग खां आदि बड़े-बड़े अफसर उसके साथ थे। इनके धैर्य के कारण अफगान लोग दब गये और सवाद में कुछ बस्ती बस गई। यहां सजावल, मीर मुराद अपने कर्तव्यानुसार शाहबाज खां को साथ लेकर आया। सादिक खां, शाहबाज खां से मिलना नहीं चाहता था इसलिये वह शीघ्रतापूर्वक चला गया।

***

प्रकरण 103

अफगानिस्तान पर अभियान

31 अगस्त, 1589 को अटक के नीचे अकबर ने पुल द्वारा नदी पार की और 28 बांस चलकर यह खैराबाद की सराय के निकट ठहरा। हाथी और तोपखाना आदि अटक में ही छोड़ दिये गये। शाहबाज खां ने स्वाद जाने की अनुमति प्राप्त की। 3 दिन बाद अकबर 3 कोस 25 बांस चलकर इलियास गढ़ के समीप ठहरा। वहां खबर आई कि हुसेन पकलीवाल भाग गया। जब शाही अफसरों ने यह निवेदन किया था कि पकली की आय बहुत बड़ी है तो हुसेन उसी दिन पकली चला गया था, इसलिये बादशाह की पकली और उसके पास का इलाका हुसेन बेग उमरी को जागीर में दे दिया और उसको वहां भेज दिया

गया। अमरी ने इलाका दबा लिया और जमीनदार को दण्ड मिल गया। जब शिविर गोर खत्रा के निकट था, तो शाह बेग स्वाद से आया और दरबार में उपस्थित हुआ। उसकी प्रार्थना पर उसकी जागीर बेगराम पर गया। मुझ लेखक अबुल फजल को आदेश हुआ कि मैं फकीरों को भेंटें बांटूं तो हजारों गरीब लोगों को अपना-अपना भाग मिला। 11 सितम्बर को बादशाह ने खैबर पार करके डाका पर मुकाम किया। कासिम ने रास्ता इतना अच्छा बना दिया था कि जहां घोड़ों और ऊंटों को भी चलने में कठिनाई नहीं होती थी, वहां बैल गाड़ियाँ आसानी से चलती थीं। कर्म उल्ला मालवा से आया और ख्वाजा याक़ूत सराई के समीप उसने सलाम की। सफेद संग की मंजिल पर अकबर ने निश्चय किया कि अब यात्रा शीघ्रतापूर्वक करनी चाहिये। उसने शाहजादा मुराद को शिविर में छोड़ा और स्वयं शीघ्रता से घोड़े पर चला। दोपहर को वह बारीक आब के निकट पहुंचा। मार्ग में तुरान से हकीम हमाम ने आकर सिजदा किया तो अकबर ने कहा, ''इस संसार से तुम्हारा एक भाई चला गया है, परन्तु मेरे तो मानों दस भाई चले गये हैं।'' जब बादशाह ने उसके हृदय को शान्त कर दिया, तो हकीम ने तुरान के शासक की ओर से प्रशंसा और प्रार्थना की। अब्दुल्ला ने कहलाया था कि हैरात और खुरासान की विजय अकबर के प्रताप से ही प्राप्त हुई है। ''मैं एक विश्वस्त व्यक्ति अहमद अली अताली को प्रार्थनायें और प्रशंसायें लेकर भेज रहा हूं। वह और मीर सदर पीछे से आयेंगे।'' अब आधी रात व्यतीत हो गई तो अकबर ने यात्रा शुरू की और वह काबुल पहुंच गया तो सब ओर से तुर्क और ताजिक लोग भेंटें लेकर आये। उसी दिन मीर सदर जहां ने भी आकर सलाम की। अटक बनारस से काबुल 92¾ कोस ओर 41 बांस दूर है, जो सब ने 21 दिन में और 18 मंजिलों में पार किया था। अकबर ने दुर्ग में ठहर कर बाग और मैदान देखे। फिर शाहजादा मुराद भी कुटुम्बियों के साथ आ गया। सायंकाल अकबर उस शामियाने में ठहरा जो सफेद संग के निकट उसके लिये बनाया गया था। दूसरे दिन खूब दावतें हुईं। अहमद अली अतालिक ने दरबार में आकर तूरान के शासक का पत्र और दुर्लभ वस्तुयें भेंट की। हकीम हमाम ने निवेदन किया कि गत वर्ष ''तूरान में विचित्र घटना हुई। दिन भर पक्षी ऐसे चहचहाये कि मर रहे हों। दूसरे दिन प्रातःकाल देखा तो प्रत्येक खेत में नाना प्रकार के पक्षी मरे पड़े थे। कूराक झील के किनारे पर भी हजारों पशु मरे पड़े थे। जो व्यक्ति ओकसस नदी की ओर से आये उन्होंने भी ऐसी कहानियां सुनाईं।'' तुरानी राजदूत ने कहा कि अब्दुल्ला खां ने इसके विषय में योग्य आदमियों से पूछा तो किसी ने कहा कि बहुत-से उल्लू इधर होकर निकले होंगे। दूसरों ने कहा कि सदाईक नामक एक भयंकर शिकारी पक्षी ने यह विनाश किया होगा।

फिर बादशाह जहां-आरा-बाग में गया और उसने कुछ शिकार किया। दूसरे दिन वह ऐमाक लोगों के मकानों को देखने गया।

21 तारीख को सफेद संग के मैदान से रवाना होकर वहां ख्वाजा हसन के सुखुदबाग

में ठहरा, जहां मुहम्मद संजार, मुहम्मद बासी, शादमान और अन्य हजारों लोग दरबार में आये।

राजा टोडरमल को वैराग्य

एक दिन राजा टोडरमल का प्रार्थना-पत्र आया कि ''मैं वृद्ध हूँ, बीमार रहता हूं और मेरा अन्त निकट मालूम होता है। अब मुझे अनुमति दी जाये कि मैं गंगा के तट पर जाकर ईश्वर का स्मरण करता हुआ अपना अन्तिम स्वांस लूं।'' अकबर ने यह प्रार्थना स्वीकार की और आशा प्रकट की कि ''तुमको इस प्रकार शान्ति प्राप्त हो'' तत्पश्चात् अकबर ने टोडरमल को लिखा कि ''उत्पीड़ित लोगों को शान्ति देने के बराबर कोई ईश्वरभक्ति नहीं है, इसलिये तुम त्याग का विचार छोड़ कर अपना शेष जीवन मानव सेवा में व्यतीत करो और इस प्रकार अपनी अन्तिम यात्रा की तैयारी करो।''

25 तारीख को काजी अब्दुस-सम्मी लाहौर से आया। 2 आबान को बादशाह की 12 प्रकार की वस्तुओं से तुला की गई। अगले दिन वह शाहर-आरा-बाग में गया और वहां से कब्रस्तान में जाकर उसने फिर-दोष मकानी की कब्र देखी। उसने मिर्जा हिन्दाल और मिर्जा-हकीम की कब्रों पर भी शोक प्रकट किया और कासिम खां को आदेश दिया कि वहां एक बाग लगाये। उस स्थान के लोगों को पुण्य दान किया। रात्रि ख्वाजा मुहम्मद हुसेन के निवास पर व्यतीत करके दूसरे दिन अकबर शिकार करके आ गया।

मरियम मकानी का आना

मरियम मकानी अकबर से मिलने के लिये बड़ी व्याकुल थी, इसलिये वह कश्मीर के लिये रवाना हुई थी। गुल-बदन-बेगम और अन्य महिलायें भी उसके साथ थीं। यह खबर सुनकर कि अकबर काबुल चला गया है, तो सब महिलायें उसके पीछे-पीछे गईं। अकबर ने मरियम मकानी के स्वागत के लिये पहले तो शाहजादा दनियाल को भेजा और फिर शाहजादा मुराद को रवाना किया और अन्त में शाहजादा सलीम को भेजा। फिर काबुल बेग्राम के निकट स्वयं अकबर ने उनका स्वागत किया और सब को विशेष निवासों पर ले गया ओर एक बड़ी दावत की।

बुरहानुलमुल्क का विफल अभियान

जब खान आजम मिर्जा कोका को बादशाह का आदेश मिला तो वह अपनी अच्छी सेनासहित बुरहानुलमुल्क के साथ जाने को तैयार हो गया, परन्तु बुरहान ने सहायता नहीं ली। उसने कहा, ''यदि बहुत बड़ी सेना लेकर गया जायेगा तो आसान बात कठिन हो जायेगी, इसलिये बुरहानुल्मुलक केवल अपने साथ चकताई खां, चंदा खां और एक हजार सवार तथा 300 बन्दूकची ले गया और काली भी के मार्ग से बरार पहुंचा फिर एलीचपुर को दायीं ओर रखकर वह दानापुर गया। वहां जहांगीर खां थानेदार आदि तो उससे

चाटुतापूर्वक मिले परन्तु उनके अन्य साथियों ने लड़ाई लड़ी, जिसमें चगताई खां एक गोली लगने से मारा गया और चन्दा आहत होकर बन्दी बन गया। तब बुरहानुलमुल्क असफल होकर मालवा लौट आया।''

परवेज का जन्म

19 आबान को ख्वाजा हसन की लड़की से शाहजादा सलीम को एक पुत्र उत्पन्न हुआ। ख्वाजा हसन, जैन कोकलताश का चाचा था। पुत्र जन्म पर हर्ष मनाया गया। बादशाह ने बालक का नाम परवेज रखा।

25 तारीख को मिर्जा मुल्ला-तालिब-मेहतर मारी और मिर्जा बेग-तिब्बत से वापस आये और दरबार में उपस्थित हुए। उसके साथ वहां का राजदूत था और उसके पास भेंटें थीं।

***

प्रकरण 104

काबुल से शाही सेना की वापसी

बादशाह ने नवम्बर में प्रयाण करके सफेद संग पर मुकाम किया। उस दिन कासिम को काबुल का सूबेदार नियुक्त किया। 10 तारीख को बादशाह का मुकाम बेग्राम के समीप था। वहां उसको खबर मिली कि राजा टोडरमल का 8 नवम्बर, 1589 को देहान्त हो गया। उसने स्वामिभक्ति और दूरदर्शिता से सेवा की थी। जब उसको सेवानिवृत्त होने की अनुमति मिल गई तो वह हरिद्वार की ओर रवाना हो गया परन्तु लाहौर के पास तालाब पर, जो उसी ने बनाया था, उसको वापस आ जाने का आदेश मिला, तो वह तत्काल ही वापस लौटा, परन्तु मार्ग में ही उसकी मृत्यु हो गई। अब उस समय उसकी ईमानदारी, स्पष्टवादिता, धैर्य और प्रशासनिक ज्ञान की तुलना नहीं हो सकती थी। यदि उसमें कट्टरता और रूढ़िवादिता नहीं होती तो वह आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत बड़ा आदमी होता। उसकी मृत्यु से निष्पक्ष सेवा जाती रही। उसमें अद्भुत प्रभाव था।

मार्ग में अकबर बर्फ पर चला। कई नवयुवक उसके पीछे चले। आगे लकड़ियां नहीं मिलती थीं इसलिये अकबर ने आदेश दिया कि छोटे और बड़े सब लकड़ियां बटोरें। सबने इस आज्ञा का पालन किया।

इस दिन बैराम खां के पुत्र अब्दुल रहीम खानखाना ने फिरदोष मकानी (बाबर) की तुजुक-ए-बाबरी का फारसी अनुवाद जो तुर्की भाषा से किया गया था, प्रस्तुत किया तो उसकी बड़ी प्रशंसा हुई।

राजा भगवन्तदास की मृत्यु

15 तारीख को बारीक आब में खबर आई कि राजा भगवन्तदास की मृत्यु हो गई। बादशाह को इस पर दु:ख हुआ। राजा भगवन्तदास, राजा टोडरमल की दाह क्रिया के समय उपस्थित था। जब वह वापस आया तो, उसको वमन हुआ और फिर मूत्र रोग का दौरा हो गया तथा 5 दिन बाद अर्थात् 13 या 14 नवम्बर, 1589 को उसका देहान्त हो गया। वह बड़ा ईमानदार, गम्भीर, सलाहकार और धैर्यवान् था। उसके पुत्र कुंवर मानसिंह को राजा की उपाधि और पांच हजार का मनसब दिया गया।

जब बादशाह गन्दमक पहुंचा तो उसको कसरगा द्वारा शिकार करने का विचार हुआ और उसने आदेश दिया कि अधिकारी लोग इसकी व्यवस्था करें। अगले दिन बागबफा होकर अकबर सकुशल पहुंचा। मार्ग में उसको अरब मिले तो उनमें रुपये बांटे गये, फिर वह बिहार नामक गांव पर आया जो महमूद गजनवी के समय अच्छा बसा हुआ था। उसके लिये आदेश दिया गया कि उसको फिर बसाया जाये और वहां एक दुर्ग बनाया जाये। उस गांव का नाम उसने शाहबाज रखा। उसी दिन स्वाद से शाहबेग खां आया। 19 तारीख को नियामत खां की मत्यु हो गई। उसको मुल्ला मीर की उपाधि थी और उसका जीवन बड़ा नेक था। वह हैरात का रहने वाला हकीम था। अपनी बुद्धिमत्ता के कारण वह बकावल बेगी (चौके का जमादार) के पद पर नियुक्त था।

कुलीज खां को शासन और वित्तीय मामलों में सहायता देने के लिये इस वर्ष माधो सिंह को भेजा गया। अगले दिन बादशाह का डेरा वलीद के समीप लगा। अगले दिन ख्वाजा शमसुद्दीन को दीवान के पद पर नियुक्त किया गया। फिर सारे अधिकारियों को अपने-अपने स्थानों की रक्षा करने के लिये भेज दिया गया। शिकारगाह के एक ओर नीमला और दूसरी बाजू पर डका था, दोनों के बीच में बारह कोस का अन्तर है। जंगल के जानवरों को घेर कर अर्जना के मैदान में लाया गया, जब सब जानवर बन्द हो गये तो बादशाह शाहजादा और कुछ घनिष्ट मित्रों के साथ छ: या सात दिसम्बर को शिकार करने आया और खूब श्किार की। फिर बादशाह जलालाबाद पहुंचा। मार्ग में उसने लमघानात देखा, वह सौन्दार के तूमान से मसूदा बाग गया।

मोहम्मद जमान का अधीन होना

जब अब्दुल्ला खां ने कुलाब छीन लिया तो शाहरूख का पुत्र मोहम्मद जमान बन्दी बनाकर कारागार में रख दिया गया, जहां उसकी मत्यु हो गई। अब करात गीन में एक

आदमी खड़ा होकर मोहम्मद जमान बन गया और कहने लगा कि ''मेरे उच्चकुल पर कृपा करके ख्वाजा किलान ख्वाजा ने जो ख्वाजा जुईबारी का पुत्र है, मुझे मेरे घातकों से बचाया था, इस प्रकार मैं तो बच गया और मेरे स्थान पर दूसरा नवयुवक मारा गया।'' उस पहाड़ी इलाके में उत्पात खड़ा हो गया, जिसमें कुलाब और अन्य अनेक स्थान फंस गये। महमूद सुल्तान ने सेना खड़ी करके लड़ाई लड़ी, जिसमें वह आहत होकर भाग गया। अल्लादाग-बेग व नूरम बेग मारे गये। उस (मोहम्मद जमान) का प्रार्थना-पत्र दो तारीख को आया, जिसके साथ उपरोक्त दोनों व्यक्तियों के सिर थे। उसने यह भी लिखा था कि ''मैं बचकर भारत में आ गया था और दरबार में उपस्थित हुआ था। मैंने शपथ ली थी कि ख्वाजा के जीवनकाल में नहीं बतलाऊंगा कि मैं कौन हूं। मैंने अपनी बात बादशाह को भी नहीं बतलाई थी और मैं हज्जाज चला गया था। अब मैं वापस लौटकर उजबेगों से लड़ाई लड़ रहा हूं। यदि बादशाह मेरी सहायता करेंगे तो मैं आसानी से अपनी गद्दी पर बैठ जाऊंगा।'' बादशाह को यह बात सत्य नहीं जान पड़ी। उसने (कपटी मोहम्मद जमान के) दूतों को आशा दिलाकर कहा, ''मैंने तूरान के शासक के साथ संधि कर ली है। अब मैं उससे लड़ाई नहीं कर सकता। तुम्हारे लिये यह अच्छा होगा कि दरबार में आओ'' बादशाह ने दूतों को कुछ रुपया और सामान देकर बिदा कर दिया।

9 तारीख को अकबर का डेरा अल्ला-बका के निकट लगा। यहां काजी अली को छोड़ दिया गया जिसको राजा टोडरमल के कहने पर कारागार में रखा गया था, यह बड़ा ईमानदार था, परन्तु इसके शत्रु बड़े-बड़े लोग थे। इसलिये यह फंस गया था। जब स्थिति का ठीक पता लगा तो बादशाह ने उस पर कृपा की। बारह तारीख को बादशाह का डेरा ख्वाजा याकूत सराई के निकट बारीक आब पर लगा।

खानखाना को वकील बनाया

खानखाना योग्य और निष्पक्ष पक्षपातहीन था। इसलिये उसको वकील बनाकर जौनपुर की जागीर दी गई, उससे गुजरात लेकर खान आजिम को दिया गया। खान आजिम से मालवा लेकर शिहाबुद्दीन अहमद को दिया गया। 15 तारीख को लाघेर में दरिया मलमास की पुत्री से शाहजादा सलीम को लड़की हुई। बादशाह ने उसका नाम दौलतनिसा रखा।

एक दुर्घटना

अठारह तारीख को जब शाही डेरा ढाका में था और बादशाह शिकार कर रहा था, तो एक जरख दिखाई दिया और बादशाह ने उसका पीछा किया तो उसके घोड़े को ठोकर लगी जिससे बादशाह गिर पड़ा और उसका मुख पत्थरों से टकरा गया परन्तु उसने स्वयं ही अपने घावों पर पट्टी बांध ली। फिर हकीम अली ने घावों पर एक ऐसे तेल की पट्टी चढ़ाई जो उसने भारतीय हकीमों से ली थी। इससे बादशाह को उसी दिन से आराम होने

लगा। वहां से बादशाह पालकी में बैठकर चला इससे पहले भारत के प्रसिद्ध वैद्य नारायण मिश्र का अटक में और भीमनाथ का जलालाबाद में देहान्त हो चुका था। 25 तारीख को बादशाह स्वस्थ होकर दिवाने आम में बैठा। उस दिन कासिम खां काबुल के लिये विदा हो गया। तख्तबेग को गजनी की जागीर मिली और उसको वहाँ जाने की इजाजत दे दी गई।

बुनीर की विजय

शाही सैनिक यूसुफ जाई लोगों को दण्ड देने के लिये गये। परन्तु उस देश की दुर्गमता के कारण वहां नहीं पहुंच सके। इस समय स्वाद से शाहबाज का प्रार्थना-पत्र आया। उसने ग्यारह जनवरी, 1590 को यूसुफ जाई लोगों से युद्ध करके विजय प्राप्त की थी।

अबुलफजल की माता की मृत्यु

10 तारीख को बादशाह ने पुल द्वारा सिन्धु नदी को पार किया और बख्शियों को आदेश दिया कि वे अपनी-अपनी चौकियों को पार उतारें। हुसेन बेग-शेख उमरी पकली से आया तो अकबर उससे कृपापूर्वक मिला। इसी दिन लेखक (अबुल फजल) को बड़ा दुःख हुआ। उसको खबर मिली कि 15 जनवरी, 1590 को उसकी स्नेहमयी माता लाहौर में इस संसार से चल बसीं। बादशाह ने अबुल फजल के साथ सहानुभूति की ओर उसको सान्त्वना दी।

22 तारीख को बादशाह ने जैनुद्दीन अली की सराय पर डेरे लगाए और दो दिन तक शिकार किया। अगले दिन वह हसन अब्दाल ठहरा और अबुल फतह की कब्र पर जाकर उसने शोक प्रकट किया। 24 तारीख को यहीं से ख्वाजगी मोहम्मद हुसेन काबुल के लिये रवाना हुआ। तारीख 2 इसफनदारमुज को कहुरिया के पास खबर आई कि राजा गोपाल जादुन की मृत्यु हो गई। उसको अजमेर का फौजदार नियुक्त किया गया था परन्तु अकस्मात् ही बियाना के पास उसकी मृत्यु हो गई। 1 तारीख को बादशाह रोहतास आया तो उसको सूचना मिली कि मसनद-ए-आली फतह खां की याद में मृत्यु हो गई। वह बड़ा ईमानदार पुरुष था, इस समय वर्षा ऋतु थी इसलिये मरियम मकानी ने इच्छा प्रकट की कि बादशाह कुछ समय के लिये दुर्ग में विश्राम करे परन्तु अकबर ने नहीं माना और 12 तारीख को पास के वन में शिकार किया। 16 तारीख को रसूलपुर के पास दो पुलें बनाकर उसने झेलम नदी को पार किया। 20 तारीख को जब वह हिलान के निकट ठहरा हुआ था तो एक दुर्घटना हुई उसको मालुल राई नामक हाथी पर सवार होना था, परन्तु वह मस्त हो गया था, इसलिए अकबर एक हथिनी पर बैठा, ज्यों ही वह बैठने लगा तो मस्त हाथी हथिनी की ओर दौड़ा और अकबर गिर पड़ा, जिससे वह कुछ देर अचेत हो गया, परन्तु थोड़ी देर में ही उसको चेत आ गया। लोगों ने अनुचित खबरें फैला दीं और दूर-दूर के परगनों में लूटमार होने लगी। कुशल लोगों ने उसके हाथ की नस खोली तो उसको तुरन्त आराम हो गया। फिर

बानी काबिन के रास्ते में उसने दो पुलों द्वारा चिनाब नदी को पार किया। अगले दिन वह स्वस्थ हो हाथी पर सवार होकर चला, परन्तु मार्ग में ही उसके पेट में दर्द हुआ जो थोड़ी देर में ठीक हो गया। अमनाबाद के निकट 25 तारीख को कुलीच खां और माधोसिंह ने आकर सलाम की।

***

प्रकरण 105

राज्यारोहण के 35वें वर्ष का आरम्भ

इस वर्ष का आरम्भ बुधवार 11 मार्च, 1590 को हुआ। तारीख 2 को अकबर ने लाहौर में प्रवेश किया। काबुल से लाहौर 196 कोस और 28 बांस दूर है। यह दूरी 2 दिन कम चार मास में और 53 मंजिलों द्वारा पार की गई थी। सारे अभियान में 10 मास 14 दिन लगे थे। 10 तारीख को मुहम्मद यूसुफ कश्मीर से आया और दरबार में उपस्थित हुआ।

मोहम्मद जमान की तुरान के शासक के पुत्र अब्दुल मुमीन सुल्तान पर विजय

यह व्यक्ति मिर्जा शाहरूख का पुत्र बनता था और प्रकट करता था कि मैं दरबार का एक स्वामिभक्त सेवक हूं इसलिये उसके पास बहुत-से आदमी एकत्र हुए और उसने बहुत-से उजबेगों को हरा दिया। उससे लड़ने के लिये अब्दुल मोमीन ने कूच किया और तीन बड़े सरदारों को और अन्य लोगों को आगे भेजा। उन्होंने आमू नदी पार करने जरगान, गुलाब पर सेना को रोकने के लिये आड़ लगा दी। उनका ख्याल था कि घाटियों से उनकी रक्षा हो जायेगी। परन्तु मोहम्मद जमान ने उस सेना को हरा दिया। फिर उसने उनका पीछा किया और अब्दुल मोमीन के निकट पहुंच गया। वह अपने हितैषियों की सहायता से भाग गया अन्यथा वह पकड़ा जाता।

राजा मानसिंह ने पेशकश भेजी

राजा मानसिंह को दरबार से बिहार सूबे में भेजा गया तो उसने योग्यता, साहस, बुद्धि और परिश्रम से काम किया और प्रान्त का अच्छा शासन किया। गीघोर के पूर्णमल ने आज्ञापालन नहीं किया तो मानसिंह ने उसके स्थान पर पहुंच कर उसे लूट लिया। तब पूर्ण मल ने अनुनय, विजय करते हुए रक्षा के लिये प्रार्थना की और अच्छे-अच्छे हाथी और चीजें भेंट की तथा अपनी पुत्री राजा मानसिंह के भाई चन्द्रभान को ब्याह दी। वहां से मानसिंह ने राजा सिंग्राम पर आक्रमण किया तो उसने अधीनता स्वीकार करके हाथी और

दुर्लभ पदार्थ भेंट किये। फिर मानसिंह पटना लौट आया और वहां से अनन्त चीरु पर अभियान किया और बहुत-सा माल लूट लिया। उस समय उसके पुत्र जगतसिंह ने अच्छी सेवा की। वह बिहार की देखरेख कर रहा था। अकस्मात् ही सुल्तान कुली कलमाक और ककेना में उत्पात खड़ा कर दिया। गोरा घाट के मार्ग से जाकर उन्होंने ताजपुर और पूर्णिया को लूट लिया। वहां से वे दरभंगा आये। फर्रुख खां को साहस नहीं रहा और वह पटना आ गया। फिर फर्रुख खां और दूसरे जागीरदार हाजीपुर की ओर चले। जब वे हाजीपुर से दस कोस की दूरी के अन्दर आ गये तो शत्रु में लड़ने का साहस नहीं रहा और वह भाग गया। जगतसिंह ने पीछा किया तो उनका बहुत-सा माल उसके हाथ लगा। राजा मानसिंह ने 54 हाथी और लूट का बहुमूल्य सामान दरबार में पेशकश के रूप में भेजा जो बादशाह के सामने प्रस्तुत किया गया।

पादरी फारमिलियोन का आगमन

26 तारीख को पादरी फरमिलियोन गोवा के बन्दरगाह से दरबार में आया तो बादशाह ने उसका आदर किया। वह बड़ा बुद्धिमान् और विद्वान् था। अकबर ने कुछ बुद्धिमान् व्यक्ति उसके पास पढ़ने के लिये रख दिये। वह चाहता था कि यूनानी पुस्तकों का अनुवाद किया जाये। इन लोगों ने पादरी से कई प्रकार का ज्ञान प्राप्त किया। कितने ही फिरंगी और अरमेनी लोग भी आये जो चीन के कपड़े और दूसरी चीजें लाये। बादशाह ने ये चीजें पसन्द की।

पकली में गड़बड़

एक हिन्दाल नामक व्यक्ति ने सुल्तान नासिर का नाम धारण करके कुछ बदमाश लोग एकत्र कर लिये। हुसेन बेग, शेख उमरी के लोगों ने साहसपूर्वक काम नहीं किया तो हिन्दाल ने पकली पर कब्जा कर लिया। तब 28 तारीख को बादशाह ने हुसेन को आदेश दिया कि बदख्शां के बहुत-से ऐमाक लोगों के साथ प्रयाण करें। उसने थोड़े ही समय में हिन्दाल को दण्ड दिया। तारीख-ए-अरदी बिहिश्त को शाह कुली खां महरम मेवात भेजा गया।

राजस्थान में उपद्रव

जब बादशाह हाथी से गिर पड़ा था तो शेखावाटी के राजपूतों के मन में दुर्विचार उत्पन्न हुए थे। उनके मुखिया लोग बादशाह की सेवा कर रहे थे, परन्तु इन लोगों ने बैराठ लूट लिया और उनके एक दल ने रेवाड़ी के लोगों को जा सताया। रेवाड़ी का संग्राहक शाहबाज खां डर कर कूल या अलीगढ़ चला गया। मेरठा के पास दियाला ने उत्पात मचाया और लूटमार की। यह खबर सुनकर शाह कुली खां को भेजा गया कि बदमाश लोगों को दण्ड दे, तो राजद्रोह थोड़े-से समय में ही दब गया। 9 तारीख को गजनवी खां को जालौर

का फौजदार बनाकर भेजा गया। जब गजनी खां विद्रोह करने लगा तो खानखाना ने जालौर दूसरे जागीरदार को दे दिया। उस दिन बाद वह दरबार में आकर बादशाह की सेवा करने लगा। उसने अपने कामों पर बड़ा पश्चात्ताप किया तो बादशाह ने उसका पुराना पद उसी को दे दिया।

20 तारीख को चन्द्रग्रहण हुआ, तो बादशाह को 8 चीजों से तौला गया और निर्धन लोगों को सन्तुष्ट किया गया। तारीख 2 खुर्दाद को जैन खां कोका, शाहजादा परवेज का संरक्षक नियुक्त किया गया और शाहजादे को उसके मकान पर भेजा गया।

कृषकों के साथ रियायत

काश्त बहुत होने लगी थी और प्रशासन उत्तम था इसलिये चीजों का भाव गिर गया था और कृषकों को सरकारी लगान देने में कठिनता होती थी। अत: इलाहाबाद, आगरा, अवध, दिल्ली के सूबों में और सहारनपुर तथा बदायूं की सरकारों में लगान का आठवां हिस्सा और सरहिन्द एवं हिसार की सरकारों में दसवां हिस्सा छोड़ दिया गया एवं इस प्रकार खालसा की भूमि पर ही 79781800 दाम छोड़े गये।

5 तारीख को सुल्तान ख्वाजा की पुत्री से शाहजादा दनियाल को एक पुत्री हुई। 10 तारीख को पकली उसके पुराने मालिक को दे दी गई। वह बहुत समय से अपने परिवार के साथ दरबार में आया हुआ था और अपने पिछले कुव्यवहार के लिये लज्जित था। इसी समय यह खबर आई कि हुसेन बेग अज्ञान वश पर्वतों की घाटियों में जा छिपा है और हिन्दाल ने उसको दबा लिया है। बादशाह किसी योग्य व्यक्ति कि नेतृत्व में उधर दूसरी सेना भेजना चाहता था। परन्तु शाहजादा सलीम ने हुसेन की ओर से क्षमा-याचना की तो बादशाह ने क्षमा प्रदान कर दी। जब उद्देश्य पूरा हो गया तो हुसेन अपने घर चला गया।

28 तारीख को अब्दुल मूमीन सुल्तान का राजदूत डूब कर मर गया। झेलम नदी को पार करते समय उसकी नाव एक भंवर में फंस गई थी। पत्र तो नहीं पढ़ा गया था, परन्तु कुछ लोगों का कहना था कि अपने यौवन के मद में आकर उसने उन बदख्सानी ऐमक लोगों को वापस मांगा था, जो बादशाह के दरबार में आ गये थे। उसी दिन काबुल से ख्वाजगी मुहम्मद हुसेन और ख्वाजा अब्दुस समद काशी ने आकर सलाम किया।

जून, 1590 में खान आजिम मिर्जा कोका, अहमदाबाद आया। गत वर्ष के अन्त में गुजरात खानखाना से लेकर उसको दे दिया गया था। परन्तु वह मालवा को अधिक अच्छा समझता था। इसलिये उसने वहां जाने में विलम्ब किया और दरबार में प्रार्थनापत्र पेश किया। परन्तु जब उसकी बुद्धि ठिकाने आई तो वह गुजरात चला गया।

कश्मीरियों को दण्ड

16 तारीख को हुसेन, मुहम्मद आदि बुरे विचार से दरबार से भाग गये। उन्होंने जम्मू

के मार्ग से पहाड़ी प्रदेश में जाकर अली रीना की शरण ली, परन्तु वे और कुछ नहीं कर सके। कश्मीर के अधिकारियों ने उन्हें पकड़ कर श्रीनगर में प्राणदण्ड दिया।

13 तारीख को मालवा से शरीफ आया। बादशाह की लेखक अबुल फजल पर बड़ी कृपा है। अबुल फजल चाहता था कि उसके पुत्र का विवाह किसी दरबारी के खानदान में हो जाये तो 28 तारीख को सआदत यार कोका की भतीजी के साथ उसके पुत्र अब्दुल रहमान का विवाह हो गया। 30 तारीख को कासिम अली खैराबाद से आकर बादशाह के सामने उपस्थित हुआ।

उड़ीसा से विजयी सैनिकों की वापसी

राजा मानसिंह ने अपनी योग्यता से बिहार प्रान्त में व्यवस्था जमा दी और वहां के विद्रोही लोगों को दबा दिया। फिर गत वर्ष के अन्त में उसने झाड़खण्ड के मार्ग से उड़ीसा की विजय के लिए प्रयाण करने का निश्चय किया। वह भागलपुर ठहरा और बंगाल के सूबेदार सईद खां को उसने अपने साथ ले जाना चाहा। परन्तु सईद खां वर्षा का बहाना करके नहीं गया तो राजा मानसिंह बर्दवान के मार्ग से रवाना हुआ। बंगाल से पहाड़ खां राय पतरदास तोफखाने के साथ उसके साथ चले। सब ने जहानाबाद में डेरे लगाये। उनका ख्याल था कि जब वर्षा बन्द हो जायेगी तो सईद मकसूस और जमीनदार उनके साथ चल सकेंगे। उड़ीसा में कुतलू ने सिर उठा रखा था। वह धारपुर पहुंचा। जहां से मानसिंह की सेना 25 कोस दूर थी। कुतलू युद्ध के लिये तैयार हो गया। उसने बहादुर कूरुथ को एक बड़ी सेना देकर रायपुर भेजा। राजा मानसिंह ने जगतसिंह के नेतृत्व में सेना रवाना की तो बहादुर कूरुथ एक दुर्ग में छिप कर चाटुता से बातें करने लगा। उसने चालाकी से जगत सिंह को बेखबर कर दिया और फिर कुतल से सहायता की प्रार्थना की। 10 खुर्दाद को जब जगत सिंह मद्यपान करके सोया हुआ था तो कुतलू ने एक बड़ी सेना के साथ उसको आ दबाया। कुतलू ने जलाल और बहुत-से वीर लोगों को उमर और ख्वाजा ईसा वकील के नेतृत्व में भेजा। जमीनदार हमीर ने बहादुर की चालाकी के विषय में जगत सिंह को सचेत किया, परन्तु जगत सिंह ने ध्यान नहीं दिया। फिर जगत सिंह ने सेना भेजी तो शत्रु जंगल में चला गया था। जब जगत सिंह ने सुना कि शत्रु भाग गया है, तो वह और भी अधिक असावधान हो गया। सायंकाल को शत्रु लौट आया तो जगतसिंह के लोग बिना लड़े ही भाग गये। परन्तु बीका राठौड़ महेशदास और नारु चारण ने वीरतापूर्वक लड़ते हुए प्राणोत्सर्ग किया। शाही सेना हार गई तो भी शत्रु के दो बड़े-बड़े आदमी मारे गये। तब हमीर जगत सिंह मारा गया। राजा मानसिंह ने एक समिति बुलाकर विचार किया कि क्या करना चाहिये। अधिकांश लोगों ने राय दी कि वापस सलीमाबाद जाकर युद्ध की तैयारी करनी चाहिये, परन्तु मानसिंह ने कहा कि ऐसा करने से शत्रु का साहस और बढ़ जायेगा। फिर मानसिंह ने युद्ध करने का निश्चय कर लिया। इसके 19 दिन बाद कुतलू खां की मृत्यु

हो गई तो ख्वाजा ईसा ने उसे युवा पुत्र नासिर को उसके स्थान पर बिठा दिया। तब अफगानों की विजय कम होने लगी। वे लोग चाटुता और अनुनय के द्वारा संधि की बातें करने लगे। उस समय भारी वर्षा हो रही थी। और लोग दुःखी थे तो उनका प्रस्ताव मान लिया और समझौता कर लिया गया जिसके अनुसार अकबर के नाम का खुत्वा पढ़ा गया और उसके नाम के सिक्के जारी किये गये और अफगानों ने वचन दिया कि वह बादशाह की आज्ञा मानेगा और जगन्नाथ का प्रसिद्ध मन्दिर खालसे में रहेगा तथा राजभक्त जमीनदारों की कोई हानि नहीं की जायेगी। फिर ख्वाजा ईसा कुतलू के पुत्र को राजा मानसिंह को पास लाया और 150 हाथी तथा उत्तम पदार्थ भेंट किये गये। मानसिंह उसको प्रोत्साहन देकर बिहार लौट गया।

23 तारीख को मुहम्मद यूसुफ खां ने कश्मीर लौट जाने की इजाजत ली तो अकबर एक मंजिल तक उसके साथ गया और उसे अनेक सलाह दी।

जैन कोका को उत्तरी पर्वतों में भेजा गया। वहां के जमीनदार अपने इलाके की दुर्गमता को देखकर तथा समझ की कमी के कारण विद्रोह करने लग गये थे इसलिये जैन कोका को उन्हें दबाने के लिये एक बड़ी सेना देकर भेजा गया। तारीख 20 मिहर को तर्दी खां अपनी जागीर से दरबार में आया। 23 मिहर को किशु राठौड़ की लड़की से शाहजादा सलीम को एक पुत्री उत्पन्न हुई, जिसका बादशाह ने बिहारबानू नाम रखा। उसी रात को मोटा राजा की लड़की से भी इसी शाहजादे को एक पुत्री उत्पन्न हुई और बादशाह ने उसका नाम बेगम सुल्तान रखा।

मरियम मकानी का प्रस्थान

मरियम मकानी शीघ्रतापूर्वक आई थी और अपने साथ पूरा सामान भी नहीं लाई थी। उसको अकबर से मिलने की अभिलाषा थी और उसका खयाल था कि वह शीघ्र ही आगरा लौट जायेगा। जब उसका विचार पूरा नहीं हुआ तो 10 अक्टूबर, 1589 को उसने बिदा मांगी, वह अपने घरेलू काम-काज को देखना चाहती थी। 28 तारीख मिहर को अकबर एक मंजिल तक उसके साथ गया और रात भर वहां रहकर उसने दूसरे दिन उससे बिदा ली। शाहजादा सलीम को आदेश दिया गया कि कई मंजिल तक उसके साथ जाये। 2 आबान को शरीफ खां के पुत्र आरिफ को आगरे में मार डाला गया। उसके दुर्व्यवहार के कारण उसकी स्त्रियां उससे बड़ी क्रुद्ध थीं इसलिये जब वह मद्य पिये हुए था तो उसको समाप्त कर दिया। 3 आबान को अकबर की सौर तुला हुई और उसको 12 प्रकार के पदार्थों से तौला गया। 7 आबान को राय रायसिंह बीकानेर भेजा गया और मसीह उलमुल्क गुजरात से आया। 11 तारीख को खान आजिम की पुत्री से शाहजादा मुराद को पुत्र उत्पन्न हुआ। बादशाह ने उसका नाम आलमसुल्तान रखा। तारीख 7 आजर को मेदनी राय गुजरात से आया। वह एक चीता और एक हिरण भेंट करने के लिये लाया था।

अहमद अली अतालिक की मृत्यु

अहमद अली के खाने का कोई समय नहीं था इसलिये वह बीमार हो गया और असंयम के कारण उसका रोग बढ़ता गया। उसमें विद्या और बुद्धि दोनों बहुत थीं। 13 तारीख को खानखाना को तीसरा पुत्र हुआ। उसने एक दावत दी जिसमें बादशाह शामिल हुआ। इसी दिन खबर आई कि शेर फुलादी, जो गुजरात में उत्पात किया करता था, मर गया है और विद्रोही लोग विफल होकर तितर-बितर हो गये। 14 तारीख को मिर्जा संजर की पुत्री शाहजादा सलीम की सेवा में प्रविष्ट हुई। उसका पिता खिजर-हजारा का पुत्र था। बादशाह के आदेश से उसको अपने घर से मंगवा कर उसकी इच्छा पूरी की गई थी।

याकूब को पकड़ा और अबिया मर गया

याकूब और अबिया दोनों भाई बचकर भाग जाना चाहते थे, परन्तु उन्हेंको अवसर नहीं मिला, तो बादशाह ने उनको राजा मानसिंह के पास भेज दिया। उसका ख्याल था कि वे घर से दूर रहेंगे तो शान्त हो जायेंगे। इनको हसन खां के साथ भेजा गया था। इन्होंने रास्ते में ही भाग जाने का प्रयास किया जिसमें अबिया मारा गया और याकूब पकड़ लिया गया।

काईन कोकलताश का दरबार में आना

इस व्यक्ति को उत्तरी पहाड़ियों में भेजा गया था। वह पठान आकर कहलूर की ओर चला जो सतलज नदी के तट पर स्थित है। वहां सब लोगों ने अधीनता प्रकट की। इन लोगों में वहां के कितने ही राजा थे। उनके साथ सवार तो केवल दस हजार ही थे परन्तु प्यादे एक लाख थे। तारीख 7 दाई को वह बादशाह की सेवा में आया। उसके साथ सारे जमीनदार राजा थे। बादशाह उनसे कृपापूर्वक मिला। उन्होंने 12 हाथी 115 घोड़े और 205 शिकारी जानवर, जिनमें बाज आदि थे, भेंट किये।

तूरानी राजदूत का आना

तूरान के शासक का अकबर के साथ राजनीतिक सम्बन्ध था। वह मित्रता और शिष्टता के सन्देश भेजा करता था। अहमद अली अतालिक वापस लौट कर नहीं गया था। इसलिये उसको चिन्ता थी। अब उसके पुत्र ने बदख्शां के ऐमक लोगों को वापस मांगा था। इस लिये भी वह परेशान था। उसने इस विषय में अपने पुत्र को फटकारा था। अब उसने पत्र के आरम्भ में ही इसके लिये क्षमा मांग ली। राजदूत का नाम मौलवी हुसेन था जो मूल्यवान भेंटें लेकर आया था। 15 तारीख को वह शाही दरबार में उपस्थित हुआ।

शिहाबुद्दीन अहमद की मृत्यु

इस वर्ष उज्जैन में शिहाबुद्दीन अहमद की मृत्यु हो गई। उसने साम्राज्य की बड़ी सेवा

की थी और कृषि की उन्नति के लिये वह अपने समय में बड़ा प्रसिद्ध था। बादशाह ने उसकी विधवाओं के प्रति सहानुभूति प्रकट की और ख्वाजा मुहिब्ब अली खां को मालवा का दीवान नियुक्त किया तथा शिहाब की जागीर उसके सेवकों के पास रहने दी।

27 दिसम्बर, 1590 को शाहबाज खां आज्ञा के बिना ही स्वाद से आ गया तो उसको फटकारा गया। यह भी मालूम हुआ कि उसने काल्पी, जो उसकी जागीर में थी, छोड़ दी है। इससे अकबर और भी अधिक अप्रसन्न हुआ और उसको कारागार में भेज दिया गया, साथ ही एक अफ़सर को मामले की जांच करने के लिये नियुक्त किया। इसी दिन हकीम अईनुल-मुल्क सलाम करने के लिये आया। मालवे में और भारत में अन्यत्र स्थानों पर उसकी जागीरें थीं। वह आज्ञा के बिना ही आ गया था इसलिये उसको दरबार में नहीं आने दिया। फिर विदित हुआ कि खान आजिम मिर्जा कोका ने उसकी जागीर छीन ली थी, इसलिये वह शिकायत करने आया था। तब उसको दरबार में बुला लिया गया।

कन्धार पर सेना भेजना

हुमायूं बादशाह ने कन्धार ईरान के शासक शाह तहमास्प के सुपुर्द कर दिया था इसलिये अकबर ने इसको वापस छीनने का विचार नहीं किया। अब ईरान का अभ्युदय पहले जैसा नहीं था। सुल्तान मुजफ्फर के दो पुत्रों ने जिनका नाम मुजफ्फर हुसेन मिर्जा और रुस्तम हुसेन मिर्जा था, ईरान के शाह के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। वे दोनों अकबर की आज्ञा का पालन करने की बातें तो करते थे। परन्तु उनका व्यवहार तदनुकूल नहीं था। इसलिये उनको विचार आया कि उधर की सेना भेजी जाये जिससे ईरान के शाह को सहायता मिले और दोनों मिर्जा आदि दरबार मे आयेंगे तो उनसे प्रेमपूर्वक मिला जायेगा और उन्हें कोई दूसरा इलाका दे दिया जायेगा और जीता हुआ इलाका किसी बुद्धिमान् और न्यायकारी अफ़सर के सुपुर्द कर दिया जायेगा, तथा उस जगह को छीनने से रोका जायेगा। इस प्रकार ईरान को सहायता देना अच्छा जान पड़ेगा।

4 जनवरी, 1590 को खानखाना ने (कन्धार पर अभियान करने के लिये) विदा ली। उसके साथ शहा बेग खां, सईद बाहुद्दीन आदि लगभग 50 बड़े अफ़सर और बहुत-से अन्य वीर और योग्य लोग भेजे गये। ख्वाजा मुकीम को बख्शी नियुक्त किया गया और उन्हें आदेश दिया गया कि सेना बलुचिस्तान के मार्ग से जाये। यदि मुजफ्फर हुसेन मिर्जा और रुस्तम हुसने मिर्जा अधीनता मान लें तो उपजाऊ इलाका उन्हें दे दिया जाये और उन्हें सेना के साथ भारत में लाया जाये, अन्यथा उन्हें दण्ड दिया जाये और न्यायकारी प्रशासकों के सुपुर्द कर दिया जाये।

ठट्टा (सिन्ध) के शासक ने बादशाह के प्रति आदर प्रकट नहीं किया था। इसलिये आदेश हुआ कि उसको सेना भेजकर उचित सलाह दी जाये, यदि वह स्वयं आये या सेना

भेज दे तो बहुत ठीक हो अन्यथा उसके साथ अभी टालटूल की जावे और वापसी के समय उसको दण्ड दिया जाये।

तारीख 1 बहमान को अकबर नाव में बैठकर प्रथम मंजिल पर खानखाना से तीन मील की दूरी पर मिलने गया। उसने खानखाना को अच्छी सलाह दी।

इसी दिन सुल्तान परवेज को एक बहन उत्पन्न हुई।

6 तारीख को गुजरात से इस्माईल कुली आया। 9 तारीख को कासिम अली को काल्पी जाने की इजाजत दे दी गई। यह उसकी जागीर थी। 22 तारीख को अकबर के दांत में दर्द हुआ, तो जोंके लगाने से उसे आराम हुआ। तारीख 3 इसफरदरमज को अकबर ने रावी नदी पार करके 8 दिन शिकार किया।

***

प्रकरण 106

36वें इलाही संवत् का आरम्भ

11 मार्च, 1511 को इस संवत् का आरम्भ हुआ। जैन खां कोका का मनसब बढ़ा कर 4000 कर दिया गया और उसको नक्कोरू का सम्मान भी प्रदान किया गया। तारीख 9 फरवरदीन को अकबर महिलाओं के साथ एक नाव में बैठकर मिर्जा कामरान के बाग में गया और बसंत का आनन्द लिया। 17 तारीख को खान आजिम को भेजी हुई भेंटें प्रस्तुत की गईं, उसने गुजरात से कुछ अच्छे हाथी और दुर्लभ पदार्थ भेजे थे। 19 तारीख को ठट्टा के राजदूत आये। उन्होंने ठट्ठा के शासक की ओर से भेंटें और पत्र प्रस्तुत किये। पत्र का सारांश यह था कि जो कुछ हो गया है प्रमादवश हुआ था। अब क्षमा दी जाये तो पिछली भूलें सुधार दी जायेंगी। अकबर ने यह बात मान कर सन्तोषप्रद उत्तर लिखवाया। तारीख 9 अरबी बिहिश्त को अकबर की चान्द्रतुला हुई तो उसको आठ पदार्थों से तोला गया।

लेखक की बीमारी

14 जनवरी, 1591 को लेखक की बीमारी बढ़ गई थी। हकीमों का अनुमान था कि उसके पित्ताशय में पत्थर है। उन्होंने औषधोपचार किया, परन्तु दर्द बढ़ता ही गया। बादशाह उससे कई बार मिलने आया। फिर दक्षिण से हकीम मिश्री दरबार में आया तो बादशाह ने उसको रोगी के पास भेजा। उसने निदान करके चिकित्सा शुरू की तो रोगी अच्छा होने लगा। स्वास्थ्य प्राप्त करके वह शाही दरबार में गया।

बुरहानुलमुल्क की सफलता

पहले ही लिखा जा चुका है कि बुरहानुलमुल्क असफल होकर वापस लौट आया था। तब से वह मालवे में अपनी जागीर पर रहा करता था। जब खान आजिम गुजरात चला गया और शिहाब खां की मृत्यु हो गई तो बुरहानुलमुल्क खानदेश के शासक राजा अली खां के पास गया। अली खां ने उसकी अच्छी सहायता की और कहा कि जब बीजापुर का सुल्तान आदिल खां अहमदनगर की ओर प्रयाण करेगा तो वह भी खानदेश से सेना भेजेगा। इस विचार से उसने कुछ सैनिक अपने राज्य की सीमा पर भेज दिये। अहमदनगर का सेनापति जबाल खां इसकी खबर सुनकर सचेत हो गया। वह बुरहानुलमुल्क के पुत्र इस्माईल को अपने साथ लेकर बुरहानुलमुल्क के आने से पहले ही बीजापुरियों से युद्ध करने के लिये रवाना हो गया। एक छोटी-सी लड़ाई हुई जिसमें उसको विजय मिली। तब बुरहानुलमुल्क बरार आया तो कई बड़े-बड़े अधिकारी उसके शामिल हो गये। जब जमाल खां को इसका पता लगा तो वह तैयारी किये बिना ही रवाना हो गया और फर्दापुर की घाटी के पास राजा अली खां ने उससे युद्ध किया, जिसमें जमाल खां मारा गया और अली खां की बड़ी विजय हुई। इस्माइल खां को बन्दी बना लिया गया, बुरहान के पास कुछ आदमी रखकर राजा अली खां वापस लौट गया और बुरहानुलमुल्क अहमदनगर पहुंच कर गद्दी पर बैठ गया।

शाह अब्बास के राजदूत का आना

जब ईरान की सर्वोच्च सत्ता सुल्तान मुहम्मद खुदा बन्दा के हाथ में आई तो हैरात ने, उत्पाती लोगों ने, मिर्जा अब्बास को बहकाया कि वह सत्ता अपने हाथ में ले ले। ईरान का शासक खुरासान आया परन्तु वह कुछ नहीं कर सका और वापस चला गया, तब मिर्जा अब्बास ने मुरशिद तबरीजी को राजदूत बना कर अकबर के दरबार में भेजा और सहायता मांगी। अकबर ने उत्तर देना भी उचित नहीं समझा और कहा कि जो अपने पिता से विद्रोह कर रहा है उसको सहायता कैसे दी जा सकती है। परन्तु अब्बास ने फिर दूसरा राजदूत भेजा। उसका नाम यादगार सुल्तान शामलु था। वह वृद्ध था परन्तु उसकी बुद्धि अच्छी थी वह 16 मई, 1591 में अकबर के दरबार में गया और अच्छी भेटें प्रस्तुत करके (अब्बास का) पत्र पेश किया, तब अकबर ने एक समिति बुलाकर सलाह की तो कुछ लोगों ने सम्मति दी कि एक शाहजादे के नेतृत्व में सेना भेजकर उजबेगों से खुरासान ले लिया जाये। परन्तु तूरान का शासक राजदूत भेजा करता था और मेल की सन्धि को दृढ़ किया करता था, इसलिये यह सम्मति स्वीकार नहीं की गई। अकबर ने कहा कि पहले सलाह दी जाये, सम्भव है कि लड़ाई न हो।

खुरासान के अफसरों ने अब्बास मिर्जा को अपना साधन बनाकर मशहद पर आक्रमण किया। शाह खुदा बन्दा सेना लेकर चला, परन्तु लौट कर ईराक आ गया। फिर उसने रात

में अब्बास के डेरे पर आक्रमण किया तो उसके बहुत-से सेनानायक मारे गये और कितने ही बन्दी बना लिये गये। अब्बास मिर्जा कुछ आदमियों के साथ हैरात चला गया तो शाह खुदा बन्दा ने उस नगर को घेर लिया। इस अर्से में खुदा बन्दा का वजीर मिर्जा सुलेमान मारा गया, तब शाह को सन्धि करके वापस लौटना पड़ा। फिर तुर्क लोगों ने जो शाह की सेना में थे उसे पुत्र तहमास्प को खड़ा कर दिया। मिर्जा अब्बास ने फिर एक लड़ाई लड़ी परन्तु वह हार कर हैरात चला गया। फिर वहाँ से वह ईराक पहुंच गया, जहां बहुत-से ईरानी उससे आ मिले और 1587 में अब्बास के नाम का खुतबा पढ़ा गया। कुछ अर्से बाद खुरासान पर भी उसका अधिकार हो गया। परन्तु उसने बड़ा लज्जाजनक और विचारशून्य रक्तपात किया। जब अकबर ने विरोध किया तो वह रुका।

इसी वर्ष मिहतर अब्राहीम कन्धार से मुजफ्फर हुसेन मिर्जा का प्रार्थना-पत्र लेकर आया। उसने बादशाह को भेंटें दीं। 18 तारीख को राजा मानसिंह ने हाथी भेजे, जो बादशाह ने हर्षपूर्वक देखे। ये हाथी राजा मानसिंह ने उड़ीसा के साथ सन्धि करके लिये थे।

मरियम मकानी आगरे से आई। जब उसके आगमन की सूचना अकबर को मिली तो उसने एक के बाद अपने दूसरे पुत्र को उसके स्वागत के लिये भेजा। 31 मार्च, 1591 को एक गांव में बैठकर अकबर इस महिला के डेरे पर गया और उसके प्रति श्रद्धा प्रकट की। अगले दिन भी वह नाव में ही रहा और फिर नगर में आया।

***

प्रकरण 107

खान अजीम मिर्जा कोका की विजय और मुजफ्फर गुजराती का अपमान

खानखाना से गुजरात लेकर कोकलताश को दे दिया गया था। उसके जाने में विलम्ब हुआ और बादशाह उस समय पंजाब में था। इसलिये गुजरात के लोगों ने सिर उठाया और गड़बड़ करने लगे। इस सबका नेता जाम था। उसने मुजफ्फर गुजराती को सेनापति बनाया और जूनागढ़ एवं सौरठ के शासक दौलत खां को सहायतार्थ बुलाया। कच्छ के शासक खंगार को भी आमन्त्रित किया। उत्पात के बढ़ने से पहले ही कोकलताश आ गया। उसने समझा कि गड़बड़ आसानी से दब जायेगी, परन्तु, वह बढ़ती गई, तब कोका ने विशेष ध्यान दिया। उससे बहुत-से जागीरदार आ मिले, परन्तु उन्होंने मन से सेवा नहीं की। उन्होंने सन्धि का

प्रस्ताव प्रस्तुत किया परन्तु उनको सफलता नहीं मिली। विद्रोही लोग लड़ना चाहते थे। कोकलताश के पास 10,000 से भी कम सैनिक थे, विद्रोहियों के पास 30,000 से भी अधिक थे। कोकलताश और विद्रोहियों ने सेना जमाई।

दोनों सेनाओं के बीच में नदी थी। नदी पर कर ली गई परन्तु दो दिन तक वर्षा होती रही। शत्रु ऊंचे स्थान पर था। कोकलताश की सेना नीचे स्थान पर थी। 14 जुलाई, 1591 को जोर की लड़ाई हुई। कोकलताश की सेना हारने ही वाली थी परन्तु एकाएक स्थिति बदल गई। जाम और मुजफ्फर भाग गये। दौलत खां आहत होकर जूनागढ़ चला गया। शत्रु के दो हजार सैनिक मारे गये। कोकलताश के 100 आदमी मरे और 500 आहत हुए। शत्रु का तोपखाना, हाथी आदि छीन लिये गये। विजय की खबर अकबर को भेजी गई तो उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया।

काजिनुरउल्ला और काजी आली को कश्मीर भेजा

विरोधियों ने यह कहानी खड़ी कर दी थी कि मिर्जा यूसुफ खां का एक विश्वस्त सेवक रुपया खां गया है। मिर्जा ने जांच किये बिना ही उसको उत्पीड़ित किया तो उसने भागकर अकबर के दरबार में आकर न्याय की भिक्षा मांगी। उसने कहा कि ''कश्मीर का भूमिकर 22 लाख खरवार निश्चित किया गया था और मिर्जा यूसुफ को कश्मीर की जागीर प्रति खरवार 22 दाम के हिसाब से दी गई थी। इस समय यूसुफ को 50 प्रतिशत अधिक मिल रहा है और प्रति खरवार 28 दाम का होता है। तथ्य का पता लगाने के लिये जांच होनी चाहिये तब 27 जुलाई, 1591 को अकबर ने काजिनुरउल्ला और काजी अली को इस काम के लिये नियुक्त किया।''

29 जुलाई, 1591 को उर्फी शिराजी की मृत्यु हो गई। वह बड़ा अच्छा वक्ता था। वह नि:स्वार्थ और नियमित जीवन वहन करता था। यदि वह और अधिक समय तक जीवित रहता तो वह बड़ी उन्नति करता। 30 अमरदाद को बीबी रूपा की मृत्यु हो गई। अकबर को इससे दु:ख हुआ और उसने रूपा के लिये ईश्वर से प्रार्थना की। वह अकबर की एक अच्छी धाय थी, उसके विचार बड़े अच्छे थे। इसलिये उसका जीवन दीर्घ रहा।

केशवदास का वध

कुछ राजपूत शेर बेग के पुत्र करम बेग को मारकर भाग गये थे। राय रायसिंह के भाई उमरा ने यह हत्या की थी। उसको हमजा ने उचित दण्ड दिया तब हमजा से बदला लेने के लिये राय रायसिंह का भतीजा केशवदास घात में बैठ गया और रात में करम बेग को मारकर भाग गया। उसने कमर बेग को हमजा का पुत्र समझा था। तब केशवदास को पकड़ने के लिये दो अहदियों को मुल्तान के मार्ग से भेजा। इनके नाम शेख आदम और शेख अजो या उल्ला थे। उन्होंने धीपलपुर और कानूला के बीच में जब शेरा के निकट केशवदास को पकड़ लिया, केशवदास और उसके 5 साथी मारे गये और तीन आदमियों

को बन्दी बनाकर लाया गया। जब दोनों वापस आये तो अकबर उनसे कृपापूर्वक मिला।

इसी रात्रि को लेखक अबुलफजल के पुत्र अब्दुर्रहमान को पुत्र हुआ। अकबर ने उसका नाम विशोतन रखा।

14 अगस्त, 1591 को शेख इब्राहीम की मृत्यु हो गई। वह चतुरता से आगरा का शासन चलाता था। अकबर ने उसके लिये ईश्वर से प्रार्थना की और उसके परिवार के प्रति कृपा की। इब्राहीम के स्थान पर शाह कुली खां महरम को, जो मेवात में था, नियुक्त किया।

दक्षिण में राजदूत भेजे

अहमदनगर पर अधिकार कर लेने के बाद बुरहानुलमुल्क अकबर की कृपा को भूल गया और लोगों पर अत्याचार करने लगा। अकबर ने निश्चय किया कि राजा अली खां के पास एक योग्य आदमी भेजकर बुरहानुलमुल्क को और दक्षिण के दूसरे सुल्तानों को सलाह दी जाये। वे क्षमा चाहें तो ठीक है अन्यथा सेना भेजकर उन्हें दण्ड दिया जाये। इसके अनुसार राजा अली खां और बुरहानुलमुल्क के पास 3 योग्य अफ़सर भेजे गये। बीजापुर के सुल्तान आदिल खां और गोलकुण्डा से सुल्तान कुतुबुल मुल्क के पास भी राजदूत रवाना किये गये।

जूनागढ़ को अफ़सर भेजे गये

विजय-प्राप्ति के बाद मिर्जा कोका ने नवानगर पहुंच कर बड़ी लूट की। जाम और मुजफ्फर भागकर पहाड़ियों में चले गये, तब कोकलताश विद्रोहियों को दबाने के लिये नवानगर में ठहर गया और उसने तीन बड़े अफ़सरों को जूनागढ़ भेजा। जब ये लोग बड़े कष्ट सहते हुए जूनागढ़ पहुंचे तो अमीन खां का पुत्र दौलत खां की घावों के कारण मृत्यु हो चुकी थी और दुर्ग को समर्पित कर देने की बात चल रही थी। शाही अफ़सरों ने कहलाया कि बात करने के लिये किसी विश्वस्त पुरुष को भेजा जाये। इसी बीच में मुजफ्फर आ गया तो दुर्गसेना का साहस बढ़ गया। कोकलताश ने निश्चय कर लिया कि दुर्ग को छीन लेना चाहिये। इसी अर्से में अहमदाबाद में गड़बड़ हुई तो मुजफ्फर उधर चला गया और नजर बेग और उसके पुत्र विद्रोह करने लगे (नजर बेग और उसके 3 पुत्र अकबर को छोड़कर बुरहानुलमुल्क से जा मिले थे) ऐसी स्थिति में मिर्जा कोकलताश ने जाम को क्षमा कर दिया और वापस प्रयाण किया।

इसी समय मालवा के विद्रोहियों के दमन की खबर आई। कोकलताश पुनः विचार कर रहा था कि जूनागढ़ को छीन लेना चाहिये, परन्तु उसके साथी पीछे हट गये, इसलिये वह अपना विचार पूरा नहीं कर सका।

***

प्रकरण 108

मालवा का शासन अपने हाथ में लेने के लिये शाहजादा सुल्तान मुराद का प्रयाण

जब दक्षिण के शासकों ने कुव्यवहार करना शुरू किया तो बादशाह ने उनको सलाह देने के लिये योग्य आदमी भेजे और फिर शाहजादा सुल्तान मुराद को मालवा का सूबेदार बनाकर रवाना किया। उसको झण्डा, नक्कारा, छत्र, सम्मानार्थ प्रदान किये। उसे आदेश दिया कि यदि दक्खिन के शासक सलाह न मानें तो उनका दमन करने की तैयारी की जाये। जब शाहजादा प्रस्थान करने लगा तो अकबर ने उससे कई राजनैतिक बातें कहीं। प्रशासन के विषय में और व्यक्तिगत जीवन के विषय में भी उसको सलाह दी।

नजर बेग की मृत्यु

25 तारीख को बादशाह ने सुना कि नजर बेग की मृत्यु हो गई है। नजर बेग और उसके पुत्रों को उच्च पद देकर हंड़िया में जागीर दी गई थी। जब बुरहानुलमुल्क दक्खिन को गया तो नजर बेग बादशाह के आदेश के बिना ही उसके साथ चला गया। नजर बेग के पुत्र भी उसके साथी थे। यह समझ कर कि गुजरात में कोई नहीं है। वह वहां गया। जब मिर्जा कोका को यह खबर मिली तो जाम से संधि करके वह वापस लौट गया। जब कोकलताश ने नजर बेग के विषय में सुना तो उसने शिष्टतापूर्वक उसको वहां से चलता किया। नजर बेग अपनी जागीर पर नहीं परन्तु दक्खिन में चला गया। कुछ समय के लिये खानदेश के राजा अली खान ने उसको अपने पास रखा परन्तु फिर उसको विफल वापस लौटा दिया। सावल के पास कालियां जाति के लोगों ने उसका रास्ता रोक कर मार डाला। तब नजर बेग के पुत्र बुरहानुलमुल्क को छोड़कर मालवा में आ गये और वहां उपद्रव करने लगे। उनको वहां से भगा दिया तो बीजागढ़ के निकट उनकी जमीनदारों से लड़ाई हुई जिसमें वे हार गये। कम्बर बेग आहत हो कर मर गया और शादी बेग न दरबार में आया तो कुलीच खां के कारन्दारों ने उसे बांध कर दरबार में पेश किया। बादशाह ने उसको बंगाल भेज दिया।

एक आबान को अकबर की सौर तुला हुई और उसको 12 पदार्थों से तौला गया। जैन खां कोका को आदेश दिया गया कि तुला के स्थान पर एक बाग लगाया जाये। अकबर ने बाग का नाम जैनाबाग रखा। अकबर उस स्थान पर एक नगर भी बसाना चाहता था परन्तु ज्योतिषियों ने उसकी स्थापना का मुहूर्त बहुत आगे बताया इसलिये यह विचार छोड़ दिया गया।

अरगूनियों की हार

यह लिखा जा चुका है कि कन्धार की विजय के लिये खानखाना के नेतृत्व में एक चुनी हुई सेना भेजी गई थी। खानखाना की जागीर सुलतान और भक्कर थी इसलिये वह सेना को गजनी और बंगस के मार्ग से नहीं ले गया। उसके साथ के लोगों ने यह भी कहा कि कन्धार में लूट कम मिलेगी और ठट्टा में अधिक मिलेगी इसलिये खानखाना ने सिन्ध विजय की अनुमति प्राप्त कर ली। जब खानखाना भक्कर के पास पहुंचा तो मिर्जा जानी बेग के राजदूतों ने आकर निवेदन किया, ''सेना का उद्देश्य कन्धार की विजय है। यह अच्छा होता कि हमारे मालिक भी इस सेना में शामिल हो जाते, परन्तु हमारे यहां उत्पात हो रहा है इसलिये उन्होंने सेवार्थ सेना भेजी है।'' इन राजदूतों को कैद करके सेना और भी शीघ्रता से आगे बढ़ी। कुछ सेना जलमार्ग से और कुछ स्थलमार्ग से चली। जलमार्ग से जाने वाली सेना सेहवान दुर्ग के नीचे होकर निकली और उसने लखी को छीन लिया। यह स्थान बंगाल की गढ़ी और कश्मीर के बारहमूला के समान है। फिर खानखाना ने सेहवान दुर्ग की विजय के लिये तैयारी की। यह दुर्ग एक पहाड़ी की चोटी पर है जो सिन्धु नदी के तट पर स्थित है। इसकी दीवार 7 गज ऊंची और 40 गज चौड़ी है। इसके निकट एक झील है जो 8 कोस लम्बी और 6 कोस चौड़ी है। इसमें नदी की तीन धारायें गिरती हैं। इसमें दुर्ग की रक्षा हो सकती है। कुछ लोग टापुओं में और कुछ नावों में रहते हैं। करा बेग और कुछ लोग नावों में बैठकर उसकी ओर चले और उन्होंने बड़ी लूट की। यह खबर सुनकर मिर्जा जानी बेग लड़ने के लिये तैयारी हो गया। उसने नसीरपुर की घाटी में एक दुर्ग बना लिया था, जिसकी रक्षा के लिये उसके पास जंगी नावें थीं और तोपखाना था। खानखाना की सेना को आगे बढ़ने में कुछ आशंका हुई। तब जैसलमेर के राजा रावल भीम और रायसिंह के पुत्र दलपत ने कहा, ''हमारा विचार भक्कर के मार्ग से आने का था पर हम मार्ग भूल गये इसलिये उमरकोट के मार्ग से आ रहे हैं। प्रधान सेनापति खानखाना को यह भय हुआ कि शत्रु सेना को दबा लेगा इसलिये उसने दुर्ग की विजय का विचार छोड़ दिया और जल तथा स्थाल मार्ग से रवाना हुआ। फिर मकसूद आका आया और शत्रु से 6 कोस की दूरी में चला गया। फिर खुसरू सरकासी आ पहुंचा परन्तु यह दोनों नदी के प्रवाह से पीछे धकेल दिये गये। फिर यह खबर सुनी कि मिर्जा जानी स्थलमार्ग से आ रहा है तो रात में ही कुछ अफ़सर नदी को छोड़ गये। आगे पानी उथला था इसलिये शत्रु की नावें आगे नहीं बढ़ सकीं। जो लोग नदी छोड़ गये थे वे दूसरे तट पर आकर गोलियां चलाने लगे। पहले बन्दूकों से लड़ाई हुई और फिर भालों और खंजरों का उपयोग होने लगा। तब शत्रु लड़ना बन्द करके भाग गया और खां जहां को बड़ी विजय प्राप्त हुई। तारीख 13 आजर को एक ऊंट सवार ने आकर बादशाह को खबर दी कि विजय प्राप्त हो गई है तो उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया।

26 आजर को आसफ खां को चिनाव और सतलज के इलाके में भेजा गया। उधर

से यह खबर आई थी कि जमीनदार लोग गरीब लोगों को सता रहे हैं इसलिये इन दोनों अफ़सरों को भेजा गया था। विभिन्न स्थानों पर नये फौजदार नियुक्त किये। मूंग में जियालमुल्क को, रसूलपुर में अल्लाह बक्स मरल को, जंदाला से लाहौर तक के इलाके में हाफिज अली को फौजदार नियुक्त किया गया। थोड़े समय में ही वहां के उत्पातियों को उचित दण्ड मिल गया। उनमें से कुछ को बांध कर दरबार में पेश किया गया।

तिब्बत के शासक की लड़की का दरबार में आना

कश्मीर पर विजय प्राप्त हुई तब ही से तिब्बत का शासक प्रार्थना-पत्र भेजा करता था। उसने यह भी सोचा था कि उसकी पुत्री शाहजादा सलीम के अन्तःपुर में प्रवेश करे। बादशाह ने इसकी अनुमति दे दी तो वह अपने देश की भेंटों के साथ आई और तिब्बत के शासक की इच्छा पूरी हो गई। तारीख 26 दाई को लाहौर में मोटा राजा की पुत्री से शाहजादा सलीम को पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम सुल्तान खुर्रम रखा।

कन्धार विजय के लिये सेना भेजना

खानखाना ने ठट्टा की विजय ठीक समझी (वह कन्धार नहीं गया) इसलिये शाहजादा सुल्तान दनियाल को बहुत बड़ी सेना देकर कन्धार भेजा गया। बादशाह ने आदेश दिया कि यदि कन्धार के मिर्जा लोग शाही सेवा करना पसन्द करें तो उन्हें शाही कृपा की आशा दिलाई जाये अन्यथा उस इलाके को जीत कर किसी योग्य अफ़सर के सुपुर्द कर दिया जाये। फिर दनियाल को वापस बुला लिया गया। तारीख 20 बहमान को खुसरू का विद्यारम्भ संस्कार किया गया। पहले उसको ईश्वर की प्रार्थना करना और फिर फारसी भाषा का प्रथम अक्षर अलीफ लिखना सिखाया और इस पुस्तक के लेखक अबुल फजल को आदेश दिया गया कि युवक शाहजादे को प्रतिदिन कुछ सिखाया जाये। फिर उसका अध्यापन अबुल फजल के छोटे भाई अबुल खेर को सौंपा गया।

राजा मधुकर के महल की लूट

जब शाहजादा सुल्तान मुराद को मालवा भेजा गया तो सब जमीनदार उससे सलाम करने के लिये आये, परन्तु राजा मधुकर नहीं आया। तब उसको पत्र लिख कर चेतावनी दी गई तो उसने नखर के निकट अपने पौत्र को भेद दिया और अपनी अनुपस्थिति के लिये बहाने बनाये। तब उसके पुनः चेतावनी दी गई और धमकाया गया। तब वह शाहजादे से मिलने के लिये चला परन्तु जब वह 4 कोस की दूरी पर था तो उसने इच्छा प्रकट की कि इस्माईल कुली खां और जगन्नाथ आकर उसको शाहजादे के पास ले जाये। इसकी अनुमति दे दी गई तो इस्माईल कुली तो शीघ्र ही आ गया परन्तु जगन्नाथ ने विलम्ब किया। तब मधुकर वापस लौट कर घाटियों में चला गया जब शाहजादे ने आदेश दिया कि उसको वापस बुलाया जाये या उसको दण्ड दिया जाये परन्तु आदेश का पालन नहीं हुआ। मधुकर

ने फिर अपने दो पुत्रों को भेज दिया जिनका नाम रामसाह और रणजीत था। तब मधुकर के महल पर आक्रमण करने में कुछ देरी कर दी गई। इसके बाद करकरा दुर्ग के पास हमीद सेन के पुत्र ने प्राणरक्षा की भिक्षा मांगी जो मुराद ने मंजूर कर दी परन्तु फिर अपना वचन भंग करके उसने दुर्ग छीन लिया। यह देखकर रामसाह आधी रात को भाग गया। तब उसका महल लूट लिया गया। अकबर ने यह कार्यवाही पसन्द नहीं की और शाहजादे को आदेश दिया कि वह मालवे के लिये रवाना हो जाये। तब शाहजादा मालवा चला गया। जब जमीनदार अमीर सेन ने यह बात सुनी तो उसने प्रार्थना का आश्रय लिया जो सादिक खां ने बादशाह तक पहुंचाई। प्रार्थना मंजूर कर ली गई। फिर बाज बहादुर को आदेश दिया गया कि वह उस जमीनदार को अधीनता प्रकट करने के लिये शाहजादे के पास ले जाये।

साम्राज्य की नई व्यवस्था

12 फरवरी, 1592 को बादशाह ने फासले की भूमि को चार बड़े-बड़े भागों में विभक्त करके प्रत्येक भाग को एक योग्य आदमी के सुपुर्द कर दिया। पंजाब, मुल्तान, काबुल और कश्मीर का एक भाग बनाकर ख्वाजा शमसुद्दीन को सौंपा गया। दूसरा भाग अजमेर, गुजरात और मालवे को बनाया और उसका शासक ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद बख्शी को नियुक्त किया गया। दिल्ली का एक अलग प्रान्त बनाया और उस पर राय अतरदास को रखा। आगरा, इलाहाबाद, बंगाल और बिहार का चौथा भाग बनाकर उस पर राय रामदास को नियुक्त किया। सब के ऊपर कुलीज खां था और सारे देश की सूचनायें उसी के पास पहुंचती थीं, परन्तु साम्राज्य का विस्तार बहुत बड़ा हो चुका था इसलिये यह नई व्यवस्था की गई थी। सिक्कों का मुद्रा-विभाग अकबर ने अपने ही हाथ में रखा। उसने सोने और चांदी के सिक्कों के दोष दूर किये।

बलराम की हत्या

बलराम राजा भगवन्तदास के भाई का पुत्र था। यौवन की तरंग में आकर उसने कई अनुचित कार्य किये जिससे अकबर ने अप्रसन्न होकर उसको राजा मानसिंह के पास बिहार भेज दिया। बनारस में मद्यपान करके वह हाथी पर सवार हुआ और एक अनुचित स्थान पर हाथी से उतरना चाहा। मिस्त्री खन्नगर नामक गायक हाथी को हांक रहा था। उसने बलराम को उस स्थान पर नहीं उतरने दिया। तब बलराम ने खन्नगर को गालियां दी तो मिस्त्री खंजर द्वारा उसको मार कर हाथी से उतर पड़ा और भाग गया।

अमरकोट छीन लिया

दलपत और रावत भीम ठट्टा जाते हुए अपनी उत्तर सेना के साथ अकबर की जन्मभूमि के समीप होकर निकल रहे थे उन्होंने उस (अमरकोट) को छीन लिया। वहां का राई (राणा

मेघराज) सेवार्थ उसके साथ ही चला गया। मार्ग के सारे कुओं में लोगों ने विष डाल दिया था और सेना के सामने बड़ा जलसंकट था। परन्तु एकाएक वर्षा ऋतु न होते हुए भी वर्षा हुई और तालाब उमड़ पड़े।

राय रायसिंह को ठट्टा भेजा

शाही सेना को नदी की लड़ाई में विजय मिल गई थी परन्तु अदूरदर्शी लोगों ने आगे बढ़ने में विलम्ब किया। इसलिये शत्रु हार कर भी डटा रहा। फिर मिर्जा जानी के बनाये हुए दुर्ग को घेर लिया और प्रतिदिन दोनों पक्षों में लड़ाई होने लगी। एक दिन शाही पक्ष का सिकन्दर बेग आहत होकर मर गया। शत्रु की स्थिति दृढ़ थी, उसकी सेना काफी थी, खाद्य-सामग्री भी खूब थी और अब वर्षा ऋतु की प्रतीक्षा कर रहा था। क्योंकि वर्षा होने पर पानी मिल जाता और शाही सेना को लड़े बिना ही वापस जाना पड़ता। शाही सेना के पास अन्न की कमी थी और वह भयभीत भी थी। इसलिये खानखाना ने सेना के लिये प्रार्थना की तो राय रायसिंह को भेजा गया। नदी के मार्ग से दो और अफ़सरों को भी रवाना किया गया और उनके साथ तोपें और बारूद भेजे।

गोवर्धन की मृत्यु

गोवर्धन राजा आसकरण का पुत्र था। राजा पृथ्वीराज छावा जाति का मुख्य पुरुष था, उसके अठारह पुत्र थे, जिनमें 10 एक ही रानी से उत्पन्न हुए थे। आसकरण की मृत्यु पर उसका ज्येष्ठ पुत्र पूरणमल राजा बना, परन्तु वह मिर्जा हिन्दाल की लड़ाई में मारा गया। पूरणमल का पुत्र सोजा अभी अल्पवयस्क था इसलिये लोगों ने पूरणमल के भाई रत्न साई को मुखिया बनाया परन्तु उसने यौवन के मद में आकर लोगों को दुःख दिया तो उसके सौतेले भाई आसकरण को उकसाया गया कि वह सुजा को मार कर मुखिया बन जाये। आसकरण ने ऐसा ही किया। थोड़े दिन तो काम चलता रहा परन्तु फिर उसके चाचा (भाई) बिहारीमल ने शक्ति हथिया ली। सुजा के पुत्र आसकरण को मारने की घात में रहने लगे। बदला लेने के लिये करण आसकरण का सेवक बन गया और अवसर पाकर उसने आसकरण के सामने ही उसके पुत्र को मार डाला। असकरण एक स्तम्भ की आड़ में आ गया, जिससे उसके प्राण बच गये। आसकरण के लोगों ने करण को मार डाला।

***

प्रकरण 109

राज्यारोहण से 37वें वर्ष का आरम्भ

शुक्रवार तारीख 11 मार्च, 1592 को इस 37वें वर्ष का आरम्भ हुआ।

इस समय खबर आई कि जलाला तूरान में असफल होकर वापस लौट आया है और तीरा की घाटियों में उत्पात कर रहा है और अफरीदी तथा उरकाजायी जातियों उससे मिल गयी हैं। तब आदेश दिया गया कि कासिम खां अफगानों की सेना एकत्रित करके उसका दमन करने के लिये जाये। सिन्ध ओर पेशावर के जागीरदारों को भी आदेश दिया कि वे आसिफ खां की सेना में शामिल हों। थोड़े समय में ही अफगान लोग प्रार्थना और चाटुता करने लगे और कहने लगे कि जलाला असफल होकर वापस चला गया है। उसके यहां पैर नहीं जमे। आसिफ खां के साथ कासिम खां भी था। वह वापस चला गया था परन्तु अकबर ने आदेश दिया कि वह आसीफ खां के पास जाये और स्थिति की परी सूचना दे।

***

प्रकरण 110

शाही सेवकों की विजय और मिर्जा जानी बेग की पराज़य

जब खानखाना ने दुर्ग को घेर लिया तो उसकी सेना में अन्न की कमी हो गई और सैनिक कुछ कष्ट पाने लगे। इसलिये उनको गतवर्ष घेरा उठाना पड़ा। फिर 3 अफसरों की देखरेख में नावों द्वारा आवश्यक खाद्य-सामग्री सेहवान दुर्ग पर भेजी गई। तो भी अधिकांश सैनिक लूटमार करने के लिये और शत्रु में आतंक फैलाकर इलाके पर कब्जा करने के लिये रवाना हुए। खानखाना जून में ठहर गया जो केन्द्रीय स्थान है। उसके उपजाऊ इलाके को, बधीन को, ठट्टा को दबाने के लिये सेना की तीन टुकड़ियां अलग-अलग भेजीं तो बहुत-से जमीनदार अधीन हो गये परन्तु जो टुकड़ी ठट्टा भेजी गई थी, वहां नहीं पहुंच सकी। ठट्टा के लोगों ने अपना नगर जला दिया। मिर्जा जानी बेग दुर्ग से निकलकर सहवान की ओर चला। यह खबर सुनकर खानखाना ने उधर की ओर बड़े-बड़े सेनानायक भेजे और उनके पीछे वह स्वयं रवाना हुआ। फिर लड़ाई की तैयारी की गई और सेना जमाई गई और

21 फखरुद्दीन को सेना लड़ने के लिये 4 कोस आगे बढ़ी। उस समय शत्रु की ओर जोर की आंधी चलने लगी। शत्रु के सैनिक बिखर गये, आंधी के अंधेरे में उन्हें एक-दूसरे का पता भी नहीं था, मिर्जा जानी के पास केवल 400 आदमी थे। शत्रु भागने लगा, उसके 300 आदमी मारे गये। शाही सैनिकों को विजय प्राप्त हो गई। यह खबर सुनकर खानखाना ने मिर्जा जानी के दुर्ग को नष्ट कर दिया।

22 फखरुद्दीन को नाव में बैठकर अकबर मिर्जा कामरान के बाग में गया और वसंत ऋतु का दृश्य देखा। अगले दिन अविया कश्मीरी से शाहजादा सलीम को एक पुत्री उत्पन्न हुई। इसी समय खबर आई कि कुरेश सुल्तान का हाजीपुर में अपच रोग से देहान्त हो गया। बादशाह ने उसके परिवार की परवरिश की 38 तारीख को इस पुस्तक के लेखक अबुल फजल को 2000 का मंसब प्राप्त हुआ, 29 तारीख को अकबर की चान्द्र तुला हुई।

***

प्रकरण 111

उड़ीसा-विजय

पहले इस देश पर प्रताप देव का राज्य था, फिर उसका पुत्र नारायण देव अपने पुत्र को मार कर राजा बन गया। तत्पश्चात् तैलंगाना से आकर मुकुन्द देव ने नृसिंह देव की सेवा करना प्रारम्भ किया। मुकुन्द देव ने धोखा देकर नृसिंह देव को मार कर राज्य छीन लिया। मुकुन्द देव भोग-विलास में डूब गया तब सिकंदर उजबेग ने अपने पुत्र बयाज़ीद को भेजकर इस देश पर अपना राज्य जमा लिया। फिर मुनीम खां खानखाना और खानजहां के समय में उड़ीसा का बहुत-सा भाग साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया। परन्तु शाही अधिकारियों की परस्पर फूट का लाभ उठा कर कुतलू लौहानी ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया। जब वह मर गया तो राजा मानसिंह ने संधि कर ली। जब तक कुतलु का वकील ख्वाजा ईसा जीवित रहा तब तक यह संधि चलती रही। अब उसकी मृत्यु हो गई तो उसने जगन्नाथ का मंदिर छीन लिया और इलाके को लूटने लगा। उस समय उस इलाके में हमीर का राज्य था, जो अर्से से अकबर की अधीनता मानता था। अब राजा मानसिंह को अपनी की हुई संधि पर खेद हुआ और उस देश पर विजय प्राप्त करने की उसने बादशाह से अनुमति मांगी। वह बिहार और बंगाल से अपने साथ सेना ले जाना चाहता था। मानसिंह 23 आबान को नदी के मार्ग से रवाना हुआ और अन्य अफ़सर और वीर लोग स्थलमार्ग से चले। कुछ जमीनदार लोग कश्मीर के शासक यूसुफ खां के नेतृत्व में झाड़खण्ड के

रास्ते से गये। जब यह सेना बंगाल में पहुंची तो वहां का सूबेदार सईद खां बीमार था। राजा मानसिंह आगे चला गया। जब सईद निरोग हुआ तो कितने ही जागीरदारों के साथ वह भी जा शामिल हुआ। उसके साथ 6000 प्यादे और 500 सवार थे। तब उड़ीसा के बहुत-से भाग पर कब्जा कर लिया गया और अफगान लोगों ने संधिवार्ता शुरू की। शाही अफ़सरों ने इस पर ध्यान नहीं दिया और उनको फटकारा कि तुमने पिछली संधि क्यों भंग कर दी। तथापि बंगाल के अफ़सर संधि के पक्ष में थे। फिर अफगान मलनापुर के जंगल में नदी की एक धारा से घिर कर लड़ने के लिये तैयार हो गये। बंगाल की सेना कुछ दूरी पर खड़ी रही। बिहार के सैनिक लड़ने के लिये तैयार हो गये। राजा मानसिंह ने सेना जमाई और नित्य प्रति लड़ाई होने लगी। शत्रु ने भी अपनी सेना जमा दी थी। तोपों, बन्दूकों, तलवारों और खंजरों से युद्ध किया गया और हाथियों का भी उपयोग किया गया। अन्त में ईश्वर की कृपा से विद्रोही लोग भाग गये। 300 से अधिक अफगान धराशाही हुए। शाही सेना के 40 वीर काम आये।

इस समय जैन खां कोका ने चाहा कि बादशाह उसके मकान पर आये तो अकबर ने उसकी इच्छा पूरी की। खुर्दाद मास के आरम्भ में अकबर ने कश्मीर जाने के विचार से रावी नदी को पार किया। अकबर की पुत्री शुक्रनिसा बहुत बीमार हो गई थी इसलिये उसको इस नगर से ग्लानि हो गई थी परन्तु जब बेगम को स्वास्थ्य लाभ होने लगा तो अकबर वापस आ गया। तारीख 2 को जैन खां कोका सवाद और बाजोर भेजा गया। यह खबर आई थी कि उत्पाती अफगानों ने अपने पर्वतों की दुर्गमता पर भरोसा करते हुए विद्रोह कर दिया है। तब कोकलताश को उनके दमन के लिये नियुक्त किया गया। तारीख 4 को सुल्तान ख्वाजा की लड़की से शाहजादा सुल्तान दनियाल के अन्तःपुर में एक लड़की का जन्म हुआ। अकबर ने उसका नाम सआदत बानू बेगम रखा।

***

प्रकरण 112

जानी बेग ने संधि की

जानी बेग ने पुनः युद्ध की तैयारी की और सहवान से 40 मील की दूरी पर सिन्धु नदी के तट पर उसने एक दुर्ग का निर्माण करवा कर उसके चारों ओर गहरी और चौड़ी खाई बनवाई तब 26 फखरुद्दीन को खानखाना ने आकर उस दुर्ग में घेर लिया और लड़ाई होने लगी। इसी अर्से में निरन कोट का दुर्ग शाही सेवकों के हाथ में आ गया। कारण यह

था कि उस दुर्ग में अरब और कुर्द लोग सैनिक थे। वे दुर्गपति क़ासिम अली का सिर काट कर शाही सेना में ले आये। फिर सहवान दुर्ग को घेरने वाली सेना के पास अन्न की कमी होने लगी और उसमें बीमारी फैल गई। फिर बीमारी स्वत: की कम हो गई और बादशाह ने सेहवान दुर्ग पर पुष्कल अन्न भेजा। तब और अधिक उत्साह से घेरा चलने लगा और दुर्गसेना संधि की याचना करने लगी। तब समझौता हो गया जिसके अनुसार सेहवान का दुर्ग, सिविस्तान का इलाका और 29 नावें समर्पित कर दी गईं और मिर्जा जानी ने खानखाना के पुत्र से अपनी पुत्री का विवाह करना मंजूर कर लिया और वह शाही दरबार में उपस्थित होने के लिये तैयार भी हो गया। तब सेहवान समर्पित कर दिया गया और सगाई की रसम हो गई।

17 तारीख को काजी हसन उत्तर की पहाड़ियों की ओर भेजा गया। लाहौर में बड़ी गर्मी थी, इसलिये उसको उपयुक्त स्थान देखने के लिये भेजा गया था। उसने उचित स्थान तो तलाश कर लिया, परन्तु बादशाह ने वहां जाने का विचार छोड़ दिया।

पूर्वी प्रान्तों के विद्रोहियों की अधीनता

विजय प्राप्त करने के पश्चात् शाही सेना शत्रु का पीछा करती हुई अगले दिन जैलासोर पहुंची जो उड़ीसा का एक बड़ा नगर है। वहां अकबर के नाम का खुत्बा पढ़ाया गया और सिक्का चलाया गया। विद्रोह को निर्मूल करने के लिये राजा मानसिंह आगे बढ़ा। सईद खां को यह पसन्द नहीं आया इसलिये वह वापस बंगाल को लौट गया परन्तु कितने ही अफ़सर सईद खां को छोड़कर राजा मानसिंह के पास आ गये। थोड़े समय में ही जमीनदारों ने अधीनता स्वीकार कर ली परन्तु फिर खबर आई कि कुतलू के पुत्रों ने और ख्वाजा सुलेमान आदि कटके के दुर्ग में एकत्र हो गये हैं और उनके पास 300 हाथी हैं। यह दुर्ग राजा रामचन्द्र का था और समुद्र तट पर स्थित था तथा सारनगढ़ कहलाता था। राजा मानसिंह ने दुर्ग पर आकर आक्रमण किया तो बिना लड़े ही वह उसके हाथ में आ गया। कटक आकर राजा मानसिंह जगन्नाथ के दर्शन करने गया। राजा रामचन्द्र ने अधीनता मान ली और अपने पुत्र बीरबल को भेंटें लेकर भेजा। इसी बीच में जेलसौर पर अफगानों ने फिर अधिकार कर लिया था परन्तु राजा मानसिंह ने उनको खदेड़ भगाया।

जब सिंध में लड़ाई बन्द हो गई थी तो जानी बेग ठट्टा चला गया था। तब विजयी सेना को आशंका होने लगी कि उनके साथ धोखा हुआ है। इसकी जांच की गई तो मिर्जा जानी बेग ने कहा कि दुर्ग की वायु दूषित हो गई थी। सैनिक अपने-अपने घर जाना चाहते थे। उसके पास कोई नहीं था इसलिए वह नसीरपुर चला गया था। फिर 31 तारीख को सहवान के फौजदार ने आकर पूर्ववत् संधि की।

तारीख 22 तीर को शाहजादा सुल्तान दनियाल ने कन्धार जाने की अनुमति प्राप्त की। रावी नदी पार करके वह रामदास के बाग में ठहरा। 4 जुलाई, 1592 को अकबर भी रवाना

होकर इसी बाग में ठहरा। इसके दूसरे दिन 300 छोटे-छोटे तारे टूट कर पश्चिम से पूर्व की ओर गये। ज्योतिषियों ने कहा कि पहली मंजिल पर ही ऐसा उत्पात हुआ है इसलिये आगे नहीं बढ़ना चाहिये। अतः बादशाह और शाहजादा वापस लौट आये।

***

प्रकरण 113

बादशाह का कश्मीर को प्रस्थान

22 जुलाई, 1592 को कई बेगमों के साथ अकबर ने कश्मीर के लिये प्रस्थान किया। 5 दिन बाद वह रामबारी से आगे चला, परन्तु वर्षा के कारण उसे अगले डेरे के लिये स्थान नहीं मिला। तब वह कुछ दरबारियों के साथ हाथियों पर बैठकर रवाना हो गया और शाहजादा सुल्तान सलीम को शिविर और सैनिकों को पीछे से लाने के लिये छोड़ गया। 28 अमरदाद को पता लगा कि कश्मीर में उपद्रव हो रहा है।

जब मिर्जा यूसुफ खां के विश्वस्त लोगों ने यह कहा था कि कश्मीर के भूमिकर की आय में वृद्धि हो गई है तो इसकी जांच करने के लिये काजी नूरुल्ला और काजी अली को नियुक्त किया गया था। काजी नूरुल्ला ने दरबार में आकर सूचना दी कि लोगों में फूट है और उनके विचारों में दुष्टता है। तब कुछ दुष्ट लोगों को बुलाया गया और हुसेन बेग शेख उमरी को आदेश दिया गया कि स्वामिभक्त लोगों को प्रोत्साहन दे। जब दुष्ट लोगों की स्थिति प्रकट हो गई तो दरवेश अली, आदिल बेग आदि ने जो मिर्जा यूसुफ बेग के सेवक थे, उत्पात करने का षड्यन्त्र किया और इसके लिये मिर्जा यूसुफ खां के चचेरे भाई यादगार को अपना साधन बनाया और वह नित्य प्रति राजद्रोह की कार्यवाहियां करने लगा। एक दिन उसके क्रुद्ध लोगों ने हुसेन बेग शेख उमरी के मकान में तीर बरसाये। वह मकान में अकेला ही था परन्तु द्वार बन्द करके डट कर खड़ा हो गया, तब कुछ लोगों ने बीच-बचाव करके शान्ति की। फिर एक दूसरी जगह पर उपद्रव खड़ा किया गया परन्तु वह भी शान्त हो गया। 22 जुलाई, 1592 को कश्मीरियों ने मार्ग बन्द करके विद्रोह खड़ा कर दिया। उसी दिन अकबर लाहौर से बाहर निकला था।

यह खबर सुनकर अकबर और अधिक शीघ्रता से प्रयाण करने लगा। उसने चिनाव नदी को पार किया। तारीख 4 शहरीयार को पता लगा कि मिर्जा की सारी सेना विद्रोही कश्मीरियों से मिल गई है और काजी अली उनसे लड़ता हुआ मारा गया है। तब हुसेन बेग ने कहा कि ''मिर्जा यूसुफ खां के लोग विद्रोह में सम्मिलित हो गये हैं इसलिये वहां

पहुंचना कठिन होगा।'' यह खबर सुनकर अकबर ने और अधिक शीघ्रता से प्रयाण किया और जैन खां कोका को आदेश दिया कि वह अपने आदमियों के साथ स्वाद के मार्ग से उधर आये। सादिक खां पूंच के मार्ग से आये। उत्तरी पर्वतों के जमीनदार जम्मू से रवाना हो जायें और पंजाब से भी कुछ किसानों को प्रोत्साहित करके भेजा जाये। हिमपात होने ही वाला था इसलिये सब ओर से सेना बुलवाई गई ताकि विद्रोहियों को दण्ड देने में विलम्ब न हो।

इस दिन मिर्जा यूसुफ खां को अबुल फजल के सुपुर्द कर दिया गया। जब उसका परिवार कश्मीर से बाहर आ गया तो उसको मुक्त कर दिया गया। पंजाब में गुजरात नगर के पास शाहजादे का और बादशाह का शिविर शामिल हो गया। सादिक खां ने आगे जाने की इजाजत मांगी परन्तु आगे पहुंच कर उसने कुछ अनुचित मांगें कीं इसलिये बादशाह ने उसको बीच में से ही वापस बुला लिया।

***

प्रकरण 114

जूनागढ़, सोमनाथ और सोरठ की विजय

जब खान आजिम ने (कठियावाड़ में) विजय प्राप्त कर ली तो उसका इरादा था कि जूनागढ़ दुर्ग को भी जीत लिया जाये और उस प्रदेश को साम्राज्य में मिला लिया जाये। परन्तु उसके साथियों ने विलम्ब कर दिया। फिर उसने नये सैनिक भरती करके प्रयाण किया तो उधर के बहुत-से विद्रोहियों ने अधीनता स्वीकार कर ली। सोमनाथ आदि 16 बन्दरगाह बिना लड़े ही छीन लिये गये, फिर खान आजिम जूनागढ़ को छीनने के लिये चला। उस दुर्ग पर अमीन खां गोरी के पौत्रों का अधिकार था। जूनागढ़ प्रसिद्ध दुर्ग है और सोरठ का प्रदेश इससे मिला हुआ है। खान आजिम ने तोपों के 7 मोर्चे लगाकर दुर्ग को घेर लिया। काफी लोग दुर्ग सेना की सहायता करते थे। इसलिये उनको दबाने के हेतु एक अफ़सर को सेनासहित रवाना किया। उसी दिन दुर्ग में आग लग गई जिससे बहुत-सा सामान भस्म हो गया। एक फिरंगी जो तोपखाने का अफ़सर था और जो मुसलमान बन गया था तथा जो अपने काम में बड़ा दक्ष था, खाई में गिर पड़ा। इस खबर को सुनकर शाही सेवकों को बड़ा हर्ष हुआ, परन्तु दुर्गसेना के पास विपुल खाद्य-सामग्री थी और दुर्ग दृढ़ था इसलिये वह डटी रही और प्रतिदिन सैकड़ों तोपों से गोले बरसाये गये। कोई-कोई गोला तो डेढ़ मन वजन का था। शाही सैनिक हतोत्साह होते थे तब कोकलताश उनको प्रोत्साहित करता

था। फिर एक पास की पहाड़ी पर मीनार बनवाकर वहां से तोप चलाना शुरू किया गया। तीन मास तक रात-दिन युद्ध होता रहा, फिर 27 अगस्त, 1592 को दुर्गसेना ने आत्मसमर्पण करके दुर्ग की चाबियां कोकलताश को दे दीं। अमीन खां गोरी के दो पौत्र, एक भतीजा और 57 मुख्य-मुख्य लोग बाहर निकल आये। कोकलताश ने समझौते के अनुसार उनके प्राण, सम्पत्ति और सम्मान की रक्षा की। सबको थोड़ी-थोड़ी जागीर दी और खिल्लत और घोड़ा प्रदान किया गया। गुजरात के सुल्तान महमूद बेघड़ा ने बड़ी सुसज्जित सेना के साथ इस दुर्ग को जीतने के लिये दो बार प्रयाण किया था। दूसरी बार लम्बे अर्से के बाद उसको सफलता हुई थी। इस समय बादशाह भीमबर के समीप ठहरा हुआ था। वहां उसको इस विजय की सूचना मिली तो उसने ईश्वर को हृदय से धन्यवाद दिया।

***

प्रकरण 115

कश्मीर के उत्पात की शान्ति, यादगार कुल का सिर दरबार में लाया गया

मिर्जा यूसुफ खां के पुत्र यादगार कुल की सेवा में उपस्थित हुए और उसने उनको उत्सुकता से भारत भेज दिया और फिर नदी पार करके वह मिर्जा के निवास पर पहुंचा। कोष, स्वर्णपात्र, हाथी, घोड़े और तोपों आदि पर अधिकार करके वह शासक के आसन पर बैठ गया। उसने फरज ए-मिम्बर पर बैठकर अपने नाम का सिक्का चलाया। मूर्खतावश उसने निकम्मे लोगों को ऊंची-ऊंची उपाधियां दीं। यादगार ने सोचा था कि मार्ग बन्द है इसलिये अकबर को शीघ्र कोई सूचना न मिले और यदि मिली भी तो उस भारी वर्षा में उसकी सेना प्रयाण नहीं कर सकेगी। शरद ऋतु में कश्मीर पहुंचना बहुत कठिन होगा। जब एक वर्ष बीत जायेगा तो अपनी (यादगार की) शक्ति बढ़ जायेगी। जब उसने सुना कि मिर्जा कैद कर लिया गया है तो उसने मिर्जा के परिवार को जाने की इजाजत दे दी। बादशाह को खबर नहीं मिली थी कि मिर्जा के परिवार के लोग आ रहे हैं। इसलिये उसने उनको लिवा लाने के लिये मिर्जा के ही एक पुराने सेवक को भेजा। जब वह पहुंचा तो परिवार के लोगों के प्राण और सम्पत्ति सुरक्षित हो गई। साथ ही यह भी खबर फैल गई कि शाही सेना आ रही है। तब यादगार कुल को होश आया और उसने कहा हुसेन बेग शेख उमरी मिर्जा शाहरूख के पुत्र को बदख्शां से कश्मीर लाकर राजद्रोह का साधन बनाना चाहता था। मैंने उसका मुकाबला किया तो उसने मुझको बदनाम किया है। जब उसकी एक कपटवार्ता

सफल नहीं हुई तो उसने घाटियों में बहुत-सी सेना भेजकर उसको दृढ़ करने का प्रयास किया। यद्यपि सब ओर से सैनिक नहीं आये थे तो भी शेख फरीद बख्शी और उसके साथियों ने (कतरबल घाटी के नीचे) एक दुर्ग बनाया और युद्ध की तैयारी कर ली उधर यादगार के सेनापति दरवेश अली ने भी घाटी के ऊपर दो दीवारें बनाकर लड़ने की तैयारी कर ली। परन्तु शाही सेना के अग्रभाग ने शत्रु को खदेड़ भगाया, फिर एक जोर की लड़ाई हुई तो शत्रु की सेना के बहुत-से आदमी मारे गये, शाही सेना के भी चार आदमी धराशायी हुए। अगले दिन शत्रु लड़े बिना ही उन दीवारों से पीछे हट गया तो शाही सेना ने समझा कि यह युक्ति है और उसने कपरतल घाटी पर कब्जा कर लिया और कुछ पशु छीन लिये। अगले दिन शाही सेना अकबाल घाटी को पार करके ठहर गई। रात्रि को मालूम हुआ कि शत्रु लड़ने के लिए तैयार है तो शाही सेना रात भर शस्त्र धारण किये हुये सचेत खड़ी रही। जब प्रातःकाल हुआ तो पहाड़ियों पर कश्मीरी लोग दिखाई दिये, परन्तु थोड़ी देर बाद वे बिखरने लग गये। सायंकाल कुछ सैनिकों के साथ शेख आ पहुंचा। मुख्य सेना पीछे थी और तारा सन्मुख था। इसलिये उसने आगे बढ़ने में विलम्ब किया। इसी बीच में मोहम्मद काशी ने आत्मसमर्पण करके सूचना दी कि यादगार भाग गया है। अगले दिन 12 सितम्बर, 1592 को वे लोग हीरापुर पहुंचे। वहां उन्होंने एक धड़ देखा ओर अनुमान किया कि वह यादगार कुल का होगा। थोड़ी देर बाद लोग उसका सिर भी ले आये तो स्थिति स्पष्ट हो गई।

यादगार के मारे जाने का विवरण

जब यादगार कुल को मालूम हुआ कि घाटी ले ली गई है तो आदिल बेगी को कुछ सेना सहित श्रीनगर में छोड़ कर वह हीरापुरा आया। 21 शहरीयूर की आधी रात को एक सेना अल्लाह अकबर का नाद करती हुई आई और यह खबर फैल गई कि अकबर आ गया है। शत्रु का सरा शिविर लूट लिया गया और यादगार को समाप्त कर दिया गया।

मिर्जा यूसुफ खां के कई बड़े-बड़े अफ़सर और सेवक षड्यन्त्र करके घात में बैठे हुए थे। जब आधी रात निकल गई तो उन्होंने अल्लाह हो अकबर का घोष करके लूटना शुरू कर दिया। यादगार भाग कर मैदान में चला गया। उसके साथ यूसुफ के अतिरिक्त कोई सेवक नहीं था। थोड़ी दूर जाकर वह एक झाड़ी में छिप गया और अपने आदमी को घोड़ा लाने के लिये भेजा। फिर एकाएक यूसुफ देख लिया गया और जब उसको यंत्रणा दी गई तो यादगार का पता लग गया। फिर शाहबाज खां आ गया और यादगार का सिर धड़ से अलग कर दिया गया। 6-7 मिहिर को उसका सिर दरबार में भेजा गया तो ईश्वर को धन्यवाद दिया गया। यादगार की माता एक अत्यन्त निर्लज्ज वेश्या थी।

इस वर्ष चारों ओर बड़ी-बड़ी विजय हुई। ठट्टा के शासक ने अधीनता प्रकट की। सेविस्तान साम्राज्य में मिला लिया गया। उड़ीसा की विजय हुई, पूर्वी प्रान्तों ने अधीनता

स्वीकार की, जूनागढ़ और सोमनाथ छीन लिये गये, मुजफ्फर को पकड़ लिया गया। यादगार कुल मारा गया। कश्मीर पर प्रभुत्व जम गया। अन्त:पुर और शिविर को शाहजादा सुल्तान दनियाल की देखरेख में रोहतास से अकबर की वापसी तक वहीं ठहरना था। सुल्तान खुशरू को बीमार ही छोड़कर अकबर ने प्रस्थान करने का निश्चय कर लिया। वह अपने साथ कुछ महिलाओं को ले जाना चाहता था। परन्तु मार्ग की दुर्गमता और शीत की दारुणता के कारण नहीं ले जा सका। शाहजादा सलीम को पूछताछ करने के लिये आगे भेजा। उस दिन अकबर ने भीमबर को पार किया, दूसरे दिन नोशेरा में डेरे लगाये गये। उस दिन शाहजादा वापस आ गया, वह हस्तीवतर के मार्ग से कश्मीर गया था और पीर पंजाल के मार्ग से वापस आया था। उसने मार्ग की दुर्गमता और हिमपात का वर्णन किया तो महिलाओं को साथ ले जाने का विचार छोड़ दिया गया। पीर पंजाल का मार्ग कुछ ठीक था। इसलिये अकबर ने उसी मार्ग से प्रयाण किया।

जब वह पुशाना पहुंचा तो वहां उसका घोड़ा फिसल गया तो वह फुर्ती के साथ उतर गया। दूसरे दिन अकबर ने पीर पंजाल की घाटी को पार करके नारी बरारी के निकट अपना डेरा लगाया। उस दिन भी उसका घोड़ा फिसल गया परन्तु वह बच गया। 23 तारीख को अकबर राजधानी में पहुंचा, विद्रोह तो पहले ही दब गया था। अब अकबर के आगमन पर किसी भी गांव में कोई बस्ती नहीं थी। जब लोगों को अकबर की हितैषिता पर विश्वास हो गया तो वे वापस आ गये। दो आबान को अकबर की सौर तुला हुई और उसको 12 प्रकार के पदार्थों से तोला गया। ईदगाह में 14000 गरीब आदमियों को दान दिया गया। यह कार्य अबुल फजल ने किया।

जैन खां कोका की सफलता

बादशाह ने जैन कोका को स्वाद और बाजोर में नियुक्त किया था। जब कश्मीर में उत्पात हुआ तो वहां के अफगानों ने भी विद्रोह कर दिया। उस प्रदेश में कोई अच्छी सेना नहीं थी तो गागीयानी और मोहम्मद जाई लोगों ने मिलकर मोहम्मद कुली तुर्कमान को जो वेग्राम में था, तलाश करके मार डालने का प्रयास किया। तारीख 7 अमरदाद को कोका स्वाद पहुंचा और उसने उस दुर्जय मुल्क को जीत लिया। फिर वह बाजौर गया। वहां लोग इसका सामना नहीं कर सके, उसने हरेक मंजिल पर दुर्ग बना कर पर्वतीय देश में प्रवेश किया था। उसने चंकारी नामक दुर्ग छीन लिया और विद्रोहियों की शक्ति नष्ट कर दी।

तारीख 9 को अकबर नाव द्वारा केसर के खेतों को देखने गया। इनकी बराबरी गुलाब के खेत भी नहीं कर सकते थे। इनके पुष्प कामल जैसे हैं। परन्तु इनकी मोहकता का वर्णन नहीं किया जा सकता। इस समय तूरान के राजदूत मुल्ला हुसेन की मृत्यु हो गई। उसको लाहौर में छोड़ दिया गया था। परन्तु वह अपच से मर गया। बादशाह के आदेश से उसके कुटुम्ब को सन्देश भेज दिया गया। इसी समय ख्वाजा शमसुद्दीन आया। उसको लाहौर से

इसलिये बुलाया गया था कि कुछ समय के लिये कश्मीर को खालसा में लेकर वहां का प्रबंध उसके सुपुर्द कर दिया जाये। 12 तारीख को दिवाली मनाई गई। बादशाह के आदेश से नदी के तटों पर और मकानों की छतों पर रोशनी की गई। उसी दिन शम्सचक की लड़की ने अन्तःपुर में प्रवेश किया। शम्सचक इस देश का एक बड़ा आदमी था और अर्से से उसकी ऐसी इच्छा थी। जमीनदारों को शान्त करने के लिये हुसेन चक के पुत्र मुबारक खां की पुत्री को शाहजादा सुल्तान सलीम के अन्तःपुर में ले लिया गया। इसी प्रकार विवाहों के द्वारा कुछ देश आपस में मिल गये। इस वर्ष मुहम्मद हकीम के ज्येष्ठ पुत्र मोहम्मद कुबाद को कारागार में भेज दिया गया। वह मद्यपान बहुत करता था। इस समय एक प्रकार की स्याही का आविष्कार किया गया जो पानी से या रगड़ने से नहीं मिटती थी। बादशाह ने उसको देखकर चतुर आदमियों से कहा कि उसका उपयोग किया जाये।

***

प्रकरण 116

बादशाह की भारत को वापसी

वापसी के समय अकबर कश्मीर को मिर्जा यूसुफ खां के सुपुर्द करना चाहता था। परन्तु यूसुफ कश्मीर की आय वृद्धि को नहीं मानता था। साथ ही वह इस विषय में लज्जित भी था। अतः बादशाह ने कश्मीर को खालसा करके ख्वाजा शमसुद्दीन के सुपुर्द कर दिया और उसको 3000 सवार दिये। फिर 20 आबान, 21 अक्टूबर, 1592 को एक नाव में बैठकर अकबर भारत की ओर रवाना हुआ, शाही सेना स्थलमार्ग से चली। उस दिन अकबर अन्दर कुल ठहरा, जहाँ मिर्जा हैदर का भव्य और विशाल निवास-गृह था। शाहजादा सुल्तान सलीम की प्रार्थना पर कश्मीर मिर्जा यूसुफ खां को जागीर में दे दिया गया और उसको वहां भेज दिया। मिर्जा यूसुफ की जागीर जो भारत में थी खालसे में ले ली गई और कश्मीर की केसर की खेती, रेशम और शिकार भी खालसा कर लिये गये। 23 आबान को अकबर बूलर झील पर पहुंचा जिसका घेरा 20 कोस का है और जिसमें होकर सतलज नदी भारतवर्ष की ओर जाती है। प्रातःकाल शाही डेरा बारह भूला में लगाया गया। बहुत-से सैनिक छुट्टी लेकर अपने घर चले गये थे तो भी अकबर के साथ सेना थी। 13 नवम्बर, 1592 को रात भर हिमपात होता रहा। बादशाह मांगली नामक गांव में ठहरा। 7 आजर को उसने शीघ्रता से प्रयाण करके रावल पिंडी, रबात, नगरकोट, थाना और सराई चरवा पार किया। भाई सादिक खां मिलने आया। अभियान के आरम्भ में वह बीमार हो गया था इसलिये उसको

लाहौर में छोड़ दिया गया था। सादिक का पुत्र और राजा मधुकर का पुत्र राम शाह भी बादशाह से मिले। राजा मधुकर बीमार था इसलिये स्वयं नहीं आया। जब अकबर कश्मीर में था तो सादिक खां अनुमति प्राप्त करके राजा मधुकर को दबाकर मालवे में शाहजादा मुराद के पास लाने के लिये गया था। अकबर ने सादिक खां को इजाजत दे दी कि वे धीरे-धीरे पीछे से आयें और पालकी द्वारा सफर करें। तारीख 8 को अकबर रोहतास पहुंचा, वहां महिलायें उसकी प्रतीक्षा कर रही थीं। रोहतास के पास शाहजादा दनियाल और शाहजादा सुल्तान खुसरू भी अकबर से मिले।

***

प्रकरण 117

सुल्तान मुजफ्फर गुजराती का अन्त

जब जूनागढ़ ले लिया गया और वहां के जमीनदारों ने अधीनता स्वीकार कर ली तो कोकलताश ने अपनी सारी शक्ति मुजफ्फर को पकड़ने में लगा दी। मुजफ्फर विफल होकर हालार देश के शासक शिवाबाद हेल के पास चला गया था। द्वारिका का मन्दिर शिवाबाद हेल का था। कोकलताश ने उधर की ओर दस बड़े-बड़े सेनानायक और सैनिक भेजे, जिन्होंने 16 महर को द्वारिका पहुंच कर लड़े बिना ही उसे ले लिया। वहां मालूम हुआ कि मुजफ्फर शिवा के निवास-स्थान पर छिपा हुआ है। तब कादर कुली को तो द्वारिका में छोड़ा गया और दो सैनिक दल बनाये गये। एक दल नौरंग खां के नेतृत्व में मुजफ्फर के दमन के लिये चला और दूसरे दल ने भी उसी दिशा में प्रयाण किया। सायंकाल दोनों दल शिव के निवास-स्थान पर पहुंच गये तो जोर की लड़ाई हुई। इससे कुछ पहले ही शाही सेना के आगमन की खबर मिल गई थी, जिससे क्षुब्ध होकर शिवाबाद ने मुजफ्फर और उसके कुटुम्ब को नाव में बैठाकर टापू में भेज दिया था, जहां एक दुर्ग भी था और फिर शिवाबाद भी वहां चला गया था। शाही सेना ने उसका पीछा किया तो शिवाबाद ने लड़ाई लड़ी, जो सायंकाल तक चलती रही। फिर शिवाबाद को एक तीर लगा जिससे उसका प्राणान्त हो गया। जो लोग संग्राम को दण्ड देने के लिये गये थे वे भी सफल हो गये। कुछ लोग कहते थे कि मुजफ्फर डूब गया। उसको वास्तव में कच्छ के शासक, बिहारा जाडेजा ने छिपा रखा था। 26 आबान को खान-ए-आजम जूनागढ़ से आ गया और मीर अब्दुर रजाक मामूरी भी आ पहुंचा। जाम ने अपनी सेवा अर्पण की। कच्छ के शासक ने कहलाया कि मैं सेवा करने के लिये तैयार हूं तो कोकलताश ने उत्तर दिया कि ''मुजफ्फर को समर्पित करो और स्वयं आओ।'' तब मुजफ्फर को सूचना मिली कि बिहारा उससे मिलने के लिये

आ रहा है। जब मुजफ्फर बाहर निकला तो उसको पकड़ लिया गया। रात भर वह उन लोगों के साथ चला और दूसरे दिन उसने उस्तरे से अपना कंठ काट डाला तो उसका सिर धड़ से अलग करके नौरंग खां के दरवाजे पर टांग दिया गया। फिर निजामुद्दीन अहमद उसको दरबार में ले गया।

***

प्रकरण 118

बादशाह की लाहौर को वापसी

अकबर रोहतास में ठहरा हुआ था। वहां से उसने लाहौर की ओर प्रयाण किया और 29 दिसम्बर, 1592 को वह वहां पहुंच गया। श्रीनगर से रोहतास 112 कोस और 30 बांस है। इस दूरी को अठारह मंजिलों में पार किया गया था और लाहौर से रोहतास 162॥ कोस और 16 बांस है। यह दूरी 34 मंजिलों द्वारा पार की गई थी। इस समय भेटा के शासक रामचन्द्र के पुत्र बलबहादुर को ऊंचा पद प्राप्त हुआ। उसका पिता उसे बादशाह की सेवा में छोड़ गया था। अब खबर आई कि उसके पिता रामचंद्र की 27 शहरीयूर को मृत्यु हो गई है। अकबर ने उसको पिता पा पद देकर राजा बनाया और स्वदेश को बिदा किया। इसी दिन गुजरात का बख्शी ख्वाजा सुलेमान आया। उसने मिर्जा की भेंटें प्रस्तुत कीं। तारीख 2 बहमान को खबर आई कि गाजी खां कजवानी की अपच से बंगाल में मृत्यु हो गई।

उत्तर के पर्वतीय प्रदेश के जमीनदार आज्ञा नहीं मानते थे। जब कश्मीर पर अभियान किया गया तो वे साथ नहीं गये थे। अकबर ने सेफुल्ला और काजी हसन को उधर की ओर भेजा। कुछ जमीनदार तो आये, परन्तु जम्मू का शासक लालदेव नहीं आया, तब जैन खां उसको अपने साथ लेकर दरबार में आया और उत्तर का विद्रोह शान्त हो गया। इसी समय रामचन्द्र का निवास लूट लिया गया। वह उड़ीसा का एक प्रसिद्ध जमीनदार था। वह बादशाह की बात मानता था और उसके अपने पुत्र को शाही सेवा करने के लिये भेज दिया था। जब राजा मानसिंह ने रामचन्द्र को बुलाया तो नहीं आया। तब मानसिंह ने अपने पुत्र जगतसिंह को 10 बड़े-बड़े सेनानायकों के साथ उससे लड़ाई लड़ने के लिये भेजा। रामचन्द्र अपने दृढ़तम दुर्ग खुर्दा में जा छिपा। जब शाही सैनिकों ने उस प्रदेश पर आक्रमण किया और कई अन्य दुर्ग छीन लिये गये। यह खबर सुनकर अकबर को क्रोध आया तो मानसिंह

ने अपनी सेना वापस बुलाकर क्षमा मांग ली। तब 21 बहमान को रामचन्द्र, राजा मानसिंह से मिलने आया तो उसके साथ आदरपूर्ण व्यवहार किया गया।

अफगानों का उपद्रव

जब उड़ीसा के विद्रोहियों का दमन हो गया तो राजा मानसिंह ने वहां के कई अफगान सरदारों को खलीफाबाद में जागीरें दी और ताहीर खां तथा ख्वाजा बाकीर अनसारी को उनके साथ भेजा। इसके बाद मानसिंह ने उनकी जागीरें छीन ली और उन्हें अपने पास बुला लिया। तब अफगान लोग डरकर राजद्रोह करने लगे। जब बाकीर कुछ हाथियों के साथ अपनी जागीर पर जा रहा था तो अफगानों ने उसे लूट लिया और वह आहत होकर चला गया। तब मानसिंह ने अपने पुत्र हिम्मत सिंह को थोड़ी सेना देकर भेजा। अफगान लोग चांदराय के मकान पर चले गये। हिम्मत सिंह कुछ आगे बढ़कर वापस मुड़ गया। जब अफगान लोग चांदराय के स्थान पर पहुंचे तो उसने उनको पकड़ना चाहा, परन्तु इसमें उसकी मृत्यु हो गई फिर अफगानों ने चांदराय का दुर्ग छीन लिया, परन्तु फिर चांदराय के पिता केदार राय को लौटा दिया। उसी समय मानपुर का दुर्ग भी ले लिया गया, परन्तु राजा मानसिंह ने वह राजा रामचन्द्र को दे दिया।

इस वर्ष मिर्जा कामरान की पुत्री गुलरुख बेगम ने प्रार्थना की कि उसकी लड़की को शाहजादा सलीम के अन्तःपुर में प्रविष्ट कर लिया जाये। अकबर ने यह बात स्वीकार कर ली और उत्सव मनाया तथा भोज दिया। मरियम मकानी के निवास पर शुभ मुहूर्त में विवाह हुआ।

तारीख 23 को वर्द्धमान में पहाड़ खां की मृत्यु हो गई। उसके उत्तराधिकारियों के प्रति उचित कृपा की गई।

***

प्रकरण 119

राज्यारोहण से 38वें वर्ष का आरम्भ

10 या 11 मार्च, 1593 को इस वर्ष का आरम्भ हुआ।

8 फखरुद्दीन को खानखाना सिंध से आकर दरबार में उपस्थित हुआ। मिर्जा जानी भी बादशाह से मिला। संधि के बाद बादशाही सेना सहवान से 20 कोस दूर सन्न में ठहर गई थी और मिर्जा की प्रतीक्षा कर रही थी; क्योंकि मिर्जा को दरबार में जाना था। फिर

एकाएक खबर आई कि मिर्जा अस्वस्थ है और लम्बी यात्रा नहीं कर सकता इसलिये वह भूमिकर का संग्रह करके जायेगा, साथ ही यह भी समझौता हुआ था कि सहवान से इधर की ओर का इलाका उसको वापस लौटा दिया जायेगा परन्तु पूरन और हालाकंडी अभी नहीं लौटाये थे। शाही सेवकों ने मिर्जा जानी के दूत को अपनी निगरानी में ले लिया और शाह बेग खां, गाजी खां आदि सिन्धु नदी को पार करके ठट्टा की ओर चले। बख्तियार बेग आदि कितने ही सैनिक नावों में नदी द्वारा रवाना हुए। शेर खां आदि नदी के किनारे-किनारे चले। यह निश्चय किया गया कि तीनों दल आपस में सम्पर्क रखें और मार्ग में नसीरपुर को छीन लें। अभिप्राय यह था कि मिर्जा दरबार में जाये। कुछ दिन बाद खानखाना ने सलाह देने के लिय एक दूत भेजा और वह भी उसके पीछे आया। सेना ने नसीरपुर छीन लिया। मिर्जा ठट्टा से बाहर निकल पर 3 कोस की दूरी पर ठहरा। जब खानखाना नसीरपुर पहुंचा तो तीनों दलों को पूर्ण व्यवस्थानुसार आगे भेजा। उन्होंने आक्रमण करके मिर्जा के शिविर को लूट लिया। तब मिर्जा ने अधीनता प्रकट करके अपने आदमी भेज कर पुछवाया कि संधि भंग क्यों कर दी। तो उत्तर दिया गया, ''हम संधि भंग नहीं कर रहे हैं परन्तु हमने सुना है कि और मुज के फिरंगी इधर आने का विचार कर रहे हैं इसलिये हम बन्दर लहरी जाना चाहते हैं।'' लूट का माल भी वापस कर दिया गया और क्षमा मांगी गई। खानखाना को सदैव मेल-मिलाप की इच्छा रहा करती थी। पिछले वर्ष 10 आबान को वे दोनों एक-दूसरे से घोड़ों पर बैठे हुए मिले और खानखाना ठट्ठा तक गया। प्रत्यक्ष में वह उस नगर को देखना चाहता था परन्तु वास्तव में वह नदी के नीचे के भाग को सुरक्षित रखना चाहता था। वह उधर की ओर थोड़ी दूर गया और जब उसका मन शान्त हो गया तो वह वापस आ गया। मिर्जा के साथ मैत्री स्थापित हो चुकी थी इसलिये मिर्जा को चाहिये था कि अपनी नौ सेना अर्पण कर देता, फिर किसी को आलोचना करने का मौका नहीं मिलता। इस प्रकार मिर्जा को अपना सारा देश शाही सेना के सुपुर्द करना और दरबार में जाने की तैयारी करनी पड़ी। ठट्ठा देखने के बाद खानखाना बन्दर लहरी गया। उसने 4 बड़े सरदारों को मिर्जा के साथ जाने का आदेश दिया। फिर वह ठट्ठा से रवाना होकर मिर्जा के साथ दरबार में गया। मिर्जा खानखाना के साथ गया और उसका कुटुम्ब स्थलमार्ग से चला। ठट्ठा के जागीरदारों में से 5 जागीरदार दरबार में उपस्थित हुए।

मिर्जा जानी प्यादा मोहम्मद का पुत्र था और शकल बेग तरखान का वंशज था

शकल बेग तरखान का पिता अतकू तीमूर एक लड़ाई में लड़ता हुआ मारा गया था। इसलिये साहिब किरानी तीमूर ने उसको तरखान पद प्रदान किया था। मुगल शासकों में यह प्रथा थी कि जो सेवक अच्छी सेवा करता था उसको यह पद दिया जाता था। तरखान के नौ अपराध क्षमा किये जाते थे। जब कोई तरखान दसवां अपराध करता था तो उसकी पूछताछ की जाती थी।

मिर्जा अब्दुल अली ऊंचा पद प्राप्त करके बुखारा का शासक बन गया था। शम बेग खां उज्जबेग उसकी सेवा करता था। वह अपने स्वामी और उसके 5 पुत्रों को मारकर बुखारा का मालिक बन गया। फिर शाह बेग ने खुरासान के सुल्तान को एक युद्ध में मार डाला और उसके पुत्र को कन्धार में कैद कर दिया। तब शाह बेग ने काबुल से बाबर को बुलाया और कहलाया, मैं आपकी सेवा करना और खुरासान जाना चाहता हूं। जब बाबर आया तो शाह बेग ने उससे लड़ाई लड़ी परन्तु हार गया। बाबर ने नासिर मिर्जा को कन्धार में नियुक्त कर दिया। फिर शाहबेग का भाई शहबानी ने कन्धार पर आक्रमण किया परन्तु वह सन्धि करके वापस लौट गया। फिर न जाने क्यों नासिर काबुल चला गया तो शाह बेग ने तुरन्त कन्धार पर कब्जा कर लिया। फिर बाबर ने शाह बेग पर आक्रमण किया तो शाह बेग उसका सामना नहीं कर सका और कन्धार के किले में बन्द हो गया, परन्तु दो वर्ष बाद उसने बाबर से सन्धि कर ली। फिर शाह बेग ने सेहवान दुर्ग पर आक्रमण किया और जाम नन्दा से सिविस्तान छीन लिया। नन्दा जादुन जाति का राजदूत था जो सम्मा कहलाते थे। फिर जाम नन्दा के पुत्र के समय में शाहबेग ने समस्त सिन्ध पर अधिकार कर लिया और लंगा लोगों से मुल्तान भी छीन लिया। शाह बेग की मृत्यु पर शाह हुसेन उसका उत्तराधिकारी बना। शोक के समय में बाबर शाह हुसेन से मिलने आया परन्तु शाह हुसेन ने मूर्खतावश उससे लड़ाई की। फिर उसने मिर्जा ईसा से युद्ध किया जिसके फलस्वरूप सिन्ध 5 भागों में विभक्त कर दिया गया। 3 भाग मिर्जा ईसा के, 2 भाग मिर्जा शाह हुसेन के हिस्से में आये। जब शाह हुसेन मर गया तो सारा सिन्ध मिर्जा ईसा के हाथ में आ गया। ईसा के बाद मिर्जा बाकी उसकी गद्दी पर बैठा। बाकी पागलपन में आत्मघात करके मर गया। तब अरगून लोगों ने मिर्जा पाइन्दा को उसकी जगह पर बैठा दिया परन्तु वह पागल था इसलिये मिर्जा जानी बेग को शासक बनाया गया।

15 फखरुद्दीन को शाहम खां जलेर और कासिम खां तमखी शाही दरबार में उपस्थित हुए। उसी दिन अकबर की चान्द्र तुला हुई और उसको 8 पदार्थों से तोला गया। उसी दिन ठट्ठा मिर्जा शाहरूख को जागीर में दिया गया और मिर्जा जानी बेग को तीन हजार का मनसब और मुल्तान का प्रान्त जागीर में मिला। शाह बेग खां को 2500 का मनसब और सईद बहाउद्दीन को 1000 का मनसब दिया गया। इसी दिन मिर्जा कुबाद को कारागार से मुक्त किया गया।

मिर्जा कोका का हज जाना

मिर्जा असीस कोका को खयाल था कि बादशाह उससे नाराज है। जब अकबर उस पर कृपा करता तो वह अकबर की कृपा को फटकार समझता था। कोका कई शाही सेवकों को अपनी-अपनी जागीरों पर भेजकर जूनागढ़ के लिये रवाना हो गया परन्तु वह फिर जूनागढ़ के बजाय द्वारिका की ओर चलने लगा। फिर अपने घनिष्ट मित्रों को भेद की बात

बतला कर वह पोरबन्दर की ओर चल दिया और पोरबन्दर से मार्गरौल पहुंचा, जो जूनागढ़ के इलाके में है। उसने यह प्रकट किया कि मैं दीडयू बन्दरगाह को छीनना चाहता हूं। उसने ईसाइयों को विषम स्थिति में डाल दिया तो उन्होनें सन्धि कर ली, जिसके अनुसार यह ठहरा कि जहाज-ए-इलाही जो प्रति वर्ष दीडयू से रवाना होता है और वहीं यात्रियों से भरा जाता है। इस साल आधा भरा जायेगा तो किसी ने कोका के काम में हस्तक्षेप नहीं किया। उसने जाम को और कच्छ के बिहारा को लिखा कि मैं सिन्ध के मार्ग से दरबार में जा रहा हूं तुम मार्ग में मेरे लिये खाने--पीने की व निवास की व्यवस्था करो। 25 मार्च, 1593 को वह सोमनाथ के निकट स्थित बलावल बन्दरगाह पर जहाज-ए-इलाही में सवार हुआ, साथ में उसके छः पुत्र, छः पुत्रियां और उनकी मातायें थीं और लगभग 100 आदमी थे। जहाज रात्रि में ही रवाना हो गया।

जब अकबर को कोका की यह चालाकी मालूम हुई तो उसने क्षमा प्रदान कर दी और ईश्वर से प्रार्थना की कि उसकी समुद्री यात्रा सफल हो। उसने यह भी कहा कि अजीज कोका से मैं प्रेम करता हूं और उसका हित चाहता हूं। उसने कोका के पुत्रों और सेवकों के साथ उदारता का बर्ताव किया और उसके ज्येष्ठ पुत्र शमसी (जहांगीर कली) को 1000 का मनसब और उपजाऊ जागीर दी।

शाहजादा सुल्तान मुराद की गुजरात में नियुक्ति

जब मिर्जा कोका गुजरात से चल दिया जो शाहजादा सुल्तान मुराद को वहां का सुबेदार नियुक्त किया गया और आदेश दिया गया कि जब मालवा में दूसरा सुबेदार पहुँच जाये तो वह प्रान्त को उसे सौंप कर गुजरात चला जाये।

इसी समय दक्षिण से शेख फैली एक वर्ष आठ मास और चौदह दिन बाद वापस दरबार में लौटा। वह दूतकार्य करने के लिये गया था। बुरहानुलमुल्क (अहमदनगर) ने उसकी बात नहीं सुनी और बादशाह के लिये उपयुक्त भेंटें भी नहीं भेजी। राजा अली खान ने बादशाह के आदेश का किंचित् पालन किया और अपनी पुत्री भेटों के साथ शाहजादा जहांगीर के लिये रवाना कर दी।

शाहबाज खां की मृत्यु

शाहबाज खां को सफलता मिली इसलिये उसकी बुद्धि पर पर्दा पड़ गया था और अकबर ने उसको (कांगड़ा के दुर्ग में) कैद कर दिया था। दो वर्ष बाद उसको मुक्त कर दिया और उस पर कृपा की गई।

30 तारीख को शेरबेग बंगाल से आया और उसने 127 हाथी पर अन्य पदार्थ भेंट किये जो राजा मानसिंह को बंगाल की विजय के समय मिले थे।

इस समय नकीबा ने बादशाह से निवेदन किया कि मेरा चाचा काजी ईसा अपनी

पुत्री आपको भेंट करना चाहता था और इस लड़की की बहुत दिन से यही अभिलाषा है। बादशाह ने यह प्रार्थना स्वीकार कर ली। तारीख 12 तीर को नकीब खां के मकान पर जाकर उस लड़की को ग्रहण किया।

इसी दिन मोटा राजा ने सिरोही जाने की इजाजत मांगी। वह सिरोही के राव का दमन करना चाहता था।

पहले इस्माईल कुली खां को शाहजादा सुल्तान मुराद का अध्यापक और संरक्षक बनाया गया था। परन्तु उसने काम अच्छा नहीं किया इसलिये उसके स्थान पर सादिक खां की नियुक्ति की गई। तब सब व्यवस्था ठीक हो गई।

12 अमरदाब को बादशाह ने राय रायसिंह के निवास पर जाकर सहानुभूति प्रकट की। उसकी बड़ी पुत्री का विवाह राजा रामचन्द्र के पुत्र से हुआ था। रामचन्द्र की मृत्यु हो जाने पर उसके पुत्र को पन्ना का राजा मान लिया गया था। पन्ना जाते समय वह पालकी से गिर पड़ा। उसकी चिकित्सा करवाई गई परन्तु स्वदेश पहुंचते-पहुंचते खेरा कस्बे के निकट उसकी मृत्यु हो गई। इसकी सूचना मिलने पर रायसिंह की पुत्री ने सती होने का विचार किया परन्तु बादशाह ने उसको यह कहकर रोका कि तुम्हारे छोटे-छोटे बच्चे हैं।

ठट्ठा वापस जानी बेगा को दिया

बादशाह सोच रहा था कि ठट्ठा मिर्जा जानी बेग को दे दिया जाये। तब मालूम हुआ कि अरगून जाति के लगभग 10,000 स्त्री-पुरुष नावों द्वारा ऊपर की ओर आ रहे हैं। इससे मल्लाह और सेवक बड़े परेशान थे और रोते पीटते थे। बादशाह का दिल पिघल गया और ठट्ठा मिर्जा जानी बेग को वापस दे दिया। कुछ दरबारियों ने सलाह दी कि मिर्जा को वापस नहीं जाने देना चाहिये परन्तु बादशाह ने उनकी बात नहीं मानी। बन्दर लाहौरी खालसा में ले लिया गया और सिविस्तारन, बख्तियार बेग को जागीर में दे दिया गया। तब अरगून लोग भक्कर से ही वापस लौट गये।

जैन खां कोका का आगमन

जैन खां कोका काफिर सरदारों को बसा कर वापस लौट रहा था। वह आधे रास्ते ही आया था कि मालूम हुआ कि जलाला पीछे से आ रहा है और दो मंजिल दूर है। जैन खां कोका उधर की ओर जाने वाला था परन्तु उसके आदमियों के अज्ञान के कारण वह नहीं जा सका फिर बाजौर के निकट ज्ञात हुआ कि जलाला पास ही होकर निकल रहा है। तब कोका के आदमियों ने उसके रास्ते रोककर उसकी तलाश की परन्तु वह पास ही होकर निकल गया। कोका ने तालिब बेग बदख्सी को उसका पीछा करने के लिये भेजा, परन्तु बदख्सी मारा गया। सायंकाल होते-होते जलाला शीघ्रतापूर्वक तीराह पहुंच गया। कोका बेग्राम आ गया और जलाला का पीछा करने के लिये पहाड़ियों में प्रवेश करने का

विचार करने लगा। इसी बीच में उसको आदेश मिला कि दरबार में उपस्थित होवे इसलिये वह दरबार में पहुंच गया।

5 अगस्त, 1593 को अबुल फजल के पिता की मृत्यु हो गई। उसकी गर्दन पर अदीठ फोड़ा हो गया था जिससे 11 दिन बीमार रह कर वह इस असार संसार से चल दिया। परम्परागत और आधुनिक विज्ञान जानने वालों में उसका स्थान बहुत ऊंचा था। वह दार्शनिक वक्ता और सूफी विद्वान् था। उसको प्रत्येक धर्म का ज्ञान था। वह अपने ज्ञान की विज्ञप्ति नहीं करता था। वह शक्तिशाली पुरुषों से सत्य बात कहने में नहीं डरता था। अपने सौवें साल में भी उसमें युवक की सी फड़क थी।

26 तारीख को मीर मनीर गोलकुण्डा से वापस आया। उसे गोलकुण्डा के सुल्तान को नेक सलाह देने के लिये भेजा गया था। वह गोलकुण्डा के राजदूत के साथ वापस आया। यह राजदूत अपने साथ पेशकश लाया था।

शाहरूख मिर्जा दामाद बना

11 शहरीयार या सितम्बर, 1594 को शाहरूख मिर्जा की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। मरियम मकानी के महल पर अकबर की प्रिय पुत्री शुक्रनिशा बेगम का शाहरूख मिर्जा के साथ विवाह हुआ। जब यह उत्सव समाप्त हो गया तो दूसरा विवाहोत्सव सम्पन्न हुआ। अकबर की दूसरी पुत्री खानिम सुल्तान (जो शाहजादा खानिम भी कहलाती थी) का विवाह मुजफ्फर हुसेन मिर्जा से किया गया, जो इब्राहीम हुसेन का पुत्र था। 19 शहरीयार को राजा अली खां की पुत्री अन्तःपुर में आई जिससे उस कुटुम्ब की स्थिति दृढ़ हो गई। तारीख 23 को नियामत खां के पुत्र आदम की मृत्यु हो गई तो अकबर ने मामा आवा के प्रति सहानुभूमि प्रकट की। वहां से अकबर जैन खां कोका के पास गया और कुछ समय के लिये वहीं ठहरा। प्रातःकाल मिर्जा यूसुफ खां कश्मीर से आकर दरबार में उपस्थित हुआ।

शाहरूख मिर्जा मालवा का सूबेदार

अकबर तलाश में था कि मालवा का सूबेदार किस को बनाया जाये। पहले शाहजादा सुल्तान मुराद वहां का सूबेदार था परन्तु उसको गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया गया था। शाहरूख मिर्जा को 5000 का मनसबदार बनाकर वहां भेजा गया। शाहबाज खां को उसका संरक्षक बनाया।

***

प्रकरण 120

रुस्तम मिर्जा का दरबार में आना

जब अकबर के आदेश से शाह मुहम्मद किलाती ने कन्धार शाह तहमास्प के आदमियों के सुपुर्द कर दिया तो शाह तहमास्प ने यह अपने भाई के पुत्र सुल्तान हुसेन मिर्जा को दे दिया। हुसेन मिर्जा अकबर के प्रति आदरपूर्ण व्यवहार करता था और भेंटें भेजा करता था। अतः शाह तहमास्प की मृत्यु के बाद भी अकबर ने उससे कन्धार नहीं छीना। सुल्तान हुसेन मिर्जा अत्यधिक मद्यपान के कारण चार पुत्र छोड़कर मर गया। इनके नाम मुजफ्फर हुसेन मिर्जा, रुस्तम मिर्जा, अबूसईद मिर्जा और संजर मिर्जा थे। अकबर ने इन चारों को भी नहीं छेड़ा। रक्तपिपासु शाह इस्माइल ने इन चारों को मारने के लिये कन्धार अपने आदमी भेजे, परन्तु वे नहीं मार सके तो शाह को क्रोध आया और उसने कन्धार, शाह कुली सुल्तान जुल कादिर को दे दिया। तब जुल कादिर ने इन चारों भाइयों को मार कर कन्धार को ले लेने के लिये बुदाग बेग को भेजा। वह भी चारों भाइयों को नहीं मार सका, एकाएक यह खबर आई कि शाहइस्माइल की मृत्यु हो गई। इस्माइल के बाद सुल्तान मुहम्मद खुदाबन्दा ईरान के तख्त पर बैठा। उसने कन्धार को इन चारों भाइयों के हाथ में ही रहने दिया। बड़ा भाई मिर्जा मुजफ्फर हुसेन कन्धार में और रुस्तम मिर्जा तथा उसके दो छोटे भाई जमीनदावर में रहते थे। सारे भाई आपस में लड़ने लगे तो मुजफ्फर हुसेन हार कर दुर्ग में चला गया। रुस्तम मिर्जा ने दुर्ग को घेर लिया। घेरा 40 दिन तक चलता रहा। परन्तु फिर संधि हो गई और चारों भाई आपस में मिले।

जब तूरान के शासक अब्दुल्ला खां ने हैरात को घेरा तो फराह के गवर्नर ईगन सुल्तान अफसर अनुनय-विनय करके रुस्तम मिर्जा को अब्दुल्ला खां की सहायता करने ले गया तो तुरानी लोग फराह को नहीं ले सके परन्तु रुस्तम मिर्जा ने ईगन सुल्तान अफसार को मार डाला। फिर खुरासान से सुलेमान खलीफा, रुस्तम मिर्जा के पास आया। वह उसको अपना साधन बनाना चाहता था परन्तु मिर्जा उसके हाथ में नहीं खेला तथापि सुलेमान खलीफा के उकसाने से उसने सीसंता पर आक्रमण किया। जब रुस्तम मिर्जा इस प्रकार व्यस्त था, तो मुजफ्फर हुसैन मिर्जा ने मौका देखकर जमीनदावर पर आक्रमण किया। रुस्तम मिर्जा ने वापस लौटकर लड़ाई लड़ी तो मुजफ्फर हुसेन पीछे हटकर कन्धार चला गया। अन्त में मुजफ्फर मिर्जा ने जमीनदावर पर कब्जा कर लिया और मिर्जा रुस्तम ईराक चला गया। इसी बीच में शाही सेना के आगमन की खबर आई तो मिर्जा रुस्तम ने दरबार में प्रार्थना पत्र भेजकर उपस्थित होने की इच्छा प्रकट की। अकबर ने उसको सान्तवना पूर्ण पत्र भेजा और मार्ग के जमीनदारों को आदेश दिया कि जब मिर्जा रुस्तम आये तो उसके प्रति आदर पूर्ण व्यवहार किया जाये। जब वह साम्राज्य के अन्दर पहुंचा तो तीन प्रतिष्ठित

आदमी उसके स्वागत के लिय भेजे और जब वह और भी निकट आया तो तीन बड़े-बड़े अधिकारी उससे मिलने के लिये भेजे। तारीख 12 महर को दशहरे का त्यौहार था उस दिन खानखाना, जैन खां और अन्य अधिकारी उसको बादशाह के पास लाये तो रुस्तम मिर्जा ने सिचदा किया। उसका छोटा भाई संजर मिर्जा और उसके चार पुत्र तथा 400 तुर्कमान भी दरबार में आये। बादशाह ने रुस्तम मिर्जा को 50,000 का मनसब और मुलतान और बहुत से परगने तथा बलूचिस्तान जागीर में दिये। 18 तारीख को कासिम खां ने काबूल से आकर सिचदा किया और उसको शाही बख्सीसे प्राप्त हुई।

शाहजादा सुल्तान दनियाल दुर्घटना ग्रस्त

सायंकाल को द्वारपालों की असावधानता से एक पागल अन्तःपुर में घुस गया। शाहजादा उसको देखते ही उसके पीछे दौड़ा और उसको भूमि पर गिराकर उसके ऊपर चढ़ बैठा। उसको आशंका थी कि कहीं वह आदमी शस्त्र प्रयोग करे इसलिये शाहजादे ने उसके दोनों हाथ पकड़कर मरोड़े। अन्तःपुर की दासियां उसके ओर झपटीं, उनमें सरकेसियन, अलंमाक, रूसी और ऐबिसिनियन थी। दासियों ने शाहजादे को कोई अपरिचित आदमी समझा तो उस पर लकड़ियों और ईंटों से वार किया परन्तु शाहजादे ने उस पागल को नहीं छोड़ा। उसी समय बादशाह ने आकर सब दृश्य देखा। वह तलवार का वार करना ही चाहता था। उसने दासियों को भगा दिया परन्तु वहां कबूतर खाने का लट्ठा पड़ा हुआ था, जिससे अकबर रुक गया। अकबर ने भी समझा कि शाहजादा कोई बाहर का आदमी है इसलिये बाल पकड़कर उसको खींचा। वह तलवार मारना ही चाहता था कि उसने शाहजादे को पहचान लिया और उसका क्रोध उसी क्षण शान्त हो गया। फिर सारी स्थिति समझ में आ गई तो शाहजादे ने उस पागल को छोड़ दिया।

शाहजादा दनियाल को बुरहानुलमुल्क को दण्ड देने के लिये भेजा

बुरहानुलमुल्क पर सलाह का कोई प्रभाव नहीं होता था इसलिये अकबर ने शाहजादा सुल्तान दनियाल को बुरहानुलमुल्क के दमन के लिये भेजा। उसके साथ खानखाना राय रायसिंह और अन्य अनेक अफसर, कोष, तोपखाना और हाथी थे। शाहरुख मिर्जा, शाहबाज खां और मालवा के अन्य जागीरदारों को यह आदेश दिया गया कि अपनी सेना तैयार करके शहजादे के साथ जाये। राजा मानसिंह को भी यह आदेश दिया गया कि वह बंगाल से आ सके तो वह भी दक्खिन को कूच करे। शाहजादा सुल्तान मुराद के नाम आदेश भेजा गया कि दक्षिण विजय के लिये तैयारी करे और जब सेना इकट्ठी हो जाये तो आदेश का पालन किया जाये। तारीख 4 आबान को अकबर की सौर तुला हुई तो उसको 12 प्रकार के पदार्थों से तोला गया।

शाहजादा दनियाल का विवाह

तारीख 5 को नगर के बाहर बड़े-बड़े उमरावों को एकत्र किया गया और कुलीच खां की पुत्री से शाहजादा सुल्तान दनियाल का विवाह सम्पन्न हुआ। कई दिन तक उत्सव मनाया गया। अकबर कुलीच खां के निवास पर भोज में सम्मिलित हुआ। 20 तारीख को अकबर ने कुछ समय रामबाड़ी बाग में व्यतीत किया।

मिर्जा यूसुफ खां ने कश्मीर जाने की इजाजत मांगी। बादशाह के आदेश से चार जहाजें बनाई गईं। तारीख 7 आजर को सुल्तान खुसरू ने भारतीय दर्शन का अध्ययन शुरू किया। शिवदत्त ब्राह्मण को जो अपने समय में भट्टाचार्य के नाम से प्रसिद्ध था और जो दर्शन-ज्ञान में अद्वितीय था, इस काम के लिये नियुक्त किया गया। सुल्तान रुस्तम (मुराद का पुत्र) और सुल्तान परवेज ने भी पढ़ना शुरू किया। बादशाह के आदेश से इस पुस्तक के लेखक अबुल फजल ने उनको कुछ अक्षर ज्ञान करवाया। मिर्जा कोका के कुछ हाथी गुजरात में रह गये थे वे मंगवा कर 17 तारीख को उपस्थित किये गये। 8 तारीख को जब अकबर हैबतपुर के निकट था तो खबर आई कि शाहजादा दनियाल अभी सरहिन्द में ही है और उसकी सेना आगे नहीं बढ़ रही है। अकबर को यह बात पसन्द नहीं आई और उसने पुनः आगरा जाने का विचार किया। उसने खानखाना को बुलाया जिसने शेखूपुरा में आकर अकबर से निवेदन किया कि सेना का दक्षिण को प्रयाण करने के लिये उपयुक्त समय वर्षा के बाद है। तब ही जल, चारा और अन्न खूब मिल सकेंगे। इसलिये सेना की गति अभी मन्द है। जब समिति में विचार किया गया तो सब ने एक मत होकर कहा कि वर्षा के अन्त में स्वयं बादशाह को ही प्रयाण करना चाहिये और शहजादे को पंजाब की देख-रेख करनी चाहिये। अकबर ने कहा, ''मैंने यह कार्य सुल्तान मुराद के सुपुर्द किया था इसलिये शायद सुल्तान दनियाल का भेजना उसको अच्छा नहीं लगा होगा।'' तब कुलीच खां को भेजा गया कि वह शाहजादे को वापस बुला लाये। 15 तारीख को सुल्तानपुर में खानखाना ने आगरे में सेना खड़ी करने की इजाजत मांगी। बादशाह वापस लौट गया तो 17 तारीख को पटियाला के पास शाहजादा दनियाल ने उससे सलाम किया। इसी बीच में शाहजादा सुल्तान मुराद का प्रार्थना-पत्र आया जिसमें लिखा था कि ''मैं 6 आजर को अहमदाबाद आ गया हूं और दक्षिण पर अभियान करने की तैयारी कर रहा हूं। मैंने सुना है कि शाहजादा सुल्तान दनियाल को इस सेवा के लिये नियुक्त किया है। आपने ईश्वर की प्रेरणा से ही यह आदेश दिया होगा परन्तु मुझे आशंका है कि कहीं मैंने कोई अनुचित काम तो नहीं किया है या किसी ने कोई चुगली तो नहीं खाई है।'' 22 तारीख को अकबर वापस लाहौर पहुंच गया।

कश्मीर में केसर की वृद्धि

पहले सरकार को बीस हजार त्राक से अधिक केसर नहीं मिलती थी। मिर्जा हैदर के समय में एक बार 28,000 त्राक केसर मिली थी। इस वर्ष कश्मीर खालसे में ले लिया

गया था तो सरकार को 90,000 त्राक केसर मिली। इस वर्ष अधिक भूमि जोती गई थी, परन्तु केसर के पुष्प भी अधिक मात्रा में हुए थे, इसके लिये ईश्वर का धन्यवाद दिया गया।

इस समय राय पतरदास को बन्धु दुर्ग की विजय के लिये भेजा गया। वह संसार के प्रसिद्ध दुर्गों में गिना जाता है। जब राजा रामचन्द्र और उसके पुत्र की मृत्यु हो गई तो बदमाश लोग रामचन्द्र के पौत्र को अपना साधन बनाकर उत्पात करने लगे। तब बादशाह ने उनके दमन के लिये राय पतरदास को भेजा। अगले दिन अबू सईद मिर्जा दरबार में आया। वह रुस्तम मिर्जा का भाई था और कन्धार में ही रह गया था। उस पर शाही कृपा की गई।

राजा मानसिंह का आगमन

उड़ीसा की विजय के बाद राजा मानसिंह रोहतास आ गया था। अकबर ने उसको अपने पास बुलाया। जब वह लाहौर से एक मंजिल दूर आ पहुंचा तो शाहजादा सलीम को आदेश दिया गया कि वह शिकारगाह से सीधा राजा मानसिंह के पास जाये। राजा मानसिंह, राजा भगवन्तदास का गोद का पुत्र था। राजा भगवन्तदास के देहान्त के समय, राजा मानसिंह के प्रति शोक प्रकट नहीं किया गया था इसलिये अब शाहजादा सलीम को आदेश दिया गया कि वह मिलकर शोक प्रकट करे। फिर राजा मानसिंह दरबार में आया और उसने उड़ीसा के बड़े-बड़े आदमियों का बादशाह से परिचय कराया। 14 तारीख को इस्माइल कुली खां गुजरात से और 22 तारीख को मिर्जा यूसुफ कश्मीर से आया।

***

प्रकरण 121

39वें वर्ष का आरम्भ

इस वर्ष का आरम्भ सोमवार, 28 जमादल आखिरी 1002 हिजरी 10 या 11 मार्च, 1594 को हुआ। इसके उपलक्ष्य में कई दिन तक भोज किये गये और ईश्वर से प्रार्थना की गई। शाहजादा सलीम को 10000 सवार दिये गये, इनमें से 5 हजार को बंगाल में जागीरें दी गईं। इनमें जगतसिंह, दुर्जनसिंह, शक्तिसिंह, बाकीर सफरची आदि थे। 4 हजार को राजधानी लाहौर के निकट जागीरें मिलीं इनमें तख्तवेग, राय मनोहर आदि थे। एक हजार अहदी नियुक्त किये गये थे, इनको शाही कोष से मासिक वेतन दिया जाता था। सुल्तान खुसरू को 5000 का मनसब प्रदान किया गया, उसकी अवस्था बहुत छोटी थी परन्तु बुद्धि

बहुत बड़ी थी। राजा रामचन्द्र, हिम्मत सिंह आदि 19 उपराओं को भी नया फल प्राप्त हुआ। उड़ीसा प्रदेश उसको जागीर में दिया गया। राजा मानसिंह को शाहजादे का संरक्षक बनाया गया और उसके निर्वाह के लिये बंगाल में उसको जागीरें दी गईं। सईद खां बिहार प्रान्त का संरक्षक नियुक्त हुआ। इसी दिन मिर्जा रुस्तम को निशान और नक्कारा मिला। तारीख 8 को अकबर की चान्द्र तुला की गई और उसको आठ पदार्थों से तोला गया।

मुजफ्फर हुसेन का आगमन

जब यह बात फैल गई कि शाही सेना कन्धार को छीनना चाहती है और रुस्तम मिर्जा अकबर के दरबार में पहुंच गया है तो मुजफ्फर हुसेन दुष्टता करने से कुछ रुका और भयभीत हो गया। उसने अपनी माता और ज्येष्ठ पुत्र बहराम मिर्जा को क्षमायाचना के लिये भेजा। तारीख 9 को ये लोग आये तो उनको दरबार में उपस्थित होने की अनुमति दे दी गई और उनके परिचित लोगों द्वारा उनको क्षमा प्रदान की सूचना देकर उन्हें दरबार में बुलाया गया। कन्धार की देख-रेख करने के लिये शाहबेग को नियुक्त किया गया। उसी दिन अच्छी सेवा के उपलक्ष्य में दौलत नाजिर की पदोन्नति करके उसको खान का पद प्रदान किया गया, इसी दिन ईरान से मीर हैदर मामली आकर दरबार में उपस्थित हुआ और अकबर की कृपा से वह संतुष्ट हो गया। शेर अफगान के पुत्र शिरोया को खान की उपाधि प्राप्त हुई जिससे शेर अफगान की इच्छा की पूर्ति हो गई। ता० 30 को मजनूखान काकशाल का पुत्र जब्बारी कारागार से मुक्त किया गया। दुष्ट लोगों की संगति में पड़कर उसने बंगाल में विद्रोह कर दिया था इसलिये उसको कारागार में रखा था जब उसने पश्चात्ताप प्रकट किया तो उसको मुक्त कर दिया गया। 11 या 12 अप्रैल, 1594 को मुल्ला सालह बुखारी तूरान से आया और दरबार में उपस्थित हुआ। वह समकालीन विज्ञान की विचारधाराओं से परिचित था और कट्टरता से कुछ विमुक्त था, इसी समय हकीम अली गिलानी ने एक आश्चर्यजनक तालाब का निर्माण कराया जिसमें होकर कमरे में जाने का मार्ग था और अद्‌भुत बात यह थी कि तालाब के जल का उस कमरे में प्रवेश नहीं होता था। कमरे तक पहुंचने में बड़ा कष्ट होता था। अतः बहुत-से लोग आधा मार्ग जाकर ही लौट आते थे। तारीख 5 को अकबर इसका निरीक्षण करने गया। लोगों ने चेतावनी दी तो भी वह कमरे में पहुंच गया और वहां कुछ समय तक ठहरा। तारीख 1 खुरदाद को हाजी हबीब उल्ला की मृत्यु हो गई। वह बड़ा भला आदमी था और बादशाह का कृपापात्र था और इसी दिन शरीफ वुकूई की मृत्यु हो गई। तारीख 13 को समाजी खां को अवध से बुलाया। अगले दिन कासिम खां को काबुल और शाह बेग खां को अपनी खुशाब और बंगश की जागीरों पर भेजा गया। उसको आदेश दिया कि वह कन्धार पर अभियान करने की तैयारी करे और उसे जब आदेश मिले तब रवाना हो जाये। इस वर्ष जाम शाहजादा सुल्तान मुराद से मिलने आया। इसी दिन जूनागढ़ के निकट नौरंग खां अपच रोग से मर गया। बादशाह ने उसके परिवार की सहायता की।

इस समय खालसा के ताल्लुकदारों को, जमीनदारों को और टकसाल का काम करने वालों को बुलाया और सिक्कों का वजन निश्चित किया गया और यह भी बतलाया गया कि वजन को किस प्रकार नापा जाये। तारीख 15 को यह काम ख्वाजा शमसुद्दीन को सौंपा गया। उसने दो मास में चांदी और सोने के सिक्कों के सारे दोष दूर कर दिये। इसी दिन इस्माइल कुली खां को आदेश दिया गया कि वह कालपी जाकर अपनी जागीर की व्यवस्था करे और सेवा के लिये तैयार रहे। ता० 20 को अब्दुर रज्जाक मामरी गुजरात से आया। अगले दिन प्रातःकाल गुलबदन बेगम का दोहिता मुहम्मदयार दुर्भाग्यवश कुछ साथियों के साथ पहाड़ियों में चला गया। उसका विचार विद्रोह करने का था। उसकी पीछा करने के लिये सिलहदी और दानमनदास तथा अन्य लोगों को भेजा गया। इनमें आगे खैरउल्ला कोतवाल भेजा गया था। भागने वालों में से कुछ मारे गये और गुलबदन का दोहिता मोहम्मदयार तथा सात अन्य लोग पकड़ कर बन्दी बना लिये गये। उनके पास चौदह लालें, एक मोतियों की माला, कुछ जड़े हुए रत्न और बहुत-सी संपत्ति मिली। ता० 24 को राजा मानसिंह बंगाल को रवाना किया गया। 30 तारीख को रावी नदी के तट पर एक जहाज तैयार हुआ। यह 35 इलाही गज लम्बा था, उसमें साल और नागा लकड़ी के 2936 तख्तें और 468 मन लोहा लगा था। इसको बनाने के लिये 240 खाती रखे गये थे। एक हजार आदमियों ने इसको खींचकर 10 दिन में नदी के जल तक पहुंचाया था और बंदर लाहौरी भेजा था। तारीख 20 तीर को मियां करमउल्ला की सरौज में मृत्यु हो गई। बादशाह ने उसके बच्चों के निर्वाह के लिये व्यवस्था कर दी। ता० 7 अमरदाद को दुर्जन कछावा मर गया। वह बादशाह का विश्वस्त सेवक था।

यह पहले लिखा जा चुका है कि एक अन्दीजान के निवासी ने अपने को मिर्जा शाहरूख का पुत्र बतलाया था। मिर्जा शाहरूख का साम्राज्य से संबंध था, इसलिये इस आदमी को कुछ सफलता मिली परन्तु फिर उसका पता लग गया तो लोगों को उससे ग्लानि हो गई और तुरान के सैनिकों ने उसको दबा दिया। तब वह अफगानिस्तान के हजारों लोगों से मिल कर वहां उत्पात करने लगा। जब कासिम खां दरबार में गया तो मिर्जा जमान 100 आदमियों के साथ हजारा लोगों के पास आकर मार्ग में पहरा देने वालों से कहने लगा कि मैं दरबार में जा रहा हूं। उन्होंने विश्वास करके कासिम खां के पुत्र हासिम खां को सूचना दे दी। उसने तीन अफसरों को 500 साथियों के साथ उसको लिवा लाने के लिये भेजा। जब हाशिम खां ने यह बात सुनी तो उसने मैदान के निकट मिर्जा जमान का सामना किया। तब लड़ाई हुई जिसमें शाही पक्ष के तीन बड़े-बड़े आदमी मारे गये। मिर्जा जमान हार गया और बन्दी बनाकर काबुल लाया गया। जब कासिम खां वहां पहुंचा तो उसने मिर्जा जमान को अपने पास बैठाया और उसको दरबार में भेजने की व्यवस्था करने लगा और उसको पहुंचाने के लिये उसने अपने पुत्र हाशिम खां को नियुक्त किया। तब मिर्जा जमान ने 500 बदख्शियों के साथ षड्यंत्र किया कि कासिम खां को छल-घात करके मारा जाये। इस

षड्यंत्र में तीन बड़े-बड़े लोग थे। कुछ लोगों ने सुझाव दिया कि पिता-पुत्र दोनों को ही मार दिया जाये तो बड़ी लूट मिलेगी। ता० 12 अमरदाद को मिर्जा जमान ने हाशिम बेग को नर्दबाजी नाक खेल खेलने के लिये बुलाया। उसका उद्देश्य था कि पिता-पुत्र दोनों को मार डाला जाये। हाशिम बेग यात्रा की तैयारी कर रहा था। मध्याह्न हो कासिम खां भोजन करके सो गया। उसके पास एक सेवक के अतिरिक्त और कोई नहीं था। विद्रोहियों ने कुछ लोगों को तो हाशिम खां के घर भेजा और कुछ कासिम खां के घर आक्रमण करने गये। कासिम खां ने वीरतापूर्वक अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया तो विद्रोही लोग उसके सिर को भाले पर टांगकर ले गये। इस मुठभेड़ में दो शाही सेवक मारे गये। हाशिम बेग खां उत्पात को दबाने के लिये आया। दुर्ग के द्वार बन्द करने के लिए शीघ्र ही आदमी भेजे गये। फिर हाशिम खां दुर्ग में गया। द्वार बन्द कर देने से उत्पात को शान्त करने में सहायता मिली; क्योंकि बहुत-से विद्रोही अन्दर नहीं जा सके। जब हाशिम आया तो उसने दरवाजों के कुन्दे तोड़ डाले और जोर की लड़ाई हुई जिसमें कई लोग मारे गए। कुछ विद्रोही तो शा खाने में छिप गये। दरवाजे पर पहरा रख दिया गया। जो भी बाहर आता था, उसे मार दिया जाता था। छतें तोड़ कर अन्दर आग फेंकी गयी। अब विद्रोही भयभीत हो गये और बाहर निकले तो एक-एक करके मारे गये। प्रात:काल अस्सी आदमी समाप्त कर दिये गये। इसी बीच में उनका नेता मुहम्मद जमान मारा गया। हाशिम खां के साथ-साथ सब सैनिक लड़े, परन्तु मिर्जा अहमदी और तीरमोमीन आदि ने विशेष परिश्रम किया। अगले दिन हाशिम बेग ने जो भी बदख्शी देखा उसे मार दिया। तारीख 23 को विद्रोही का सिर बादशाह के सामने प्रस्तुत किया गया। ऐसे अमीर की मृत्यु पर अकबर को शोक हुआ, परन्तु उसने विजय-प्राप्ति पर ईश्वर को धन्यवाद दिया।

काबुलिस्तान कुलीच खां के सुपुर्द कर दिया और ख्वाजा शमसुद्दीन को उसके स्थान पर दीवान-ए-कुल नियुक्त किया।

जौनपुर जो पहले कुलीच खां की जागीर में था अब मिर्जा यूसुफ खां को जागीर में दे दिया गया। कश्मीर अहमद बेग, मुहम्मद कुली बेग आदि को दिया गया। शरीफ खां को गजनी की रक्षा करने के लिये रवाना किया। इस वृद्ध की इच्छा भी यही थी इसलिए वह सन्तुष्ट हो गया। तारीख 2 शहरीयूर को आसफ खां को आदेश दिया गया कि वह कश्मीर जाकर जागीरदारों में नये ढंग से भूमिमान विभक्त करे और केसर तथा शिकार को खालसा कर ले। 11 तारीख को कुलीच खां काबुल चला गया। 30 तारीख को सूचना आई कि मिर्जा कोका गुजरात वापस लौट आया है। वह उसी बन्दरगाह पर वापस उतरा, जहां से वह जहाज पर चढ़ा था। वह बादशाह से मिलने के लिये आतुर था। बादशाह ने उसको अच्छी खिल्लतें, बढ़िया घोड़े और ऊंट भेजे।

सिवालिक पहाड़ियों में सेना भेजी

अपने प्रदेश की दुर्गमता पर विश्वास करके यहां के जमीदार अदूरदर्शितावश कुछ

उत्पात करने लगे थे। इसलिए शेख फरीद बक्षी बेग और कई सेनानायकों को वहां के राजाओं को दबाने के लिये रवाना किया गया और आदेश दिया कि यदि वे लोग सलाह न मानें तो अस्त्र द्वारा उनका दमन किया जाये।

22 सितम्बर, 1594 को इस पुस्तक का लेखक अबुल फजल अपने पूज्य पिता और माता की कब्रों पर गया और उनकी आज्ञानुसार उसके शवों को राजधानी आगरा भेजकर उनके पुराने मकान में उन्हें दफनाया।

2 बाबान को अकबर की सौर तुला हुई तो उसको बारह पदार्थों से तोला गया। कितने ही गरीब लोगों की इच्छाएं पूर्ण की गईं। अगले दिन वह फजलाबाद आया। यह लेखक का मकान था और मार्ग पर बना हुआ था। यहां बादशाह के आने से लेखक अबुल फजल को अमर कीर्ति लाभ हुई। 14 तारीख को ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद बख्शी बड़ा बीमार हो गया, ज्वर का बड़ा प्रकोप हुआ। तब अनुमति प्राप्त करके उसके पुत्र उसको लाहौर ले गये परन्तु वह रावी के तट पर ही चल बसा। बादशाह को इससे दुःख हुआ और परिचित तथा अपरिचित लोगों ने शोक मनाया। तारीख 21 को सुल्तान परवेज को एक बहन का जन्म हुआ, अकबर ने उसका कोई नाम नहीं रखा और वह लड़की कुछ समय बाद ही मर गई। इसी दिन फिरोजा खां को अजमेर भेजा गया। अकबर चाहता था कि वह कृषकों व सैनिकों से परिचित हो जाये और अच्छी व्यवस्था करके लोगों की सुख-वृद्धि करे। 13 तारीख को मिर्जा कोका दरबार में उपस्थित हुआ। बादशाह ने उसको सीने से लगाया और कोका की मां को बुलाया तो उसका दुःख दूर हुआ। फिर कोका को पंच हजारी मनसबदार बनाकर खान आजम की उपाधि प्रदान की गई और उससे कहा गया कि वह गुजरात, पंजाब बिहार या कहीं अन्यत्र जाना चाहे, वहां चला जाये तो उसने बिहार पसन्द किया। उसके लड़कों को भी मनसब और जागीरें दी गयीं। इसी दिन अली मुहम्मद अस्प, जसरोटा के जमीनदार बहबू को लेकर दरबार में आया। उसकी चालाकी सिद्ध हो गई थी इसलिये शेख फरीद ने जो उत्तरी पहाड़ों में भेजा गया था उसको पकड़कर दरबार में भेजा था। 16 तारीख को सादतयार कोका की मृत्यु हो गई। इसका कारण अत्यधिक मद्यपान था। अकबर उसकी बहन हाजी कोका के मकान पर गया और उसको सान्त्वना दी। कोका के बच्चों पर भी दया की गई।

लम्बे अर्से पहले ईरान का राजदूत, यादगार सुल्तान सामलू शाह का पत्र और भेंटें लेकर आया था। 23 तारीख को उसे फरमान देकर वापस जाने की इजाजत दी गई। उसके साथ जियाउल मुल्क को राजदूत के रूप में भेजा गया और एक दूसरे अधिकारी को भेंटें हवाले की गईं। यह भी आदेश हुआ कि ये लोग रावी नदी द्वारा बन्दर लहरी जायें और वहां से औरमुज के मार्ग से ईरान पहुंचे। बादशाह ने शाह के नाम एक गंभीर पत्र लिखवाया।

***

प्रकरण 122

अकबर का ईरान के शाह के नाम पत्र

इसमें ओटोमन राजवंश का वृत्तान्त

ईश्वर महान् और पवित्र है। उसकी कीर्ति बढ़े। आपने यादगार सुल्तान शामलू के द्वारा वसन्त ऋतु में पत्र भेजा था। इससे हमारी आत्मा को सुख हुआ। आपने लिखा है कि यहां से मैत्री पत्र देर से लिखे जाते हैं, जो उचित है। वास्तव में विलम्ब नहीं होना चाहिये परन्तु आपने आने-जाने वालों से सुना होगा कि हमको भारत के राजाओं से निरन्तर युद्ध करना पड़ा है, जिसके फलस्वरूप शाही सेवकों ने कितने ही स्वतन्त्र शासकों को पराजित कर दिया है। हिन्दूकुश से समुद्र तट तक सारे विद्रोहियों का, राजाओं का, अफगानों का, बलोचियों का और जमीनदारों का दमन कर दिया गया है और अब सब लोग शक्ति का उपभोग कर रहे हैं। जब पंजाब में राजधानी कायम हो गई तो हमारा विचार था कि आपके पास राजदूत भेजा जाये, परन्तु कुछ और कामों के कारण यह नहीं हो सका। इसमें मुख्य कार्य था, कश्मीर की विजय। कश्मीर दुर्गम स्थान है। वहां ऊंचे-ऊंचे पर्वत हैं, सघन बन हैं। कई हजार संगतरासों को वहां भेजा गया जिन्होंने चट्टानें और जंगल काट कर मार्ग बनाया। यह देश अब जीत लिया गया है, फिर हम स्वयं वहां गये और हमने तिब्बत तक यात्रा की और पकली तथा दमतोड़ के मार्ग से हम वापस आकर काबुल और गजनी गये। फिर संवाद, बाजोर और बंगस के अफगानों का दमन किया गया और बलूची लोगों को दण्ड दिया गया। इन कारणों से पत्र भेजने में विलम्ब हुआ परन्तु मुख्य कारण यह था कि ईरान में भी गड़बड़ थी। वहां शाहमुहम्मद खुदाबन्दा की मृत्यु के बाद उत्पात उत्पन्न हो गया था। जब आपका राजदूत यहां पहुंचा तो मालूम हुआ कि उत्पात कम होता जा रहा है। इस बात से हमको प्रसन्नता हुई। हम चाहते थे कि आपको सब प्रकार की सहायता दी जाये परन्तु फिर कन्धार के कारण विघ्न उपस्थित हो गया। वहां के मिर्जा लोगों ने सफवी राजवंश की सहायता नहीं की न वे हमारे पास आये। तब हमें विचार आया कि कन्धार हमारे ही आदमियों के सुपुर्द कर दिया जाये और फिर स्थिति अनुकूल हो जाने पर शाह अब्बास को सब प्रकार की सहायता दी जाये। मिर्जा लोगों का हमारे कुटुम्ब से प्राचीन सम्बन्ध था इसलिये हमने सोचा कि यदि सेना भेजी जायेगी तो लोग समझेंगे कि हमने आपसे सम्बन्ध तोड़ लिया है इसलिये हमने सेना नहीं भेजी। इसी बीच में रुस्तम मिर्जा आया तो हमने उसको मुल्तान दे दिया। यह खबर सुनकर मुजफ्फर हुसेन मिर्जा ने अपनी माता और ज्येष्ठपुत्र को हमारे पास भेजा और उसने स्वयं आने का विचार किया। उसके आने के बाद हमारी सेना कन्दार को प्रयाण करेगी और सब प्रकार की सहायता देगी। जब हम पंजाब में थे तो हमारा विचार था कि ट्रान्स ओविजयाना की ओर सेना भेजी जाये।

यह देश हमारे पूर्वजों का था। हम चाहते थे कि हमारे शाही सेवक इस पर कब्जा कर लें और सफवी राजवंश को उपयुक्त सहायता दी जाये। इसी बीच में तूरान के शासक अब्दुल्ला खां ने कई पत्र भेज कर हमको पुराने सम्बन्ध की याद दिलाई और कुशल राजदूत भेजकर परस्पर स्नेह के आधार को पुष्ट किया। इसलिये हमने उससे लड़ाई करना उचित नहीं समझा। इस समय ईरान में बुद्धिमान् लोगों की, जो देश के भविष्य की चिन्ता कर सकें, बड़ी कमी है। आपको सचेत होकर काम करना चाहिए और प्रपंची लोगों के कहने में नहीं आना चाहिये। किसी आदमी को प्राणदण्ड देते समय बड़ा विचार करना चाहिए। यह भी सोचना चाहिये कि प्रत्येक धर्म और सम्प्रदाय पर ईश्वर की कृपा है। सब धर्मों को दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है, (1) सच्चा धर्म—इससे सबको निर्देश प्राप्त करना चाहिये। (2) झूठा धर्म—ऐसे धर्म में अज्ञान होता है और वह दया का पात्र है। उस पर कठोरता नहीं करनी चाहिये, न उसकी निन्दा करनी चाहिये। हमारा विचार था कि यादगार सुल्तान के साथ हम किसी विश्वस्त सेवक को भेजें जो ईरान की स्थिति को समझकर हमें सूचित करे, परन्तु इसी बीच में कश्मीर में कुछ विद्रोहियों ने सिर उठा लिया। तब हम स्वयं कश्मीर पहुंचे, वहां के मुखिया का सिर हमारे सामने प्रस्तुत किया गया, फिर वहां शान्ति स्थापित करके हम लाहौर लौट आये। सिविस्ता, ठट्टा और सिन्ध के शासक ने हमसे युद्ध छेड़ दिया जिससे ईराक और खुरासान का मार्ग बन्द हो गया। यही कारण है कि राजदूत भेजने में विलम्ब हुआ। अब हम निश्चिन्त हैं। सिविस्ता और ठट्टा हमने साम्राज्य में मिला लिये हैं। वहां का शासक मिर्जा जानी बेग हमारे दरबार में आ गया है। उसको बड़ा पश्चात्ताप है ओर हमारे प्रति वफादार है इसलिये हमने उसका देश उसी को लौटा दिया है। इब ईरान का मार्ग सुरक्षित हो गया है और हम सियाअल मुल्क को भेज रहे हैं। यह हमारा विश्वासपात्र वफादार सेवक है। हमने इससे कुछ बातें कही हैं जो आपको अकेले में सुनायेगा। यह ईरान की स्थिति का अध्ययन करके हमें सूचित करेगा। हम आशा करते हैं कि हमारे साम्राज्य को अपना घर समझेंगे और पूर्ववत् पत्र भेजते रहेंगे और स्नेह-सम्बन्ध बनाये रखेंगे। सर्वशक्तिमान् ईश्वर आपके राजवंश को प्रपंच और धोखे से बचाये और आपकी रक्षा करे।

तारीख 24 आजर को आसफ खां तीन दिन में कश्मीर से आया और उसने सूचना दी कि काजी अली के बन्दोबस्त के अनुसार कश्मीर की आय इकतीस लाख खरवार है और प्रति खरवार चौबीस दाम का है। उसने वहां के सैनिकों और कृषकों को शान्त करके उचित रूप से उनमें जागीरें विभक्त कर दी थीं।

तारीख एक दाई को शेख अबू फेज फैजी ने नल दमन नामक काव्य भेंट किया। इसकी बड़ी प्रशंसा हुई। उसने मखजन-ए-असरार के नमूने पर मरकज-ए-अदवार पर उसने सुलेमान और विल्किश लिखा था और लैला-मजनू के ढंग पर नल दमन बनाया था। नल दमन और सुलेमान विल्किश में चार-चार हजार छन्द थे। उसने हफ्त पेकर के नमूने

पर पांच हजार छन्दों में हफ्त किश्वर लिखा था और सिकन्दरनामा के छन्दों का अनुसरण करके अकबरनामा लिखा था। अकबर को काव्य से कोई विशेष प्रेम नहीं था परन्तु नल दमन को सुनकर उसने हर्ष प्रकट किया और इस विषय में बातचीत की।

4 तारीख को शेख फरीद बख्सी बेगी, उत्तर की पहाड़ियों से वापस आया। 6 तारीख को आदत्तदास कश्मीरी की मृत्यु हो गई। ज्ञान और सत्य के लिये वह अपने देश में अद्वितीय था। उसका अकबर के दरबार में प्रवेश हो गया था। तारीख 8 को मिर्जा यूसुफ खां को तोपखाने का दरोगा और शाहबेग कन्धारी को इसी विभाग का दीवान नियुक्त किया गया। उसी दिन जोधपुर से मोटा राजा दरबार में उपस्थित हुआ। अगले दिन हासिम बेग काबुल से आया। उस पर अकबर ने अनेक कृपायें कीं। 25 तारीख को सुल्तान सलीम के अन्तःपुर में अब्दुल्ला बिलूची की पुत्री से एक लड़की का जन्म हुआ। इस मास के अन्त में तुर्की के शासक सुल्तान मुराद की मृत्यु हो गई। 12 दिन बाद जब उसके पुत्र सुल्तान मुहम्मद को दुर्ग से बाहर निकाला गया तो सुल्तान मुराद का दफन हुआ। सुल्तान मुहम्मद ने अपने 19 भाइयों का वध करवा दिया, जिनमें सबसे बड़ा 21 वर्ष का था।

तुर्कों का वृत्तान्त

सुल्तान मलिक शाह सलजुगी ने सीरिया ईसाइयों से छीनकर अपने रिश्तेदारों और सेवकों को दे दिया था। जब ईराक और खुरासान में सलजुक राजवंश की सत्ता का अंत हो गया तो तुर्की के सलजुकों के अभ्युदय में किंचित् वृद्धि हुई। तुर्की का प्रथम सलजुकी सुल्तान अलाउद्दीन कुलीज अर्सलान था। उसके पश्चात् सुल्तान रत्नुद्दीन और फिर सुल्तान या गयासुद्दीन तथा तत्पश्चात् अज्जुउद्दीन कई कोष और उसके बाद सुल्तान अलाउद्दीन कई को बाद हुआ। कितने ही इतिहासकार अज्जउद्दीन को इस राजवंश का अंतिम सुल्तान मानते हैं और कुछ इतिहासकार अलाउद्दीन के बाद दो वंशज और बतलाते हैं। सलजुक अफरासियाब का 24वां वंशज था। उसके चार पुत्र थे—माइकल, इसराइल, मुसा और यूनस। सन् 985-86 ई० में वह लोग तुर्किस्तान की घाटियों से ट्रान्स ओविजयाना आये और वहां से खुरासान पहुंचे। फिर माइकल के दो पुत्र, तुगरिल अैर जाफिरबेग शक्तिशाली बन गये और उनके उत्तराधिकारियों ने 117 वर्ष तक शासन किया, फिर करामान बेगों का अभ्युदय शुरू हुआ जिसका 173 वर्ष पश्चात् इब्राहिम बेग के समय में अंत हुआ। उस्मान राजवंश 688 हिजरी में शुरू हुआ। ऐसा कहा जाता है कि उस्मान का जन्म 648 हिज्री में हुआ था। 648 हिज्री 1258 के बराबर मानी गई है। उस्मान ने 37 या 39 वर्ष राज्य किया। उस्मान अगज खां का सोलहवां वंशज था। ऐसा कहते हैं कि उस्मान का दादा सुलयमानशाह के कब्जे में खुरासान का महान् नगर था। जब मुगलों ने संसार में गड़बड़ मचायी तो वह अपने कुटुम्ब के साथ रूमिस्तान चला गया। उसने अमानिया में कई लड़ाइयां लड़ीं और वहां से अलीफों पहुंचा। फिर युफ्रेटीज नदी को पार करने पर उसकी मृत्यु हो गई। उस्मान का

पुत्र उसका उत्तराधिकारी बना जिसने 55 वर्ष तक राज्य किया। उसके पुत्र गाजी मुराद ने कई देशों को जीता और वह मुराद खां के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसने जानिसारों की सेना बनाई। वह शिकार में ईसाइयों से लड़ता हुआ मारा गया। उसने 47 वर्ष राज्य किया था, उसके बाद उसका पुत्र इलदरिम पाइजीद सुल्तान बना, उसने ईरान और किरमान जीतकर ऊंचा पद प्राप्त किया। उसके समय से कोष की वृद्धि होने लगी। हिसाब रखा जाने लगा और देश में मद्यपान प्रचलित हो गया। उसने अंगोरा के समीप साहिब करानी, तीमूर से युद्ध किया जिसमें वह पकड़ा गया। उसके छः पुत्र थे जिनमें से एक का तो युद्ध के बाद पता नहीं लगा। दूसरे पुत्र सुलयमान ने दूसरा देश दबाया और तैमूर के प्रति अधीनता प्रकट की तथा उसको भेंटें भेजीं। मूसा ने तैमूर की सेवा की और रूस में उसको कुछ भूमि प्राप्त हुई, फिर सब भाइयों में लड़ाई हुई। एक दिन सुलयमान गरम गुसलखाने में मद्यपान कर रहा था तो मूसा ने उस पर आक्रमण किया, वह भागकर एक गांव में चला गया जहां गांव वालों ने उसको मार डाला, फिर मूसा निर्द्वन्द्व सुल्तान बन गया। वह बड़ा दम्भी था, उसमें बुद्धि की बड़ी कमी थी अैर लोगों पर अत्यधिक संदेह किया करता था। उसने ब्रड़े आदमियों को बुलाकर छोटों को उन्नत किया था तब उसके भाई सुल्तान मुहम्मद ने उससे कई लड़ाइयां लड़ीं। जब वह भागकर जा रहा था तो उसका घोड़ा कीचड़ में फंस गया और उसके प्राणों का अंत हो गया। उसने केवल 6 वर्ष राज्य किया था अब सुल्तान मुहम्मद के हाथ में सर्वोच्च सत्ता आ गई। उसके समय में मुस्तफा ने पैगम्बर होने का दावा किया तो सुल्तान की उससे लड़ाई होने लगी। उसने अपने पुत्र मुराद को रौमेलिया से बुलाया परन्तु उसके आगमन से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई। मुराद 40 दिन बाद आया तो सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। एक व्यक्ति ने इलदरिम वायाजीद का पुत्र मस्तफाकलवी होने का दावा किया तो बहुत-से लोगों ने उस पर विश्वास कर लिया। उसने रौमेलिया जीतकर ऐनेटोलिया पर अभियान किया, पश्चात् सुल्तान मुराद अमीर जाफरी नामक एक संत के पास गया जो बूसा नगर में रहता था और भजन करता था। इस संत ने मुराद को उत्प्रेरित किया तो उसने विद्रोही को पकड़ कर मरवा डाला। विजय प्राप्त करने पर भी उसको संसार से वैराग्य हो गया इसलिये वह अपने पुत्र सुल्तान मुहम्मद को अपने स्थान पर बैठाकर निवृत्त हो गया। सुल्तान मुहम्मद शासन भली भांति नहीं कर सका। फ्रेंक लोगों के आक्रमणों से देश में गड़बड़ी मच गई तब सेनानायकों ने विरक्त मुराद से निवेदन किया कि वह पुनः राजसिंहासन को अलंकृत करे। उसने विद्रोह दबा दिया परन्तु वह पुनः निवृत्त होकर एकान्त में चला गया और राज्य अपने पुत्र के हाथों में छोड़ गया। कुछ समय बाद जानिसार बेकाबू हो गये और सुल्तान के प्रधान सलाहकार खादिम पाशा को मारने के लिये उन्होंने षड्यंत्र किया। तब पाशा ने भागकर सुल्तान के निवृत्ति स्थान में शरण ली। सैनिकों को अधिक वेतन देकर शान्त कर दिया गया। योग्य लोग पुनः निवृत्त सुल्तान को महल में ले आये तो विजय दृष्टिगत होने लगी। जब सुल्तान मुराद लगभग 30 वर्ष शासन करके मर गया तो सोलह

दिन बाद सुल्तान मुहम्मद गद्दी पर बैठ गया। उसने कुस्तुन्तुलिया जीत लिया और उसको अपनी राजधानी बनाया और वहीं अपनी कब्र भी बनाना निश्चित किया। उसने 31 वर्ष राज्य किया। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र बायजीद ने राजमुकुट अपने सिर पर रख लिया। उसको ईजिप्ट के लोगों ने हरा दिया और उसके स्वामिद्रोही सैनिक उसके पुत्र सुल्तान सलीम से मिल गये। सलीम ने अपने पिता को विष देकर मार डाला। उसने 30 वर्ष शासन किया था, फिर यह पितृघातक सुल्तान सलीम शासक बना और उसने खालदारान के मैदान में शाह इस्माइल सफवी से लड़ाई लड़ी, जिसमें इस्माइल हार गया, फिर सुल्तान सलीम ने मिश्र पर आक्रमण किया जिसमें वहां का सुल्तान कानूहगूरी मारा गया। इस प्रकार सरकेसी वंश का अन्त हो गया। इस वंश का अन्तिम सुल्तान मलिक सालीह था। उसकी जाति और सेवकों ने उसकी मां को राजसिंहासन पर बिठाकर उसके एक रिश्तेदार ईजाउद्दीन को प्रधान सेनापति नियुक्त किया। तब ही से मिश्र और सीरिया की राजशक्ति मामलूक नामक दासों के हाथ में आ गई और बानी अब्बास के राज्य का अन्त हो गया। सलीम ने आठ-दस वर्ष राज्य किया। उसके बाद उसका पुत्र सुलेमान सुल्तान बना। शाह इस्माइल ने उसके प्रति शोक प्रकट किया और उसको भेंटें भेजीं। सुलेमान ने उत्तर भेजा कि उत्तर अनावश्यक है, जिससे इस्माइल को अति दु:ख हुआ। सुलेमान ने ईसाइयों से शाइप्रस और बहुत-से देश जीत लिये और 48 वर्ष राज्य किया। फिर उसका पुत्र सुल्तान सलीम द्वितीय उसका उत्तराधिकारी बना। उसके भाई सुल्तान बाईजीद ने अपने 4 पुत्रों के साथ ईरान के शासक शाह तह्मास्प के पास शरण ली और वहीं उसकी मृत्यु हो गई। सुल्तान सलीम 16 वर्ष राज्य करके मर गया। उसके बाद उसका पुत्र सुल्तान मुराद गद्दी पर बैठा। उसको सम्राज्य तो विस्तृत हो गया था परन्तु उसके समय में जानिसारी लोग प्रबल हो गये और उन्होंने उसको दबा लिया। उन्होंने वजीर मोहम्मद पाशा को महल से निकाल कर मार डाला। सुल्तान मुराद ने 25 वर्ष राज्य किया।

तारीख 9 वहमान को मिर्जा यूसुफ खां ने जौनपुर जाने की अनुमति प्राप्त की, वह वहां जाकर व्यवस्था जमाना चाहता था। ता० 15 को शिदाबेग की मृत्यु हो गई। वह तोशा खाने का तहसीलदार था। विलास और मद्यपान में वह इतना चूर रहता था कि शायद ही कभी सेना की कवायद में आता होगा। अकबर उससे क्रुद्ध हुआ और एक बार उसके सारे कपड़े उतरवाकर उसे ठंडे पानी में डुबवा दिया, जिससे वह मर गया, फिर प्रकट हुआ कि उसने बादशाह के निजी कपड़ों पर हाथ डाला था उसी समय खान एहमद गिलानी का विजय-पत्र प्राप्त हुआ। अपने सुदीर्घ अभ्युदय एवं अपने देश की शक्ति कुसंगति आदि के कारण वह ईरान के शासक शाह तहमास्प के प्रति दुष्टता किया करता था। इसलिये उसको कारागार में रख दिया गया था फिर सुल्तान मुहम्मद खुदाबंदा ने उसे मुक्त करके वापस गिलान का शासन करने के लिये भेज दिया। फिर ईर्ष्यालु बातें करने वालों ने शाह अब्बास को उकसाया दुर्भाग्यवश वह अब्बास से लड़ने के लिये तैयार हो गया। परन्तु वह

हार गया और भाग कर तुर्की चला गया। वहां उसके गुणों का कोई आदर नहीं हुआ और उसके साथ कृपा का व्यवहार नहीं किया गया। 23 ता० को उसके दूत ने दरबार में आकर प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत किया जिसमें लिखा था कि ''सुदीर्घ काल से मेरी दरबार में उपस्थित होने की इच्छा थी परन्तु दूरी और अरक्षित मार्ग होने के कारण मैं इच्छा की पूर्ति नहीं कर सका। इस समय मैं बगदाद में संकट के दिन बिता रहा हूं और मेरे हृदय में पुरानी अभिलाषा जग रही है।'' अकबर दूत से अच्छी प्रकार मिला और उसे शाही कृपा की आशा दिलायी।

ता० 1 इसफनदारमज को सुल्तान दनियाल के कुलीच खां की पुत्री से लड़की का जन्म हुआ।

सिवी विजय

यह कन्धार के समीप एक दृढ़ दुर्ग है और पिछले समय में भक्कर के शासक के हाथ में था तथा लम्बे अर्से से इस पर अफगानों का अधिकार था। सईद बहाउद्दीन बुखारी आदि चार बड़े सेनानायकों और सुल्तान के सैनिकों को आदेश हुआ कि उधर जाकर दुर्ग को जीत ले। यदि दुर्गपति सलाह मानकर दुर्ग को समर्पित कर दे तो ठीक, अन्यथा उसका दमन किया जाये। तब 23 दाई को यह लोग इस उद्देश्य से रवाना हुए। उधर के जमीनदार ने अधीनता स्वीकार कर ली। ता० 3 इसफनदारमज को सेनानायक दुर्ग पर पहुंचे तो पांच हजार सैनिक लड़ने के लिये बाहर निकले, परन्तु थोड़ी देर लड़ाई हुई कि वह हार कर वापस दुर्ग में चले गये। फिर दुर्ग को घेर लिया गया और दुर्गसेना ने संधि करके दुर्ग की चाबियां समर्पित कर दीं। इस विजय के फलस्वरूप कंधार, कच्छ और मकरान तक का प्रदेश साम्राज्य में सम्मिलित कर दिया गया। जलाभाव के कारण उस रेतीले मैदान में सैनिकों को बड़ा कष्ट सहना पड़ा। जब वर्षा हो गई तो उन्होंने ईश्वर को धन्यवाद दिया। 27 ता० को अकबर की चान्द्रतुला हुई और उसको 8 विभिन्न पदार्थों से तौला गया।

***

प्रकरण 123

शासन के 40वें वर्ष का प्रारम्भ

मंगलवार 9 रजब 1003 हिजरी को इस वर्ष का आरम्भ हुआ। अकबर ने ईश्वर को धन्यवाद दिया और 19 दिन तक उत्सव होते रहे।

पांच फखरुद्दीन को हुसेन बेग शेख उमरी राजा वसु और कुछ जमीनदारों को अपने

साथ लिये उत्तर के पर्वतों से आया। प्रत्येक जमीनदार को शाही कृपा प्राप्त हुई। इसी समय वसुवा की विजय हुई। यह एक दृढ़ दुर्ग है और एक घनी बस्ती वाला इलाका इसमें मिला हुआ है। जब राजा मानसिंह बंगाल की राजधानी टांडा आया तब उसने सब दिशाओं में सेनायें भेज दीं। एक सेना उसने अपने पुत्र हिम्मत सिंह के नेतृत्व में वसुवा भेजी। 19 तारीख को इस सेना को विजय प्राप्त हुई और वहां के सैनिक दल को दबा दिया। जब नये साल के लिये अकबर ईश्वर को धन्यवाद दे चुका तो वह रावी नदी पार करके दिलामेज नामक बाग में गया, जो इन्हीं दिनों में लगाया गया था, वहां से वह कुछ महिलाओं के साथ रामबाड़ी गया और रात-दिन आनन्द का उपभोग किया।

बुरहानुनिजामुल-मुल्क की मृत्यु

बुरहाननिजामुल-मुल्क को अकबर से अनेक कृपायें प्राप्त हुई थीं। परन्तु जब उसको शक्ति प्राप्त हो गई तो उसमें कृतघ्नता आ गई। वह किसी की सलाह नहीं मानता था इस लिये अकबर ने उसके विरुद्ध सेना तैयार की थी। इसका उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। परन्तु यह सेना तैयार भी नहीं हुई थी कि उसकी मृत्यु हो गई। बुरहानुलमुल्क वहां दुराग्रही था, चाटुकारों ने उसको दम्भी बना दिया था। वह लोगों की जान और माल पर हाथ डाला करता था। उसको शत्रु और मित्र का ज्ञान नहीं था। उसने आदिल खां पर सेना चढ़ाई और वहां से विफल होकर वापस आया। उसने सोचा कि वह ईसाइयों से रेवादन्दा नामक दुर्ग छीन लेगा इसलिये उसने फरहाद खां और असद खां रोमी के नेतृत्व में उधर की ओर सेना भेजी। वह फरहाद खां की स्त्री पर मुग्ध था। इस लड़ाई में बहुत-से दक्षिणी मारे गये तथा असद खां पकड़ लिया गया। अपने पुरुषार्थ की वृद्धि के लिये वह रस (औषधि) खाया करता था और अनजान लोगों की बातें सुना करता था इसलिये उसको जीवन की कोई आशा नहीं रही। उसने अपने पुत्र को कारागार से निकाल कर अपना उत्तराधिकारी बना दिया। हब्शी-इस-लास खां एवं कुछ अन्य लोग इससे सहमत नहीं हुए। उन्होंने बुरहान के दूसरे पुत्र इस्माइल को जो पहले शासन कर चुका था, सुल्तान बनाना चाहा। जब बुरहान को कुछ स्वास्थ्य प्राप्त हुआ तो पालकी में बैठकर लड़ने के लिये चला। अहमदनगर से तीन कोस की दूरी पर उसने लड़ाई लड़ी और विजय प्राप्त की। इस विजय से वह और भी उन्मत्त और दम्भी बन गया। वापस लौट कर उसने और भी रसों का उपयोग किया और अपना रोग बढ़ा लिया। 25 फखरदीन को उसकी मृत्यु हो गई। बहुत-से लोगों का कहना था कि उसकी बहन चांद बीबी ने उसे विष देकर मारा था। सैनिकों ने इब्राहीम को सुल्तान बनाया। उसने अपने भाई की आंखें फोड़ डालीं और उसका वध करवा दिया।

***

प्रकरण 124

कंधार में शांति-स्थापना और वहां से सेना की वापसी

कारा बेग और मिर्जा बेग को मुजफ्फर हुसेन मिर्जा को लिवा लाने के लिये भेजा गया था। जब वह कंधार पहुंचे तो मिर्जा ने उनका स्वागत किया और शाही आदेश पर हर्ष प्रकट किया। उसने दुर्ग समर्पित कर दिया और 28 ता० को सोने और चांदी के सिक्कों पर अकबर के नाम का ठप्पा लगवाया और खुतबा पढ़वाया। शाह बेग खां ने मिर्जा को अनेक प्रकार से प्रोत्साहित किया और 2 हजार किजिल वाश और उसके कुटुम्ब के साथ उसको रवाना कर दिया। इस प्रकार एक घनी जनसंख्या वाला देश बिना लड़े अधिकार में आ गया और एक प्रतिष्ठित कुल को हानि नहीं उठानी पड़ी। कुछ समय के लिये उजबेग लोग वहां से हट गये जिससे कृषक समाज को शांति प्राप्त हुई। राजद्रोही जमींदारों को दण्ड मिला। इस समय वकील का उच्चपद खान आजम मिर्जा कोका को प्रदान किया गया। वह बड़ा योग्य और निःस्वार्थी था। 19 अर्दी विहिश्त को गोवा बन्दरगाह से एक बड़ा कारवा आया जो वहां के पदार्थों से लदा हुआ था। इसके साथ कई विद्वान् ईसाई संन्यासी थे जो पादरी कहलाते थे।

जमीनदावर और गरम सीर की विजय

ये दोनों देश कंधार के अधीन हैं। इनको मिर्जाओं ने उजबेगों से छीन लिया था। जब शाही सेना के आगमन की बात फैली तो इन स्थानों के लोग एकत्र होकर विद्रोह करने लगे और उनकी विजय हुई। उजबेग लोग हार कर पीछे हट गए। अब इस समय उजबेग लोगों ने बदला लेने के लिये दुर्ग को घर लिया। जब शाहबेग खां आया तो लोगों ने निवेदन किया कि हमारा दुःख दूर किया जाये। उसने सोचा कि जब बादशाह का इस विषय में कोई आदेश नहीं है तो उन लोगों को सहायता दी जाये या नहीं, फिर कुछ उजबेग लोगों ने कंधार के समीप लूट-मार करना शुरू किया और मिर्जा ने एवज टेकी का दुर्ग बलात् छीन लिया और जब उसने सलाह की कोई बात नहीं, सुना तो शाहबेग खां उससे लड़ने के लिए रवाना हुआ। उसने एवज को पकड़ लिया और दुर्ग छीन लिया, फिर हेलमन्द नदी को पार करके शाहबेग ने जमीदावर पर आक्रमण किया। तब शत्रु भाग कर दरगोर के दुर्ग में चला गया। जब उसका पीछा किया गया तो वह लड़े बिना ही हैरात की ओर भाग गया, तब सेना वापस जमींदावर आ गई और उसने गरमसीर को भी लड़े बिना ही छीन लिया और दोनों को साम्राज्य में मिला लिया गया। अब तूरानी सैनिकों की आंखें खुलीं और खुरासान के प्रधान सेनापति कुल बाबा को खुरासान की रक्षा की चिन्ता हुई और दूरदर्शिता

की दृष्टि से उसने सैनिकों के साथ अच्छा व्यवहार किया। बादशाह को यह खबर 28 तीर को मिली तो सबको यथोचित पुरस्कार प्रदान किया गया।

10 जुलाई, 1595 को मोटा राजा (जोधपुर का महाराजा उदयसिंह जो मालदेव का पुत्र था) की दम घुटने से मृत्यु हो गई और उसकी चारों रानियां स्वेच्छा से सती हो गईं। बादशाह नाव द्वारा गया और अन्त्येष्टि में शामिल हुआ।

निजामुलमुल्क की मृत्यु

जब अकबर ने दक्षिण की ओर से मुख मोड़ लिया तो उस देश में समय-समय पर उत्पात होने लगे। बुरहानुलमुल्क की मृत्यु के बाद इब्राहीम सुल्तान बना तो बुराइयां बढ़ने लगीं। उसके दमन के लिये बीजापुर से एक सेना आई और अहमदनगर से 40 कोस के अन्तर पर 16 अमरदाद को लड़ाई हुई जिसमें इब्राहीम को एकाएक बाण लगा और वह मारा गया। बीजापुर के लोग सफल होकर वापस चले गए और निजामुलमुल्क के लोग त्रस्त होकर घर लौटे। बहुतों ने खुदाबन्दा के पुत्र अहमद को अपना मुखिया मान लिया और कुछ लोगों ने कासिम के पुत्र मोती को पसन्द किया। प्रथम बुरहान निजामुलमुल्क के छः पुत्र थे—कासिम, अब्दुल कादिर, हुसेन, खुदाबन्दा, शाहअली और मुहम्मद बाकीर। जब उसकी मृत्यु हो गई तो हुसेन उसका उत्तराधिकारी बना और जब हुसेन की भी मृत्यु हो गई तो उसका ज्येष्ठ पुत्र मुर्तजा निजामुलमुल्क बनाया गया।

तारीख 31 को 12 निजाम नियुक्त किये गये। यद्यपि ख्वाजा शमसुद्दीन काफी सच्चा और परिश्रमी पुरुष था और वजीर के पद पर काम भली प्रकार कर रहा था, परन्तु अब सरकार का काम बहुत बढ़ चुका था इसलिये प्रत्येक सूबे में वजीर की नियुक्ति आवश्यक हो गई थी जो निम्न प्रकार की गई—

	दीवान	सूबे
1	हुसेन बेग	इलाहाबाद
2.	भारतीचन्द	अजमेर
3.	राय रामदास	अहमदाबाद
4.	कहनूर	अवध
5.	कीशूदास	बंगाल
6.	रामदास	बिहार
7.	रामराय	दिल्ली
8.	ख्वाजा गियास बेग	काबुल
9.	मथुरादास	लाहौर
10.	ख्वाजा मुहिब्ब अली	मालवा

11. केशोदास आगरा
12. ख्वाजा मुकीम मुल्तान

यह आदेश दिया गया कि प्रत्येक दीवान अपनी कार्यवाहियों की सूचना ख्वाजा शमसुद्दीन खाफी के निर्देशानुसार सीधी बादशाह के पास भेजे।

मल्ल युद्ध में वज्रनाथ की विजय

भोज के समय वज्रनाथ ने प्रधान मल्ल बलभद्र से कुश्ती (मल्लयुद्ध) की। दर्शकों को यह आश्चर्य था कि बादशाह ने उस दुबले-पतले व्यक्ति को ऐसे बलवान शरीर वाले से लड़ाया। शीघ्र ही यह प्रकट होने लगा कि बलवान मल्ल को पछाड़ दिया जायेगा। उसकी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिये दोनों मल्लों (पहलवानों) को अलग-अलग कर दिया और बराबर समझा।

नावघाट की चुंगी बन्द

बादशाह को यह खबर मिली कि नाव घाटों पर चुंगी ली जाती है तो आदेश दिया गया कि इस प्रकार यदि चुंगी ली जाए तो कर्मचारियों को दंड दिया जाये। यह काम लाहौर से हिन्द कोह तक जैन खां कोकलताश के सुपुर्द किया गया। लाहौर से बंगाल तक का काम दौलत खां को दिया गया। लाहौर से गुजरात तक का काम रामदास कछावा को सौंपा गया। जमीनदावर तक के काम पर दौलत खुर्द को और दिल्ली से अवध तक के काम पर मीयां खानू को नियुक्त किया गया।

***

प्रकरण 125

मुजफ्फर हुसेन मिर्जा दरबार में आकर सम्मान प्राप्त करता है

मुजफ्फर हुसेन मिर्जा ईरान के शाह से असन्तुष्ट था। वह अपने जीवन को खतरे में समझता था और वह शाह के अधीन होना नहीं चाहता था। यौवन के तूफान के कारण वह अकबर के दरबार में भी नहीं आता था। फिर एक-एक उजबेग लोगों ने खुरासान को दबा लिया और मिर्जाओं की स्थिति विषम हो गई। रुस्तम मिर्जा तो भाग्यवश साम्राज्य से सम्बन्धित हो गया परन्तु मुजफ्फर की स्थिति और अधिक बिगड़ गई तो उसने अपनी माता

और ज्येष्ठ पुत्र को अकबर के पास क्षमा-याचना के लिये भेजा और फिर वह अकबर की सेवा करने के लिये तैयार हो गया। जब शाहबेग खां आया तो मिर्जा अपना देश उसके सुपुर्द करके रवाना हो गया। बादशाह के आदेश से मार्ग में अधिकारियों ने उसके प्रति आदर प्रकट किया और प्रति सप्ताह अकबर ने उसको भेंट भेजी। जब वह तीन मंजिल दूर रह गया तो तीन बड़े लोगों को उसके पास भेजा गया और जब वह तीन कोस की दूरी पर आ गया तो खान आजम मिर्जा कोका, जैन खां कोकलताश और अन्य अनेक लोग उससे मिले। पांच शहरीयूर को मिर्जा अकबर से मिला और उसने एक सौ ईराकी घोड़े और अन्य वस्तुएं भेंट की जिनमें एक आश्चर्यजनक मोहरा था। इसको सांप के काटे पर रगड़ देने से विष उतर जाता था। मिर्जा को पांच हजार का मनसब देकर सरकार सम्बल की जागीर, जो कंधार से बड़ी है, प्रदान की गई। उसके चारों पुत्रों बहराम मिर्जा, हैदर मिर्जा, अल्ताफ मिर्जा और तहमास्प मिर्जा को भी भेंटें दी गयीं।

इस वर्ष मनसबदारों को तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया। प्रथम श्रेणी में वे लोग रखे गये जिनका मनसब जात और सवार बराबर थे। दूसरी श्रेणी में वे लोग माने गये जिनके सवार मनसब जात से आधे या अधिक थे। तीसरी श्रेणी में वे समझे गये जिनके सवार आधे से भी कम थे। इन लोगों का वेतन भी इसी के अनुसार निश्चित किया गया। इसका विवरण आईन की अन्तिम जिल्द में दिया हुआ है। इसी दिन ईसा खेल का दमन करने के लिये ताश बेग खां को रवाना किया परन्तु वह बीमार हो गया इसलिये अपना काम भलीभांति पूरा नहीं कर सका। तारीख 6 को इब्राहीम हुसेन मिर्जा की लड़की से शाहजादा सलीम को पुत्री हुई। ता० 9 को सईद खां पूर्व इलाके से आया। उसने एक सौ हाथी और अन्य वस्तुयें भेंट की। ता० 11 को हकीम आईन-उल-मुल्क की हिन्दिया में मृत्यु हो गई। अकबर ने उसके बच्चों पर कृपा की। वह भला आदमी था और लोगों की सहायता किया करता था। ता० 16 को सईद खां ने भाटी के जमींदार ईसा खां की पेशकश प्रस्तुत की जो बादशाह ने मंजूर कर ली। मिहर मास के आरम्भ में कंधार को खाद्य-सामग्री भेजी गई। वहां अन्न की कुछ कमी थी और सैनिकों को कष्ट था। मुल्तान से भी योग्य लोगों ने वहां अन्न भेजा तो फिर कोई कमी नहीं रही। खुरासान के प्रधान सेनापति कुलबाबा को बड़ी चिन्ता थी। उसने वहां के अफसरों के साथ अपनी मित्रता दृढ़ की। इसी समय वेतन का स्तर निश्चय किया गया। यह आदेश दिया गया कि मुगल, अफगान और भारतीय लोगों को जिनके पास तीन घोड़े हों उन्हें एक हजार दाम और जिनके पास दो घोड़े हों उन्हें 800 दाम और जिनके पास एक घोड़ा हो उन्हें 600 दाम दिये जाये। प्रथम श्रेणी के राजपूतों के लिये 800 और मध्य श्रेणी के राजपूतों के लिये 600 दाम निश्चित किये गये।

16 तारीख को खान आजम के सुपुर्द शाही मुहर की गई। बादशाह के आदेश से मौलाना अली अहमद व तीमूर तक बादशाह के पूर्वजों के नाम मुहर पर खुदवाये। फिर आदेश दिया गया कि सब सनदों पर और गोपनीय आदेशों पर यह मुहर लगाई जाए।

इस दिन ओरमुज का सूबेदार दरबार में उपस्थित हुआ

20 सफर 1004 हिजरी (5 अक्टूबर, 1595) को मेरा बड़ा भाई कविराज शेख फैजी इस संसार से चल बसा। बादशाह को उससे बड़ा दुख हुआ और सब लोगों ने शोक मनाया।

2 अक्टूबर, 1595 ई० को शाहजादा सुल्तान दनियाल का राई मालदेव के पुत्र राई मल की पुत्री से विवाह हुआ। 2 आवान को अकबर की सौर तुला हुई तो उसको बारह विभिन्न पदार्थों से तौला गया। इसी दिन रुस्तम मिर्जा ने चित्तौड़ जाने की अनुमति प्राप्त की। उसके कारिन्दों ने मुल्तान की व्यवस्था बिगाड़ डाली थी। इसलिये उसको खलसा करके ख्वाजा मुकीम को सौंपा गया। अमीनुद्दीन को रुस्तम मिर्जा के साथ भेजा गया। परन्तु मुकीम बीमार हो गया इसलिये रुस्तम मिर्जा ने उसको सरहिन्द से ही वापस लौटा दिया।

हकीम हमाम की मृत्यु

हकीम हमाम को दो मास से क्षय रोग था, जिससे 16 आबान को उसकी मृत्यु हो गई। वह सुन्दर शुद्ध और मिष्ट भाषी था और लोकोन्ननि के लिये परिश्रम करता था। उसको बकावल बेगी का पद प्रदान किया गया था। बादशाह ने उसके कुटुम्ब के लोगों को सान्त्वना दी।

***

प्रकरण 126

खानदेश के शासक राजा अली खां का शाही सेना में सम्मिलित होना

राजा अली खां स्वामिभक्ति की बातें करता था परन्तु वह हृदय से अकबर का भक्त नहीं था। वह अकबर के नाम का खुतबा उसी समय पढ़वाता था जब शाही राजदूत उसके यहां रहते थे। जब खान-ए-आजम दक्षिण विजय के लिए गया तो अली खां और दक्षिण के अन्य विद्रोहियों ने उससे युद्ध किया और फिर पश्चात्ताप भी किया। जब शेख फैजी उसको सलाह देने गया तो उसको कुछ अकल आई और जब अकबर ने दक्षिण पर अभियान किया तो अली खां चेता। फिर शाहजादा सुल्तान मुराद गुजरात से दक्षिण गया और उसके साथ मालवा से शाहरूख मिर्जा, खानखाना शाहबाज खां आदि रवाना हुए। तब अली खां

ने कहा कि मैं बादशाह की सेवा करने को तैयार हूं। बुरहानपुर से 30 मील की दूरी पर आकर वह शाहरूख मिर्जा से मिला। अफ़सरों ने उसका हार्दिक स्वागत किया तब बादशाह ने नदरबाग भी उसके राज्य में मिला दिया।

अकबर नगर की स्थापना

जब राजा मानसिंह बंगाल में था तो उसने ऐसी राजधानी बनाना चाहा जिस पर नावों द्वारा आक्रमण न हो सके। अन्त में राजमहल के निकट एक उपयुक्त स्थान मिला जो शेर खां को भी पसन्द था। थोड़े ही समय में वहां एक अच्छा नगर बस गया। इसी समय ईसा का इलाका भी साम्राज्य में मिला लिया गया। राजा मानसिंह एक सेना लेकर उधर की ओर गया था। शत्रु उसका सामना नहीं कर सका और ब्रह्मपुत्र नदी को पार करके दूसरी ओर भाग गया। राजा मानसिंह ने शेरपुर में डेरे लगवाये और वहां एक नगर बसाकर उसका नाम सालिम नगर रखा। इसी समय काकरूल-ईयां नामक दुर्ग को जीत लिया गया। यहां के जमींदार ने गोलकुण्डा के सुल्तान कुतुबुलमुल्क से सहायता मांगी थी। दुर्जनसिंह को राजा ने उधर भेजा तो जमींदार को दबाकर उसका निवासस्थान छीन लिया गया।

काकर जाति का दमन

काकर लोग अफगान जाति के थे। इन्होंने कंधार का मार्ग बन्द कर दिया था तब शाह बेग खां ने वहां पहुंच कर लड़ाई लड़ी और बहुत-से काकर लोग मारे गये।

राजा सुरत सिंह को गुजरात भेजा गया; क्योंकि वहां सेना कम थी। ''बेयान को जैन खां कोका की प्रार्थना पर अकबर उसके मकान पर गया तो उसने 170 हाथी भेंट किये। अकबर ने इनमें से केवल थोड़े-से हाथी स्वीकार किये।''

इस समय अकबर ने आदेश दिया कि दक्षिण पर अभियान करने की तैयारी की जाये। उधर से विविध प्रकार की खबरें आ रही थीं। इसलिये अकबर ने स्वयं ही जाने का निश्चय किया और अग्र शिविर का प्रस्थान भी कर दिया परन्तु वर्षा होने लगी और हिन्दू ज्योतिषियों ने कहा कि अभी अभियान स्थगित कर दिया जाये। वर्षा और भी अधिक होने लगी इसलिए अकबर केवल 13 मील चलकर लाहौर वापस लौट गया।

***

प्रकरण 127

अहमदनगर के दुर्ग का घेरा

आदेश होते ही शाहजादा मुराद ने अहमदनगर पर अभियान करने की तैयारी कर ली। खानखाना को प्रयाण करने में कुछ विलम्ब हुआ और कुछ मतभेद भी हो गया। शाहजादा चाहता था कि खानखाना गुजरात पहुंचे और वहां से संयुक्त सेना दक्षिण की ओर प्रस्थान करे। खानखाना मालवा के मार्ग से जाना चहाता था। शाहजादा 30 अक्टूबर, 1594 को अहमदाबाद से रवाना होकर भडौच पहुंच गया और वहां सेना के आगमन की प्रतीक्षा करने लगा। फिर जून, 1595 के प्रारंभ में शाहजादा भडौच से चला। उधर खानखाना सेना एकत्रित करके अपनी जागीर भीलसा में कुछ समय तक रहा, फिर 19 जुलाई, 1595 को उसने उज्जैन की ओर प्रस्थान किया। इससे शाहजादा मुराद ने क्रुद्ध होकर खानखाना को कुछ तेज पत्र लिखा। खानखाना ने निवेदन किया कि खानदेश का शासक शाही सेना में शायद शामिल हो जायेगा। इसलिए शाहजादा गुजरात में ही ठहरे और शिकार करे। इससे शाहजादा नाराज हो गया और अपनी सेना के साथ अहमदनगर चला गया, तब शाही सेवक और राजा अली खां को दुःख हुआ और खानखाना सेना को पीछे छोड़कर राजा अली खां के साथ चला और 21 नवम्बर, 1595 को अहमदनगर से 30 कोस की दूरी पर चान्दौड़ नामक दुर्ग के समीप वह शाहजादे के पास पहुंचा तो शाहजादा खानखाना और राणा अली खां से नहीं मिला और आगे चल दिया। फिर बहुत कुछ बात होने पर मुलाकात हुई। जब खानखाना की सेना आई तो उसके साथ भी अच्छा व्यवहार नहीं हुआ, तब खानखाना ने उस काम से अपना हाथ समेट लिया। 18 दिसम्बर, 1595 को अहमदनगर का दुर्ग घेर लिया गया और बुर्हान की बहन चांदबीबी दुर्ग की रक्षा करने लगी। घेरा लम्बे अर्से तक चला। चांदबीबी को मालूम हुआ कि शाही सेना में फूट है तो उसने सामना करने का दृढ़ निश्चय किया और खानखाना की खाइयों पर बड़े जोर का हमला करवाया, परन्तु अहमदनगर की सेना असफल होकर दुर्ग में जा छिपी। शाही सेना में फूट थी। रास्ते बन्द हो गए थे और अन्न की कमी थी। फिर भी आसपास का इलाका और पट्टन लूट लिए गए। 21 फरवरी, 1596 को दुर्गप्राचीर कुछ टूट गई। शाहजादे ने भी दुर्गप्राचीर की नींव खोखली कर डाली और उसमें बारूद भर कर आग लगा दी, जिससे 30 गज दीवार उड़ गई परन्तु दूसरे सुरंग में आग नहीं डाली गई। सेनानायकों ने समझा कि कहीं चित्तौड़ का-सा हाल न हो जाए। इस अर्से में दुर्गरक्षकों ने दूसरी दीवार बना ली। सायंकाल होते-होते शाही सेना की हार होने लगी। उधर दुर्गरक्षकों ने भी थक कर और डर कर संधि का प्रस्ताव किया, उन्होंने कहलाया कि बुर्हान के पौत्र बहादुर को कारागार से निकाल कर निजामुलमुल्क बनाया जायेगा और वह शाही दरबार की सेवा करेगा। अहमदनगर उसको

जागीर के रूप में दे दिया जाये। बरार शाही सेना के सुपुर्द कर दिया जायेगा। अच्छे-अच्छे हाथी, रत्न और अन्य पदार्थ भेंट किए जायेंगे। यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया और 23 फरवरी, 1596 को युद्ध बन्द कर दिया गया।

तारीख 15 को अकबर की चान्द्र तुला हुई तो उसको आठ पदार्थों से तोला गया और उत्सव मनाया।

***

प्रकरण 128

राज्यारोहण से 41वें इलाही वर्ष का प्रारम्भ

बुधवार, 11 मार्च, 1596 को इस वर्ष का आरम्भ हुआ। जैन खां कोका और सादिक खां को पांच हजार का मनसब मिला। शाह कुली महरम को चार हजारी मनसबदार बनाया गया। अहमदनगर से जब सेना वापस चली तो प्रत्येक मंजिल पर लुटेरों ने उसका सामान लूट लिया। सेनानायकों में मतभेद था। इसलिये कोई उपाय नहीं था। फिर सेना बरार में ठहरकर मखर नाम कस्बे में पहुंची। बरार से शत्रु भाग गया था। यह शाही सेना के लिये सौभाग्य की बात थी। अब प्रश्न यह था कि बरार पर कब्जा कैसे रखा जाये, तब सादिल ने प्रान्त की रक्षा का और मीर मुल्तजा ने खेतीबाड़ी की देखरेख का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया। मीर अली बेग की अन्य अधिकारियों ने भी सहायता की।

तीरा में शाही सेना का आगमन

जब कासिम खां मारा गया तो तारीकी लोगों ने विद्रोह करके खैबर के मार्ग में खतरा उत्पन्न कर दिया, कुलीच खां को भेजा गया कि वह अफगानिस्तान का शासन करे और इन लोगों को दबाये। काबुल में व्यवस्था स्थापित करके वह उत्तर से तीरा की ओर चला तो, अफरीदी लोगों ने स्वामिभक्ति के वायदे किये, साथ ही उन्होंने यह भी शिकायत की कि शाही सेना उनकी खेती को नष्ट कर देगी, तब कुलीच खां बेग्राम चला गया। मार्ग की दुर्गमता के कारण वह ईलम और कोहार के मार्ग से तीरा नहीं पहुंच सका। तब उसने बंगस के मार्ग से जाने का विचार किया, वहां खरमावा पर हल्की-सी लड़ाई हुई और उसने वहां एक दुर्ग की नींव डाली। तारी के लोग लड़ने को तैयार हो गये, तब कुछ लोगों ने एक गुप्त मार्ग बतलाया। कुलीच खां दूसरे सेनानायकों को वहीं छोड़ कर उस मार्ग से चला तो रातभर और दूसरे दिन दोपहर तक कूच करने के बाद वह तीरा के इलाके में पहुंचा। जलाला उसका मार्ग नहीं रोक सका और घाटियों से भाग गया। शाही सेना पहुंच तो गई,

परन्तु मार्ग सुरक्षित नहीं था और खाद्य-सामग्री की कमी थी। सहायक सेना भी नहीं आई, इसलिये कुलीच खां को वापस लौटना पड़ा, यह कार्यवाही अकबर को पसन्द नहीं आई।

मथुरादास की मृत्यु

मथुरादास ईमानदार और वीरपुरुष था। जब अकबर ने सुना कि दक्षिण में शाही सेना अच्छा काम नहीं कर रही है, तो मथुरादास को वहां जाने का आदेश दिया। मलकापुर के निकट लुटेरों ने उसके सामान पर आक्रमण किया, तो मथुरादास घोड़े से उतर कर लड़ने लगा। इस लड़ाई में वह भाले के प्रहार से मारा गया।

शाहपुर की स्थापना

जब शाहजादा सुल्तान मुराद बरार की रक्षा के विषय में निश्चित हो गया तो मिर्जा शाहरूख, खानखाना, राजा अली खां, शाहबाज खां, जगन्नाथ और राय दुर्गादास को साथ लेकर उसने बरार के मध्य भाग पर अभियान किया और बालापुर से छः कोस के अन्तर पर उसने अपना शिविर लगाया। थोड़े समय में वहां एक नगर बस गया, जो शाहपुर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इसी समय एक व्यक्ति ने कहा कि मैं बुरहान हूं। जब जमीनदारों को मालूम हुआ कि वह धोखा दे रहा है तो उसको कारावास में रख दिया। जब उसने पश्चात्ताप किया तो बादशाह के आदेश से उसको मुक्त कर दिया गया। परन्तु भाग कर वह पुनः प्रपंच करने लगा तो उत्तरी पहाड़ियों के जमीनदारों ने उसको पकड़ कर मार डाला।

तूरान राजदूत भेजा

जब बादशाह सिन्धु नदी के तट पर पहुंचा, तो उसने आदेश दिया कि खैबर का मार्ग बराबर कर दिया जाये। उस समय तूरान में उत्पात खड़ा हो गया तो अब्दुल्ला खां ने मीर कुरेश को प्रार्थना-पत्र और भेंटों के साथ अकबर के पास भेजा और शान्ति तथा मैत्री का वचन दिया। अकबर ने अपनी ओर से हाकिम हमाम को भेजकर अब्दुल्ला को त्रास मुक्त किया। फिर अकबर ने दो राजदूत और भेजे, परन्तु मार्ग में ही उन दोनों की मृत्यु हो गई, तब तूरानी लोग बड़े चिन्तित हुए। इसके बाद अकबर ने ख्वाजा अशरफ नक्शबन्दी और शेख हुसेनी लखनवी को एक मैत्रीपूर्ण पत्र लेकर भेजा, जिसका सारांश अगले प्रकरण में दिया जा रहा है।

***

प्रकरण 129

बादशाह का पत्र तूरान के सुल्तान अब्दुल्ला खां उजबेग के नाम

आपने शान्ति और मेल को दृढ़ करने के विषय में और हिन्दू कोह को अपने बीच में सीमा बनाने के बारे में जो लिखा है वह हमको बहुत पसन्द है। संसार में स्नेह और मेल के बराबर कोई चीज नहीं है। हम सदैव विभिन्न कौमों के साथ शान्ति और मेल का सम्बन्ध रखना चाहते हैं। इसके हम कुछ उदाहरण दे रहे हैं।

ईरान के शाह ने पूर्व सम्बन्ध के आधार पर हमारे पास यादगार सुल्तान शामलू को भेजकर सहायता मांगी थी, परन्तु हमने नहीं दी। फिर शाहरूख मिर्जा ने प्रार्थना की कि उसको काबुल, कश्मीर, स्वाद, बाजोर और तीरा में कहीं जागीर दे दी जाये, परन्तु हमने यह समझ कर कि यह सब आपके समीप है। हमने उसको मालवे में जागीर दी, हमने मिर्जाओं को कन्धार से अपने दरबार में बुलाया और वहां का प्रबन्ध अपने पुराने सेवकों के सुपुर्द कर दिया। क्योंकि हमको यह आशंका थी कि तूरान की सेना यह समझ कर कन्धार पर आक्रमण कर देगी कि यह प्रदेश इस ईरान का है। बदख्शां के एक धूर्त व्यक्ति ने अपने को शाहरूख मिर्जा का पुत्र बतलाया और वहां के जमींदार उससे मिल गये। उस धूर्त ने हमारे पास प्रार्थना-पत्र भेज कर सहायता मांगी, परन्तु हमने उसकी बात नहीं सुनी। यद्यपि इस प्रदेश का जलवायु हमारे अनुकूल है और यहां शिकार भी बहुत अच्छी है, तो भी हमने आगरा जाने का निश्चय कर लिया है। हम चाहते हैं कि इधर-उधर की बातें करने वालों के मुंह बन्द हो जायें। आपने शाहरूख मिर्जा के विषय में जो लिखा है, वह विचारणीय है। यदि दो बड़े शासकों की पारस्परिक ईर्ष्या समाप्त हो जाये तो इससे बढ़ कर क्या बात हो सकती है। शाहरूख अज्ञानी युवक है। उसको क्षमा क्यों नहीं किया जा सकता। उसने हमारे प्रति भी अपराध किये थे। परन्तु फिर क्षमा मांग ली।

आपने मौलाना हुसैनी के साथ पत्र भेजा, उसमें लिखा है कि आपके पुत्र ने कम उम्र के कारण अनुचित प्रार्थनाएं की थीं और आपको आशंका थी कि इस कारण अपनी मित्रता में शायद अन्तर आ जाये और आपने अपने पुत्र की ओर से क्षमा भी मांगी थी, परन्तु आपका दूत मार्ग में ही डूब कर मर गया और आपके पत्र का पता नहीं लगा। हमको इस दुर्घटना पर खेद है, परन्तु अपनी परस्पर मैत्री इतनी पुरानी है कि इसमें अन्तर आने की कोई आशंका नहीं होनी चाहिये।

आपने लिखा है कि अहमद अली अतालिक के आने तक कुछ अभियान स्थगित कर दिये गये हैं। हमने अतालिक को वापस लौटने की अनुमति दे दी थी, परन्तु उसके

बाद उसकी मृत्यु हो गयी। यह आपने सुन लिया होगा, वह कुशल और बुद्धिमान व्यक्ति था, यदि वह आपके पास पहुंच जाता तो आपको बहुत-सी भेद की बातें ज्ञात हो जातीं।

जब मौलाना हुसेनी यहां आया तो हमने अधिकारियों को आदेश दे दिया था कि उसको शीघ्र ही वापस जाने दिया जाये। इसी बीच में कश्मीर के कुछ लोगों ने हमारे विरुद्ध विद्रोह कर दिया। उस समय वर्षा हो रही थी। परन्तु हमने उधर की ओर प्रयाण किया। परन्तु कुछ भले आदमी अवसर देखकर विद्रोहियों के नेता का सिर हमारे पास ले आये। फिर हम कश्मीर चले गये, इसलिये आपके राजदूत की वापसी में विलम्ब हो गया और जब हम वापस आये तो सुना कि मौलाना हुसेनी की पेट के दर्द से मृत्यु हो गई। फिर हमने हमारे परिवार के पुराने सेवक ख्वाजा अशरफ के द्वारा आपको पत्र लिखा, जिसमें अपनी मित्रता की पुष्टि की।

इस समय शाहजादा सलीम, जैन खां कोका की पुत्री पर मुग्ध हो गया और उससे विवाह करने का विचार करने लगा। बादशाह को यह बात अच्छी नहीं लगी, परन्तु जब उसने देखा कि शाहजादे का अपने हृदय पर वश नहीं है। तो विवाह की अनुमति दे दी गई। 18 जून, 1596 को मरियम मकानी के महल पर विवाह हुआ और कोका की पुत्री को अन्त:पुर में भेज दिया गया।

बुसना दुर्ग की विजय

दुर्गपतियों की असावधानता से यह दुर्ग अफगानों के हाथ में चला गया था। राजा मानसिंह ने दुर्जन सिंह को सेना के साथ वहां भेजा। सेना ने दुर्ग को घेर लिया। फिर दुर्ग के अन्दर एक तोप फट गई और सुलेमान तथा अन्य कितने ही लोग मारे गये। सुलेमान एक दुर्गपति था। दूसरा दुर्गपति केदार भी आहत होकर मर गया और ईसा के पास उसने शरण ली।

राजा रामचन्द्र का पौत्र तिकमा-जीत दरबार में आया। उसके पिता के मर जाने पर धूर्त लोगों ने इसको अपना साधन बना दिया था और बान्धु नामक दुर्ग में जाकर लड़ाई की योजना बनाने लगे। तब राय पतरदास को भेजा गया। उसने योग्यता और साहस के द्वारा बहुत-सा प्रदेश दबा लिया।

प्रार्थना की कि कोई बड़ा दरबारी उनको बादशाह के समक्ष ले जाये तो बादशाह ने उनकी बात मान ली। इस्माइल कुली खां उनको बादशाह के पास ले आया तो उसने उनके साथ अच्छा व्यवहार किया।

दक्षिणी सेना की विजय

अजदर खां, आईन खां और हबीब खां ने दक्षिण के अन्य लोगों से मिल कर उत्पात खड़ा किया तो मिर्जा अली बेग अकबर शाही को उनके दमन के लिये रवाना किया। उसने

एकाएक आइन खां के डेरों पर जोर का आक्रमण किया, तो आइन खां थोड़े साथियों सहित भाग गया। आइन खां का सब सामान लूट लिया गया, जिसमें नाचने व गाने वाली स्त्रियां, हाथी आदि थे। 16 तारीख को तोलक खां की बंगाल में मृत्यु हो गई, वह साम्राज्य का पुराना सेवक था। 20 तारीख को सैयद खां कों बिहार भेजा गया।

मिर्जा मुजफ्फर हुसेन कन्धारी सीधा व्यक्ति था। उसने सब काम लोभी और अत्याचारी पुरुषों के हाथ में छोड़ दिया था। वह विलास में डूबा रहता था। उसके जमीनदारों व व्यापारियों ने कई बार शिकायत की, पर उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसको प्रशासन से ग्लानि हो गई थी इसलिये उसने मक्का जाने की अनुमति मांगी, जो दे दी गई। परन्तु उसको फिर पश्चात्ताप हुआ, तब बादशाह ने उसको वापस बुला लिया।

31 तारीख को मिर्जा रुस्तम को उत्तर की पहाड़ियों की ओर भेजा गया। राजा बासू और अन्य जमींदारों ने अपना सिर उठा लिया था, इसलिये पठानकोट और उसके पास का इलाका मिर्जा को जागीर में देकर उसे उधर भेजा गया था। आसफ खां और हाशिम बेग तथा अन्य आदमियों को उसकी सहायतार्थ रवाना किया गया था। अमर दाद को रामचन्द्र बरार भेजा गया।

अकबर दुर्घटनाग्रस्त

28 जुलाई, 1596 को अकबर ने हिरनों की लड़ाई देखी। अचानक ही एक हिरन ने दौड़कर उसको सींग मारे, जिससे उसका एक अण्डकोष छिल गया और उसमें से रक्त बहने लगा। कुछ दिन बाद घाव पर सूजन बढ़ गई, हकीमों ने चिकित्सा, हकीम मित्री व हकीम अली के सुपुर्द कर दी और घाव पर औषध लगाने का काम अबुल फजल को सौंपा गया, उसका पुत्र रोज पट्टी खोलता और बांधता था। यह बीमारी 1 मास और 22 दिन चली। चोट के 11वें दिन जोखें लगाई गईं, तब कुछ आराम हुआ। फिर बादशाह ने स्नान किया और उदारतापूर्वक दान दिया और बहुत-से बन्दियों को मुक्त किया।

15 तारीख को काजीनूर उल्ला को आगरा सूबा की खातेदारियों की जांच करने भेजा गया और आदेश दिया गया कि जिनको आवश्यकता हो उन्हें नई भूमियां दी जायें। 26 तारीख को बादशाह घोड़े पर सवार होकर दिलावेज बाग में गया। सांयकाल को शाहजादा सुल्तान दनियाल की माता का देहांत हो गया और 24 को शाहजादा जहांगीर की पत्नी, जो खानदेश के सुल्तान की पुत्री थी, मर गई।

ईसाक की विफलता

राजा मानसिंह घोरा घाट में रहता था। जब वर्षा का आरम्भ हुआ, तो वह बीमार हो गया और हकीमों को उसके जीवन की आशा नहीं रही। तब ईसा व मासूम खां काबुली

लड़ने के लिये तैयार हो गये और घोरा घाट से 12 कोस की दूरी पर आ पहुंचे, इसी बीच में वर्षा की कमी के कारण नदी का पानी उतर गया और विद्रोहियों को अपनी नावें चलाने में बड़ी कठिनता हुई। जब राजा मानसिंह स्वस्थ हो गया तो उसने अपने पुत्र हिम्मत सिंह को विद्रोहियों के दमन के लिये भेजा। बहुत-से विद्रोही मारे गये और उनका सामान लूट लिया गया।

इस वर्ष प्रत्येक नगर में रसोई-घर खोले गये, जहां लोगों को निःशुल्क भोजन दिया जाता था। कारण यह था कि वर्षा कम हुई थी और कीमतें बढ़ गई थीं। स्थान-स्थान पर ऐसे रसोई-घर खोले गये जहां गरीबों को खाना दिया गया, अमीरों से कहा गया कि गरीबों की सहायता करें।

दो आबान को अकबर की सौर तुला की गई और उसको 12 पदार्थों से तोला गया। इस समय बेग्राम में केसर फूली तो बादशाह ने समझा कि वहां की भूमि इसके लिये उपयुक्त है, इसलिये वहां केसर के बीज भेजे गये, फिर उसको सूचना मिली कि वहां केसर लग गई, इसी दिन मिर्जा यूसुफ को गुजरात जाने की अनुमति दे दी गई और उसे वहां एक जागीर भी प्रदान की गई, उसको खानदेश दिया गया था कि दक्षिण की सेना की सहायता करे।

***

प्रकरण 130

सादिक खां की विजय

जब मिर्जा अली बेग अकबर शाही की विजय हो गई तो, निजामुल-मुल्क के लोगों ने बदला लेने के लिये नई योजना बनाई। खुदाबंद खां आदि 6 बड़े सरदारों ने एवं अन्य लोगों ने दस हजार सेना और 80 हाथी तैयार करके युद्ध करने का निश्चय कर लिया। शाही सेना में 3000 से अधिक आदमी नहीं थे, तो भी सेनानायकों के प्रोत्साहन से वह लड़ने को तैयार हो गये और व्यूह-रचना कर ली। महकर से 40 कोस की दूरी पर बान गंगा के तट पर 17 नवम्बर, 1796 को लड़ाई हुई। पहले खुदाबंद खां और पांच हजार सवार तथा 40 हाथी अग्रसेना में लड़े तो मिर्जा अली बेग ने उनको हराया। 3 शाही अफ़सर आहत हो गये। शाही सेना का दायां पार्श्व बिना लड़े ही वापस हट गया। सादिक खां पर बड़ा आक्रमण हुआ परन्तु वह अचल खड़ा रह कर बन्दूकें और तोपें चलाता रहा। शत्रु के बहुत-से आदमी मारे गये और उसका बहुत-सा सामान लूट लिया गया।

ता० 18 को कुलीच खां दरबार में आया। उसने तीरा में अच्छा काम नहीं किया था। उसकी कार्यवाही बादशाह को पसन्द नहीं आई इसलिये तारीकी लोगों के लिये हुसेन बेग और शेख उमरी को बंगस भेजा गया। इसी समय एक अच्छा जहाज बनवाया गया। इससे पहले जहाज को नदी में डालते समय पानी की कठिनाई हुई थी। अब 15 हजार मन से भी अधिक वजन ले जाने वाला जहाज बनाया गया। इसकी लम्बाई 37 गज थी और इस पर 16388 रु० खर्च हुए थे। यह आसानी से बंदर लौहारी पहुंचा दिया गया।

ता० 5 दाई को मामा आगा की मृत्यु हो गई। वह बड़ी नेक थी और शिहाबुद्दीन अहमद खां की विधवा थी। वह मरियम मकानी की रिश्तेदार थी इसलिये अकबर उसको सान्त्वना देने के निमित्त उसके महल पर गया।

लक्ष्मीनारायण की अधीनता

लक्ष्मीनारायण कूच बिहार का राजा था। इस राज्य में 4000 सवार, 2 लाख प्यादे और 700 हाथी थे तथा एक हजार युद्धनौकाएं थीं। इसकी बस्ती घनी है, यह 200 कोस लम्बा और 40 कोस से 100 कोस तक चौड़ा है। इसके पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी, उत्तर में तिब्बत और आसाम, दक्षिण में घोराघाट और पश्चिम में तिरहुत है। लगभग 100 वर्ष पूर्व जलपेश के महादेव के मंदिर में एक धार्मिक महिला ने ईश्वर से प्रार्थना की कि मेरे एक पुत्र हो और वह राजा बने। ईश्वर के अनग्रह से वह गर्भवती हुई और उसके पुत्र हुआ, उसका नाम बीसा रखा गया और उसको यह राज्य प्राप्त हुआ। उसका पौत्र मालगुंसाई था जो बड़ा धार्मिक और बुद्धिमान् था तथा अनेक सद्गुणों से अलंकृत था। वह अकबर को भेंटें और पत्र भेजा करता था। उसकी प्रकृति विरक्त-सी थी इसलिये उसने विवाह नहीं किया था। जब वह पचास वर्ष का हुआ, तो उसने अपने भाई के पुत्र पाठकवंर को अपना उत्तराधिकारी बना दिया। मालगुसाई के ज्येष्ठ भाई शुक्ल गुसाई ने इच्छा प्रकट की कि मालगुसाई विवाह कर ले तो उसने विवाह कर लिया और उसको एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम लक्ष्मीनारायण रखा। जब मालगुसाई की मृत्यु हुई तो लक्ष्मीनारायण को राज्य मिला, तब पाट कुंवर ने विद्रोह कर दिया और ईसा की सहायता से उसको सफलता मिल गई। तब लक्ष्मीनारायण ने राजा मानसिंह के द्वारा बादशाह से निवेदन किया कि उसको अपने अधीन कर ले। राजा मानसिंह सलीमपुर से आनन्दपुर गया। लक्ष्मीनारायण 40 कोस की दूरी पर उससे मिलने आया। दोनों घोड़ों पर बैठे-बैठे मिले और मित्रता प्रकट की। कुछ समय बाद लक्ष्मीनारायण ने राजा मानसिंह से अपनी बहिन का विवाह कर दिया।

कूच (कूचबिहार) के राजा ने बंगाल के सूबेदार के प्रति आदर प्रकट नहीं किया। इसलिये उससे लड़ाई करने के लिये सुलेमान कररानी को भेजा, परन्तु वह विफल होकर वापस आया।

खान आजम ने अपना पिछला व्यवहार सुधार लिया था, वह कपटपूर्वक मक्का जाना

चाहता था। परन्तु फिर सुधर गया था, उसने प्रार्थना की कि दरबार के समीप ही उसे जागीर दे दी जाये। उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली गई और उसको सुल्तान की जागीर दे दी गई। ता० 26 को राय रायसिंह दरबार में आया। उसके एक कृपापात्र सेवक ने लोगों पर अत्याचार किया था। जब बादशाह ने पूछताछ की तो रायसिंह ने टालटूल कर दी और कहा नौकर भाग गया, तब रायसिंह की ड्योढ़ी बन्द कर दी गई। बादशाह ने फिर उसकी पुरानी सेवाओं को याद करके दक्षिण भेज दिया और सौरठ उसकी जागीर में मिला दिया। बादशाह का ख्याल था कि अब उसकी निद्रा खुल जायेगी। परन्तु रायसिंह दक्षिण नहीं गया। कुछ समय तो उसने मार्ग में व्यतीत कर दिया, फिर बीकानेर चला गया। कई अधिकारियों को भेजकर उसे समझाया गया, परन्तु उस पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। फिर सलाउद्दीन को भेजा और कहलाया कि वह दक्षिण न जाना चाहे तो वह वापस दरबार में आ जाये। उसकी वापसी पर भी कुछ दिन उसको दरबार में नहीं बुलाया गया। आज उसको दरबार में बुलाया गया और सत्कार किया गया। 29 ता० को मिर्जा शाहरूख का मनसब बढ़ा दिया गया। उसको पांच हजार का मनसब जात और इससे आधे सवारों का दर्जा दिया गया। उज्जैन और मालवा के अच्छे इलाके शाहबाज खां से लेकर शाहरूख की जागीर में मिला दिये गये। उस समय मिर्जा शाहरूख दक्षिण में था इसलिये अमीर कला बदक्षी को मालवा भेजा गया और आदेश दिया गया कि शाहबाज के कारिन्दे इलाके सुपुर्द करने में कोई रोक न करें। इस समय सप्ताह का प्रतिदिन एक कार्यविशेष के लिये नियुक्त कर दिया जो निम्न प्रकार था—

रविवार	सवारों का निरीक्षण
सोमवार	ऊंटों, खच्चरों और बैलों का निरीक्षण
मंगलवार	सैनिकों का निरीक्षण
बुधवार	वजीर के काम का निरीक्षण
बृहस्पतिवार	अदालत का काम, मुकदमों की सुनवाई
शुक्रवार	सज्जनों का स्वागत
शनिवार	हाथियों के तबेले का निरीक्षण।

उपरोक्त काम कर लेने पर प्रतिदिन दूसरा काम हाथ में लिया जाता था। ता० 5 को राय रायसिंह दक्षिण चला गया और उसके सम्मान में वृद्धि की गई। 7 ता० को राणा कीका की मृत्यु हो गई। प्रत्यक्ष में उसके पुत्र ने उसको विष दिया था। वास्तव में उसको धनुष मोड़ते समय चोट भी आई थी।

***

प्रकरण 131

शाही सेना की विजय और दक्षिणियों की हार

जब अहमदनगर पर सेना चढ़ाई गई तो शाही अधिकारियों में फूट हो गई इसलिये दक्षिणियों का उत्साह बढ़ गया। शाहजादा सुल्तान मुराद लड़ना चाहता था, परन्तु उसके सेनानायक सहमत नहीं हुए। फिर एक गुप्त समिति में विचार किया गया तो युद्ध का निश्चय हो गया और मिर्जा शाहरूख को प्रधान सेनानायक बनाया गया। ब्यूह-रचना में मिर्जा शाहरूख खानखाना मिर्जा अली बेग को मध्य में रखा गया।

बड़े साहस के साथ मुराद की सेना ने शाहपुर से शत्रु की ओर प्रयाण किया और पाथरी से 12 कोस के अन्तर पर अष्टी को रणक्षेत्र बनाना पसन्द किया। शत्रु ने भी अपनी सेना का व्यूह बना लिया। 8 फरवरी, 1597 को युद्ध शुरू हुआ। शत्रु की संख्या अधिक थी और उसके पास तोपखाना भी अच्छा था, इसलिये बहुत-से शाही सेवकों का उत्साह भंग हो गया। जगन्नाथ, राय दुर्गादास, राजसिंह और अन्य राजपूतों ने अपने घोड़ों की लगामें खींच लीं। खानदेश का शासक वीरतापूर्वक लड़ता हुआ मारा गया। उसके 35 बड़े-बड़े आदमी और 500 सेवक उसी के साथ धराशायी हो गये। मिर्जा शाहरुख, खानखाना और मिर्जा अली बेग ने शत्रु को पीछे धकेल दिया। यह भाग्य का खेल था। उस दिन दोनों सेनायें हट कर खड़ी हो गईं। दोनों ही समझते थे कि उनकी जीत हो गई। शाही सैनिकों ने समझा कि राजा अली खां शत्रु से मिल गया इसलिये उन्होंने उसका डेरा लूट लिया। द्वारकादास और सईद जल्लाल ने वीरतापूर्वक प्राणोत्सर्ग किया। रामचन्द्र के 20 घाव लगे। दूसरे दिन प्रातःकाल उसको उठाकर घर ले जाया गया, परन्तु कुछ दिन बाद उसकी मृत्यु हो गई। दूसरे दिन देखा गया कि शाही सेना में 7,000 और शत्रु की सेना में 25,000 आदमी थे। सैनिकों को रातभर पानी नहीं मिला इसलिये वे प्यास बुझाने के लिये नदी की ओर दौड़े। उस समय शत्रु ने उस पर आक्रमण किया परन्तु उसको भागना पड़ा और उसके बहुत से आदमी मारे गये। शाही सैनिक थक गये थे इसलिये उन्होंने भागने वालों का पीछा नहीं किया। शत्रु के 40 अच्छे हाथी और तोपखाना छीन लिया गया। दूसरे दिन राजा अली खां को रणक्षेत्र में पहचान लिया गया और उसे उठा लिया गया।

इस समय जैन कोका को काबुल भेज दिया गया। कारण यह था कि कुलीच खां अफगानिस्तान का प्रशासन ठीक-ठीक नहीं कर सका था। काबुल जैन कोका को जागीर में दे दिया गया और उधर के जागीरदारों को आदेश दिया गया कि उसके आदेशों का पालन करें।

तारीख 6 इसफन्दरमज को अकबर की चान्द्र तुला की गई और उसको 8 पदार्थों से तोला गया तथा बड़ा उत्सव मनाया गया।

***

प्रकरण 132

राज्यारोहण के बाद 42वें वर्ष का आरंभ

शुक्रवार, तारीख 2 शाबान, 1005 हिज्री, 11 मार्च, 1597 को इस वर्ष का आरम्भ हुआ। तारीख 6 फखरदीन को राजा मानसिंह के पुत्र हिम्मत सिंह की मृत्यु हो गई। वह साहस और प्रशासन-क्षमता के लिये प्रसिद्ध था। उसकी मृत्यु उदर विकार से हुई थी। इससे कछावा जाति को बड़ा क्लेश हुआ परन्तु बादशाह ने उनको सान्त्वना दी। 9 तारीख को शादिक खां की मृत्यु हो गई। विजय-प्राप्ति के बाद वह शाहपुर में शाहजादा सुल्तान मुराद के पास था इससे शाहजादे को बड़ी सहायता मिलती थी। 17 तारीख को बादशाह ख्वाजगी फतह उल्ला की दावत में था, तो एकदम आग लग गई जो चौक से शाही महल तक पहुंच गई। उसको बुझाने में कई दिन लगे। विशेष बात यह हुई कि शाहजादा मुराद के डेरों में भी इसी प्रकार आग लगी। वह उस समय दक्षिण में था। अगले दिन कुलीच खां को 450 का और ईस्माइल कुली खां को 4000 तथा मिर्जा जानी बेग तथा शाह बेग दोनों को 3500 का मनसब प्राप्त हुआ।

***

प्रकरण 133

कश्मीर पर बादशाह का तृतीय अभियान

अकबर चाहता था कि राजधानी को लाहौर से आगरा ले जाने से पूर्व एक बार पुनः कश्मीर जाया जाये। दरबारियों ने कहा कि दक्षिण में शाही सेना लड़ रही है, इसलिये कश्मीर को प्रयाण करना कैसे उपयुक्त होगा। कुछ दिन बाद दक्षिण से विजय-प्राप्ति की खबर आ गई, तो भी उन लोगों की सम्मति का आदर करने में कुछ विलम्ब किया और फिर 21 फखरदीन को वह चलकर दिलावेज बाग में ठहरा।

शाहजादा सुल्तान दनियाल को इलाहाबाद भेजा

शाहजादा दनियाल को 7,000 का मनसब और 7,000 सवार देकर इलाहाबाद को रवाना किया गया। उसको उधर की ओर जागीरें भी दी गईं। कुलीच खां, ईस्माइल कुली आदि कई बड़े-बड़े लोग उसके साथ गये। कुलीच खां को शाहजादे का संरक्षक नियुक्त किया गया। इन लोगों को खिल्लत और अच्छे घोड़े दिये तथा उनकी पदवृद्धि की गई। जब ये सब लोग रवाना हुए तो इनको निम्नलिखित सलाह दी गई :

शासन में निर्बल लोगों की, सबल लोगों की अत्याचार से रक्षा करनी चाहिये, देश और सेना की उन्नति पर ध्यान देना चाहिये। अच्छे आदमियों की संगति करनी चाहिये। ऐसे लोगों से दूर रहना चाहिये जो देखने में अच्छे हैं और अन्दर से बुरे हैं। बकवासी, शराबी, अपशब्द बोलने वाले, हंसी-मजाक करने वाले, अधम, सुन्दर लड़कों और युवतियों से दूर रहना चाहिये। सत्य बोलने वालों से क्रोध नहीं करना चाहिये। जिनकी भावना अच्छी है उनसे चिढ़ना नहीं चाहिये। जांच करते समय शान्ति और गम्भीरता से काम करो। लिखावटों, गवाहों और शपथ खाने वालों को, काफी लोगों के मुख-मुद्रा को देखो। अपने साथियों के ढंग और काम पर दृष्टि रखो। क्रोध की अवस्था में किसी से बदला न लो। धर्म की विभिन्नता पर क्रोध न करो। सब के साथ शान्ति से उठो, बैठो। भेद की बात एक-दो सच्चे आदमियों के अतिरिक्त और किसी को न बतलाओ। यदि कृपा से काम चल ज़ाये तो किसी को भय न दिखाओ। सेवा करने वाले को कभी मत भूलो। जो काम आज करना है उसे कल के लिये स्थगित मत करो। अपने से बड़े के साथ हंसी-खेल न करो। तलवार और कलम को सत्ता की दो भुजायें समझो। तलवार का काम वीर लोगों से लो और कलम का काम सन्तुष्ट और भले आदमियों से लो।

एक अरदी बिहीस्त को शेख जिया उल्ला इस संसार को छोड़ गया। वह शेख मुहम्मद गौस का पुत्र था और उसने परम्परागत ज्ञान का अच्छा संग्रह किया था। वह सूफी भाषा से खूब परिचित था।

जमील नाम का एक अधम व्यक्ति बदक्षा के ऐमक लोगों से मिल गया और अपने आपको मिर्जा सुलेमान का पुत्र बतलाने लगा। उसने अपना नाम उमर शेख रख लिया। जब मिर्जा सुलेमान हिसार में अपने विपत्ति के दिन काट रहा था, तो एक लड़की से उसके पुत्र का जन्म हुआ, जिसका नाम उसने उमर शेख रखा था। वह उमर शेख अब्दुल्ला खां के चचेरे भाई उजबेग के पास जाकर मर गया था। कोई कहते थे कि ईर्ष्यालु आदमियों ने उसको मार दिया था और अन्य लोगों का कहना था कि उसकी मृत्यु चेचक से हुई थी। कुछ लोग यह भी कहते थे कि वह अभी जीवित है। इस आदमी ने छल करके एक हजार बदख्शी और बहुत-से कश्मीरी एकत्र कर लिये। जो लोग इस भेद को जानते थे, वे उसको पकड़कर मुहम्मद कुली बेग के पास लाये और फिर उसको अमनाबाद ले गये, जहां अकबर

के आदेश से उसको प्राणदण्ड दिया गया। यदि बादशाह ऐसा नहीं करता तो अनेक लोगों को कष्ट होता। तारीख 8 को खुराबन्द खां दक्षिणी स्वेच्छा से सेवानिवृत्त हो गया।

तारीख 16 को राजा मानसिंह के पुत्र जगतसिंह को उत्तरी पहाड़ियों में भेजा गया। रुस्तम मिर्जा और आसफ खां ने उधर अच्छा काम नहीं किया था, जिससे बासू ने मऊ दुर्ग को दृढ़ बना लिया और वह विद्रोह करने लग गया था।

19 तारीख को मिर्जा यूसुफ खां को शाहजादा मुराद का संरक्षक बनाया गया। जब शादिक खां की मृत्यु हो गई तो इसको यह ऊंचा पद दिया गया था और यह आदेश दिया गया था कि वह शीघ्र ही शाहजादे के पास पहुंचे।

पाठकुंवर की पराजय

जब कूच बिहार के राजा लक्ष्मीनारायण ने अधीनता स्वीकार कर ली तो उसका प्रतिद्वन्द्वी पागल हो गया। उसने कुछ सेना खड़ी करके कुछ देश जीत लिये। लक्ष्मीनारायण हटकर जंगल में चला गया और उसने राजा मानसिंह से सहायता के लिये प्रार्थना की। तब झुजार खां और फतह खां शूर के नेतृत्व में एक सेना भेजी गई, जिसने 3 मई, 1597 को पाठकुंवर को हरा दिया। उसके बहुत-से आदमी मारे गये और उसका सामान लूट लिया गया। 23 तारीख को बादशाह भीमबर पहुंचा और मीर मुराद नामक जागीरदार के मकान पर ठहरा। यहां पर शाही सेना को 10 भागों में विभक्त किया गया। पहला भाग बादशाह के साथ रहा। दूसरा भाग महिलाओं के साथ रखा गया। इसी भाग में अबुल फजल था। तीसरे भाग में शाहजादा सलीम और उसके आदमी थे। शेष सात भाग सप्ताह में प्रतिदिन चौकसी रखने के लिये थे। 11 मई, 1597 को पहली घाटी पार कर ली गई। 6 खुर्दाद को राजोरी में डेरे लगे, जहां इजाजत के बिना ही शाहजादा सलीम आ उपस्थित हुआ। उसने मार्ग में कुछ अनुचित काम किये थे, इसलिये उसको दरबार में आने की इजाजत नहीं थी और अबुल फजल से जांच करवाई। फिर शाहजादे ने पश्चात्ताप प्रकट किया तो उसे क्षमा कर दिया गया।

इस दिन बादशाह से निवेदन किया गया कि ख्वाजगी फतह उल्ला ने मार्ग की देख-रेख भली-भांति नहीं की इसलिये शाहजादा सलीम का एक नौकर मारा गया। बादशाह ने फतह उल्ला को शाहजादे के पास भेज दिया और कहलाया कि इसको दण्ड दिया जा सकता है। इस उदारता से शाहजादा प्रसन्न हुआ और उसने फतह उल्ला को वापस भेज दिया। तारीख 8 को शाहजादा को पूर्ववत् प्रयाण करने की इजाजत मिल गई। अबुल फजल को भी इस सेवा के लिये नियुक्त कर दिया गया। 11 तारीख को बादशाह ने पुस्तियाना से कूच की और पीर-पंजाल को पार किया। नारी बरारी में मुहम्मद कुली बेग ने ठहरने का प्रबन्ध कर रखा था। वहां अकबर ठहरा।

बहादुर के उत्पात का अन्त

यह मुजफ्फर गुजराती का पुत्र था। जब मुजफ्फर असफल होकर मर गया, तो उसके पुत्र बहादुर ने (रागपिला के शासक) तिवारी या तरवारी की शरण ली। तिवारी ने उसको छिपा लिया और सहायता दी। उस समय कितने ही जागीरदार दक्षिण में शाहजादे के साथ थे। इसलिये बहादुर ने विद्रोह शुरू कर दिया और दण्डुका नामक कस्बा लूट लिया। तब राजा सूरज सिंह ने लड़ने का निश्चय किया। लड़ाई में विद्रोही भाग गया।

14 तारीख को बादशाह ने बड़ी-बड़ी घाटियाँ पार करके हीरापुर मुकाम किया। वहां से वह जमाल नगरी में एक कस्बे का दृश्य देखने गया। प्राचीन काल में यह नगरी राजधानी थी। मैं अबुल फजल हीरापुर से यहां आया और दरबार में उपस्थित हुआ। 19 तारीख को कुर्ज ब्रारा में शाही डेरे लगे। यहीं महिलाएं आ पहुंचीं। मिर्जा यूसुफ खां का विचार था कि एक पहाड़ी की चोटी पर इस स्थान के निकट एक नगर बसाया जाये। बादशाह वहां गया और उसका नाम अकबर नगर रखकर मुहम्मद कुली बेग को आदेश दिया कि इसका प्रबन्ध करे। इस मंजिल पर शाहजादा सलीम आया। 23 तारीख को बादशाह नदी द्वारा आगे बढ़कर अंचा ठहरा और वहां से मछली भवन गया और फिर खान पुल के पास नाव में बैठा। नदी के दोनों ओर सुखद हरे मैदान थे।

मऊ दुर्ग की जीत

राजा बसु ने अपनी स्थिति दृढ़ समझ कर कृतघ्नता का मार्ग ग्रहण किया और बहुत-से जमींदारों को अपने साथ कर लिया। शाही सेना ने इस (नव दुर्ग को) घेर लिया, परन्तु स्वार्थवश सेनानायक घेरे को आगे नहीं बढ़ा सके। तब बादशाह ने मिर्जा रुस्तम को वापस बुला लिया, इसके बाद दो मास तक घेरा चलता रहा। 24 तारीख को राजा बसु ने मऊ दुर्ग से निकल कर दूसरे दृढ़ दुर्ग में शरण ली तो शाही सेवकों ने दुर्ग छीन कर राजा का महल जला दिया।

26 तारीख को पम्पुर के निकट मिर्जा रुस्तम दरबार में आया। 27 तारीख को बादशाह का डेरा कोहे सुलेमान के निकट लगाया गया और वह दल्ल झील को देखने गया और वहां से वह अमृतसर [1] देखने गया, जहां एक प्रसिद्ध मन्दिर है। बादशाह ने 34 दिन में 105 कोस की यात्रा की और मार्ग में एक मास और 5 दिन ठहरा। 28 तारीख को वह नागर नगर पहुचा। श्रीनगर के पास एक ऊंची पहाड़ी है। उसके निकट एक बड़ी झील है। यह स्थान एक नगर के लिये उपयुक्त समझा गया था और मिर्जा यूसुफ खां के आदेश से यहां बस्ती बस गई थी। उसके कुछ मकान बनवाकर यहां मिट्टी की दीवार बनवाई थी।

---

1. यह अब अम्बरहर कहलाता है और श्रीगर से उत्तर-पश्चिम में स्थित है। यह अमृतभवन भी हो सकता है।

बादशाह झील के किनारे पर मुहम्मद कुली बेग के मकान में ठहरा, फिर आदेश दिया गया कि दुर्ग पत्थर का बनाया जाये और इसके विभिन्न भाग एक-एक अफ़सर के सुपुर्द कर दिये। इस दिन मालूम हुआ कि उस ओर के रहने वाले ने क्या उत्पात किया था और बादशाह अभियान की खबर सुनकर वह उत्पात कैसे दब गया था। जिस व्यक्ति ने विद्रोही को पकड़ कर प्रस्तुत किया, उसको पुरस्कार मिला। यह भी मालूम हुआ कि जागीरदारों ने बहुत अत्याचार किया था। वह लोग भूमिकर सोना या चांदी के रूप में मांगते थे, परन्तु व्यवस्था यह थी कि अन्न का निश्चित भाग लिया जायेगा। बादशाह ने इस विषय में स्पष्ट नियम बना दिये और अत्याचारियों को दण्ड दिया। सारे देश के 14 भागों में विभक्त करके प्रत्येक भाग पर दो वितिकची (कारपून) नियत कर दिये, जिनमें एक भारतीय और एक ईरानी था। उनको आदेश दिया गया कि वे प्रत्येक गांव में जाकर पता लगायें कि अकथ और पड़त भूमि कितनी है। उपज का आधा भाग सरकार में लिया जाये और यदि अधिक लिया हो तो वापस कर दिया जाये तब 10 वर्ष के लिये बन्दोबस्त किया गया तो पहले वर्ष का उपज का $^1/_6$, दूसरे वर्ष $^1/_4$, तीसरे वर्ष $^1/_3$, और चौथे वर्ष $^1/_2$, भूमिकर के रूप में लिया गया। जब बन्दोबस्त 4 वर्ष से दस वर्ष तक के लिये किया गया तो प्रथम वर्ष भूमिकर का $^1/_5$, दूसरे वर्ष $^1/_3$ और तीसरे वर्ष $^1/_2$ लिया गया। जब बन्दोबस्त 2 से 4 वर्ष तक के लिये गया गया तो प्रथम वर्ष $^1/_3$ और दूसरे वर्ष के लिए $^1/_2$ भूमिकर लिया गया।

वर्षा की कमी और कृषकों के इधर-उधर फैल जाने से कीमतें बहुत ऊंची हो गई थीं। शाही सेना के आने से भी स्थिति अधिक बिगड़ गई थी। तब बादशाह ने आदेश दिया कि नगर में 12 स्थानों पर युवा और वृद्धों को भोजन दिया जाये। प्रति रविवार को ईदगाह में इस विषय की घोषणा की जाती थी और कुछ लोग महल से रवाना होकर लोगों को भोजन देते थे। इस प्रकार 80,000 गरीब लोगों की इच्छा पूरी हुई। दुर्ग के निर्माण के कारण भी कितने ही लोगों की जीविका मिल गई, इसी समय पचपन प्रकार के मैसूद बन्द कर दिये गये। बहुत लम्बे अर्से से कृषक यह मैसूलों को दिया करते थे। पुराने रिवाज के अनुसार कृषको को इससे लकड़ियाँ काट कर लाना पड़ता था। बढ़ई, जुलाहे और कारीगर से भी इसी प्रकार रुपये लिये जाते थे। तारीख 2 तीर को बादशाह नये मकानों को देखने गया। उसके आराम के लिये मिर्जा यूसुफ खां ने नागर नगर के समीप एक छोटी-सी पहाड़ी के ऊपर सुन्दर इमारतें बनवाई थीं। तारीख 7 को वह शिहाबुद्दीनपुर गया और फिर वहां से लेन लंका पहुंचा। तारीख (नौ) को शाहजादा सलीम ने कुछ अनुचित कार्य किया तो ख्वाजा कूल ने शहन शाह की ओर से कुछ क्रोधपूर्ण बात कही, जिससे शाहजादा नाराज हो गया। बादशाह ने ख्वाजा की जीभ के आगे का थोड़ा-सा हिस्सा कटवा दिया। बादशाह के आदेश से एक ऐसा जहाज तैयार किया गया जो समुद्र पर चलता है। उसमें बैठ कर बादशाह ने झेलम नदी की सैर की।

बन्धु दुर्ग की विजय

पक्षा प्रदेश घना बसा हुआ है और वहां अलग राजा है। बन्धु दुर्ग उसकी राजधानी है। वहां से पूर्व की ओर 70 कोस तक उसका राज्य है। उसके आगे दूसरे राज्यों का राज है, जो सब पन्ना के राजा के अधीन हैं। और भी आगे सरबूजा और रोहताश के प्रदेश हैं। पश्चिम की ओर पन्ना प्रदेश 12 कोस तक है, जहां के जमीनदार पन्ना के अधीन हैं। इसके बाद गढा का प्रदेश है। पन्ना के उत्तर की ओर गंगा और यमुना है। इस दिशा में यह राज्य 70 कोस तक चला गया है और सूबा इलाहाबाद से मिलता है। दक्षिण में यह 16 कोस तक है। इसके बाद गढ़ा का इलाका है। दक्षिण और पूर्व की ओर 45 कोस की दूरी पर रणथम्भौर है। उत्तर पूर्व में यह 70 कोस तक फैला हुआ है और उसके बाद इलाहाबाद का सूबा है, उत्तर पश्चिम में यह 50 कोस तक जाकर कालिंजर दुर्ग से मिलता है। दक्षिण पूर्व में 25 कोस के बाद गढ़ा का इलाका आता है। इस दुर्ग को जीतने में बड़ी कठिनाइयां हैं। उनका वर्णन नहीं किया जा सकता है। इसके चारों ओर पहाड़ियां हैं, जिनकी घाटियां 8 कोस तक फैली हुई हैं। इसके तीन ओर पास-पास पहाड़ियां हैं। उत्तर की ओर दुर्ग की दीवार पत्थर की बनी हुई है। प्रथम द्वार गणेशपुर कहलाता है, जिसके पास एक बहुत बड़ा तालाब है। दूसरा द्वार हिंदालीपुर, तीसरा कामपुर और चौथा हरहरपुर है। इसके अन्दर राजा के महल हैं। दुर्ग प्राचीन है। इसके चार सुन्दर प्राचीर हैं। इसके अन्दर एक विशाल मन्दिर है। आसपास रिश्तेदारों के और आश्रितों के मकान बने हुए हैं। किसी शासक ने इस दुर्ग को हाथ नहीं लगाया था। सुल्तान अल्लाउद्दीन ने बड़ा रुपया खर्च किया और उसके कितने ही सैनिक मारे गये, परन्तु वह इस दुर्ग को नहीं जीत सका। परन्तु बादशाह ने थोड़े-से परिश्रम से ही इसको जीत लिया। 8 मास 20 दिन के घेरे के बाद अन्न के अभाव के कारण दुर्ग सेना ने 8 जुलाई, 1597 को सन्धि का प्रस्ताव किया। शाही सेना ने दुर्ग जीतकर बड़ी लूट की।

तारीख 4 अमरदाब को शाहजादा दनियाल के अन्तःपुर में कुलीज खां की लड़की से एक पुत्र उत्पन्न हुआ जो तुरन्त ही मर गया।

तिब्बत को राजदूत भेजे

इस समय तिब्बत को राजदूत भेजे गये। जब अकबर कश्मीर में था, तो तिब्बत को जीत लेने का विचार हुआ था, परन्तु उस समय सेना संचालन कठिन था। सैनिकों को 40 दिन की खाद्य-सामग्री देना आवश्यक था, जो दुर्भिक्ष के कारण नहीं दी जा सकती थी, अब छोटे तिब्बत के शासक अलीजाद के पास तीन राजदूत भेजे गये, इसी प्रकार बड़े तिब्बत के शासक कोकलताश के पास भी तीन राजदूत रवाना किये गये। इस समय कश्मीर के प्रधान सेनापति ने अपने शासक के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था, इसलिये उसकी जागीर छीन ली गई थी। उसका बदला लेने के लिये अलीजाद उठ खड़ा हुआ और

उसने बड़े तिब्बत के शासकों को बन्दी बना लिया। जब उसने सुना कि कश्मीर में अकबर की सेना आ पहुंची है तो अलीजाद ने कोकलताश को शासक बना दिया और स्वयं हट गया।

काशगर को राजदूत भेजा

जब काशगर का शासक अब्दुल करीम मर गया तो उसका भाई मोहम्मद करीम उस देश का सुल्तान बन गया। ऐसा मालूम होता था कि उसने अकबर के पास भेंटें देकर शाह मोहम्मद को राजदूत बनाकर भेजा था, जिसको लोगों ने मार्ग में ही लूट लिया था अतः वह लज्जित होकर हज करने चला गया था। अब उसने अकबर के पास आकर अपनी विपत्ति सुनाई तो उसके साथ अच्छा व्यवहार किया गया और उसको वापस भेज दिया गया।

तारीख 21 को गंगा ऋषि अकबर से मिलने आया, कश्मीर के लोग इस सन्त का बड़ा आदर करते थे। इस ऋषि को शाहजादा सलीम ने बुलाया था और वह भी अकबर से मिलना चाहता था।

दुर्जन सिंह की मृत्यु

जब बादशाह की सहायता से लक्ष्मीनारायण सफल हो गया तो ईसा खां सेना खड़ी करके पाट कुंवर की सहायतार्थ चला। यह खबर सुनकर राजा मानसिंह ने एक सेना भेजी और अपने पुत्र दुर्जन साल की अध्यक्षता में कुछ लोग नौकाओं द्वारा रवाना किये। विक्रामपुर से 6 कोस पर ईसा और बासूम भी युद्धनौकायें लेकर आ गये और उन्होंने दुर्जनसाल की सेना को घेर लिया, जिसमें दुर्जनसाल मारा गया। परन्तु कूच बिहार का राजा क्षति से बच गया। फिर ईसा ने सन्धि करके अपनी सेना वापस भेज दी।

मिहर को मोटा राजा की लड़की से सलीम के अन्तःपुर में एक पुत्री का जन्म हुआ। 20 तारीख को बादशाह दालझील से शिहाबुद्दीनपुर पहुंचा और एक दिन वहीं रहा। दूसरे दिन वह लार घाटी में आया, वहां वसन्त ऋतु की घटा देखकर नाग नगर लौट गया।

***

प्रकरण 134

बादशाह की लाहौर को वापसी

बादशाह कश्मीर में तीन मास और 29 दिन ठहरा। वह शीतकाल भी वहीं व्यतीत करना चाहता था परन्तु 20 सितम्बर को शीत बहुत बढ़ गयी इसलिये उसने पीर पंजाल के पुराने मार्ग से भारत को लौटने का निश्चय कर लिया। 5 अक्टूबर को वह नाव द्वारा रवाना हुआ और अगले दिन उसने केसर के खेत देखे। वहां वह 7 दिन तक ठहरा। 3 आबान को यात्रा फिर शुरू करके वह खानपुर ठहरा। अगले दिन प्रात:काल उसकी सौर तुला हुई और उसको 11 पदार्थों से तौला गया। यहां पर उसने सेना के विभाग किये ओर पर्वतों को पार करने के नियम बनाये। शाहजादा सलीम ने छुट्टी ले ली। वह सब से पीछे आना चाहता था। पुष्याना तक महिलायें भी साथ-साथ आईं। तारीख 9 आबान को बादशाह रवाना हुआ। इसी दिन आसफ खां वापस आया। 15 तारीख को बादशाह भीमबर से अकबराबाद पहुंचा। 19 तारीख को बादशाह गुजरात में था। वहां आसफ खां का चाचा मकसूद बेग ईरान से आया और मिला। 22 तारीख को हाथी पर सवार होकर बादशाह ने चिनाब नदी को पार किया अैर सेना पुल द्वारा उतरी। 3 आजर या 14 नवम्बर, 1597 को बादशाह लाहौर पहुंचा। उसने एक मास और दस दिन मार्ग में लगाये थे और यह दूरी 27 मंजिल में पार की थी।

सुल्तान रुस्तम की मृत्यु

शाहजादा सुल्तान मुराद के पुत्र सुल्तान रुस्तम की मृत्यु हो गई। सुल्तान रुस्तम बचपन से ही अनुचित बातें पसन्द नहीं करता था। वह केवल 9 वर्ष 3 मास और 5 दिन का था, परन्तु उसमें प्रौढ़ बुद्धि थी। 7 नवम्बर को उसके पेट में गड़बड़ हुई और 9 तारीख को उसकी मृत्यु हो गई।

तूरान के शासक अब्दुल्ला खां की मृत्यु

अब्दुल्ला खां ने कुछ समय तक न्यायपूर्वक शासन किया परन्तु वह अपने पुत्र अबुल मुमीन से अत्यधिक प्रेम करता था और उसके अत्याचार को नहीं रोक सकता था, इसलिये लोगों का जन, धन और जीवन सुरक्षित नहीं था। मोहवश अब्दुल्ला अपने पुत्र को सलाह भी नहीं दे सकता था। अन्त में उसने अपने बाप का वध करने का विचार किया। एक दिन अब्दुल्ला शिकार कर रहा था तो उसको मारने का प्रयत्न किया गया, परन्तु अब्दुल्ला खां को सूचना मिल गई और वह शीघ्रता से बुखारा चला गया। फिर इस दुष्ट पुत्र ने उस नगर को घेर लिया परन्तु उसको पीछे हटना पड़ा। जब अब्दुल्ला उसका मुकाबला करने के लिये चला तो नदी बीच में थी। उसके पुत्र ने सब नावें नष्ट कर दीं फिर अब्दुल्ला

बीमार होकर समरकंद चला गया। फिर अब्दुल्ला ने उसको रास्ते में से ही वापस जाने के लिये कहा, परन्तु वह नहीं गया। मुहम्मद बाकी ने अब्दुल्ला खां को अपने घर पर बुलाया और वहीं 24 जनवरी, 1598 को उसकी मृत्यु हो गई। सम्भव है कि मुहम्मद बाकी ने उसको विष खिला दिया हो।

अब्दुल्ला खां, चंगेज खां का 16 वां वंशज था।

तारीख 28 बहमन को अकबर की चान्द्र तुला हुई तो मरियम मकानी के निवास पर एक बड़ा भोज दिया गया और अकबर को 8 विभिन्न पदार्थों से तौला गया।

***

प्रकरण 135

राज्यारोहण से 43वें वर्ष का आरम्भ

शनिवार, 13 शाबान, 1006 हिज्री, 11 मार्च, 1598 को इस वर्ष का आरम्भ हुआ। 19 दिन तक दावतें होती रहीं और छोटों और बड़ों ने खूब आनन्द मनाया। नये साल के दिन खबर आई कि तूरान के शासक की मृत्यु हो गई। अकबर पंजाब पहुंचा तब ही से उसका विचार था कि तूरान को जीत लिया जाये, परन्तु जब वहां के शासक ने अधीनता प्रकट की तो अकबर ने विजय का विचार छोड़ दिया। जब यह मालूम हुआ कि अब्दुल्ला खां का पुत्र बड़ा अत्याचारी है तो अकबर का पुनः विजय का विचार हुआ परन्तु उसने सोचा कि अभियान का नेतृत्व शाहजादा सलीम को करना चाहिये परन्तु शाहजादा भारत छोड़कर नहीं जाना चाहता था। फिर अब्दुल्ला खां की मृत्यु पर लोगों ने सुझाया कि तूरान पर अभियान करना चाहिये, परन्तु अकबर ने कहा कि राजदूत भेज कर शोक प्रकट करना अधिक अच्छा है।

तारीख 5 को खबर आई कि राहूतारा दुर्ग जीत लिया गया है। यह दक्षिण में दौलताबाद के अधीन था। मिर्जा अली बेग अकबर शाही ने इसको घेरा था। एक मास के घेरे के बाद पानी के अभाव के कारण दुर्गसेना ने आत्मसमर्पण करके चाबियां अर्पित कर दीं। तारीख 7 को मुखत्यार बेग दरबार में आया। वह बिहार का बख्शी था। इस स्थान पर अब उलूग बेग काबुली को नियुक्त किया गया था इसलिये मुखत्यार को वापस बुला लिया गया था। 14 तारीख को मीर शरीफ अमूली और मिर्जा फरीदून अपनी जागीरों से आकर दरबार में उपस्थित हुए।

शाहजादा सुल्तान मुराद के विषय में खबर आई कि वह औचित्य से पीछे हट गया है और लोगों के हृदयों पर विजय प्राप्त करना खेल समझता है। खानखाना की दुरभिलाषायें पूरी नहीं हुईं इसलिये वह अपनी जागीर पर चला गया है इसलिये बादशाह ने सालीबाहन को दक्षिण भेजा। वह बड़ा ईमानदार शाही सेवक था। उसको आदेश दिया गया कि शाहजादे को दरबार में लाये ताकि बादशाह उसको उचित सलाह देकर वापस भेजे। रूप खवास को खानखाना के पास भेजा गया और उससे कहलाया कि वह वापस आये और सेना तथा सूबे को शाहजादे की वापसी तक संभाले।

31 तारीख को अब्दुल्ला खां का पुत्र इबादुल्ला कारागार से मुक्त किया गया। उसने पूर्वी इलाकों में विद्रोह किया था इसलिये उसको पकड़ कर कालिंजर के दुर्ग में कैद कर दिया गया था। फिर वहां के फौजदार हुसेन ने सूचना दी कि इबादुल्ला पश्चाताप प्रकट कर रहा है इसलिये उसको क्षमा कर दिया गया।

10 अरदी बिहीश्त को ख्वाजा अशरफ और शेख हुसेन तूरान से वापस आये। उनके आगमन से और बादशाह के पत्र से वहां के शासक को बड़ा हर्ष हुआ था और इन राजदूतों के आगमन को उसने परस्पर मेल का चिन्ह माना था। इनके साथ उसने मीर कुरेश को भेजा जो बहुमूल्य भेंटें लाया। अब्दुल्ला खां ने इन राजदूतों को पिछले वर्ष 20 जुलाई, 1597 को वापस बिदा दे दी थी। उसके पुत्र अब्दुल मुमीन के दुर्व्यवहार की सूचना पाकर वे आधे रास्ते से ही वापस मुड़ गये थे। 29 शहरीयार, 9 सितम्बर, 1597 को कुरसी में अब्दुल्ला खां से मिले और उससे बिदा लेकर हैरात और कन्धार के मार्ग से वापस आये। हैरात में उनको अब्दुल्ला खां की मृत्यु की खबर मिली। वे साहसपूर्वक कन्धार पहुंच गये परन्तु मीर कुरेश उनके साथ नहीं आ सका।

14 अरदी बिहिस्त को मीर आदिल का पुत्र अबुल कासिम और 15 तारीख को खान किला का दामाद शेर खां मर गया। बादशाह ने उनके कुटुम्बियों की परवरिश की। तारीख 27 को बान्धु से राय पतरदास आया, इस दुर्ग को उसने जीता था। तब से वह उस इलाके की उन्नति कर रहा था। जब यह इलाका शाहजादा दनियाल को दे दिया गया तो पतरदास वापस आ गया। उसी दिन जैन खां कोका ने एक बार पुनः तीरा जीत लिया। कौशल और साहस के द्वारा उसने दुष्टों को दण्ड देकर कई दुर्ग बना लिये और उनमें सैनिक नियुक्त कर दिये। तारीकी लोग नदी-नालों मे जा छिपे और उनका नेता कोह सफेद में चला गया। मार्ग सारे सुरक्षित हो गये।

अबुल फजल और सलीम

अबुल फजल बादशाह के कामों में व्यस्त रहाता था इसलिये शाहजादा सलीम की पूरी सेवा नहीं कर सकता था। इसका कारण भी उसने सलीम को बतलाया परन्तु वह सफल नहीं हुआ इसलिये सलीम उससे अप्रसन्न रहने लगा और ईर्ष्यालु लोगों ने शाहजादे को

और भड़काया, तब अबुल फजल अपने ही घर में रहने लगा और परिचितों या अपरिचितों से मिलना-जुलना बन्द कर दिया। जब उसको अकबर बुलाता था तो भी वह उत्तर देता था कि आपके हृदय पर मेरे शत्रुओं की बातों का भार है इसलिये मुझे अपने घर में ही रहने दिया जाये। फिर सोच-समझकर दरबार में चला गया।

17 तारीख को राय पतरदास दीवान नियुक्त हुआ और यह आदेश दिया गया कि मुजफ्फर खां और राजा टोडरमल की भांति राय पतरदास और ख्वाजा शमसुद्दीन एक-दूसरे से मिल-जुल कर काम करे। थोड़े समय में ही पंजाब का काम ख्वाजा के हाथ में आ गया और बादशाह ने मामले को सूक्ष्म दृष्टि से नहीं देखा। 27 तारीख को कलियार बहादुर आया तो उसको बहादुर खां की उपाधि प्रदान की गई। वह तूरान देश का एक सेना नायक था। अब्दुल्ला खां ने उसको हैरात दे दिया था। जब अब्दुल्ला खां की मृत्यु हो गई और उसके पुराने सेवक उसके पुत्र के अनुचित व्यवहार के कारण इधर-उधर चले गये तो कलियार कन्धार आया और वहां से दरबार में पहुंचा, जहां उसके हृदय की अभिलाषा पूर्ण हो गई। 1 तारीख को हसन खां बीमार होकर मर गया, उसी दिन ख्वाजगी मुहम्मद सालीह भी दिल्ली में मर गया। वह ख्वाजा अब्दुल्ला मखारीद सदर दिल्ली का पोता था। 5 तारीख को उत्तर के पहाड़ों से जगतसिंह, हाशिम बेग और अन्य सैनिक आये। उन्हें उनकी सेवा के लिये पुरस्कृत किया गया। वे नगरकोट के राजा मूलचन्द को लेकर आये थे। बादशाह ने उसको क्षमा करके बख्शीसें दीं।

अब्दुल मुमीन की मृत्यु

जब अब्दुल्ला खां की मृत्यु हो गई तो उसके चचेरे भाई उजबेग खां ने समरकन्द को घेर लिया। मुहम्मद बाकी ने उसका सामना किया तो उजबेग खां असफल होकर अख्सी वापस चला गया। फिर तवक्कल ने बुखारा घेर लिया, परन्तु अब्दुल मुमीन के आने की खबर सुनकर वह वापस लौट गया और घावों के कारण मर गया। 10 दिन बाद अब्दुल मुमीन समरकन्द की गद्दी पर बैठ गया और उसने मुहम्मद बाकी को अपना वकील नियुक्त किया। अब्दुल मुमीन ने अपने बाप के पुराने और ईमानदार वकील को हैरात से पकड़ मंगवाया और मार डाला। फिर अब्दुल मुमीन ताशकन्द गया और उसने अपने चाचा दस्तम सुल्तान और उसके दो पुत्रों को जो अर्से से एकान्त में रहते थे, मार डाला। फिर उसने उजबेग सुल्तान पर आक्रमण करने के लिये अख्शी को घेर लिया, परन्तु तीन दिन बाद उजबेग सुल्तान बीमार होकर मर गया। तब अब्दुल मुमीन समरकन्द और बुखारा लौटा। जब वह आ रहा था तो कुछ लोग घात में बैठे हुए थे। 19 जून, 1598 को जामीन के पास उन्होंने उस पर तीर चलाये, जिससे वह मारा गया। तब ट्रान्सओविजयाना प्रान्तीय शासकों में विभक्त हो गया।

तारीख 10 को बादशाह के बुलाने से आसफ खां कश्मीर आया। 24 तारीख को

भावल अनगा, जो राय जोगा परहार की पुत्री थी, मर गई। बाबर के समय में अनगा के पिता ने उसको जिन्नत आसियानी (हुमायूं) की सेवा करने के लिये पूर्वी इलाकों से भेजा था। हुमायूं को उसका स्वरूप और शिष्टाचार पसन्द था इसलिये उसको अन्त:पुर में ले लिया गया था। जब हुमायूं से मरियम मकानी का विवाह हो गया तो अनगा जलाल गोईन्दा को दे दी गई थी। उसने अकबर को सर्व प्रथम दूध पिलाया था और अपना जीवन बड़ी नेकी के साथ बिताया था। उसकी मृत्यु पर अकबर को बड़ा दु:ख हुआ और उसने ईश्वर से उसके लिये प्रार्थना की। इन्हीं दिनों में जगन्नाथ आया। वह शाहजादा सुल्तान मुराद से छुट्टी लेकर अपने घर चला गया था और दरबार में बिना आज्ञा के आया था, इसलिये थोड़े दिन उसको दरबार में नहीं आने दिया। फिर इस दिन उसको इजाजत दे दी गई। इस वर्ष दक्षिण का पट्टन नगर छीन लिया गया। यह गोदावरी नदी पर एक प्राचीन नगर है। यह मिर्जा अली बेग अकबर शाही ने जीता था। इन्हीं दिनों में अफगानिस्तान के कृषकों पर बड़ी रियायत की गई। 25 अमरदाद को काबुल और उसके अधीन इलाकों का $^1/_8$ भूमिकर 8 साल के लिये माफ कर दिया गया। इन्हीं दिनों मिर्जा केकूबाद को पुत्र उत्पन्न हुआ। वह मिर्जा हकीम का ज्येष्ठ पुत्र था। बादशाह ने उसके साथ आकिल हुसेन मिर्जा की पुत्री का विवाह किया था। आकिल हुसेन, मुहम्मद हुसेन मिर्जा का भाई था। इस अवसर पर बादशाह ने बड़ा भोज दिया और बच्चे का नाम होरमुझ रखा। तारीख 1 शहरीयार को आसफ खां कश्मीर लौट गया। 9 तारीख को मोलाना शाह मुहम्मद की मृत्यु हो गई। उसको परम्परागत विज्ञान में अच्छी गति थी। 18 तारीख को दस्तम खां के पुत्र सरमस्त की अत्यधिक मद्यपान के कारण मृत्यु हो गई। इन्हीं दिनों शेर बेग यशबाल बाशी को बंगाल के विषय में कुछ जानकारी लाने और अच्छे हाथी लाने के लिये भेजा। इसी वर्ष मुजफ्फर हुसेन मिर्जा कन्धारी को क्षमा किया गया। तुर्कों ने अत्याचार शुरू कर दिया था इसलिये मुजफ्फर हुसेन को नकद वेतन देकर प्रशासनीय शक्ति उससे छीन ली गई और उसकी जागीरें खालसा कर ली गईं। वह छुट्टी लेकर मक्का चला गया परन्तु एक मंजिल जाकर ही वह घबरा गया तो बादशाह ने उसको वापस बुला लिया। 11 तारीख को पूना का दुर्ग छीन लिया गया। यह बरार में प्रसिद्ध दुर्ग है और एक पहाड़ी पर स्थित है। इसके तीनों ओर नदी है जिसमें थाह नहीं है। बहादुर उल मुल्क और कुछ वीर लोगों ने इसको घेरा था। तब अन्नाभाव के कारण नसीबुल मुल्क ने दुर्ग की चाबियां बहादुर के सुपुर्द कर दीं। 26 अक्टूबर, 1598 को ख्वाजा अशरफ की मृत्यु हो गई। वह ख्वाजा अब्दुल बारी का पुत्र था। वह तूरान से सन्देश लाया था। 29 तारीख को सालीवाहन और रूप दरबार में आये। शाहजादा सुल्तान मुराद दरबार में आना चाहता था, परन्तु अधिकारियों ने प्रार्थना भेजी कि शाहजादे के वहां से चले जाने पर गड़बड़ मच जायेगी। खानखाना ने भी निवेदन करवाया कि मैं वापस आ जाऊंगा। यह ढंग बादशाह को पसन्द नहीं आया। 30 तारीख को बादशाह की सौर तुला हुई और उसको 12 वस्तुओं से तौला गया। इस दिन आगरा से शाह कुली खां महरम आया। इस वर्ष राजा भगवन्तदास का पुत्र प्रतापसिंह विक्षिप्त हो गया और उसने आत्मघात करना चाहा। उसने

अपने कण्ठ पर खंजर मार लिया और उसकी स्थिति चिन्ताजनक हो गई, तो बादशाह ने कुशल हकीमों से उसकी चिकित्सा करवाई और वह स्वस्थ हो गया।

गाबल दुर्ग की विजय

इसके बराबर बरार में दूसरा दुर्ग नहीं है। इसके अन्दर बहुत पानी है और दुर्गाध्यक्ष के लिये मकान बने हुए हैं। इस दुर्ग को मीर मुर्तजा ने मीठी बातें करके लिया था। दुर्गपति वजउद्दीन और विश्वासराय ने दुर्ग की चाबियां उसके सुपुर्द कर दी थीं। 11 तारीख को अजमेर मीर शरीफ आमूली को जागीर में दे दिया गया। 12 तारीख को खानखाना दरबार में आया। बादशाह ने उसकी कुटिलता क्षमा कर दी। अगले दिन कुलीच खां आया। वह अप्रसन्न होकर सुल्तान दनियाल को छोड़ आया था। बादशाह ने उसको न्यायपूर्वक दरबार में बुला लिया।

इस वर्ष ईरान के राजदूत आये। ऐसी सूचना मिली कि जब जिया उल मुल्क और अबू नासिर ईरान पहुंचे तो शाह अब्बास ने अकबर के जूतों को अपने लिये सौभाग्य का मुकुट समझा। उसने अकबर के दस्तूरनामे का भी अनुसरण किया और अपनी ओर से मीनूचिहर बेग को विशेष भेंटें तथा अधीनतासूचक पत्र लेकर भेजा, जो 23 तारीख को अकबर के दरबार में पहुंचा। बादशाह उससे कृपापूर्वक मिला। भेंटों में 101 ईराकी घोड़े थे, जिनमें एक घोड़ा केस्पियन समुद्र का था। एक घोड़ी 5000 रुपये की मानी गई थी। 3000 थान कीनखाब के थे। इसके अतिरिक्त अनेक प्रकार की अन्य चीजें थीं।

इसी दिन शाहजादा सलीम ने राजा बसू को प्रस्तुत किया तो उसे क्षमा कर दिया गया।

***

प्रकरण 136

अहमदनगर की विजय के लिये अभियान

बादशाह चाहता था कि शाहजादा सलीम के नेतृत्व में सेना भेजकर तूरान को जीतकर साम्राज्य में मिला लिया जाये। परन्तु कुछ लोगों के प्रपंच से शाहजादे ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। फिर अकबर ने सोचा कि किसी अन्य शाहजादे को भेजा जाये परन्तु शाहजादा मुराद का विचार दरबार में आने का नहीं था। शाहजादा दनियाल इलाहाबाद से चला गया था। इसलिये बादशाह ने निश्चय किया कि आगरे की ओर से दक्षिण की ओर प्रयाण किया

जाये। इसलिये 26 आबान (नवम्बर, 1598) को मरियम मकानी दूसरी बेगमों और सुल्तान खुर्रम को लाहौर में छोड़कर वह हाथी पर सवार होकर चल दिया। दरबार और सूबे की देखरेख का काम ख्वाजा शमसुद्दीन को सौंपा। मीर मुराद को मीर बख्शी बनाया, मलिक खैर उल्ला को कोतवाल नियुक्त किया। 30 तारीख को अबुल कासिम तमकीन, कश्मीर से आकर दरबार में हाजिर हुआ। 13 आजर को बादशाह ने व्यास नदी गोविन्द वाल नामक हाथी पर बैठकर पार की और सेना पुल द्वारा उतरी। इसी दिन बादशाह अर्जुन गुरु से मिलने के लिये गया। इस गुरु के पूर्वज ब्राह्मणों के मुखिया थे।

इसी समय बरार का मेल गढ़ा दुर्ग जीत लिया गया। यह मसऊद खां हब्शी के हाथ में था। इसने चालाकी से सीगा जलगांव भी छीन लिया था। पहले तो उसने अपने परिवार को अन्दर भेजा। फिर इस बहाने से कुछ आदमी दाखिल किये और अन्त में दुर्ग दबा लिया। शाहजादा मुराद ने कुछ आदमियों को भेजा, जिन्होंने इस दुर्ग को घेर लिया और 19 तारीख को दुर्गसेना ने आत्मसमर्पण करके चाबियां सौंप दीं। इस वर्ष पाइंदा खां का पुत्र वली बेग बंगाल से आया और पेशकश में 22 अच्छे हाथी लाया।

नरनाला की विजय

यह दुर्ग जंजीबार के एक निवासी के हाथ में था। राम गोपाल और डुंगर खां गौड ने युक्ति करके दुर्गसेना के कुछ परिवारों को बाहर बुलाकर पकड़ लिया, तब दुर्गपति ने अधीनता प्रकट की। जब शाहजादा इस दुर्ग के पास होकर निकला तो दुर्गपति उसे सलाम करने आया। 20 तारीख को उसने दुर्ग शाही सेवकों के सुपुर्द कर दिया। ऊंचाई, दृढ़ता, लम्बाई, चौड़ाई और इमारतों की दृष्टि से इने-गिने दुर्ग ही इसकी बराबरी कर सकते हैं। शाहजादा दुर्ग के सिरे पर चढ़ा और फिर शाहपुर लौट गया। इसी दिन मानपुर का दुर्ग भी जीत लिया गया, पहले इसको मिर्जा खान ने घेरा था। जब उससे क़ाम नहीं बना तो नजर खां को भेजा गया। जगू, नानू, हैबत, राव आदि दुर्गरक्षक विवेकतापूर्वक लड़े परन्तु फिर खाद्य-सामग्री की कमी के कारण उनको आत्मसमर्पण कर देना पड़ा।

21 तारीख को अकबर ने लुधियाना के पास हाथी पर बैठ कर सतलज नदी पार की। सेना पुल द्वारा उतरी। दूसरे दिन मिर्जा शाहरूख आया उसको बुलाया गया था। इसलिये वह शाहजादा सुल्तान मुराद से छुट्टी लेकर आया था। 26 ता० को अकबर सरहिंद पहुंचा और वहां अब सईद के मकान पर गया, परन्तु वहां से रात में ही चल दिया। उस दिन चलाबी बेग उपस्थित हुआ, उसके पूर्वज तबरीज के निवासी थे। उसने विद्या खूब पढ़ी थी, कजबीन में उसने ख्वाजा अफजल तुर्क और शिराज में मिर्जा जान के पास अध्ययन किया था। तुर्क अपने समय में बुद्धि में और मिर्जा जान दर्शन-शास्त्र में अद्वितीय था। जब इसका बादशाह को पता लगा तो उसने भेंटें भेजकर चलाबी बेग को बुलाया, फिर वृद्ध होने पर वह स्वदेश लौट गया।

लाहौर साम्राज्य की कुछ वर्ष के लिये राजधानी थी, उस समय वहां कीमतें बहुत बढ़ गई थीं इसलिये सरकारी अफ़सरों ने लगान 10 से 12 कर दिया था। जब बादशाह वहां से लौट आया तो कीमतें घट गईं। तब लगान 12 से 10 कर दिया गया, ता० 4 दाई को खानखाना का पुत्र हैदरी जल गया। वह मद्यपान करके सो गया था। उसके पास ही आग सुलग गई जिसका उसको पता नही लगा। तारीख 5 दाई को मिर्जा मुजफ्फर हुसेन (अकबर का दामाद) कन्नौज से आया। वह मद्यव्यसन के कारण न्याय के मार्ग पर नहीं चलता था। इसलिये उसको चेतावनी देने के लिये बुलाया गया था। तारीख 7 को खान आजिम मिर्जा कोका की बहन माह बानू की मृत्यु हो गई। वह खानखाना की पत्नी थी और बुद्धि और शुद्धि के लिये प्रसिद्ध थी। वह अम्बाला में बीमार हो गई थी तो उसको वहीं छोड़ दिया गया था। दो अफसरों ने कुछ दिन के लिये छुट्टी ले ली थी, वह उसी मास में मर गई। बादशाह ने इस पर शोक किया। तारीख 8 को शिकार करते समय रुस्तम मिर्जा आहत हो गया। राय साहबान के पुत्र का बाज एक वृक्ष पर बैठा हुआ था। मिर्जा के साथियों ने उसको पकड़ लिया तो राजपूतों से लड़ाई हो गई। मिर्जा उनको शान्त करने गया, परन्तु अचानक उसकी भुजा पर तलवार लगी, दुर्व्यवहार करने वालों को उसने राय साल के पास भेज दिया। दूरदर्शी बादशाह ने उसकी सहनशीलता की प्रशंसा की। 19 तारीख को अबुल कासिम, नमकीन को भक्कर जागीर में मिला और वह वहां रवाना हो गया। इसी दिन शेख सुल्तान को फांसी दी गई। वह एक विद्वान् पुरुष था। वह थानेश्वर का रहने वाला था और यह स्थान उसी को दे दिया गया था परन्तु वह पुराने वैर के कारण भले आदमियों को सताने लगा। जब बादशाह वहां आया तो उसको लोगों ने स्थिति से परिचित किया और अत्याचार सिद्ध हो गया इसलिये उसको दण्ड मिला। 19 तारीख को बादशाह का डेरा दिल्ली में लगा। अगले दिन शेख फरीद बख्शी की अभिलाषा पूरी हुई। वहां से बादशाह हुमायूं की कब्र पर गया और वहां पुण्यदान किया। इस समय दिल्ली की फौजदारी मीर अब्दुल बहाब बुखारी को दी गई। यह मालूम हुआ कि शाहम खां ने यह नगर लोभी लोगों के सुपुर्द कर दिया था और वह स्वयं आनन्द करता था इससे लोग सताये जाते थे। इसीलिये शाहम खां को अलग किया गया और अब्दुल बहाब को उसके स्थान पर नियुक्त करके 500 का मनसब दिया गया।

***

प्रकरण 137

बादशाह का राजधानी आगरा को लौटना

आगरा पहुंच कर 5 जनवरी, 1599 को बादशाह ने अबुलफजल को आदेश दिया कि शाहजादा सुल्तान मुराद को लाये। यदि दक्षिण के अधिकारी सूबे के प्रशासन का दायित्व अपने ऊपर लेते, तब तो शाहजादा और वह दरबार में आये अन्यथा शाहजादे को रवाना करे अबुलफजल वहीं ठहर जाये और मिर्जा शाहरूख की सम्पत्ति के अनुसार सूबा का प्रबन्ध करे। उसी दिन मिर्जा रुस्तम को रायसीन और उसका इलाका जागीर में दिया गया और शाहबाज खां को अजमेर भेजकर आदेश दिया कि राणा के अधिकारियों का दमन करे। प्रत्येक सेवक को एक अच्छा घोड़ा और खिल्लत दी गई, अबुल फजल को इसके अतिरिक्त एक हाथी भी दिया गया। 28 तारीख को ताशगर का राजदूत आया, अकबर ने चतुर पुरुषों को भेंटें लेकर वहां भेजा था। परन्तु मार्ग सुरक्षित नहीं था। इसलिये वे नहीं जा सके। यह खबर सुनकर मुहम्मद खां को बड़ा हर्ष हुआ था। उसने मीर इमान को भेंटें लेकर भेजा, परन्तु उसको रास्ते में लूट लिया गया। वह पत्र लेकर आ गया तो उसका अच्छा स्वागत हुआ। उसी दिन बिहार से सईद खां आया। तारीख 1 इसफन्दारमज को लौहगढ़ का दुर्ग जीत लिया गया। मिर्जा अलीबेग अकबर शाही ने 1 मास तक इसको घेरे रखा, तब दुर्गसेना के पास अन्न और जल की कमी आ गई तो उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया। 3 तारीख को मीर अत्तरिक अरदीबीलि की आगरे में मृत्यु हो गई। लोग कहते थे कि वह साम मिर्जा सफवी का पुत्र था। वह संन्यासी था और एकान्त निवास करता था। उसके विषय में अनेक अद्‌भुत कहानियां कही जाती थीं। तारीख 11 को अकबर मिर्जा कोका के मकान पर गया। मिर्जा कोका की माता माहबानू की मृत्यु के कारण अति संतप्त मरणासन्न थी। बादशाह ने सहानुभूति करके उसको सान्त्वना दी, यह महिला उसी स्थान पर रुक गई थी, जहां इसकी पुत्री की मृत्यु हुई थी और अब आगरा आई थी।

इस समय ईरान का राजदूत आया। जब तूरान का शासक मर गया तो शाह अब्बास ने खुरासान पर आक्रमण करके अतम सुल्तान को एक लड़ाई में हरा दिया और वह देश छीन लिया। अतम सुल्तान अब्दुल्ला खां का रिश्तेदार था। शाह अब्बास ने मिर्जा अलीबेग युजबाशी को एक विनीत पत्र और कुछ घोड़े और अन्य पदार्थ भेंट के लिये लेकर भेजा। अब्बास इस विजय को अकबर की मित्रता का हल समझता था। 25 तारीख को राजदूत दरबार में उपस्थित हुआ। अकबर को भेंटों से बड़ा संतोष हुआ।

***

प्रकरण 138

राज्यारोहण के बाद 44वें इलाही सन् का आरम्भ

रविवार, 23 शाबान, 1007 हिजरी, 11 मार्च, 1599 को इस वर्ष का आरम्भ हुआ। बादशाह ने ईश्वर को धन्यवाद देकर राज सिंहासन को अलंकृत किया। नये साल के दिन शाहजादा सुल्तान दनियाल बादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ। उसने सूबा इलाहाबाद का प्रशासन अच्छा किया था और बादशाह के आदेश से मद्यपान छोड़ दिया था। जब वह बान्धु दुर्ग को देखकर हाजीपुर लौटा तो दलपत उजैनियां से मिलने आया और उसने हाथी भेंट किये। फिर बुद्धि की कमी के कारण उसने भाग जाने का निश्चय किया, परन्तु उसको पकड़ कर दरबार में पेश किया गया। शाहजादे के विषय में अनेक कहानियां कही जाती थीं। इसलिये उसने सत्ताईस इसफन्दारमज को जमुना पार से बादशाह को प्रार्थना-पत्र भेजा, परन्तु उसको दरबार में उपस्थित होने की अनुमति नहीं मिली। फिर अगस्त मास में उसको बुलाया गया। उसने 206 हाथी बादशाह को भेंट किये।

इसी दिन राजा बीरबल का पुत्र लाला बंगाल से आया। उसको इसलिये भेजा गया था कि कुछ अधिकारियों को समझाये और यदि अच्छे हाथी मिलें तो लाये। उसने 16 हाथी भेंट किये। तारीख 6 को मथकर का पुत्र रामसिंह आया। वह बहुत अर्से से कोलाहल कर रहा था। जब उसको सैनिकों ने दबाया तब वह सेवा मार्ग पर लौटा। 11 तारीख को आसिफ खां आदेशानुसार कश्मीर से 8 दिन में आ पहुंचा तो उस पर कृपा की गई। इसी दिन राजा राजसिंह दरबार में आया। उसको दक्षिण की सेना से बुलाया गया था। चतरभुज पर भी इसी प्रकार कृपा की गई। उसका पिता जगमन मालवा का एक जमींदार था। जब वह मर गया तो चतरभुज ने प्रार्थना-पत्र पेश किया और उसको अपने पिता का राजपद प्राप्त हो गया।

खैरला दुर्ग की विजय

यह दुर्ग प्रसिद्ध दुर्ग बरार और गोंडवाना की सीमा पर स्थित है। शाहजादा सुल्तान मुराद ने शेख इब्राहिम के नायकत्व में सेना भेजी, जिसने इसको घेर लिया तो दुर्ग में खाद्य-सामग्री दुर्लभ हो गई और दुर्गसेना ने दुर्ग समर्पित कर दिया। दुर्गपतियों को कुछ जागीरें दे दी गईं। 14 तारीख को समांजि खां, मीर सईफ आमूली और अब्दुल रहीम अपनी जागीरों से आये। 19 तारीख को नागौर से जगत सिंह आया तो बादशाह उससे कृपापूर्वक मिला। 23 तारीख को कासिम बेग तबरीजी की मृत्यु हो गयी। वह तपस्वी सूफी सन्त था।

बदख्शां का राजदूत आया

जब ट्रांस आग्जियाना प्रान्तों को शासकों में यह विभक्त हो गया तो एक अधम व्यक्ति कहने लगा कि "मैं मिर्जा शाहरूख का पुत्र मोहम्मद जमान हूं। इसी प्राकर एक दूसरा व्यक्ति मिर्जा सुलेमान का पुत्र हुमायूं बन गया। दोनों ने मिलकर बदख्शां को बांट लिया। मोहम्मद जमान का नाम धारण करने वाले ने नियामत उल्ला को राजदूत बनाया और उसके साथ अकबर को प्रार्थना-पत्र भेजा। उसने अकबर के नाम का ही सिक्का चलाया। उसने लिखा कि मैं काबुल के झगड़े से प्राण बचाकर निकला, मुझे कासिम खां की विपत्ति पर लज्जा है।" बहुत-से लोग उसको छली या ठग समझते थे परन्तु अकबर ने उस पर कृपा की।

नासिक विजय

दो मास पूर्व शाहजादा सुल्तान मुराद ने बहरजी और कुछ खानदेश के सैनिकों को नासिक दुर्ग की विजय के लिये भेजा तो कई बड़ी लड़ाइयां हुईं परन्तु अन्त में बहरजी सफल हुआ।

तारीख 11 को मैं अबुल फजल बुरहानपुर के निकट पहुंचा तो खानदेश के शासक ने असीरगढ़ से 4 कोस की दूरी पर मेरा स्वागत किया। फरमान और खिल्लत को सिजदा करके ग्रहण किया। अगले दिन मैं बुरहानपुर से रवाना हुआ और ताप्ती पार करके ठहर गया। मैंने बहादुर खां से कहा कि मेरे साथ चले परन्तु उसने 2000 सवारों सहित अपने पुत्र को भेज दिया। वह मेरा आतिथ्य करना चाहता था परन्तु मैंने स्वीकार नहीं किया।

***

प्रकरण 139

सुल्तान मुराद की मृत्यु

सुल्तान मुराद अहमदनगर से विफल होकर लौटा तो उसको बड़ा क्लेश रहने लगा। फिर उसके पुत्र की मृत्यु हो गई तो उसकी बुद्धि विकृत होने लगी और वह अति मद्यपान करने लगा। इससे उसको अपस्मार को रोग हो गया और उसने नीरोग होने का प्रयास नहीं किया। 13 आबान को वह दाविल गया और वहां से एलिचपुर पहुंचा। वहां उसको ज्वर हो गया। फिर वह नरनाला गया तो उसका ज्वर और उदर पीड़ा और भी बढ़ गई। 9 दाई को वह शाहपुर लौटा। हकीम लोग उसकी चिकित्सा करने लगे तो वह कुछ स्वस्थ हुआ।

जब उसने सुना कि बादशाह आगरा लौट आया है और उसको दरबार में बुलाया गया है तो वह अतिदुखित हुआ। उसे मद्यपान पर लज्जा थी। फिर उसे मालूम हुआ कि मैं अबुलफजल आ रहा हूं तो उसने 9 इसफन्दारमज को अहमदनगर की ओर कूच कर दिया। वास्तव में वह आगरा नहीं जाना चाहता था। उसने तामुरनी (तैलंगाना) में नये वर्ष का भोज दिया। 16 आरदी बिहिश्त को पूर्णा नदी के तट पर दौलतावास से 20 कोस की दूरी पर उसे प्रबल मूर्छाएं होने लगीं और 22 तारीख को वह मूर्छित अवस्था में ही चल बसा।

उसकी बीमारी की खबर सुनकर अकबर ने हकीम मिश्री और आसफ खां को भेजा था। परन्तु मार्ग में ही उनको मृत्यु की खबर मिल गई और वे वापस लौट गये। अकबर ने अपने दु:ख को दबाया और शान्ति रखी।

***

प्रकरण 140

दक्षिण की सेना की व्यवस्था

जब मैं दक्षिण को रवाना हुआ तो बहुत-से साथी मुझे छोड़ गये। तब मैंने एक बड़ी सेना खड़ी कर ली और उनको अग्रिम वेतन दे दिया । जब मैं शाहजादे के डेरे से 30 कोस की दूरी पर पहुंचा तो धावन लोग मिर्जा यूसुफ खां और दूसरे अधिकारियों के पत्र लेकर आये और उन्होंने कहा कि शाहजादा बहुत बीमार है। मैं उन्नीस तारीख के सायंकाल पहुंचा तो शाहजादे की मृत्यु हो चुकी थी और लोग त्रस्त थे। मैंने शाहजादे के शव को शाहपुर भेज दिया तब शाही सेना में गड़बड़ी होने लगी। लोग कहने लगे कि "मुनीम खां खानखाना की मृत्यु हो गई है। बंगाल की व्यवस्था बिगड़ गई है, गुजरात का हाल भी बहुत बुरा है। शिहाबुद्दीन और अहमद खां वहां से आ गये हैं।" इन बातों का मुझ पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। 27 तारीख को हमने दक्षिण-विजय के लिये प्रयाण किया। मैंने शाहजादे का कोष सैनिकों में बांट दिया। कुछ रुपया मैंने उधार भी लिया। मैंने नासिक के सिवाय सारे दक्षिण की सत्ता का प्रबन्ध कर दिया। इससे दूर-दूर के लोगों को अचम्भा हुआ। मैं दरबार से बहुत दूर था। इसलिये वहां लोग मेरी निन्दा किया करते थे। परन्तु मैं अपनी सफलता के लिये ईश्वर को धन्यवाद देता था।

मासूम काबुली की मृत्यु

मासूम काबुली कृतघ्नता के कारण पागल हो गया था। उसने बंगाल में उत्पात खड़ा

कर दिया था। फिर वह बीमार हो गया और 10 मई, 1599 को उसकी मृत्यु हो गई। तब पूर्व के विद्रोही शान्त हो गये। 3 खुरदाद को अन्तःपुर की अनेक महिलाओं की मृत्यु हो गई। यह खबर 12 तारीख को लाहौर से आई तो शाही महिलाओं को बड़ा क्लेश हुआ। शाहजादा खानिम की माता का भी देहान्त हो गया था, इसलिये उसको बड़ा दुःख हुआ। बादशाह ने उसको सान्त्वना दी। इसी समय सितूंदा छीन लिया गया।

तलतुम विजय

शाहजादा मुराद की मृत्यु के पश्चात् अबुल फजल ने सेना की व्यवस्था की, मुल्क की रक्षा की और ऐसे स्थानों को जीता जो पहले साम्राज्य में सम्मिलित नहीं थे। मैंने तलतुम दुर्ग की विजय के लिये सुन्दरदास को भेजा। तुर्क सेना ने कुछ सामना किया, परन्तु 27 तारीख को आत्मसमर्पण कर दिया। 30 तारीख को मरियम मकानी आगरा आई। उस समय अकबर दक्षिण की ओर रवाना हो रहा था। इसलिये उसने अपनी माता को मिलने के लिये बुलाया था। साथ ही उसने सुल्तान खुर्रम और अनेक महिलाओं को बुलाया था। जब वे आईं तो शाहजादा सलीम ने आगे जाकर उनका स्वागत किया और फिर बादशाह भी उनसे मिला। अब तक अकबर को मुराद की मृत्यु की खबर नहीं दी गई थी। यह खबर उनको मरियम मकानी के द्वारा मिली। अकबर ने शान्ति रखी और दुःखित महिलाओं को सान्त्वना दी।

***

प्रकरण 141

शाहजादा सुल्तान दनियाल को दक्षिण भेजा गया

दक्षिण की रक्षा का प्रश्न स्थगित नहीं किया जा सकता था इसलिये शाहजादा सुल्तान दनियाल को तारीख 2 तीर को रवाना किया गया। उसको लाल डेरे का सम्मान प्रदान किया गया, जो केवल बादशाह के लिये ही लगता था। मुझ अबुल फजल को आदेश दिया गया कि मैं दक्षिण में ही ठहर कर शाहजादे को प्रशासनिक वित्तीय मामलों से परिचित करवाऊं।

इस समय सैयद कासिम बारहा की मृत्यु हो गई। शाहजांदा सुल्तान मुराद ने कासिम को दौलताबाद की ओर अभियान करने के लिये भेजा था और उसको बहुत-से वीर और

अनुभवी लोग साथ दिये थे। जब शाहजादा की मृत्यु हुई तो वह तुरन्त वापस आ गया परन्तु इस पुस्तक के लेखक से बातचीत करके वह वापस चला गया। उसने कुछ उपजाऊ इलाके जीते, परन्तु तारीख 6 को वह दौलताबाद कुन्हार कस्बे में अपच रोग से मर गया। तारीख 15 को सुल्तान परवेज की माता की मृत्यु हो गई। तारीख 17 को राजा मानसिंह भेंटें लेकर आया, जिनमें 50 बहुमूल्य हीरे थे। अब बंगाल में शान्ति हो चुकी थी इसलिये वह दरबार में आया था।

इस समय दौलताबाद की दुर्गसेना ने निवेदन किया कि यदि उनको सुरक्षित निकलने दिया जाये तो वे दुर्ग की चाबियां अर्पित कर देंगे। पास ही हबसी और दक्षिणी लोगों को डर था इसलिये उनके दमन के लिये उन्होंने चाहा कि सेना भेजी जाये। अतः मैंने अपने पुत्र को 1500 सवार और इतने ही प्यादे देकर इस काम के लिये भेजा। राय पतरदास रिश्वत लेने और लोगों को तंग करने लग गया था इसलिये 11 तारीख को उसको बान्धु भेजा गया और उसके स्थान पर आसफ खां को नियुक्त कर दिया गया। 26 तारीख को मिर्जा शाहरूख दक्षिण की सेना में चला गया। शाहजादा सुल्तान मुराद की मृत्यु पर दक्षिण में गड़बड़ होने लगी थी इसलिये लेखक ने मिर्जा शाहरूख को बुलाया था। मिर्जा ने आने में देर की थी इसलिये एक सजावल को भेजा और आदेश किया कि मिर्जा की इच्छा हो या अनिच्छा हो उसको लाया जाये। जब मिर्जा आया तो मैंने उसका स्वागत किया और मुझे उसके आने से बड़ी प्रसन्नता हुई।

इस वर्ष बीर में उपद्रव हुआ। इस नगर के साथ एक विस्तृत प्रदेश है जिसमें 1001 बड़े-बड़े गांव हैं। शाहजादा की मृत्यु से एक मास पूर्व शेरख्वाजा ने वीर सैनिकों की सहायता से इसको जीत लिया था। शाहजादा की मृत्यु हो जाने पर बड़े-बड़े अमीरों की राय थी कि इसको छोड़ दिया जाये, परन्तु यह सलाह नहीं मानी गई तब ईर्ष्यावश लोगों में शत्रु को, जिनकी संख्या 15000 से अधिक थी, उकसाया। उनका खयाल था कि शाही सेना में 3000 से अधिक आदमी नहीं हैं। इस बात की खबर आने पर अधिक सेना खड़ी करने का प्रयास किया गया, परन्तु लोग नहीं आये और 15000 हबसियों और दक्षिणियों ने 60 हाथियों सहित बीर पर आक्रमण किया। शेर ख्वाजा ने उनका साहसपूर्वक सामना किया। उसकी सेना थोड़ी-सी थी परन्तु उसकी अग्रसेना ने जिसमें राजपूत थे, बड़ी वीरतापूर्वक युद्ध किया और उनमें कई सरदार मारे गये। शेर ख्वाजा भी वीरतापूर्वक लड़ा, परन्तु वह आहत होकर नगर में लौट आया। तब बहादुर-उल-मुल्क कुछ सेना लेकर सहायतार्थ आया। तब दुर्ग सेना ने नगर के चारों ओर लड़ाई लड़ी। मैंने दौलताबाद से शेख अब्दुर्रहमान को बुलाया। मैं गोदावरी के तट पर जाकर सेना खड़ी करना चाहता था। मिर्जा अली बेग और दौलताबाद की सेना मेरी सहायतार्थ आ गई। नदी में बाढ़ आ रही थी परन्तु जब अब्दुर्रहमान आया तो बाढ़ कम हो गई और सवार पार हो गये। जब शत्रु को यह मालूम हुआ तो उसका साहस टूट गया और हमको विजय प्राप्त हो गई।

दुर्गसेना 19 दिन से घिरी हुई थी। घेरे के दिनों में उन्होंने बड़े साहस से सामना किया था। स्थिति इतनी बिगड़ गई थी कि सैनिक घोड़ों का मांस खाते थे। जब मैंने देखा कि निजामुलमुल्की सैनिक बुरी हालत में हैं तो मैं अहमदनगर पर आक्रमण करना चाहता था परन्तु मेरे साथियों ने नहीं माना। वे तो बीर नगर को भी छोड़ देना चाहते थे परन्तु वहां के सैनिकों ने इनकी रक्षा के लिये बड़े कष्ट उठाये थे। अब उसकी रक्षा का भार मैंने शेख अब्दुर्रहमान को सौंपा और शेरख्वाजा को भी वहीं रखा। ईश्वर की कृपा से बहुत बड़ा उपद्रव शान्त हो गया और विद्रोही दब गये।

इस समय कोष आ पहुंचा इसलिये सब के चेहरे चमकने लग गये। जब बादशाह ने सुना कि हमारे पास रुपये की कही है तो उसने आदेश दिया कि गुजरात से कोष भेजा जाये और तीन लाख रुपये की हुण्डियां दरबार से रवाना की जायें। इस प्रकार रुपये आ जाने से सैनिकों को नई सहायता प्राप्त हुई।

इस दिन तलतूम दुर्ग जीत लिया गया। यह बरार में अच्छा दुर्ग था। मैंने इसको जीतने के लिये सुन्दरदास को भेजा था। वहां बड़ी लड़ाइयां हुईं। एक रात्रि को दुर्गसेना असावधान हो गई तो आक्रमण करने वाले सैनिक सीढ़ियों द्वारा दुर्गप्राचीर पर चढ़ गये। दुर्गरक्षक कतलू खां भाग गया और विद्रोही दब गये।

***

प्रकरण 142

बादशाह का मालवा की ओर प्रयाण

सुल्तान दनियाल ने दक्षिण की ओर कूच करने में विलम्ब किया। इसलिये बादशाह ने इरादा किया कि उधर की ओर जाकर शाहजादे को प्रेरित किया जाये। अत: 16 सितम्बर, 1599 को उसने प्रस्थान किया। सुल्तान खुसरू, सुल्तान परवेज और सुल्तान खुर्रुम तथा अनेक महिलायें उसके साथ थीं। इसी दिन शाहजादा सलीम ने अजमेर जाने की इजाजत मांगी। सलीम मद्यपान बहुत करता था और उसकी संगति अच्छी नहीं थी इसलिये बादशाह उससे नहीं मिला परन्तु मरियम मकानी के आग्रह से उसको आने की इजाजत दे दी और फिर उसको राणा उमरा (अमर सिंह) के दमन के लिये भेजा। राजा मानसिंह, शाहकुली महरम और अन्य अफ़सर उसके साथ भेजे। राजा मानसिंह के निवेदन पर उसके पुत्र जगतसिंह को बंगाल का सूबेदार नियुक्त किया।

ईसा की मृत्यु

यह बंगाल का बड़ा जमीनदार था परन्तु वह शाही दरबार में नहीं आता था। राजा मानसिंह अजमेर में रहते हुए बंगाल का शासन किया करता था, परन्तु ईसा के कारण वहां गड़बड़ रहा करती थी। अब उसकी मृत्यु हो गई तो बड़ा कंटक दूर हो गया। 19 तारीख को खानखाना शाहजादा दनियाल के पास भेजा गया और अबुल फजल को दरबार में बुला लिया गया।

जगतसिंह की मृत्यु

जब जगतसिंह को बंगाल जाने का आदेश हुआ तो वह आगरे के निकट तैयारी करने में लग गया परन्तु अचानक ही उसकी मृत्यु हो गई। जिससे कछावा जाति को बड़ा दुःख हुआ। बादशाह ने सब के साथ बड़ी सहानुभूति की और जगत सिंह के पुत्र महासिंह को जो बच्चा ही था, बंगाल का सूबेदार नियुक्त किया।

4 आबास को अकबर की सौर तुला हुई। उसको 12 पदार्थों से तोला गया। 5 अगस्त को अकबर धौलपुर पहुंचा।

मुराद का शव आगरा भेजा

जब शाहजादा मुराद का देहान्त हुआ तो कुछ महिलायें उसके साथ थीं। उनको शाहपुर भेज दिया गया था। अब उन सब को एकत्र करके उपयुक्त आदमियों के साथ दरबार में भेजा गया। तहसीलदार, कारकून और दरोगा उनके साथ थे। सब सामान की सूची तैयार कर ली गई थी। मार्ग की दुर्गमता और रुपये की कमी के कारण इनको रवाना करने में विलम्ब हुआ था। इन्हीं के साथ मुराद का शव भेजा गया था। ये लोग मालवा के दरबार में पहुंचे। बादशाह ने शाहजादे का शव दिल्ली भेजवा दिया।

शाहजादा सलीम रास्ते में विलम्ब कर रहा था। उसको सलाह देने के लिये मीर अब्दुल हेय को भेजा गया। पुत्रशोक के कारण राजा मानसिंह बड़ा व्याकुल था। उसको सान्त्वना का सन्देश, एक घोड़ा और एक खिलत भेजी गई। 11 नवम्बर, 1599 को शाहबाज की मृत्यु हो गई। वह रसौषधि का सेवन किया करता था। 40 वर्ष की अवस्था में वह ज्वरग्रस्त होकर अजमेर में मर गया। वह बड़ा कट्टर और कटुभाषी था, परन्तु सेवा की दृष्टि से उसकी बराबरी थोड़े ही लोग कर सकते थे।

चांदबीबी

चांदबीबी बुरहान के पौत्र बहादुर को गद्दी पर बिठा कर अहमदनगर में रहती थी। कुछ सैनिक उसके साथ थे परन्तु अभंग खां हब्शी बाहर के इलाके में उत्पात मचा रहा था। बहादुर बालक था और नाम मात्र का शासक था। चांदबीबी ही शासन चलाती थी।

वह सेना को प्रोत्साहन देती थी और दक्षिणियों से भी मित्रता का व्यवहार रखना चाहती थी। मेरे प्रति भी उसने इसी साधन का उपयोग किया तो मैंने उत्तर दिया 'आप दरबार के अधीन हो जायें तो बहुत अच्छा हो। इस प्रकार के सन्देशों से बात स्पष्ट नहीं होती।' फिर उसने अपने हाथ से एक संधिपत्र लिख कर भेजा और कहा कि 'यदि अभंग खां का दमन कर दिया जाये तो दुर्ग की चाबियां दे दी जायेंगी परन्तु बीर मुझे जागीर में दे दिया जाये। मैं वहां जाकर कुछ दिन रहूंगी और फिर बहादुर को दरबार में भेज दूंगी।'

अभंग खां की मृत्यु

अभंग खां ने मियां खां के पुत्र शमशेर उल मुल्क को कारागार से निकाल कर ऊंचा उठा दिया और उसे एक सेना देकर बरार की ओर भेजा। वह पहले बरार का सूबेदार था। तब शाही सेना को चिन्ता हुई तब मैंने मिर्जा यूसुफ खां को एक बड़ी सेना देकर भेजा परन्तु मिर्जा ने सुस्ती की। शमशेर बरार पहुंच गया और वहां उत्पात खड़ा हो गया। बहुत-से लोग भाग गये। तब मैंने अहमदनगर को कूच करके चांदबीबी के वायदों की परीक्षा करना चाहा। जब मैं उधर की ओर चला तो सारे शुत्र अहमदनगर में एकत्र हो गये। इस गड़बड़ के कारण मिर्जा यूसुफ खां की नींद खुली और उसने शमशेर का पीछा किया। 7 आजर की रात को शमशेर को चारों ओर से घेर लिया और एक छोटी-सी लड़ाई हुई जिसमें वह एक तीर लग जाने से मारा गया।

जब मैं मुंगीपाटन में था तो मुझे शाहजादा सुल्तान दनियाल का आदेश मिला कि मैं अहमदनगर का आक्रमण स्थगित कर दूं इसलिये मैं आगे नहीं बढ़ा।

कुछ दिन से बादशाह के पेट में पीड़ा थी और वह पालकी में बैठ कर यात्रा करता था परन्तु अब वह अच्छा हो गया तो घोड़े पर सवार होकर चलने लगा। तारीख 15 बहमन को अकबर की चांद्र तुला हुई तो उसको 8 पदार्थों से तौला गया।

***

प्रकरण 143

असीरगढ़ की विजय के लिये बादशाह का अभियान

29 तारीख को बादशाह के डेरे उज्जैन में थे। उसको मालूम हुआ कि खानदेश का शासक शाहजादे से मिलने के लिये नहीं आया इसलिये शाहजादे ने उसके दुर्ग को जीतने

का विचार किया है तो बादशाह ने आदेश दिया कि शाहजादा अहमदनगर पर अभियान करे। शाहजादे ने आदेश मान कर उधर की ओर कूच किया। बहादुर खां ने अच्छी भेंटें भेजीं और अपने पुत्र और कुछ अन्य लोगों को दनियाल के साथ भेज दिया। बादशाह ने ख्वाजा मगदूद को सलाह देने के लिये बहादुर के पास भेजा तो उसने चार अनुपयुक्त हाथी भेंटस्वरूप भेज दिये और मिलने नहीं आया। अकबर ने फिर सदर जहां को और फिर उसके बाद पेशरों खां को भेजा, परन्तु फिर भी बहादुर ने अपना रुख नहीं बदला। तब बादशाह ने दीपालपुर और धार के मार्ग से बुरहानपुर की ओर प्रयाण किया और 11 इसफन्दरमज को शालीवाहन, शेख फरीद आदि 20 बड़े-बड़े सेनानायकों को असीरगढ़ को घेरा डालने के लिये रवाना किया। 23 तारीख को अकबर नर्बदा पर पहुंचा और 26 को नदी पार करके वह बीजागढ़ आया, जहां उसने नये साल का उत्सव मनाया।

***

प्रकरण 144

राज्यारोहण से 45वें वर्ष का आरम्भ

सोमवार, 4 रमजान, 1008 हिज्री, 10 मार्च, 1600 को इस वर्ष का आरम्भ हुआ। 10 फखरदीन (20 मार्च, 1600) को लेखक कारागांव, बीजागढ़ में जहां बादशाह का मुकाम था, दरबार में हाजिर हुआ। जब शाहजादा ने बुरहानपुर पार किया तो मेरे नाम आदेश हुआ था कि सैनिकों को मिर्जा शाहरूख के सुपुर्द करके मैं दरबार में उपस्थित होऊं। जब शाहजादा निकट आ पहुंचा तो मिर्जा शाहरूख और दूसरे लोगों ने शिविर सम्भाल लिया और कोष, तोपखाना आदि मैंने उनके सुपुर्द कर दिया। मैं 12 इसफन्दारमज को चल दिया और 17 को आहूबारा में शाहजादे से मिला और वहां तीन दिन ठहरा। इसी बीच में मुझे दूसरा आदेश प्राप्त हुआ कि मैं बहादुर को समझाऊं और यदि वह मेरे साथ दरबार में जाने के लिये तैयार हो जाये तो उसको क्षमा की सूचना दूं, अन्यथा मैं हाथियों और सैनिकों को वहीं छोड़कर बादशाह के पास पहुंचूं। जब मैं बुरहानपुर आया तो बहादुर मेरे साथ जाने के लिये तैयार हो गया, परन्तु वापस अपने निवास पर जाने पर उसका विचार बदल गया इसलिये मैं आगे बढ़ा। 21 तारीख को बादशाह बुरहानपुर पहुंचा। आगरे से यह स्थान 226 कोस दूर है। इस दूरी को अकबर ने 195 दिन में और 69 मंजिल चलकर पार किया था। 22 तारीख को खान आजम, आसफ खां और शेख फरीद को आदेश हुआ कि असीरगढ़ को घेरे और तोपें जमायें। शेख फरीद बख्शी बेगी के नेतृत्व में जो सेना असीरगढ़ की विजय

के लिये भेजी गई थी, वह कम थी और शत्रु की संख्या अधिक थी इसलिये उस सेना ने दूरदर्शिता से काम किया और असीरगढ़ से 3 कोस की दूरी पर ठहर गई। इस दिन खानदेश की रक्षा का भार लेखक को दे दिया गया। 23 ता० को दो स्थानों पर अधिकारी नियुक्त किये गये। एक ओर मेरा भाई शेख अबुल बरकत और दूसरी ओर मेरा पुत्र अब्दुर्रहमान था। बहुत-से विद्रोही अधीन हो गये और किसान लोग अपनी खेती करने लगे।

7 अर्दी बिहिश्त को मुजफ्फर हुसेन मिर्जा ललंग भेजा गया। उधर के फुलाद खां हब्शी, रूपराय आदि खानदेश के मुखिया लोग अधीन होने की बातें कर रहे थे। इसलिये रायपुर का और रायमनोहर आदि को मिर्जा के साथ उधर की ओर भेजा गया और आदेश दिया गया कि यदि मुखिया लोग सलाह मान लें तो उनको दरबार में भेज दिया जाये अन्यथा मिर्जा असीरगढ़ को दबाने में लग जाये। उसी समय रूपराय की मृत्यु हो गई। वह खानदेश में वीर पुरुष था और उसके पास बहुत-से आदमी थे। शाही सेना के आने से पहले ही फुलाद खां उससे अलग होकर शाही दरबार में आना चाहता था। अकबर ने भी उसको उत्साहवर्धक पत्र लिखा था। उस समय मसूद बेग बादशाह के हाथियों को गुजरात ले जा रहा था। फुलाद खां इसी के साथ हो लिया, तब रूपराय ने फुलाद खां पर आक्रमण किया जिसमें रूपराय आहत हो कर भाग गया और मर गया। फुलाद खां को शाही नौकरी मिल गई।

बंगाल में उत्पात

राजा मानसिह बंगाल का सूबेदार था परन्तु रहता अजमेर में था। उसका खयाल था कि बंगाल के उत्पाती लोग स्वामी पुत्र हैं परन्तु उसमान, सजावल और अन्य अफगानों ने राजद्रोह खड़ा कर दिया तब महासिंह (मानसिंह का पुत्र) और प्रतापसिंह (मानसिंह का भाई) उनसे लड़ने के लिये चले और 18 मई, 1600 की मदरक में एक जोर की लड़ाई हुई जिसमें शाही सेना हार गई और बंगाल हाथ से जाता रहा।

मुजफ्फर हुसेन मिर्जा की कुटिलता

मद्यपान के कारण इस मिर्जा की बुद्धि मंद हो गई थी। एक दिन वह ख्वाजगी फतेहउल्ला से झगड़ पड़ा। एक दिन जब वह अकेला था तो वह भाग गया। सैनिकों ने तो उसका पीछा नहीं किया परन्तु राईसिंह के पुत्र दलपत ने उसका पीछा किया। मुजफ्फर गुजरात की ओर भागा था, परन्तु उसके आदमी उसका साथ छोड़ गये और अब वह सूरत और बगलाना के बीच में फकीर का वेश बनाकर इधर-उधर घूमने लगा, परन्तु ख्वाजा वेस ने उसको पकड़ लिया। इसी दिन बगलाना का जमींदार राजा प्रताप दरबार में आया तो उसको 3000 का मनसब, नक्कारा और निशान देकर वापस लौट जाने की इजाजत दे दी गई।

बहादुर खां की संधि वार्ता

बहादुर खां ने अपनी दादी और पुत्र को 60 हाथी के साथ दरबार में भेजा और कहलाया कि ''मैं भयभीत हूं इसलिये हाजिर नहीं हो सकता, मुझे अन्यत्र सेवा करने का अवसर दिया जाये। जब मेरा भय हट जायेगा तो मैं सेवा करने आऊंगा। मैं अपनी लड़की को सुल्तान खुसरू के साथ विवाह के लिये भेज रहा हूं।'' बादशाह ने उत्तर दिया कि वह स्वयं आये तब ही बात हो सकती है।

इब्राहीम का दण्ड

जब खानदेश का शासन लेखक को सौंपा गया तो उसने सुन्दरदास और अन्य लोगों को संबल डोल का दुर्ग और जामू छीन लेने के लिये भेजा। इब्राहिम ने लड़ाई लड़ी परन्तु वह हार गया और बंदी बना लिया गया। सुन्दरदास भी वीरतापूर्वक लड़ता हुआ काम आया। 12 ता० को फुलाद खां को 1000 का मनसब दिया गया।

बीकाजी ओ की मृत्यु

यह जीजी अनगा का नाम था जो शमसुद्दीन की पत्नी थी यह महिला खान आजिम मिर्जा कोका की माता थी, परन्तु बादशाह के साथ भी इसका मातृ सम्बन्ध था। 16 ता० को उसकी मृत्यु हो गई तो बादशाह ने अपनी दाढ़ी और मूंछ मुंडवा दी और कुछ दूर तक उसके जनाजे को कंधा लगाया। इस महिला का हृदय बड़ा उदार था।

मुजफ्फर हुसेन दरबार में पेश हुआ

17 ता० को मुजफ्फर हुसेन दरबार में पेश किया गया। उसको ख्वाजा वेस पकड़ कर सुल्तानपुर लाया था।

5 जून, 1600 को अबुल फजल को चार हजार का मनसब मिला। इसी दिन राजा अली खां के पोते सरदार खां को एक हजार का मनसब दिया गया। यह अबुल फजल की बहन का पुत्र था। बादशाह ने उसको आगरा बुलाया था।

सापन पर कब्जा

यह ऊंची और दुर्गम पहाड़ी है। असीरगढ़ की दुर्गसेना इस पर आया करती थी। एक दिन बड़े-बड़े सेनानायकों को भेजा गया तो उन्होंने शत्रुओं को वापस धकेल दिया और बड़ी विजय प्राप्त की, तब शाही सेनानायक अराबेग ने उस पर कब्जा कर लिया अब असीरगढ़ की दुर्गसेना की स्थिति कठिन हो गई।

ख्वाजा शमसुद्दीन खाफी की मृत्यु

इस ख्वाजा को पंजाब की खालसा भूमि की व्यवस्था के लिये लाहौर में छोड़ा गया

था। उसने अच्छा काम किया और वह वहीं मर गया। अपने समय में वह बड़ा सच्चा और साहसी पुरुष माना जाता था। बादशाह को उसकी मृत्यु पर दुःख हुआ और उसके छोटे भाई मोमिन को उसके स्थान पर नियुक्त कर दिया गया।

अहमदनगर का घेरा

जब इस नगर को घेरा गया तो वहां के कई सेनानायकों, हब्शियों और दक्षिणियों ने अधीनता स्वीकार कर ली। परन्तु शाही सेना में फूट हो गई और शाहजादे ने कितने ही लोगों को पकड़ लिया और कई सेनानायक भाग गये। यह शोर मच गया कि वायदे भंग किये जा रहे हैं।

शाहजादा सलीम का विद्रोह

इस शाहजादे को आदेश दिया गया था कि राणा का दमन करे परन्तु मद्यपान और व्यसन में उसने अजमेर में बहुत समय व्यतीत कर दिया। फिर वह उदयपुर पहुंचा तो राणा दूसरी ओर उत्पात करने लगा और उसने मालपूरा आदि स्थान लूट लिये। शाहजादे ने माधोसिंह और कुछ सेना उस दिशा में भेजी तो राणा पहाड़ियों में चला गया। उसने शाही सेनानायकों पर जाते-जाते आक्रमण किया, परन्तु शाही सैनिक डटे रहे और वह असफल होकर पीछे हट गया। तब शाहजादे ने पंजाब की ओर जाने की इच्छा प्रकट की। इसी समय अफगानों ने बंगाल में उत्पात खड़ा कर दिया तो मानसिंह ने उसको बंगाल जाने की सलाह दी। ता० 1 अमरदाद को आग़रा से 4 कोस की दूरी पर शाहजादे ने जमुना नदी को पार किया। मरियम मकानी उसे समझाना चाहती थी परन्तु वह उससे नहीं मिला। वह कुछ दूर जाकर लौट आई। शाहजादे ने इलाहाबाद पहुंच कर कितने ही लोगों की जागीरें छीन लीं और बिहार का कोष हस्तगत कर लिया जिससे उसको तीस लाख रुपये मिले। उसने बादशाह का नाम भी धारण कर लिया। उसके दुर्व्यवहार की खबर सुनकर अकबर ने उसके नाम फरमान भेजा। उसने अधीनता स्वीकार करके बादशाह से मिलने की इजाजत मांगी।

दनियाल को सहायता

अहमदनगर की विजय में विलंब हो रहा था। खाद्यपदार्थों की महंगाई के कारण सेनां दुखी थी। जहां-तहां लोग उत्पात कर रहे थे इसलिये शाहजादा दनियाल ने सहायक सेना मांगी तो बादशाह ने बाजबहादुर, कितने ही सेनानायक और एक लाख मोहरें भेजीं।

22 ता० को ख्वाजगी फतेह उल्ला लालंग दुर्ग को जीत कर मलिक शेर और कुछ सैनिकों को लेकर दरबार में आया। बादशाह ने सब पर कृपा की।

इस समय नासिक शाही सेना के हाथ से निकल गया था। 14 ता० को शाहंम जलेर अपच रोग से मर गया।

***

प्रकरण 145

अहमदनगर दुर्ग की विजय

अकबर बुर्हानपुर आ पहुंचा। चांदबीबी ने पुनः वहीं प्रस्ताव किया जो पहले मुझसे किया था। अबहंग खां हब्शियों और दक्षिणियों की सेना लेकर पहाड़ी के ऊपर आया और लड़ने का विचार करने लगा। शत्रु के सैनिकों में फूट पड़ गई तो अबहंग लड़े बिना ही चला गया। अगले दिन शाही सेना ने अहमदनगर के समीप तोपों के मंच जमा दिए। इस प्रकार के दो मंच बनाये गये। चांदबीबी ने पुनः अपने वायदे दोहराए तो जीता खां ख्वाजा सरे ने उस नेक महिला की हत्या कर डाली और इतिबार खां आदि अधिकारियों की सहायता से तोपें चलाना शुरू किया। इधर शाहजादे ने एक खाकरेज बनवाकर खाई को भर दिया, जो 40 गज चौड़ी और 7 गज गहरी थी। प्राचीर भी 27 गज ऊंची थी। सुरंगें लगाई गईं। उनमें से एक में 180 मन बारूद भरा गया और 16 अगस्त, 1602 को बत्ती लगाई गई तो 30 गज दीवार उड़ गई। अब उस मार्ग से सैनिकों ने घुस कर 1500 दुर्गरक्षकों को मार डाला और बहादुर को पकड़ लिया। यह इब्राहिम का पुत्र और बुरहान का पौत्र था। कितने ही रत्न एक सम्पन्न पुस्तकालय और 25 हाथी शाही सैनिकों के हाथ लगे। तोपों और बारूद कीं कोई सीमा नहीं थी। इस प्रकार 4 मास और 4 दिन में दुर्ग पर विजय प्राप्त हुई। दो दिन में यह समाचार बुरहानपुर में बादशाह को मिला तो इसकी खबर सर्वत्र भेजी गई।

कश्मीर का उत्पात शान्त

जब बादशाह ने दक्षिण की ओर प्रयाण किया तो वहां के उत्पाती लोगों ने हुसेन खां के पुत्र अबिया चक को खड़ा करके उत्पात मचाया, तब अली कुली आदि शाही सेवकों ने फाक नगर पर एक लड़ाई लड़ी जिसमें उनको विजय प्राप्त हुई। इसी प्रकार कमराज में भी विद्रोह हुआ तो जमाल बेग ने तिला गांव में विद्रोहियों को हरा दिया। तारीख 12 को सेफ खां कोका के पुत्र अमानुल्ला की बुरहानपुर में मृत्यु हो गई।

जलाला तारीकी की मृत्यु

हजारा लोगों ने लौहानी लोगों पर हमला कर दिया। लौहानी 7 दिन तक लड़ते रहे, फिर प्यास से व्याकुल होकर उन्होंने तारीकी लोगों से सहायता मांगी। 9 तारीख को जलाला तारीकी गजनी आया। उसने बहुत-सा सामान एकत्र किया और 16 तारीख को उसे ले जाना चाहा तो सादमान हजारा ने उसको रोका और हजारा लोग जीत गये तथा तारीकी भाग गये। फिर मुराद बेग और कुछ अन्य लोगों ने जलाला को समाप्त कर दिया।

मिहर मास के आरम्भ में सादत खां दरबार में आया। बादशाह के आदेश से मैंने

बहादुर खां को पत्र लिखकर सलाह दी थी। उसने इस सैयद को 10 हजार हाथियों के साथ भेजा। उसने पूर्ववत् बातें कीं, जो सच्ची नहीं मालूम हुईं। इसलिये हाथी और भेंटें वापस करके कहलाया कि दुर्गपति स्वयं उपस्थित होए। सादत खां बादशाह के पास ही रह गया तो उसको एक हजार का मनसब दिया गया। बादशाह का उत्तर लेकर शेर पीर मुहम्मद हुसेन वापस गया।

5 तारीख को अकबर की सौर तुला हुई और उसको 12 पदार्थों से तौला गया। 23 तारीख को शाही सेना जूनेर पहुंची। यहां निजामुल मुल्क के पूर्वज रहा करते थे। इसके दुर्ग का नाम बीर है। वहां मिर्जा खान को भेजा गया था और उसने यह दुर्ग जीता था। 8 आजार को बादशाह बीका जीजी के कब्र पर गया। खान आजम मिर्जा कोका उसके शव को दिल्ली ले जा रहे थे, इसलिये बादशाह आया था, फिर वह लालबाग चला गया।

***

प्रकरण 146

मालीगढ़ की विजय

असीरगढ़ उत्तम दुर्ग है। इसके पश्चिम, उत्तर में मालीगढ़ है। असीरगढ़ में जाने के लिये यहीं से मार्ग है। दक्षिण में कौंडी नाम की ऊंची पहाड़ी है। दक्षिण-पश्चिम में भी सापन नामक ऊंची पहाड़ी है। इन सब पहाड़ियों पर शत्रु ने तोपें जमा रखी थीं। यह दुर्ग बड़ा दुर्गम था, फिर दुर्गसेना का एक आदमी कराबेग से मिल गया, तब करा बेग में अबुल फजल को मार्ग बतलाया।

28 नवम्बर, 1600 को चुने हुए आदमी मापन की पहाड़ी पर इकट्ठे किये गये। मध्यरात्रि के बाद कुछ लोगों ने गुप्त मार्ग से जाकर दरवाजा खोल दिया तो बहुत-से वीर दुर्ग में घुस गये। दुर्गरक्षकों ने बड़ा सामना किया। थोड़ी देर बाद शत्रु हट कर असीरगढ़ में चले गये, तो विजय प्राप्त हो गई और अबुल फजल का नाम हुआ। फिर कांडी पर कब्जा कर लिया गया। बादशाह के साथ घेरे की तोपें नहीं थीं, जो परनाला, गावाल और अहमदाबाद से मंगाई गई, परन्तु वे कुछ विशेष काम नहीं आईं।

29 तारीख को खानखाना बहादुर को लेकर आया जिसको निजामुलमुल्क बनाया गया था।

उसी दिन मालीगढ़ पर विजय प्राप्त हुई। बहादुर खां ने लेखक के पास राजदूत भेजा,

जिसने कहा कि बहादुर खां आत्मसमर्पण करना और बादशाह की सेवा में आना चाहता है। मैंने राजदूत को दरबार में भेज दिया। बहादुर खां के सन्देश का सारांश यह था कि यदि दुर्ग और देश मुझे वापस दे दिये जायें और कैदी छोड़ दिये जायें, तो मैं अधीन हो जाऊंगा। बादशाह ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। अगले दिन हब्शी फिर आया और उसने कहा, ''अब बहादुरशाह चाहता है कि खान आजम, मिर्जा कोका उसको दरबार में ले आये। यह प्रार्थना मान ली गई। मिर्जा कोका माली पहुंचा और बहादुर खां असीरगढ़ से उतरा और 30 तारीख को बादशाह से मिला। उसके साथ उसके दो बच्चे भी थे। बादशाह ने आदेश दिया कि सबको निगरानी में रखा जाये। 4 बहमन को अकबर की चान्द्र तुला हुई ओर उसको 8 पदार्थों से तौला गया।''

***

प्रकरण 147

असीरगढ़ की विजय

जब असीरगढ़ को घेर लिया गया तो, उसके अन्दर बीमारी फैल गई और प्रतिदिन बहुत-सी मृत्यु होने लगी। मालीगढ़ पर कब्जा हो चुका था इसलिये असीरगढ़ से निकलने का मार्ग बन्द हो गया था। अन्त में यह समझौता हुआ कि ''पहले बहादुर दरबार में आये फिर बादशाह दुर्ग और देश उसको वापस दे दे।'' बहादुरशाह ने कहा कि ''यदि ऐसा नहीं किया जायेगा तो दुर्ग सेना मेरे प्रस्ताव को नहीं मानेगी।'' तब अबुल फजल को आदेश हुआ कि वह दुर्ग पर आक्रमण करे और दुर्गसेना को अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न भी करे। दुर्गनायकों ने कहा कि बहादुर का लिखा हुआ पत्र अमुक व्यक्ति के नाम आना चाहिये, तो दुर्ग सुपुर्द कर दिया जायेगा और उन्हें कलंक नहीं लगेगा। बादशाह एक फरमान जारी करे जिसके अनुसार उनके प्राण, सम्पत्ति और सम्मान की रक्षा की जाये। बहादुर ने ऐसा पत्र लिखकर अपनी मुहर लगा दी। बादशाह का फरमान भी इसी के साथ भेज दिया गया। 4 दिन में दुर्ग से 34000 आदमी अपने सामान और कुटुम्बों के साथ निकल गये। फिर दुर्गसेना के नायक आये, तो उनके साथ कृपापूर्ण व्यवहार किया गया। मैंने अपने पुत्र अब्दुर्रहमान को दुर्ग में भेजा तो चाबियां उसको समर्पित कर दी गईं। 53 व्यक्ति जिनमें बहादुर के पुत्र, भाई और विद्वान् थे, नीचे आ गये। बादशाह ने सब को खिल्लत और घोड़े दिये और अपने एक सेवक को आदेश दिया कि उनका आतिथ्य किया जाये।

दुर्ग के अन्दर की हवा गन्दी हो गई थी, जिससे 25000 व्यक्ति मर गये।

इस समय बीजापुर, गोलकुण्डा और बीदर को राजदूत भेजे गये। बीजापुर के सुल्तान आदिल खां ने एक बहुमूल्य लाल और एक प्रार्थना-पत्र भेजा था, इसी प्रकार कुतुबुलमुल्क और मलिक बरीद ने भी विनयपूर्ण पत्र भेजे थे। वे सब चाहते थे कि उनके यहां राजदूत भेजे जायें, इसलिये शरीफ-सर-मदी को आदिल खां के यहां, मसूद बेग को कुतबुलमुल्क के यहां और मुमीन को मलिक बरीद के यहां भेजा गया।

मिर्जा जानी बेग की मृत्यु

जानी बेग को फारसी गद्य और पद्य तथा संगीत का अच्छा ज्ञान था। वह दरबार में आया, तब से स्वामिभक्त था। उसके स्वभाव में विवेक और शान्ति थी, परन्तु बचपन से ही उसको मद्यपान का व्यसन था तो भी उसका अपनी भाषा और काम पर नियंत्रण था। उसको मद्यपान से रोकने वाला कोई नहीं था, इसलिये उसको पक्षाघात और उन्माद हो गया। 23 जनवरी, 1601 को उसकी मृत्यु हो गई। बादशाह ने उसके पुत्र मिर्जा गाजी को उसके पिता की जागीर दे दी और खिल्लत दी।

इन्हीं दिनों हकीम मिश्री की मृत्यु हुई। उसको सांसारिक और आध्यात्मिक विषयों का बड़ा ज्ञान था। चिकित्सा-शास्त्र में वह इतना पारंगत था कि यदि इस विषय के समस्त ग्रन्थ नष्ट हो जाते तो वह उनको स्मृति के बल पर दुबारा लिख सकता था। वह सूफी था। उसकी आयु 80 वर्ष की हो चुकी थी, परन्तु वह युवक की भांति स्वस्थ था। उसने ईश्वर का स्मरण करते-करते अबुल फजल के सामने आंखें बन्द की थीं।

23 तारीख की रात को अबुल फजल को नासिक के लिये नियुक्त किया गया। प्रबन्धहीनता के कारण इस समय बार-बार गड़बड़ होती थी। अहमदनगर जीत लिया गया था, परन्तु स्थिति अच्छी नहीं थी। मंहगाई के कारण सैनिक अशान्त थे। दक्षिण के लोग उत्पात कर रहे थे। उन्होंने मुर्तजा, निजामुलमुल्क के चाचा शाह अली के पुत्र अली को निजामुलमुल्क बना दिया था। लोग आम तौर पर शाह अली के पुत्र की और राजू के राजद्रोह की बातें करते थे, इसीलिये खानखाना को अहमदनगर और लेखक को नासिक भेजा गया था। राय रायसिंह, राय दुर्गा, राय भोज आदि कई लोग उसके साथ किये गये थे।

दूसरे दिन बादशाह असीरगढ़ में आया। वहां 4 दिन तक उसने दुर्ग को देखा और फिर बुरहानपुर चला गया।

बंगाल में उत्पात

अफगानों ने कतलू के पुत्र को अपना साधन बनाकर विद्रोह खड़ा कर दिया था। राजा मानसिंह ने उन पर कई बार सेना भेजी, जो हार गई और उसका बख्शी कैद कर लिया गया। फिर शाहजादा सलीम से छुट्टी लेकर राजा मानसिंह ने रोहतास जाकर युद्ध की तैयारी की। शेरपुर अताई के पास लड़ाई हुई तो शत्रु हार गया।

मैं शाह अली के पुत्र के विद्रोह को दबाने के लिये बादशाह के आदेश से नासिक जाना चाहता था, परन्तु मुझे रोक दिया गया और मैं आदेशानुसार अहमदनगर की ओर रवाना हुआ। 7 तारीख को मिर्जा शाहरूख का पुत्र हसन भाग गया। वह अहमदाबाद में अपने पिता के साथ था, परन्तु असन्तुष्ट रहा करता था, इसलिये एक कश्मीरी से मिलकर वह चल दिया।

शाहज़ादा सुल्तान दनियाल का दरबार में आना

अहमदनगर की विजय हुई तब ही से दनियाल दरबार में आना चाहता था। अब शाही आदेशानुसार उसने अहमदनगर मिर्जा शाहरूख के सुपुर्द करके दरबार के लिये प्रयाण किया और तारीख 10 को वह बादशाह से मिला। असीरगढ़ उसको भेंट कर दिया गया और खानदेश भी उसे दे दिया।

दौलत खां लाडू की मृत्यु

इसका देहान्त उदरशूल से हुआ था, वह बड़ा योग्य और साहसी था। उसने मिर्जा कोका खानखाना, शाहज़ादा दनियाल की सेवा की थी। वह 2000 का मनसबदार था। प्रस्थान करते समय दनियाल उसको अहमदनगर में मिर्जा शाहरूख की सहायता करने के लिये छोड़ आया था। वहीं उसकी मृत्यु हो गई।

22 तारीख को बहादुर खां को ग्वालियर में कैद कर दिया गया। उसके कुटुम्ब को भी उसके साथ भेज दिया गया। तीन सरदार और कुछ सैनिक उसके साथ थे।

आदिल खां बीजापुरी अपनी पुत्री को शाहजादा सुल्तान दनियाल के अन्तःपुर में भेजना चाहता था। इसलिये दुल्हन के लिये भेंटें लेकर मीर जमालुद्दीन हुसेन इन्जू को बीजापुर भेजा गया।

***

प्रकरण 148

राज्यारोहण से 46वें वर्ष का आरम्भ

15 रमजान, 1009 हिज्री, 10 मार्च, 1601 को इस वर्ष का आरम्भ हुआ। 8 फखरदीन को राय पतरदास 3000 का मनसबदार बनाया गया। तारीख 10 को तातारबेग सुल्तान खुर्रम का संरक्षक नियुक्त हुआ। इसी दिन बंगाल से विजय की खबर आई, 11 तारीख को शेर

ख्वाजा और मिर्जा अली बेग अकबर शाही को नक्कारा और निशान से सम्मानित किया गया। इन्होंने दक्षिण में अच्छी सेवा की थी। 13 तारीख को मिर्जा यूसुफ खान दरबार में आया और दु:ख से मुक्त हुआ।

14 तारीख को जगन्नाथ को 5000 का मनसब प्राप्त हुआ। 16 तारीख को बहादुर खां गिलानी को हराया गया। उसको थोड़ी-सी सेना देकर तेलंगाने में छोड़ा गया था। अम्बर जीऊ ने दक्षिणियों और हब्शियों की सेना द्वारा उस पर हमला किया। उसने कुछ लड़ाई लड़ी और फिर वह डट गया। तब विद्रोहियों का साहस और भी बढ़ गया। नये साल के उत्सव पर सुल्तान दनियाल ने बहुमूल्य रत्न जो उसको अहमदनगर में प्राप्त हुए थे, बादशाह को भेंट किये। उसी दिन मुजफ्फर हुसेन मिर्जा और अफरा सियाब को कारागार से मुक्त किया गया और इसी दिन ईरान के राजदूतों को बिदा दी गई।

अली की दुर्दशा

अली बारीद के एक अमीर वली खां का पुत्र था और बीजापुर रहा करता था, फिर वह बीदर नगर में आकर गुप्त रूप से रहने लगा। जब अकबर ने मुमीन खां को सलाह देने के लिये बीदर भेजा तो अली बाहर आया और उसने उपद्रव किया, जिसमें असफल होकर वह अपने परिवार के साथ गोलकुण्डा की ओर चला गया। मार्ग में लुटेरों ने उसकी माता और कुछ रिश्तेदारों को मार दिया। इस प्रकार उसकी दुर्दशा हुई।

बंगाल में राजा मानसिंह ने विजय प्राप्त करके शत्रु का पीछा किया और वह बुसना और जैसोर तक पहुंच गया। अफगान लोग इस स्थान पर जा जमे जिसके सब ओर दलदल था। तब राजा ने उनकी चौकसी के लिये कुछ आदमी नियुक्त कर दिये। 22 तारीख को उनके तीन बड़े-बड़े सरदार और कुछ अन्य लोग अधीन हो गये। राजा ने उनके प्रति दया की और उत्पात शान्त हो गया।

लेखक का ख्याल था कि शाह अली के पुत्र का दमन किया जाये। इसलिये शेख अब्दुर्रहमान को तेलंगाना भेजा गया। जब तेलंगाना हाथ से निकल गया था तो मैं मिर्जा रुस्तम को वहां भेजना चाहता था परन्तु कुछ लोगों के बहकाने से वह वहां नहीं गया। इसलिये मैंने विवश होकर अपने पुत्र को वहां भेजा और उसको 1200 सवार दिये।

***

प्रकरण 149

बादशाह का राजधानी आगरा को वापस लौटना

शाही सेनानायक चाहते थे कि असीरगढ़ को जीते बिना ही बादशाह वापस लौट जाये, परन्तु उसने सबको चुप कर दिया। असीरगढ़ की विजय के बाद वे लोग और भी प्रपंच करने लगे, परन्तु अकबर चाहता था कि पहले तो अहमदनगर के विद्रोह को शान्त किया जाये ओर फिर बीजापुर, गोलकुण्डा और बीदर से अधीनता स्वीकार कराई जाये, परन्तु छोटे और बड़े सब ही वापस जाने के लिये आतुर थे, इसलिये 21 अप्रैल, 1601 को उसने वापस प्रस्थान किया। ज्यों ही इस वापसी की खबर फैली तो दक्षिण के विद्रोहियों ने फिर सिर उठा लिया। इसी समय मिर्जा यूसुफ खां का पुत्र जाफर उनके हाथ पड़ गया तो उनका साहस और बढ़ गया। शाहजादे ने अपनी स्त्रियों को अहमदनगर से बुला लिया जिससे भी गड़बड़ बढ़ी। मिर्जा यूसुफ खां के सैनिकों को साथ लेकर मिर्जा रुस्तम चला गया तो बादशाह उससे नाराज हुआ। तारीख 15 को मिर्जा शाहरूख दरबार में आया। शाहजादा उसको अहमदनगर की देखरेख के लिये छोड़ आया था। जब खानखाना को वहां भेज दिया गया तो बादशाह के आदेश से शाहरूख दरबार में आ गया। 28 तारीख को शाहजादा सुल्तान दनियाल को बुरहानपुर जाने की इजाजत दे दी गई। कारण यह था कि दक्षिण की सेना कुछ तितर-बितर होने लगी थी। शाहजादे के साथ मिर्जा शाहरूख, मिर्जा रुस्तम और मिर्जा यूसुफ खां को भी भेजा गया और उसे 3000 बदख्शी ऐमक दिये गये। दक्षिण की अशान्ति कुछ कम हुई।

त्र्यम्बक दुर्ग की विजय

यह अहमदनगर का एक अच्छा दुर्ग है और तीर्थस्थान माना जाता है। यह सादत खां के हाथ में था परन्तु उसने बादशाह की अधीनता स्वीकार कर ली थी इसलिये अब वहां प्रतिनिधि भेजे गये तो 15 हाथी पेशकश में मिले। दुर्गनायक, दुर्गसेना से खिन्न होकर आ गये, इसलिये राजू ने एक बड़ी सेना लेकर उस पर आक्रमण किया, परन्तु वह बार-बार हारा परन्तु सब ही लोग अपनी-अपनी जागीरों पर चले गये थे। इसलिये फिर उसने दुर्ग पर कब्जा कर लिया।

शेख अब्दुर्रहमान की विजय

जब अब्दुर्रहमान को तेलंगाना के दमन के लिये रवाना किया गया तो शेर ख्वाजा भी उससे जा मिला। दोनों ने साहस से काम किया। तेलंगाना में बड़ा विद्रोह हो रहा था।

फरहाद खां को विद्रोह करने के लिये शाह अली के पुत्र ने वहां भेजा था। शाही सेना ने व्यूह बनाया जिसके मध्य में शेख अब्दुर्रहमान आदि रहे और अग्रभाग में शेर ख्वाजा आदि खड़े हुए। सेना ने नांदेर के निकट गोदावरी नदी को पार करके शत्रु का सामना किया। 16 मई, 1601 को लड़ाई हुई, तो शाही सेना को विजय प्राप्त हुई। शत्रु भाग गया, उसके 400 आदमी मारे गये और बहुत-से हाथी लूट लिये गये। शाही अधिकारियों में कोई नहीं मारा गया। केवल छः अधिकारी कुछ घायल हुए। शत्रु की सेना में 5000 और शाही सेना में केवल 3000 आदमी थे, तो भी विजय प्राप्त हो गई।

बदख्शां में एक व्यक्ति अपने को मिर्जा सुलेमान का पुत्र हुमायूं बतलाने लगा और उसने पर्वतीय इलाके पर अधिकार कर लिया तो अकबर की बहन के पुत्र बदाउज्जमा ने कुछ आदमियों के साथ हिसार से निकल कर 13 तारीख को उस व्यक्ति से लड़ाई लड़ी, जिससे मिर्जा बदाउज्जमा की विजय हुई। तब अकबर के नाम का खुत्बा पढ़ा गया और उसकी के नाम के सिक्के जारी किये गये। बदाउज्जमा ने अकबर को लिखा कि मैंने यह तुच्छ सेवा की है, इसलिये क्षमा चाहता हूं। बादशाह दूत से कृपापूर्वक मिला और उसने बदाउज्जमा के लिये भेंटें भेजीं।

जब बादशाह बुरहानपुर में था तो शाह अली के पुत्र ने योग्य आदमी भेज कर अधीनता प्रकट की। अकबर ने इसके उत्तर में एक फरमान हरवंश के द्वारा भेजा, परन्तु हरवंश ने उत्तर नहीं पहुंचाया। जब मैं गोदावरी पर पहुंचा और उसको बुलाया तो उसने अनेक झूठी बातें कहीं। इसी अर्से में खबर फैल गई कि तेलंगाना में विद्रोह हो गया है। मिर्जा यूसुफ खां का पुत्र अली मरदान बहादुर पकड़ लिया गया है। बादशाह उत्तर की ओर प्रयाण कर रहा है। शाही सेना से कितने ही लोग भाग गये हैं। तब शाह अली के पुत्र ने पुनः विद्रोह कर दिया परन्तु अब खबर आई कि तेलंगाना के विद्रोहियों का दमन हो गया है। तब शाह अली के पुत्र का दिमाग ठंडा हो गया। उसने बादशाह के डेरे में अपना दूत भेजा ओर मिर्जा यूसुफ खां का पुत्र मुक्त कर दिया। तब शाह अली के पुत्र को उत्तर दिया गया कि अगर तुम अली बरदान बहादुर को ले आओगे और शपथपूर्वक संधि कर लोगे तो सरकार उदेशा धारवार और बीर का कुछ इलाका तुम्हारे लिये छोड़ दिया जायेगा।

16 तारीख को बादशाह ने चम्बल नदी पार की। उस समय उसमें बाढ़ आ रही थी और नावों की कमी थी। सेना को उतरने में बड़ा कष्ट हुआ। बादशाह की वापसी में ऐसी कठिनाई कभी नहीं हई थी। तारीख 3 अमरदाद को बादशाह रणथम्भौर के दुर्ग पर चढ़ा। जगन्नाथ ने वहां उस पर न्योछावर की और पेशकश दी। इसी दिन आगरा से शाह कुली खां महरम और मेंहतर खां आये। 4 तारीख को बादशाह ने बनास नदी को पार किया और 5 तारीख को जगन्नाथ को बिदा दी गई।

राजू का उत्पात शान्त

जब दौलत खां वापस आ गया तो राजू ने नासिक और दूसरे स्थानों पर कब्जा कर लिया। ख्वाज़गी फतहउल्ला को उधर की ओर भेजा गया परन्तु उससे कुछ नहीं बन सका, बल्कि बहुत-से सैनिक भाग कर राजू से जा मिले। तब उसका साहस और बढ़ गया और उसने जालनापुर तक का इलाका दबा लिया। 16 तारीख को मैं (अबुल फजल) दौलताबाद पहुंचा तो मुझे मालूम हुआ कि राजू समीप ही है। मैं उसको दबाने के लिये चला तो वह पहाड़ियों में भाग गया। जब हमारी सेना उसके निकट पहुंची तो, वह नासिक की ओर भाग गया। मैं उसका दमन करना चाहता था, परन्तु मेरे साथियों ने मुझे रोक लिया।

23 तारीख को बादशाह फतेहपुर पहुंचा तो उसकी माता मरियम मकानी को उससे मिलकर बड़ा हर्ष हुआ।

वांकूराव बीजापुर से भाग कर अहमदनगर आ गया था, परन्तु फिर वह अहमदनगर से भी भाग गया था और अपने ही देश में जाकर विद्रोह करने लगा। वहां उसके शत्रु उसके प्राण लेने वाले थे कि वह भाग कर फिर अहमदनगर आ गया और खानखाना से रक्षा की प्रार्थना की। खानखाना उसको पकड़ना चाहता था। वांकूराव को कुछ पता लग गया तो उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र बाबाजी ओर अपने भाई धार राव को खानखाना के पास भेजा और उनसे कहा कि खानखाना के रुख को जानने का प्रयास करें। जब वे आये तो उनको बेड़ियां डाल दी गईं। फिर अहमदनगर का फौजदार वांकू को पकड़ने के लिये चला तो वांकू तो हाथ नहीं आया परन्तु उसके 29 हाथी और बहुत-सी सम्पत्ति छीन ली गई, फिर वांकू शाह अली के पुत्र के पास चला गया तो उसको कारागार में रख दिया गया।

***

प्रकरण 150

बादशाह की आगरा को वापसी

बादशाह ने 48 मंजिल में साढ़े 228 कोस पार किये थे। राजभक्त, सेवक स्थान-स्थान पर उससे मिले थे। बभाना में कुलीच खां और अन्य सेवक उससे मिले। 31 तारीख को वह आगरा पहुंचा।

जब लेखक को कतलू के तालाब पर कुछ विलम्ब हो गया तो राजू नासिक को जाने ही वाला था, परन्तु कुछ लोगों के कहने से उसने सतारा और कुछ अन्य स्थान लूट लिये। प्रातःकाल में उस पर आक्रमण करने के लिये चला। सायंकाल राजू अपनी सेनासहित दिखाई

दिया तो मैं लड़ने के लिये तैयार हो गया। राजू के साथ 5000 सवार थे और मेरे पास केवल 3000 थे, परन्तु विजय हमारी हुई। अब रात हो गई थी, इसलिये उसका पीछा नहीं किया गया। 8 तारीख को राजू पुनः लड़ने के लिये आ गया। लड़ाई में राजू घोड़े से गिर गया परन्तु वह बचकर भाग गया। हमने उसका पीछा किया परन्तु रात होने वाली थी इसलिये हम वापस आ गये। तब राजू ने फिर सब ओर से आक्रमण किया परन्तु हमारी विजय हो गई। फिर कुछ समय तक राजू ने मुख नहीं दिखाया परन्तु 15 तारीख को फिर वह सेना लेकर आ गया और फिर थोड़ी-सी लड़ाई के बाद भाग गया।

तेलंगाना में उत्पात

तेलंगाना में विजय प्राप्त करके शेख अब्दुर्रहमान वापस आ गया था और उस देश की रक्षा के निमित्त वहां तीन बड़े-बड़े अफ़सरों को छोड़ आया था। इन लोगों की असावधानता के कारण अम्बर जीओ ने बरीद के देश पर आक्रमण कर दिया और मंजाना नदी के तट पर युद्ध हुआ जिसमें शाही सेना हार गई। जिन तीन अफसरों को अब्दुर्रहमान रक्षार्थ छोड़ आया था, वे पकड़ लिये गये। एक बार फिर तेलंगाना का उपजाऊ देश हाथ से निकल गया।

राजू की दुर्दशा

14 तारीख को राजू फिर लड़ा और हार कर भाग गया। मुझे मालूम हुआ कि राजू बढ़ता हुआ आ रहा है तो मैं कुछ आदमियों को साथ लेकर गया। मेरे आदमी विजयी होकर वापस आ गये। राजू लूटमार करने के लिये इलाके में चला गया। मार्ग में उसने गाजी खां के पुत्र महसन को पकड़ कर बन्दी बना लिया। राजू दौलताबाद के दुर्ग के नीचे पड़ा रहा। बहुत-से आदमी उसको छोड़ भागे। यदि प्रशासक लोग सतर्क होते तो उसको निर्मूल कर देते। राजू पकड़ा ही जाने वाला था, परन्तु शाही अफ़सरों ने ढील कर दी।

6 आबान को मरियम मकानी के महल पर अकबर की सौर तुला हुई। उसी दिन शेख हुसने को ख्वाजा मुईनुद्दीन की दरगाह की व्यवस्था करने के लिये भेजा गया। ऐसा कहा जाता था कि शेख हुसेन मुईनुद्दीन की पुत्री के वश में था। उसके अनुचित कर्मों के कारण उसको कारावास में रख दिया गया था, परन्तु अब उस पर कृपा की गई।

11 तारीख को रामसिंह दरबार में आया तो बादशाह ने उस पर कृपा की। उसको और अबुल फजल को दखिन की सेना में नियुक्त किया गया था। अब उसको खबर मिली कि उसका पुत्र दलपत स्वदेश जाकर अत्याचार कर रहा है तो उसने अपने देश जाकर दलपत को रोकने के लिये छुट्टी मांगी। जब रायसिंह बीकानेर पहुंचा तो दलपत ने बादशाह से प्रार्थना की कि ''मेरे पिता को दरबार में बुला लिया जाये और मुझे क्षमा किया जाये, तब मैं दरबार में आऊंगा।'' उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली गई और रायसिंह को बुला लिया गया। दलपत ने अपने वचनों का पालन किया।

16 तारीख को कुलीच खां को पंजाब जाने की इजाजत दे दी गई। उस समय काबुल शाह कुली खां महरम के सुपुर्द किया जा चुका था। कुलीच खां ने प्रार्थना की कि पंजाब और काबुल दोनों ही मेरे सुपुर्द कर दिये जायें, तब ऐसा ही आदेश दे दिया गया।

ख्वाजगी फतह उल्ला बिना कुछ किये नासिक से वापस आ गया तो शाहजादे ने उसको वहीं लौटा दिया और साजिद खां आदि पांच-सात सेनानायकों को उसके साथ भेजा। जब फतह उल्ला बाबिल पहुंचा तो राजू लड़ने के लिये आया। शाही अधिकारी लड़कर सूनगर दुर्ग में वापस आ गये तो राजू ने उसे घेर लिया। फिर उसने लूटमार शुरू की और पाथरी से साजिद खां के परिवार को पकड़ लिया, तत्पश्चात् उसने पनुः सूनगर घेर लिया। इसी बीच में खबर फैली कि दो बड़े-बड़े सेनानायक आ रहे हैं और अबुल फजल भी सहायतार्थ कूच कर रहा है। इसलिये राजू दुर्ग को छोड़कर दौलताबाद की ओर चला गया और उसने गालना (जालना) दुर्ग छीन लिया। उस समय गालना याकूबेग शिगाली और सैयद बेग बदख्शी के हाथ में था। इन्होंने दो हजार मूल की रिश्वत लेकर यह दुर्ग राजू को समर्पित किया था।

29 तारीख को नाव द्वारा बादशाह जैन खां की बहन के मकान पर गया और सहानुभूति प्रकट करके उसको सान्त्वना दी। तारीख 12 आजर को रामदास की पुत्री का श्याम सिंह से विवाह हुआ। बादशाह रामदास के पास गया और उसको 5 लाख दाम विवाह के लिये दिये।

अम्बा चौका दुर्ग की विजय

जब शाही सेना ने नदी पार की तो हब्शी के साथ उनकी जोरदार लड़ाई हुई। लेखक भी अम्बा चौका दुर्ग के पास जा बैठा। फिर लड़ाई की तैयारी हुई। शत्रु की सेना में 4000 से अधिक आदमी थे, परन्तु वे सब तितर-बितर हो गये, दुर्ग पर कब्जा कर लिया गया और नगर को खूब लूटा। इसी समय शाह अली के पुत्र ने अधीनता प्रकट की। फिर चारों और गड़बड़ होने लगी तो शाहजादे ने मिर्जा रुस्तम और मिर्जा यूसुफ को सहायतार्थ भेजा। तारीख 9 दाई को अकबर की चान्द्र तुला हुई। मरियम मकानी के महल पर उसको 8 पदार्थों से तौला गया।

इस समय शाह अली का पुत्र युक्तियां करके शक्ति जुटाने लगा। जब शाही सेना मंजरा नदी के तट पर पहुंची तो वह अनुनय-विनय करने लगा। इसी बीच में मिर्जा यूसुफ खां की मृत्यु हो गई और राजू अधिक गड़बड़ करने लगा, इसलिये शाही सेनानायकों को सन्धि करनी पड़ी। शर्त यह थी कि उसके 3 सेनानायकों—बाजबहादुर, अली मर्दग बहादुर और हजारा बेग को छोड़ दिया जाये और कुछ इलाका उसी के पास रहने दिया जाये। 11 तारीख को सन्धि हो गई और शाह अली खां के पुत्र के नाम सुरक्षा का फरमान जारी कर दिया गया।

अबुल फजल को राजू का दमन करने के लिये वापस भेजा गया। उसकी सहायतार्थ राजा सूरज सिंह, मिर्जा रुस्तम आदि सेनानायक भेजे गये। इनके अतिरिक्त और भी मनसबदार थे। तारीख 2 महबहमन को अबुल फजल बुरहानपुर पहुंच कर शाहजादे से मिला।

तारीख 8 को बादशाह को ज्ञात हुआ कि लोभी अधिकारी लोगों पर अनुचित महसूल लगते हैं। इसलिये उसने योग्य और ईमानदार अधिकारी इस काम के लिये नियुक्त किये। आगरा आसिफ खां को, दक्षिण का मार्ग और मालवा रामदास को, गुजरात का मार्ग कल्याण दास को, लाहौर का मार्ग शेख फरीद बख्शी के सुपुर्द किया गया।

15 फरवरी, 1602 को मुझ अबुल फजल को नासिक भेजा गया। जब मैं शाहजादा दनियाल से मिला तो उसने मेरी बात नहीं मानी और चाहा कि मैं राजू का दमन करने के लिये रवाना हो जाऊं। मैंने उत्तर दिया कि मैं तो आज्ञा का पालन अवश्य करूंगा, परन्तु आप प्रशासन पर ध्यान नहीं देते हैं और आपने सारा काम लोभी और अदूरदर्शी लोगों के हाथ में सौंप रखा है। शाहजादा ने मेरी बात कुछ समझी और काम करने लगा। एक घोड़ा और खिल्लत देकर विदा किया और एक मंजिल तक मुझे पहुंचाने आया और यहां एक हाथी और एक खंजर मुझे भेंट किये। 25 तारीख को बहादुर खां दरबार में आया। उसने असीरगढ़ को समर्पित करने में प्रपंच किया था। इसलिये उसको ग्वालियर में कैद कर दिया गया था। अब बादशाह ने कृपा करके उसको बुला लिया।

मोट

अबुल फजल ने अकबर के शासन में छियालीसवें वर्ष तक का वृत्तान्त लिखा है। सैंतालीसवें वर्ष में 8 रबि उल अव्वल, सन् 1011 हिज्री (12 अगस्त, 1602) को इस लेखक को मार डाला गया। सैंतालीसवें वर्ष का आरम्भ 26 रमजान, 1010 हिज्री (11 मार्च, 1602 ई०) को हुआ था, इसलिये अबुल फजल का वध सैंतालीसवें वर्ष के आरम्भ के 5 मास बाद हुआ था। अकबरनामा अकबर के शासन के अन्त तक चलता है। अबुल फजल के बाद दूसरा लेखक इसको लिखता रहा, जिसका नाम मुहिब्ब अली खां, इनायत उल्ला या मोहम्मद सालीह दिया हुआ है। एक प्रति में इनायत उल्ला मुहिब्ब शालीह लिखा हुआ है।

अबुल फजल ने अपनी मृत्यु से पहले न जाने क्यों अकबरनामे का 'खातिमा' (परिसमाप्ति) लिखा था। वह लिखता है कि मैंने इन घटनाओं का वर्णन यथामति और यथाभक्ति लिखा है। ईश्वर करे इस पुस्तक से पाठकों का सदैव मनोविनोद होता रहे। मुझे आशा है कि इस वृत्तान्त का क्रम भंग नहीं होगा और अद्भुत घटनाओं का वर्णन सच्ची कलम से लिखा जायेगा।

***

प्रकरण 151

राज्यारोहण से 47वें वर्ष का आरम्भ

बृहस्पतिवार, 26 रमजान, 1010 हिज्री (11 मार्च, 1602) को इस वर्ष का आरम्भ हुआ। इस उत्सव पर शेख अबुल फजल को एक खास घोड़ा बख्शा गया और यह उसके भाई अबुल खैर के द्वारा उसके पास भेजा गया।

राजा बसु का विद्रोह

इस समय खबर आई कि मऊ के शासक राजा बसु ने पठानकोट की सीमा पर आक्रमण करके वहां के कृषकों को बहुत सताया है और कुछ को पकड़ कर अपने राज्य में ले गया है। उसके मजफ्फरबल और बहावलपुर के परगनों के गांवों को भी लूट लिया था। अब ताज खां और हुसेन बेग खेश उमरी जो उधर का जागीरदार था तैयारी करके उधर की ओर रवाना हुए। पंजाब के सूबेदार कुलीच खां को भी आदेश दिया गया कि वह अपने पुत्र हसन कुलीच खां को सेना देकर इस विद्रोह का दमन करने के लिये भेजे। ताज खां और हुसेन बेग शेख उमरी आदि को हुक्म दिया कि हसन कुलीज के नेतृत्व में काम करे। ख्वाजा सुलेमान को बख्शी नियुक्त किया गया।

तूरान की घटनायें

जब अब्दुल्ला खां की मृत्यु हो गई और उसके पुत्र अब्दुल मोमीन के भी दिन समाप्त हो गये, तो ईरान के शाह अब्बास ने खुरासान पर आक्रमण कर दिया। खुरासान के हाशिम खां, बाकी खां आदि ने उससे लड़ाई लड़ी परन्तु विजय शाह अब्बास की हुई। हाशिम खां लड़ाई में मारा गया। बाकी खां तूरान का शासक बन गया, फिर उसने समरकन्द और बुखारा पर कब्जा कर लिया। बदख्शां अपने भाई बली मुहम्मद खां को दे दिया। दूसरे वर्ष शाह अब्बास ने आक्रमण किया तो बाकी खां अपने चारों ओर खाई बनाकर जम गया, जिससे ईरान के सेनानायक अवसर की प्रतीक्षा करते-करते थक गए। तब शाह अब्बास खुरासान लौट गया।

अल्लामी शेख अबुल फजल को पांच हजार का मनसब प्राप्त हुआ। शाहजादा सुल्तान दनियाल ने अकबर को लिखा कि शाहअली का पुत्र अहमदनगर के जिले में उत्पात कर रहा है और दो-तीन मास पूर्व अंबरजेओ बिदर के इलाके में पहुंच गया था। बीदर के शासक मलिक बरीद ने अंबर का सामने करने के लिए एक सेना भेजी थी, जिसमें उसका सेनानायक वीरतापूर्वक लड़ता हुआ मारा गया और उसके 14 हाथी अंबर ने लूट लिए, फिर अंबर तेलंगाना पहुंचा जहां उसने कई जायदादें लूट लीं और अपने आदमियों के बरार के

अन्य परगनों में भेजा तब परेशान होकर मलिकं बरीद ने अंबर से संधि कर ली। अब अंबर का साहस इतना बढ़ गया है कि वह शाह अली के पुत्र से मिल कर राजद्रोह करेगा।

यह खबर मिलने पर निश्चय किया गया कि अलायी शेख अबुल फजल को उस ओर भेजा जाए। वह राजू का दमन करे, बरार, पाथरी और तेलंगाना को वश में करने तथा शाह अली के पुत्र और अंबर को निर्मूल करने का काम खानखाना के सुपुर्द किया गया।

शाहजादा सलीम का विद्रोह

नये वर्ष के आरम्भ में इस शाहजादा ने अकबर को लिखा कि मैं आपसे दूर हूं इसलिए मेरा चित्त अशान्त रहता है, अत: मैं आपकी सेवा में उपस्थित होना चाहता हूं। अकबर ने इस पत्र को सच्चा नहीं माना और शाहजादे की प्रार्थना स्वीकार नहीं की। इसी बीच में खबर आई कि वह तीस हजार सवारों के साथ दरबार में आ रहा है। तब बादशाह ने क्रुद्ध होकर कठोर आदेश दिया कि तुम वापस इलाहाबाद चले जाओ। इसी से शान्ति रहेगी और तुम्हारा अभ्युदय बना रहेगा। यदि तुम वास्तव में मेरी सेवा में आना चाहते हो तो अकेले आओ। सलीम हृदय से सेवा के लिए नहीं आ रहा था अत: इस आदेश के मिलने पर उसकी योजना भंग हो गई और उसको बड़ा दु:ख हुआ। वह इटावा तक आ पहुंचा था। वह वहीं से इलाहाबाद को लौट गया। उसने अकबर को पत्र लिखा जिसमें बड़ा दु:ख प्रकट किया। उसने लिखा, ''मैं अत्यन्त लज्जित हूं।'' उसने ऐसे बहाने बनाए जो ध्यान देने के योग्य नहीं थे। इसके बाद ही अकबर ने उसके नाम दूसरा आदेश भेजा कि बंगाल और उड़ीसा उसे जागीर में दे दिए गए हैं। वह वहां चला जाए। राजा मानसिंह को आदेश दिया गया कि वह सूबा बंगाल को शाहजादे के कारिंदों के सुपुर्द करके दरबार में आ जाये। पर शाहजादे ने समझा कि उसका हित अपने पिता के आदेश को उल्लंघन करने में ही है। इसलिए उसने उस विस्तृत देश की सूबादारी मंजूर नहीं की।

राय रायान को आदेश दिया गया कि नरवर और चन्देरी के बीच के इलाके पर समझ से शासन करें। खान आजम मिर्जा कोका को 7000 जात और 6000 सवार का मनसब मिला। हासिम खां को 1500 का और शेख दौलत बख्तियार को दो-दो हजार का मनसब दिया गया। शाहजादा खुसरू का खान आजम की पुत्री से विवाह हुआ तो खान आजिम के घर पर सीरबहा के एक लाख रुपये भेजे गये। शेख अबुल फजल को 50,000 रुपये बख्शीस के दिये गये। काबुल के किसानों के दु:ख बादशाह से निवेदन किये गये तो उसने एक वर्ष का भूमिकर माफ किया और आदेश दिया कि अगले 8 वर्ष तक भूमि कर का $^1/_8$ प्रति वर्ष छोड़ दिया जाये। पाथरी और पठान की सरकारों में खुदाबन्द खां हब्शी ने विद्रोह खड़ा कर दिया था इसलिये खानखाना ने सूरज सिंह और गजनी खां जालौरी के नेतृत्व में उसका दमन करने के लिये सेना भेजी, जिसने उसको हरा दिया।

अम्बरजियो की पराजय

अम्बर तेलंगाना पहुंच गया। वहां नान्देर में मीर मुर्तजा उसका सामना नहीं कर सका और शेर ख्वाजा भी जाहरी गांव पर चला गया। तब खानखाना ने एक बड़ी सेना देकर अम्बर के दमन के लिये अपने पुत्र ईरीज को भेजा। ईरीज ने मर्तजा और शेख ख्वाजा से मिलकर लड़ाई की तैयारी की। इस बीच में फरहाद हब्शी दो-तीन हजार सवारों के साथ अम्बर से आ मिला। दोनों पक्षों ने अपनी सेना के व्यूह बना लिये तो बड़ी जोर की लड़ाई हुई। अम्बर और फरहाद बचकर भाग गये परन्तु उनके 20 हाथी आदि छीन लिये गये। शाहजादा दनियाल ने अकबर को यह विजय-वृत्तान्त भेजा तो ईश्वर को धन्यवाद दिया गया। शाहजादे ने 10 हाथी भी अकबर को भेजे।

हुसने बेग शेख उमरी ने जम्मू के दुर्ग को घेर लिया तो नगर-कोट के जमीनदार ने और अन्य परगनों के जमीनदारों ने जम्मू के शासक को सहायता दी परन्तु उनको रात में ही भागना पड़ा। रामगढ़, जसरोटा जम्मू, पानकोट आदि छीन लिये गये।

बंगाल से कई अच्छी खबरें आईं। राजा मानसिंह ने ढाका पहुँच कर केदार राय को समझाया और उसको सेवामार्ग पर लगा दिया। कहकरा के जलाल ने अकरा और मालदा नामक कस्बों पर हमला किया और वहां के निवासियों और व्यापारियों पर अत्याचार किये तो राजा मानसिंह ने ख्वाजा बाकर अन्सारी को घोराघाट भेजा। वहां महासिंह था। उसको आदेश दिया कि ख्वाजा बाकर और वह इस उत्पात का दमन करे। जब महासिंह कहकरा पहुंचा तो जलाल 5000 प्यादे और 500 सवारों सहित लड़ने आये। दोनों सेनाओं के बीच में एक नदी थी। महासिंह ने उसमें घोड़ा डाल दिया, उसके साथियों ने भी ऐसा ही किया। कुछ लोग डूबकर मर गये, परन्तु अनेक पार उतर कर लड़े तो शत्रु भाग गया। इसके पश्चात् महासिंह ने काजी मुमीन पर आक्रमण किया जो पूर्णिया में विद्रोह कर रहा था। ज्योंही मुमीन ने महासिंह के आने की खबर सुनी तो वह परिवार सहित एक नाव में बैठकर एक टापू में भाग गया। महासिंह ने उसका पीछा किया और टापू को घेर लिया। फिर लड़ाई हुई तो काजी मुमीन घोड़े से गिर कर मर गया और शाही सेना को विजय प्राप्त हो गई। फिर राजा मानसिंह को खबर मिली कि उसमान ब्रह्मपुत्र नदी को पार करके विद्रोह कर रहा है और वहां का थानेदार बाजबहादुर थाना छोड़कर भवाल भाग गया है। तब राजा मानसिंह वहां पर पहुंचा और बिहार नामक नदी के तट पर विद्रोहियों से युद्ध हुआ जिसमें बहुत-से अफगान मारे गये और उनका माल और तोपखाना छीन लिया गया। वहां से वापस आकर राजा मानसिंह ने अपने वीर सैनिकों को आदेश दिया कि अंझमती नदी को पार करके ईसा और केदार का जो विक्रमपुर और सरहानपुर के शासक थे, दमन किया जाये। अफगानों ने दाऊद से मिलकर, जो ईसा का पुत्र था लड़ाई की तैयारी की, जो कुछ दिन तक चलती रही। तब राजा मानसिंह शाहपुरा आया और उसने नदी पार की तो अफगान भाग गये। फिर

वह सरहानपुर और विक्रमपुर पहुंचा तो दाऊद और दूसरे अफगान भाग कर सुनार गांव चले गये।

राय रायसिंह राठौड़ को कुछ समय से दरबार में आने की इजाजत नहीं थी। अब उसको बुला लिया गया और उसके पुत्र दलपत को आदेश दिया गया कि यदि वह अपने पिता को प्रसन्न कर ले तो उसको भी दरबार में आने की इजाजत दे दी जायेगी।

दक्षिण से खबर आई कि शाहजादा दनियाल ने शाहरूख की जागीर छीन ली है इसलिये मिर्जा शाहरूख दरबार में आना चाहता है। तब शाहजादा को आदेश हुआ कि वह जागीर वापस लौटा दे। मिर्जा को लिखा गया कि वह मालवा जाकर वहां शान्ति स्थापित करे और बिना बुलाये दरबार में न आये। उसके लिये एक घोड़ा भी भेजा गया। राजा मानसिंह का भाई प्रतापसिंह दरबार में आया। इसी समय यह भी खबर आई कि शाही सेना ने बासू को हरा दिया।

बादशाह को खबर मिली कि खानखाना, राजू का उच्छेद करने में व्यस्त है। शाहजादा दनियाल ने बाबिलगढ़ के एक फारुकी के दुराचरण की खबर सुनी है इसलिये उसके दमन के लिये सेना भेजी है। फारुकी वहां से दौलताबाद भाग गया है। ख्वाजा नाजिर ने दुर्ग का दरवाजा बन्द कर लिया है और शाही सेना को अन्दर नहीं घुसने देता है इसलिये दुर्ग को सेना ने घेर लिया है। जब शत्रु को कोई उपाय नहीं सूझा तो उसने आत्मसमर्पण कर दिया है।

शेख अबुल फजल के नाम आदेश हुआ कि वह अकेला दरबार में आये और सेना अपने पुत्र शेख अब्दुर्रहमान के सुपुर्द कर आये। अबुल फजल अपनी स्वामिभक्ति के कारण दिन-दिन उन्नति कर रहा था इसलिये लोग उससे ईर्ष्या करते थे। शाहजादा सलीम भी झूठे आदमियों के बहकाने से उसका विरोध करने लगा था। शाहजादे का ढंग बादशाह को पसन्द नहीं आया था और वह प्रतिदिन शाहजादे के प्रति उदासीन होता जाता था। लोगों ने शाहजादे से कहा कि इसका कारण शेख अबुल फजल है। शाहजादे का मिजाज गर्म था, मद्यपान के कारण उसकी बुद्धि नष्ट हो गई थी इसलिये वह अबुल फजल का अन्त करने का उपाय सोचने लगा। इस समय शाहजादा दरबार में आना चाहता था परन्तु बादशाह उसके उद्देश्य को समझता था इसलिये उसे इजाजत नहीं देता था। इसी समय मालूम हुआ, अबुल फजल अकेला दरबार में जा रहा है। शाहजादे ने सोचा कि उसको समाप्त कर दिया जाये। वीर सिंह का राज्य दक्षिण के मार्ग पर था और वह इस समय शाहजादे की सेवा में था। शाहजादे ने वीर सिंह को अनेक कृपाओं की आशा दिलाई तो उसने अपने राज्य में जाकर अनेक बुन्देले राजपूत इकट्ठे किये और वह घात में बैठ गया। जब अबुल फजल उज्जैन पहुंचा तो उसने इस घात के विषय में सुना। उसके सलाहकारों ने कहा कि पीछे मुड़कर घाटी चांदा के मार्ग से जाना चाहिये, परन्तु उसकी मृत्यु निकट आ गई थी इसलिये उसने सलाह नहीं

मानी। 9 अगस्त, 1602 को सराई बीर और आतड़ी के बीच में वीर सिंह देव घात में से निकला तो अबुल फजल ईश्वर पर भरोसा करके साहसपूर्वक लड़ने के लिये तैयार हो गया। उसके साथी गदाई खां अफगान ने उसके घोड़े की लगाम पकड़ कर कहा, शत्रु की संख्या अधिक है, हम गिनती के लोग हैं। हम शत्रु से लड़ेंगे और आप दूसरे मार्ग से जायें। हम अर्से तक लड़ाई लड़ेंगे। तब तक आप आतड़ी पहुंच जायेंगे, जहां आपको राय रायान और राजसिंह दो-तीन हजार सवारों सहित मिल जायेंगे। अबुल फजल ने यह सलाह नहीं मानी और कहा कि यदि मेरी मृत्यु आ गई है तो क्या उपाय हो सकता है। बादशाह ने मुझे विद्यार्थी से अमीर, वजीर और सेनापति बनाया है। यदि मैं भागूं तो उसको कैसे मुंह दिखाऊंगा। इतने में ही वीर सिंह आ गया और अबुल फजल की छाती में भाला लगा जिससे वह मर गया। गदाई खां आदि भी मारे गये। इस प्रकार बुद्धि और ज्ञान का दीपक बुझ गया। जब यह शोक-समाचार अकबर को मिला तो उसको अपार दुःख हुआ। वह शोक के मारे चीख पड़ा और अचेत हो गया। इस अपराध के कारण वह शाहजादा सलीम से सैदव अप्रसन्न रहा। राय रायान को आदेश दिया गया कि वीरसिंह देव का सिरकाट कर पेश किया जाये। राय रायान को सहायता देने के लिये राजा राजसिंह, रामचन्द्र बुन्देला और उधर के दूसरे जमीनदारों को भी आदेश दिया गया। दरबार के कई अफ़सर भी इस काम में लगाये गये।

इस समय बादशाह को सूचना मिली कि शाहजादा मुराद ने कुछ समय के लिये मद्यपान बन्द कर दिया था। मद्यपात्र तोड़ डाले थे और बादशाह के सिर की कसम खाई थी कि भविष्य में मद्यपान नहीं करेगा, परन्तु अब प्रणभंग करके मद्यपान करने लग गया है, जिससे उसका स्वभाव विकृत हो गया है। तब बादशाह ने शाहजादे को लिखा कि तुम अपने आप पर दया क्यों नहीं करते और अपनी सुन्दरता को क्यों नष्ट कर रहे हो। तुम्हारे बड़े भाई शाहजादा मुराद से तुमने शिक्षा क्यों नहीं ली। यदि तुम मुझे प्रसन्न रखना चाहते हो तो मद्य से बचो।

शाहजादा सुल्तान सलीम ने बड़े अपराध किये थे। बादशाह उससे बड़ा रुष्ट था। किसी व्यक्ति को साहस नहीं होता था कि शाहजादा के पक्ष में कोई बात करे। मरियम मकानी और गुलबदन बेगम ने बादशाह से कहा कि शाहजादा को क्षमा प्रदान की जाये। तब बादशाह ने उसको दरबार में आने की इजाजत दी और सलीमा सुल्तान बेगम को आदेश दिया कि वह शाहजादे को दरबार में ले आये। तब यह महिला बादशाह की ओर से शाहजादे के लिये एक हाथी, एक खासा घोड़ा और एक खिल्लत लेकर चली।

इस समय मेवात की फौजदारी इफतीखार बेग को प्रदान की गई। दो आबान को अकबर की सौर तुला हुई, उसको 12 प्रकार के विभिन्न पदार्थों से तौला गया। ट्रान्सआग्जियाना से कासिम खां ने भेंटें भेजीं जो स्वीकार की गईं। कन्धार के सूबेदार शाह बेग खां को पंच हजारी मनसबदार बनाया गया। गजनी की सूबेदारी शरीफ खां से लेकर

उसको दे दी गई। कन्धार और गजनी के मार्गों को सुरक्षित रखने के लिये कठोर आदेश दिया गया, जिससे व्यापारियों की चिन्ता दूर हो गई। तोपखाने के अध्यक्ष शाहीवाहन को राजा की उपाधि प्राप्त हुई। वह तोपखाने के काम में अद्वितीय था। मिर्जा शाहरूख ने निवेदन-पत्र भेजा कि वह बीमार है और निर्बल हो गया है तो उसकी चिकित्सा के लिये वेणीदास वैद्य को भेजा गया। ईरान के राजदूत मनु चिहर को 4 लाख दाम और भारत की बहुत-सी चीजें, शाह को भेंट करने के लिये देकर विदा किया। इसी समय खबर आई कि खानखाना के पुत्र ईरीज ने अम्बर जेओ के साथ बड़ी लड़ाई लड़ी, जिसमें वह विजयी हुआ और अम्बर के हाथी और सामान लूट लिये गये। इस सेवा के उपलक्ष में इरिज को बहादुर की उपाधि प्रदान की गई। राम बिहारीचन्द के पुत्र जादूनदास को अनुकूल आदेश सुनाने के लिये शाहजादा सुल्तान दनियाल खानखाना और ईरिज बहादुर के पास भेजा। उसको यह भी आदेश दिया गया कि जो हाथी छीने गये हैं, उन्हें दरबार में ले आयें। शाहजादे के लिये उसके साथ एक जड़ाऊ खंजर भी भेजा गया। शेख अब्दुर्रहमान (अबुल फजल के पुत्र) को आदेश दिया गया कि वह राय रायान से मिलकर वीरसिंह देव से अपने पिता के वध का बदला ले। उसको मालवे में जागीर दी गई। बीच-बचाव करने वालों की प्रार्थना पर बुरहानुल मुल्क ख्वास के द्वारा शाहजादा सलीम को एक घोड़ा और कृपापूर्ण सन्देश भेजे गये। शाहजादा सुल्तान दनियाल ने पेशकश में 27 सूर्ख का एक हीरा और 4 मिश्काल की एक लाल भेजी। ईराक से हकीम रक्नू और हकीम हैदर आये और बादशाह की सेवा में प्रविष्ट हुए। हकीम रक्नू को अपने समय के विज्ञान का और चिकित्साशास्त्र का अच्छा ज्ञान था। वह कवि भी ऊंचे दर्जे का था। हकीम हैदर को भौतिक-शास्त्र का अच्छा ज्ञान था। वह गद्य और पद्य का योग्य लेखक था। उसमें आन्तरिक और बाह्य सौन्दर्य था। शाहजादा सलीम का पत्र आया जिसका सारांश यह था कि वह दो मंजिल दूर सलीमा बेगम से मिला और उसके प्रति आदर प्रकट किया। उसने उन घोड़ों के लिये भी इच्छा प्रकट की जो भेंट के रूप में ईरान का राजदूत लेकर आया था। खान आजिम ने जूनागढ़ से पेशकश में 20 कच्छी घोड़े भेजे।

वीरसिंह देव हाथ नहीं आया

बादशाह से निवेदन किया गया कि वीरसिंह देव घाटियों में छिप कर लूटमार करता है। राय रायान ने उसको कई बार दबाया है। जब राय रायान को मालूम हुआ कि वीरसिंह बहान्दर दुर्ग में आ गया है और शाही सेना के अग्रभाग ने उसको घेर लिया और फिर वह ईरिज के दुर्ग में चला गया है तो राय रायान तुरन्त ही वहां पहुंचा। तब बेतवा नदी के तट पर राय रायान और वीरसिंह में लड़ाई हुई, जिसमें हारकर ही वीरसिंह ईरिज के दुर्ग में छिप गया। फिर रात्रि में वीरसिंह दीवार तोड़कर राजा राजसिंह के तोपखाने में आ गया। राजा राजसिंह ने कुछ सुस्ती की, इसलिये वीरसिंह नहीं पकड़ा गया, परन्तु वीर लोगों ने

उसका पीछा किया जिसमें उसके 40 आदमी मारे गये। परन्तु जंगल घना था और नदी-नाले बहुत थे, इसलिये वीरसिंह बचकर भाग गया और पीछा करने वालों को वापस आना पड़ा।

गुलबदन बेगम की मृत्यु

इस बेगम को कुछ दिन ज्वर रहा, चिकित्सा से कोई लाभ नहीं हुआ। 7 फरवरी, 1603 को उसकी मृत्यु हो गई। उस समय उसकी आयु 82 वर्ष की थी। बादशाह ने उसके जनाजे को कन्धा लगाया और गरीब लोगों को दान दिया। अन्तिम समय में मरियम मकानी उससे मिलने आई परन्तु गुलबदन बेगम बोल नहीं सकती थी। उसने आंख खोल कर मरियम की ओर देखा और अन्तिम सांस ले ली। सलीमा बेगम ने अकबर को पत्र लिखा जिसमें शाहजादा की पितृभक्ति का वर्णन किया। यह भी लिखा कि अब शाहजादे के हृदय में कोई शंका नहीं है और उसको लेकर वह शीघ्र दरबार में आ रही है।

***

प्रकरण 152

राज्यारोहण से 48वें वर्ष का आरम्भ

शुक्रवार, तारीख 8 शव्वाल, सन् 1011 हिजरी, 11 मार्च, 1603 को इस वर्ष का आरम्भ हुआ और कई दिन तक उत्सव मनाया गया। सलीमा सुल्तान बेगम ने लिखा कि शाहजादा सुल्तान सलीम को लेकर वह दरबार में आ रही है।

बादशाह को खबर मिली कि शाहजादा सुल्तान दनियाल ने मद्यपान नहीं छोड़ा है और इससे वह निर्बल हो गया है। तब बादशाह ने चाहा कि उसको बुलाने के लिये शेख इलाहदाद को भेजा जाये। इलाहदाद वहां पहुंच कर बादशाह का आदेश सुनाये! तो शाहजादे ने लिखा, ''जब मुझे बुलाया गया तो उस समय खानखाना को बुरहानपुर बुलाने के लिये उपयुक्त नहीं था। इसलिये मैं ही उसको सलाह देने चला गया। जब इलाहदाद आयेगा तो मैं दरबार में आ जाऊंगा।'' इस पत्र से अकबर ने भाप लिया कि शाहजादा दनियाल की इच्छा दरबार में आने की नहीं है और वह बहाने कर रहा है। तब शाहजादे को लिखा गया कि यदि ऐसी बातें दुबारा लिखी गईं तो बादशाह हजार गुना नाराज होगा। यह भी आदेश हुआ कि अम्बर और फरहाद के साथ लड़ाई में जो हाथी छीने गये थे, वह अब तक दरबार में नहीं भेजे गये। अब उन्हें और ख्वाजा फरासत को दरबार में भेजा जाये।

मिर्जा शाहरूख के लिये एक दुशाला, दक्षिण के अफ़सरों के लिये घोड़े और खिल्लतें भेजी गईं। राजा सूरतसिंह को दक्षिण में अच्छी सेवा के उपलक्ष में नक्कारा और निशान दिया गया। तारीख 12 फखरदीन को जैन खां कोका की माता नीका जांन अनगा की मृत्यु हुई तो बादशाह ने उसके मकान पर जाकर उसके परिवार वालों को सान्त्वना दी।

मिर्जा शाहरूख ने दरबार में आने के लिये छुट्टी मांगी तो आदेश दिया गया कि शाहजादा दनियाल को बुलाया गया है। यदि वह आये तो मिर्जा शाहरूख को नहीं आना चाहिये, क्योंकि दक्षिण में कोई स्वामिभक्त अफ़सर नहीं रहेगा। परन्तु यदि शाहजादा विद्रोह, विलास कुसंगति और मद्यपान के कारण नहीं आये तो मिर्जा शाहरूख अपनी सेना को मालवे में छोड़कर दरबार में आ जाये।

राय रायान को आदेश हुआ कि वीरसिंह देव भाग गया है। तो वह अपने सहायक सैनिकों के साथ दरबार में आ जाये। शाहजादा दनियाल ने 12 हाथी भेजे जो बादशाह को नजर किये गये।

शाहजादा सलीम की बादशाह से भेंट

शाहजादे ने प्रार्थना-पत्र भेजा कि मरियम मकानी मुझे हाथ पकड़ कर बादशाह के चरणों में रखे, उसकी प्रार्थना स्वीकार की गई तब मरियम मकानी एक मंजिल आगे गई और शाहजादे का भय मिटाया। दूसरे दिन वह उसको दरबार में लाई। शाहजादे ने बादशाह के चरणों में सिर टिका कर लज्जा प्रकट की और अपने अपराध स्वीकार किये। प्रत्यक्ष में बादशाह ने उसकी बातें मान लीं और उसको अपने सीने से लगाया, परन्तु बादशाह का आन्तरिक असन्तोष दूर नहीं हुआ। शाहजादे ने 12000 मोहरें, 977 हाथी भेंट किये। बादशाह ने 350 हाथी मंजूर किये।

शाहजादा दनियाल के नाम आदेश हुआ, राजा सूरज सिंह उस प्रान्त में दीर्घ काल से है और अब दरबार में आना चाहता है तथा अपने देश के कामकाज को देखना चाहता है। इसलिये तुम गोविन्ददास माटी और उसके अफ़सरों तथा सेवकों को वहीं रोक कर सूरज सिंह को अकेला भेज दो।

शाहजादा सलीम ने पुन नामक एक हाथी मांगा जो बादशाह ने दे दिया। फिर उदार बादशाह ने शाहजादे के त्रस्त हृदय को शान्त करने के लिये अपनी पगड़ी उतार कर शाहजादे के सिर पर रख दी। यह इस बात का सूचक था कि शाहजादा ताज और तख्त को अलंकृत करेगा। बादशाह नहीं चाहता था कि सलीम उसका उत्तराधिकारी बने तो भी उसने अनिच्छा से अपनी पगड़ी उसके सिर पर रखी थी।

शेख अब्दुर्रहमान अबुल फजल का पुत्र बरकात, अबुल फजल का भाई दक्षिण से आकर दरबार में हाजिर हुए। बादशाह ने उनके साथ सहानुभूति की, जिससे अबुल फजल

की मृत्यु का दुःख शान्त हुआ। उन्होंने पेशकश के रूप में तीन हाथी, 4 तलवारें, 7 मोतियों की मालायें और कुछ रत्नजडित पात्र अर्पित किये।

राजा बीरबल का पुत्र हर हर राय शाहजादा दनियाल का निवेदन-पत्र लेकर आया जिसमें लिखा था कि गत छः मास से उसने मद्यपान त्याग दिया है, परन्तु आने के विषय में उसने बहाने बना लिये। तूरान से अबुल बाकी उजबेग आया तो बादशाह ने उसको 500 का मनसबजात और 150 सवार प्रदान किये। कुलीच खां को जो पुराना सेवक था, पंचहजारी मनसबदार बनाया गया। हुसेन बेग शेख उमटी को काबुल और बंगश की देखरेख के लिये नियुक्त किया गया। माधोसिंह को 3000 जात और 2000 सवार का मनसब प्राप्त हुआ।

बंगाल में विद्रोह

माघ देश का जमीनदार नौ सेना लेकर आया और उसने परममहानी के दुर्ग को घेर लिया तो सुल्तान कुली कलमाक ने निकल कर लड़ाई लड़ी जिसमें माघ का जमींदार आकर भाग गया। फिर उसने दूसरे दुर्ग को जा घेरा। इस विद्रोह का पता लगने पर राजा मानसिंह ने इब्राहिम बेग अल्का आदि को भेजा तो विद्रोही से कई दिन तक लड़ाई हुई। इब्राहिम ने विद्रोही की कई नावें डुबो दीं और शत्रु नावों द्वारा भाग गया।

बांसवाड़ा पर चढ़ाई

बादशाह के आदेश से मिर्जा शाहरूख ने बांसवाड़ा के राजा पर चढ़ाई की और राजा भाग कर मालवा चला गया और वहां उत्पात करने लगा। तब मिर्जा शाहरूख लौट कर मालवा आया तो बांसवाड़ा का राजा स्वदेश लौट गया। वर्षा का आरम्भ हो जाने के कारण राजा पर दुबारा चढ़ाई नहीं की गई।

मिर्जा हसन को दण्ड

मिर्जा हसन मिर्जा शाहरूख का पुत्र था। अबुल फजल ने लिखा है कि शासन के 45वें वर्ष में मिर्जा हसन एक कश्मीरी के साथ भाग गया था। अब पता लगा कि वह ईरान के शाह अब्बास के पास पहुंच गया था। अब्बास ने उसको हैरात के फौजदार हुसेन खां के पास भेज दिया था, परन्तु उधर की ओर उत्पात हो रहा था, इससे हसन खां ने मिर्जा हसन को अपने पास रखना उचित नहीं समझा और शाह के आदेश से उसको बदख्शां भेज दिया। वहां से भाग कर मिर्जा हसन हजारों लोगों के पास चला गया था और उनके साथ मिलकर कंधार के पास लूटमार करने लगा। तब वहां के लोगों ने कंधार के हाकिम से शिकायत की, तब हसन वहां से भाग कर हकचरान की पहाड़ियों में चला गया।

शाहजादा सलीम द्वारा आज्ञा भंग

शासन के 45वें वर्ष में इस शाहजादे को राणा का दमन करने के लिये भेजा गया

था, परन्तु वह इलाहाबाद चला गया। अब बादशाह ने उसे पुनः राणा का दमन करने का आदेश दिया और दशहरे के दिन सन् 1603 में उसे रवाना किया। राजधानी से 10 कोस जाकर शाहजादे ने कहलाया कि मेरे पास सेना और सामान कम है। वह फतहपुर ठहर गया। तब बादशाह ने उसको इलाहाबाद चले जाने का आदेश दिया तो वह मथुरा के पास जमुना नदी को पार करके चल दिया।

मिर्जा मुजफ्फर सफवी की मृत्यु

10 आवान को मिर्जा मुजफ्फर मर गया तो उसके शव को दिल्ली ले जाने का आदेश दिया गया।

अलीराय का दमन

बादशाह को खबर मिली कि छोटे तिब्बत का शासक बड़े तिब्बत के शासक को हरा कर दम्भी और धनवान बन गया है और कश्मीर में उत्पात कर रहा है। तब लाहौर के सूबेदार को आदेश हुआ कि कश्मीर के सूबेदार को अलीराय का दमन करने में सहायता दी जाये। यह खबर सुनकर अलीराय घबरा गया। शाही सवारों ने उसका जहां तक हो सकता था वहां तक पीछा किया।

शाही सेना की बंगाल में विजय

इन दिनों खबर आई कि जमींदार केदार एक बड़ी नौ सेना सहित माघ के जमींदार से मिलकर श्रीनगर के थाने पर आक्रमण कर रहा है। तब राजा मानसिंह ने तोपों के साथ एक सेना भेजी, जिसने केदार के साथ जोर की लड़ाई लड़ी। केदार आहत हो गया और राजा मानसिंह के पास पहुंचते-पहुंचते मर गया। फिर माघ का जमींदार भी अपने इलाके को लौट गया। राजा मानसिंह ने उसमान पर अभियान करना चाहा, परन्तु वह भी भाग गया।

यात्रियों के आराम के लिये बादशाह ने आदेश दिया कि प्रधान मार्गों पर विश्रामगृह और भोजनालय बनाए जायें जिससे थके हुए और खाली हाथ यात्रियों को आराम और भोजन आसानी से मिल सके।

मिर्जा मुहम्मद हकीम के पुत्र मिर्जा कैकुबाद को जगन्नाथ के सुपुर्द कर दिया गया और रणथम्भौर के कारागार में रख दिया। उसकी संगति बुरी थी। उसको मद्यपान का व्यसन था और उसने कई दुष्कर्म किये थे। खान-ए-आजम के पुत्र शादमान और अब्दुल्ला प्रत्येक को 1500 का मनसब प्रदान करके एक को गुजरात और दूसरे को जूनागढ़ भेज दिया गया।

बादशाह को सूचना मिली कि मीर मासूम भाखरी, जो राजदूत बना कर शाह अब्बास के पास इरान भेजा गया था, वहां पहुंच गया है। शाह से मानपूर्वक मिला है और उसने

बादशाह के पत्र को दोनों हाथों से लेकर सिर पर रखा है और पूछा है कि शाह बाबा के कैसे मिजाज हैं। भेंट के पदार्थों का प्रदर्शन किया गया है और उन्हें देखने के लिए गरजिस्तान और तुरकिस्तान से सरदारों को बुलाया है।

***

प्रकरण 153

राज्यारोहण से 49वें वर्ष का आरम्भ

सोमवार, 18 सब्बाल, 1012 ई०, 11 मार्च, 1604 ई० को इस वर्ष का आरंभ हुआ। शाहजादा दनियाल के मद्यपान की फिर शिकायत आई तो बादशाह ने नाराज होकर उसको फटकारने के लिए और इस घातक प्रकृति से रोकने के लिए हकीम अबुल फतह के पुत्र हाकिम फतह उल्ला को भेजा और कुछ दिन पश्चात् शाहजादे के लिए एक घोड़ा भेजा जो ईरान के शाह ने भेंट किया था।

सुल्तान खुसरो की माता का देहान्त

यह राजा भगवन्तदास कछावा की पुत्री थी। शाहजादे का उसके साथ अच्छा बर्ताव नहीं था इसलिये उसने अफीम खाकर आत्महत्या कर ली। बादशाह को खुसरो से बड़ा प्रेम था इसलिए उसको बड़ा दुःख हुआ।[1]

राय रायान को विक्रमाजीत की उपाधि देकर पंच हजारी मनसबदार बनाया गया और दीपसिंह देव बुंदेला के दमन के लिए उसे भेजा गया। उसकी सहायता के लिए राजा राजसिंह को 3500 जात और 3000 सवार का मनसब और नक्कारा तथा दुसाला देकर विक्रमाजीत के साथ भेजा गया।

दनियाल से बीजापुर की शाहजादी का विवाह

बीजापुर के सुल्तान खान आदिल खां ने निवेदन किया कि उसकी पुत्री को शाहजादे के अन्तःपुर में ले लिया जाये तो उसकी प्रार्थना को स्वीकार करके एक बड़े अफ़सर को सगाई के लिए बीजापुर भेजा गया। आदिल खां ने उसके साथ अपनी लड़की भेज दी और

1. जहांगीर ने लिखा है कि वह अपने पुत्र और भाई के मेरे प्रति व्यवहार से बड़ी दुःखी रहती थी और इसी से उसकी मृत्यु हुई थी। जहांगीर ने दो-तीन दिन तक खाना नहीं खाया, तब अकबर उसको सांत्वना देने के लिए गया।

एक सरदार को उसका वकील बनाकर उसको रवाना किया। जब शाहजादी निकट आई तो खानखाना ने अपने पुत्र ईरिज को 500 सवारों सहित कई मंजिल दूर उसका स्वागत करने के लिए भेजा और वह अहमदनगर आ गई। मीर जमालुद्दीन हुसने शाहजादे के पास बुरहानपुर उपस्थित हुआ और आदिल खां से जो समझौता हुआ था, उसके अनुसार वह शाहजादे को अहमदनगर ले आया। विवाहोत्सव मनाकर शाहजादी को अन्तःपुर में दाखिल कर लिया गया। जब बादशाह को मालूम हुआ कि मद्यपान के कारण शाहजादा दनियाल का स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया है तो उसने एक ऐसी महिला को, जिसने शाहजादे को गोद में खिलाया था, को समझाने के लिए भेजा। जो महिला उसको समझाने के लिए भेजी गई थी उसने बहुत समझाया, परन्तु शाहजादा दरबार में आने से हिचकता है। तब बादशाह ने शेख अबुल खैर को भेजा कि जैसे-तैसे वह शाहजादे को दरबार में ले आये।

***

प्रकरण 154

बादशाह का इलाहाबाद को प्रयाण व वापस लौटना

जब शाहजादा सलीम इलाहाबाद आया तो कुसंगति, चाटुता, विलास, दम्भ आदि के कारण वह पिता की आज्ञा का उल्लंघन करने लगा। बादशाह ने उसको हिदायत करवायी कि अनुचित आचरण न करे परन्तु उसका मद्यपान बढ़ता ही गया और जब मद्यपान से उसको सन्तोष नहीं होने लगा तो वह अफीम खाने लगा। इस व्यसन से उसका मस्तिष्क कुछ विकृत-सा हो गया और वह छोटे-छोटे अपराधों के लिये कठोर दंड देने लगा। यहां तक कि वह प्राणदण्ड भी दे दिया करता था। उसने एक आदमी को अपने सामने खाल खिंचवा कर मार दिया और दूसरे को इतना पिटवाया कि वह मर गया। यह समाचार सुनकर अकबर को बड़ा ही संताप हुआ और उसने इलाहाबाद की ओर शिकार के बहाने जाने का विचार किया। उसने कहा कि यदि शाहजादा दम्भ छोड़कर मेरा स्वागत करेगा तो मैं उसे क्षमा करके अपने साथ ले आऊंगा, अन्यथा उसको दंड दिया जायेगा। बादशाह ने अग्र शिविर के प्रस्थान का आदेश दे दिया जो जमुना तट पर फतहपुर से 3 कोस की दूरी पर ठहरा। 21 अगस्त, 1604 को बादशाह नाव में बैठकर रवाना हुआ। थोड़ी दूर जाने पर पानी की कमी के कारण नाव रेत में फंस गई। बादशाह को नदी में ही रात व्यतीत करनी पड़ी। अगले दिन वर्षा हुई जो 3 दिन तक होती रही सैनिकों व दूसरे लोगों को इससे बड़ा ही

कष्ट हुआ। फिर अचानक ही मरियम मकानी की रुग्णता की खबर आई, वह नहीं चाहती थी कि अकबर प्रयाण करे इसलिये अकबर को इस समाचार पर विश्वास नहीं हुआ। फिर विश्वसनीय लोगों ने आकर सूचना दी कि उसकी स्थिति गम्भीर है और हकीमों ने चिकित्सा करना छोड़ दिया है तब अकबर राजधानी को वापस लौटा इस समय उसका बोलना बन्द हो गया था। बादशाह को अपार दु:ख हुआ और वह दुखी होकर एक ओर बैठ गया।

***

प्रकरण 155

मरियम मकानी की मृत्यु आदि घटनाएं

सोमवार, तारीख 19 शहरीयूर, 29 अगस्त, 1604 को मरियम मकानी (अकबर की माता) का देहान्त हो गया तो उसको गहरा सन्ताप हुआ। उसने अपनी मूंछें आदि मुंड़वा दीं और शोकवेश पहन लिया और दूर तक जनाजे को कन्धा लगाया और उसको दिल्ली भेज दिया।

सायंकाल उसका चित्त शान्त हुआ तो उसने शेख फरीद बख्शी बेगी से कहा कि कल दशहरा का त्यौहार है इसलिये सब राजसेवकों से कह दिया जाये कि शोकवेश त्याग दें। दूसरे दिन बादशाह ने दशहरा के उपलक्ष में सब मनसबदारों को दुशाले बांटे। मरियम मकानी के शव को दिल्ली ले जाकर हुमायूं की कब्र में दफन किया गया। अबुल खेर ने सूचना भेजी कि दरबार में उपस्थित होने के विचार से शाहजादा दनियाल ने अपना शिविर आगे भेज दिया है। तारीख 3 आबान को अकबर की सौर तुला हुई तो उसको 12 पदार्थों से तौला गया। मीर सदर को देश निर्वासित किया गया। राजा सूरज सिंह उसको पट्टन गुजरात ले गया।वहाँ के सूबेदार ने उसको बन्दरगाह पर भेज दिया और फिर उसको नांव में बैठाकर समुद्र में चला दिया। दोस्त मुहम्मद, जो शाहजादा सलीम का विश्वस्त सेवक था, उससे डर कर दरबार में आ गया।

तूरान से आबदी ख्वाजा आया

आबदी ख्वाजा, ख्वाजा कीलां जुईबारी का पुत्र था। जब बाकी खां ने लोगों पर अत्याचार किये तो अमीरों ने उसको मार डालने का और उसके स्थान पर आबदी ख्वाजा को बैठा देने का निश्चय किया। बाकी खां के वध के लिये उन्होंने बीहबूद नामक एक व्यक्ति को भेजा, परन्तु वह घबरा गया और बाकी खां के एक आदमी ने इसकी सूचना

दे दी। तब बीहबूद पकड़ लिया गया। जब उससे पूछा गयां तो उसने कहा कि ''मैंने यह काम ईसम-बीदर और उसके पुत्रों के कहने से किया है परन्तु मुझमें साहस नहीं रहा।'' तब बाकी खां ने ईसम बीदर के पुत्रों का वध करवा दिया और ईसम और अहदी को देश से निकाल दिया। आबदी ख्वाजा हज करने के बहाने से अकबर के दरबार में आ गया तो बादशाह ने उसको एक खिल्लत और 20000 रुपये प्रदान किये। राजा श्यामसिंह और राजा जगमन चौहान को एक-एक हजार का मनसब दिया गया। राजा जगमन को भान गांव का परगना जागीर में दिया गया।

शाहजादा सलीम का आगमन

शाहजादे ने सुना कि बादशाह इलाहाबाद के लिये रवाना हो गया था, परन्तु मरियम मकानी की मृत्यु के कारण वापस लौट गया। तब शाहजादा सहानुभूति प्रकट करने के बहाने से चार आजर को दरबार में आया। बादशाह ने उसका आलिंगन किया। शाहजादे ने भेंटस्वरूप एक, एक लाख का हीरा, प्रति सौ तोले की 209 मोहरें, 50 तोले वाली 200 मोहरें, 25 तोले वाली 4 मोहरें, 20 तोले वाली 3 मोहरें और 200 हाथी भेंट किये। उसके साथ पाईन्दा मुहम्मद खां आदि तीन अमीर थे, इन्होंने भी भेंटें अर्पित कीं। बादशाह शाहजादे से उसके दम्भ, स्वेच्छाचारिता और अन्य दुर्गुणों के कारण नाराज था। उसको पहले कई बार क्षमा किया गया परन्तु उसने अपना सुधार नहीं किया, इसलिये बादशाह ने हुक्म दिया कि शाहजादे को पकड़ कर अन्त:पुर में रख दिया जाये। बादशाह ने उसको फटकारा और अनेक आज्ञोल्लंघनों का उल्लेख किया। शाहजादे ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे और वह भूमि की ओर देखने लगा। अकबर ने उसका मद्य भी बन्द कर दिया। तब शाहजादा बड़ा दु:खी हुआ। उसकी बहनों ने आकर सहानुभूति प्रकट की और सान्त्वना दी। दस दिन बाद बादशाह ने उसके छुटकारे का आदेश दे दिया और उसको अपने निवास पर भेज दिया।

राजा बासू का पलायन

इस राजा के विद्रोह और दण्ड का उल्लेख किया जा चुका है। अब उसने शाहजादा सलीम के पास आकर प्रार्थना की कि उसको दरबार में उपस्थित होने की इजाजत दिलवाई जाये, परन्तु शाहजादा कुछ नहीं कर सका। अकबर ने राजा मानसिंह को आदेश दिया कि राजा बासू को पकड़ लिया जाये। मानसिंह ने इस काम के लिये माधोसिंह को भेजा, परन्तु उसके पहुंचने से पहले ही राजा बासू भाग गया।

इस वर्ष कई अमीरों को 4000 का, कई को एक हजार का, एक को साढ़े तीन हजार का और कुछ को 500 का मनसब दिया गया।

कश्मीर के शासक को दण्ड

कश्मीर के चक लोग विद्रोह करने लग गये थे। वे लोग अपने को कश्मीर के शासक के वंशज समझते थे। किश्तवार का शासक उनको प्रोत्साहित कर रहा था। इसलिये मुहम्मद कुली ने उसको दबाने के लिये प्रस्थान किया और अपने पुत्र अली कुली खां को किश्तवार के शासक ने अधीनता स्वीकार कर ली और वचन दिया कि ''अब वह विद्रोहियों का दमन करेगा।'' तब मुहम्मद कुली चक लोगों का दमन करने के लिये चला। उनसे लड़ाई हुई तो मुहम्मद कुली विजयी हुआ। फिर भी चकों के नेता अलिया चक और हुसने चक वश में नहीं आये और एक दूसरी लड़ाई हुई तो वे हार गये और शाही सेना ने उनके घरों को जला दिया। बहुत-से जमींदार भी अधीन हो गये।

मीर मुहम्मद मासूम भक्करी, जिसको शाह अब्बास के पास राजदूत बनाकर भेजा गया था, वापस आया और शाह की चाची का एक पत्र मरियम मकानी के नाम लाया।

***

प्रकरण 156

राज्यारोहण से 50वें वर्ष का आरम्भ

शनिवार, 28 शव्वाल, 1013 हिज्री, 11 मार्च, 1605 ईसवी को इस वर्ष का आरम्भ हुआ तो बड़ा उत्सव मनाया गया। निम्नलिखित अमीरों को मनसब दिये गये :

नाम	मनसब
1. तार दी खां	200 जात, 500 सवार और पांच लाख दाम
2. रहमत खां फौजदार	1500 जात, 500 सवार
3. प्रताप सिंह	1000 जात, 500 सवार
4. हकीम अली	3000 जात, 200 सवार
5. सगत सिंह	1600 जात, 300 सवार
6. राजा राजसिंह	3000 जात
7. हमजा बेग	1000 जात
8. भाबू सिंह (राजा मानसिंह का पुत्र)	7000 जात और 500 सवार
9. रामदास कछावा	2000 जात, 200 सवार

10. सलहदी — 700 जात, 400 सवार

11. हकीम मुजफ्फर — 1200 सवार

सुल्तान सलीम ने और सुल्तान दनियाल ने एक-एक हाथी भेंट किया। शेख अब्दुर्रहमान और ख्वाजा अब्दुल्ला ने सूचना दी कि ओरछा छीन लिया गया है परन्तु वीरसिंह देव हार कर भाग गया है।

राजा राजसिंह ने सूचना दी कि वीरसिंह देव के बहुत-से आदमी मारे गये, परन्तु वह आहत होकर भाग गया।

***

प्रकरण 157

शाहजादा दनियाल की मृत्यु

शाहजादा दनियाल को अकबर ने मद्यपान से बचाने का बड़ा प्रयत्न किया, परन्तु जिन लोगों को इस काम के लिये नियत किया, वे ही उसको शिकार में ले जाकर बन्दूकों की नालों में भरी हुई शराब पिलाते थे। इससे वह अति निर्बल हो गया। 40 दिन तक वह बिस्तर में पड़ा रहा और 11 मार्च, 1605 को उसकी मृत्यु हो गई। इस समय उसकी आयु 38 वर्ष और 6 मास की थी, उसके तीन पुत्र और 4 पुत्रियां थीं। पुत्रों के नाम तहमुरस, हुसंग और बयासंगर थे। पुत्रियों के नाम सादतबानू, बुलाकी बेगम, माही बेगम और बुरहानी बेगम थे। यह शाहजादा ख्वानखाना की पुत्री जानाम बेगम से बहुत प्रेम करता था। शाहजादे की मृत्यु के बाद उसके हितैषियों ने उन लोगों को मार डाला जो उसको गुप्त रूप से मद्यपान करवाया करते थे। ऐसे पांच आदमी थे।

ख्वाजा अब्दुल्ला, सफदर खां ने खबर भेजी कि वीरसिंह देव ने ओरछा के पास के कुओं में विषैले पौधे डाल दिये हैं इसलिये अनेक आदमी ज्वरग्रस्त होकर मर गये हैं और वह (ख्वाजा) स्वयं भी वहां नहीं टिक सका। राजा मानसिंह ने बंगाल से आकर एक हजार मोहरें और बारह हजार रुपये बादशाह को भेंट किये जो लोग राजा के साथ थे उनको मनसब दिये गये। एक दिन बादशाह नाव में बैठ कर शाहजादा सलीम के निवास पर गया तो शाहजादे ने उसको धन्यवाद दिया। राजा राजसिंह ने वीरसिंह देव बुन्देला को खदेड़ कर भगा दिया था, इस उपलक्ष में उसका मनसब 4000 का कर दिया गया। तारीख 16 को बिहार का सूबा, खान आजिम मिर्जा कोका के सुपुर्द किया गया और उसी दिन शाहजादा

सुल्तान खुसरू का 10,000 का मनसब और नक्कारा तथा निशान बख्शे गये। राजा मानसिंह को 7000 जात और 6000 सवार का मनसब दिया गया और शाहजादा खुसरू का संरक्षक नियुक्त किया। राजा मानसिंह के पौत्र महासिंह को 2000 जात और 300 सवार का मनसब दिया गया। सारे दीवान लोगों के नाम आदेश हुआ कि वे शाहजादा सलीम की सलाह से सल्तनत का काम करे और मनसब के पट्टों पर शाहजादे की मुहर लगाई जाये।

***

प्रकरण 158

अकबर की मृत्यु

12 मिहर, 22 सितम्बर, 1605 को अकबर के शरीर में विकार उत्पन्न हुआ। हकीम अली ने 8 दिन निदान करने में लगाये और कोई चिकित्सा नहीं की, जिससे बीमारी और बढ़ गई और ज्यों-ज्यों चिकित्सा की गई, त्यों-त्यों वह बढ़ती ही गई और कोई लाभ नहीं हुआ तो भी अकबर शान्त भाव से झरोके में बैठकर लोगों को दर्शन दिया करता था। फिर वह बिस्तर में ही लेटा रहने लगा। $19^1/_9$ दिन हकीम ने चिकित्सा करना छोड़ दिया। बुधवार, 4 आबान, 15 अक्टूबर, 1605 को अकबर की मृत्यु हो गई। प्रात:काल आगरा दुर्ग से अकबर का जनाजा निकला और बिहिश्ताबाद में उसको दफनाया गया।

***

इस ग्रन्थ के अनुवादक और संक्षेपक डॉ. मथुरा लाल शर्मा हर्बट कालेज कोटा, महाराजा कालेज, जयपुर के प्रिंसिपल, इतिहास विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के अध्यक्ष, इंडियन हिस्टोरिकल रिकार्डस कमिशन के मेम्बर, निर्देशक राजस्थान स्टेट आरकाइज, इंडियन अकादमी के सदस्य आदि पदों पर काम कर चुके थे और कुछ समय के लिए राजस्थान विश्वविद्यालय के उप-कुलपति भी रहे थे। इसके बाद आप राजस्थान इन्स्टीटयूट ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च के सम्मानित अध्यक्ष रहे और लगभग 25 विद्यार्थी आपके पास काम करके राजस्थान विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। आपने इतिहास विषय पर लगभग 20 पुस्तकें लिखी हैं और लगभग इतनी ही पुस्तकों का अंग्रेज़ी और फारसी से हिन्दी में अनुवाद किया है। लगभग गत ग्यारह वर्ष तक आपने जर्नल ऑफ द राजस्थान इंस्टीटयूट का सम्पादन किया और लगभग एक सौ शोध-पत्र विभिन्न मासिक पत्र-पत्रिकाओं आदि में प्रकाशित हो चुके थे अब आप स्वर्ग सिधार गये।